खोज में उपलब्ध

हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों

का

उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

[सं० २००१-२००३ वि० (सन् १९४४-४६ ई०)]

द्वितीय भाग

संपादक

पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक –नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
मुद्रक—शंभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी
प्रथम संस्करण, सं० २०३२, ११०० प्रतियाँ
मूल्य

वक्तव्य

खोज का उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण पाठकों के सामने प्रस्तुत है। खोज का यह त्रैवार्षिक विवरण विक्रम संवत् के क्रम से तैयार किया गया है। इसमें सं० २००१ से २००३ तक (सन् १९४४ से १९४६ ई०) के खोजकार्य का उल्लेख किया गया है। यद्यपि इसका आकार बहुत बड़ा हो गया है, तथापि अनुसंधान की उपयोगिता की दृष्टि से संक्षेपीकरण नहीं किया गया है। यह दो खंडों में प्रकाशित किया जा रहा है। इस विवरण को भूतपूर्व निरीक्षक पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने तत्कालीन खोज अन्वेषकों, विशेषतः श्री दौलतराम जुयाल की सहायता से हिंदी मे सपादित किया था। पूर्व विवरण के अनुसार ही इस विवरण में भी ग्रंथों और ग्रंथकारों का अनुक्रम हिंदी वर्णमाला के अनुसार हुआ है।

उत्तर प्रदेशीय राज्य शासन द्वारा दिए गए प्रथम १०,०००) रु० के अनुदान से चार त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२६—३७ ई०) छापे गए थे। उसके पश्चात् चार त्रैवार्षिक विवरणों (सन् १९२३—४९ ई०) के प्रकाशन के निमित्त राज्य शासन ने सन् १९५६ ई० में कृपापूर्वक ७,०००) का द्वितीय अनुदान दिया। यह आशा की गई थी कि इस द्वितीय अनुदान से कम से कम तीन त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन का कार्य तो संपन्न हो ही जायगा किंतु दो ही (सन् १९३८–४० तथा सन् १९४१–४३) त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन मे प्राप्त अनुदान से अधिक व्यय हो गया। फलतः आगे के दो तैयार त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन का कार्य रुक गया। सन् १९५६ से ही उक्त दोनों त्रैवार्षिक विवरण प्रकाशन की असुविधा के कारण पाठकों के संमुख न आ सके।

अनुसधित्सुओं की आवश्यकताओं को दृष्टि मे रखते हुए सभा ने उनके प्रकाशन के कई प्रयत्न किए किंतु द्रव्याभाव के कारण सफलता न मिली। अंत में केंद्रीय सरकार की महती कृपा से उसके शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय की २९.६.१९७४ की एफ ९–२।७४–एच (डी० आई०) (एल) संख्यक राजाज्ञा द्वारा १२,६७६) का अनुदान प्राप्त हुआ। इससे प्रस्तुत विवरण के प्रकाशन का कार्य प्रारंभ हुआ और यह इस रूप में विद्वत्समाज के समक्ष उपस्थित है। इसका प्रथम खंड पहले ही प्रकाशित हो चुका है। अब इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशित करके हमें अपार हर्ष है। केंद्रीय सरकार की इस सामयिक कृपा के निमित्त हम उसके अत्यंत आभारी हैं। और आशा करते हैं कि वह समय समय पर आर्थिक सहायता द्वारा हमारे उत्साह का वर्द्धन करती रहेगी।

विजयादशमी,
सं० २०३२ वि०

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

विषय सूची

द्वितीय खंड

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का

उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

संवत् २००१-२००३ वि०

संख्या १४३क. ज्ञान बारामासा, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—७ × ३१०/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दौलतराम पाडेय, स्थान व पोस्ट—साहिजादपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री राम जी सहाइ ॥

चेत चिरंजीवें न कोई जीव जम को ग्रास है।
मूढ निहचें समुझि अंधे सपन सो जगजात है।
विषें तृष्णा लोभ वंसी मोह माया जाल है।
तात माता भ्रात वनिता झूठ सब परिवार है।
जठर मे जिन प्रान राखे सो विसारे बावरे।
देषि मृगत्रस्ना जो भूलो जथा धोषो भाउरे॥ १॥

अंत—सिर जटा अरू मौन धारन गहत जे वन वास रे।
वेद सास्त्र पुरान पढि नहि जात ओसन प्यास रे।
तरो चाहै जीव जोतें त्याग और उपाउ रे।
विस्वास करि कह दास तुलसी प्रेम सौगुन गाउ रे।

इति श्रीज्ञानबारामासी श्रीतुलसीदास कृत संपूर्न।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या १४३ख. बारहमासी, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० अमरनाथ मिश्र, असबरनपुर, पो०—ओइना, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बारामासि लिख्यते ॥

चेत चरजीववौ न कोइ जीव जमको ग्रास है॥
मूढ़ निश्चे चेतु अंधे स्वाप्न सो जगवास है॥
विषै तृष्ना लोभ फासी मोहमाया जाल है॥
तात माता भृत्त वनिता झूठ सव परिवार है॥
जेठ रम जीन प्रान राखेउ सो विसारे वावरे॥
देषि मृगतृष्ना जो भूले वृथा धोषे धाव रे॥
राम भजिले पये नर तन वानो अछा वाव रे॥
अैसा अवसर पाय भलैहि मूढ़ गोता षाव रे॥
भाजन कर भागवन को मन आयो वैसाष रे॥
घटत छिन छिन औधि तेरी जायगो मिलि षाष रे॥

अंत—मास फागुन धन रतन देव कंचन दान रे॥
दान वृथा जात नाहिंन पाप मोचन नाम रे॥

भ्रमत तिरथन सकल ढिग करि जोग संजम सोय रे ॥
जग्य जप तप व्रत ध्याने हरि नाम सम नहिं होइ रे ॥
बेद साहस्त्र पुरान पढि पढि जातन वो सन त्रास रे ॥
तरा चाहै जीव जग को त्यागु आनी उपाव रे ॥
विश्वास करि कहा "दास तुलसी" प्रेम हरिगुन गाव रे ॥१२॥
श्री रामाय दीनदयाला ॥ . . . . ।

विषय—भक्ति महिमा वर्णन ।

संख्या १४३ग. रामजन्म, रचयिता—तुलसीदास, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—३५, आकार—$7\frac{3}{4} \times 5\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—संवत् १९२७, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश जी दूबे, ग्राम—गजहड़ा, डाकखाना—मुबारकपुर, जिला—आजमगढ़ ।

आदि— :०: :०: :०: :०:

ते . . . . । तेही पारस्त्रवन के दीन्ह सुताई ॥
छन छन उपटंन न्रीषं देही । कबहु ना मारे बाबुआ होइ सरेही ॥
पांच मास के स्त्रवन भयेउ । तीर धनुही लै ब . . . के गएऊ ॥
मारवहु कीती तीर आमाना । तब उन्ह पोसा अधा बुनो प्राना ॥
दसए बरष के स्त्रवन भएउ । पुछन के पांडीत घर गएऊ ॥
बीद्या पढत बरष दुइ चारी । सुँदरी बीअ बीअहीनी नारी ॥
बीधी कै लीषा मेटी ना जाइ । कन्या बीबाही स्त्रवन लै आइ ॥
बडे भाग एह कन्या होई । मात पिता के सेयजे होई ॥
सुनी के वचन त्रीअ बेजारी । स्वामी के वचन लागु षरारी ॥

अंत— ॥ चौपाई ॥

राम जन्म सुनौ मन लाई । दुष दलीदर सभ जाए पराई ॥
राम जन्म सुनो मै कांना । ताकर पुत्र होय कल्याना ॥
रामाजन्म जो नीती जोगाई । सो प्रानी भौसागर तारी जाई ॥
राम नाम जो अम्रीत वानी । पढै सोइ जौ होए गुर ग्यानी ॥
राम लषन दुनो बडा जोधा । मारी तालुका करी वहु क्रोधा ॥

॥ दोहा ॥

श्री राम जन्म कथा वीमल पढै सुनै मन लाए ।
सो मनवच क्रम हरष ते भौसागर तरी जाए ॥
दसरथ जन्म सुफल लीए राम पुत्र अस पाए ।
"तुलसीदास" सरनागती राम के रूप लोभाए ॥

इति श्री पोथी राम जन्म कांडा संमपुरंन भाइला संपती सुभा संमत १९२७ ॥ मीती भदो सुदी चौथी मुकाम लहउर मीआ मीर छवनी दसषत भगरु राम के राम राम सब साधान रे ॥

विषय—रामचन्द्र जी के जन्म और विवाह तक की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आरंभ का पत्र नहीं है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल संवत् १९२७ वि० है ।

ग्रंथ की भाषा और काव्य से ऐसा विदित नहीं होता कि यह सुप्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास की रचना नहीं होगी । संभवतः ये कोई दूसरे ही तुलसीदास हैं ।

प्रस्तुत रचना निम्नलिखित अन्य रचनाओं के साथ एक हस्तलेख में है :—
१. सोत पतल— :०:
२. वदी मोचन—तुलसीदास
३. भरत मिलाप—तुलसीदासकृत

संख्या १४३घ. भरथ कथा या भरत बिलाप, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—७½ × ६½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पं० देवनारायण पांडेय, स्थान व पोस्ट—सेवटा, जिला—आजमगढ़।

आदि— :०: :०: :०: :०:

लै वर उसीसा वर कीन्ह।
राम के आगे भरथ धर ल्यावे। सो पकरत अवधपुर पावै॥
भरथही देषी लोग सभ धावे।
पूछही राम लषन कुसलाइ। रोइ रोइ पूछै राम कुसलाइ॥
कह भरथ भेटेउ रघुराई।
राम लषन तुम भेटाहु की नही। नीचे वचन कहौ समुझाई॥
तव भरथ अस कहे वुझाई। राम लषन कह भेटाउ माई॥
मोसे प्रेम कीन्ह रघुनाथ। चरन कवल सुंदर जल जाता॥
मै रोइ परेउ राम के चरना। रघुपति प्रेम जाइ ना वरना॥

अंत—रामचंदर वन कीन्ह पआना। राजा दसरथ वहुत पछताना॥
राम चंदर छांडे असथाना। रोवै नगर सकल प्रधाना॥
रोवै सीया सती कुमारी। राम लषन वीनु अवध उजारी॥
रवी रवी कं कह पत्री लीषावे। दूत हाथ नेइहर पठावै॥
जाहु दूत भरथ के पासा। अवधपुरी के भइल नीरासा॥
वोष दूत वीद ताव भएउ। आंतर वास जो जान सठी गएउ॥
जहाय भरथ चतुरगुन रहेउ। जाइ तहां डंडवती कीएउ॥
:०: :०: :०:

विषय—रामायण के आधार पर भरत की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अत्यंत जीर्णशीर्ण अवस्था मे है। आदि अत के पत्रे नष्ट हो गए है। हस्तलेख के पत्र उलटे सिले हुए है। रचनाकाल, लिपिकाल भी अप्राप्त है। रचयिता का नाम तुलसीदास है, जो, जहाँ तहाँ, दोहे, चौपाई, छदो मे प्रयुक्त हुआ है। रचना को पढने से यह विश्वास नही होता कि ये प्रसिद्ध गो० तुलसीदास है। ये कोई दूसरे ही व्यक्ति ज्ञात होते है। रचना मे कोई कवित्त नही है।

संख्या १४३ङ. भरत मिलाप, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पं० तामेश्वर मिश्र, ग्राम—डोंगीपार, पोस्ट—भैसा बाजार, जिला—गोरखपुर।

आदि—.................................

कही नारव सुलोक सीधाई॥
केकइ नीच भल वन आए। आधा रोषी के प्रासाए॥
सुमी के द्रीस्टी ग्रीप के आगु हाय............

केकई के मुष अस्रीत बसइ । तेही सुषा के कही अगुध करइ ॥
अस्रीत बीष भट भया जबही । पीर बथ मीक भए तबही ॥

॥ दोहा ॥

मगु महु केकइ मन दंछ आजु जो होइ ।
मन बीचारी कह राजा तुरीत बेउ मे तोही ॥

॥ चौपाई ॥

सो मत नारद केकई के दीन्हा । केकई सो चित्त धरि लीन्हा ॥
बच बंध ग्रीप मोही लेक । ऐ तन बचन मोही मागे दीन ॥
राज पाट सब वचन दीन्ह । केकइ मगी तुरीत तब लीन्ह ॥

॥ दोहा ॥

आरथ बरब न मगो राज पट क बासा ।
भरथा चतुर गुन राजा देहु राम लषन बनवासा ॥

अंत—कहो लोग प्रतीती जो जानी । एही बीधी भरथारहू मनबानी ॥
भरथा कहे तीनु लोक ही गई । तेकर पापा तुरंत छबी जाई ॥
भरथा कथा अह सतभाउ । माहा मुनीना के दरसना पाऊ ॥

॥ दोहा ॥

नीत दीन पुजा दयउ । राम लषन मन लाए ।
"तुलसीदास" मन भीतरा भगती करे मन लाए ॥

श्री पोथी भरथमिलाप सापुरन भइली आगे जो देषा सुलीषा मम दुष न देते पंडीत जन सो भीनती मोर टुटल अछर लेवे जोरि ॥

विषय—भरत मिलाप की कथा वर्णित है। इस रचना में केकई की मति फेरने के लिये नारद का उपयोग हुआ है।

विशेष ज्ञातव्य—आरंभ का पत्र लुप्त है। रचनाकाल और लिपिकाल दोनो अज्ञात है।

संख्या १४३च, भरतमिलाप, रचयिता—तुलसीदास, कागज—आधुनिक, पत्र—१७, आकार—७$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७०, **अपूर्ण,** रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश जी द्विवेदी, ग्राम—गजहड़ा, पोस्ट—मुबारकपुर, जिला—आजमगढ़।

आदि—श्री राम जी सहाये श्री गनेस जी सहाए श्री गगा जी सहाए ॥ श्री सरोसती जी सहाय श्री पोथी भरत मीलाप लीष्यते ॥

आषर अरथ न जानो नही गुर कुल उपाए ।
राम चरित्र कछ माषहु श्री गुर होइ सहाए ॥
सुमीरो सामी श्री गनेसा जीन्ह मोही बीद्या दीनऊ ।
श्री गोबींद के चरन मनाए । तब मै राम भरथ गुन गाए ॥
सुमीरो गनपती मन चीत लाई । जीन पर साध अछर सुधी पाई ॥
सुमीरो ब्रह्म बीसुन महेस । सीवा संकर सुमीरो मन लाई ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

भरथ के ह्रदय सोच भाई । रामचरन लौ लाई ॥
केकई के आ कलंक भाई ॥ कीरपा करो रघुराई ॥

राम भरत के बोधा सोलन्हि

:o: :o: :o:

तेही के जन्म ग्रासरा हो।
सुफल होत संसारा ॥
राम नाम जिनके घट ताकर कुसल तारी जाई।
तुलसी दास भजु राम पद राम नाम लौ लीन (? लाई) ॥

इति श्री भरथ मीलाप संमपुरन भईल सही जो परती देष सो लीषा पंडीत जन से मीनती मोरी भुला ग्राकछर लेबं जोरी समाप्त ॥

विषय---राम और भरत का मिलाप वर्णन किया गया है।

संख्या १४४. भ्रमरगीत, रचयिता---कवि तेज, कागज---देशी, पत्र---१८, आकार--- ४½ × ४$\frac{2}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---६, परिमाण (अनुष्टुप्)---११०, खंडित, रूप---प्र.चीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---पं० महेश प्रसाद मिश्र, ग्राम—लेदहाबरा, पो०-अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि.. ॥ १ ॥

सो कुविजा वस ह्वै गई देषि कै काली को नाथ्यौ जे डारिकै गोद है।
तोको पठाए तै आए इहा तुम ठाढे भयो हो महीना ज्यौ लौंदे है।
(? कहे तेज) काहू को राज भए तुम भूले हो बावरे सों नहि भोंदे है।
ऊधो जू साँचु उहै उपषान है काका की भैसी भतीजे कों तो वेहै ॥ २ ॥
आपने चित्त मे जानत है सब कान्ह पठावत आवत तोहू।
ठानी उपाधि न बूझत आदि है व्याधि करी कुबिजा अरु ओहूं।
ऐसे बियोग मे जोग अजोग है लोग कहै औ कहों फिरि मोहूं।
होती वियोगिनी जोगिनी है कहूं ऊधो जू भूतन के है पतोहू ॥ ३ ॥
बृज को उजारि करि धारिका (? द्वारिका) वसाई जिन बार बार लेति तुम तिही को नाऊ है।
आपु करै भोग जोग हमको पठाई देवो और पै न पाई कछू कुबिजा को दाउ है।
तुम हो संदेसी तौ संदेस कहि चले जाहु कहै "कवि तेज" थान झगवा को ठाऊँ है।
ऊधौ तुम साँचु उपषान यह सुनो आइ ढोल देत ढोलिआ पै मारत न गाँऊ है ॥ ४ ॥
जानती है उनही कों बषानती और न मानती है हम दूजें।
बात बनी कुबिजा की भली विधि तातें संदेस लै आवत भूंजें।
"तेज" कहै अति तेज करै वह टेढी सों सूधी कहा लगु हूजें।
चाहिए भोग पठावति जोग है आंब की साधना आंवलि पूजें ॥ ५ ॥

अंत---चाहत बं जोग हम भरी है वियोग विसरायो वह भोग जामे वधि बृध महियो।
आपु करै राज लागै तनिको न लाज इहा जप तप साज हमही सो कहै गहियो।
तुम हो सुजान वेष जात जैसो ठान तैसो कहियो निदान ह्वाँ सकुचि मति रहियो।
छोड़ी ब्रज वाम कीन्हो कुबिजा को काम ऊधो ऐसो घनश्याम सो प्रनाम जाइ कहियो ॥ ३३ ॥
केलि करी हरि जू यहु भांति सों दान लियो हमसो दधि दूधो।
प्रीति की रीति बिसारि कै "तेज" संदेस पठावत वेद विरूधो।
प्राण पिआरे को छोडि कै काहू कियो तप है हम पूछती सूधो।
जोग सिषावन आवत हो बृजबालन के घर घालन ऊधो ॥ ३४ ॥

:o: :o: :o: ---अपूर्ण

विषय---गोपी उद्धव संवाद वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य---पुस्तक में प्रथम छंद और अंत मे ३४वें संख्या के पश्चात् के छंद नहीं हैं। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं।

संख्या १४५. राजनीति के दोहा, रचयिता—त्रिलोक सिंह, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६$\frac{1}{16}$ × ६$\frac{5}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथा लिष्यते राजनीत के दोहा।

श्री गनपत विनऊ यहै और सरस्वती माय।
दीजे "सिंह त्रिलोक" कह उत्तम ग्रंथ बनाय।।
प्रभु "त्रिलोक" कहं दीजिये मन जन के हित काम।
माता सम हितकारनी नीत ग्रंथ सुषधाम।। २ ।।
हित उपदेसं मित सो रुच सो सुनें नरेस।
होय जहां अनुकूल विधि संपत करे प्रवेस।। ३ ।।
सुभ उपदेस करें नहिं कोन कांम वह मित्त।
कोन काम वह प्रभ कहा हित न सुनें दे चित्त।। ४ ।।
बड़े ठोर पहुचें कहा फल कर मन अनुसार।
वासरु कंठ महेस के करत समीर अहार।। ५ ।।
उपवन रचन किन पुनि ज्यौ माली सब काल।
येसो नृप सों होय जहां राज करैं चिरकाल।।
वेद अंग न तंग जप होम सो कर्म समाज।
मन वच आसिक वंत जो वरनो प्रोहित राज।।

अंत—विवध जतन रक्षा करो धरम समेत सरीर।
अमत धर्म तिहि धर्म ते ज्यौ गिर झिरना नीर।।११५।।
धर्मकाज धन दीजिये के भय होय विमुक्त।
क्रिपन राज को त्यागिये छिनकि न दीजे चित।।११६।।

विषय—राजनीति वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। पुष्पिका नही दी है। अंतिम दोहे की संख्या ११६ है। इसके पश्चात् कोई खंडित दोहा नहीं है। अत: अनुमान से पता चलता है कि इतने ही दोहे ग्रंथ मे होंगे। इसलिये इसे पूर्ण मान लिया गया है।

संख्या १४६. गीताभाषा, रचयिता—थेघनाथ, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५५७, लिपिकाल—सं० १७२७ (चतुरदास कृत भागवत एकादश स्कंध के आधार पर), प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी-सभा (याज्ञिक संग्रह), वाराणसी।

आदि—श्रीगणेशाय नमः। अथ श्री भगवतगीता भाषा लिष्यते।

।। चौपई ।।

सारद कहु बंदौ करि जोर। फुनि सिमरौं तेतीस करोर।।
रामदास गुरु ध्याऊ पाइ। जा प्रसाद यह कवितु सिराइ।।
मूढनि कौं है विष (व) ल्लरी। गुनियनि कौं अंम्रति मंजरी।।
थेघनाथ अंम्रत विस्तरै। बिनती गुनी लोग सौं करै।।
आगि माहि डारियै स्वर्न। बुरे भले को लीजै मर्म।।
तैसें संत लेहु तुम जानि। मैं जु कथा यह कही बषानि।।
पंद्रसै सत्तावनि आनु। गढु गोपाचल उत्तम ठानु।।

मानसाहि तिह दुर्ग्ग निरिंदु । जनु अमराति सोहै इंद ।।
नीत पुंन सों गुन आगरौ । बसुधा राषन कों अवतरौ ।।
सबही राजनि माहि अति भले । तौवर सत्य सलिज्या चलै ।।
ता घर "भान" महाभरु तिसै । हथनापुर महि भीषम जिसे ।।
पाप परहरै पुुनहि गहै । निस दिन जपतु कृश्न कहु रहै ।।
सर्ब जीव प्रति पालै दया । मानु निरंदु करै तिह मया ।।
ग्यानी पुरुषनि मैं परिधान । एकहि सदा जस्वसी भानु ।।
दयावंत दाता गंभीरु । निर्मल जनु गंगा कौ नीरु ।।
जौ बृह्मा गरुबं गुन जागु । तौगुन तंत जोग मनु लागु ।।
जैं रूप मंगद द्रिढ बनु लहै । जौ द्रिढु सरु जुधिस्थिर गहै ।।
स्वाम धर्म यों पारे भानु । जा सम भयौ न दूजौ आन ।।
सबही विद्या आहि बहुत । "कीरत सिंध" नृपति कै पूत ।।
षट दरसनि के जानै भेव । मानै गुरु अरु बृह्मनु देव ।।
समद समानि गहरुता हियें । इक बृत पुन्न बहुत तिह किये ।।
भले बुरे कौ जानै मर्म । भानु कुवरु जनु दूजौ धर्म ।।
इहि कलयुग मैं है सब कोई । दिन दिन लोभ चौगनो होई ।।
अनु धनु जसु गाडित तिन गयौ । पैवै क्यौं हूं साधन भयौ ।।
इतौ बिचारु भान सब कियौ । त्रिभुवन माहि बहुत जसु लियौ ।।
भान कुवरु गुन लागहि जिते । मोपै वर्नैं जाहि न तिते ।।
जीभ अनेक जु प्रानी होई । याके जसहि वषानैं सोई ।
कै आइबंलु होइब घने । बरनै गुन सोभा नहि तनै ।।
कै सारद कौ दरसनु होई । आदि अंति गन बरनै सोई ।।
"थेघू" इनमै एकै लहै । ऊची बुधि करि चहु गुन कहै ।।

:o: :o: :o:

कहै भान मो भावै राम । जातै ज्यौ पावै विस्राम ।।
इहि संसार न कोऊ रह्यौ । भान कुवरु "थेघू" सों कह्यौ ।।
माता पिता पुत्र संसारु । यहि सब दीसै माया जारु ।।
जाहि नाम ना कलजग रहै । जीवै सदा मुवौ को कहै ।।
कहा बहुत करि कीजै आनु । जो जानै गीता को ग्यानु ।।

:o: :o: :o:

इतनो बचनु कुवरु जब कह्यौ । घरीकु मनु धोषै परि रह्यौ ।।
सायर कों बेरा करि तरै । कोऊ जिन उपहासहि करै ।।
जौ मेरैं चित गुरु के पाय । अरु जौ हियैं बसैं जदुराइ ।।
तौ यह मोपै ह्वैहैं तैसैं । कह्यौ कृश्न अर्जुन कों जैसैं ।।
सुनहि जे प्रानी गीता ज्ञान । तिन समानि दूजौ नहि आन ।।
संजय लीने अंध बुलाई । ताकौं पूछनि लागे राई ।।
धर्मषेत्र कुरु जंगल जहां । कैरौ पांडव मेले तहां ।
कैसैं गुझ कहा तहां होई । मोसों वरनि सुनावो सोई ।।

अंत—अर्जुनोवाच

तो प्रसाद अच्युत बर बीर । गयौ मोहु जु हुतो सरीर ।।
तेरौ बचनु हियैं सब धरौ । भारथ करत न संका करौं ।।
संजै बचनु अंध सों कह्यौ । ....

:o: :o: :o:

विषय—गीता की भाषा टीका।

रचनाकाल

पद्रसं सत्तावनि आनु। गढ़ गोपाचल उत्तम ठानु॥
मानसाहि तिहि दुर्ग निरिंदु। जनु अमरावति सोहै इंद॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथात मे पुष्पिका नही दी है। अतिम अश से स्पष्ट होता है कि थोड़ा सा अंश लिखने से छूट गया है। परतु यह अश बहुत ही थोड़ा है, अत. ग्रथ पूर्ण ही माना गया है। रचनाकाल संवत् १५५७ है और लिपिकाल सवत् १७२७। लिपिकाल चतुरदास कृत एकादश स्कध (भागवत) के आधार पर है जो प्रस्तुत ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे था, परंतु जिल्द टूट जाने के कारण ग्रथ स्वामी ने इन्हे दो अलग अलग जिल्दो मे बँधवा दिया। इस सबध मे ग्रथस्वामी श्री मयाशकर जी याज्ञिक ने ग्रथांत मे निम्नलिखित टिप्पणी लिखी है :—

"थेघनाथ कृत गीता अनुवाद का लिपिकाल स० १७२७ वि० मानना चाहिए, कारण कि चतुरदास कृत एकादश स्कध (भागवत) की प्रति जो इसी जिल्द मे थी उसका लिपिकाल १७२७ वि० है। दोनो के लिपिकार एक ही व्यक्ति है। देखो प्रति न० २७८।५०। जिल्द टूट जाने मे दोनो पुस्तके अलग कर दी गई है।"

संख्या १४७. अष्टकाल की लीला, रचयिता—दक्षसखी, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६$\frac{१}{६}$ × ३$\frac{२}{६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० दौलतराम पाडेय, स्थान व पोस्ट—साहिजादपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री राधारमणो जयति॥ अथ अष्टकाल की लीला लिष्यते॥

॥ छप्पै ॥

जयति जयति राधारमन श्री चैतन्य कृपाला।
जयति सखीगन वृंद जयति श्री भट्टगोपाला।
जै वृंदावन चंद जयति जमुना पटरानी।
जयति जयति गुरुदेव मंत्र पद्धत के दानी।
जै जै वृज की रेनु जाहि शिवनारद जाचे।
जयति रास रस कुंज जहां राधावर नाचे॥ १॥

अंत—भई पूर्ण लीला अतिसुंदर संमत दससे आठ ठयो हौ।
बर्ष तीस षटमास जु श्रामन कृष्ण द्वादसि यह ग्रंथ कह्यौ हौ।
"बक्षसखी" यह लीला गाई।
पढ़त सुनत अतही सुषदाई॥ ७॥

॥ दोहा ॥

जे गामे सीखे सुने मन क्रम वचन समेत।
श्री वृंदावन तिनको सदा वास निरंतर देत॥२५॥

इति श्री अष्टकाल की लीला समाप्ता॥

विषय—राधाकृष्ण की अष्ट प्रहर लीला का वर्णन।

रचनाकाल

भई पूर्ण लीला अति सुंदर संमत दस से आथ ठयो हौं।
वर्ष तीस षट मास जु श्रामन कृष्ण द्वादसि यह ग्रंथ कह्यौ हौं॥

संख्या १४८. सूरजमल की कृपाण, रचयिता--दत्त कवि, कागज--बाँसी, पत्र--६, आकार--६½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--६०, पूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, (याज्ञिक संग्रह) काशी।

आदि--जहँ कासमीरी काबुली बलक्की औ बदख्सानी,
खुरासानी लोहानी ईरानी इलमान ॥
जहँ सूर सूरवंस सोमवंस जातवेद वंस,
वीर बलवान रान मान को घउरान ॥
जहँ दक्खिनी सु दल वल हाले छितिपाल माचे,
सिंधु दल दल खाँचे साँचे घमसान ॥
तहँ हिम्मत निधान भूमि भार मघवान,
सिंह विक्रम सुजान वर बाही किरवान ॥ २ ॥
जहँ बज्जत निसान सोर गज्जत दिसान,
सूर सज्जत सदान कूर तज्जत गुमान ॥
जहँ छुट्टत कमान गोला गोली किरवान,
धूमधार असमान छिप्यो भानु को विमान ॥
जहँ होत भाज भाज घोर दुंदुभी गराज,
तोप तरपै तराज गज घंटा घहरान ॥
जहाँ हिम्मत निधान................
.... ॥ २ ॥

मध्य--
जहाँ ढाल की ढनंक तेग तेग की षनंक कोठि कुंड की छनंक झिलि मन झननान ॥
जहाँ भमकं भुसुंड कटि तटि कटि तुंड फरकत भुजदंड भरकत विन प्रान ॥
जहाँ चरबी के कुंड मचै शोनित उमंड पचै जुगनी के झुंड नचै प्रेत करि गान ॥
जहाँ हिम्मत निधान घिरि फिरि फिर झिर झिर सोनित नित ॥ ५८ ॥

अंत-- ॥ कवित्त ॥
अरजी आनंद के कंद ब्रजचंद सी सुजान नंद कीरति निसानि सी दिसानि फहराति है ॥
कहैं कवि दत्त दल दीरघ दरेर दाबि दुज्जन जमाति दहि दरनि दुराति है ॥
बिक्रम सो विक्रम तिविक्रम सौ पाइ वर करन सौं करन की करनी हिराति है।
बिश्व इंद्र गाजी केते दीन्हे गज बाजी मोहि दीजे एक बाजी मेरी बाजी ठहराति है ॥ १४ ॥
इति संपूर्ण ॥

विषय--इसमें भरतपुर नरेश सूरजमल (सुजान सिंह) की कृपाण का ओजपूर्ण भाषा में वर्णन है।

संख्या १४६क. कृष्ण नाम चंद्रिका, रचयिता--दयाराम भाई, स्थान--चाणोद तथा उभोई (गुजरात), कागज--देशी, पत्र--१२, आकार--६।×५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२८५, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, ह० बं० सं० ८४, पु० सं० ७।

आदि--श्री गुरु गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ श्रीकृष्ण नाम चंद्रिका लिख्यते
॥ दोहा ॥
बंदूँ श्री गुरु पद्म पद सद्म सकल कल्यान ॥
जातें जात सबैं जरी चिंता के संतान ॥ १ ॥

॥ छंद रोला ॥

श्रीमद्गिरिवर धरन चरन पंकज करु वंदन ॥
मंगल मोद निधान पाप भव ताप निकंदन ॥ १ ॥
अरु बंदूं श्रीकृष्ण नाम परमानंद-सागर ॥
नाम श्याम तें अधिक कृपाकर श्रोज उजागर ॥ २ ॥

मध्य--पृ० ६८

जीतें माया काल लाल गोपाल नाम तें ।
जीवन मुक्त ह्वें जाय बढे रति घनश्याम तें ॥११२॥
कृष्ण नाम रस पियें पियें नहि मान पयोधर ।
जन्म मरन मिटि जाय पाय जो प्रथम हतो घर ॥११३॥
एक बेर नारायन नाम कहत तनुधारी ।
त्रिशत कल्प किलमिश तें छूटे सद्य सुखारी ॥११४॥

श्रंत--

जो इह नाम प्रभाव भाव धरि हरि को गावे ।
मनवांछित फल लहें सीघ्र श्रीहरि पद पावे ॥२३३॥
दयाराम श्रीमद् बल्लभ सरनागत ब्राह्मन ॥
तिन यह बर्नन कियो दियो पठबे कों हरिजन ॥२३४॥

॥ दोहा ॥

नाम महातम घनश्याम कों पठत सुनत सुनि पुन्य ॥
प्रेम भक्ति श्रीकृष्ण की श्रासु लहे रति शून्य ॥ १ ॥
दया या पर दया कर करि दिहु इह बरदान ।
प्रीति प्रतीती नाम निज सेवा राति गुनगान ॥ २ ॥ ॥२३७॥

इति श्रीकृष्ण नाम चंद्रिका ग्रंथ कवि दयाराम विरचित समाप्त ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याण-मस्तु ॥ श्रीः ॥

विषय--इसमें भगवान् के नाम का माहात्म्य वर्णित है ।

संख्या १४६ख. दयाराम सतसई (टीका सहित), रचयिता--दयाराम भाई (टीकाकार--वैष्णव वल्लभ दास द्विज), स्थान--डभोई (गुजरात), पत्र--११६, आकार--६। × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--४८, परिमाण (अनुष्टुप्)--५५६८, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य-पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८७२, लिपिकाल--सं० १८७५, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ५०, पु० सं० ४ ।

आदि--श्री गुरु गोपिजन वल्लभाय नमः ॥ अथ दयाराम कृत शतसैया सटीक लिख्यते

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु बल्लभदेव अरु श्रीविट्ठल श्रीकृष्ण ।
पद पंकज वंदन करों दुःख हर पूरन त्रष्ण ॥

अर्थ टीका ॥ प्रथम कवि जन मंगलाचरण करेछे, दयाराम कवी छे ते वल्लभी वैष्णव ते माटे प्रथम तीहांने प्रणाम करेछे, श्री गुरु हे श्री बल्लभाचार्य तदात्मज हे श्री विट्ठल है श्री कृष्ण तमें चहारे एक स्वरूप छो माटे सर्वना चरण चमल ते माधे वंदन करुंछुं ते के हेवा चरण कमल दुःखमात्रना हरणार नें सर्व तृष्णाने पुराण कर्ता छे एहवा इत्यर्थः ।

मध्य पृ० १२२--अब संग वरनन सुसंग कुसंग महिमा ।।दोहो।।
महिमा बडों सुसंग को मूरख लेहे नां कोय, होत मिलाप दकारको काग सूं कागद होइ ।१।

टीका--सत्संगनी महिमा मोटे छे पण कोइ सूर मूरख जाणता नथी ते जुवो के दकार दानवाचक छे माटे सज्जन गण वो तीनों मिलाप थता मात्रमां कागजे कागदो ते कागद के कागल ज्हेवो उज्वल थै जाय तेरी त्यें सतसंग जाणवो इति सुसंगार्थज्ञेयं ।

।। दोहो ।।

योंहि अधम के संगते बडे छोट पन थाय ।
परसत निष्ट नकार सद यव सु यवन ह्वै जाय ।। २ ।। ।।टीका।।

अंत--दया सतसिया ग्रंथ यह बिरचित पर उपकार ।
सब सज्जम दूषन तजी ग्रहन कीजियो सार ।।१०।।

टीका--दयाराम कविनो रचेलो आ सतसैया ग्रंथ पर का उपकारनें अरथें रच्यो छे माटे हे सकल सद पुरुषो दूषण मध लू तजी नें मांह्यथी सारमात्र ग्रहण करज्यो इत्यर्थः ।।१०।।

दोहा--यथामती यह ग्रंथ को कीनो अर्थ प्रकास ।।
वैष्णव बल्लभदास द्विज करुनाबल अविनास ।।३।। अथ टीका कार वचन छे ।।

दया सतसी ग्रंथ समाप्तोयं । सं० १८६५ ना वर्षे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ७ सप्तम्यां सौम्य वासरे दयाराम कृत सतसाई ग्रथस्थ समाप्तिजाता लखकपाठकयोः शुभ भवतु ।।

विषय--भक्ति और नीति विषयक दोहे हैं। गुजराती भाषा में इसकी टीका है, जिसकी लिपि नागरी है। यह सतसई हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती है। अन्य सतसइयाँ जहाँ शृंगार संबंधी विषयों का उल्लेख करती है, वहाँ यह सतसई भक्ति, नीति, उपदेश आदि का बड़े सुंदर ढंग से प्रतिपादन करती है।

संख्या १४९ग. श्री मद्भागवतानुक्रमणिका भाषा, रचयिता--दयाराम भाई, स्थान--डभोई (बड़ोदा, गुजरात), कागज--देशी, पत्र--१५, आकार--९ x ५।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--७३५, अपूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ८८, पु० सं० ७।

आदि--श्री गुरु गोपीजन वल्लभाय नमः ।। अथ श्री मद्भागवतानुक्रमणिका भाषा लिख्यते ।। कवि दयाराम कृत ।। दोहा ।।

श्रीगुरु श्रीबल्लभ प्रभू श्री विठ्ठल सहहीत ।
युग पद पंकज रज करों अभिवादन अगनीत ।। १ ।।
कमल चरन कमलद बरन बंदूं कमलाकांत ।
मंगलमोद निधान सब कलुस कलेस कृतांत ।। २ ।।
राधावर वल्लभ सदा अष्टसखा कविभूप ।
नमन चरन तिनके करूं मेरे जीवन रूप ।। ३ ।।
श्रुतीक स्मृति संदोह सब अपर रूप भगवंत ।
द्वादशांग श्री भागवत प्रिय सत्तम सब संत ।। ४ ।।

मध्य--पृ० १५

।। दोहा ।।

अब नवम स्कंध कि सुनो अनुक्रमनो सब कोय ।
ईशान लीला एहि हैं प्रकरन जामें बोय ।। १ ।।

॥ छंद रसावली ॥

सूर्य वंश प्रकरन मरयादा को धुर लहियें ।
चंद्र बंस पुष्टी प्रकरन सो दूसरो कहिये ॥ १ ॥
बार बार अध्याय दोहुं के जांनी लीजें ;
प्रथम बारकों भानुवंस अब सुनो भनीजें ॥ २ ॥
नव पूरब वैवस्वत मनुवस पुत्र सुधन्या ।
इक्ष्वाकू आदिक अरु एक भई हे कन्या ॥ ३ ॥
नवम अवर कहे च्यार पुत्र भये नहि संताना ॥
तीन पुत्र कों बंस भयो वर ना तब खाना ॥ ३ ॥
नृग नाभाग अरु नरिष्यंत तीनों के नामां ॥
अब आगे नृप सुनो कहत हे शुक शुभ धामां ॥ ५ ॥

अंत--श्री नर्मदा तट चंडिपुरि श्री शेष शाइ प्रभू जहाँ ।
साठोदरे नागर सुज्ञानी विप्र कवि वसियत वहाँ ।
जन दयाराम जु नाम वैष्णव वल्लभी रचना रची ।
श्री गुरु श्री गिरिवर धरन न चईत सी रसना नची ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पुरन भई अनुक्रमनिका श्री भागवत पुरान ॥
दयाराम के हिय बसो और करे जो गान ॥ १ ॥
शक अठार अघन्यासि शुभ फागुन द्वितीया कृष्ण ।
ग्रंथ समापति ताहि दिन पुरन करी प्रभु तृष्ण ॥ २ ॥

इति श्री भागवते महापुराणे दयाराम कृत भाषा निबंधे **द्वादस स्कंधानुक्रमनिका संपूर्ण समाप्तोयं । शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥**

विषय--श्रीमद्भागवत के बारह स्कंधों की अध्यायानसार अनुक्रमणिका लिखी गई है । यह श्रीभागवत पर वल्लभाचार्य कृत निबंध के आधार पर है ।

विशेष ज्ञातव्य--इस पुस्तक में अन्य पद कीर्तन भी है । मध्य भाग में यह ग्रंथ लिखा है ।

संख्या १४६घ. श्रीकृष्ण अनन्य चंद्रिका, रचयिता--दयाराम, स्थान--चाणोद तथा डभोई (गुजरात), पृष्ठ--२१ (पृ० १ में ६३ तथा ११७ से १२७ तक), आकार--६। × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--४२६, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० बं० ८४, पु० सं० ७ ।

आदि--॥ श्रीगुरु गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ अनन्य चंद्रिका ग्रंथ लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु श्री गिरिधर्न की बंदु चरन रजधाय ॥
जातें अभिमत फल मिले पाप ताप भजि जाय ॥ १ ॥
प्रश्नोत्तर वध्र्यनिग्रही शिष्य गुरू संवाद ॥
वरनूं धर्म अनन्य कछु पतीव्रता रसस्वाद ॥ २ ॥

॥ शिष्य के प्रश्न ॥

श्री गुरुदेव कृपाल तुम विनती मेरी एह ।
प्रति उत्तर कुरु प्रश्न कों छूटें मम संदेह ॥ ३ ॥

पंथ बहुत कल्यान के बरने वेद पुरान ।
बहुतक अप अपनें मतें मुनिहू कीने गान ।। ४ ।।

मध्य--पृ० ८४ ।। शिष्य प्रश्न ।।

हे स्वामी कल्यानकर कृष्णाश्रय इक आहि ।
सबें ओर दुस्साध्य है कलि में सफलित नांहि ।।५२।।
आपुन तो यों कहत हों और सरावत आन ।
निकें मोहि समुझाइयें तिन में लछन कान ।।५३।।

।। श्री गुरु प्रतिउत्तर ।।

सुनिहे पुत्र प्रकास करि कहूँ बात जों आहि ।
श्री बल्लभ के बचन हे श्री कृष्णाश्रम माँहि ।।५४।।
कलि मे धर्माचरन सब लोकठगन को हेतु ।
उचित कछू आचर्न कछु उदर भरन करि लतु ।।५५।।
जो मारग अपवर्ग के भाखे वेद पुरान ।
कर्मरु ज्ञान उपासेना योगध्यान अरु आन ।।५६।।
ते सब नष्ट भये खलू ताको कारन ओह ।।
कलि के द्विज उपदेसकर अति खल नाँहि संदेह ।।५७।।
शास्त्र अर्थ तें विरुद्धमत आपुन को इक ठानि ।
भये चलावत ताहि ते मोक्षहीन फल जानि ।।५८।।

अंत--हें देस गुर्ज्जर नर्मदा तट चारु चंडी ग्राम हे ।
ह्वां ज्ञाति नागर विप्र वैष्णव बल्हाभो दया राम हे ।।
बल श्री गुरू तिन ग्रंथ रचना करी सब सुखधाम हें ।
शुभधर्म पतिव्रत कहे अति प्रिये श्री घनस्याम हे ।
जु अनन्य टेकी भगवदी तिनकों लगे प्रिय प्रानतें ।
जो बहिरमुख श्रीकृष्ण सों तिनकों अप्रिय अज्ञान तें ।।
तिन सोंन मेरे काम कछु काम तो हरि हरि भक्त हे ।
सो तों प्रसन्न यह बात मै मम मन्न जहाँ आसक्त हें ।।

इति श्रीकृष्ण अनन्य चंद्रिका कवि दयाराम कृत संपूरणं समाप्तं ।। श्रीरस्तु ।। कल्याण-मस्तु ।। श्री हरी ।।

विषय--वल्लभ सप्रदाय के सिद्धातानुसार भगवान् की अनन्य सेवा का वर्णन । इसी को गीता के सिद्धात मे 'अनन्ययोग' कहा है । अनन्यता (अन्याश्रय से बचने) के उपाय एव उसकी महिमा का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य--इस पुस्तक मे अन्य ग्रथ भी लिखे है ।

संख्या १४६ङ. वस्तुवृंद नाम दीपिका, रचयिता--दयाराम भाई, स्थान--डभोई (गुजरात), पत्र--२६ (पृ० २३२ से २६० तक), आकार--६।× ५।।। इच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)--४४, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२७६, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८७४ वि०, लिपिकाल--स० १८६५, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वतीभडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० ब० स० ५०, पु० स० ४ ।

आदि--**।।श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ।। अथ श्री वस्तु वृंद नाम दीपिका ग्रंथ कवि दयारामकृत लिख्यते ।।दुहा।।**

बंदूँ श्री गुरुपद कमल सकल सिद्धि दातार ।
श्री महाप्रभु गोस्वामी श्री सह श्री नंदकुमार ।। १ ।।

सब कलेस जातें हरे हरे सुधी हिय ग्राय ।
पूरन होइ ग्रभिलाष सब ग्रस पद गुरु हरिराय ।। २ ।।

मध्य--पृ० १६० चतुर्दश महामाया नाम ।
दुलैया दुर्गा भद्रकाली विजया ग्ररु वैष्णवी कुमुवा कहिये ।
ग्रोर चंडिका कृष्णा माधवी ह्वोर कन्याका लहियें ।
माया नारायनी इशानी पुनि शारदा नाम ।
सहित ग्रंबिका कृष्ण दियो बर माया कुं सुख धाम ।।

चतुर्दश मन्वन्तर नाम । छंद रोला ।
स्वायंभुव स्वारोचिष उत्तम तामस रैवत ।
चाक्षुस रु श्राद्धदेव सुइबतत वंवस्वत ।
सवर्णि ग्ररु दक्ष सार्वाणि ब्रह्म सार्वाणि ।
धर्म सार्वाणि रुद्र सार्वाणि नाम ले गणी ।
देव सावर्णी इन्द्र सावर्णी मनु दशच्यार ।
जिनके रक्षत हेतु एक हरिको ग्रौतारा ।।४५।।

ग्रंत--संमत ग्रष्टादश पुनि चोवोतर नभमास ।
कृष्ण जयंती ग्रष्टमी चद्रवार शुभरास ।६।
ग्रंथ समापति ताहि दिन भइ इच्छा भगवंत ।
सबकों जय श्रीकृष्ण हे जो देया में चत ।१०।

इति श्री मत्कृष्णजन कवि दयाराम विरचितायां वस्तु वृंद दीपिका नाम ग्रथ समाप्तः ।। श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । संवत् १८६५ नां वर्षे मासोत्तम ग्रधिक प्रथम ज्येष्ठ मासे शुद्ध पक्षे तिथौ चतुर्थ्यां गुरुवासरे ग्रद्येहं दभ वितिस्थ पौराणिक निरभयरामात्मजेन दाजी भाई संज्ञकेन लिखितं ।

विषय--इसमें १०८ स्तबक है ग्रौर वस्तुग्रो के नामो का वर्णन है । ग्रथ कोष के ढंग का है । स्तबको मे विषयवार प्रत्येक वस्तु के नाम का सग्रह किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--इस पुस्तक की जिल्द मे दयाराम सतसई, नाम प्रभाव बत्तीसी, बुद्धिबल, खल की कुछ क्रियायें--नामक रचनाएँ है ।

संख्या १५०. सुखसागर पुराण, रचयिता--दयालदास, कागज--देशी, पत्र--२०, आकार--६$\frac{६}{१०}$ × ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)--१६२, ग्रपूर्ण (खडित). रूप--प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी ।

ग्रादि--................ग्रैसो तत्व ग्रनूप ।।
निज ग्रनभव करि जानीयो परमातम निजरूप ।। १ ।।

।। चौपाई ।।

तो सरूप मै नहीं समाधि ।। नहि सासत्र बाद विवाद ।।
ज्ञान ग्रज्ञान कहो नही जाई ।। बुधि विवेक तामें न समाई ।।
ईस्वर जीव बाद तहां नाही ।। ग्रन्वै व्यतिरेक नहीं ता माही ।।
पंच कोश को लेस न तहां ।। नही ग्रविद्या विद्या जहां ।।
विघन भेद तहां नाही कहीये ।। सुध सरूपी चेतन लहीये ।।
भाव ग्रभाव भेद भ्रम नाहीं ।। साधन सिध नही ता मांही ।।

ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय नहीं तहां ।। द्रष्टा दरसन दृश्य न जहां ।।
:o: :o: :o:
शिव भागवत तीसरें भाषा ।। करत हुंकार बीर ब्रक्ष साषा ।।
सुवपनें हुंकार जु दीना ।। चकित ह्वै संकर सुमि चीन्हा ।।
इहां पंछी कैसे कर आयौ ।। पसु पंछी वन सवही उड़ायो ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

शंकर सौ कह्यौ कीरनें कीनौ कहा उपाय ।।
"लक्षी दास" विनती करै सतगुरु मोंहिं बताय ।।

अंत---इति श्री सुषसागर पुराणे गुर सिष्य संवादे सप्तमो अध्याय ।। ७ ।। अथ शिष्य-वचन ।। छप्पै ।।

कौन धर्म कीयो व्यास तास सौं यह फल पायो ।।
लीयो गर्भ सुष वास कृपा करि विष्न पठायो ।।
जोग जग्य तप दान कहो ईतनो कहा कीनो ।।
"जासो भनें दयाल" विष्न असो सुत दीनो ।।
सतगुर मोसो भाषिये ।। वेद व्यास मुनि की कथा ।।
"लछिदास" विनती करै जथा होय बरनो तथा ।।

।। अथ गुरुवचन चौपाई ।।

सुनें शिष तोहि सव समझांउं ।। वेदव्यास की कथा सुनाउं ।।
वेदव्यास तप कीनौ भारी ।। कृपा करी तव कृष्ण मुरारी ।।
बोले हर मांगो मन व्यासा ।। जो मागें सो देहूँ हुलासा ।।
य सुन व्यास विष्ण के वैना ।। दरसन कियो षोल दोउ नैना ।।
असे . . . .
:o: :o: :o:

विषय---दयालदास और लछीदास (गुरु शिष्य) के सवाद के रूप में ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रथ खडित है । समस्त बीस पत्ते उपलब्ध है । रचयिता "दयालदास" है ।

संख्या ३५१क. शब्दलीला, रचयिता---दरिया साहब, कागज---देशी, पत्र---२, आकार---८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---१६, परिमाण (अनुष्टुप्)---५१, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री साधु निरजनदास कुटी भैरोपुर, पो० भीमापार बाजार, जिला--गाजीपुर ।

आदि--; सतनाम शब्द लीला प्रसाद
साहब तुम गती अगम अपार दया बहू कीन्हो जू ।। १ ।।
प्रथम वंदि सत चरन सीस साहब के नाम आइ ऊह लीला अगम अपार भेद वीरला केहु पाआ ।
अगम पुरुख सत ब्रग है हो सोइ मीले हम आऐ ।।
हंसन्हि के सुख कारने होह दहीवो है पाऐ ।। २ ।।
झलकत पदुम वहुत उजीआर वदन छवी सुंदर रेखा ।।
अविगति जोति अंध प्रगाशीत ग्यान अगम गमि पेखा ।
बिरला जन कोइ चीन्हि के हो सत चरन सीर नाऐ ।।
रहे प्रेम लव लाऐ के हो नाम सजीवन पाऐ ।। ३ ।।

बोए औंदा रूप अजर मनी निरमल जोती अमान ।
कहेव स्रवंग अकुफ समन्हिते सुनो स्रवन दे ग्यान ।।
:o: :o: :o:
करे वीवेक वीचारी के हो नीमल धरी सो ध्यान ।।
खुलीत कमल गगन झरी लागो झलकत सेत नीसान ।।

अंत——कहें दरीआ सुनु सत सब्द इऊह वानी ।।
कहों छयाइउह मुल अगम सहिदानो ।।
:o: :o: :o:
धन धन साहव धन भगत जन धन है वाश तुम्हार ।।
कहें दरीआ दरशन को फल है दीस्टि माआ उजिआर ।। ४ ।। २ ।।

विषय——सत मतानुसार ज्ञानोपदेश ।

संख्या १५१ख. साखी, रचयिता——दरिया साहब, कागज——देशी, पत्र——४७, आकार——८ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)——१६, परिमाण (अनुष्टुप्)——८४६, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सं० १९३८ वि०, प्राप्तिस्थान——श्री साधु निरंजनदास, कुटी–भैरोपुर, पो०–भीमापार बाजार, जिला–गाजीपुर ।

आदि——सत्यनाम

ग्रंथ साखी के भाखल दरिया साहेव मुक्ति के दाता हंस उवारन नाम निसान ।
वेवा हावे किमती हैं ।। सिपती कहा नहिं जाऐ ।।
जरा मरन ते रहित है ।। सो गुन कहा वुझाऐ ।।
शाहिअदा साहेव धन ।। मति करो सभ दुर ।।
आशिक औ मासुक है ।। मिलना हाल हजुर ।।
ताहि साहेव मे दर्श है ।। परशि चरन लौ लिन्ह ।।
धेरे धोखा कोई मुढ़जन ।। सो जिन सदा मलिन ।
:o: :o: :o:
दरिया दिल दर्पन करो ।। परमत अंन अनुप ।।
अंन अंना में दिशे ।। देखी विमल एक रूप ।।
:o: :o: :o:
दोइत कहे अदोइत कहत है करे गगन को आस
डोरी लगी नैन मे पलक नहिं विश्वास
राम कृष्ण गुण अतित है ।। अंत हुवा फिरि भंग
वुन्द परे तुला हुवा फुला माया अनंग
:o: :o: :o:
विज से विज उतपती कीन्हा सो वीज सवके दीन
जीव जीव सभ जीव है ब्रह्म इनते भीन
नागरी ते आगरी भली नागरी सागरी संग
वुन्द परा यह सिन्धु में कवन परिखे रंग
:o: :o: :o:
दरिया दर्पन दर्स है प्रसत सवा सनिप
अग्र प्रानि धन वुन्द है कवहिन होत अनिप

अंत——ऐता गजन गंजी के तवम जननी जु प्रेम ।।
सदा शोहागिनि पीअपहं छुटोगा आतम नेम ७०६

भजन महली सो जात है सजन जन की रीति
अघ पातख जरी जायगा करु सतगुरु से प्रीति ।।७०७।।
करम पहार इअह ना टरे टारेगा कोइ संत ।।
ग्यान छेनी सो काटि अै इअह सतगुरु का मंत ७०८
शाखी जमा ७०८ ।। सपुरनं सन् १२८९ साल समत १९ शै २८ ।। . . . . . . ।।

:o: :o: :o:

विषय--संत मतानुसार ज्ञानोपदेश । द्वैत अद्वैत की व्याख्या एव एकेश्वरवाद का समर्थन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ पूर्ण है । समग्त सैंतालीस पत्रे है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सं० १९३८ वि० है । रचयिता "द्वारकधा नियासी" दरिया माहब है । प्रस्तुत ग्रथ "अमरसार" नामक ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे है । कदाचित् दरिया माहब के अठारह ग्रथो मे से ही यह भी एक ग्रंथ है । इसमे समस्त मात सौ अठारह साखियाँ है ।

सख्या १५२. सुदामा चरित्र, रचयिता--दलजीत, कागज--देशी, पत्र--८, आकार--९ × ५३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२०, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १९१८ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि-- . . . .
अपर कहौ इतिहास वषानी ।।
वसमुषसुत करि तप भारी । पाइ अचल वर चलेउ सुरारी ।।
लंकहि आइ हेतु सब वूझी । पिता पितामह गए सब जूझी ।।
तव षल जात भयो सुर लोका । जीति सुरन्ह कीन्हेउ वस सोका ।।
देव दनज कर मरे न मारै । करि वहु जतन सकल सुर हारे ।।
गिरि कंदरन जाइ वहु काला । सह्यौ देव वहु विपति विसाला ।।
तव सुरपति विधि लोक सिधाए । करि अस्तुति वहु विनै सुनाए ।।
कह विधि सुर सब कुस पह जाहू । मिटहि महा दुष दारुन दाहू ।।
सुर सुरपति निज स्वारथ हेतू । गयो अवध जह रघुकुल केतू ।।
कुस से आपनी विनै सुनाई । सुनि भूपाल वार नहि लाई ।।
गये तुरित सुरपति के साथहि । निसिचर वधि वसाइ सुरनाथहि ।।

अंत--दंपति प्रेम परस्पर वचना । कहि न जाय यह अनुभव रचना ।।
पाइ सुधन सुंदर सुख वासा । करहि विविध विधि भोग विलासा ।।

।। छंद ।।

करु विविध भोग विलास दंपति लाभ लहि प्रभु सरन की ।
"दलजीत" परिहरि आस सब अवसर न जदुपतिचरन की ।।
विज दीनता जदुपति कृपा सुमित्त सुजस जो गावही ।
सो करहि सुष वहु भाति दरिद्र भव नहि पावही ।।

।। दोहा ।।

सेस सहस मुष सहस सो सहस गिरा गनराउ ।
बरनहि हरि गुन कल्पसत तदपि पार नहि पाउ ।।
सो जदुपति चरित उदार सुनत सुषद पावन परम ।
कहेउ मति अनुहारि निज वानी सुध होन हित ।।

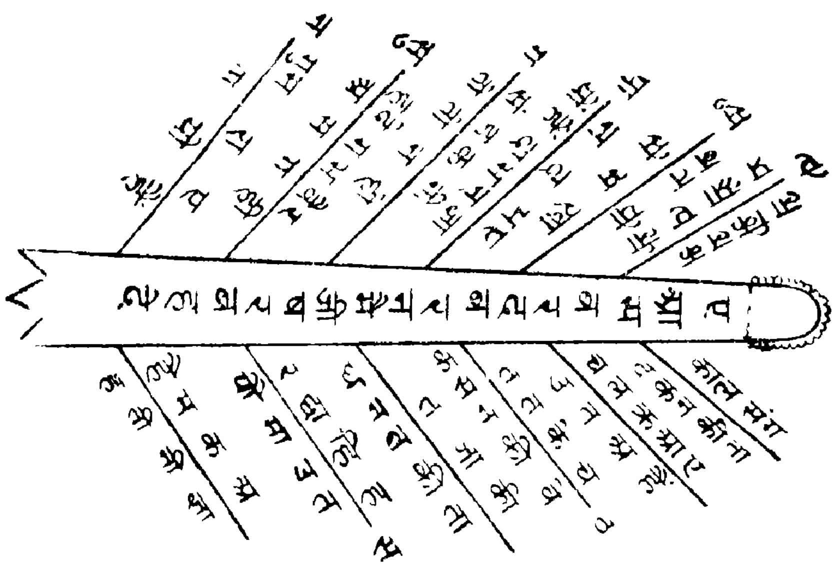
इति श्री पोथी सुदामा चरित्र संपूर्णम् संवत् १९१८ कुआर पूर्णिमायां भृगुवासरे ।

विषय--सुदामा की कथा का वर्णन ।

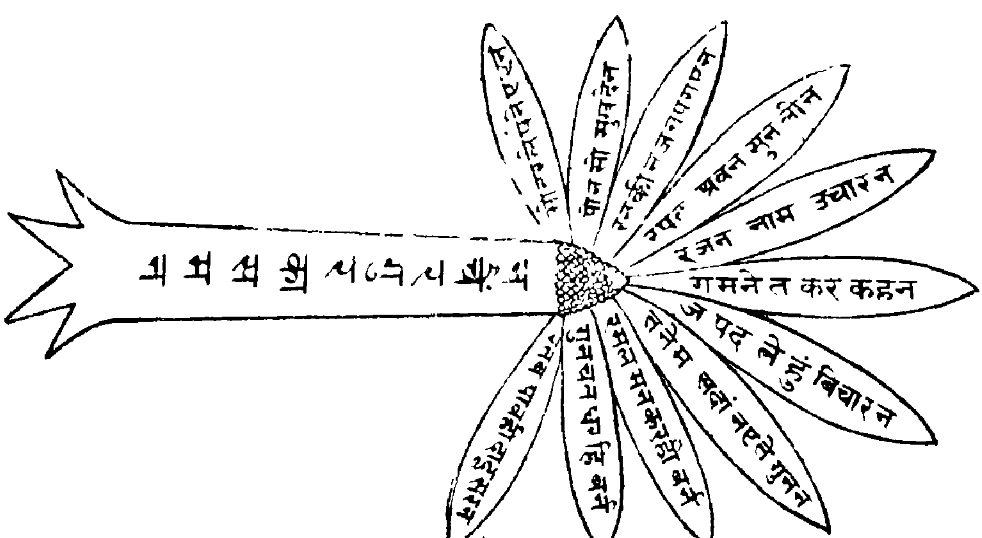
विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ के आरभ के ६ पत्रे नही है । लिपिकाल सवत् १६१८ है। रचनाकाल ज्ञात नही । रचयिता का नाम दलजीत है जो जहाँ तहाँ छदो मे प्रयुक्त मिलता है । कविता दोहे, चौपाई और सोरठा आदि छदो मे की गई है ।

सख्या १५३ चित्रबध काव्य, रचयिता--दादू (? सभवतः चैन), कागज--देशी, पृष्ठ--१५, आकार--११॥ × ५। इच, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य (चित्रकाव्य), लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, ह० ब० ६१, पु० सं० १ ।

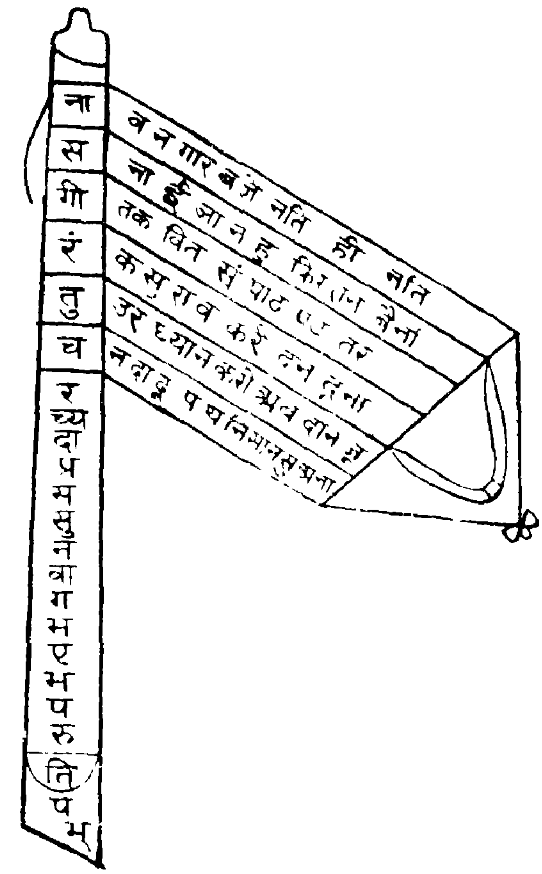
आदि--वृछबंद मनहर छंद--



मध्य--पृष्ठ ८ में--



अंत—



विषय——चित्रकाव्य वर्णन । इसमे निम्नलिखित चित्रकाव्य है :——

वृछ बध (मनहर छद), पर्बत बध २, स्वस्तिक बध, कदली बध, वृक्ष बध २, धनुष बध, कपाट बध, सर्प बध २, ताला बध, चौपड़ बध, द्वार बध, कदली बध, कमल बध २, कमल बंध २, जहाज बध और ध्वजा बध ।

विशेष ज्ञातव्य——खुले पत्र, चित्र बनाकर उसमे अक्षर लिखे है । लाल स्याही तथा काली स्याही से चित्र बनाए गए है ।

संख्या १५४. रागनिर्णय, रचयिता---दास, कागज---देशी, पत्र---१८, आकार---१० × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१३ परिमाण (अनुष्टुप्)---१७५, खंडित, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १८३५ वि० संभवतः, प्राप्तिस्थान---कुवर लक्ष्मण प्रतापसिंह, ग्राम--साहीपुर नौलखा, पो०--हंडिया, जिला--इलाहाबाद ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ॥

रागरूपमूरी ताल झंपा

अरी जसोदा तेरो कान्ह हमी सो करै लगरई ।
वाट घाट मोही रोकत टोकत बाँह गहै बरीग्रइ ॥
षेलतु फगु उमंग भरे पिचकारी लिये तन सारी भिगाई ।
'दास' कहै सबही जी कै इन मोहीं सुधि करो पाई ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अंत---करन चौताला

मेरी विनए सुनो जो तू अभै वरदानी ।
निसवासर सोवत जागतहू बिसरो जिनि महरानी ॥
अंतर वाहिर तुमहि निहारत रहौ सदा मनमानी ।
दासहि आस और नही दूजी सुनिए मोज निधानी ॥

इति दीपक पुत्र गारा जलधर भरन अरन करन वर्णनं रागनिर्नय बाइसमो प्रकासा ॥२२॥

काफी तेवरो

एरी गरब गहेली होतन जोबन गरब न कीजो ।
जैसे कुसुभ रंग चटकीलो छनक छनक छन छीजै ॥
ज्यो तखिर की छाँह मध्य दिन तैसेही गुनि लीजौ ।
कहत 'दास' पिय के मिलब बिन कैसे कै जिय जीजै ॥ ३ ॥

---अपूर्ण

'इति नादार्णवेहि श्री मदुपाध्याय जदुनंदन सूनुना माणिक्येन कृतो रागरत्नः सप्तः ॥'

विषय---संगीत विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---पुस्तक खंडित है । आरंभ में संस्कृत ग्रंथ 'राग रत्न' है, जिसका रचयिता माणिक है और जिसमें लिपिकाल सं० १८३५ वि० दिया है । उसकी पुष्पिका इस प्रकार है :--- प्रस्तुत पुस्तक में रचनाकाल और लिपिकाल उसके खंडित हो जाने के कारण अज्ञात है ।

रचयिता का नाम 'दास' है । अन्य वृत्त नहीं मिलता । इसमें अध्यायों के स्थान पर 'प्रकास' प्रयुक्त हुए है । विषय की दृष्टि से ग्रंथ उत्तम है ।

संख्या १५५. ब्रज महात्म चंद्रिका, रचयिता---दास, कागज---देशी, पत्र---७३, आकार---७१/२ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---९, परिमाण (अनुष्टुप्)---८२१, अपूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १८०५, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि---.........................

नाक पीठ पै डीठि कै ईठ करौ सो ठौर ।
यह साधन वह सिद्धि है सबै चलाचल और ॥ २ ॥ ९९ ॥

॥ कवित्त ॥

वर है विसोक एक रमा रानी जू को ओक और सबै रोक सोक गिनि करसाने मैं ।
काल के चलाए ते चलत चहूंघां है जहां तहां रहै थिरा सबही के थरसाने मैं ।

काहू कौन बाधा सुष को अगाधा राधा मानि माधव अराधा कहै दास सरसानै मैं ।
तरनि किरनि सी प्रकासमानी वृषभानी कीरति वितानी राजधानी वरसानै मै ।।१५।।

मध्य— उधौ

राजकाज अभिमानी राजधानी मथुरा तैं "दास" लाज काज साजि व्रज कौ नवायौ हौ ।
कंसकूप अंध तामै परयो महामद हरि ऐसे बंधु प्रेम सिंधु मै न्हवायौ हो ।
मागतु हो सखि मोहि दीजै सीष भीष आयौ सषिन सिषावन को सीषन को आयौ हो ।
मेरी मोह मैटन कौं अपनो समेटन कौ दै कं स्याम भेटन कौ भेटन ठायौ हो ।।१३५।।

।। दोहा ।।

ज्ञान रीति कहि प्रीति रहि ऊधौ हरि पं आइ ।
कहि न सके सहसा दसा रही अकोल अकुलाइ ।।१४४।।

अंत— ।। कवित्त ।।

लोक वेद रीति कही भेटन अनीति कही भेटन कौ परी प्रीति रीति कही वासकी ।
व्रज अनुराग कह्यौ जगत विराग कह्यौ विरह सुहाग कह्यौ जैसी रोकी रासकी ।
अवतार गति कही एकै हरि मति कही सतीपतिनी की वृति कृति कही दासकी ।
अर्थनि सौं भरी ग्रंथ कोठरी की कूंची कही सूचीपत्र करि जो प्रकासं आस आसकी ।।१७२

कृष्ण चंद्र चंद्रिका कौ कहै नही ह्यां संक ।
व्रज निसंक है अंक भरि लीनौ स्या कलक ।।३२६।।

इति श्री व्रज महात्म चंद्रिकायामात्मनिवेदनो नाम षष्ठ प्रकासः ।। ६ ।।

।। दोहा ।।

सिव मुख रव बसु सुधामिधि संवतसर आधार ।
कार्तिक कृष्ण चतुर्दसी ग्रंथ लिष्यौ रविवार ।। १ ।।

नौमि रामानुजं भाष्यकारं सदा येन कृत ग्रंथ शत मेटि पाषंड पथ भेटि मत वेदवेदांत सारं ।
कर्ममति ज्ञान जुत भक्ति अद्भुत अमित चित्त वृत्ति नित्य हरि गीत गानं ।
शैव शाकत सौरि गानेशलेश बिनु वैष्णव धर्म कीरति वितानं ।
द्रविड द्विज कुल वरं शंकर भयकरं धवलाधश सकल दलि कलि कलेसं ।
तत्व उपवेस त्रय लेस उपदेश करि करयौ नरवेश आवेश शेषं ।
कुहर कशमल हरंत करत प्रफुलोत मनाजन अरविंद वत अनायासं ।
वास विस आसप्रद वासकमलालयं तमनिसा नास विनक(र) प्रकाशं ।।११।।

विषय—श्रीकृष्ण की कुछ कथाओं का संक्षेप मे वर्णन कर व्रजमाहात्म्य वर्णन किया है ।

ग्रंथ मे निम्नलिखित छ प्रकाश है :—

१. प्रथम प्रकाश	अनुकूल सकल्प		पत्र ८ से १३ तक
२. द्वितीय प्रकाश	गोपत्व वर्णन		पत्र १३ से २७ तक
३. तृतीय प्रकाश	प्रतिकूल त्याग प्रार्थना		पत्र २७ से ३७ तक
४. चतुर्थ प्रकाश	व्रजवासि विश्वास		पत्र ३७ से ४७ तक
५. पचम प्रकाश	अनन्य साधन कार्य		पत्र ४७ से ७० तक
	अन्य साक्षात्कागानुसधान योग		
६. षष्ठ प्रकाश	आत्म निवेदन		पत्र ७० से ८० तक

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख के आरभ के ७ पत्रे नहीं है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपि-काल संवत् १८०५ दिया है ।

संख्या १५६. पंथ पारख्या, रचयिता—दास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—३½ × २¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—......कोई नकरियो रिसि ॥ ४ ॥ वाणी अमृत बेलड़ी।

बहुत किय विसतार ॥ कीरति दादू दास की ॥ चढ़ समंदा पार ॥५॥ दादू ॥ चौपई॥ काष्ट मैं ज्यूं चंदन सार पाहिन मैं पारसि निरधार ॥ दूध मांहै घृत जैसे नांनि त्यूं दरसन मैं दादू का ज्ञान ॥५॥ दसं औतार मांहि ज्यूं कृष्न ॥ तीन्य देव मांहि ज्यूं विष्नु ॥ सकल शास्त्र मैं गीता जांनि ॥ त्यूं दरसन मै दादू का ज्ञान ॥६॥ कपिन मांहि वड़े हणवंत ॥ ऋषिन मांहि ज्यूं नारद संत ॥ तीरथ मैं ज्यूं गंगा कही। त्यूं सतगर मै दादू सही ॥७॥ सतगुर कहै सति की बात। जाते पावें हरि साष्यत ॥ डिभ पाषंड न उर्पार भेष। मन मै सुमिरै एक अलेष ॥८॥

मध्य—दादू पंथी तिसक नाम जीतै लोभ क्रोध अरु काम ॥
माया मोह करै सब दूरि पांचौ इंद्री राषै चूरं ॥२४॥
भिक्षा कारण हठ न कराई ॥ अण बंछ्या आवै सो षाई ॥
लूंषा सूंषा कवहु न कहै दादू पंथी ईहि विधि रहै ॥२६॥
छाजन भोजन इतना लेह काया वतन चहिये जे ॥
संचत करै न लोभी होइ दादू पंथी कहिये सोइ ॥२७॥

अंत—दादू जी के नांवपर ॥ वारु पिक प्रशन।
दास कहै अरण नहीं गुर गोविंद की आंण ॥४४॥
दास कहै अरण नही रत है बीन ॥
पौता सणि सांई राह दादू जी के चरण की सरज्यो मौको षेह ॥४५॥
षेह सिरज्यौ या चरण की सुनि सांई अरदास ॥
मनसा वाचा करमना ॥ रहौं चरण के पासि ॥४६॥

इति श्री दास जी पंथ पारख्या संपूर्ण ॥

विषय—इस ग्रंथ में दादू पंथियों के सिद्धांतों और नियमों का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—प्रथम पत्र लुप्त हो गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या १५७. सूर्यकांड, रचयिता—दासराम, कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—६ $\frac{६}{१०}$ × ५ $\frac{२}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ वि०, प्राप्तिस्थान—पंडित भागवत तिवारी, ग्राम—कुरथा, पो०—पीरनगर (गोरा बाजार), जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सूर्य्य काण्ड प्रारभ्यते ॥
सिंधुरवदनहि सुमिरि करि बंदि गिरा गुर पाय।
"दासराम" रविकाण्ड कृत कहि जयराम सहाय ॥
जो अव्यक्ता चिन्त्य है निरगुण गुणमय भार।
जग समस्त धृत तेहि प्रणत ब्रह्म नंत करतार ॥
गुणा गुणात्म तनोति जग समन तृविधि अघताप।
जगत करण कारण हरण ब्रह्मांड मित प्रलाप ॥
गिरिजा प्रस्न महेस सुनि जगदुत्पत्ति संहार।
लगे कहन विस्तार सों श्रीशिव सुमति अगार ॥

॥ चौपाई ॥

ॐ अनादि अज अगुण गुनाला । परंतेज पर ब्रह्म कृपाला ॥
ते प्रभु रचित पंच संसारा । करहि हरहि जग बारम बारा ॥
मध्य—निविषार सुष संपति भ्राता । रहहि मुदित परजाजुत राजा ॥
जब लगि पौष मास नहिं आई । गुंज रात अति दुषदाई ॥
जब दस मास वीतिकै जैहै । हरित निरस तव सस्त विकैहै ?।
नहिं तौ ता विच देस तिलंगा । होइहि विनकृत रुज रण रंगा ॥
यह अधिकार सकल श्रुति गावा । श्रुति विमुखी कहुँ सुष नहिं पावा ॥

॥ दोहा ॥

ताहि अब्द के अंतर अन्य महंग कहु होइ ।
मास मार्ग की पउष मह बुध गावत सब कोइ ॥

मेष संक्रमन हिमकर वारा । ताहि वर्ष कर सुनु व्यवहारा ॥
देस स्वस्थ नरपति जुत नीती । प्रजा समोद परसपर प्रीति ॥

अंत—तुम अनंत तुव गुण अमित कोउ नहि पावत थाह ।
हौ हौ मग्न भावाब्धि मह गहु रमापति बाँह ॥

इति श्री "दासराम कृतो" मा महेस्वर सम्वादे सर्व गुणालंकृत वत्स रामभरण तृतीयावस्थित सूर्ज काण्ड सम्पूर्ण । विक्रमाब्दी सम्वत् १९११ आस्विन शुक्ल त्रयोदस्यां बुधवासरे रामेस्वर कायस्थ लीषा ग्राम भदारी श्री गुर के दया ते प्रगणे चयरणपुरा मले अंगरेज के० ।

राशि चारि कुंभादि मे जापर गुर्व्रतिचार ।
पूर्व नहि वक्री तदा लुग केज्य अस वार ।

विषय—उमा महेश्वर संवाद । जगत की उत्पत्ति तथा नाश का वर्णन । ग्रह, लग्न आदि का विचार तथा फलाफल । इसमें तीन खंड इस प्रकार हैं :—

प्रथम खंड में १४ चौदह पर्वे ।
द्वितीय खंड में १६ सोलह पर्वे ।
तृतीय खंड में ७ सात पर्वे ।

संख्या १५८. नीति रत्नाकर, रचयिता—दिग्विजय सिंह, निवास स्थान—बलरामपुर (गोंडा), कागज—देशी, पत्र—२३४, आकार—८$\frac{२}{१०}$ × ५$\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७२६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक—डी० ए० वी० स्कूल, बलरामपुर, गोंडा ।

आदि—. . . . .

नवार वंशावतंस अर्जुन सिंहात्मज दिग्विजय सिंह बहादुर विरचिते ग्रंथ "नीति रत्नाकर" मंगलाचरण वेश नगर राजवंश वर्नन प्रथम. प्रकाशः १

अथ भूमिका वर्णन ॥ चौपाई ॥

सित दशमी कुवार बुधवासर । नभ दृग ग्रह शशि संवत् आषर ॥
ग्रंथ नीति रतनाकर कीन्हे । कवि कोविद मुनिजन मत लीन्हे ॥
काढ़े रतन मथन छीर जैसें । चौदह वृत्ति ग्रंथ महँ तैसे ॥
कवि कोविद सों विनै हमारो । तजि दूषन भूषनहिं सुधारो ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

धन्वंतरि सम धरापति न्याय औषधी लेइ ।
मनि प्रकाश करि नीति पथ नेक वर्दाहि लषि लेइ ॥ १ ॥

मंजुल मैत्री मित्र मति धन संगति गुन लेइ।
विद्या कामदधेनुवाँ अर्थ कामना देइ॥

:o: :o: :o:

नाम दिग्विजय सिंह प्रगट विजय भूप धरि जाम।
पद कोमलता कवित हित आरोपित अभिराम॥

:o: :o: :o:

अंत——ग्रंथ नीति रतनाकरै पढ़ै सुनै जो कोय।
रतन पदारथ कों लहै चारु चातुरी होय॥११॥
रतनाकर सों भें प्रगट रतन चौदहो आय।
त्यों प्रकाश चौदह किये नृपति नीति ठहराय॥१२॥
संवत् शशि दृग ग्रह शशी वुध हरि वासर वेश।
पक्ष असित फागुन भलो कीन्हें पूर्ण नरेश॥

इति श्री जनवार वंशावतंस श्रीमहाराज अर्जुन सिंहात्मज श्रीमहाराज दिग्विजय सिंह वहादुर विरचिते नीति रत्नाकरे रसवर्णनं नाम सप्तदशः प्रकाशः १७ समाप्तम्।

विषय——नीति तथा रस एवं अलकार वर्णन।

रचनाकाल

संवत् शशि दृग ग्रह शशी वुध हरिवासर वेश।
पक्ष असित फागुन भलो कीन्हे पूर्ण नरेश॥

विशेष ज्ञातव्य——ग्रथ खडित है। समस्त दो सौ चौतीस पत्ने है। रचनाकाल स० १९२० वि० है। यह मुद्रित है, पर मुद्रणकाल का पता नही।

संख्या १५६क. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता——दुखहरण, कागज——देशी, पत्र——३८, आकार——८ × ३¾ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ट)——६, परिमाण (अनुष्टुप्)——३१३, पूर्ण, रूप——प्राचीन, लिपि——नागरी, लिपिकाल——स० १९३८ वि०, प्राप्तिस्थान——श्रीयुत विद्याप्रसाद राजाराम, स्थान व पोस्ट——महम्मदाबाद गोहना, जिला——आजमगढ़।

आदि——राम १ श्री गनेस जी सहाय, श्री लिष्यते प्रहलाद चरित्र

आरंभ ॥ चौपाई ॥

महा असुर हरनाकस राजा। काह कहो जस ताकर साजा॥
ऐसो काउन तपेसा कीन्हा। संकर होइ प्रसन्न वर दीन्हा॥
राती देवस नहीं मीतु तुम्हारी। नहि तुम्र मरन अकास पताला॥
बाहर भीतर होइ न काला। ....
जे बुंद रुधिर परे मही माही। तेतिक हरनाकस होइ जाही॥
जस वर मांगसी तस वर पाएसी। प्रववंत होए सीस बोनाएसी॥
सुर नर मुनी सब कहें दुष देई। मारी डाटी सरबस हर लेई॥

॥ दोहा ॥

लागे करन उपद्रो भा मन महं हंकार।
अब को मारि सकै मोहि अस को है बरिआर॥

अंत—— ॥ दोहा ॥

कवनी वड़ाई कागए ऐसे प्रभु के भाषी।
"दुखहरन जन बंदही सीर पुहमी पर राषी॥

॥ चौपाई ॥

चौथे प्रहलाद काज अवतरे नरासिंघ रूप छेत्र सुलतानपुर पटन पुनीत है ।
माता चंद्रावती औ पीता हरी ब्रंह्म रीषी गुरु अत्रीत तेज जाही के नमीत है ।
मारो हरनाकस असुर वलीवंड सुर जग में भक्त के गाठे हरी मीत है ।
"जनदुखहरन" सुजस तीहुपुर भए सुर नर मुनी गावत जो गीत है ॥ १ ॥

इती श्री प्रह्लाद चरीत्र संपुरन प्रती जो देष्या सो लोष्या पंडीत जन कु वीनती मोरी टुटल अछर लेव सव जोरी । श्री संमत १६३४ मी० वैसख वदी ६ वार वुध के ॥

विषय--प्रह्लाद की कथा वर्णित हुई है ।

संख्या १५६ख. प्रहलाद चरित्र, रचयिता--जन दुखहरण, कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--१०, आकार--७$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सन् १२८० हि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रंथदाता--पं० स्वामीनाथ दुबे, ग्राम--दुबौली, पोस्ट--खखुद्द, जिला--गोरखपुर) ।

आदि--श्री गनेसाएनमह पोथी प्रहलाद चरीत्र ॥

॥ दोहा ॥

उतर दीसा हरीनाकस असुर अगम अपार ।
ताको चरित्र सुनह कहो सहित वीस्तार ॥
श्री हरि चरन रेनु को आसा । जनदुषहरन कथा परगासा ॥
महा असुर हरीनाकस राजा । काह कहो जस ताकर साजा ॥
सीव को सेवा वहुत वीधी कीन्हां । तव सीव प्रसन्य होइ वर दीन्हा ॥
देव दइत नर सकही न मारी । राती देवस नहि म्रीतु तुम्हारी ॥
नाही तुव मरन अकास पताला । वाहर भीतर होइ नाही काला ॥
तव जहा रुधीर परै महि माही । तेती हरीनाकस होइ जांही ॥
जस वर मागेसो तस वर पाएसी । हरषवंत होइ सीस उठाएसी ॥
सुर नर मुनी सभ कह दुष देई । मारी डाडी सरवस हरी लेई ॥
लागेव करन उपद्रव मन मंह भया हंकार ।
अव को मारी सकै मोही अस को है वरीआर ॥

अंत--धन्य धन्य भक्त वछल सुखदाई । जीन्ह एह जन की पैज पुराई ॥
दुस्ट अधरमी को छए कीन्हा । जन कह लेइ इन्द्रासन दीन्हा ॥
मारत जल थल माह उवारा । जन नीत भए नरसीघ अवतारा ॥
कवनी वड़ाई करिए ऐसेहि प्रभु कह भाषी ।
दुषहरन संतन सुष पुहुमी सीस पर राषी ॥

॥ कवीत्य ॥

चौथे प्रहलाद काज अवतरे नरसीघ सुलतानपुर पाटन पुनीत है ।
माता चंद्रावती पीता हरी व्रह्म रीषी गरु अत्रीत है ।
तेज जाको जगत माह रहै मारेउ हरीनाकस असुर वली वड़सुर जगत मो भगत को गाढ़े हरी मीत है ।
"जन दुषहरन" सुजस तीहुं पुर भए सुर नर मुनी सव गावत गीत है ॥
उधरे चारी वेद लै सास्तर वो षट संध्या धरम अचार जी ।
नवो व्याकरन व ग्रह रासी वारह अठारह पुरान तीथी पन्द्रह सात वार जी ।

बीसा चौदह सताइस नछत्र मूल निछत्र गंगा गीता गाइत्री चौबीस मंत्र सार जी।
थापे रीषी साधु धर्म संधारे जुग जुग दुषहरन दास कारन अवतार जी॥
सन् १२।४० साल

विषय—प्रहलाद चरित्र का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सन् १२४० (?) है।

संख्या १५६ग. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—दुखहरनदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—१०३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० अवधनारायण त्रिपाठी, ग्राम—बलभरनपुर, पो०—मँहगाँव, जि०—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः। पोथी प्रह्लाद चरित्र

कथा दु कृत दुषहरनदाश लिषा प्रह्लाद चरित्र॥

॥ दोहा॥

आषर अर्थ न जानौ नहि गुर ग्यान उपाइ।
राम चरित कछु वरनौ श्री गुर होहु सहाई॥

॥ चौपाई॥

महा असुर हरिनाकुश राजा
काह कही जश ताकर आजा।
शिव कि सेवा बहु विधि कीन्हा
तव शिव होई प्रसन्न वर दीन्हा।
देव दैत नर सकहिं न मारी
राति देवस नहिं मृत्तु तुम्हारी॥

अंत—

॥ चौपाई॥

अग्या प्रभु के सिर पर लीन्हा।
प्रह्लादहिं इन्द्रासन दीन्हा।
गिति नाद भौ वाजन वाजा।
भा जन निर्मल पातक भाजा।
:o: :o:
धन्य भक्त वत्सल सुषदाई।
जेन्ह पह जनक पंज पुराई।
दुष्ट अधरमी कै छै कीन्हा।
जन कह लै इन्द्रासन दीन्हा।
:o: :o:

॥ दोहा॥

कवन वड़ाई करिये ऐसी प्रभु की भाषि।
"दुषहरन जन वंदिये" शिर पुहुमी मे राषि॥

॥ कवित्त॥

चौथे प्रह्लाद काज अवतरे नरसिंह रूप छत्र मुलतान रूप पाठन पुनीत है।
माता चंद्रावती औ पिता हरि ब्रह्म ऋषि गरु अमित तेजहों कवन रीत है।
मोरउ हरिनाकुश असुर वलीवंड सुर जक्त मे भक्त के गाड़े हरि मीत है।
जन दुष हरन सुजस तिहु पुर भऔ सुर मुनि गावत जो गीत है॥
इति श्री प्रह्लाद चरिसंपूर्ण शुभ मस्तु ० श्री रामाय नमः।

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन ।

संख्या १६०. बोलार चरित्र, रचयिता—दुखीराम बरनवाल, निवासस्थान—**गोठनी** (सारन, बिहार), कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—८ × ५$\frac{3}{4}$ इन्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, रचनाकाल—सवत् १८५३ वि०, लिपिकाल—स० १८५३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रघुनदन प्रसाद चौबे, ग्राम–तिलिया बड़ी, पोस्ट–सतराँव, जिला–गोरखपुर ।

आदि—श्री भवानी जी सहाइ ।। श्री गनेस जी सहाइ ।। श्री पोथी बोलार चरित्र ।।

मैं बीनवो कर जोरी कै श्री गुरु चरन तोहार ।
जनम जनम तुव महीमा गावहा एही संवसार ।।
परथम बरनो श्री गुर चरना । मोही जनीत संसै सभ हरना ।।
मम हीरदेए प्रभु पंथ देषायो । पंडोकृत सुजस बीसतारो ।।
जग जननी तुम्ह होहु सहाई । श्राषर श्ररथ मोही देहु मेराई ।।
सकल साधु के रेनु मँझारो । हरीमुन कथा सुजह बीसतारो ।।
कवरो पंडो श्राहे भाई । कपट सनेह सदा चली श्राई ।।
पंडो कह जगदीस नेवाजा । पापी गेश्रान जुरजोधन राजा ।।
देषी सहाय सो गरभ भुलाना । श्रापुन काल सो नाही श्रनुमाना ।।
येक देवस सकुनी के बोलाई । सौ भाइ लीन्ह सग लाई ।।
करन दरोन सग लीन्हा श्रौर श्रसथामा बीर ।
सएल सगुनी सभ श्राए म्हाम्हा रनधीर ।।

मध्य—ठाढ़ भए कुरछत्र मंझारा । सौय भाइ बोलार प्रचारा ।।
तवही द्रोन गुरुवान संधाना । जाकर सबद तिहुंपुर जाना ।।
बीहसी द्रोन कहा प्रचारी । श्रब बालक करू हम सन मारी ।।
तव हसी द्रोन छाडा सर साता । दे श्रासीस चुँबी के माथा ।।
बीबीधी वान बोलार प्रचारा । के प्रनाम तव चरन पषारा ।।

श्रंत—पाँचो वंधु गोद के लीन्हा । वहुत श्रसीस बोलारही दीन्हा ।।
हम श्राछत सुत तुम रन करहु । एह श्रन उचित कहा उर धरहु ।।
षेलहु जाइ तुम षाहु तमाला । पुनिएह रन मह करहु न पेला ।।
हमरो नाम हानि पुनि होई । श्रापु श्राछत बालक रन करई ।।

।। दोहा ।।

जो देखा सो लीषा पंडीत जन सो बीनती मोरी ।
टुटुल श्रछर लेव वटोरी ।। . . . .

इति श्री बोलार चरित्र दुषी राम वरनवार साकीन मोठनी परगने चोवारमी भावो वदी १४ रो वुध के पइश्रार भेश्रा समत १८५३ सन् १२३ शाल मोकाम वलुश्रा कोठी नई ।।

विषय—नागकन्या से उत्पन्न भीमसेन के पुत्र बोलार का चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल सवत् १८५३ है ।

संख्या १६१. निर्गुन नहछुर, रचयिता—दूलनदास, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—७$\frac{1}{16}$ × ६$\frac{2}{16}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् भोलानाथ जी 'भोरेलाल' ज्योतिषी, ग्राम व पो०–धाता, जिला–फतेहपुर ।

आदि—श्री सतगुर साहेब ए नम नीरगुन नहछुर लीषते ॥
सगुन सुमंगल एह बड़ एह बड़ कुसल छेम रे ।
नीत नव बढ़े अषंडित चरन कंवल दीढ़ प्रेम रे ॥
दुइ कर जोर मनावो सतगुर संत सांच दीन ।
सुफल मनोरम कीन्ह चुक छमा जनी जनी नहछुर प्रभु जगजीवन ॥
विनय मै चरन मनाए रे ॥
समरथ सत सीध दाएक होए सहाए रे ।
करहु कीपा पन वढे सत नेह रे ॥

अंत—
मुनी एह प्रीतमकार सबतीअ । हमै भलेउ सुषी तज रहे सबतीअ ॥
पीअ के वतीआ होय मेरे जभी प्रीती ।
वेलहारी हरदुनो पतीअ ॥
सषा "दुलन" पीअ कार सब तीअ ॥
घुमेउ मैहर चुनी चुनी मोतीअ ।
सषा मोरे सजन के हार ए मबतीअ ।
नीरगेन नेह छुर संपुरन भए ॥

विषय—निरगुन ब्रह्म का नेह वर्णन ।

संख्या १६२. रामाश्वमेध, रचयिता—देवकृष्ण, कागज—देशी, पत्र—८७, आकार—९$\frac{3}{4}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१०४४, अपूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्र), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री रामचंद्राय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रामास्वमेध लिख्यते ॥
॥ भाषा ॥ श्लोक
मंगलं भगवन् विष्णुः । मंगलं गरुडध्वजं ॥
मंगलं पुंडरिकाख्यं । मंगलायतनो हरिः ॥ १ ॥
श्री रामचंद्र सुद्धं गुणान्वितं भामा उनमीलितं ।
दीपं ज्ञान प्रकास सुज नयं आनंद दानं शुभं ।
कलिकलमषमखिल मथनं सौख्यार्थ लाभप्रदं ।
देव कृष्ण निज सुमत्यो अनुरूप भाषां करोत् ॥ २ ॥
॥ दोहा ॥
गणपति सारद शेस शिव सियाराम गुर मोर ।
इनके चरन सरोज जुग बिनय करू करु जोर ॥
:o: :o: :o:
मोरे मनमें अभिलाष महा शुभ चाहत प्राकृत ग्रंथ भनी ।
रघुबीर सुधाजस अंकित ते जनपावन दावन सोक भयं ।
अस जानि जिये जु कृपा जु करो मतमंद ज मोर भरोस नयं ॥
॥ दोहा ॥
संवत् अठारा स(त) वरष बहुरि बींस औयेपंच ।
मैन मास अधु इंदुपरिव रामा जनम तव मंच ॥
अतिसै अधम कठिनि मै स्वामी । सब जग दोष बोध अनुगामी ॥
नही भरोस मोहि तोहि भरोसा । गति लिषि दोउ उर भयोउ हरोसा ॥

मैं अति दीन दीन तुम बंधु । मैं श्रोगुन गृह तुम गुन सिंधु ।।
मै अति पतित पतित तुम पावन । मैं दुषन तुम दाष निसावन ।।
मैं कुघात तुम पारिस रूपा । मै अतिरक भवन तुम भूपा ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

ऐसे प्रभु कु छाडि करि "देव" भजहि तेह आन ।
ता सम मुढ न अध कोउ किंकर मन तेह जान ।।
:o: :o: :o:

कवि कौन जो परबंध नाहिन सभा संतन आदरो ।
निन बृथा किय परिषद तत्व विचार कर नाहिन करी ।
रस मधुर सगुन जुक्त बिनु जस राम भनित अपावनं ।
गुन रहित सब गुन एक रामहि सजन सोहि मनभावनं ।
एहि कीन दृढ़ हित जानि नीज एहि सभा संतन मे सुनी ।।
सब ग्रंथ सार सु राम जस गति हेत सब सुख को गुनो ।
तिहि कहुं मति अनुस्वार बानी करन पावन मोहिसो ।
पुनि सजन आनद दैन नर कृत हेत सब जिय जानि सो ।।

।। दोहा ।।

कहुं वरनि रघुपति सुजस पावन गग समान ।
सब सुखदायक हरन अघ चहु फल दायन दान ।।

इति श्री रामासुमेध प्रथम मंगलाचरण स्तुति करनारम वर्णननाय संपूर्ण ।।

।। दोहा ।।

व्यास सान रिष शेष को कहु संवाद सुचारु ।
सुनतहि नासे मोह भ्रम कहु मोर मति मारु ।।

।। चौपाई ।।

एक बार रिष दोउ कर जोरी । बचन कहोउ मृदु अतिरस बोरी ।।
सुनु शेष मन बिनती जोई । राषु नाहि तुमु सुन गोई ।।

अंत—

।। दोहा ।।

बहोरि कहेउ रिपु सुदनहि सुनु ममद महिपाल ।
बहोउ सेनि निज साजि सब एह सहसा करिकाल ।।

।। चौपाई ।।

सुनि प्रभु वचन समंद सुत एका । दीन राजपुर चरि अभिषेका ।।
बहोरि सेनि निज बहो विधि सा................ ।।
:o: :o: :o: —अपूर्ण

विषय—रामाश्वमेध का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित और जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है । रचनाकाल सं० १८२८ है । लिपिकाल ग्रंथ के अंत से खंडित होने के कारण अज्ञात रह गया ।

संख्या १६३क. हनुमत वीर रक्षा, रचयिता—देवीदत्त शुक्ल पंडित "धीर", निवास-स्थान—हसराजपुर (सोराव तहसील, इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१०१/२ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०५ वि०, लिपिकाल—सं० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० छोटेलाल जी मिश्र, ग्राम—हसराजपुर, पो०—होलागढ़, जिला—इलाहाबाद ।

आदि---श्री महाकाल्यै नमः ।। हनुमते नमः ।। छप्पय ।।

रक्त जलज सम नयन सुभग सिर मुकुट विराजत ।
मेचक कुंचित केश वेश श्रुति कुंडल छाजत ।
भ्रकुटी कुटिल विशाल भाल उर माला सोहत ।
चन्द्र वदन सुख सदन मदन सत कोटि लजावत ।।
उर भुज विशाल भूषन सहित तडित वसन कटि पट लसै ।
रघुवीर मूर्ति भनि धीर मम उर अंतर निसुदिन वसै ।। १ ।।
हेम पद्म छवि नव्य भव्य प्रद तुल्य उल्लकर ।
वज्र अंग नख वंक लंक निश्शंक पंक कर ।
वीर दंड उद्दंड दनुज दल दलन प्रचंडन ।
पिंग अच्छि अति स्वच्छ वक्ष विस्तीर्ण सुमंडन ।
लांगूल कठिन जिह्वा रदन सहित वदन भ्रकुटी विकट ।
श्री धीर भनय मारुत तनय भजे न आवत दुख निकट ।। २ ।।

अंत---

नाथ मैं गरीब तूँ गरीब को निवाज खास आम मोहि रावरी न जानौ छल छन्द को ।
वेद औ पुरानन मैं गावन विलंद यश भावन ऋषीशन के रूप जो अनन्द को ।
नेक कोर मेरी ओर कृपा कै निहारो वेगि निज जन जानि के बिदारो दुख दंद को ।
धीर जू भनत मैं न काहू को गनत कहूँ तेरुई भरोस से दुलारे रघुनन्द को ।

।। कुंडलिया ।।

अग्नि कोण मह क्रोश नग तीरथ नृप अभिराम ।
अमरावति सो लसत है हंसराजपुर ग्राम ।।
हंसराजपुर ग्राम हंसनिभ कोविद जामैं ।
धर्म नेम विद्याविवेक सरसोरुह तामैं ।।
देवीदत्त सुधीर वीर रक्षा गृह कीन्हा ।
होइ सो निरदुख भक्त पाठ जो चित दे लीन्हा ।।१५।।

।। दोहा ।।

एक ऊन दश दून करि नभ अरु अब्धि मिलाय ।
मार्ग शुल्क दशमी सुतिथि कियो विनय हर्षाय ।।१६।।

इति श्री देवीदत्तकृता हनुमत वीर रक्षा समाप्ता ।।

विषय---हनुमान जी की स्तुति ।

रचनाकाल

एक ऊन दश दून करि नभ अरु अब्धि मिलाय ।
मार्ग शुल्क दशमी सुतिथि कियो विनय हर्षाय ।।१६।।

संख्या १६३ख. अलङ्कार दर्पण, रचयिता---प० देवीदत्त शुक्ल "पंडित", "धीर", स्थान---हसराजपुर (सोरांव तहसील, जि०---इलाहाबाद), कागज---देशी, पत्र---२४, आकार---१० $\frac{७}{१६}$ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---६, परिमाण (अनुष्टुप्)---४५६, खंडित, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---संवत् १६१० वि०, लिपिकाल---१६१० वि०, प्राप्तिस्थान---प० छोटेलाल जी मिश्र, ग्राम---हंसराजपुर, पो०---होलागढ़, जिला---इलाहाबाद ।

आदि—श्री गुर गणेशाभ्यां नमः ।। श्री महाकाल्यै नमः ।।
भाले चन्द्रन्दधानङ्कुर मृग परशुंभूति क.क्षप्रशान्तम्
दृप्ताहि व्यूहरग्यङकुशमित वदुङ्कोटि पूषप्रभाढचम् ।।
:o: :o: :o:

।। षट्पदी ।।
व्याघ्र अजिन करि वसन भूरि जीमूत श्याम तन ।
शोण नलिन दस नयन मयन मद लाजत प्रतिछन ।
कर कपाल करवाल भाल शशिबाल विराजत ।
दुष्ट दरत भय हरत करत पालन जन छाजत ।।
लोल ललित रसना दशन विकट प्रकट त्रयतापहर ।
सोइ पंडित देवीदत्त को रचना करै सो सिद्धिकर ।। ५ ।।
:o: :o: :o:
सुकुलनाथ विख्यात पढ़े श्रुति शास्त्र तन्त्रवर ।
सुत गंगाधर तासु तरणि सम तेज जाहि कर ।
तासु भवानीचरण विदित दश चारि भुवन जस ।
ता सुत ठाकुरराम कियो तप बल हरिहर बस ।
पुनि रामदत्त ताके तनय श्रुति पुराण रस शास्त्रवित ।
पुनि ता सुत देवीदत्त भो ग्रंथ कियो चाहत विदित ।। ६ ।।
:o: :o: :o:
शिवप्रसन्न नृप है तहाँ सो प्रोत्साहन कीन ।
अलंकार रचना करो जो अल्पै श्रम लीन ।।११।।
:o: :o: :o:
नृप धानी होला नगर सोहत अति अभिराम ।
चारि वरण आश्रम तहाँ विलसत आठौ याम ।।१७।।
:o: :o: :o:
कंज से सुरभि औ चंप से अंग छवि पद्मिनी अमी सो वयन जानो ।
नाचिवो चारु अरु चाउरी गाइबो चित्रिणी चित्त को हारिणी मानो ।
पातुरी देह अरु आतुरी केलि मो संखिनी कर्कसा कूर सानो ।
पीन है देह तनु नाहि कारण कछू हस्तिनी कीर्ति तरु कान्ति बानो ।।४४।।

अंत—शास्त्र चमत्कृत चातुरी चंद्रकला कर धार ।
हौ तथापि आज्ञा लिए कह्यों नृभाषा चार ।।११२।।
व्योम चंद नवभूमि मित संवत कार्तिक माह ।
शुक्ल सप्तमी मे कियो ग्रंथ पूर्ण नृप चाह ।।११३।।

इति श्री सकल सामंत चक्रवर्ति चूडामणि दिल्लीश्वराकब्बर साहदत्तप्रतिष्ठ चौधुरी नरेंद्र शिवप्रसन्न सिंह प्रोत्साहित सुकुलोपनामक देवीदत्त विरचितेऽलंकार दर्पणेऽलंकार निरूपकस्तृतीयोल्लासस्समाप्तोयं ग्रंथः ।। सम्वत् १६१० ।। कालिकायै नमः ।।

विषय—अलकार वर्णन । इसमे तीन अध्याय (उल्लास) है ।

रचनाकाल

० १ ६ १
व्योम चंद्र नव भूमि मित संवत कार्तिक माह ।
शुक्ल सप्तमी में कियो ग्रंथ पूर्ण नृप चाह ।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । दूसरे अध्याय के सब पत्रे लुप्त हो गए है ।

संख्या १६४. रचयिता---देवीदास, कागज---देशी, पत्र---३, आकार---७१५/१६ × ६२/३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१८, परिमाण (अनुष्टुप्)---५७, पूर्ण, रूप---प्राचीन, लिपि---कैथी, लिपिकाल---सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान---श्री युत् भोलानाथ जी, उप० भोरेलाल, ज्योतिषी, ग्राम व पोस्ट-धाता, जिला-फतेहपुर।

आदि---कजानाम साहेब देवीदास क लीष ।। तेहराह जरती ।। गुरह जरती ।। मोहीबक सीवत ।। चौगुन अरज अमंद ।। गुरजमंद ।। कुमती दरमा अन है ।। इमान कहसु ।। अवनीहव अदोसर दील को सकत ।। मेहरा भूप को दआ ।।

:o: :o: :o:

अंत---कुरवन जाने देवीदास अपनी काआ करखो कइ तरीष बंदगी कहो ।
एकनाम अलाह अलषरोज अषना चहो ।।
।। समपुरन कजानाम ।।

विषय---ज्ञानोपदेश।

संख्या १६५. सोमवंश वंशावली, रचयिता,---देवीदास, कागज---देशी, पत्र---८, आकार---१०१/२ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---९, परिमाण (अनुष्टुप्)---१४४, **पूर्ण**, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १८३१ वि०, प्राप्तिस्थान ---**आर्यभाषा** पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि---श्रीकृष्णाय नमः अथ सोमवंश की वंशावली वर्णनं

।। दोहा ।।

गुर गनेश पग वंदि कै प्रणमि सारदा माइ ।
सोम वंस बरनन करौं सबको सरस सुनाइ ।। १ ।।
प्रथम देषि हरिवंस कै श्री भागवत निहारि ।
निरषि भविष्य पुरांन कौं तब ए कहे विचारि ।। २ ।।
श्री नारायण प्रथम ही जलसाई भगवांन ।
तिनकं इछा ऊपजी रच्यौ जगत उनमांन ।। ३ ।।
नारायण की नाभि तें उपज्यो कमल उदार ।
ता ऊपर ब्रह्मा भए च्यारि बदन आकार ।। ४ ।।

।। छंदपाधरी ।।

तिनके मरीचि रिषिराइ हूव । **तिनके जु अत्रि भए सरस सूव ।।**
भए अत्रिदेव के सोमदेव । **भए सोमदेव के बुध अभेव ।। ५ ।।**
तिनके पुरूरवा गुणनिधांन । **अजु भये आइ तिनके सुजान ।।**
अजु के भये जु नृप नहुषराइ । **ते सबनि इंद्र कीनें बनाइ ।। ६ ।।**
अंत---भये छत्रपाल के धर्मपाल । **ते दांनि जांनि अरु प्रजापाल ।।**
भये धर्मपाल के रतन पूत । **ते भांति भांति विधि विधि सपूत ।।८४।।**
कुलि जिन्हि मांझ भयौ महादांनि । **गुनगीत राग को महाजांनि ।।**
घोरे दिये सु कंऊ हजार । **मुहरें दई सु कंई हजार ।।७५।।**

:o: :o: :o:

जापर कृपाल श्री नंदलाल । या रतनपाल के रीछपाल ।
गुन गन अपार बरनै सु कौन । सबकौ सहाउ सब गुननि भौन ।।८०।।
राजाधिराज करौ अटलराज । तौलौ विरंचि सिब सुर समाज ।।
तिहिं घर कुमार श्री कुँवरपाल । जिनिकैं नपाल गोपाल पाल ।।८१।।

जदु वंस सहित करियौ सुकेलि । दिन दिन प्रताप बढियौ सुवेलि ।।
दोउ पिता पुत्र कौ यह असीस । देवी कहै सु जीऊ लष वरीस ।।८२।।

इति श्री देवीदास कृत सोमवंस की वंसावली समाप्तम् ।।१।। लिखितं मिश्र कनही राम-गढ़ भरथपुर मध्ये स्वात्मज पठनार्थ संवत् १८३१ मिती फाल्गुन शुदि २ रविवासरे रामः रामः ।। रामः

विषय—सोमवंश के राजाओं की वंशावली वर्णन की गई है। (रचयिता करौली के राजा रतनपाल के आश्रित थे जो सोमवंश के राजा थे)।

वंशावली इस प्रकार है --

नारायण
|
ब्रह्मा
|
मरीचि
|
अत्रि
|
सोमदेव
|
बुध
|
पुरुरवा
|
आजु
|
नहुष
|
जजाति (ययाति)
|
जदु
|
क्रोष्ट
|
परजानिवास
|
सातिवास
|
अग्नितेज
|

मकु
|
चित्ररथ
|
ससि बिंद
|
पृथुश्रवा
|
उग्रसेन
|
धर्मराज
|
रुचिकराज
|
जयस्तंभ
|
विकुंभ
|
क्रथकराज
|
विकुंति
|
जुद्धदेव
|
नीलदेव
|
दमघोष
|
व्योम
|

विकुंति
|
भीमरत्थ
|
रतनरत्थ
|
शकुनि
|
करमसेनु
|
विरात
|
विछत्र
|
ाघ
|
कुंवरराज
|
मनु
|
गापु
|
गृति
|
अंधकुभ
|
भगवान
|
वेदरथ
|
हरदीकराइ
|
देवमीढ
|
पूरसैन
|
वसुदेव
|
श्रीकृष्ण
|
प्रद्युम्न
|

अनिरुद्ध
|
वज्रनाभ
|
सुबाहु
|
सतसेन
|
रविसेन
|
विसाल
|
सुमत्र
|
सुखेन
|
विसेन
|
श्रुताय
|
सुचाय
|
छेमधर्म
|
रुचिकराइ (इनके समय मे कलियुग आया। व्यास देवजी लोप हुए। अपने शिष्य वैशपायन को सब पुराण दिए और कृष्ण वंश का वर्णन करने का उपदेश किया)।
|
सुवृनराई
|
सुश्रम
|
सुमतिराइ
|
दृढसेन
|
सुबल
|
मिवजीत
|

विश्वजीत
|
रिपुजीत
|
हैहयकुमार
|
धर्मपूत
|
कालजीत
|
मबलराइ
|
भूरिश्रवा
|
लोकजीत
|
कुंतिभोज (माहनजीत बादशाहों को जीतने वाले)
|
भद्रसेन
|
सुमत
|
धनेस
|
सुनाभि
|
दिनेस
|
क्षेमधर्म
|
छत्रधर्म
|
वेदधर्म
|
वीरसारि
|
समिहिजए
|
चंद्रसेन
|
महससेन
|

वीरबाहु
|
अंकबाहु
|
भीमसेन
|
उग्रसेन
|
धर्ममूर्ति
|
देवदत्त
|
देवानीक
|
रुचि अपार
|
विश्वकेतु
|
विवस्वान
|
वीरबाहु
|
व्रजबाहु
|
अरिमर्द
|
अरिकल
|
लोकेस
|
कुमविंद
|
ससिविंद
|
संग्रामजीत
|
जैदर्प्पराई
|
हैमंगद
|
अनंग
|
नंद

विरचि
नद
सत्य
श्रीरग
रिपुमर्द
रवितेज (?)
भद्रसेन
नदराई (?)
वीरसेन
सिधुपाल
जगतपाल
नरपालदेव
सग्रामपाल
केतुपाल
भूमिपाल
तुछपाल
पाल
ब्रह्मपाल
जैदपाल
विजयपाल (बहुत प्रसिद्ध हुए)
तिहनपाल

धर्मपाल
कुँवरपाल
अजैपाल
हरीपाल
साहनपाल
प्रथीपाल
राजपाल
तिलोकपाल
वापल्लदेव
ग्रामल्लदेव
महगदेव
घघल्लदेव
अरजनदेव
विक्रमाजीत
अभयचद
पृथीराज
उदयचद
परतापरुद्र
चन्द्रसेन (अकबर इनके पास गए)
भारथीचद
गुपाल
द्वारिकादास

|
मुकुंद
|
जगपाल
|
छत्रपाल
|

धर्मपाल
|
रतन
|
रीछपाल
|
कुँवरपाल

संख्या १६६. पहौप प्रकाश (पुष्प प्रकाश', रचयिता--देवेश्वर माथुर, कागज--देशी, पत्र--१६, आकार--७½ × ५½ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८३६ वि०, लिपिकाल--सं० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। अथ पौहौप प्रकास पहोप सिह प्रति प्रस्तूयते ।।

।। सोरठा ।।

दिपत दंत दुतिवांन सिंधुर सिंधुरवदन वर ।
उदै भयौ निसि भांन सरद मेघ संझ्या समै ।। १ ।।

।। छप्पय ।।

सुँडाडंड उडंड उडित दुति मोदिक मंडित ।
वलित ललित लघुचंद भ्रग मदमत्त घुमंडित ।।
सिंधुर सिंधुर वदन रदन राजत छविवंता ।
सरद मेघ संझ्या सुसमय शोभित निशिकंता ।।
सुमिरत 'देवेश्वर' जोरि कर गुन अनंत विघनन हरहु ।
सुष चरित पौहोप चाहत कह्यौ ग्रंथ सकल पूरन करहु ।। २ ।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

विघ्न राज अष्टक कह्यौ पौहौप सिह गुन हेत ।
विघनहरण हित सुष करण कारन काव्य सचेत ।।
व्रज नरिंद्र को कुवर प्रताप । ताको सिह वहादुर आप ।।
पौहौप सिह ताकै परगास । तहित किय यह पौहौप प्रकास ।।
इति प्रथमोदल ।। १ ।। ।।

मध्य--छंद पारसी को नाम वेहेर तवील

वौहौत है आध पल भाको भुजै वांके विहारी की ।
पियारे सांमरे सुंदर निकट सकट विदारी की ।।
अजायव माधुरी मूरति गरायव सांवरी सूरति ।
लटक वरनोन जानै तुज मुकट सुंदर उदारी की ।।
वसत जुगराम कहलाए व कलघनस्याम वनि आए ।
अजव अथ कथकथा है नंद के नंदन कुमारी की ।।

:o: :o: :o:

अथ प्रीत पावस ।। दोहा ।।

सजनी सजनीरद निरषि हरषि नचत इत मोर ।
पीव पीव चावग रटै चितवत हरि की ओर ।।

॥ सवैया ॥

सीतल मंद सुगंध समीर सरीर लगै धुनि बोल तुहोपि ।
भूमि हरी जलदेषि भरी सुधि सब्ब हरी सुष की गति लोपि ।
"देवेसुर" ग्रान कहा कहियै चपला चमकै सुमनौ ग्रसि ग्रोपि ।
प्यारी हमारी गुहार लगौ लग ग्राजु घटा घन घोरि के कोपि ॥

:o: :o: :o:

ग्रंत—ग्रथराजकुल काव्य प्रस्तूयते ॥ दोहा ॥

ग्ररि कंस वंश भासतु भीयावदन स्यंह भुवपाल ।
हरषिराज ताकौ दयौ व्रज कौ श्री नंदलाल ॥

॥ छप्पै ॥

व्रज ग्रजेस वदनेश देस दषिन दल दट्टिय ।
तिहि सुजान सुलतान थाग थाग्गौ थपि लट्टिय ।
तिहि भनि ग्रनुज प्रताप तापता वैरि ग्रापदिय ।
तिहि सुवहादुर स्यंह सिद्धि परसिद्धि भोज विय ।
तिहि कुमर कविन कौ कल्प तरु ग्रविलवित धरि ध्यान ध्रुव ।
भनि "देवेसुर" गढ़ वैरिपति पहुप स्यंह ग्रवतार हुव ॥ १ ॥

ग्रथ नग्र वर्णन

ग्रति पुनीत रवनीक ग्रवनि सुषमा कौ सागर ।
सवं वरण विधि वेद यथा ध्रम परम उजागर ।
ग्रास पास वन वाग फलित कमलनि कमलाकर ।
वापी कूप तडाग सरित सरल सति तरल तर ।
कहि राजहंस कलहंस कुल दुर्ग दीह व्रजयेस कौ ।
भनि देवेसुर सुरपुर सम वैरिनग्र पहौपेस कौ ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

ताही छिन उत्पंनि कीय उनमनमतो उपाइ ।
सिंह सुजान वंठ्यौ हुतौ हुतौ परपाटी कौ प्यार ॥
पिता पिता के नाम के द्वै स्कंद उधारि ।
बेउ हित करिके करै पौहौप प्रकाश प्रकार ॥
सिंध सुजान सुभ गौर कुल राज स्यंह कौ भाय ।
कहौ क्यौ न विधि पूर्ब्बक देवेश्वर हौ जाय ॥
ठाकुर ठहराई उतै इत ग्रभ्यास उपाउ ।
देवेसुर सत कविन कौ पौहौप स्यंह कै चाउ ॥
उठ्यौ सुमन ग्रकुलाइ ग्रति सुन्यौ सुजस जसवान ।
७० ३० ५० १०
सत्तरि तीस पचास दश पायनि पति पति मान ॥

:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

इम सुजान मम ग्राइ सुपाइव । गिरा गनेस ध्यान धरि धाइव ॥
जुक्त उक्त तिन तै तव पाइव । यथा यथा परसंग रचाइव ॥

॥ दोहा ॥

टिपन देवेसूर कियन जुरति जुगति सौ सांठि ।
वासुदेव वसुदेव सुत बरसगांठि कौं गांठि ॥
:o: :o: :o:
सिंह बहादुर कौ तनय दिल देवे सुर देत ।
पौहौप प्रकाश किय ता पठिवे के हेत ॥ १ ॥
दूजौ पद पद प्रथम पद हितू आकलै आदि ।
वरण वरण व्यौपाइकै कह्यौ सिंह भष साधि ॥ २ ॥
शुक्ल पक्ष तिथि ससि सरब अर्द्ध निसा शनिवार ।
९ ३ ८ १
खंड लोक वसु वंद है संवत तत्वविचार ॥
समभि मष करि भाषियौ भई होय जौ भूलि ।
पै जिनकै बुधि बोध हे जिनकौ कह्यौ कबूलि ॥ ४ ॥
अर्जुन विपति सुथान कौ वासी परम सुजान ।
मौज सु मौजीराम की लिषनु भयौ परमान ॥३५॥

॥ चौपाई ॥

ब्रज नरिंद्र कौ कवर प्रताप । ताकौ स्यंह बहादर आप ।
पौहौप स्यंघ ताकै परगास । ताहित कीनौ पोहौप प्रकाश ॥ ६ ॥
इति श्री अष्ट दल कवल पौहौप प्रकास संपूर्ण ॥ १ ॥

भजै सौ पुस्तक देषि कै तैसौ लिप्यौ सवारि ।
कवि पंडित सुजान नर लीजौ चूक सुधारि ॥

शुभं संवत् १८३९ शा १७०४ वर्षे माघ शुदी ११ बुध वासरे लिषतं मिश्र षुवराम गढ़ भरथपुर मध्ये गोपाल गढ़े शुभं ।

विषय---सारदा स्तुति, श्रीकृष्ण और श्री राधिका का गुण वर्णन, प्रीतपावस, वसंत-वर्णन, राजकुल वर्णन, नगरवर्णन आदि विषयों पर कविता की गई है ।

ग्रंथ में 'दल) नाम से आठ अध्याय हैं जिनके नाम नीचे दिए जाते हैं :---

१. प्रथम दल---मंगलाचरण तथा आश्रयदाता का वर्णन	पत्र १ से २ तक
२. द्वितीय दल (पाषुरी)---सारदा स्तुति	पत्र २ से ६ तक
३. तृतीय दल---श्रीकृष्ण गुण वर्णन	पत्र ६ से ८ तक
४. चतुर्थ दल---श्री राधा गुण वर्णन या मानमंजरी	पत्र ८ से १० तक
५. पंचम दल---प्रीत पावस वर्णन	पत्र १० से ११ तक
६. षष्ठ दल---वसंत वर्णन	पत्र ११ से १३ तक
७. सप्तम दल---राजकुल वर्णन तथा ग्रंथ निर्माण कारण वर्णन	पत्र १३ से १५ तक
८. अष्टम दल---श्री कृष्ण विषयक काव्य	पत्र १५ से १६ तक

रचनाकाल

शुक्ल पक्ष तिथि सशि सख अर्द्ध निसा सनिवार ।
९ ३ ८ १
खंड लोके वसु चंद है संवत तत्व विचार ॥ ३ ॥

विशेष ज्ञातव्य---रचनाकाल, लिपिकाल एक ही स० १८३९ है ।

संख्या १६७. द्वारिकादास की वानी, रचयिता—द्वारिकादास "जन", कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० वशिष्ठ उपाध्याय, स्थान व पोस्ट–चिरैयाकोट, जिला–आजमगढ़।

आदि— :o: :o: :o:

भूलि गै तन वन (? मन) की सुधिवाल ॥ ३ ॥
बजति रसमौहरि और सितार । झूमक पग घुघुरन की झनकार ॥

॥ दोहा ॥

झाझ मृदंग सो वामुडी कि वाजत येकै तार ।
रीझि रहत घनस्याम निरषि छवि निरुवारत है हार ॥
चलै सब चंचलता की चाल ॥ ४ ॥
छकी सब छवि मै वृज बाला । मगन भई चितवनि बेहाला ॥

॥ दोहा ॥

द्वारिका दास आस सत गुरु की मागत है यह दान ।
स्यामा स्याम रहस लीला छवि रहे सदा उर ध्यान ॥
मिटै सब दुष दुरमति जंजाल ॥ ५ ॥

मध्य—अथरेखतासब्द लिष्यते

मन के वहे से क्या भयो जाके नाम हे आधार ।
तकु नेक प्यारे गगन में जह लोन दिन अमृत झरै ।
त्रिकुटी महल के द्वार मे नित सत जह सुमिरण करै ॥ १ ॥
चित्त षैचु सूरति स्वांस को जह जोति वह झलकति अहे ।
धुनि सुनि अनाहद नाद की मन मगन होय देषत रहै ॥ २ ॥
गहि डोरि सोहंग सरा की तव उठति रारकार हे ।
षिरकी षुली दिशि दाहिनी छवि लषत अपरंपार है ॥ ३ ॥
दल सहस को यक केवल है यह रूप पुर्ष विदेह को ।
लषि मिटत भव जंजाल आवागवन छूटो देह को ॥ ४ ॥
जन द्वारिका मत दीन सतगुरु लीन करि निज चरन मे ।
सतसंग भक्ति प्रसंग मे मन रहै नित आनंद मे ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अंद्धासब्द

सुति से नैना फेरि लगावो ।
नाभी मूल स्वाम के मारग केवल कली विकसावो ॥ १ ॥
पवन डोरि गहि चढो अधर का चिन रस नार......

—अपूर्ण

:o: :o: :o:

विषय—भक्ति और विनयपूर्ण पदों का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खंडित है। आरंभ मे पहला तथा अंत मे ग्यारहवे पत्र के पश्चात् के पत्र नही है। रचनाकाल और लिपिकाल भी अप्राप्त है।

संख्या १६८. सात स्वरूप के कीर्तन, रचयिता---गो० श्री द्वारकेश जी, स्थान---कांकरोली, कागज---देशी, पत्र---१३, आकार---५ × ६.१ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२४, परिमाण (अनुष्टुप्)---२७, पूर्ण, रूप---साधारण, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६३, पु० स० ३७ ।

आदि---श्रीकृष्णाभ्यां नमः ।। अथ कीर्तन श्री जी सात स्वरूपन के प्रथम श्रीजी को राग बिलावल ।

देखों हों मैं श्याम स्वरूप ।
वाम भुजा ऊंचे कर गिरधर दाहन भुज कट धरे अनूप ।।
बांध मुष्टि अंगुष्ट दिखावत सनमुख दृष्ट सुहाये ।
चर्ण कमल दोऊ समधर के कुंज द्वार मन लाये ।
अति रहस्य कुंजन की लीला हिय में स्मरन कीजिये ।
द्वारकेश मन वचन अगोचर चर्ण कमल रज लीजे ।। १ ।।

मध्य---राग विलावल ।

देखो अद्भुत रूप सखी री सूरसुता के साथ ।
विवस्था देख सुंदरता कटि कर व तन रहेगे दोऊ हाथ ।
जाते चित्र गौर शांव रत्न उपमा कहन न आवे गाथ ।
द्वारकेश प्रभु या विधि देखो मय तो कर लीयो जन्म सनाथ ।। ४ ।।

अंत---राग कालरो ।

वेणु बजात सुंदर वदन सुनत सभे आई तेह औमर ।
पूछत है छा दे कि उस दन धर्म छोड निज धर्म धर्म कीये है ।
अब उगौउ भये नंद नंदन द्वारकेश प्रभु हम सब जानत न्याय कहत मनमथ मन कंदन ।। ८ ।।

विषय---श्रीनाथ जी, मथुरेश जी, विट्ठल नाथ जी, द्वारकाधीश जी, गोकुल चद्रमा जी, गोकुलनाथ जी, मदनमोहन जी, इन सात भगवत्स्वरूपों का वर्णन है । द्वारिकेश जी संप्रदाय के उद्भट आचार्य थे । ये वल्लभाचार्य के वंशज थे । अतः इनके रचित पदो मे साप्रदायिक सिद्धातो का प्रामाणिक निरूपण होता है ।

संख्या १६९. भविष्यदत्त कथा, रचयिता---धनपाल, स्थान---माण्मर (? गुजरात), कागज---देशी, प्राचीन, पत्र---२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१०, परिमाण (अनुष्टुप्)---४५, खंडित, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि.............लिउ दे संतरु ।

तेण वहह तेण सहएं सघइकज्जइ । यहु सिभंति अजु निखज्जइ ।
तांणि सुणे विसरूअए वुच्चइ । आय हो सरल सहाउण सुच्चइ ।
एहु महंतु पुतु तव वष्ष हो । ता मिउ धण हो पउर मा हष्ष हो ।
सहु जणणि ए गेह हो सीसारिउ । अछइ कढकदंतु भणे खारिउ ।
।। घत्ता ।।
जइ रंजो...पहु निम्मल गुणे ह । जणणि वयण हिय वइ धरइ ।
तो पहरे विकस्य महा विसेण । अग्गहं पडि परिहउ करइ ।। १५ ।।

:o: :o: :o:

अंत--- ।। घत्ता ।।

आलिंगिउ लेवि राए नेह निरंतरेण । अद्धासण दिष्णु सुघसणेह गुणंतरेण ।।६।।

पुष्पु पुष्पु पहु वरिसइ गियलोय हो । अहो नवल्लु पडिवाइउ जोय हो ।
एहु सुघणवइ पुत्तु मह तउ । कमल हे तणउ सुद्धु गुणवंतउ ॥
:o: :o: :o:
तोपि. . . . .री विभव अवह्मोएवि । थियरणि दुहिय हे वयणु पलाएवि ।
॥ घत्ता ॥
तहि काले सुमित्त. . . . .
:o: :o: :o:

——अपूर्ण

विषय——अपभ्रंश भाषा का काव्य है जिसमे भविष्यदत्त की कथा का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ खडित है। केवल सख्या ८ और ७२ के दो पत्रे उपलब्ध है। अपूर्ण होने से न तो रचनाकाल और लिपिकाल का ही पता चलता है और न रचयिता का ही, पर ग्रथ "भविष्यदत्त कथा" के नाम से छप गया है। श्री निरीक्षक जी (प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र) के यहाँ इसकी छपी प्रति है। ग्रंथ अपभ्रंश भाषा मे है जो हिंदी का अति प्राचीन रूप है। इस दृष्टि से प्रस्तुत ग्रथ महत्वपूर्ण है। छपी प्रति मे रचयिता का नाम धनपाल है। राहुल साकृत्यायन कृत "हिंदी काव्यधारा" के पृष्ठ २६० पर धनपाल का उल्लेख है जिसके अनुसार वह सवत् १००० ई० मे वर्तमान सागर (गुजरात ?) देश का रहने वाला धाकड़ वैश्य था। गायकवाड़ ओरिएटल सीरीज से ग्रथ छप गया है।

संख्या १७०क. चेतावनी, रचयिता——धरनीदास, कागज——देशी, पत्र——७, आकार——७½ × ३¾ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)——७, परिमाण (अनुष्टुप्)——७०, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——स० १८४१, प्राप्तिस्थान——काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, (ग्रथदाता—प० वामदेव तिवारी, ग्राम—भीरा, पो०—मुहम्मदाबाद, जिला—आजमगढ)।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामचंद्राय नमः ॥

ॐ जै जै उचारो धरनि ध्यान धारो ।
तजो मन वेकारो भजो प्रान प्यारो ॥
महाराज राजा भगति भाव काजा ।
जवहि गर्भ वासा कियो मानुषासा ॥
वनो माथ हाथा चन्द्रन पीहि साथा ।
लगे पेट गूवा अहुठ हाथ सिवा ॥
रकत मासु हडि त्वचा रोम गडि ।
नयन जिमि नाशा श्रवन इद्रि आशा ॥
वोम्फि अंत जेजा फूफेशा करेजा ।
कियो दसो द्वारा पवन प्रान धारा ॥
तहा प्रान प्यारा दियो आनि चारा ।
मलोमुत्र किडा अग्नि आच पीडा ॥
वधो अष्ट गाता अधोमुष झुलाता ।
भयो कष्ट भारी कहता पुकारि ॥
नरक ते निकारो मै बंदा तिहारो ।
करो भक्ति पेसि कहो आजु जैसी ॥

अंत——
सुषदेव जयदेव सोभा सोहाई ।
रयदास रोन' धना घिरताई ॥

अपर नाम अधम तजि पातिसाहि ।
दुनि में प्रगट प्रेम ताको शरारहि ।।
फकिरि करै सोइ साचो अकिदा ।
मसाले रहेमा वजिदा फरिदा ।।
निके नानि के चतुभुज चित्त लाया ।
भजि लोक लाजा तजि मोह माया ।।
विराजो जहा ले भगत लोक माहि ।
कहा ले कहो संत को अंत नाहि ।।
सकल संत दाया चेतावनि चेताया ।
"धरनिदास" आया सरन राम राया ।।

इति श्री धरनिदास कृते चेतावनी पण्डते सुनते गुनते मोक्ष मुक्ति फल लभ्यते श्री नारायन गुर गोविन्द के चर्णारविन्द पादका नमस्ते नमो नम. सवत् १८४१ ।। मीति श्रावण कृष्ण तृतीया या महमिदं पुस्तकं समाप्तव ।।

विषय––ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १७०ख. "निर्गुन लीला", रचयिता––धरनीदास, कागज––देशी, पत्र––३, आकार––६$\frac{7}{8}$ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)––१२, परिमाण (अनुष्टुप्)––२३, पूर्ण, रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––कैथी, लिपिकाल––सवत् १६१० वि०, प्राप्तिस्थान––प० भागवत तिवारी, ग्राम–कुरथा, पो०–पीरनगर (गोरा बाजार), जिला–गाजीपुर ।

आदि––श्री गणेशआए नम्ह श्री सोस्ते नम्ह श्री सुभ देवता नम्ह श्री हनुमान जीव सहाइ ।

करता राम कौ सोई जुग जुग दूजा अवर न कोइ ।।

।। चौपाई ।।

घर एक जो सीरिजनो हारा । उतरे हरिजन सो वनिजारा ।।
ता घर ब्रह्म बीस्न महेसा ।। रज तम सत तीनिउ कर भेसा ।।

।। चौपाई ।।

ताघर पाचव तत्व समानी ।। गुरु परसाद भेद कछु जानी ।।
धरती नीर अग्नी अव वाई ।। पचए आइ अकास समानी ।।
पाचव को परक्रीत पचीसा ।। समुझै ओपा करहि जगदीसा ।।

अंत––

मुए मुकुती समन्ह के होइ ।। जीवन मुकुती संत जन जोइ ।।
ऐसो सवद करो निरुवारा ।। धरनी सो गुरुदेव हमारा ।।
परम जान समुझै समुझावै ।। धरनी सोइ परम पद पावै ।।

इति श्री निरगुन लीला संपूरन ।।

विषय––निर्गुण ब्रह्म का वर्णन और सतमतानुसार ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य––ग्रथ मे केवल तीन पत्रे है । रचयिता धरनीदास है । रचनाकाल ज्ञात नही । लिपिकाल स० १६१० वि० इससे सयुक्त अन्य ग्रथ के आधार पर है ।

रचयिता के एक शिष्य, सरवेश्वर दास ने इस ग्रथ की प्रतिलिपि की है ;

संख्या १७१. धरमीनामा, रचयिता––धरमादास, कागज––देशी, पत्र––१४, आकार––८$\frac{1}{2}$ × ३$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)––१०, परिमाण (अनुष्टुप्)––१२२, खडित, रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल––स० १८८६, प्राप्तिस्थान––काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रथदाता––पं० रामचरण दुबे, ग्राम–वसगीत, पोस्ट–चंडेसर, जिला–आजमगढ़) ।

आदि— :o: :o: :o: :o:

माई बाप भाई सब देषहि घरी घरी छीपही वाही हो ।
बरवस लै डोला बैठारेन्हा हेरही धुप न छाहीं हो ।
गावन्ह की सब सषी सहेलो सुनत मीलन उठी धाई हो ।
दीन दास छाडो जाहु पीव धनी के फीरी पाछे हम आइब हो ।
मन बस सीध वीस गज लगा स्यामा करे न पावा हो ।
नही दीन बीदा न लगन सो धावा वड़े अचानक आवा हो ।
जो कछु बार अहै नैहर कर सो एको नही कीन्हा हो ।
चुरी हाथन तरकी कानन को संग भांति पठाइव हो ।
देषी लोग अहै सासुर कर कवन वडपन पाईव हो ।
ऐसी भांति वुझावो पीयके पीय बाते नही वुझा हो ।
काहुक कहा सुना नही मानै करै अपाना सुझा हो ॥

मध्य—

नही आरती नहीं संध्या तरपन एक धरम वषानो हो ।
नीरंकार नीर्गुन नीरमाआ पारब्रह्म पहीचानो हो ।
नही अचवो नही भुष लगाव वीना नहाने षावो हो ।
गंगाराम राम के पीछे धरमादास कहावो हो ।
मटीका एक वना मँजुसा तामो बोलं तोता हो ।
उस तोते को वोली षाती साहेव नाम न होता हो ।
:o: :o: :o:

अंत—

एक दीली एक वंग मजावे एक आगरा पआना हो ।
एक लंका एक मानीक गावै एक मारे मुलताना हो ।
काछी पटी सहर मानीकपुर तहा भया है धरमा हो ।
आने वाव वठाया साहेब आया बीबीपुर मा हो ।
राम एक धरी ग्यान आपने सीर मो दाग दगाया हो ।
बोन्ह वीनु कोई वात न पुछै वड़ा परुधा पाआ हो ।
है धासी का बेटा धरमा गंगाराम क चेला हो ।
नान्हे माई बाप कह षाएसी आपुही रहा अकेला हो ।
जैसा षरच महीना तैसा वीना उजुर पहुचावै हो ।
:o: :o: :o:

भला औ बुरा एक कै जाने सो मेरा दीलजोई हो ।
षाक सवारी पाक की ताहै नाम धरावा धरमा हो ।
गंगाराम गुरु दुआ दीआ है तव पावा कछु मरमा हो ।

इति श्री धरमीनामा कथा सपुरन जो देषा सो लीषा मम दोषौ न दीयते संमत १८६६ मीती भादो वदी ८ वार सुर्क (? शुक्र) वार कह पोथी लीषा रामदास काएथ मोकाम मउनाट-भंजन श्रीराम जी ।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का प्रथम पत्र नही है । रचनाकाल का उल्लेख नही । लिपिकाल संवत् १८६६ है ।

संख्या १७२क. महाभारत (भीष्मपर्व, द्रोणपर्व), रचयिता—धर्मदास, निवासस्थान—**मऊ ग्राम,** ताल्लुका—डहार, जिला—रीवां, कागज—आधुनिक, पत्र—३८, आकार—६¼ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०१, खंडित, रूप—प्राचीन, **पद्य,** लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६४ वि०, लिपिकाल—सं० १६५० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जनार्दन प्रसाद जी एम० ए०, एल० टी०, ग्राम—कठौली, पोस्ट—मैजा रोड, जिला—इलाहाबाद।

आदि......................

तेही पाछे रथ भीषम केरी। कौरौ सबै रहे जेहि घेरी॥
तेही पाछे कुरवै नरनाहा। आयुध लीन्हे पहिरि सनाहा॥
रतन जडित रथ होइ उजियारा। देव सहित जनु सोह पहारा॥

॥ दोहा ॥

कुरवै केर महाबल सैन समुद्र उलथान।
आपनी अनी जानि लघु पंडुपुत्र अकुलान॥ ५॥

:o: :o: :o:

"धर्मदास" एहि भांतिन प्रथमो देवस सिरान।
डेरा परे दुऔ दल घन घूमरे निशान॥ १५॥

इति श्री महाभारथे भीषम पर्व धर्मदास कृत प्रथमोऽध्याय॥ १॥

अंत— **॥ दोहा ॥**

भीषम कर स्वभाव सुनि धर्म सुनाई नीति।
सब कह जानि परा अस मरन कौन परतीत॥ २८॥
सबही कीन्ह प्रदक्षिण आई। टेकि चरन पुनि बिदा कराई॥
भीषम कह राखे रखवारा। डेरन बहुरे सबै भुआरा॥
कौरव पंडव दल बिलगाने। बसन सनाह श्रोणितन साने॥
कौरौ करुणा करत सिधारे। हिय मह राम मौन मन मारे॥

॥ दोहा ॥

छांडत सांस सेष सम द्रोण दया अकुलान।
निशा बैठि मत ठानत कुरवै कर्णहि आनि॥२६

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत के भीष्म और द्रोण पर्व के अनुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि अंत से खंडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता नहीं चलता। जिस गाँव में यह विवरण लिया गया है वहाँ ग्रंथ की और प्रतियाँ बतलायी गई हैं, पर बहुत प्रयत्न करने पर भी वे देखने को न मिल सकीं। प्रस्तुत प्रति उन्हीं से नकल की गई है। नकल करने वाले ग्रंथस्वामी के पिता श्री रूपनारायण जी शर्मा हैं।

जब मैं (अन्वेषक) गाँव छोडकर कुछ दूर आ गया तब प्रस्तुत ग्रंथ स्वामी श्री जनार्दन प्रसाद शर्मा साइकिल दौड़ाते हुए मेरे पास आए और मुझे वह प्रति दिखाई जो गाँव में थी और मुझे देखने को न मिल सकी थी। उस प्रति को देखने से पता चला कि ग्रंथ की रचना सं० १६६४ वि० में हुई। पश्चात् 'कर्ण पर्व' की रचना रचयिता के पुत्र श्रीपति ने सं० १७१६ में की जब धर्मदास वृद्धावस्था में पहुँच कर अशक्त हो गए थे। ग्रंथ उस समय सरसरी दृष्टि से देखा गया था। परंतु उससे कई बातों की जानकारी मिलने की संभावना हुई। कवि परिचय में गंग, दलपति एवं श्रीपति के नाम आए हैं। गंग को प्रसिद्ध महाकवि कहा गया है। दलपति और

श्रीपति की फुटकर कविताएँ मिलती है, पर उनका वृत्त नही मिलता। ये सब रचयिता के ही पुत्र थे।

इस प्रति मे केवल 'भीष्म' और 'द्रोण' पर्व है जिनके आदि, मध्य और अत के कुछ उद्धरण यहाँ दिए जाते है :—

भीष्म पर्व

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ महाभारत भीषम पर्व धर्म्मदास कृत लिख्यते ॥

भीषम पर्ब केर परवेसा। डेरहि आए सबै नरेसा
भीषम के सिर बांधेउ पाटा। सौपेउ आनि रथन कै ठाटा
चंदन कुसुम आनि नरनाहा। प्रभव प्रभंजन पूजी बांहा
दस दिन कर बीरा नृप दीन्हा। आदर सो उठि भीषम लीन्हा
राय के हृदय अनंद बढ़ावा। रथ चढ़ि सख सरोख बजावा
बीरन सबन कहा समुझाई। स्वर्ग क द्वार नियर भै आई
कर्णहि पाछे घाले राजा। भा दल दमक मारू आवाजा
है अनंत मैमत्त समूहा। महारथी चढ़ि दिमन अरूहा
पूरब दिसा सैन भै ठाढ़ी। मानहुं चली जलनिधि बाढ़ी

॥ दोहा ॥

चारिहु अंग साजि दल रन कर कीन अंगेर।
छुपे अकास मजीठी बान पितामह केर।

मध्य—

बेधे बान विषम तन वीर परे मुरुछाई
भीषम सिंह मसा सरिस समुख सहा न जाइ
असमसान रन बाजे भारी। जे गेराछस करै फेकारी
जोगिनि रकत पियै गिव लागी। गावहि मेद मांति अनुरागी
गिधिनि अंत बिहर लै षाहीं। बैठी अघान स्वान गुरराहीं
प्रेत पिसाच कहौ कत बरनी। रुधिर की धार धोइ गै धरनी
देखु देखु कृष्ण कहा मुष मोरी। अर्जुन पैज झूठि भै तोरी
मारु मारु भीषम कहं आरन सैन तोहारि
बूढ़े कर बल देषहू करत भयानक मारि

अंत—

भरि भारथ अरजुन तजि चारी। तेन्है समर नहि बधवेउ भारी
कीन्ह प्रदिछन विदा कराई। डेरन चले कर्न सिर नाई
भीषम के तन पुनि भै पीरा। मूंदि नैन दिढ़ धरे सरीरा
बोहि निसि भीषम के उतजोगा। जो चित लाइ सुनै सब लोगा
तेन्ह जनु तीर्थ अठरहौ कीन्हा। तेन्ह जनु दान असंषन दीना
तेन्ह जनु धर्म दया प्रतिपारी। तेन्ह पूरन जनु भए मुरारी
नवधा भक्ति भजन तै पावा। भारथ कथा चित्त जेन्ह लावा
कोटि जग्य कृत कर्म कराए। सो फल भारथ सुनतै पाए
साथ पुरंदर निज हरि धामा। जहाँ देवता है अभिरामा
तीनि लोक जस गावहि सुर नर मुनि गंधर्व।
धर्मदास एहि भांतिन भाषा भीषम पर्ब॥ २६४

इति श्री महाभारथे भीषम पर्व भीषम सरसेज्य पवनो नाम दसमो अध्याय १० इति श्री कथा संपूरन जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष न दीवते संवत् १९५० विक्रमी मिती एगहन बदी ४ सन १३०१ फसली व सन १८९३ ईस्वी हस्ताक्षर बृज मंगल सिंह कठौली ॥

आदि--श्री गणेशाय नमः । श्री कथा महाभारथ द्रोन पर्व लिख्यते ॥

जेहि दिन भारथ भीषम मारे । ताही देवस होतु भिनुसारे
बिहरी रैन तिमिर गै फूटी । ललित लपट दिनएर कै छूटी
जागत चिंता उदधि अथाहा । भारी भै समान मन माहां
राजै सबही दीष बिलोई । अब संग्राम समर्थ न कोई
कुरवै करन समुझि भुज भारी । कठिन काल वंधु हितकारी
भैकर सरन हरन मन आवा । करन करन सबही गोहरावा

॥ दोहा ॥

वासुदेव देवन्ह कहं जैसे सदा सहाय
ऐसेह आजु करन रन नाहिन आन उपाय

मध्य--

॥ दोहा ॥

चेदिराज रन जूझे सहित सतंग मतंग
दारुन द्रोण दवानल जरहि जुझार पतंग

जरासिंधु सुत मगह क राऊ । नृप सहदेव ताहि कर नाऊ
सो करि कोह तजत सर धावा । अतरहि द्रोण निपाति षसावा
दल चतुरंग मारि महि पारा । षलल षेत भय लाल अपारा

॥ दोहा ॥

बाए दहिने सन्मुष सब दर गये सिराइ
मानहुं द्रोण धरिगं रन मह पैठे धाई

अंत--

तेन्हकर तनै महाकवि धर्मदास कविराज
चंद्रभान तेनके कुल बरनत लागत लाज

विस्नु भक्त पुरुषन्ह चलि आई । जप तप नेम धर्म अधिकाई
पंडित गुनकर पारव पारा । भाषा मह कवि रीति रसारा
मृषा वाद दोष कह डरऊ । तेहि बरे कवीत नहिं करऊ
अपने कहे न फिरती होई । परमुख अस्तुति सोभा सोई
अपने मुष कर षान समाई । इन्द्रौ कहै हरू होइ जाई
बिना कहै घटि जानै लोगा । उदै क आषर जीभि जमोगा
हरिहर देव हरिहि लै आया । चन्द्रभान तेन्ह के कुल जाया
तेन के वंस धर्म कर धामा । धर्मदास कविराज क नामा

॥ दोहा ॥

तासु तनै कुल मंडन कवि सेषर कवि गंग
जेन्हके भाष बिलास कै बानी तरल तरंग

इति श्री महाभारथे द्रोणपर्वनी द्रोण वधनो नाम पंचमो अध्याये ५ इति श्री द्रोण पर्व संपूर्ण जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष न दीवते सम्वत १९५० विक्रमी मिति एगहन सुदी ११ सन१३०१ फसली वा सन १८९३ ईस्वी हस्ताक्षर बृज मंगल सिंह साकीन कठौली जिला इलाहाबाद प्रगना खैरागढ़ डाकखाना मेजा रोड ।

॥ दोहा ॥

द्रोण पर्व एहि भांतिन तीनि पहर दिन चारि
धर्मदास कवि बरना कुरु पंडव कै मारि
श्री नरसिंह कृपा भै जबहीं । वर्ष पचीस केर कवि तबहीं
संवत विक्रम भूपक भंऊ । सौरह सौ श्रौ चौसठि गंऊ
जहं लगि उगवै अथवै भानां । ताहि सलाम सकल सुभ नाना
महि बघेल विक्रम कै साके । उपमा सचु आहि नहि जाके
मउ नगर तसा देस उहारा । वासुदेव जहां भुम्य भुवारा
रितु वसंत श्रौ माधव मासा । पुन्य देवस तंह कीन्ह प्रगासा
भारथ सुने तवन फल होई । पाछे वरनि कहा सब कोई

संख्या १७२ख. महाभारत (सभा पर्व, वनपर्व और उद्योगपर्व), रचयिता--धर्मदास, निवासस्थान--ग्राम--दम, उहार--बघेलखंड, जि०--मऊ, कागज--देशी, पत्र--२७६, आकार--६ ३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--३५८८, खंडित (उद्योग पर्व के अंत में संख्या १०६ का पत्र नहीं है), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी और कैथी, रचनाकाल--सं० १७११ वि०, लिपिकाल--संवत् १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान--ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० शिवबरन सिंह, ठा० जगबहादुर सिंह, ग्राम--समोगरा, पोस्ट--नैनी, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री राम ॥ पर्व दुसर ॥ २ ॥ श्री गनेसायनमः कथा समार्पंबा ॥

॥ सोरठा ॥

वंदौ पवन कुमार खलबन पावक ग्यान घन ।
जासु हृदै आगार बसहि राम सीआ चापधर ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

प्रथमहि वंदौ दिनमनि देवा । आदि सिस्टि जाकह जग सेवा ॥
जेकरे उदै राति दिन होई । त्रीभुवन का जग भजै सब कोई ॥
सध्या प्रातः पुनि कइ रासी । रिषि सब करहि वेद अभियासी ॥

:o: :o: :o:

धर्मदास कवि जेहि सब जाना । तेन कर तनै गुनी सग्याना ॥
तेन महि एकहि श्रीपति नामा । गुनगन विद्याकर अभिरामा ॥
तेन हसि वचन कहा कर जोरी । तात सुनहु विनती एक मोरी ॥
कवरौ पंडव उपजेउ कैसे । दुनहुन दुसह वैर भा कैसे ॥

॥ दोहा ॥

सो सब मोहि सुनावहु जस जानतहहु तात ।
ब्यास कहा जो भारथ पर्व इगारह श्रौ सात ॥

:o: :o: :o:

॥ पर्वति ॥

संवत साह असोक कर भंउ । सत्रह सै इग्यारह गएउ ॥
वसुधा साहिजहा कै साके । उपमा रिपु बरिआर न ताके ॥
विंध्य उपर इहा देस उहारा । सेंगर साहि प्रताप भुआरा ॥
महासींघ ताकर जुवराजा । दान जुध्य कै जासौ लाजा ॥
आसान देव कवि इक जाहा । कुसुम बिस्टी बरषहि सुर ताहा ॥
सो नरसिघनि सुआएसु दीन्ह । धर्मदास कवि तब एह कीन्ह ॥
पुन्य कथा यह पातष हरइ । नरनारी जेहि सुनतै तरइ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मदास एहिभातिन्ह भारत सभा प्रसंग ।
तावे तनै लोकमनी कविगन महँ जनु गंग ॥ १८ ॥

मध्य—

वन पर्वांत

छंद हरिमोतिका

दुष हरब रमानेवास सो मुनि राधीका पति बोलेउ ।
मम अंग जानेहु आपु सब को भंग कवौ न बोलेउ ।
अब अजर अमरा अछेहु वरदँ दान हरी गवनेव घरे ।
सुनि हर्ष धर्मनेवास श्रीपतिदास वन भाषा करो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सव विवेक दिसि धन कै एक दिसि भारथ ढोइ ।
तौली तूला तारहू वोवुधा हवो न पूरन होई ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अंत—

उद्योग पर्वांत

आउध वाहन अंभर झीना । जे जस तेहि तैसे सब दीन्हा ॥
बालगुरेज वरनी नही जाइ । चमकै अत्र चपला की नाइ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मदास एहि भातिन्ह साधहि वीर परोग ।
भीषम पर्व आगै है इहा लगी भाउत जोग ॥ १ ॥

इति श्री महाभारथे उतजोग पर्वनोनाम कवि धर्मदास कीत वीर डेरन्ह वासनो नाम वस्टमो अध्यायेह ॥ छंद ॥ ६ ॥ ६ ॥

मीति चैत्र सुदी ६ संवत् १८७७ की माल मा लीखा मोकाम लवऐन तालुके अरइल प्रगने इलाहाबाद ।

विषय—महाभारत (सभापर्व, वनपर्व और उद्योग पर्व) की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत साह असीन कर भैऊ । सत्रह सै ग्यारह गएऊ ॥
वसुधा साहिजहा कै साके । उपमा रिपु वरिआर न ताकै ॥

संख्या १७२ग. महाभारत (उद्योग पर्व, भीष्म पर्व, द्रोण पर्व), रचयिता—धर्मदास, स्थान—मऊ ग्राम, (देश, डहार, बघेलखंड), कागज—देशी, पत्र—२८७, आकार—९$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६४ वि०, लिपिकाल—सं० १८८४ वि० (१८८८ वि० उद्योगपर्व), प्राप्तिस्थान—ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० शिवबरन सिंह, ठा० जगबहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—उतजोग श्रीगणेशायन्मह ॥ श्री देवियान महा ॥ पोथी लोखा उतजोग पार्व प्रति धामदास कै ।

कवि कह प्रथमहि व्यास बताही । जेहि सुमिरत उर सुमति समाही ॥
सुष समूद्र दुष दुसह के भंजन । रुचिर रूप राजत मनरंजन ॥
अंबर लोहित सोहित वांहा । गज मुष मह सोभित ससि राहा ॥

पाक हेत दुइ कुंभ सुठाना । तीनि नएन भुज चारिअ जाना ॥
पंचबदन सुत षटमुष भाई । पुरुष अनाद आदि नहि पाई ॥
बंदही पद इंद्रादिक देवा । पावहि सिध्य करहि जे सेवा ॥
सकल मनोरथ दाएक धार्मदास पद ध्यान ।
जे उर जपै नीरंतर पावै फल निर्वान ॥

:o: :o: :o:

धार्मदास एहि भांतिन्ह साधही बीर प्रयोग ।
भीषम पार्व आगे अहही इहा लगे उतजोग ॥

इति श्री महाभारते उतजोग पार्वनी कवि धार्मदास क्रीति सिविखास नो नाम षष्टमो अध्याए ॥ ६ ॥ ६ ॥

उतजोग पार्व लीष धर्मदास क्रीत जो देषा सो लीषा मम दोष न दीअते पंडित जन सो बिनती मोरि बाचव अंछर जोरि कर टुटेउ अंछर लेब बटोरि इहै बड़ाई बुधन की ॥ संवत १८८८ के साल मीती माघ वदी संतमी वार मंगल के संपुरन भा दसषत सीउवकस सोमवंसी कइ ॥

:o: :o: :o:

मध्य---

भीष्मपर्व

एतना कहत गए चली तांहा । बैठे पाट पीतामह जाहा ॥
कै दंडवत कीन्ह परनामा । देषि तेज जस निधि कर धामा ॥
उठि कै मीन्ने परसी हीअ लाए । आदर कै आगे बैठाए ॥
दै आसीस पूछा सुभ काजा । कहां चले राजन्ह कए राजा ॥
कुशल पूछि केसव सन चीतै चरन चीत दीन्ह ।
पुनि हसी कहा पीतामह कहा बीजै न्रीप कीन्ह ॥

:o: :o: :o:

द्रोण पर्व

द्रान पार्व एहि भातिन्ह तीनि पहर दीन चारि ।
धार्मदास कवि वरना कुर पंडव कइ मारि ॥
श्री नरसिह क्रीपा भई जबही । वार्ष पाचीस केर कवि तबही ॥
संवत बीक्रम भूपक भएऊ । सोरह सए औ चौसठी गएऊ ॥
जहं लगि उगवै अथवही भाना । ताहि सलाम सकल सुठाना ॥
महि बघेल बीक्रम कइ साके । उपर सातु आही नहि जाके ॥
मऊ गांऊ औ देस डहारा । वासुदेव तेहि भुम्या भुआरा ॥
रीतु बसंत औ माधव मासा । पुन्य देवस तेहि कीन्ह प्रकासा ॥
भारथ सुनेही जवन फल होइ । पाछेहि वार्नो कहा रहा सोइ ॥
धार्मक तनए महाकवि धार्मदास कविराज ।
चाद्रभान तेन्ह के कुल वर्नत लागहि लाज ॥
आपन मइ नहि कहा वषाना । जगत विदित जसु जेहि सब जाना ॥
बीस्न भाक्ति पुरुषन चलि आइ । जप तप नेम धार्म अधिकाई ॥
पंडित गुन कर पारव पारा । भाषा मह कवि रीति रसारा ॥
क्रीथावाद दोष कहं डरउ । तेहि वरे नर कवित्या ना करउ ॥
आपने कहे न कीरती होइ । परमुष अस्तुती सोभा सोई ॥
इंद्री कहइ हरू होइ जाइ । अपने मुष कर षान समाइ ॥
बीना कहे घटि जानही लोगा । होदै एक आषर जीभी जमोगा ॥

हरि हरदेव हरिहि लए लाए । चंद्रभान जेन्ह के कुल जाए ।।
तेन्ह के वंस धार्म कर धामा । धार्मदास कविराजक नामा ।।
तासु तनए कुल मंडन कविसेषर कवि गंग ।
जेन्ह के भाव वीलास कें वानी तरल तरंग ।।

इति श्री महाभारथे द्रोन पार्वनी कवित्रौ श्री धार्मदास क्रीतौ द्रोन बधनोनाम पंचमो आध्याये ।। ५ ।। द्रोन पार्व संपुरन ।।

द्रोन पार्व संपुरन जो प्रति देषा सो लीषा मम दोस ना दीआते संवत १८८४ मीती पुस वदि ७ रविवासरे प्रति उतारा सीउवकस सोमवंसी ।।

विषय—महाभारत (उद्योग पर्व, भीष्म पर्व और द्रोण पर्व) की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—द्रोण पर्व में रचनाकाल सवत् १६६४ उल्लिखित है, लिपिकाल उद्योगपर्व छोड़कर सवत् १८८४ है । उद्योग पर्व में सवत् १८८८ दिया है ।

संख्या १७२घ. उद्योग पर्व (महाभारत), रचयिता—धर्मदास, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१२¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११००, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान—कुवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—माहीपुर नौलखा, पोस्ट—हंडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेसायनमः ।। पोथी उतजोग पर्वनि महाभारत ।।

।। चौपाई ।।

कवि कह प्रथमहि प्रनवौ ताही । जेहि सुमिरत उर सुमंति समाही ।।
सुष समुद्र दुष दुसह के भंजन । रुचिर रुप राजत मन नंदन ।।
अंवर लोहित सोहित देहा । गजमुष मह सोभित ससिरेहा ।।

।। दोहा ।।

.......भारथदाएक "धर्मदास" पद ध्यान ।
जो उर जपै निरंतर सो अब ही फल पाव ।। १ ।।
घट घट भुगुति स्वाद सव लेई । आपनु मिष्ट नर्क तेहि देई ।।
अजा अविद्या जाकर नामा । सचर अचर सव घट विस्रामा ।।
नारायनी विस्न के माया । जेइ निज काजे जग भर्माया ।।

अंत—

आउध वाहन अंवर भीना । जेजे जस तेहि तैसै दीना ।।
वालगुरे जव नीर्नहि....चमक अत्र चपला की नाइ ।।

।। दोहा ।।

'धर्मदास' एहि भांतिन्ह साधहि वीर प्रयोग ।
भीषमपर्व आ.......हा लगे उतजोग ।। १९८ ।।

इति श्री महाभारते उद्यमपर्वनि कवि श्री धर्मदास कृतौ शीवीर प्र....षाटमोऽध्याय ६ ।। संवत १८६३ श्रावण मासे कृष्णपक्षे नवम्यां भृगुवासर पुस्तक स० ।

विषय—महाभारत उद्योगपर्व की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के बीच बीच के कई पत्रे लुप्त है । रचनाकाल अविदित है । लिपिकाल सवत् १८६३ वि० दिया है ।

संख्या १७३. प्रबोध चंद्रोदय नाटक, रचयिता—धौकल मिश्र, कागज—देशी, पत्र-१२४, आकार—९ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञि संग्रह ६५।५२ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। छप्पं ।।

शंकरनंदन इंदुभाल गणपाल महामति ।
मुक्तिमाल गल चारु हारु झमकत उरि विरतृति ।
हरत विघन वर जाल हाल पूजित नवनिधि धर ।
लंबि विशाल निहाल करत ध्यावत सब सुर नर ।
गजवदन रदन इक सुषमदन मदनदहन मूषकगवन ।
जय शिवानंद आनंद निधि अति अमंद भारति भवन ।। १ ।।

:o: :o: :o:

।। वंस वर्ननं ।। अनुगीत छंद ।।

भूपति भयो जदु वंस मे इक वदन स्पष उदार ।
जल निधि सुता जिहि भुवनमें प्रगटा अमित विस्तार ।
भूपाल भूमि जिते सकल वंदत चरन अरविंद ।
नंदन बहुत जाके भये पूजत सदा गोविंद ।। ४ ।।
द्वै सुत उदार सुचारु ते सिरदार छवि जितमार ।
गुनग्राम मंडित जुद्ध पंडित षंडि शत्रु अपार ।
वय करि वडे महराज सूरज मल्ल उज्जल रूप ।
जीती अनेकन बार सेना म्लेछ बोरे कूप ।। ५ ।।
तिनतें भये परताप लघु जिन कीअ लघु परताप ।
श्री रामचरण सरोज वंदत प्राप्ति पद दुरवाप ।।
तिनके वहादुर सिंघ राजा भये गुन गंभीर ।
गुणि जन समुद्र आनंद करहु मुकर सरस रस धीर ।। ६ ।।
सुत श्री वहादुर कै पहुप परसिद्ध विपुल स्वरूप ।
जगमगत जाकौ तेज उज्वल लषत भज्जत भूप ।।
श्री पुष्प के सुत तीन प्रगटे जे महा परवीन ।
महाराज श्री रणजीत स्यंह प्रताप रक्षित पीन ।। ७ ।।
सुंदर पुरंदर नंद मनु जिमि उदधि नंदन चंद ।
प्रगटयौ कुसुम नंदन वड़ौ श्री तेजस्यह अनंद ।
रघुवर चरण युग नित्य वंदत लहत परमानंद ।
गावत सुनत निरमल चरित ध्यावत गुनन के वृंद ।। ८ ।।
तवही अनुज्ञा पाय धौकल मिश्र मति अनुसार ।
रचि वर्ण भाषा के धरे सज्जन पढौ करि प्यार ।। १० ।।

अंत— ।। मोहिनी छंद ।।

विष्णु भक्ति उचरी तिहि बैन सुनाय ।
उठौ पुत्र कछु चहियै लेव सुभाय ।। ६१ ।।
पुरुष उच्चरयौ मात न यातैं और ।
भलौ कियौ उपकार कहौ सिरमौर ।। ६२ ।।
सांति अराति भए भूपति के आज ।
भो कृतकृत्य विवेक लहे सुषसाज ।। ६३ ।।

निरमल आनद पद मै कियौ प्रवेस ।
यातें परें न कारिज और सुवेस ॥ ६४ ॥
श्री पुष्प नंदन तेज राजत इंदु वंस पदीप है ।
रघुवीर पद अरविंद कौ हिय ध्यान और प्रतीप है ।
तिहिं आनि मांन सुछंद "धौकल मिश्र" रचित निसंक है ।
परबोध चंद्रोदय सु नाटक भयौ षष्टम अंक है ॥ ६५ ॥

बिषय—संस्कृत के प्रबोध चंद्रोदय नाटक का अनुवाद ।

संख्या १७४क. अनुरागलता, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—देशी, **पृष्ठ**—२ (७८ से ८०), आकार—७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० लगभग, **प्राप्तिस्थान**—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८३, पु० सं० ६।२०।

आदि—अथ अनुरागलता लिख्यते ॥ दोहा ॥

॥ चौपाई ॥

प्रेम बीज उपजें मन मांही । तब सब बिषे बास्ना जांही ॥ १ ॥
जग तें भयो फिरें वैरागा । वृंदावन रस मे अनुरागी ॥ २ ॥
सो अनुराग परम सुखदाई । तिहि बिन तहिं न और सुहाई ॥ ३ ॥
नवल प्रेम रस अटक्यौ जोई । धन्य वैराग ताहिको होई ॥ ४ ॥
निसप्रह होइ देह तें न्यारा । जहां मन लग्यौ सोइ इक प्यारा ॥ ५ ॥
ताही के रस घूमत डोलें । भरें नैन जल मुखहु न बोलें ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक को राज सुख देख्यौ तुला चढाइ ।
निमष प्रेम सुष गरुव अति तिहि आग घटि जाइ ॥ ७ ॥

मध्य—पृ० ७६

॥ दोहा ॥

प्रेम रासि दोउ रसिक वर विलसत नित्य विहार ।
ललितादिक नित लेतहैं तिहि रस कौ सुखसार ॥ ३८ ॥

॥ चौपे ॥

नित्य किशोर रूप की रासी । विलसत प्रेम निकुंज विलासी ॥ ३९ ॥
ऐसें दोऊ रस में भीने । चंद चकोर नैन मन कीने ॥ ४० ॥
एक प्रान द्वै देह बिहारी । तिनके बीच प्रेम अधिकारी ॥ ४१ ॥
सहजहिं ताके रसबस प्यारे । एक सुभाउ दुहुन मनहारे ॥ ४२ ॥
तिहि रसको रस अद्भुत आही । ललितादिक दिन लेत है ताही ॥ ४३ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

परम सनेही जुगलवर जानत प्रीति की रीति ।
मन वच के ध्रुव जिन भजे तेई गये जग जीति ॥ ६९ ॥
सत्तरि दोहा चौपई भई अनुरागलताहि ।
जो कोउ उर में आनिहै फिरि है प्रेम लताहि ॥ ७० ॥

इति श्री अनुरागलता संपूर्णम् ।

बिषय—हित संप्रदाय की सेवा सिद्धांत भावना के अनुसार भगवत्संबंधी प्रेम का माहात्म्य और उसकी प्राप्ति के उपाय के साथ श्री प्रभु के युगल स्वरूप का वर्णन किया गया है ।

संख्या १७४ख. आनंदाष्टक, रचयिता––ध्रुवदास, निवासस्थान––वृंदावन, कागज––देशी, पृष्ठ––१ (८१), आकार––७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––४८, परिमाण (अनुष्टुप्)––१५, पूर्ण, रूप––साधारण, पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––सं० १६६० वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८३, पु० सं० ६।२३।

आदि––अथ आनंदाष्टक लिख्यते ॥ दोहा ॥

सखी सबै उडगन मनों अंकि वारि आनंद।
पिय चकोर ध्रुव छकि रहे निरखि कुवरि मुख चंद ॥ १ ॥
ऐसी अद्भुत सभा बनी इकछत सुख की रासि।
फूले फूल आनंद के सहज परस्पर हासि ॥ २ ॥
देखि लाल के लालवहि लालचंद ललचाइ।
नवल कटाक्षित रंग रस पीवतहू न अघाइ ॥ ३ ॥
एकहि पंगुन प्रेम रस रूपरु सील सुभाउ।
अद्भुत जोरी बनी ध्रुव देखि बढ़त चित चाउ ॥ ४ ॥
या रस के जे रसिक जन तिनको कोन समान।
बिना मधुर रस माधुरी परमन नहि कछु आन ॥ ५ ॥
रसिक तबहि पहिचानिये जाके यह रस रीति।
छिन छिन हिय में झलकि रहै लाल लाडिली प्रीति ॥ ६ ॥

मध्य––

यह रस जिन समझ्यौ नहीं ताकी ढिग जिन जाहु।
तजि सतसंग सुधा रसहि सिंधुसुतहि जिन खाहु ॥ ७ ॥
वृंदावन रस अति सरस कैसे करो बखान।
जिहि आगें बैकुंठ को फीको लगत पयान ॥ ८ ॥

अंत––

यह अष्टक जो पढ़ै ध्रुव संध्या और सबार।
ताके हिये प्रकासि रहै मिटै त्रिगुण अंधियार ॥ ९ ॥

इति श्री आनंदाष्टक संपूर्णम्। समाप्तः ॥

विषय––पुस्तक की संपूर्ण नकल दी गई है। इसमें हित संप्रदाय की सेवा सिद्धांत भावना के अनुसार भगवत्स्वरूपानंद का वर्णन है।

संख्या १७४ग. प्रेमलता, रचयिता––ध्रुवदास, स्थान––वृंदावन, कागज––देशी, पृष्ठ––२ (७६ से ७८ तक), आकार––७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––४८ परिमाण––(अनुष्टुप्)––६०, पूर्ण, रूप––साधारण, पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––सं० १६६० के लगभग, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८३, पु० सं० ६।१६।

आदि–– ॥ अथ प्रेमलता लिख्यते ॥ चौपई ॥

प्रथमहि सुभगुरु पद उर आनों। बात प्रेम की कछुक बखानों ॥ १ ॥
और कृपा रसिकनि की चाहों। तब या रस कौ सर अवगाहों ॥ २ ॥
लाल लाडिली जो उर आनि। तैसी मोपै जात बखानीं ॥ ३ ॥
घटि बढि अक्षर जो कहुँ होई। लेहु बनाइ कृपा करि सोई ॥ ४ ॥
रसिक रसिकनी कौ जसु आनों। और कछू जिय जिन उर आनों ॥ ५ ॥

कही प्रेम की गति ध्रुव याते । सुनतहीं सरस होत हिय तातें ॥ ६ ॥
अरु रस रीति पंथ पहिचाने । तब या रस के स्वादहि जाने ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जिन नही समुझयौ प्रेम यह तिनसो कौन अलाप ।
दादुरहू जल में रहै जाने मीन मिलाप ॥ ८ ॥

मध्य--पृ० ७७

अद्भुत नित्य अभूत रस लाल लाडिली प्रेम ।
छिन छिन नख मनि चंद्रिकनि सेवत है सुख नेम ॥ ३८ ॥

॥ चौपाई ॥

प्रेममई रसमेंन विनोदा । नव नव उपजत है दुहु कोदा ॥ ३९ ॥
तिहि विहार रस मगन विहारी । जानत नहीं कित द्योस निसा री ॥ ४० ॥
जो कोऊ कोटिक भांति बखाने । विन स्वादी या रसहि न जानें ॥ ४१ ॥
रहत है दिनहि प्रेम रस सांई । तहां मान की नांहि समाई ॥ ४२ ॥
सुक्षम प्रेम न मन में आवै । स्थूल रूप सबही कौं भावै ॥ ४३ ॥
महामधुर रस सब ते न्यारौ । जिहि ठां दुहुनि अपनपो हारयौ ॥ ४४ ॥
तिनहु देखि आसक्तहू भूली । ह्वै आसक्त सुख रस में झूली ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

लाल लाडिली प्रेम ते सरस सखिनि कौ प्रेम ।
अटकी है निज प्रीतिरस परसत तिनहि न नेम ॥ ४६ ॥

अंत--

ऐसी छबि ध्रुव नेननि मांझ । रह्यौ निरंतर भोररु सांझ ॥ ६४ ॥
प्रेम बेलि वृंदावन फूली । पिय तमाल अंसनि पर झूली ॥ ६५ ॥
देखि महा छवि सुधि बुधि भूली । सब सखियनि की जीवनि मूलि ॥ ६६ ॥
तिनि सखियनि की कृपा मनाऊ । या रस की कनिका जो पाऊँ ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

निसि दिन तौ जाचत रहो वृंदावन रस रेन ।
छिन छिन दंपति छबि छटा छाइ रहौ ध्रुव नेन ॥ ६८ ॥

इति श्री प्रेमलता सपूर्णम् समाप्तः ॥

विषय--हित सप्रदाय के सेवा भावनानुसार भगवत्स्वरूप सबधी प्रेम तथा युगल स्वरूप की लीलाओ का वर्णन है ।

संख्या १७४घ. भजनाष्टक, रचयिता--ध्रुवदास, स्थान--वृंदावन, कागज--देशी, पृष्ठ--२ (८०-८१ तक), आकार--७ × ११ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--४८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य , लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १६६० के लगभग, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्याविभाग, कॉकरोली, हि० ब० ८३, पु० स० ६।२१ ।

आदि--॥ अथ भजनाष्टक लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान सांत रस ते अधिक अद्भुत पवई दास ।
सखा भाव तातें अधिक जिनकें प्रीति प्रकास ॥ १ ॥

अद्भुत बाल चरित्र को जो जसुदा सुख लेत ।
तातें अधिक किशोर रस वृज बनितन को हेत ।। ३ ।।
सर्वोपरि है मधुर रस जुगल किशोर विलास ।
ललितादिक सेवत तिनहिं मिटत न कबहु हुलास ।। ३ ।।
या पर नांही भजन कछु नाहिन है सुख और ।
प्रेम मग्न विलसत दोऊ परम रसिक सिरमोर ।। ४ ।।

मध्य---वृंदावन नित सहजही नित्य सखी चहुं ओर ।
मध्य विराजत एक रस रस में मधुर किशोर ।। ५ ।।
छैल छबीली लाडिली छैल छबीलो लाल ।
छैल छबीली सहचरी मनों प्रेम की माल ।। ६ ।।
पंचबान जिहि पानि है देखि गिरचौ यह रंग ।
तेई बान तिहि फिरि लगे जर्ज्जर भयौ सब अंग ।। ७ ।।

अंत---विवस भयौ सुधि रहि न कछु मोह्यौ महा अनंग ।
लज्जित ह्वै रह्यौ अति नमित करत न सीस उतंग ।। ८ ।।
यह अष्टक जो पढै ध्रुव जुगल चंद संजोग ।
ताके हियै प्रकासिहै मिटै तिमिर हृदरोग ।। ९ ।।

इति श्री भजनाष्टक संपूर्णम् । समाप्तः ।।

विषय---हित सम्प्रदाय की सेवा सिद्धांत भावना के अनगार भगवद्भजन की महिमा तथा भजनीय स्वरूप का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य---पुस्तक की पूर्ण नकल कर दी गई है ।

संख्या १७४ग. रसानन्द लीला, रचयिता---ध्रुवदास, निवासस्थान---वृंदाबन, कागज---देसी, पत्र---७ (४५ से ५२ तक), आकार---७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---४८, प्रकाशन, परिमाण (अनुष्टुप्)---२१०, पूर्ण, रूप---साधारण, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---सं० १६८५, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० ब० ८३, पु० सं० ९।२१ ।

आदि---।। अथ रसानन्द लीला लिख्यते ।।

हरिवंश हंस उदित दिनहि परम रसिक रस रास ।
उसै प्रेम रस किरनि मनो करी जु जगत प्रकास ।। १ ।।

।। चौपै ।।

प्रथम चरन हरिवंश जो ध्याऊं । तातें कछुक प्रेम रस पाऊं ।। २ ।।
प्रेमारस तबही पैं पावै । श्री हरिवंश नाम गुन गावै ।। ३ ।।
नित्य विहार तबहि तौ जानें । श्री हरिवंश पदनि उर आनें ।। ४ ।।

मध्य---पृ० ४८

चंद्रा चंदन घोटी लीये । और अरगजा मृगमद कीये ।।७५।।
अंगनि चित्र विचित्र बनावै । फूलनि माल फूलि पहिरावै ।।७६।।
मुदिता मदन मोद उपजावै । हित सों चरन कमल सहरावै ।।७७।।
विचि विचि कहत है प्रेम पहेली । हसि हसि समझत नवल नवेली ।।७८।।
नंदनि अति आनंद बढावै । मधुर मधुर स्वर बीन बजावै ।।७९।।
विचि विचि मंद मंद सुर गावै । सुनत हिये के श्रवन सिरावै ।।८०।।
कुसुम बीजना मृदु कर लिये । करत पवन हुलसत अति हियें ।।८१।।

अंत—यह रस तो मनहीं में राखौ । भक्तिहीन सों कबहूं न भाखौ ।।८२।।
जथा वुद्धि तौ यह रस गायौ । रसिकनि कृपा तें जो उर आयौ ।।८३।।
रसानंद याकौ नाम कहावै । कहत सुनत आनंद रस पावै ।।८४।।
संवत सौ षोडश पंचासी । वरनत जस ध्रुव जुगल विलासी ।।१८५।।

।। दोहा ।।

यह रस तौ अति अगम है कह्यौ बुद्धि अनुमान ।
पक्षी उडै अकास कौ जहाँ लगि सक्ति प्रमान ।।१८६।।

इति श्री रसानंद लीला संपूरण समाप्तः ।।

विषय—हित सप्रदाय की सेवा भावना की अनुसार युगल स्वरूप की संयोग लीला के आनंद का वर्णन किया गया है ।

संख्या १७४च. रसहीरावली, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—देसी, पृष्ठ—६ (६२ से ६८), आकार—७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ८३, पु० सं० ६।१ ।

आदि—अथ रस हीरावली लिख्यते

।। दोहा ।।

प्रथमहि श्री गुर कृपा तें यह उपजी उर आनि ।
बरनो रस हीरावली जुगल केलि रसखानि ।। १ ।।

।। चौपई ।।

रंगभरे दोऊ लाल रंगीले । रति के रस पगि रहे रसीले ।। २ ।।
अति सुंदर वृंदावन माई । नवल प्रेम रस दिन बरषाई ।। ३ ।।
सुख अनूप नव कुंज सुहाई । छवि के फूलनि सो जनु छाई ।। ४ ।।
मृदु मृदु दल जलजनि के लीने । अति सुगंध सोधैं सों भीने ।। ५ ।।

मध्य—पृ० ६५

।। दोहा ।।

रूप सखी कौ धरें ध्रुव सेवत दिनहि वसंत ।
छिन छिन रुचि लै दुहुनि की फूलत फलत अनंत ।।६७।।

।। सवैया ।।

ग्रीखम की रितु जानि सहेलिनु कंज कपूर की कुंज बनाई ।।
चंदन चंद के खंभ रचे दल कोमल रंग सुरंगनि छाई ।।
उज्जल सेज सुदेस सुहावनी बारि गलाल सो लै छिरकाई ।
राजत है ध्रुव लाडिली लाल विनोद कै मोद बढ्यौ अधिकाई ।।६८।।

।। चौपै ।।

आई ग्रीषम सोभा अैना । अंगनि छवि देखत भरि नैंना ।। ६९।।

अंत—रसमै रस हीरावली पढिहै ध्रुव जो कोइ ।
प्रेम कमल तिहि हीय तें तबहीं प्रफुलित होइ ।।१६१।।

और न कछू सुहाइ ध्रुव यह जाचत निसि भोर ।
याही रस की चटपटी लगी रहौ हिय मोर ।।१६२।।
दोहा कबितरु चौपई इकसत साठिरु दोइ ।
जुगल केलि हीरावली हिय गुन माला पोइ ।।१६३।।

इति श्री रस हीलावली संपूर्णम् ।

विषय––हित सम्प्रदाय के सेवा-भावनानुसार युगल स्वरूप का ऋतु विहार वर्णन ।

संख्या १७४छ. हित सिगार लीला, रचयिता––ध्रुवदास, स्थान––वृंदावन, कागज––देसी, पृष्ठ––४ (२८ से ३२), आकार––७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––४८, परिमाण (अनुष्टुप्)––१२०, पूर्ण, रूप––साधारण, पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––सं० १६६०, **प्राप्तिस्थान**––श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ८३, पु० सं० ६।६ ।

आदि––अथ हित सिंगार लीला लिख्यते

।। दोहा ।।

सहज सुभग वृंदा विपिन मिथुन प्रेम रस ऐन ।
सेवत सरद वसंत नित रति जुत कोटिक मैन ।। १ ।।
फूली फूलनि की लता रही जमुन जल झूमि ।
तैसीय अद्भुत झलमलै कंचन मनिमै भूमि ।। २ ।।
जलज थलज बिगसत सहज नील पीत सित लाल ।
हेम बेलि रही लपटिकै सुंदर सुभग तमाल ।। ३ ।।

मध्य––पृ० ३१

।। कवित्त ।।

मधुर तें मधुर अनूप तें अनूप अति रसनि कौ रस सब सुखनि कौ सार री ।
बिलास कौ बिलास निज प्रेम की है राज दसा राजे इक छत दिन विमल विहार री ।
छिन छिन तृषित चकित रूपमाधुरी में भूले सोई रहे कछु आवै न विचार री ।।
भ्रम हू को विरह कहत जहां डर आवै ऐसे है रंगीले ध्रुव तन सुकुवार री ।।६५।।

।। दोहा ।।

बिन दूलह बिन दुलहिनी परम रसिक सुकुवार ।
प्रथम समागम रहत बिन नवल निकुंज बिहार ।।६६।।

।। सोरठा ।।

कोक कलानि प्रवीन नव किशोर दंपति सदा ।
सुरत सिंधु सुख लीन अति विचित्र नागर कुवर ।।६७।।

अंत–– ।। दोहा ।।

मन बच जो गावै सुनें हित सों हित सिंगार ।
तिहि उर झलकत रहै बिविपद अंबुज सुकुवार ।।८०।।
यह रस जिनिकै सुनत मन नाहिन होत हुलास ।
सपने परस न कीजियै तजि ध्रुव तिनिकौ पास ।।८१।।
अस्सी दोइ दोहा कवित हित सिंगार के कीन ।
जाके उर में बसै ध्रुव जुगल चरन ह्वै लीन ।।८२।।

इति श्री ध्रुवदास विरचितं हित सिंगार लीला संपूर्ण समाप्ता ।।

विषय--हित हरिवंश सप्रदाय की सेवा भावना के अनुसार श्रीकृष्ण और राधा के **संयोग** शृंगार का वर्णन।

संख्या १७४ज. ब्रजलीला, रचयिता--ध्रुवदास, निवासस्थान--वृंदावन, **कागज**--देसी, **पृष्ठ**--६ (५२ से ५८), आकार--७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--४८, **प्रकाशित**, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, **रचनाकाल**--सं० १६९० के लगभग, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८३, पु० सं० ६।१२।

आदि--अथ ब्रजलीला लिख्यते

॥ चौपई ॥

एक समें विहरत वन मांही। कियौ मनौ विवि द्रुम की छांही॥ १॥
यह निज रस कीजे विस्तारा। रसिक जननि को अति ही प्यारा॥ २॥
नंदलाल वृषभान किशोरी। रसिकनि हित प्रगटी यह जोरी॥ ३॥
नित्य केलि दिन ऐसेहि करिहीं। अति आनंद प्रेम रस ढरिहीं॥ ४॥
रसनिधि लीला ब्रज प्रगटाई। रसिक जननि कौ अति सुखदाई॥ ५॥

मध्य--पृ० ५५

॥ दोहा ॥

सहचरि मन आनंद बढ़चौ सुनत वचन अति चारु।
प्रेम मगन आनंद उर मिलवन नंदकुमार॥१०९॥

॥ चौपाई ॥

नंदगाऊँ तेही छिन आई। मनमोहन कों सेन जनाई॥१०॥
सेन बूझि लालन उठि आये। ललिता देखि कछुक मुसिक्याये॥११॥
बूझत सखी चतुर सब बातें। काहे मोहन हो कृस गाते॥१२॥
तब मोहन मन को सब कही। ज्यो ज्यो पाछे ही गति भई॥१३॥
ललिता एक किशोरी देखी। मनो रूप की सींवा पेखी॥१४॥
कौन भाँति मुख की छबि कहिये। चितवत सखी चित्र ह्वै रहियै॥१५॥

अंत--

॥ चौपै ॥

सखियनि जुत तव मतौ कराही। नित्य मिलहि हम वा बन मांही॥८८॥
यह मत जब मन में करि लीनो। निज सखियनि कौ अति सुख दीनौ॥८९॥
तबतें खेलत वा बन मांही। सुंदर सुभग सरोवर पांही॥१९०॥
यह लीला ध्रुव जो नित गावै। प्रेम भक्ति सो दृढ़ करि पावै॥१९१॥

॥ दोहा ॥

प्रथम नेह ऐसे भयो विना जतन अनियास।
यह यस गावत सुनत ध्रुव होत जु प्रेम प्रकास॥१९२॥

इति श्री ध्रुवदास विरचितं प्रथम समागम ब्रजलीला संपूर्ण।

विषय--हित सप्रदाय की सेवा भावना के अनुसार श्रीकृष्ण और गोपियों की **ब्रज बन**-लीला का वर्णन।

संख्या १७४क. वैदक ज्ञान लीला, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—देसी, पृष्ठ—२ (८४ से ८६), आकार—७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० के लगभग, लिपिकाल—सं० १७८१, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० सं० ८३, पु० सं० ६।२८।

आदि—अथ वैदक लीला लिख्यते

॥ चौपै ॥

बैद एक पंडित अति भारी। ठाढौ सबसो कहत पुकारी ॥ १ ॥
जैसौ रोग होइ है जाकों। तैसी ओषद दैहों ताको ॥ २ ॥
यह सुनि एक गयो तिहि नेरे। ऐसो बल ओषद को तेरें ॥ ३ ॥
मेरें बिथा बढी अति भारी। कहि मोसों कछु सोच विचारी ॥ ४ ॥
तेरे रोग कहा है भाई। ताको ओषद देउँ बताई ॥ ५ ॥
पाप कर्म अधिक में कीने। महा दुखित तिहि रोग के लीने ॥ ६ ॥
विषै विषम विष तन रह्यौ छाई। भव भुवग ते लेहु छुडाई ॥ ७ ॥

मध्य—मन लाग्यौ अति जूठ सो तजि सांचहि सुख मूल।
छाडि सुधा के रस फलहि गहो जाइ विष सूल ॥२५॥

॥ चौपई ॥

ज्यौ ज्यौ तन अति जीरन भयो। त्यौ त्यौ रोग लोभ बल गह्यौ ॥२६॥
अब तुम जतन करहु चित लाई। जाते कछु इक हियौ सिराई ॥२७॥
तबही बैद तासो यो कही। करहु जतन दुख जैहै सही ॥२८॥
इंद्री निग्रह जो पथ करई। तिय इमली ते मन परहरई ॥२९॥
लोभ खटाई मोह मिठाई। दधि क्रोध के निकट न जाई ॥३०॥

अंत— ॥ दोहा ॥

नारदादि प्रहल्लाद ध्रुव कीनो यहै विचार।
या जग मे या रोग को सिद्ध यहै उपचार ॥५८॥
अब तरिहैं केते तरे याही ओषद खाइ।
ताते विलंब न कीजियै बेगिहि करहु उपाइ ॥५९॥
मनके समझन को कह्यौ अद्भुत वैदक ज्ञान।
तन मन के सब रोग ध्रुव सुनतहि करैं पयान ॥६०॥

इति श्री ध्रुवदास विरचितायां वैदक ज्ञान लीला संपूर्ण ॥

संवत् १७८१ वर्षे अगहन मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यायां श्रीमद् वृंदावन निजधामे लिखितं। श्री हित जू के आश्रित प्रियादासेन हस्ताक्षरे पठनार्थ नामामिधानं हरी भाइ जू नें पोथी लिखाई लीला २२ ॥ इति श्री ॥

विषय—हित संप्रदाय के सिद्धांत सेवा भावना के अनुसार भगवद्ध्यान तथा प्रेम मे मन लगाने के लिये वैद्यक निदान के आधार पर भवरोग की चिकित्सा और पथ्यापथ्य का वर्णन किया गया है।

संख्या १७५क. रूपमंजरी, रचयिता—नंददास जी, कागज—देसी, पत्र—१३, आकार—७। × ५।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० सं० ६३, पु० सं० १।

आदि--।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ रूपमंजरी लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

प्रथमहि प्रणऊँ प्रेममय परम जोति जो आहि ।
रूप उपावन रूप निधि निति कहत हे ताहि ।। १ ।।

।। चोपाई ।।

परम प्रेम मधुपति इकु आहि । नंद जथामति बरनो ताहि ।
जाके सुनत गुनत मन सरसं । सरस होइ बरतुहि परसे ।। २ ।।

मध्य--पृ० १३ ।। चौपाई ।।

कुँवरि कहति या सजन सयानी । सुपन को बातनि क्यौं सुरमानी ।।
सखि कहै बलि या सुपन न होइ । सत्ति आहि अब सुनि ले जोइ ।।१३३।।
तेरो रूप अनूप सुभाइक । जान्यौ जात बिरथ बिन नाइक ।।
तामै इह इक देव मनायो । सो बलि तो कह सपने आयो ।।१३४।।

अंत-- ।। दोहा ।।

जदपि अगम ते अगम अति निगम कहत हे जाहि ।
तदपि रंगीले प्रेम ते निपट निकट प्रभु आहि ।।२७९।।
कथनी नाहिन पाइये करनी पूरा सोइ ।
बातन दीपग ना बरै बारै दीपग होइ ।।२८०।।

इति श्री रूपमंजरी समाप्त ।।

विषय--प्रेम कथानक काव्य है । इसमे रूपमजरी की भक्ति का वर्णन है जो अत मे श्रीकृष्ण की नित्यलीला मे सम्मिलित हो जाती है ।

विशेष ज्ञातव्य--लाल रेशमी जिल्द मे रखी हुई पुस्तक है । इसमे 'रूपमजरी' के अतिरिक्त "रसमजरी", "विरह मजरी" और "कोक मजरी" नामक ग्रथ भी है ।

संख्या १७५ख. रसमजरी, रचयिता--नददास जी, पृष्ठ--२२ (२५ से ४६ तक), आकार--७। × ५।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३२, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ६३, पु० स० १ ।

आदि--।। अथ रसमंजरी लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

नमो नमो आनन्दघन सुंदर नंदकुमार ।
रसमं रसकारन रसिक जन जाकौ आधार ।। १ ।।
रस मंजरी अनुसरी के नंदमति अनुसार ।
बरनत बनिता भेद जह पैमसार विस्तार ।। २ ।।

मध्य--पृ० ३४ ।। अथ खंडिता लक्षन ।।

प्रीतम अनत रैनि सब जागै ।। अंग अंग रति चिह्नन पागै ।। भोर भये जाकै ग्रह आवै ।। ता बनिता खंडिता कहावै ।।६२।। मुग्धा खंडिता जथा ।। पीय उरज अंकन पहिचानै ।। कुंभमि चिह्न सेसकुल जानै ।। नख छत छती चितै चकि रहै ।। ते प्रीतम कहु पूछयौ चहै ।।६३।।
पीय हसि ताहि कंठ लपटावै ।। सो मुग्धा खंडिता कहावै ।।

अंत--यह सुंदर बर रस मंजरी । नंददास रसिकनि हित करी ।
करन आभरन करिहै जोई । परम प्रेम रस पैहै सोई ।।१६२।।

॥ दोहा ॥

जदपि अगम ते अगम अति निगम कहत है जाहि ।
तदपि रंगीले प्रेम ते निपट निकट पिय आहि ॥१६३॥

इति श्री रस मंजरी नंददास कृत संपूर्ण ॥

विषय——नायिका भेद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——पुस्तक लाल रग की रेशमी जिल्द मे रखी हुई है। इसमें 'विरह मजरी' और 'रूप मजरी' भी लिखी है ।

संख्या १७५ग. स्याम सगाई, रचयिता——नंददास जी, पत्र——५ (२८ से ३२), आकार——७। × ६। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२८, परिमाण (अनुष्टुप)——७०, पूर्ण, रूप——साधारण, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——स० १६४२ के पूर्व प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० ब० २८, पु० स० १ ।

आदि——अथ स्याम सगाई लिख्यते ॥ राग विलावल ॥

एक दिन राधे कुवरि नद घर खेलन आई ॥
चंचल और विचित्र देखि जसुमति मन भाई ॥
नंद महरि एसे चरचो देखि रूप की रासि ॥
यह कन्या मेरे स्याम को गोविद पुज ये आस
के जोरी सोहनी ॥

मध्य——सखी कही समझाय कहो तो गोकुल जाऊ ॥
मन मोहन घन कहो तो वाको लाऊ ॥
यह ढोटा अति सोहनो जो पठवे वाकी माइ ॥
बडो गाडरू नंद को वेगि भली करि जाइ ॥ गाडरू चतुर हे ॥१५॥

अंत——सुनत सगाई स्याम ग्वाल सब अंगन फूले । नाचत गावत चले प्रेम रस में अनुकूले ॥ जसुमति रानी ग्रह सज्यो चंदन चोक पुराय ॥ वटत वधाई नंद के नंददास वलि जाय ॥ के जोरी साहनी ॥२६८॥ इति नददास जी कृत स्याम सगाई सपूर्ण ॥

विषय——श्रीकृष्ण की राधा जी के साथ सगाई होने का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——हस्तलेख के मध्य मे यह पुस्तक लिखी हुई है । आदि अत म अन्य ग्रथ लिखे है। केसरी छीट की जिल्द म सिली हुई पुस्तक है।

संख्या १७६. नजीर की रचनाएं फुटकर एव सुदामा चरित्र, रचयिता——नजीर, कागज——देशी, पत्र——१३, आकार——६ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——११, परिमाण (अनुष्टुप्)——१०७, खडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता——प० हनुमान प्रसाद मिश्र, ग्राम-सोनई बड़ी, पा०—करछना, जिला—इलाहाबाद) ।

आदि——दुन्या अजब बाजार है कुछ जिस इंहा की साथ ले ।
नेकी का दरजा नेक है बद से बदी की बात ले ।
आराम दे आराम ले आफात दे आफात ले ।
मेवा दिये मेवा मिलै फल फूल दे फल पात ले ।
कलजुग नही करजुग है यह इंहा दिन को दे औ रात ले ।
क्या खूब सौदा नगद है इस हाथ दे इस हाथ ले ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

॥ रोटियां ॥

रोटी की फिक्र ना किसी तदबीर से रुकै ।
तीरो सिनान षंजर समसेर से रुकै ।
तसषीर से न सीहॅन तासीर से रुकै ।
वोह सषस फिर न तौक न जंजीर से रुकै ।
बंधे हुए जिसे लिये जाती हे रोटियां ॥ ७ ॥

मध्य——॥ दया गुरु की ॥
सब धोके की टट्टी है ।
यह पेट अजब है दुन्या की यहां क्या क्या जिस इकट्ठी है ।
और माल किसी का मीठा है और चीज किसी की षट्टी है ।
कंही पकता है कंही भुनता है पकवान मिठाई पट्टी है ।
जब देषा षूब तो आखिर को ना चूल्हा भाड़ न भट्ठी है ।
गुल सेर बबूला आबहवा और कीचड़ पानी मिट्टी है ।
हम देष चुके इस दुन्या को सब घोषे की सी टट्टी है ॥ १ ॥
:o: :o: :o:

अंत——सुदामा चरित्र
याद करै केश्न मुरारी ॥ ५ ॥
औरत की बात सुन के सुदामा दिआ जवाब ।
तुझको है जर की चाह यह पानी का है हुबाब ।
जब इसत्री यह बोली कहां हमको हैगी ताब ।
जब हाल देषा आपका हमने निपट षराब ।
एक अर्ज की है जान कै तकसीर हमारी ।
हरदम सुमादा याद करै केश्न मुरारी ॥ ६ ॥
:o: :o: :o:
अब तो "नजीर" को बी मेरा एही ग्यान है ।
ऐ भग्त मुकत दीजे मुझे जोग ध्यान है ।
सुनते औ पड़ते इसको तो सबका कल्यान है ।
श्री कृश्न नाम लीजे तो यह आन बान है ।
बैकुंठ धाम पावैगे ये हर के पुजारी ।
हरदम सुदामा याद करै केश्न मुरारी ॥
॥ सुदामा चरित्र संपूरन ॥

विषय——ज्ञानोपदेश और सुदामा की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——रचनाएँ सब खंडित है । रचनाकाल, लिपिकाल के उल्लेख नही है । रचयिता का नाम नजीर है जो उर्दू साहित्य में प्रसिद्ध है ।

विशेष देखिए, दत्तलाल की बारहखड़ी का विवरण पत्र ।

संख्या १७७. चौबीस तीर्थकर की विनती, रचयिता——नथमल, कागज——देशी, पत्र——२, आकार——५३/४ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——६, परिमाण (अनुष्टुप्)——२७, पूर्ण, रूप——नवीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्ति स्थान——आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--**अथ बिनती लिष्यते ।।**

ढालवंदौ चौवीस जिनेस की मै ।। वंदौ चौबीसौ जिनेस ।। काल अतीत विषै जे भये ।। प्रथमहि जिन निर्वान ।। सागर वंदौ जिनवर दूसरो ।। १ ।। महासाथ जिनदेव ।। बंदौ मैं चतुरथ बिमल जिनंद ।। नमौ सुधा मंजिनंद ।। श्रीधर नमतांभवरदधि तिरै ।। २ ।। बत्तनाथ भगवांन ।। चिमल प्रभु सुमिरत अति आनंद वढ़ं ।। उधर जी जिनदेव ।। प्रणमौ मैं अगिनि नाथ चितलाय कैं ।। ३ ।।

मध्य--**करणे जसोधर सेव ।। पूजौ मै किस्न जिनेस्वर भाव सौ ।। ज्ञान मती जी जिनराय ।। वंदत विसुधमत्त बिमल सुमति करै ।। ६ ।। लड्नाथ शिवकंत ।। सांति जगतबंत सुष उपजै ।। राचौ बीसौ जिनेस ।। काल अतीत विषै वह सिव गयौ ।। ७ ।। तिनै न मौतिर काल ।। मन वच तन करि उत्यम भासौ ।। यह वीनती सुषकार ।। जो नरनारी गावैहि तथ को ।। ऐसो पासी भव पावपार ।। नथमल ज्यो सम्यक् निधरै ।। ८ ।।**

इति श्री चौवीस तीर्थकरां की वीनती संपूर्ण ।।

अंत--**जैनधर्म को जो कोइ साधै कंद मूल सब त्यागै जी ।।**
तरकारी हाथि कदे नही वीवतू पैस सदारस त्यागै जी ।।
कविन पंथ है जैन धर्म को जिसके मन कौ लागै जी ।।
देषे ते दलदल सब नासै जिहां पारसनाथ विराजै जी ।। १ ।।
।। इति जैन कवित्त ।।

विषय--इसमें जैन तीर्थकरो की स्तुति है ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित दो ग्रथ है :--
१. अठारह नाते की चोढाल्यो--लोहट कृत ।
२. चौवीस जैन तीर्थकर की वीनती--नथमल कृत ।

संख्या १७८. सारगधर वैद्यक, रचयिता--नैनकवेस्वर (नैन कवि ?), कागज--देशी, पत्र--३७, आकार--६ × ५ ३/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--६४७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८६० वि०, प्राप्ति-स्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--**श्री गणेशाय नमः**

कर अंगुष्ट के मूल ते देषहु नशा आकार ।।
जानहु शुष दुष जीव के पंडीत करहु बीचार ।। १ ।।
मंडुक काक कुलींग गती पीत नाशा एही भाइ ।।
हंस मयूर कपोत गती नाग जलौका वाइ ।। २ ।।
तीतीर लवा वटेर गती साध मनीश नीपात ।।
चले षीन अरु शीत दुई नाश करै वहुवात ।। ३ ।।
सप्त दीवस ज्वर वाई वश वासर ज्वर पीत को ।।
कफ ज्वर द्वादश जाई ज्वर परी पक्क जौ होई तब ।। ४ ।।

।। चौपाई ।।

सोठी कटाई पुस्कर मूल ।। ककरा शृंगी कटु कचूर ।।
मह लेटी गीलोई अवरा ।। शाली जु परणी हरद पीपरी ।।
मरीची कलौंजी आही मान ।। पीत पापरा पत्रज आन ।।
अगर घमासा कुंट मोलाई ।। लोचन वाला मू वी पाई ।।

:o: :o: :o:

गद अंगद तासु हिय जानि ।। "नैन कवेस्वर" कहो वषानी ।।

अंत--पृ० २३ ।। अथ नीर्गुंडी कल्पं ।।

सनीवार पुष्य जौ होई ।। तब आनी जै ।। सीव पुजा की भवती से ।। तव नीगुंडी आनी ।। छाया सुषा खाइ जै ।। पाताल जंल अग्नी दीजै नीरोध न कीजै ।। ब्राह्मण कन्या नेवती जेवाई जे ऐक १ ।। :०: :०: :०: गाई के छाछ सो दीजे पोंडरोग जाई ।।१९।। सहत सो दीजै तौ राज रोग जाई ।।२०।। गो दुध सो दीजै पुस्ट होई ।।२२।। सम्वत ११८९० समै नाम भाद्रपद............सारंगधर वैद्यक ।।०

विषय---वैद्यक ग्रंथ है जिसमें रोग, उनके लक्षण और औषधो का वर्णन है।

संख्या १७९. नरसीमेतानी माला, रचयिता---नरसी मेहता, कागज---देशी, पत्र---३९, आकार---$7\frac{3}{4} \times 8\frac{13}{16}$ इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---११, परिमाण (अनुष्टुप्)---५९४, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---संवत १८९३, प्राप्तिस्थान---श्री ओंकार नाथ मिश्र, ग्राम--अर्का, पोस्ट--करारी जिला--इलाहाबाद।

आदि---श्री जानकीनाथाय नमः ।। श्री गणेशाय नमः ।।

राग आसावरी

आवो गजानंद आनंद स्वामी, कथारंग में आवो जी।
लष लाभ सुधि बुधि दाता गवरी पुत्र कहावो जी ।।
वक्र तुड एक तुड बिराजे पायन घुघुर घुमकावो जी ।। १ ।।
सुरनर सिध मुनि जन ध्याव मन बंछित फल पावें जी।
धूप दीप लै पोहोपनी माला नित नित मोदक लावो जी ।। २ ।।
तुम थकी सभा सुहावणी लागै मन माही आनंद आवो जी।
कृपा करो गणपति अमृत पर नित गोविंद गुण गावो जी ।। ३ ।।

अंत--राग रामगिरि

धन्य धन्य तु इम कहे श्री हरि नरसैया तुमारो भगत सांचु।
मेलि पुरुषातम मले मन भर्ष कह्यो नेह नेहु तारे प्रेम रांचु ।।
तुज थकी मुज थकी भेद न भी नागरा सामलो रे मारी वेद वाणी।
अजी परतीत या नयी मारी तुजने हार आप्यो परतष भूपे।
चौदे लोक मायतो समको नही ताप मायरु एक रूपे ।। ३ ।।
जारे मे मो कल्प ठाढो पाणी सारंग की धुते वीसरयो तु जने।
ताहरो अषर गावेन मानजै कुल सहित पवित्र थाये।
भणे नर सैयो मीठु बोली सु रीझवो त्यारे कर जोडी ने कृष्ण समषाय ।। ४ ।।१०४।।

इति श्री नरसीमेता जीनी माला संपुर्णः ।। शुभ संभवतु कल्याणमस्तु ।।

।। दोहा ।।

लिषी अवंति के विषै विप्र तुला राम नाम।
जो याकुं वाचै सुणै जिनकुं जे श्री राम ।।
भसींग पठनार्थी पढै ग्रंथ करि प्रीति।
आवै समझ अनेकवि....होय भक्ति की रीति ।। २ ।।

संवत् १८९३ मिती अगहन सुदी ।। १३ ।। वार बुध ।।

विषय--भक्ति विषय वर्णन।

संख्या १८०क. अवतार गीता या विजै अवतार गीता, रचयिता—नरहरदास बारहट, **कागज**—देशी, पत्र—३४५, आकार—११¾ × ७¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३१, परिमाण (**अनुष्टुप्**)—१८०३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६७ वि०, **प्राप्तिस्थान**—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, (ग्रंथ स्वर्गीय **श्रीलज्जाराम** जी मेहता, बूंदी निवासी के पुस्तकालय से सभा को प्राप्त हुआ)।

आदि—॥ ६० ॥ श्री महागणपतएन्मः ॥ श्री रामायन्मः ॥ श्री कृष्णायन्मः ॥ श्री शारदायन्मः ॥ श्री गुरुभ्यौन्मः ॥ अथ नाटक ॥ अथ बारहट जी श्री नरहरदास कृत विजै अवतार गीता लिख्यते ॥ स्रो ॥

सुंडादंड प्रचंड मेकदसणं मुदगंध गल्लस्थलं ।
सिंदूरारुण तुंड मंडित मुषं भ्रंगस्य गुंजारनं ॥
:o: :o: :o:
यं प्रथमं गुरदेव सेव सुक्र दृष्टं विद्याय प्राप्याम्यहं ।
श्री मान् भक्त सुदीक्षतं गिरिधर तस्य प्रसादे वरं ॥
तं दृष्टं मतपंथ काव्य करण विघ्नस्य हरण परं ।
श्री सुरसेव्य पदारविंद विमलं सरणागतं जाच्यहं ॥ ३ ॥

॥ आर्या ॥

गणपति गहर ग्यांन गुंन अपन । सरसति सुदति सुमति समपन ।
गुर परसाद पाइ गुर ग्यानं । भूत भाव जुग जुगति वषांनं ॥

॥ छंद पधड़ी ॥

इक समय सेष सज्या समांन । हरि सयन करत बल अप्रमान ।
धरि भुवन चतुर्दश उदर वास । सोभा सेषसज्या निवास ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

सोरह सहस अरु आठ सैं इकसठि उपर आंनि ।
छंद अनुष्टुप कलि सकल पूरन ग्रंथ प्रभानं ॥
सौ जोई सुन्यौ पुरान महिं क्रम सोई वर्णन कीन ।
श्रौता पाठक हेत सौ पावै भक्त प्रवीन ॥

॥ कवित्त ॥

भगति पाल अनभंग रामगीता मानसर ।
निजसर्धा सौपांन भाव मिलि नीर गहर भर ॥
तहां अर्थ तरल रत्न विवध नवरस जु विहंगम ।
अदभुत उकति तरंग सकर बहुं छंद सुसंगम ॥
डर नांहि दुष्ट अघ दुवन कौ सजण ज्ञांन सुसंगरे ।
करि सरि विहार नरहर कहै हंस महं जासुंठरे ॥

इति श्री चौईस अवतार चरित्रे ॥ बारहट नरहर दासेन विरचतं ॥ ग्रंथ अवतार गीता संपूर्णं ॥ संवत १७६७ वर्षे मनि माह वद ४ दिनै भृगुवारै सूर्येदियात गत जल घटी १७ ॥ समये मेषलग्न मध्यं लिपिकृता ॥ वाच्यमान ॥ चरंनिश्चात् ॥ सकल पंडित सिरौमणि पंडित श्री षिमा चंद्र जी तत् सिष्य श्री फतैचंद्र जी भातृवाल चंद्रेण लिपिकृता ॥ चोधरी लूणापुत्र सुजा वाचनार्थ ॥ वीसलपुर वासतव्यां: श्रोरस्तु: ।

॥ दूहा ॥

पढण गुणण कु पुस्तिका लिष दीनी चित लगाय ।
सुगने सजन सर्मिक कै लीज्यौ कंठ लगाइ ॥ १ ॥

मात पिता मौहन मदिल कौड वरम कायंम ।
पोथी वंचणहार की दीषे जसदा इंम ।। २ ।।
मन रंजण वाणी गमण उक्त जुक्त आसीस ।
पोथी वंचणहार की जय राषौ जगदीस ।। ३ ।।
ज्यां लगमेर अडग है तांलग उंगत सूर ।
ज्यांलग आ पौथी सदा रहिं ज्यौ गुन भरपूर ।। ४ ।।
गीगन धरा विच मेरु गिर धरै सैहेस उरभार ।
जुग च्यारौ चिरंजीव ज्यौ पौथी वंचणहार ।। ५ ।।
जो रस समझौ जीव मैं वांनी वर विचार ।
राजा हमेसै राषीयौः पोथी सुँ बहुप्यार ।।श्री ।।

विषय--चौबीस अवतारो की कथाएं वर्णन की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल उल्लिखित नही है । लिपिकाल सवत् १७६७ है । इस ग्रथ की एक प्रति (सवत् १८५८ की) पहले भी खोज मे मिल चुकी है. (खोज विवरण ६–२१०)। प्रस्तुत प्रति उससे बहुत पुरानी है । इसका प्रथम पत्र जीर्णावस्था मे है ।

संख्या १८०ख. अवतार चरित्र, रचयिता--बारह नरहरदास, कागज--देशी, पत्र--३३०, आकार--१२½ × ८½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३१, परिमाण (अनुष्टुप्)--१७२६३, खडित (केवल आदि का पत्रा नही), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सवत् १७३३ वि०, लिपिकाल--सवत् १८१२ वि०, प्राप्तिस्थान--श्रीयुत रामचद्र टडन एम० ए०, एल० एल० बी, १० न० साउथ रोड, इलाहाबाद ।

आदि--:o: :o: :o: :o:

संगीक लिविनां : हीय विष्याद दुतिहीनः ज्यो विन नीरही मीनः १ ।।
चारजाति जे बारहट नरहर मति अनुसार ।
मैं सागर पैरन लयौ कहन चरित अवतार ।।
:o: :o: :o:
नरहर प्रभु बाराह भो अवनि उधारन हेत ।
निरमूलनि दिति जाति कुल देह सत्य भय सेत ।।

इति श्री प्रथम आदि थल ।। कवि लघुता वरनो नाम ।।

अंत--सत्तरह सै तैंतीस नियत संवत लेतरायन ।
रितु ग्रीषम आषाढ़ मास पष कृष्ण सपांवन ।।
:o: :o: :o:
सोरै सहसरु आठ सै इकसाठि ऊपर आंन ।
छंद अनुष्टुप करि सकल पूरन ग्रंथ प्रमान ।। १ ।।
मै जोइ सुन्यौ पुरान महं क्रम सोई वरनन कीन ।
श्रौता पाठक हेत सौं पावै भक्ति प्रवीन ।।

इति श्री पौरुषेय भाषा श्री अवतार चरित्रे महा मुक्ति मारगे बारहट नरहर दासेन विरचितं । श्री श्री अवतार चरित्र ग्रंथ संपूरनं ।। शुभ भवत् ।। कल्याणमस्तु ।। लिषतं मिश्र किरपाराम सुमति डौड़ ग्रांम कोट मध्ये परगनै वनावडके ।। लिषाइत जोसी जी श्री ५ बिरजलाल जी तस्य पुत्र चिरंजीव नंदलाल जी आत्महेत षटवर्ष्य मासौत्मासे मार्गश्रमासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयोदसी १३ चंद्रवासरे संवत् १८१२

॥ दूहा ॥

जब लगि मेरु अटिग है तब लगि ससि अरु सूर ।
जब लग यह पोथी सदा रह्यौ गुन भरपूर ॥

विषय--भागवत दशम स्कध के अनुसार चाबीस अवतारों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--हस्तलेख का केवल प्रथम पत्र लुप्त है । रचनाकाल सवत् १७३३ वि० तथा लिपिकाल सवत् १८१२ वि० है ।

संख्या १८१. मनोरथ मुक्तावली, नवनीत कवि (मथुरा), पत्र--१४, आकार--११ × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--४४, परिमाण (अनुष्टुप्)--५०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार कांकरोली, श्री विद्या विभाग, हि० ब० ५३, पु० स० ८ ।

आदि--॥ **श्री गणेशाय नमः ॥ श्री द्वारकेशोजयति ॥**

॥ दोपिहा ॥

श्री गुरु चरण प्रणाम करि पद्मनुष्ट सिर नाय ।
विप्र बाल नवनीत उर सादर शेष मनाय ॥ १ ॥

अथ मनोरथ मुक्तावली प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

श्री गोवर्द्धन धरण के चरण कमल की नाव ।
रे मन भवसागर उतरि बहुरि न दूजो दाव ॥ १ ॥

मध्य--पृ० १५

॥ कवित्त ॥

आपु कुल बालक विचारो नेक मन माहि नगन उघारो नारी पट कस लीजिये ।
कौन कहे बालक विचित्र गुन तेरे मोन लीत करे कस की अनीत छवि छीजिये ।
भोरे बलदाऊ भोरी मात है यशोदा दारो भोरे नदराय को उजागरनो कीजिये ।
टेर टेर हरि बलिहारी हो बिहारी लाल हा हा अब हमन हमारे गेर दीजिये ॥१४५॥

अंत--**इति श्रीमत् द्वारिकानाथ** पद पद्म परागानुरक्त **गोस्वामी श्री बालकृष्ण लाल हेत बिरचितायां मनोर्थ मुक्तावल्या** कवि नवनीत कृते अष्टम **प्रकाश, हस्ताक्षर भैरव दत्तेन श्री मथुरा गी मध्ये गोविद घाटे समाप्तोऽय ग्रथः ।** लेखक पाठकयोः शुभं ।

विषय--श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन कवित्त, दोहा, सोरठा और चोपाइयों मे किया गया है ।

संख्या १८२. नवनीत नवसई, रचयिता--मशी नवनीतराय, कागज--देशी, पत्र--८७, आकार--४। × ३।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२११, अपूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० स० ७१, पु० स० ५ ।

आदि--**श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नवनीत नवसई कृति नवनीत राइ मुन्शी लिख्यते ॥ श्रीराधिका वर्णनं ॥**

मेरी भव बाधा हरो श्री राधा सुभगात ॥
जोन्ह अधक जिद छाह ते ह्वै है सांझ प्रभात ॥
तजि तीरथि हरि राधिका मखद्युति दृग अनुराग ॥
केस स्याम दृग ध्यान धरि लहि पल मांहि पराग ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ७५

जरी उढोनी पीत पट वास छारि ज्यों अंग ।
पहिरें हरिहर रूपधर बिहरो निडर निसंग ॥३५॥३८२॥
कहा करौ तेरे विरह बीत्यों मोहि मरीर ।
साखी है या बेन के नैना धरत न धीर ॥३६॥३८४॥
मोसो चतुराई करत महागूढ़ जिय जानि ।
तीन लोक तुम लोक के बाज दाहि निसानि ॥३७॥३८५॥

अंत—जाकी छांई राति दिन दया मया मोहन प्रिया ।
रोवति जागति राति दिन जपि स्यामा रामा रमा ॥११३॥६१६॥
सुरगुरु मुनि जन भक्त पुनि बरने भांति अनेक ।
लखि ते एकिउ कहि सके बानी स्यामा एक ॥११४॥६१७॥

नखसिख समाप्तं ॥ अथ ग्रंथ संपूर्ण कर्तव्या । सुपनदर्श श्री सूर लखि मनके सहविकास नवनीतिराइ मुनिसी लिखी नविसई भरा बिलामा ॥१॥

शिवप्रसाद गिरिजा कृपा हरि राधा की प्रीति ।
कीने नवमत दोहरा सूरि बेमि नवनीति ॥ २ ॥
दिनकर निमि सुपन लखे नवनीति कृष्ण प्रसाद ।
कीने नवमत दोहरा जोयके महज मवाद ॥ ३ ॥
१ ८ ७ ७
संवत् सुरतरु सिद्धि अरु दीप चक्र रवि जान ।
तिथि तृतीया बैशाखा सुदि वारि सास सुत जानि ॥ ४ ॥
कृपा करे निदे नहीं दूषन रख छिपाइ ।
कवि जन सो बिनती करो हाथि जोरि सिर नाइ ॥५॥

विषय—नायक नायिकादि का वर्णन ।

ग्रंथ में कवि ने "बिहारी सतसई" के अनुकरण पर नखसिख के अंतर्गत सोरठों में राधा कृष्ण की लीलाओं को आलंबन बनाते हुए मध्य में वियोग श्रृंगार का वर्णन किया है ।

संख्या १८३. लीला प्रकाश, रचयिता—नवरंगदास स्वामी, कागज—देशी, पत्र—११३, आकार—६३/१६ × ६१/१६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६७७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—स्वामी पथ (प्रनामी) का मंदिर, बिशुनपुरा, पोस्ट—भागलपुर, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री किताब लीला प्रकाश ॥

प्रथम प्रनाम निज मूल स्वरूप । चिदानंद जो रूप अनूप ॥
परम अखंड निज करो प्रनाम । मम पिंड मदा सोयधाम ॥ १ ॥
सो सतगुरु करि कृपा अनुसरयो । अपनो मूल बीज लै मोमे धरयो ॥
ते बीज भयो उदै अंकर । तेज पुंज प्रगट्यो सत सर ॥ २ ॥
तिन किन्हों मूल तिमिर को नाश । पिंड ब्रह्मांड मे कियो प्रकाश ॥
बोली आतम दिरिट अपार । पोहोंची छर अछर के पार ॥ ३ ॥
जब गुन तत्व नहीं ए कोए । माया मोह अहंकार न सोय ॥
नाहीं प्रकृति पुरुष जीव ए तबै । मल इक्ष्या उपजी नाही जबै ॥ ४ ॥
तब ए अखंड ब्रह्मपुर अनूप । अक्षर अक्षरातीत स्वरूप ॥
इहां सत चित आनंद रूप है सार । एश गुप्त है भेद अपार ॥ ५ ॥

अकथ कथा यहाँ की है । जेह बेद बिव गुप्त कहो तेह ।।
ए गुप्त छमक्षया लषो जी ने जाप । ते ब्रह्मपुर को भेद जा पाए ।। ६ ।।

अंत---करी कृपा धनी जो मोही ते जाने धनी की धनी जी सोए ।
सुंदर साथ कहो मैं कौन । पार न पावो ग्रहो मे मौन ।।७३।।
पांच सरूप अंतर मे रहो । लिला प्रकास कहो ते सही ।।
श्री देव चंद्र और श्री राज । सो बैठे मेरे सिरताजा ।। ७४
श्री सुंदर श्री इंद्रावती । निज 'नवरंग'' जुगल रगरती ।।७५।।३०।।

जीला गोरषपुर पोस्ट भागलपुर अस्थान बांसुनपुरा श्री ५ महाराज वृजदास जी का एह ग्रंथ है लीला प्रकास है दः वलीराज दास ।।

विषय---धामी पथानुसार ब्रह्म के अवतारों की लीलाओं का वर्णन ।

संख्या १८४. कहरनामा (ककहरानामा), रचयिता---नवलदास, कागज---देशी, पत्र---६, आकार---७१/२ × ५१/६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१८, परिमाण (अनुष्टुप)---६५, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---कैथी, लिपिकाल---सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान---श्रीयुत भोलानाथ जी (उप० भार्गवाल)) ज्योतिषी, ग्राम व पोस्ट--असोथर, जिला-फतेहपुर ।

आदि---श्री गनेसहाए नम ।। श्री कहरनामा लोषते ।। प्रभु जगजीवन समरथ सई ।।
भवन भवन बीसर मरे "दास नेवल" जेन्ह के एक चल ।
गावत कहर नाम रे मंदिर जोती जोनते ।।
नीरगुन फीरी रहे सुनी समझरे "दास नेवल" जो सुनंही मीलेजै ।।
फीरि नही आवा जाइ रे ।।

अंत---अस बेदर दीन्ही दुष दीन्ही देषत सब नरनरा रे ।
गुर साहेब समरथ का भेटा रहो चरन लपटाइ रे ।।
बर बर प्रभु चरन मनय "दास नवल" बर पइ रे ।

कहर नाम संपुरन समापत सुभ समत १९२३ सल महीन कुआर सुदी नोमी दीन अतवार मोकाम वेनु कै छावनी बषतावर दास वैरागी के मकान प्रतएर भए हे रूपन दास महंत गरंथ के मालीक है ।। संमपुरन भए जगजीवन सहेब के प्रताप से लीष रूप .दार दास वैरागी ।।

विषय---ककहरा रचकर ज्ञानोपदेश दिया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य---बोधकृत 'भक्ति विनोद' और प्रस्तुत रचना एक ही हस्तलेख में है ।

संख्या १८५. नागरीदास जी के कवित्त संग्रह, रचयिता---नागरीदास जी, पृष्ठ---२ से ७२ तक, आकार---८।। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२८, अपूर्ण, रूप---साधारण, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १८७३, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग कॉकरोली, हि० बं० सं० ६८, पु० सं० १२ ।

आदि---
एक जरीदार सेत ओढनो को ओढे दोऊ नृत्यत सुधंग गति मिलि ततकार में ।
मुख नेन भूषन चिकुर कल कांति षनी चांदनी सरद स्वच्छ सागर के वार में ।
नागर मयंक मीन मानो मनिगन सिवार कंज गाम धीवर गहे हे रूप जार में ।। ४ ।।

मध्य---पृ० ४७-४८
जमुना के बीच फैली झलमल छपाकर की पावत न पार तिहि सोभा के बखान कौ ।
चली जात मधु धार नवका विहार चारु कैधों प्रतिबिंब यह ताके रतनान कौ ।

किधों दीपमालिका कौ उत्सव वरन ग्रह नागर प्रकास यह जोति सरसान कौ ।
किधों कोरिक अन्हात चंद चारु किधों चमकै चपल भयौ चूर चपलान कौ ॥१७७॥

अंत--इति श्री नागरी दास जी के कवित्त संपूर्ण ॥ संवत् १८७३ में चैत्र सुदि ६ शुक्रवार श्री गोल में लिखे देवर्षि लडेती लाल भट्ट ने लिखाये श्री गोस्वामी व्रजपति जी महाराज नें स्वार्थ परार्थ ॥ शुभम् ॥

॥ दोहा ॥

लिखि दीने हे कवित्त ये अपनी प्रति अनुसार ।
सोधि लीजियौ रावरे श्री व्रजपति अवतार ॥ १ ॥
कोरिक देत असीस हम हो व्रजपति महाराज ।
लाल लहौ आंनद गहौ करौ सु अबिचल राज ॥ २ ॥

विषय--नागरीदास जी के बनाए हुए शब्द, दिवाली, गोवर्द्धन पूजा, होरी, फागुन, ग्रीष्म, गंगा जी, वर्षा, मान, बाल लीला प्रभृति विषयक कवित्त संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य--पुस्तक का प्रथम पृष्ठ नहीं है । अंत में कुछ पत्ते खाली छूटे हुए है । अक्षर सुवाच्य है ।

संख्या १८६. समै प्रबंध सेवा सात समै की भावना, रचयिता--नागरीदास (हित संप्रदाय), कागज--देशी, पत्र--२०१, आकार--८¼ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८६५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८६३, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह ५०८।५५ बस्ता), काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--श्री राधा वल्लभोजयति ॥ श्री हितहरिवंशो चंद्रो जयति ॥ अथ समै प्रबंध सेवा सात समै की भावना वाणी अनुसार लिष्यते ॥

तृपदछिंद

श्री हरिवंश चंद्र सुभनाम । सब सुष सिंधु प्रेम रस धाम ।
जाम घटी बिसरै नही यह जु परचौ मोहि सहज सुभाव ॥
श्री हरिवंश नाम रस चाव ।
नाम सुदृढ भवतरन कों नाम रटत आंई सबसोहि ।
देह सुबुद्धि कृपा करि मोहि ॥
पोइ सुगुन माला रचो ॥
नित्य सुकंठ जु पहरों तास । जस वरनों हरिवंश विलास ॥
श्री हरिवंशहि गायहो ॥ १ ॥

मध्य--राग मन भावतौ

जै जै श्री हरिवंश कहौ मिलकै ।
सुंदर व्यास सुवन जन वल्लभ करि दरसन पायन चलिकै ॥ १ ॥
प्रेम पियाला परगट कीया पीया सत संगत में रलि कें ।
चढ़ी षुमारी महामधुर रस जुगल रूप नेननि मे झलकै ॥ २ ॥
करुणा करकै अभै पद दीयौ कीये पावन या कलकें ।
मेटी आनि कान व्रत संजम एक धर्म राधा वर कें ॥ ३ ॥
अगनित जग में रंक जिवाए श्री राधा वल्लभ नाम अमृत फलकें ।
सरनाए अपनाए निज करि कृष्ण दास हित वलि वलि कें ॥ ४ ॥॥८५॥

इति श्री समे प्रबंध सेवा सात समें की भावना श्री वाणी अनुसार संपूर्ण संमत १८६३ भादों सुदी ८ ॥

विषय—हित सम्प्रदाय के अनुसार सात समय की सेवा की भावना ।

संख्या १८७. रामविहार, रचयिता—नाथ कवि, कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—६½ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३८ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० धुरवल जी पाठक, ग्राम—सोनपाल, पोस्ट—मुबारकपुर, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ सोरठा ॥

गणपति गौरि मनाय सुमिरि हिये विच सारदा ।
सब सिधि होहि सहाय बरनो रामविहार कछु ॥ १ ॥
कहि हों सोइ संवाद जो गायो है सूत ने ।
सुन्यो सहित अह्लाद सौनकादि नामिष विषे ॥ २ ॥
आए राम विवाहि तबते अवध अनद भल ।
सुखसागर अवगाहि छके नारि नर मुदित मन ॥ ३ ॥
एक समै रघुवीर सहित सिया बंगले बैठि ।
निरखत पुरी गभीर कहत जानकी सों हरषि ॥ ४ ॥
सुनु मिथिलेश कुमारि पुरी अवध यह सुभग ।
निर्मल सरजू वारि लेत हलोरा हरत मन ॥ ५ ॥
गुरु वशिष्ठ ले आय मान सरोवर सो नदी ।
रहेउ सुजस जग छाय वासिष्ठी यह गंग है ॥ ६ ॥

मध्य—रनिवासन्ह अस्नान कराया । दियो दान जेहि जस मनभावा ॥
गई पट मंदिल सब रनिवासा । भई सुचित तब कीन्हो वासा ॥
रघुवर भाइन्ह सहित नहाए । द्विजन तुरित गोदान कराए ॥
आए बेगि सुमन नहाई । कियो दान बहु विधि सुख पाई ॥
सपशाला की पूजा करहीं । जाती सकल मोद मन भरहीं ॥
आए डेरा राम सुजाना । विप्र जेवाय कियो बहु दाना ॥
करि भोजन तब चारो भाई । गनिवासिन सहेत सुष पाई ॥
बाजी नौबति सप्त ठौरो । जागा ठाँव ठाँव सब परिगो ॥
करत कलाहार दिन सब बीते । राति जागरन कियो सप्रीते ॥
जागो भोर देरा तब बोला । उठि सुमंत कह वचन अमोला ॥
करहुँ सोच रघुवीर तुरंता । सुनत वचन उठिकै भगवंता ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

अष्टोत्तर सत पाठ जो कर हृदै हरषाय ।
ताके हिय सीता सहित रामराय बस आय ॥ ८९ ॥
अष्टादश सत अठतिस संवत सुचि इष मास ।
सुक्ल पक्ष तृतीय गुरो बेला अमृत प्रकास ॥ ९० ॥
पूरण भो रघुवीर जस चरण भवरुज केरु ।
नाथ कृपाल दयाल बड़ सुमिरो साँझ सवेर ॥ ९१ ॥

:o: :o: :o:

एहि विधि राम विहार की कथा कही कछु "नाथ" ।
कविता रोचक नहि वनी गायो प्रभु गुनगाथ ।।
कह्यौ सूत हरषाय सुन्यो सौनकादिक सबै ।
रामविहार सोहाय मंगलमय रघुवीर जस ।। २६४ ।।

इति श्री सुन (? सूत) सौनक संवादे राम विहारे प्रथम परिच्छेद परिपूर्णमस्तू शुभमस्तु ।।

विषय––रामचंद्रजी ने स्त्री और भाइयों सहित जो जो आनंद विहार किए उनका वर्णन ।

रचनाकाल

अष्टादशशत अठसठै संवत सुचि ईषुमास ।
सुक्ल पक्ष दूईजि गुरौ वेला अमृत प्रकास ।। ६० ।।

विशेष ज्ञातव्य––रचनाकाल संवत् १८६८ है । लिपिकाल दिया नहीं । रचयिता का नाम नाथ कवि है । रचना दोहे, सोरठे और चौपाई छंदों में की गई है । भाषा अवधी है ।

पुष्पिका के अंत में प्रथम परिच्छेद की समाप्ति की सूचना है जिससे पता चलता है कि आगे भी कुछ परिच्छेद होंगे । ग्रंथ सूत शौनकादि ऋषियों के संवाद के रूप में है । यह किसी पुराण के आधार पर लिखा गया विदित होता है ।

पुष्पिका में लिपिकाल नहीं दिया है जिससे पता चलता है कि प्रस्तुत प्रति रचयिता के हाथ की ही लिखी गई होगी ।

संख्या १८८. कवित्त, रचयिता––कविनाथ, कागज––देशी, पत्र––२, आकार––६ ७/१० × ६ ४/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––३५, परिमाण (अनुष्टुप्)––४८, अपूर्ण (खंडित), रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––पंडित विश्वनाथ दुबे, ग्राम–रेकवारे डीह, पो०–मऊ, जिला–आजमगढ़ ।

आदि––

सुन्दर मनोहर कविताई कलाप गुण नहि हिय मेरे एक लालसा अमोल है ।
सुकहि दरसायो आततायी समान यह एते वज्र पापी मतवादी कुंड गोल है ।
नान्हक कबीर दरियादासी अतीत गण भीषा शठकोप जो अनेक पंथ टोल है ।
वैरागी औ अचारी शिवनारायनी समूह एते धर्म कर्म दूषक दयानंदी पापमोल है ।
ऐसही नवीन औ विचित्र पंथ वाले यह कहँवा से आए एको बुझ ना परत है ।
वेद और शास्त्र सब वर्णका व्यवस्था लिखो आश्रम सहित तामे एको ना करत है ।
कहत वैरागी अचारी हम साध है पूछै कोई वर्ण आश्रम क्रोध से भरत हैं ।
भनत 'कविनाथ' यह देखिए विचारि समै कौन शास्त्र आवै सभ अलगै धरत हैं ।।

:o: :o: :o:

अंत––

आश्रमी सुसाधु को नमसकार बार बार सुनिके गृहस्थ पुनि आश्रम बिसारो ना ।
ब्रह्मचर्य गार्यहस्थ वानप्रस्थ आश्रम पै चौथा संन्यास एक आश्रम विचारो ना ।
लखिके सभ आश्रम एक अनाश्रमी विचाराको करन साकारहेतु तिनिकोपुकारो ना ।
भनै कविनाथ मोक्ष.................तुम दांत को विचारो ना ।।

:o: :o: :o:

विषय--कबीर आदि के मतों का खंडन तथा वर्णाश्रम धर्म की पुष्टि का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ के केवल दो ही पत्रे उपलब्ध हैं। रचयिता कवि नाथ है। रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या १८९क. 'सलोक महलानौ'(?), रचयिता--नानक, कागज--देशी, पत्र--८, आकार--७ ५/१० × ५ ६/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--६८, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री युत गोपालचंद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर, अवध।

आदि--श्री गणेशायनमः ॥ सतगुर प्रसादि ॥ सलोक महलानौ ॥

गुन गोविंद गायो नही जनम अकारथ कीन।
कहु "नानिक" हरि भजि मना जिह विध जल को मीन ॥ १ ॥
विषीअन सो काहे रचो निमष न होइ उदास।
कहु नानिक हरि भजन मा परे न जम की फांस ॥ २ ॥
तरणापे यु ही गयो लयो जरा तन जीत।
कहो नानिक हरि भज मना अवध जात है बीत ॥ ३ ॥
ब्रिध भयो सूझै नही काल पहुँचो आन।
कहु नानिक नर बावरे क्यूँ न भजो भगवान ॥ ४ ॥
धन दारा संपत सकल जिन अपनी कर मान।
इनमे कछु संगी नही नानिक साची जान ॥ ५ ॥
पतत उधारन भैहरन हरि अनाथ को नाथ।
कहु नानिक हित जानि सो सदा बसत तुम साथ ॥ ६ ॥

अंत--

॥ दोहरा ॥

बल छुट्यौ बंधन परचौ रह्यौ न कछू उपाइ ॥
कहो नानिक अब ओटहर गज ज्यूं होउ सहाइ ॥ ५३ ॥
राम नाम उर मे गहो जाके सम नही कोइ ॥
जिह सुमरत संकट कटै दरस तिहारो होइ ॥
बध सखा सभ तजि गए कोई न निभयो साथ ॥
कह नानिक इह बिपति महि ऐक टेक रघनाथ ॥ ५ ॥
नाम रह्यौ साधू रह्यौ रह्यौ गुर गोबिंद ॥
कह नानिक यह जगत मों क्यूं न भजो भगवंत ॥ ५६ ॥

महल ॥१०॥

बल हूवा बंधन छूटे सभ कछ होत उपाइ ॥
सभ कछ तुमरे हाथ है तुमही होत सहाइ ॥ ५७ ॥

(संभवतः अपूर्ण).............इसके बाद अन्य ग्रंथ इसी से संयुक्त है।

विषय--गुरु मतानुसार ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण प्रतीत होता है। इसके केवल चार पत्रे उपलब्ध हैं। अंत में महल दस के पश्चात् केवल एक दोहा उद्धृत है। इससे विदित होता है कि अगला महल (ग्यारहवाँ) अपूर्ण है। रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता "गुरु नानक" है।

संख्या १८९ख. बचन (नानक जी ग्रंथ का मतु), रचयिता--नानक कवि, कागज--देशी, पत्र--७८, आकार--९ ५/१० × ८ १/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--३०८२, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्यसम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि---१ ॐ सति नाम करता पुरखु निरभउ निरबैरु अकालि मुरति अजु नीसै भंगुर प्रसादं ॥

गिरंथ वैद्य (नानक) नकाना जिआ गिरंथा का मतु । नकल खास कलम ॥ सरब रोग का अउखधु नाम ॥ नाडी की परीखिआ लिखते ॥

कर अंगुष्ट जु मूल ही देखहु नरा आकार ।
जानहु दुखु सुखु जीअ को पंडित करहु बीचार ॥

:o: :o: :o:

भूष हीन मुष फीका रहे । उष्ण पीति कफ जुवर रहै ॥
"नानक कबि' जो कहिओ बषान । मारत लछन राते जान ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

बिरछ लगावण की विधि

१पपर १ बट २ निम ३ कचूर ४ अंब ५ कंथ ६ बेल ७ तउ नरव न देषे ॥१॥ जवाइण की टिके पुणे लेणी आरास पाणी वीचि पेसा इकु महतु पावणा चूरन महि पाइके ऊपरहु एहु पाणी पीणा दिने राती एते तरह षाणा नफा बहुत होइ ॥ ५ ॥

अत--- जुलाब सनाय ॥
जंगी हरउ । सौफ ॥ पैसा पैसा भर ॥ चार पैसा सकरा ॥

॥ धातुपुष्ट ॥

तुक मलंगा अधेला भर शरकरा के रस साथ । अथवा दुध के साथ ॥ धातुपुष्ट ॥ नौग ३१ म्रिति २१ कपुररस २१ अदरष के रस ॥ निंबु का रस खरल करणा गोली ७ ॥ पथ ॥ मुंग का दाल कनक की रोटी घीऊ । षटाई प्रहेज ।

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय---आयुर्वेद चिकित्सा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं । रचयिता का नाम नानक कवि है । पता नहीं, इनका संबंध प्रसिद्ध संत नानक जी से है या नहीं । ग्रंथ के आरंभ में तथा आगे जहाँ तहाँ संतों की शैली अपनाई गई है, यथा --

॥ ॥१ ॐ सति नाम करता पुरखु निरभउ निरवैर अकालि मूरति अजु नीस भंगुर प्रसाद ॥ ॥

गद्य में 'न' के लिए 'ण' लिखा मिलता है । ऐसा राजस्थानी और पंजाबी में होता है । अतः संभव है, सुप्रसिद्ध संत "नानक" ही ग्रंथ के रचयिता हों । गद्य भी पुरानी खड़ी बोली का है । लिपिकार ने शब्दों को बहुत अधिक मात्रा में अशुद्ध लिखा है ।

संख्या १९०. ककहरा, रचयिता---नामदेव, कागज---देशी, पत्र---२, आकार---५ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---११, परिमाण (अनुष्टुप्)---२२, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्ति स्थान---पं० श्री कल्लू पांडे, ग्राम--गोराज, पो०--पश्चिम शरीरा, जिला--इलाहाबाद ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ।

कहत ककहरा एक संदेसा । गौरजा व्याहन चले महेसा ॥
खाख लगाय डमरु को लीन्हा । भांग धतुर षजाना कीन्हा ॥
गरे नाग शिर लीन्हे गंगा । भूषन भसन चढ़ायो अंगा ॥
घर नहि दूसर भूत बराती । चले चबात बेल कै पाती ॥

"नामदेव" इशर अस राजा । करत निहाल गाल के बाजा ।।
चंद्र लिलाट जटा फन काढ़े । लोचन तीन लोक उजियारे ।।
छाडि नगरि की लाष सोसऊ । वाहन बयेल महेस मगाऊ ।।
जतन कीन वे लोको वानी । सोनो सींग मेढा दुइ आनी ।।
झालर औ गज मोतिन माला । धन्य बयल शिव शकर पाला ।।
नाथ हाथ आपं पहिराइ । कंचन से पुर लेत मीठाई ।।
टेकट पाव भैय अवन वानी । चले महादेव जग के दानी ।।
ठाड़ भये इस्वर अस राजा । करत निहाल गले के बाजा ।।
डूहका बैल लवादे वूको । को जाने महिमा शिवजी की ।।
ढाढोल फिरे नहि डंका चले महाजोगी शिव शंकर ।।
नारहर वेग वेग विन लछन । तहा तुलछन तहा हेवंचल ।।
तहा षबर भ शंकर आए । नग्र के लोग देषन सब धाए ।।
थान सूत कंचन के नीके । माडव गाचा हेवचल जी के ।।
धामधूम धवगाहर ऊंचा । देष सरूप नयन भर नीचा ।।
नाहक व्याह हेमंचल कीन्हा । गोरा रूप डिगंबर लीन्हा ।।

अंत--

पारवतीन से षबर जनाई । वरवाउर तर भाग चबाई ।।
फासी दे जिव मजो भवानी । सषी सोच गोरा मुसकानी ।।
उला देषी चली सहेली । पारबति नवाढ़ छाडो अकेली ।।
बयल चढ़ा एक आव नगा । आठौ अग सकल तन भंगा ।।
भांग धतूर के षाष लगाये । काली नाग गरे लपटाये ।।
मनसा सोच करै नहि कोई । करम लिखा भर पावा सोई ।।
जबं बरात दुआरे आई । बिचका बैल बाघ गुर्राई ।।
रानक गिरिजा देषि तमासा । सषी सोच हेवान हुलासा ।।
लालीत पांव हेवान पधारे । मोतीन चौक जहा बैठारे ।।
वारे हीरा करै नेवछावर । शंकर गौर फिर दुइ भावर ।।
सोस सपति तुम देउ लुटाई । अचल कीन हेवंचल जाई ।।
हरषे देव फूल बरसाइ । ब्रह्मा विष्णु तमासे आई ।।

।। इति शिव विवाह संपूरण ।।

:o: :o: :o:

--पूर्ण प्रतिलिपि

विषय--प्रत्येक अक्षर पर चौपाई रचकर शिव पार्वती विवाह वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल दोनों अज्ञात है । रचयिता का नाम भी स्पष्ट नही होता । एक स्थान पर नामदेव लिखा मिलता है जिससे वही रचयिता का नाम मान लिया गया है ।

संख्या १६१. रामाश्वमेध, रचयिता--नारायणदास, कागज--देशी, पत्र--२५८, आकार--१०¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१५, परिमाण (अनुष्टुप्)--६७७२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७३६ वि०, लिपिकाल--सं० १६१५ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि---श्रीमते रामानुजाय नमः ।। अथ रामास्वमेद लिषते ।।

।। दंडक ।।

कोमल नवल जलजात से अमल जग विमल विरागप्रद राग के हरन ये ।
तीरथ सिधारे कर्म ग्यांन अनुसार तातैं अमित्त सवारे जग तारन तरन ये ।
सचर अचर सुचि असुचि नरायन से साधहू असाध भ्रसरन कौ सरन ये ।
प्रपति विचारे नैन नैसक निहारे देत कविराजन के पार सेस आनद चरन ये ।। १ ।।

।। छप्पै ।।

बंदि पर्म गुर चरन सर्व गुरकों सिर नावहुं ।
रामानुज पद कमल चारु संतत उर लावहु ।
नौमि परांकुस दास बहुरिया मुनि मुनि कायक ।
राम मिश्र दगकल नाथ निज सुषदायक ।
श्रीसठारि पद बंदि कै विस्वकसैन उदार मति ।
सेवहु जगदंबा चरन श्रीनिवास पद कमल रति ।। २ ।।

।। दोहा ।।

परमपरा निज गुर की वरनी आदि वनाय ।
जिनको सरनागत पये भवसंभ्रत दुष जाय ।। ३ ।।

:o: :o: :o:

भ्रंतरवेद के वीच नगीच बहै जमुना को प्रवाह सुहायौ ।
पंडित मंडित भीर भलौ जह सर्व थली सुष संपति छायौ ।
धूम व सिष्य मुनीसउ के तप कौ थल शुद्ध सबैं मनभायौ ।
देषत देवपुरी सो लसै सुबसैं इक उत्तिम नग्र इटायौ ।। ८ ।।
तापुर में हरि मंदिर एक अनेक विवेकन कौ उपजावैं ।
श्री नरसिंघ वसें नृप आप लषैं नर सौ प्रभु कौ पदु पावैं ।।
होहि तहां निगमागम अर्थ अनर्थन कौ कछु लेसु न आवैं ।
संत समाज बिराजत ता थल श्रीपतिराज कौ कूट कहावैं ।। ९।।

।। दोहा ।।

तिहि समीप वुज मंडली माथुर बंस उदार ।
श्री वसिष्ट गोती वसैं रिगवेदी ज उदार ।। १० ।।
उपजे तिहि के बंस में लघुमति उगर नाम ।
श्री वैष्णव कुल सिष्य सौ भयौ जानि सुषधाम ।। ११ ।।
तिन श्री गुर निज करि कृपा हरि सन मंजु प्रकास ।
भयौ मान चित सोधि कै कहो नारायन दास ।। १२ ।।

।। चौपाई ।।

एक बार तिहि मंदिर जाई । सुनी राम मुष कथा सुहाई ।।
सुनत भयौ हिय हरष अपारा । भाषा करि बहु चरित उचारा ।।
गुंग पंगु अनुतक अधमादी । कवित विवेक कहत कवि आदी ।।
सो बिचार कछु एक न राषा । रामचंद्र जसु पावन भाषा ।।
जथ देवसरि धार सुहाई । मिलहि आनि जल नीच निकाई ।।
होहि सकल ते गंग समाना । धरहि सीस ता कहुँ वुधिवाना ।।

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

संबउ दसु दस सत गनौ अष्ट अधिक इकतीस ।
नभ सित पछ एकादसी वारु वरनि रजनीस ॥

:o: :o: :o:

मध्य— ॥ त्रोटक छंद ॥

सुनि बैन कपिद्र सरोष भयौ । अरिमर्दन के पद सीस नयौ ।
तन पर्म विसाल कराल लस । रन धाय चलौ धर धुध्ध धसै ॥ ५२ ॥
जनु काल बली निज रूप धरयौ । लषि चपक हू अनुमान करयौ ॥

:o: :o: :o:

॥ छप्पय ॥

सुरथ वचन मुनि कान कहत हनुमान हरषि हिय ।
तुम प्रवीन नरनाह राम के भक्त प्रानप्रिय ।
अवस होय प्रन सत्य तोर रन मोहि बाधु अब ।
तदपि न मैं मन म डरों धरों धनुहाथ जब ।
अतिसमरथ रघुवस मनि प्रनत जानि मोचन करे ।
लषि न सकै दुष बास के परब्रह्म तब ते परे ॥ ६ ॥

:o: :o: :o:

॥ चोपही ॥

रन मंडल कपि बंधन होई । सुनि आचर्ज करो जिन कोई ॥
सवा सुतत्र एक रघुराया । तासु विवस सब विस्व निकाया ॥
जिमि नट विवस दारु की रमा । तिहि विधि सबहि नचावत रामा ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ डंडकु ॥

भवभय हारी पर उपकारी हरि लोकहि को दारिद विदारी सो बिहारी दिमि दसु है ।
कविन विचारी अधिकारी है वान सब कहत सुनत सुष देत सरबसु है ।
ग्यान कौ समाज ग्यान मानन को साज जोग जप कौ [illegible] सुधा सार कौ सरसु है ।
बापउ कौ चाव है नरायन कौ जीतो दाउ मेरे मन भाव सियाराम जू कौ जसु है ॥ ६१ ॥

इति श्री पद्म पुराणे पातालषडे सेस वात्सायन सवादे नरायनदास बिरचितायां अरसठ **को** अध्याय ॥ ६८ ॥ इति श्री रामास्वमेद जग्य कथा सपूर्णम् ॥ श्री राम....पुस्तक **पठनारथी मोतीराम पुजारी** श्री गोपीनाथ जी के रूप वासमध्ये समापत संमत ॥ १६१५ ॥ **जेठ बदी** ॥ १० ॥ सोमवार लीषतं गोविददास ॥ श्रीराम जी..... ॥

विषय—पद्म पुराण के आधार पर रामाश्वमेध वर्णन ।

रचनाकाल

संबउ दसु दस सत गनो अष्ट अधिक इकतीस ।
नभसित पछ एकादसी बारु वरनि रजनीस ॥

संख्या १६२क. गोवर्द्धन लीला, रचयिता—दास नारायण (ब्रजवासिया), कागज—देशी, पृष्ठ—१३ (६६ से १०८), आकार—७। × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० २२; पु० स० ४।

आदि——राग बिलावल ।।

गोद बेठी गोपाल कहे तब व्रजराज सों,
अहो तात एक बात सुनो दे श्रवन हमारी ।।
भवन मांझ हूं गयो धरी जहां सोध घनेरी,
मे हसि मांग्यो पाय पे मया दे री मोय,
कर लकुटि लियें खीजि कह्यो रे यह क्यो देऊ तोहि ।। १ ।।

मध्य——

कान्ह गए हे पटपीत आनि जब धोरी बोली ।
हूं कत लेहडो फेरि बछ के सन्मुख हो री ।।
छुव बछ अकुलायके डाढ मेलिस महा आय ।।
भली भली खेली कहे हो कोन गोप की गाय ।। २० ।।

अंत——

तब वृज बासी लोक देत व्रजराज दुहाई ।।
जे जे शब्द उचारि हमारो देव कन्हाई ।।
दे अशीस घर कूं चले ग्वाल गोप ब्रज नारि ।।
व्रज जन गिरधर रूप ये हो वारयो तन मन डारि ।।
कहत व्रज बासिया ।। ४० ।।

इति गोवर्द्धन लीला संपूर्णम् ।। ।। ।। लिखतं बनसीधर संवत् १८२८ के
ासोज सुदी १२ रवौ ।।

विषय——श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

संख्या १९२ख. स्वामिनी जी को व्याह, रचयिता——दास नारायण, कागज——देशी, त्र——६ (३२ से ३८), आकार——७ x ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२८, परिमाण (अनु-ष्टुप्)——१०५, पूर्ण, रूप——साधारण, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्ति स्थान——श्री सरस्वती भंडार, ी विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० २८, पु० सं० १ ।

आदि——अथ श्री स्वामिनी जी को व्याह लिख्यते ।। राग विलावल ।।

व्रज वेद वदित वरसानो, वृषभान गोप तहां आनो ।। १ ।।
ताकी राधा रुचिर कुमारी, पिता मात हे प्रानपियारी ।। २ ।।

मध्य——

तब हसि उठि व्रज बाला, भले डहके नंदलाला ।। ६७ ।।
एक कहे कह्यो सुनि मेरो, एछ्यो नरवेहे तेरे ।। ६८ ।।
तेरी देह कांति अति कारी, ये कंचन बरन कुवारी ।। ६९ ।।

अंत——

वाढयो विविध विनोद अपारा ।।
कवि वरने कोन प्रकारा ।। ११८ ।।
जहाॅं सेस सारदा हारे ।।
तहां कवि जन कोन विचारे ।। ११९ ।।
जाको अंत न कोउ पावें ।।
ताको दास नरायण गावें ।।
इति व्याह खेल संपूर्ण ।।

विषय——राधा जी के विवाह का वर्णन ।

संख्या १९३. नाम कुसुममाला, रचयिता—नारायण सिंह नृप, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—१३। × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १७२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० सं० ६१, पु० सं० ४।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ नाम कुसुम माला लिख्यते ॥

॥ लीलहा छंद ॥

श्री नारायण मंगल कारक विघ्न अमंगल मूल विदारक ॥
बहु करुनाकर अतमत दायक दे प्रज्ञा प्रभु होइ सहायक ॥ १ ॥

अथ पिंगलोक्ति लीलहा छंद ॥ लहु गुरु अछर नेम न संधिग पय पयमता षट बस बंधिग लीलहा छंद सरस फरा मंडिग सुनखग राज बैरमन छंडिग ॥ २ ॥

मध्य—पृ० २०

अथ कूर्मनाम दोहा ॥

कमठ कूर्म कछप यहे अमर बतायो भाष ॥
प्रणम कूर्म बलवान जिहि धरा धरी दृढ़ राख ॥ १४ ॥

अथ जलौका नाम दोहा ॥

कहत जलौका नाम पुन यहे रक्तपा जान ॥
ग्रंथ गुलम रस पान कर होत अंत सुखदान ॥ १५ ॥

अंत—अथ समान नाम दोहा ॥

सम साधारण तुल्य निभ प्रतीकास संकास ।
सहक सहस जु सदृष्य पुन यह समान नीकास ॥ ३० ॥

इति शूद्र वर्गः ॥ दोहा ॥

स्वर्ग वर्ग ते अंत लो शूद्र वर्ग इति जान ॥
नृप नारायण दास किय विस वर्ग अभिधान ॥ ३१ ॥

नृप विरचिते नाम कुसुम माला समाप्तम् ।

विषय—कोश विषयक ग्रंथ। इसकी रचना हलायुध, धनंजय कोश, हेमचंद्र कोश, अमर आदि ग्रंथों के आधार पर हुई है।

संख्या १९४. माया को अंग, रचयिता—नित्यानंद, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, अपूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—

.... ॥ ज्यो ज्यो भागा प्रात स प्यास चौगुनी होय ॥७४॥
माया रस ज्यू ज्यूं पीवे त्यू त्यूं वाढ दुष ॥ नितानंद कहि किन पाया सुष ॥७५॥
मायारस ज्यू ज्यूं पीवे त्यू त्यूं बढे पियास ॥ जनम जनम भटकै पड्या पहर गले... ॥७६॥
माया सुष संसार मै नितानंद दिन चारि ॥ देषत ही चलि जाइगा फिर दुष वारंबार ॥७७॥
माया कासु......नंद मत भूल ॥ इक छिन सुष दिखलाइ कर मार मिलावै धूर ॥७८
यह सब माय मृग जल क......... ॥ झूठा चिलका देषकर हुवे जीव हैरान ॥७९॥
माया का सुष दुष भरया भोगै सो पछिताय ॥ हरि बिन ...दुनिया से दिल लाय ॥८०॥
माया मोहे मुगध नर साहिब दिया विसार ॥ बाजीगर बाजी रची अैसा ज.... ॥८१॥

मध्य—

माया के हित तप करै सबै जाहि वन माह ।। माया के हत दुष सहै साहिब से हित नाहि ।।१८।।
. . . कै हित साधना माया कै हित जाय ।। माया सैं हित लग गया बिसर आप मे आप ।।१६।।
माया के हत धरम . . . . हत दांन ।। नितानंद फल भोगवै फिर माया मैं आन ।।२०।।
माया के हित व्रत करै माया संजम ध्यान ।। मा . . . . . . लगै जग मै आवन जान ।।२१।।
माया के तीरथ बने माया के हित न्हाय ।। नितानंद फल फूल मै मूरष दि . . . . . ।।२२।।
मोटी माया प्रगट है कीनी घट के माह ।। जित तित माया विरतरी जितानंद कित जाह ।।२३।।

अंत—विष का अमृत नाम धरचा . . . किनहूं भोगी ।।
ब्रह्मा विष्नु महेस लौ तपसी अरु जोगी ।।७०।।
माया दीन्ही आमिका हरिजन की दासी ।।
विलवै नहि आदरी जिभ जिग्र विनासी ।।७१।।
साकत कें सिर पें रहै साधन क पाई ।।
साकत मेती भंडगी सतन सुप (दा) ई ।।७२।।
गुरु गुमानी दास जी मस्तक करि दीय ।।
माया वौषै समुह से पारांगत कीय ।।७३।।

इति श्री निदानंद जी कत माया कौ अंग संपूर्णः संवत् १८६८ पौष सुदी ६ भौमवार सुभं मस्तु ११

विषय—इसमे सामाजिक जीवों को माया जिस प्रकार घेरे हुए है, उसका वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि के ७३ पद लुप्त है । यह अत्यंत जीर्ण शीर्ण दशा मे है । अक्षर भी यत्र तत्र मिट गए है और उनकी स्याही उड़ गई है ।

संख्या १६५. रस रत्नाकर, रचयिता—निरमल कवि, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ १४/१६ × ४ ६/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७३ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामधारी जी चौबे, ग्राम—पैना, पोस्ट—बरहज, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशायेनमः ।।
देवी पूजि श्वरसती पुजे गुर के पाए ।
नमस्यकर कर योगी पु कहे महा कविराए ।। १ ।।
विविधी गर्थ वह युगते आइरुवेद पुपाए ।
भाषा चिकित्सा समुझि चित दोह छंद बनाइ ।।
एहि विधी ते मन ललित भो कलि के कविन्ह मनाइ ।। ३ ।।
नाम धरचौ एहि ग्रंथ को लोइ ।।
नारि लछन सब दोष के जाते प्रगट होइ ।।
सव(?त) सतरह सै तोहतरी समै मास कातीक ।
वारयु भौम बषान तीथ तेरस मन देइ ठीक ।।
गाउ चडे सवस कछुक दी(?व) म पक्ष अधियारे होइ ।
रसरतनाकर नाम ही प्रगट कीयो नर लोइ ।।
प्रारा आदि यु धातु कही सिद्ध कीया सब जानी ।
एक ही एक यो रस विधि बानि पै जानि ।।
सुरवानी ते प्रगट कै रन(?नर) बानि भाषा आनी ।।
निरनमल काएथ नाम कवि कृपाल सव जानु ।
वनु वाढो यो इही ग्रंथ मे ताते कही सुजान ।

॥ अथ नारि परिक्ष्या ॥

कर अगूठा जु मूल ही धमिनी जिव की साज ।
ताहि थिआदी जो दीजिय पड भाषत राज ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ अथ मंद नवीश्वर औषधक नाउ ॥

कास्वाप्त छार दीरकत वीकार पीतराज रोग पंडु रोग मार्थ कं पीरा सर्व व्याधी नवारौ । चीची हासेर ऽ॥ अरुमे की जरी का बोकला पाउ ऽ। अठंया जरी पात समेत सेर ऽ॥ अवराठा पव ४ जठामासी ठा १ वोही पानी पीसी घीउ मह पकु करवै घीउ कर नाम चीइ के पद्य नाभयेलोउ वं पंथ प्यावं साठी का चाउर मनहम नाउ एकर नीका होइ दीन १४ मह ॥

इति श्री पंडित रत्नाकर वैद्य निरमल (?कवि) वीचीताया दुतीयोपान ॥ २ ।

:o: :o: :o:

अथ औषधवाल के पंट उष का सोटीटा ५ मधु टा ५ वरीआर के जरी टा ५ धनिआ टा ५ जीरा टा २ गजर के जरी ट ५ पोमता २३ मव अस्ट वीष कं देव मधु मेली पीआइव दीन ३ नीका होइ ॥

विषय—आयुर्वेद विषय का वर्णन ।

ग्रंथ अध्यायों (सोपानों) में लिखा गया है । दूसरे सोपान के आगे कुछ अंश और लिखा है जो बिना पुष्पिका दिए छोड़ दिया गया है । रचनाकाल संवत् १७७३ है । लिपिकाल नहीं दिया है ।

रचनाकाल

सव(?त) सतरह से तीहतरी समं मास कातीक ।
वार यु भोम वषान तीथ तेरस मन देइ ठीक ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । रचनाकाल संवत् १७७३ है ।

संख्या १६६. हरितालिका व्रत कथा, रचयिता—निर्मलदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ १/६ × ४ १/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३६ वि०, लिपिकाल—सं० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० राम शिरोमनि तिवारी, उपनाम 'दादू', ग्राम—बहादुरपुर, पोस्ट—पश्चिम शरीरा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शारदा महाई ॥

अथ पूजामंत्र

सिवाय सर्व मंगल्यै शिवायै च नमोस्तुते ।
सिवाय च नमस्तुभ्यं सिवायै सततन्नमः ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सम्बत ठारह सव क्षतीस भाद्र शुदी अरु वुद्ध ।
क्षठि विशाष भाषा करौ शुमिरि राम अतिशुद्ध ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

बंदौ रघुवर पद जलजाता । प्रणतारत भंजन सुखदाता ॥
शिव उर मानस मंजु मराला । शुमिरित जिन्है मिटै जगजाला ॥
ते पद विनै करो कर जोरी । जासो भनित होइ नहि षोरी ॥

गुर दयाल पद करौ प्रणामा । शुमिरत जिन्है पाव विश्रामा ।।

:o: :o: :o:

ग्रंत——

।। छंद ।।

पति संग सहित सोहाग सुष ममलोक ग्रंत सिधावइ ।
यह उमाँ सिव सम्वाद कहि नर नारि शुभगति पावइ ।
कह "दास निर्मल" जथामति कर जोरि विनै सुनावई ।
रघुवीर पद रति होइ जेहि ग्रस जानि तव गुण गावई ।।

।। दोहा ।।

मो सम दीन न दीन कोउ तुम समान उपकारि ।
ग्रस जिग्र जानि सुश्वामि मोहि कृपा करहु त्रिपुरारि ।। ६ ।।

।। दोहा ।।

प्रणतपाल यह वानि तव सुनहुँ स्वामि रघुबीर ।
महानंद जन जानि मोहि हरहु सकल भवभीर ।।१०।।

इति श्री भविष्यपुराणे उमामहेस्वर सम्वादे ।। हरतालिका व्रत कथा निर्मलदास विरन्चिते सुभं मस्तु सम्वत १८३६ षष्टमी भृगुवारे च मूल च सोभनरतथा । साधारणो समाप्तच ग्रस्वनीमास सुक्लयो ।। मिदं पोस्तिकं जवाहिर मिश्र टेवा ग्रामे लिखितं ।। शुभंमस्तु ।।

विषय——हरितालिका व्रत की कथा वर्णन की गई है ।

रचनाकाल

सम्वत ठारह सव क्षतीस भाद्र शुदि ग्ररु वृद्ध ।
क्षठि विशाष भाषा करो शुमिरि राम ग्रति शुद्ध ।। १ ।।

संख्या १६७ श्री महाप्रभु जी के स्वरूप चितन को पद, रचयिता——निश्चयदास, कागज——देशी, पृष्ठ——१, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——६८, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)——५०, पूर्ण, रूप——पुराना, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ३६, पु० स० १६ ।

ग्रादि——।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।।
ग्रथ श्रीमदाचार्य महाप्रभु के स्वरूप को चितन पद ।। राग ।।
श्री मद्वल्लभ ग्रगाधि रूप ।।

बिन निज कृपा कोउ नहिं जाने ए ग्रानंद ग्रपार स्वरूप ।।१।।
श्री गोपीजन भक्तवर्य जिनको सेवन के ग्रर्थ विचार ।।
श्री जी करत ही तापात्मक परब्रह्म श्री महाप्रभु साकार ।।२।।

मध्य——

ग्ररु श्री नाथ जुगल रूप विशिष्ट साक्षात् श्री गोवर्धन पें ।।
ग्राय विराजें शो जु विचारहु तापे श्री वल्लभ करराय धरत पे ।।१४।।
ग्राप प्रगट हो सेवा स्वरूप करी हे याते जु गुप्त निहारि ।।
ग्रधिक कहा कहेनों ग्रब श्री गोस्वामी जी हु यह उर धारि ।।१५।।

ग्रंत——

ए ना भूतो न भविष्यति निश्चय हे ग्रकलित ग्रशं भवित ।।
ताहि तें ब्रह्मा शिव शेष व्यास ग्रादि ग्रग्यात याके चरीत ।।३६।।

दंवी जन जूदनहि के चरण शरण रहि ईन कि आग्या पे ।।
रमहू शदा तो कतारथ है। निश्चदास जू और कहाया पे ।।
।।३७।। १ ।।पूर्ण।।

विषय—श्री आचार्य जी महाप्रभु जी के स्वरूप का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—केवल एक पत्र के एक तरफ यह पुस्तक लिखी है और दूसरी तरफ श्री हरीराम जी कृत 'दान लीला' लिखी है ।

संख्य १९८. इंद्रावत, रचयिता—नूर महम्मद, निवासस्थान—भादों (जि०—आजमगढ़), कागज—बासी, पत्र—२०८, आकार—११½ × ७¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३३६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—फारसी, प्राप्ति स्थान—शेख अब्दुल हमीद साहब, गाव—चिताग, पोस्ट—गुरहन, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—।। बिस्मिल्लाहि रहमाने रहीम ।।

धनि आप जग निरजन हारा । जे अकाश बिन खंभ सवारा ।।
दोउ जग को आपुही राजा । राज दाऊ जग को तेह छाजा ।।
दीन्हा नन पथ पहचाना । दीन्हा रसना ताहि बखाना ।।
बात सुनी तिन श्रवनन दीना । दीन्हा बुध ज्ञान तेहि चीन्हा ।।
गगन के सोभा किन्हो तारा । धरतो सोभा मुख संवरा ।।
आप गुपत औ परगट आप आदि औ अंत ।
आप सुन औ देखे लीन्हि सब बधवंत ।।

अंत—

भयो सपूरन आधी कहता । मानो ज्ञान समदर मे बहता ।।
तीन सहस चौपाई भई । देख आई फुलवारी नई ।।
तिन आगे जो सुख सो रह । तीन सहस चौपाई रह ।।
हूं अभी बहुतेरी दिन केरा । कस्न बहुत दिन के मैं हेरा ।।
विद्या ज्ञान बहुत जहा होई । अरथ छिपानी बूझी सोई ।।
नूर मुहम्मद यह कहता है प्रेम की बात ।
ई प्रेमरस जिहमह बाढ़ि सोई दिन रात ।।

तमाम शुद जिल्द अव्वल किताब इंद्रावत बतारीख २५ महरम लह राम रोज पंच सनबा ।।

विषय—सूफी प्रेम-कथा-काव्य ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अस्त व्यस्त अवस्था मे मिला है । रचनाकाल तथा लिपिकाल का पता नही चला । प्रस्तुत प्रति मे ग्रंथ का केवल प्रथम भाग है ।

संख्या १९९. वाराणसी विलास, रचयिता—पन्नालाल देवशर्मा, निवासस्थान—उदयपुर, कागज—देशी, पृष्ठ—३११, आकार—११॥ × १० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३९९५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०७ वि०, लिपिकाल—स० १८०८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ५८, पु० स० २ ।

आदि—।। श्री गणपतये नमः ।। श्री काशी विश्वेश्वराय नमः ।। अथ वाराणसी विलास लिख्यते ।। श्लोक ।।

तं मन्महे महेशानं महेशान प्रिया भकं ।। गणेशानं करि गणेशाननमनामयं ।।१।।

॥ छप्पय ॥

सुंडा दंड प्रचंड रंग मंडित सिंदूर वर ।
भालचंद जगबंद शुभ्र तिरपुंड तास तर ॥
मनिमय सुवन किरीट हेम सिर छत्र बिराजित ।
अलि गुंजत मद लोभ लाल कुंडल श्रुति राजत ॥
भुज चारि चारु भूषन कलित लंबोदर असरन सरन ।
नित देवकरन वंदित चरन हरनंदन आनंद करन ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १३६ श्री विश्वेश्वराय नमः ॥ सोरठा ॥ दोहा ॥
पेंतीसे उल्लास में नित प्रति को आचार ॥
चारि बरन को कहन हे समस विशेष विचार ॥ १ ॥

अगस्त्युवाच ॥

॥ दोहा ॥

महाक्षेत्र अविमुक्त हे महा मुक्ति को दानि ॥
क्षेत्रनिहू को क्षेत्र यह मंगल मगल मानि ॥ २ ॥
सकल मसानन मे प्रगट कहियतु महा मसान ।.
पीठनि मे वर पीठ यह ऊषर ऊषर मान ॥ ३ ॥
जिनकी मति चाहै करहि तिनहि धर्म की रासि ।
अर्थिन काजै अर्थदा सिषिरथ परम प्रकासि ॥ ४ ॥
कामिन कामद है सही सुकृतिन मोक्ष सरूप ।
जहां जहां सुनियतु तहां कथासु अमृत रूप ॥ ५ ॥

अंत—

॥ छप्पय ॥

ब्राह्मण माथुर एक जाति जाकी घर वारी ।
हरजी मिश्रहू नाम भक्त गणपति के भारी ॥
तिनसुत उद्धव दास आहि जो चतुर सिरोमनि ।
लछीराम तिन पुत्र देवबानी प्रवीन् गनि ।
जिन समन बियौ भाषाग्र मे उन असीम की शक्ति सो ।
मुहि करयौ कबी तब में रच्यौ यहै ग्रंथ शिवभक्ति सो ॥९७॥
श्री विक्रम ते वर्ष बीतिगे जबही इतने ।
७ ० ८ १
मुनि नभ बसु अरु इन्दु जानि लीज्यौ चित तितने ।
माधव शुक्लहू पक्ष बार रजनीश बषानो ।
मन्मथ तिथी बिहान सिद्धियोगहि में जानों ।
यह ग्रंथ पूर्ण किय ता समें सबन बुद्धिदायक अमल ।
कहि देवकर्ण याकें सुनें फूलें नित निज चितकमल ॥९८॥

इति श्री मत्सकल भूमंडलाखंडलेश्वर श्री मन्महाराणा श्री जगतसिंहामात्य पंचोली **देवकर्ण विरचिते** श्री मत्काशी खंड श्लोकार्थानुकृति निबद्ध व्रज वाक् पद्धतौ वाराणसी विलासे **अनुक्रमणिकाख्यानं नाम शततम** उल्लासः ॥१००॥ श्लोक सं० २०१ सर्वग्रंथा ग्रंथ संख्या २२००० सं० १८०८ वर्षे प्रथम आषाढ़ वद १२ वौ लिखितं जोशी रूप जी ।

विषय—स्कंद पुराणातर्गत काशीखंड का हिंदी पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—चमड़े की जिल्द मे यह पुस्तक सुंदर लिपि मे लिखी हुई है ।

संख्या २००. पाराशरी जातक या उड्दाय प्रदीप, रचयिता--परमसुख दैवज्ञ, कागज--देशी, पत्र--८, आकार--१०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--२५८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८६८ वि०, लिपिकाल--सं० १९०१ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता--पं० सुरेशधर जी द्विवेदी, ग्राम--अजगरा, पो०--मदियारपार जिला--आजमगढ़)।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गजास्य नमस्कृत्य सिद्धि बुद्धि प्रदायकम् ।
पाराशरी जातकस्य भाषा च क्रियते मया ॥
क्षत्रान्वये विष्णुदासस्तेनाहं प्रार्थित विल ।
पारासरी जातकस्य भाषा कृत्वा समार्थया ॥ २ ॥
गूढ़ार्थान्प्रगटीकृत्य सशेष सुखबोधकृत् ।
पाराशरी जातकस्य भाषा लिख्यतेऽधुना ॥ ३ ॥

सिद्धांत और उपनिषधनमे प्रतिपाद्य ब्रह्म को शुद्धांतष्करण रक्त और वीणा को धारन करे एसा जो कोई तेज हय उसको उपासना करो हो ॥१॥ ऐसी मेरी मति हय उसकी बुद्धि से पाराशर होरा को विचार करके उड्दाय प्रदीप नाम ग्रंथ को करत हो। जोतिषिन के हर्ष वास्ते ॥ २ ॥ और नक्षत्र दशा प्रकार कईसे फल कहने का प्रकार कहत हो और भाव को अध्ले के जो सब विचार हय हो सामान्य शास्त्र से बृहज्जातक से जानना ॥

अंत--और नवम स्थान का स्वामी दशम स्थान मे होय और दशम स्थान का स्वामी नवम स्थान मे होय तो इसको राज योग कहय इस योग मे जोसका जन्म होय सो मनुष्य विख्यात होय और सर्वत्र विजयवान होय ॥४१॥

पारासरी जातकस्य व्याख्यान भासया कृतम् ॥ १ ॥ श्री विष्णुदासस्य मुदेयन् माघ सुखेन च ॥ १ ॥

८ ६ ८ १
वसु रस गज चन्द्रे विक्रमार्कस्य वर्षे शिव तिथि शित पुष्ये चाश्विने कृष्ण पक्षे। लिखित-मिह हितार्थं विष्णुदासस्य पूर्वे तदनु जयपुराख्ये पत्तने ब्राह्मणानां ॥

इति परम शुष देवज्ञ कृत पारासरी जातकस्य देश भाषा व्याख्यान समाप्तम् ॥ सम्वत् १९०१ शाकाब्याः १७६६ मिति आषाढ़ कृष्ण पक्षे पञ्चम्याम् ॥

विषय--फलित ज्योतिष का वर्णन।

रचनाकाल

८ ६ ८ १
वसु रस गज. चद्रे विक्रमार्कस्य वर्षे ।
शिव तिथि शित पुष्ये चाश्विने कृष्ण पक्षे ॥
लिखित मिह हितार्थं विष्णु दासस्य पूर्वे ।
तदनु जवपुराख्ये पत्तने ब्राह्मणानां ॥

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल सवत् १८६८ और लिपिकाल सवत् १९०१ है।

संख्या २०१क. आत्मबोध टीका, रचयिता--मूलकार श्री शकराचार्य, टीकाकार--परमानंद, कागज--देशी, पत्र--१४, आकार--७ × ४$\frac{5}{8}$ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३५५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० महानंद पांडे वैद्य, ग्राम--पडित का पुरा (गढ़वा), पोस्ट--हड़िया, जिला--इलाहाबाद।

आदि––श्री वासुदेवाय नमः ।। आत्मबोधः ।।

यह भगवान शंकाचार्य उत्तम अधिकारियों के लिये श्रुतिस्मृति सूत्र वेदांत के इन इन तीनौ प्रस्थानो को बनाकर उसके देखने में संपूर्ण वेदांत के सिद्धांत का संग्रह असमर्थ मंद वुद्धियौं पर अनुग्रह करिके आत्मबोध नामक ग्रंथ जिससे संपूर्ण वेदांत क सग्रहै दषलाने के लिये प्रतिज्ञा करते है कृच्छ चांद्रायण नित्त नैमित्तिक उपासना आदि रूप तपो से जिनका पाप नष्ट हुआ है और जिनका हृदय शांत है और जिनका इहलोक परलोक के भोग मे विराग है अैसे मुमक्षू अर्थात् संसार का बंधन छूटने के वास्ते उपाय करने वालों के लिए यह आत्मबोध नामक ग्रंथ बनाया जाता है ।१।

कदाचित कोई कहै तप मंत्र कर्मयोग आदि अनेक साधन मोक्ष के लिए हैं तो आत्मज्ञान ही प्रधानता से मोक्ष के लिए क्यों कहा जाता है इस पर कहते है कि तपमंत्र आदि साधन परंपरा से ज्ञान द्वारा मोक्ष को सिद्ध करते है ज्ञान तौ उत्पन्न होत ही सब अज्ञान को नाश कर मुमुक्षूको उसके फल को पहुँचाई देता है । इसलिए दूसरे साधनो से ज्ञान ही को मोक्ष में प्रधान कहा है इसी को दृष्टांत से दृढ़ करते है जैसे पाक क्रिया मे काष्ट जल पात्र आदि साधन रहते हुए भी अग्नि के विना पाक नही सिद्ध हो सकता जैसे ज्ञान के विना मोक्ष नही सिद्ध होगा ।३।

अंत––दिसादेशकाल इनकी अपेक्षा न करके दु खादिक नाश करने वाला सब जगह में व्यापक नित्य सुख स्वरूप अपने आत्मा रूप तीर्थ को सेवता है वह सबका जानने वला सब जगह व्यापक औ मुक्त हो जाता है ।६७।

इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य गोविन्द भगवत्पूज्यपाद शिष्य श्री मच्छङ्कराचार्य कृत आत्मबोध समाप्तः च पुनः आत्मबोध भाषा टीका समाप्तः श्रीयुत पंडित राम अवतार जी के सहायता से परम आनन्द जी के तिलक भया अ० शु० ३ श्रीमच्छंकराचार्य्ययनमः ।।

विषय––वेदात विगय वर्णन ।

संख्या २०१ख. तत्वबोध टीका, रचयिता––मूलकार––श्री शंकराचार्य जी, टीकाकार––परमानंद (सभवत), कागज––देशी, पत्र––७, आकार––७ × ४ $\frac{?}{१६}$ इन्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––६, परिमाण (अनुष्टुप्)––१८२, पूर्ण, रूप––प्राचीन, गद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––प० महानद पाडेय, ग्राम–पंडित का पुरा (गढवा), पा० हंडिया, जिला–इलाहाबाद ।

आदि––वासुदेवेन्द्र योगीन्द्र गुरुको प्रणाम करिके मुमुक्षो के हित के लिए तत्वबोध नामक ग्रंथ किया जाता है उन अधिकारियो के लिए कि जिनका चारौ साधन सिद्ध हो चुका है उनके लिए मोक्ष साधन का उपकारी तत्व बोध विवेक को प्रकारो को कहूंगा । प्रश्न––चारो साधन कौन हं उ०––नित्य औ नित्य वस्तुओ का विवेक१ इस लोक परलोक के फल भोग में विराग २ सम आदि क्ष प्रकार के संपति ३ मोक्ष होने की इच्छा ४ प्र०––नित्य औ अनित्य वस्तु किसके कहते हैं उ०––एक ब्रह्म वस्तु नित्य है उसमें भिन्न वस्तु सब अनित्य है उसी कों नित्य औ अनित्य वस्तुओं का विवेक कहते है ।

अंत––अथवा चांडाल के घर में ज्ञान के सम्पूर्ण प्राप्ति होने पर सब तरह की इच्छा को रहित वह मुक्ति ही है :––

इति श्री तत्वबोध भाषा टीका श्रीयुत् पंडित रामअवतार जी की सहाय से तिलक किहा गया संपूरणम् ।।

विषय––वेदांत विषय वर्णन ।

संख्या २०२क. परमानंद सागर, रचयिता—परमानंद दास, कागज—**देशी, पृष्ठ**—१५८, आकार—१० × ८॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३८६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री **विद्या** विभाग, कांकरोली, हि० ब० ५७, पु० सं० ३ ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः । अथ परमानंद दास जी के पद लिख्यते ॥ मंगलाचरण । राग कान्हरो ।

चरण कमल बंदौ जगदीस जे गोधन के संग धाए ।
जे पद कमल धरि लपटाने कर गहि गोपिन उर लाए ॥ १ ॥
जे पद कमल युधिष्ठिर पूजित राजसूय में चलि आए ।
जे पद कमल पतामह भीषम भारत मे देखन पाए ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ७४

कान्ह अकेलेइ सोवत ।
सपने मे तेरो मुख देखत तब उठि म रग जोवति ॥ १ ॥
सीतल छांह कदंब की . तेरोई रूप बिचारत ।
कबहूं मोह ह्वे रहत ध्यान धरि कबहूंक दृष्ट पसारत ॥ २ ॥
नव पल्लव सुमन कमल ल रचि रुच सेज सवारति ।
परमानंद प्रभु तेरोई कारन अति संचित हरि आवत ॥ ३ ॥

अंत—राग बिलावल ।

माई री सांवरो सो ग्वालबाल नंदगांउ खेले ।
देखत सुधि भूलि जात मोहनी सी मेले ॥ १ ॥
मृगछौना से नैन न उरते बन सिडारो ।
तबही मन कर्खि लेत गतिमत सब टारो ॥ २ ॥
झनझुन पाइन पैजनी अरु ठुमक ठुमक डोलें ।
तोतरे मे अमृत वचन भैया कहि बोले ॥ ३ ॥
एसी जो होय कबहु बहुरो बाल पैयें ।
निरखि निरखि नैन सुख हम हंस उर लैये ॥ ४ ॥
जसुमती को पूत भाग एसे सुत जायो ।
परमानंद बलिहारी निगम छंद गायो ॥ ५ ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय मंदिरो मे गाए जाने वाले पदो का संग्रह ।

संख्या २०२ख परमानंद सागर, रचयिता—परमानंद दास जी, **कागज—देशी**, पृष्ठ—१०३ (६ से १०८), आकार—१०॥ × ७॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०००, अपूर्ण, रूप—दीमक से जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ० ५७, पु० स० ४ ।

मध्य—पृ० ८५

चलि री मदन गोपाल बुलावें ।
तेरोई नाउ लै लै बेन बजावें ।
इह संकेत बड्यो बन महियां ।
सघन कदंब मनोहर छहियां ।
मिलत पर्मसुख अदभुत लीला ।
परमानंद प्रभु भावन सीला ।

अंत--मलार ॥

बगिर सिंधु बांधहू राघो बहुरि बहुतुमरिबौ ।
सीता नयन वारि बारिध कैसे कै तरिबौ ।
कितीक बात कोसलपति रावन रावन को लरिबौ ।
इह तौ हम प्रगट देखी लंका कौ जरिबौ ।
तव प्रताप एक बान रिपु कौ बल हरिबौ ।
परमानंद कौन सहै पानि धनुख कौ धरिबौ ॥ ६ ॥

विषय--पुष्टिमार्गीय मंदिरों में गाए जाने वाले भक्तिविषयक पदों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य--पुस्तक के खुले पत्र हैं । पत्रों के आधे हिस्से दीमकों के कारण नष्ट हो गए ।

संख्या २०२ग. परमानंद सागर, रचयिता--परमानंद दास, स्थान--कन्नौज तथा ब्रज, कागज--देशी, पत्र--१५७, आकार--८॥ × ६॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२८७, अपूर्ण, रूप--जीर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान--सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० १६, पुस्तक सं० ६ ।

आदि--राग सारंग ॥

आजु नंदराइ के आनंद भयो ।
नाचत गोपी करत कुलाहल मंगल चार ठयो ॥ १ ॥
राती पीरी चोली पहिरे नौतन झूमख सारी ॥
चोवा चंदन अंग लगाये सिंदूर मांग सवारी ॥ २ ॥

मध्य--पृ० १५६

चितवनि प्रीति की पहिचानी ॥
मारग मिले राधिका नागरि घूंघट मे मुसिकानी ॥
ठाढे द्वार नंद जू के ढोठा दीनी गुपत निसानी ॥
बेगि चलहि उठि गहरु करति कत दूती रही रिसानी ॥
भाग आपने भावतो पायो नैननि मांझ समानी ॥
परमानंद स्वामी मनमोहन तेरी मिलनि हितानी ॥८८॥

अंत--प्राप्त नहीं ।

विषय--पुष्टिमार्गीय मंदिरों में गाए जाने वाले भक्तिविषयक कीर्तन ।

संख्या २०२घ. परमानंद सागर, रचयिता--परमानंददास, कागज--देशी, पत्र--६२, आकार--८ × ६। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--३०००, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६४२ के पूर्व (अनुमान), प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० बं० सं० ४५, पु० सं० ४५ ।

आदि--॥ श्री गिरिधर लाल जी विजयतु ॥ अथ जन्म समय के पद ॥ राम सारंग ॥

आज नंद राय कें आनंद भयो ।
नाचति गोपी करति कुलाहल मंगल चारु ठयो ।
राती पीरी चोली पहिरें नौतन झूमक सारी ।
चोवा चंदन अंग लगायो सिंदूर मांग सँवारी ॥

मध्य—पृ० ६४

लला रे नेंक हमारें आउ ।
जो मांगो सो देउं मनमोहन लै मुरली कल गाउ ।
मंगल चार करो गृह मेरे संग के सखा बुलाउ ।
करहु विनोद जुवति सुंदरि सों प्रेम पीयूष पिवाउ ।
बलि बलि जाउं मुखारविंद की तेउ त्रिभंग दिखाउ ।
परमानंद रसभरी सहचेरी लै चली करत उपाउ ॥ २ ॥

अंत— राग मलार ॥

रैनि पपीहा बोल्यो माई ।
नीद गइ चिंता चित उपजी सुरति स्याम की आई ॥ १ ॥
सावन मास मेघ की बरखनि हों उठि आंगन आई ।
गरजत गगन दामिनी चमकत ताते खरी डराई ।
राग मलार अलाप्यो काहू मुरली मधुर बजाई ।
बिरहनि बिकल दास परमानंद धरनी परी मुरझाई ॥ ३ ॥

विषय—श्री पुष्टिमार्गीय मंदिरों में गाए जाने वाले परमानंददास जी के बनाए कीर्तनों का संग्रह । इसमें भागवत दशम स्कंध की कृष्ण लीलाओं का वर्णन है । परमानंद दास जी कृत पदों का इतना विशाल संग्रह अन्यत्र अप्राप्य है ।

विशेष ज्ञातव्य—विद्या विभाग, कांकरोली में इसका संपादन हो रहा है । विद्या विभाग, सरस्वती भंडार में इसकी कई प्रतियां उपलब्ध हैं । सबसे प्राचीन जिसका अनुमान लगाया गया है सं० १६६६ के लगभग की लिखी हुई है ।

संख्या २०२६. बिरह के पद, रचयिता—परमानंद दास, निवासस्थान—गोवर्द्धन, कागज—माधोपुरी, पृष्ठ—५५ (७ से ३१ तक), आकार—६।×५। इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—सं० भं० विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० २०, पु० सं० ४ ।

आदि—प्राप्त नहीं ।

मध्य—पृ० ३१

अहो तुम गोबिंद सों कहियो जाई ।
बहुत दिवस प्यारे मनमोहन में नाहिन सुधि पाई ॥
नंद ग्राम ते अपनी दासिका मथुरा गुपत पठाई ॥
सहथ पत्रिका लिखि मृगनैनी अपनी प्रीति जनाई ॥
चरन कमल गहि बिनती कीबी बैठे जहां कन्हाई ॥
ताको कौन हाल नंद नंदन अपने संग खिलाई ॥
उहि तो तन मन तुमहि समर्प्यो चरन कमल लै लाई ॥
परमानंद प्रान आतुर हरि बारक देहु दिखाई ॥६७॥

अंत—जिन गोपालहि जान देहि ।

अब ब्रजनंद बगदि आए हैं इह मन पछसा बोलेहि ॥
मोहन कान्ह मोहनी मथुरा मोहन लोग मोहनी नारि ॥
मोहन गति मोहन हरि लीला मोहन गतिलै लोग मझारि ॥
बसुदेव पिता देवकी माता इह सब प्रगट भई नरलोक ॥
परमानंद स्वामी कत आवे सुंदर स्याम बिनासन सोक ॥ ६ ॥

विषय—परमानंद दास जी के बनाए हुए विग्रह के पद है, जो पुष्टिमार्गीय मंदिरो में अनोसर के बाद गाए जाते है।

संख्या २०३क. पद, रचयिता—विप्र परसन, स्थान—चौबौली (आजमगढ़), कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—१८¼ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२ पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८०—९० (लगभग), लिपिकाल—सं० १८८०—९० (लगभग), प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० जानकी चौबे, ग्राम—चौबौली, पोस्ट—अहरौला, जिला—आजमगढ़)।

आदि— ॥ राम ॥

हरिहर प्यारे मै तेरी बली जाऊ ।
दोउ भगवान दोउ प्रभु शाहेब जन जग रखवारे ॥
हरी विश्वनाथ जग्रनाथ गोशाइ दीन दरीद्र वीदारे ॥ हरि ॥
गौरीजापती श्रीपति शुरशाई भैरव हनु प्रति···रे ॥
रावनारी त्रिपुरारी कहावत निश्चर अमीत संघारे ॥ हरि ॥
"परशन वीप्र" कहत कर जोरे जिय को जरनी नीवारे ॥ हरि ॥
नरहरि प्यारे मै तेरी वली जाऊ ।
जन प्रहलाद भयो महिमंडल श्रीपति नाम शुधारे ॥ नरहरि ॥
पीतई कहा कुल धर्म पढ़हु शुत शुत प्रति दिवस करारे ।
वाधी चढायेहु गीरीवर उपर गीरी ते नीपटी पवारे ॥ ४ ॥
षंभ वांधी पीतु षड्ग प्रहारे उन नरशीह उदर वीदारे ॥
परशन वीप्र कहत कर जोरे भव की जरनी नीवारे ॥
भृगुपति प्यारे मै तेरी वलि जाऊं ।
शुरन्ह शहाए धेनु हीत लागी शहशबाहु शंघारे ।
अमीत वार छौति वीप्रन्ह दीन्हो वध करी अमीत मुग्रारे ॥
पांच वान प्रभु करनहि दीन्हो एक ते एक जुभारे ।
धनुषभंग शुनि तेरहुति धाए कांधे फरशु शुधारे ॥ ५ ॥
परशन वीप्र शीथील प्रभु भएउ नीरषत रूप अगारे ॥ ६ ॥
मै तेरी वली जाऊ दशरथ प्यारे ।
दंपतिमनु गवने वन माही तप वीधी आशन मारे ।
लागे चरन तपस्या जवही वीतेउ काल धनेरे ।
हरीहर वीधी शक्तीन्ह जुत आए अप्रीत जानी नीवारे ।
पारब्रह्म श्री संजुत आए अर्प्रात वचन पुकारे ।
पुष्ट भए तनु मनु सतरूपा अंभक षोलो नीहारे ।
मनभावत वरदान दीयो प्रभु दंपति भवन शीधारे ।
परशन वीप्र दीन जन जानी नीरषहु द्रीग रतनारे ॥

अंत—नरतम रतन शीरान जात मन शीताराम भजहु शुषदाई ।
शीव ब्रह्म शक्रादिक शुमीरत शनकादीक नीशि वाशर ध्याई ।
नर मतिमंद भजहु भगवानहि जीवन थोर दुराश दुराई ।
चौराशी भ्रमीहौ नर जवही जम जातना करत लै जाई ।
वैतरनी उतरै नही पैहौ विविध पंथ को करीही शहाई ।
जड़ चैतन्य जग......वीवीध पंथ निगमागम गाई ।
भक्ति शुगम पंथ "परशन" गांवत शीताराम शरन गोहराई ॥

विषय—भगवद् भक्ति वर्णन।

संख्या २०३ख. पद, रचयिता—परसन (विप्र), स्थान—चौबौली, जिला—आजमगढ़, कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—८¼ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८०-९० तक, लिपिकाल—सं० १८८०-९० तक, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता—पं० जानकी चौबे, ग्राम—चौबौली, पो०—अहरौला, जिला—आजमगढ़)।

आदि—छवि निरखहु शालिग्राम कै।
करि स्नान सिंहासन बैठे चंदन पुष्प ललाम कै।
तुलशी धूप कपूर की बाती आरती करि शुषधाम कै।
घंटा संष मृदंग मजीरा पद गावहु हरिनाम कै।
बाल भोग चरणामृत पावो "परशन" शरन शिराम कै॥ १॥
भादों वदि तिथि आठौ रोहिनि राजहि रे ललना।
अर्ध रइनि हरि जन्म ना भवन शोहावहि।
बंध कपाट खुल्न कोउ भेद न पावहि ललना।
बसुदेव हरि हिय लाई जमुन तट धावही।
घन गरजहि अति बरसहि.......... ।
फनिगनि आइ निहारि हरिहि उर लावहि।
रविनंदनि हरषहि चरन शिर नावहि ललना।
उतरि गए हरि पार नीयरावहि।
देवि चरन शिर नाइ हरिहि बहलावही ललना।
जशोमति परम उछाह अनंद बढावही।
......काध गरि चलि आवहि ललना।
निगलेहि मन बंछित नार छिदावहि।
नगर भए अति सोर बधाव बजावहि ललना।
नर नारिन्ह करि साज हरिहि शिर नावहि।
अगर धुम रंग छुटहि जिमि घन गाजहि ललना।
मुनिहुक मन भए मोर चतुर्भुज लाजहि।
जे एहि मंगल गावहि गाई सुनावहि ललना।
परशन भनत मनाई पुत्र फल पावहि।
नंद के वीर हरो जनपीर लगावह तीर लटी मेरी नैआ।
भवनिधि बेपरमान शुनोने शुनो विनती वलिभद्र के भइआ।
द्रोपति की पति राषि लियो जह कोटिन्ह भूपन की दुशहइआ।
परसनदाश विचारि कै जनपीर हरो प्रभुनंद के दोहइआ॥

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—श्री कृष्ण-जन्म-लीला-वर्णन।

संख्या २०३ग. पद, रचयिता—विप्र परसन, स्थान—चौबौली (आजमगढ़ जिला), कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—१५½ × ६⅝ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८०-९० तक, लिपिकाल—सं० १८८०-९० तक, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० जानकी चौबे, ग्राम—चौबौली, पो०—अहरौला, जिला—आजमगढ़)।

आदि--बैठि राधेस्याम विरह मन मारी ।
पद अंगुष्ट नष लेषत धरनी नुपूर रव झनकारी ।
मदन सहाइ शमेति चढे जीमि विश्व विकल नरनारी ।
बेसरि की मोतिआ अति राजित शारी जरद कानारी ।
शिंदुर बेदी भाल वीराजे तरिवन चुनि चमकारी ।
केस भ्रमर चुडामणि शोभित मोतिन्ह मांग शवारी ।
कज्जल हार माल को वरनै दृग षजन अनुहारी ।
बृजमोहन कुवरी रंगराते मेरी शुरति वीशारी ।
दीन दआल दया कब करिहो परशन प्रभु शुषकारी ।। १ ।।
स्याम करत ठगहारी वीरीज अली ।
शीघ्र रहिउ मदिल अपने मैं फुलन्ह शेज शवारी ।
ढीठ कधैआ बडे घाती है लीन्हेउ हार नीकारी ।
जदि हम जाहि जमुन जल भरने रोकत पथ हमारी ।
बाह गहत अगीआ दरकानी मनिमय अंचल फारी ।
गई करन अस्नान जमुन तट अभरन चीर उतारी ।
सब लेइ धाइ कदम चढि बैठे हम जल मध्य उघारी ।
।। गौरी ।।
--पूर्ण प्रतिलिपि

विषय--श्रीकृष्ण लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत खर्रे की संख्या दो है । इसमें एक ओर 'पद' लिखे है और दूसरी ओर कुछ औषधों के नाम एवं एक जन्मकुंडली लिखी है ।

संख्या २०३घ. पद, रचयिता--परसन दास विप्र या द्विज, स्थान--चौबली (जि०--आजमगढ़), कागज--देशी, पत्र--२ (खर्राकार), आकार--१७ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)--३०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचना-काल--सं० १८८०-९० तक, लिपिकाल--सं० १८८०-९० तक, प्राप्तिस्थान--काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--पं० जानकी चौबे, ग्राम--चौबली, पो०--अहरौला, जिला--आजमगढ़) ।

आदि--राम ।। १ ।।
को कहै बालकेलि रघुराई ।
दुइ दुइ दशन अधर अरुनारे दृगन्ह कमल छवि छाई ।।
कच घुघुरारे झगुआ वितँ धावत मनि अगनाई ।। को कहै ।।
नाशा हास वदन को वरनै कानन फूल शोहाई ।
चिवुक कपोल कंवु कल ग्रीवा षेलत चारिउ भाई ।।
भाल विशाल तिलक केशरि को नुपुर पाव बजाई ।
जननी गोद षेलावत गावत लै पलना पवढाई ।। को कहै ।।
पै पीअत मुशुकात रुदन करि गोद ते उतरि पराई ।
उझुकत चलत झुकत धरनीतल दधि वोदन लपटाई ।
शिव ब्रह्मादि ध्यान नहि पावहि जननी हृदये लगाई ।।
परशन विप्र बाल प्रभु भजिए अवध महानिधि आई ।। १ ।।
शीताराम बीवाह वीलोकन चलिय शषी गह गृह ते धाई ।
शजि नव शप्त चली मृगनैनी मंगल दर्व लेहि कर गाई ।।

भुप द्वार अति भीर भई है शीढि गए लोग लोगाई ।
शीव ब्रह्मादी देव शभ धाए दुर्गा शहित शक्ति शभ आई ।।
नीज नीज भाग प्रगट होइ लेहा रवि शशि कुल कह देहि बडाई ।
कन्यावान जनक नृप किन्हा तिहु पुर बाजत विविध बधाई ।।
शीताराम भावरी देहा बेद पढहि तह बुध शमुदाई ।
नीरषत रूप देव मुनि हरषहि दशरथ जनक विभव बहुताई ।।
नृप वितान तोरन प्रतिद्वारे शकल लोक शभ गएउ भुलाई ।
..गली कीन्ह जब रघुवर कोशलपति बहु दईजा पाई ।।
विप्र व्रिद जाचकन्ह हकारी शकल वस्तु तब दीन लुटाई ।
वेद पुरान शत शभ गावहि रघुवर मंगल शभ शुषदाई ।
"परशन विप्र" कहत कर जारे गौरि गनेश महेश मनाई ।। १ ।।

हरिहर प्यारे मे तेरि बलि जाउँ ।
दोउ भगवान दोउ प्रभु शाइब दोउ जन जग रषवारे ।
विश्वनाथ जग्रनाथ गोशाई दीन दरिद्र विदारे ।
गीजापति श्रीपति शुरशाई भरव हनु प्रतिहारे ।
रावन अरि त्रिपुरारि कहावत नीश्चर अमित शघारी ।
"परशन विप्र" कहत कर जारी जीय की जरनो निवारो ।। २ ।।

सीताराम अयोध्यावासी षेलत शरजु कीनारे ।
अबिर गुलाब उडावन लागे छुटत रग पीचुकारे ।
शोभित ताल पषाउज वीना लागत डंक नगारे ।
शीताराम रग रस भीने होरी मची प्रतिद्वारे ।
"परशन विप्र" कहत कर जारे निरषहु द्रीग रतनारे ।। ३ ।।

——पूर्ण प्रातलिपि

विषय——राम बाल लीला, राम विवाह तथा सीताराम केलि क्रीडाओं का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——प्रस्तुत 'पद' ग्रंथ संख्या ३८ में . । २ । दोनों पत्रों के 'पद' एक दूसरे से संबधित है । अत इनका एक ही विवरण लिया गया है ।

संख्या २०३ड. कवित्त. रचयिता——परगन द्विज, स्थान——चौबौली (जि० आजमगढ), कागज——देशी, पत्र——१ (खर्राचार), आकार——१३$\frac{1}{4}$ × ८$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१२, परिमाण (अनुष्टुप्)——८, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——सं० १८८०—६० तक, लिपिकाल——सं० १८८०—६० तक, प्राप्तिस्थान——प० जानकी चौबे, ग्राम—चौबौली, पोस्ट—अहरौला, जिला—आजमगढ (हस्तलेख, ना० प्र० सभा के लिये प्राप्त हो गया) ।

आदि——।। राम ।। १ ।।

संकर के नाम ते भएंकर नसात जात वार वार शुमिरौ मनमाह महरानी के ।
रामभक्ति दानी जगजानी प्रभु आरत हर स्वारथ विसारि परमारथ महारानी के ।
जटा जूट गंग तह छुटत है तरङ्ग छवि कोटिन अनग ससि भालपंच वदन के ।
आसन असन जम त्रामन के सेस अंग विमल विभूति छवि राजए प्रभु परसन के ।।१।।
नटीनी के पास जात सकल विनास वात मान विनसात जैसे दारु घुन पाइकै ।
गयो लोक लाज प्रलोकहु न भौ समाज कजा कहाइ धनधाम हु लुटाइ कै ।

**पित्र भए प्रेत व्रत धर्म के न रहे खेत गुरु ग्यान गयो जग वृथा एहि आइ कै ।
परसन दिज कहै हरि दरसन जो चाहो नर करो धर हिए सिव शिवा के मनाइ कै ।।२।।**

विषय--शकर की भक्ति विषयक कवित्त ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत खर्रा की सख्या ६ है ।

संख्या २०३च. कवित्त, रचयिता--परसन विप्र, स्थान--चौबौली (जिला--आजम-
, कागज--देशी, पत्र--१ (खर्राकार), आकार--१६$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{4}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--
परिमाण (अनुष्टुप्)--३०, पूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, रचना-
--स० १८८०-९० तक, लिपिकाल--स० १८८०-९० तक, प्राप्तिस्थान--काशी
ीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--प० जानकी चौबे, ग्राम--चौबौली, पोस्ट--अहरौला,
ा--आजमगढ) ।

**आदि--पशुपति नाथ सनाथ कीयो जग षेलत है रग होरी ।
गगन बेवान आई नव दुर्गा मुरती अक करोरी ।
भैरव शहित शदाशिव आये भुत वेताल बटोरी ।
बाजत ताल पषाउज वीना लागत डंफ टीकोरी ।
चोश्रा चनन अवर अरगजा अत्र कुमकुमा रोरी ।
उडत अबीर लाल भए बादर बरषत रंग झकोरी ।
गगन मगन अमरागन निरषत शुभन झरहि कर जोरी ।
शंभु द्वार अति भीर भई हे झडत नगार बहोरी ।
छुटन लागी कनक पीचकारी परशन भनत नीहोरी ।।
माई वृजराज दुलारे अवचक आनि परे ।
पनिघट पट गहि कर लीन्हे कनक पीचकारे ।
रंग-सुरंग भरो मेरो वरवस वदकै अंगिया पर डारे ।
माई छैल अनोषे वने मन मोहन गोहन के सभ हे अधिकारे ।।
मध्य--कोउ गावे कोउ ताल बजावे कोउ गावे डफ के धुधुकारे ।
जहा हम जाहि सिहाहि मनोहर नोहर है जसुदा जिकिहारे ।
आनि करो वृषभान ववा जिकौ मानि जु कंस भुआरे ।
हो नदरानी बिर बिरा निहुरिआ अमित बार कहते है महारे ।
परसनदास वेलास सवरी शुनु सषिरी वरजै हम वारे ।।
शयिराम के तु भजि लेहु नर अब जात वेलाटरी ।
.........सर्व सहस्त्र रन मधुकैटभौ शीस हरी ।
:o: :o: :o:
.........हरी के वलि छलि पातालहि करि ।
धुम्र के अचल शउराज दै प्रहलाद की वनी परी ।
सीयराम अचलराज विभीषना तेहि.......... ।
:o: :o: :o:
गौरी जाहि माल सिषर परतप करत हे शुष भरी ।
गंगा लहरी अस्नान करि................धरी ।
अस्तुति शुनत तव सुरन्ह की गुनि महा आपद परी ।
धुम्र लोचन आइकै हुंकरत सैना जरी ।
काली भई महाकाली कावंडादि जीवन हरी ।
रक्तबीज निसुंभ शुंभहु छिति निराक्षस करी ।**

नारायनी बर दीयो तब शुर शुरी भए बरबरी ।
परशन भनत जो गाइ तेहि विधेश्वरी फल फरी ।।
एह जन्म रतन सिरात नर भजि लेहु सारंगपानी ।
नर्क त्यागि वितर्कना दिढ छोडि कपट सयानी ।
दिन रैयनि प्रेम पीग्राम करि तुम शुमिरु मन क्रम बानी ।
सनकादि मुनि प्रहलाद नारद भजहि प्रभु जीय जानी ।।
तुलसी सहित जो साधु जन शुमिरेउ हरिहि मनमानी ।।
गनिका अजामिल गीध गति तरि गएउ सभ नर ग्यानी ।
धुधुकारी वेवान चढि परमन भनतु उर आनी ।।
—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—ईश्वर-भक्ति-वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत खर्रों की संख्या ३ है । इसके आरंभ में किसी की जन्मपत्री लिखी जा रही थी, पर फिर उसे छोड़ दिया गया । उसमें संवत् १८८० दिया है ।

संख्या २०४. कोकशास्त्र, रचयिता—पर्मल (?), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३, अपूर्ण, ग्राम—तालासमवारा, पो०—जलालगंज, जिला—जौनपुर ।

आदि—. . . . . ।
मान प्रसंग वर्नन ।

सन्यासनी रोगनी गर्भवती अरु जो हत्यारी
मत्र मित्र की भार्य और गुरु सिष की नारी
इनते जोवरी होइ और धोवन जो कामिन
सोक दत सी होइ और जो दिज की भामिन
पर नारी सो रति किये पर्म दोष जिय जानियो
जो मन चंचल वस नही इनसो केल न टानियो

इति नवम षंड ।।
अथ औषद वर्ननं

शिव वीरज लोहा कनक तांवा हन्यो जु होइ
चारो धात मिलाइ कै षात रसिक जन कोइ

।। दोहा ।।

पैघन आमिष जु मधूमिरच मनि मूसली स्याम
मुटी असगध मोचरस लक्ष दूधी अभिराम

।। दोहा ।।

संषा होली गुर उरद गेहूँ पीपर षांड
पच गुज मेधा मठा अरु भहुलेठी भांड़

।। दोहा ।।

तन मर्दन तिल तेल को पर्मल पान गिलोइ
और कछू जो तिल वला धात सवन ते होइ

अंत. . . . . ।

।। छंद ।।

अति विमल ठौर सुवास जिह तिह विमल सेज बिछाइ
तिह पहुप चंदन चार परमल पान धरैं मगाइ

कादंबरी मुष बांस तिह लै लौंग आदि सुजांन
तिह सुभग निमल बसन तन तन परम परमल गान
सोरह सिंगार संवार सुंदर गवन सोहै मराल
बैठे सनमुष जाइ ससमुष सरस रूप रिसाल

।। आलिंगन आमोद दोहा ।।

भाम कंध कर वाम धर बैठावत पिय गोद
पान पबावत प्रीत कर आलिंगन आमोद
मुदित आलिंगन तरुनि जंघविव जंघ मैं मधू षावत लै तास ।।
सो आलिंगन मुदित कहि टपजत पर्म हुलास (? उपजत)

प्रेम आलिंगन

पति कंट लपटै एक पग दुतीयं जघ पर जानं
परमल लै तावै उरज प्रेम आलिगन नाम
. . . . ।

:o: :o: :o:

विषय——कामशास्त्र विषयक रचना।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ खंडित तथा अपूर्ण है। समस्त आठ पत्रे उपलब्ध है। खंडित होने के कारण रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या २०५. बानी, रचयिता——पलटूदास, कागज——देशी, पत्र——१८, आकार——६ × ८½ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१०, परिमाण (अनुष्टुप्)——१२२, खंडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता——पं० हनुमानप्रसाद जी मिश्र, ग्राम-मोनरै बड़ी, पो०—बरम्हना, जिला--इलाहाबाद)।

आदि——. . . . .

(क) हवो षंद सूर है कहवां कहवा सुरत समानी हो ।। ३ ।।
कहवां बोल सोहग सोहंग कहा सब्द की षानी हो ।। ४ ।।
कहवां बैठा सहज समाजी कहवां पवन अहारी हो ।। ५ ।।
कहवां बैठा जागृत जोगी कहवां लागी तारी हो ।। ६ ।।
कहवां बैठा सतगुर बोलं कहवां बोलै चेला हो ।। ७ ।।
कहवां सेतो दुतीया छूटी कहवां भया अकेला हो ।। ८ ।।
कैसा संन संमत है सोका हमते वे पहिचानी हो ।। ९ ।।
पहुचा कहे संघ की वातैं झूठा कहै जवानी हो ।।१०।।
ये टकसार सांच है भाई मीले न झूठ कहांनी हो ।।११।।
"पलटू" जब मेरी कसठै हेरै तब मै कहों ठेकानी हों ।।१२।।

अंत——फूटि गया असमान सब्द की धमक से।
लगी गगन मे आग सुरति चमक से ।।
सेस नाग और कमठ लगे दोई कांपने।
हारे पलटू सहजै लगी समाध वैठ घर आपने ।।५७।।
गाड ज्ञान का वांस सुरति की. डोर है।
चढा षीलारी धाये जक्त में सोर है।

अमर लोक के पार हरी येक दूब है ।
हारे पलटू हद अनहद के पार तमासा खूब है ॥५८॥
संत सोई है कद और गुर लोट है ।
मनधर सोई मरप और सब कोट है ।
गज मुक्ता जे सीस सोइ गजराज है ।
हारे पलटू और हरि सब भेड ओहि सीरताज है ॥५६॥

पलटू दास की वानी संमपूरन ॥

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश ।

संख्या २०६. फूल मंजरी या पहौप मंजरी, रचयिता—पुरुषोत्तम, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह ६७५।५६), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ फूल मंजरी लिष्यते ॥

सीस मुकट कुंडल झलक संग सोहत व्रजवाल ।
पहरैं माल गुलाब की आवत है नंदलाल ॥ १ ॥
चंपक वरन सरोज मुष नैन चपल द्रग मीन ।
जब इन्हहिं लव रूप लषि लाल भये आधीन ॥ २ ॥
फूल रही जहा विविध रंग (? रंगु) वहोत सघन वन वेलि ।
कुंज पहोप उर माल धरि करत कुंज मध केलि ॥ ३ ॥
सेत वरन सोभा अधिक मानौ मधु की धूप ।
लसत राधिका कुंवरि पै करकैं वरौ अनूप ॥ ४ ॥

अंत—कहत फिरत सब सषीन से सौतिन लोचन सूल ।
आज लाल हम है दयौ सूरजमुषी कौ फूल ॥३०॥
पीतांवर की छवि वनी सोहत स्याम सरीर ।
कुसम केतकी मकट धरि आवत हैं बलवीर ॥३१॥
पहौप वध धरि ग्रंथ हे कह्यो पहौपन को नाम ।
"परसोतम" याकौ भजैं लै लै पहौपन के नाम ॥३२॥

इति श्री पहौप मंजरी सपूर्ण ॥ १ ॥ शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥

विषय—३१ दोहों में राधा कृष्ण की भक्ति और शृंगार वर्णन के साथ साथ प्रत्येक दोहे में एक फूल का नामोल्लेख हुआ है ।

संख्या २०७क उत्सवमालिका भाषा, रचयिता—श्री पुरुषोत्तम जी, स्थान—कांकरोली, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६¾ × १०¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४५, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६० के अनन्तर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० ६०, पु० सं० ३ ।

आदि—श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ अथ उत्सव मालिका श्री पुरुषोत्तम जी कृत लिख्यते ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

जन्माष्टमी सप्तमी युक्ता सूर्योदय विद्धरत करनी । उवरती अष्टमी होयसो करनी । अष्टमी थोडीहू न होय तब शुद्ध नवमी कों उत्सव करनो । अष्टमी क्षय होइ तो दूसरे दिन थोडीहू होइ तो उत्सव प्रथम दिन होय ।

मध्य--पृ० १६

मगसर वदि ७ श्री गोकुल नाथ जी चोथे को उत्सव वागा वाट को कुलहोतेसी, ओढनी केसरी, राज भोग मे सामग्री, आरती मोती की कीर्तन जा दिन भेट न्योछावर नाम रतन होय। सर्वोत्तम होय। न्योछावरि पावे। वधाई दिन ८ की वदनवार कपडा की जा दिन नगार खानों वाजे ॥

अंत--

जो ग्रस्तास्त होइ तो मोक्ष काल शास्त्र ते जानिये। पाछे जल मगाय के स्नान सिंगार भोग उत्सवादिक करें। आपु जेवे नही। जब चन्द्र सूर्य शुद्ध देखे तब जेवे। चंद्र सूर्य मेघादि सो आछादन होय तो शास्त्र ते मुक्ति समय जानिके जेवे। जो ग्रस्तोदय होइ तो ग्रास ते १ पहर पहले अन्नकूट करि रहे। वा द्वादसी पर्यंत दिनांतर करे। रासी डोल अन्नकूट रथ पे तीनो जो ता दिन होय न आवे तो उपरांत पक्ष भीतर करे। इति श्री उत्सव मालिका भाषा में श्री पुरुषोत्तम जी कृत संपूरणं ॥

विषय--पुष्टिमार्गीय सिद्धातानुसार मत्रात्रम तथा वर्षभर के उत्सवों का निर्णय।

संख्या २०७ख. द्रव्य शुद्धि भाषा, रचयिता--श्री पुरुषोत्तम जी, कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--५॥ × १०। इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३८० पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८०१, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० स०--६०, पु० स० ६।

आदि--॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ नत्वा श्री बल्लभाचार्यम् हरिसेवोपकारिका ॥ बाह्याप्याभ्यंतरी द्रव्य शुद्धिरत्र विचार्यते ॥ १ ॥ द्रव्य शुद्धि संस्कृत मे है सो भाषा मे लिखियत हे। तामें अति अशुद्धि कहियत हे। रजस्वला। १। चांडाल २, महापातकी ३, सूतिका ४, शव ५, शवस्पर्शी ६, शावाशोची ७, कूकर ८, चिताधूम ९, चिताकाष्ट १०, देवद्रव्योपजीवी ११, ग्रामयाचक १२, सोमवल्ली विक्रय १३, मद्यभाड १४, चौकनो हाड १५, इतनेन के छूए तें सचैल स्नान करनो।

मध्य--पृ० १०

अब इकट्ठे पात्र धरे होइ तिनकी शुद्धि कहियत हे। पात्र एकठे धरे होइ, वा पात्र समूह होइ तो जाको अमेध्य दुष्ट सबंध भयो होइ सो छुयो जाइ और छीये न जाइ। जाकी शुद्धि को विचार। वचन में कह्यो न होइ तबहू एसे जाननो। काठ के पात्र जूठो भयो होइ तो रेत सों घसिले चिकनाई न छूटे तो छुडा ले।

अंत--अब आत्म शुद्धि कहेत है। आत्मा के वलभ भगवद्भक्ति ते वा भगवद्गान ते शुद्ध सो जो निष्कपटशुं करे तो अंतः करण के इंद्रियन के शुद्धता भगवत्प्रसाद शुद्धान्न चरणामृत इनते होइ निष्कपट निर्हेतुक करे तो, याते आत्मा सोधनार्थ भक्ति सर्वथा करनी, यह शुद्धि वचन को अर्थ ले के भाषा में लिखी हे। याते प्रमाण बुद्धि न उपजे। संशय होइ तो सस्कृत मे प्रमाण पुरस्सरहे देखोगे। इति श्री पुरुषोत्तम विरचिता द्रव्य शुद्ध दीपिका भाषा सपूर्णनम् ॥ सवत् १८४१ ज्येष्ठ कृष्ण २ सनि वासरे संपूर्णा ॥ लिखितं जीवण भट्ट अवदीच्य ब्राह्मण श्री स्याहाड में लिखी ॥

विषय--पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति के अनुसार धर्मशास्त्रीय आधार पर वस्तुओं की शुद्धि का प्रकार तथा अन्य आवश्यक ज्ञातव्य विषयों का समावेश किया गया है।

संख्या २०७ग. वनयात्रा, रचयिता--श्री पुरुषोत्तम जी, पत्र--१७, आकार--७½ × ६¼ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--४९०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १९१८, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ५६, पु० स० ७।

आदि——।। श्री कृष्णाय नमः ।। श्री गोपीजनवल्लभाय: ।। अथ श्री पुरुषोत्तम जी कृत बन यात्रा परिक्रमा लिख्यते ।। राग काफी ।।

यह ब्रज मेरे मन भाई री ।
प्रथम न्हाय विश्रांत घाटहि जनम स्थल जहां जाई री ।
श्री केसव राय मंदिर अति नीको तहां दरस सुख दाई री ।। १ ।।
कंस मारि विश्राम किए जहा ब्रज भक्तन श्रुति कीए री ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत राति निवास सुख लीये री ।। २ ।।

मध्य——पृ० १६

ताके आगे रामघाट है बिलास बन तहां कीए री ।
श्री बलदेव जी अपने भक्त सहित तहां राम रमन सुख दीए री ।।१६०।।
तब श्री यमुना जी यो कहे हे तुमको राम नहीं सोहे री ।
रास लीला पति श्री ठाकुर जी हे मुनि भृकुटी रोस कीये मोहे री ।।१६१।।

अंत——यह परिक्रमा करी पूरन पाठ करने प्रभु जी पये री ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखि के तब अनुदिन लीला गये री ।।

इति श्री पुरुषो जी कृत बन यात्रा समाप्त ।। मिती चैत्र बदि ६ भृगुवार स० १६१६ ।।

विषय——ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा का वर्णन ।

संख्या २०७घ श्री द्वारकाधीश के शृंगार, रचयिता——श्री पुरुषोत्तम जी महाराज, स्थान——कांकरोली, पत्र——६ आकार——१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२२, परिमाण (अनुष्टुप्)——२४३, पूर्ण, रूप——साधारण (प्राचीन), गद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——स० १८६५, लिपिकाल——स० १८६५, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६०, पु० स० २ ।

आदि——।। श्री गोपीजन बल्लभाय नम ।। श्री द्वारकेशो जयति ।। श्री द्वारिकानाथ जी के सिगार लिखित है श्री कांकरोली मध्ये संवत् १८६४ वर्षे ।

तिथिवार	श्रीमस्तक	वागा०	पटका	ठाढे वस्त्र	आभरण	कडा	सोगारी	उछब
भा. कृ. ८ सोमवार	स्वेत-कुलही	केसरी-वागो	लाल पटका	लाल ठाडे वस्त्र	भारी आभरण	जोडी ३	श्री लाल जी	उत्सव जन्माष्टमी
भा. कृ. ६ भोमे	स्वेत कु.	केसरी	लाल प.	लाल ठा.	भारी सो.	जोडी ३	श्री लाल जी	उत्सव श्री व्रजभूषणजी
भा. कृ. १० बुध	स्वेत कु.	केसरी	लाल प.	लाल ठाढे व	भारी सो.	जोडी २	श्री लाल	

मध्य——

फा. ब. ७ शुकर	केसरी कुलही	केसरी रेशमी	लाल	स्वेत	माणकक	केसरी	श्री महाराज	श्री नाथ जी को पाटोत्सव
फा. ब. ८ शनौ.	पतंगी पाघ	पतंगी रंगबाधा	केसरी	स्वेत ठा.	सोना के	केसरी	श्री महाराज	

श्री पुरुषोत्तम जी महाराज तथा श्री बल्लभ जी के लाल जी तथा मुखीया मंलिके श्री कांकरोली मध्ये श्री द्वारिका नाथ जी के शृंगार मास १२ के कीये सो लिखे हे। लि० शंकर रामशंकर बल्लभ रामेण पुस्तक हमारो हे श्री कांकरोली मध्ये लिख्यो हे। संवत् १८६५ मार्गशिर शुक्ल ७ शनीवारे संपूर्ण ॥

विषय--पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति के अनुसार तृतीय गृह (पीठ) श्री द्वारिकाधीश, कांकरोली के सेवा शृंगार का तिथिवार वर्णन। जो उस समय के तिलकायित श्री पुरुषोत्तम जी महाराज (समय १८४६ से १९०३) ने प्रस्तुत कराया।

संख्या २०७ङ. उत्सव निर्णय भाषा, रचयिता--पुरुषोत्तम, पत्र--१३, आकार--६ × ५½ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३८, परिमाण (अनुष्टुप्)--४६४, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७५०, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या-विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० ८६, पु० सं० २।

आदि--॥ श्री गोस्वामी श्री पुरुषोत्तम जी कृत उत्सव निर्णय संस्कृत मे हे सो सदेह भासा मे लिख्यो हे। जन्माष्टमी सप्तमी विद्धा न करनी। सूर्योदय समय जब सप्तमी होइ सो सप्तमी विद्धा कहीये। ताको विवेक जब विद्धाधिका होय तब दूसरी करे। शुद्धाधिका होइ तब पहली करे। जब विद्ध न्यूना होइ तब वह छोडि शुद्ध नवमी को उत्सव करे।

मध्य--पृष्ठ १३

पौष वदि ९ ॥ श्री गुसाई जी को उत्सव तिथि वृद्धि क्षय होइ तो पहली नही दूसरी करनी। अभ्यंग नयो रूई को बागाफरगुल नई बागा पीत। अतलस सूथन्ह पीत केसरी कुल्हे पटुका कसुंभी लाल जी होइ तो ओढनी सूतरु। पीत दरियाई को लाल हाशिया साडी केसरी बोऊ वस्त्र खुलने पाटके। गुंजाचंद्र का नई आभरण विशेष गोपी वल्लभ मे सेव दूध जलेबी बूंदी बडाकी छाछि मोती की राजभोग आर्ती ताही मे कुकुमा क्षत बीडा रधरि तिलक करि मुटिया वारि आर्त्ती करिये। प्रनाम करि अनोसर बाहिर आद प्रसादी तिलक परस्पर करि प्रसाद लीजे।

अंत--अन्नकूट कों भोग ऐसे आवे जो स्पर्श पहिले घडी १ पहिले भोगसर चुके त्यो १ पहर छोडनो कह्यो हे। उत्सव हू बडो हे। समय प्राप्त पहिले न होइ। यह आवश्यक। ताते या भोग कों दोष नही। डोल तो उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्राधीन हे। तोऊ तसो होइतो। वैसे होइ तो भलो हे। अपनो तो यही निर्णय हे। इति ग्रहण निर्णय ॥ आर्य नाल पय तक्रं दधि स्नेहाज्य पाचित। मणिकस्थोदकं चैव न दुस्येद्राहुसूत के ॥ १ ॥ कांजी, दूध, छाछि, घृत, तेल, पक्व बडे मथना को पानी तिल कुश डारि छोडिये छुई न जाय ॥

विषय--पुष्टिमार्गीय सेवा क्रम मैं वर्ष भर के उत्सवों का धर्मशास्त्रीय निर्णय।

संख्या २०७च. उत्सव सेवा प्रणाली (उत्सव निर्णय सहित), रचयिता--पुरुषोत्तम, कागज--माधोपुरी, पत्र--६, आकार--५¼ × ५¼ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६२, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० १६, पु० सं० ७।

आदि--॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्रावण वदि ८ जन्माष्टमी सप्तमी युक्ता सूर्योदय विद्धा न करनी। दूसरे दिन उवरति अष्टमी होई ता दिन उत्सव करनो। अष्टमी थोरी न होइ तो नवमी के दिन करनो अष्टमी पेहले दीन शुद्ध संपूर्ण होय और दूसरे दिन न होइ तोउ पहले दिन करनी ॥

मध्य--प्रबोधनी के दिन जो रात्रि भद्रा होइ तो रात्रि नही दिन कों करनो नही तो रात्रि को उत्सव करनो ताकी विधि ॥ पहिले सर्वत्र मंदिर मे तिवारि तथा आंगन में कोठा में नही

या भांति चौक पूरिये खड़ी को, ता पाछे सोरह गंडेरीको मंडप बनाय बीच सांगा मांची धरि आस-पास आठ दीवी आठ दीसी प्रगट करि पाछे ठाकुर पधराइ नमस्कार करि सालिग्राम को पंचामृत स्नान कराइ पास बेठाइ चंदन चोवा अर्बार छार किमाला पेहेराइ सालिग्रामहु कु सब इतनो ही करी धूप दीप करी भोग पकवान तथा फलाहार समर्पि भोग सराई बीडी धरि ।

अंत——श्रावण पूर्णिमा के दिन अभ्यंग पर्व की सामग्री साडी पिछोडो नयो पेहेर पाछे भद्रा न होइ ता समे तिलक मात्र करिये आर्त्ती नहो राखी बाधे पाछे गुल पापडी भोग समर्पिये ।। उत्सव संपूर्ण ।।

विषय——पुष्टिमार्गीय मंदिरों में मनाए जाने वाले उत्सवों का विधि सहित निर्णय ।

संख्या २०८. सिंहासन बत्तीसी, रचयिता——पुरुषोत्तम दास, कागज——देशी, पत्र——११, आकार——८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——३०, परिमाण (अनुष्टुप्)——२०६, खंडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (प्रेषक——श्री शिवमोहन तिवारी ग्राम व पोस्ट——बरदह जिला——आजमगढ़) ।

आदि——. . . . .

सुनु राजा मम बचन रमारे । कामदेव नृपता हमारे ।।
पुहुपावती हमारी है माता । ताके घर मे जन्मेउ कंता ।।
बारह वर्ष पिता घर रहेउ । मात पिता काप द कहेउ ।।
आया भग पुक मे कोन्हा । तब उह मोहि जती कह दीन्हा ।।
जती आनि मोहि इह बसाई । बदरीदार वहो दिन जाई ।।
निमित एक आवे मम पासा । कय जोग यह ध्यान उदासा ।।
बरबस मोहि रतिक बन जाई । क दरी माहि उष चलाई ।।
।। दोहा ।।
वरिस देवस मोहि मुहिठा बेठ न करे उदघाट ।
जो कीन्ह लिखा विधाता भजव अक कपाट ।।
नृपति कहा उमा से न जाऊ । आवस संग मे कहत लजाऊ ।।
कामिनि सुंदर सग अनुसारे । पार समुद्र पार को करै ।।
नृपति कहाये नाधो पारा । ताका तुम रह देवे व वारा ।।

मध्य——

तंता कह लघुता के जानेसि । ये तना गुनि गर्भ जिय आनेसि ।।
।। दोहा ।।
"पुरुषोत्तम" कवि गावा विक्रम चरित्र अपूरि ।
पंडित सुनहु कान दे कथा आग बढि दूरि ।।

इति श्री सिंघासन बत्तीसी सहस सील निसंकमल चरित्रे पुरसोतिमदास विरचिते अस्टमो पुतरी समाप्तम् ।। ८ ।।

अंत——

तै भूपति राखे मोर धर्मा । कुल लजा वो तप को कर्मा ।।
जसमे मन आपने राखा । तम असीस राजा के भाषा ।।
सहस बरष तुअ जीअहु राया । काहु के बस्य जिनि होए काया ।।
।। दोहा ।।
बाढो सत्य हरिचंद सम भीम समा बल देउ ।
साहस ताहो समर्थ हसी तेहि सरि होय सब कोय ।।

पुनि राजा कह मया जनाई । पुत्री कँ राजा हिय लाई ।।
गोद उपर कन्या बैसाएन्हि । मन मोहनी के पाछ चलाएन्हि ।।
ले उपव बैताल तुरंता । अंतहपुर बैसु हरषंता ।।
ततषन राय मंत्री सो कहा । .... ।

:o: :o: :o:

——अपूर्ण

विषय——संस्कृत ग्रंथ 'सिंहासन द्वात्रिंशिका' का भाषानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ खंडित है । आदि के ५० पत्रे तथा अंत में ६१वें के आगे के पत्रे नहीं है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या २०९. विषिक्षय तथा स्फुट रसायन, रचयिता——पुरुषोत्तम, कागज——देशी, पत्र——२, आकार——८½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——११, परिमाण (अनुष्टुप्)——४७, खंडित, रूप——प्राचीन, गद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——पं० रामेश्वर मणि त्रिपाठी, ग्राम व पोस्ट–देवरिया खास, जिला–गोरखपुर ।

आदि........................

पिडारु कांठ फल जरी पिसि गोटिका धरिये विषिउ ए पाएो घीव मरीचि घांसि लाइ निर्विषि होए । भोजन क्रोध निद्रा मेथुन करे त विषि क्षाडल लेहु चारीउ संब सर्वथा कँ जाति विसेषतः ।। स्ये ताके नमातानि विषि होये । चित्र विषेनरि अरक पानी कपूर मीसी दिजिए तौ मरेः ।। देसरी आकेजरी लाउ विषि से मरेः ।।

इति श्री पुरुषोतम विरंचिते विषि क्षये कृत्वा समाप्तम् ।। सुभमस्तु ।।

अथ सुकुटानि विद्यारमाये ने लिष्यते ।।

उत्तम रंगा सेर भरी ऽ१ भँरवष कौ वरटी माटी यह मुदिये अवटि कँ छेरी का दूध मह सात दीन सात वेरी वताइः ।। पुनि पत्र काराइ पुनि वरारीस छेरी का सुष मेलिये आधा मुष मेलिये अवटि तव रूप होये ।।

अंत——

नागार्जन कहे है किम्र होए ।। अवस्यक होए ।। काला धतुरा को रस तामा सोहागा डारिके अवटव ओहि रस में वताइव सदर हेम होइहि ।। सोहागा मिलाइ अवटव चौथाइ जमुन के तामा डारि देव दीव्य सोन होये । हरदि मुडि जामुनि के गाछ षोलाइ के डारि देव निमुद करव वारह मास मे निकारव ताम अवटि के तव ओकरा के डारि देव सोवरन होए ।। सेहुडते धुरा षोलाइ के मुडि हरदि डारि देव बारह महिना पर निकारव तामा अवटि के डारि देव हेम सोना होए ।।

इति श्री रसिक रसायेन उस्फूट विद्या रमायेने समाप्तम् ।। शुभमस्तु ।।

विषय——विष निवारण और रसायन विषयक वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——संपूर्ण ग्रंथ में १० से अधिक पत्रे थे । जिनमे से केवल दो पत्रे रह गए है । इन्हे देखने से पता चलता है कि इनमे विष उतारने और धातु आदि मारने तथा सोना आदि बनाने की विधियाँ दी हुई थी ।

विषक्षय वर्णन मे पुरुषोत्तम का नाम आया है और रसायन विषय वर्णन मे किसी का नाम नही है ।

ग्रंथ की लिखावट यद्यपि देखने मे अच्छी है तो भी अशुद्धियाँ उसमे बहुत है । ग्रंथ गद्य में है ।

संख्या २१०. यमुना नवरत्न, रचयिता--"पूरन" कवि, पृष्ठ---३ (२० से २२ तक), आकार---७। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--५८, परिमाण (अनुष्टुप्)---४०, पूर्ण, रूप---साधारण, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० ६८, पु० सं० ६।३।

आदि---श्री कालिंद्यै नमः ।। कवि ।।
चवर तरंग छत्र भमर अभंग जल झांई छबि अंग अंतरंग वधू वन की ।
सेवत सुदेश सेस वनिता दिगेसन की पाव तन छेह छिन छांह हूछुवन की ।
मुनिमन मानी जगपूरन प्रमानी सदा सिद्ध वसु दानी दोह दाहक दुवन की ।
वृज रजधानी विधि वेदन वखानी जाणी कृष्ण पटरानी ठकुरानी त्रिभुवन की।।१२२
मध्य---
जनम के पातक नमात दरमात रूप जात छूटे फंद भवसागर विथा केते ।
सुमिरन कोने अमरन को अमर होइ मरम न पावे कोऊ कोटि परिपाकें ते ।
पूरन कहानो पटरानी को प्रभाव कहो अगम अभेद वेद पावत न जा केते ।
तेज अधना के धूम लोक विधिना के दूर जात जमुना के नेक न्हांत जमुना के ते ।।१२७
अंत---
रहो सूरन नया तिहारे तट आइ परचो अधिक अधिन दीन मूढ़ अभिमानी में ।
तुम तो उदार जस प्रगट पुरानन में बसति मुनीसन के उर वर वांनी में ।
पूरन सरनि जन जानि के निकट निज दीजिए निवास यहे आसन तही आनी में ।
कीजियो प्रमान मात दीजियो न आनांकांनी कृष्णपटरानी यहे विनय वखानी में ।।१३०।।

।। दोहा ।।

श्री यमुना नवरत्न जो पढ़े सदा सबिलास ।
तिहि नवधा विन यत्न सो पूरन होत प्रकास ।। १३१ ।।

इति श्री यमुना नवरत्न सपूर्ण ।।

विषय---श्रीयमुना जी का माहात्म्य वर्णन तथा स्तुति ।

विशेष ज्ञातव्य---इस पुस्तक में प्रस्तुत रचना के साथ 'फुटकर कवित्त' और "बलदेव पचक' भी है।

संख्या २११. वेलरा (श्री कृष्णदेव रुक्मिणी वेलि), रचयिता--पृथ्वीराज, स्थान---मारवाड़, कागज---साधारण, पत्र---५, आकार---८ × ६½ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३०, परिमाण (अनुष्टुप्)---२५२, अपूर्ण, रूप---साधारण, गद्य, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० २१, पु० सं० १।

आदि---श्री कृष्णाय नमः ।। अथ वेलरा पृथीराज कृत लिख्यते ।।
कृष्ण देव नमस्कृत्य सर्व देव शिरोमणिः ।
वल्ली नाम्नी प्रयत्ना च गीता तस्माद्‌दीर्यते ।। १ ।।
परमेश्वर प्रणम्य प्रणमि शर शति परिणशत गुरु प्रणामित्रिणेततशार ।।
मगल रूप गाईजे माह वच्या रस राहीज मंगल चार ।। १ ।।

टीका---

प्रथम कवि श्री परमेश्वर ने नमस्कार करे छे, पछे शरशति ने पछे
मनगुरु ने नमस्कार करे छे, ए तीनो ततसार छे ।
अरु ए मंगल रूप माहव छे तिहारो गुणानिवाद छे ।
तिण उपरांत मंगलचार कीइन छे ।। १ ।।

मध्य---पृ० ४

कामिनि कुच कठिरण कपोल करी किरिवेस नवी विधि वारण बखारण ॥
अति श्यामता विराजत ऊपजो बनदारण दिखाल्या जारण ॥ २४ ॥
रुक्मिरणी जी रास्तन बेसु हस्तीरण कपोल करि वर्णया छे बयनवी
कही जे वारणी तिरणकर भला षीया छे । अर स्तनां ऊपर स्यामता
विराजे छे सुजारणो जोवन डारण दिखा लीया छे ॥ २४ ॥
धर धर श्रंग सधर सुपीन पयोधर घरण षीरण कटि अति सुघट ॥
पदमरिण नाभ प्रियांग तरणी परि त्रिवल त्रिवेरणी श्रोरण तट ॥ २५ ॥
धर धर कहतां मेर गिरि सुं रुक्मरणी जी रास्तन मेर रा शृंग करिके वर्णीया छे ।
अने कटि छे सु अति क्षीरण छे अने सुघट छे, ने रुक्मरणी जी रो नाभ छे ।
सु प्रयाग जी समान कर बखाण्यो छे, अने त्रिवली वेरणी कहेता नितंब ॥
सोई तट हुआ ॥ २५ ॥

अंत---

विषय---रुक्मिरणी हररण सबंधी वर्णन किया गया है ।

संख्या २१२क. प्रेम प्रकाश, रचयिता---सवाई प्रताप सिह जी, स्थान---जयपुर, पत्र---
ाकार---८ × ६६१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२२, परिमारण (अनुष्टुप्)---६६, पूर्ण,
-साधारण, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सवत् १८४८ वि०, प्राप्ति स्थान---श्री
ती भडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० ब० ६२, पु० स० ८।१ ।

आदि---श्री गरणेशाय नमः ॥ अथ प्रेमप्रकाश ग्रंथ लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

चित गरणपति बुधि सारदा कृष्ण जानि शिरताज ।
मति मेरी तैसो कियो सफल भये सब काज ॥ १ ॥
सुख अनंद मंगल करन सदा करत प्रतिपाल ॥
निहचै कवि भजि लेहु तुम व्रजनिधिरूप रसाल ॥ २ ॥

मध्य--- वृ० ४ दोहा ॥

दइ निरदई कहा करी नेह नगर की रीति ।
फिर फिर वाही मारिये करै जु चित सौ प्रीति ॥ २४ ॥
सूकि गयो बोलोहु सबै नीर द्रगनि अति आत ॥
प्रान नहीं नारी चलै अचरज की यह बात ॥ २५ ॥
इस्क यहै सबतै बुरा करो न कोइ भूल ।
प्यारे की यह भेंट मैं शिर देना है मूल ॥ २६ ॥
अरी भटू हिय ह्वै लटू खाय रह्यो चकफेर ॥
व्रजनिधि मन कौ ले गयो नेक न लगी अबेर ॥ २७ ॥

अंत--- ॥ दोहा ॥

अष्टादश चालीस अठ संवत फागुनि जानि ।
कृष्ण पक्ष नवमी गुरू ग्रंथ कीयो मनमांनि ॥ ५४ ॥
कियो ग्रंथ जयनगर में नाम सु प्रेमप्रकाश ।
पढै कढै पातक सकल बढै प्रेम हय तासु ॥ ५५ ॥
सुखद सवाई जय नगर मांझि कियो यह ग्रंथ ।
जर्रनि मिटै हिय नरनि कै प्रेम परन कौ पंथ ॥ ५६ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराजा राजेंद्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचितं प्रेमप्रकाश ग्रंथ संपूर्णम् ।

विषय—प्रेमविषयक दोहे और सोरठे लिखे है ।

संख्या २१२ख. नीतिमंजरी, रचयिता—सवाई प्रताप सिंह जी, उपनाम 'व्रजनिधि', **स्थान**—जयपुर, पत्र—६, आकार—६½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (**अनुष्टुप्**)—२४८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५२, **प्राप्तिस्थान**—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६४, पु० सं० २११ ।

आदि—**॥श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नीति मंजरी लिख्यते ॥ छप्पय ॥**

जाकी मेरे चाह वही मोंसूं विरक्त मन । और पुरुष सो प्रीति पुरुष वह चहत और धन ।
मेरे कृत पर रीझि रही कोऊ ईक औरहि । यह विचित्र गति देखि विचित्र ज्यो तजत न ठौरहि ॥
सब भांति राज पत्नी सु धिक जार पुरुष को परम धिक ।
धिक काम याहि धिक मोहि धिक अब व्रजनिधि कौ सरन इक ॥ १ ॥

मध्य—**पृ० ६ ॥ छप्पे ॥**

तृष्णा को तजि देहु क्षमा को भजन करो नित ।
दया हिये में धारि पाप सों राखि दूरि चित ।
सत्य वचन मुख बोलि साध पदवी जिय धारहु ।
संत पुरुष की सेव नम्रता अति विस्तारहु ॥
सब गुन सु आपनें गुप्त करि कीरति परिपालन करहु ।
करि दया दुखित नर देखिके संत रीत यह अनुसरहु ॥ ४६ ॥

अंत—**छप्पे ॥**

करत उबटनो अंग न्हाय के अनल लगावत ।
चंदन चर्चित गात वसन बहु भांति बनावत ।
पहरि फूल की माल रतन के भूषन साजत ।
ये नहि सोभा देत नेक बोलत जो लाजत ॥
सबही सिंगार को सार यह बानी बरखत अमृतझर ।
तिहि सुनत सबन के मन हरत रीझि रहत नित नृपति वर ॥ १०१ ॥

॥ दोहा ॥

नीत मंजरी पढत ही प्रगट होत रहैं नीत ।
व्रजनिधि के परताप यह करी प्रताप प्रतीत ॥ १०२ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह देव विरचित नीतिमंजरी संपूर्णम् ।

विषय—भर्तृहरि कृत संस्कृत ग्रंथ 'नीति शतक' का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या २१२ग. वैराग्य मंजरी, रचयिता—सवाई श्री प्रताप सिंह जी 'व्रजनिधि', **स्थान**—जयपुर, पृष्ठ—२० (३३ से ५२ तक), आकार—६½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, **परिमाण** (अनुष्टुप्)—२५० पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५२, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६४, पु० सं० २१३ ।

आदि--अथ बैराग्य मंजरी लिख्यते ।। सोरठा ।।
सर्व दिसा सब काल पूरि रह्यो चैतन्य घन ।
सदा एक रस चाल वदन वा परब्रह्म को ।। १ ।।

।। कुंडलिया ।।

पंडित मच्छरता भरे भूप भरे अभिमान । जीव···या जगत के मूरख महा अजान ।
मूरख महा अंजान देखि के संकट सहिये । छंद प्रबंध कबित्त काव्य रस कासो कहिये ।।
वृद्ध भई तन माहि मधुर वानी गुण मंडित । अपने गुनको मारि मौंन गहिवे वे पंडित ।।२।।

मध्य--पृ० ४२ दोहा ।।
सत संगति सुच्छंदता विना कृपणता अछ ।
जान्यो नहि किहि तप किये यह फल होत प्रतछ ।। ४८ ।।

।। कुंडलियां ।।

जैसे चंचल चंचला त्योही चंचल भोग ।
तेसे ही यह आय है ज्यो घन पवन प्रयोग ।
ज्यो घन पवन प्रयोग तरल त्योही जोबन तन ।
बिनसत लगत न बार गात ह्वे जात श्रोस कन ।
देख्यो दुस्सह दुष्य देह धारिन को एसे ।
साधत संत समाधि व्याधि सों छूटत जेसे ।। ४६ ।।

अंत-- ।। दोहा ।।
करी भरथरी सतक पर भाषा भली प्रताप ।
नीत महल रस गोखपे वीतराग प्रभु आप ।। १०१ ।।
श्री राधा गोविंद के चरन सरन विश्राम ।
चंद्र महल चित चुहल में जयपुर नगर मुकाम ।। १०२ ।।
संवत अष्टादश सतक बावना शुभ वर्ष ।
भादो कृष्ण सुकला तीज प्रति ग्रंथ करि हर्ष ।। १०३ ।।

इति श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचितां बैराग्य मंजरी संपूर्णम् ।। श्री कृष्णाय नमः ।।

विषय--भर्तृहरि कृत संस्कृत ग्रंथ 'वैराग्यशतक' का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या २१२घ. स्नेह विहार, रचयिता--सवाई प्रताप सिंह जी, (जयपुर), कागज--देशी, पृष्ठ--५ (८ से १३), आकार--८ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--४८, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८५०, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ६२, पु० सं० ८।२ ।

आदि--अथ स्नेह विहार ग्रंथ लिख्यते ।।
दोहा--गन नायक वरदान है सारद बुद्धि प्रकाश ।
राधे कृष्ण विहार कहु पुरवो मन की आस ।। १ ।।
कहा कहौ कहनि कहा मुख तै कही न जाय ।
इश्क कुल्प जुल्फ लगी हाय हाय फिरि हाय ।। २ ।।

मध्य--पृ०--१०
इश्क आय आफत अरे करे दिलौ के टूक ।
नयन नोक झोकि झगरि उठी हूक करि कूक ।।

तेई आया खलक में कीनौ इस्क कमाल ।
जिगर तडफते धडपडे शिर न लगे जंगाल ।। १५ ।।

अंत-- ।। दोहा ।।

संवत् अष्टादश शतक पंचामत शुभ वर्ष ।
माघ शुक्ल द्वितीया सु तिथि दीतवार मन हर्ष ।। ४४ ।।

इति श्री स्नेह-विहार ग्रंथ सपूर्णम् ।।

विषय--राधाकृष्ण प्रेम विषयक काव्य ।

विशेष ज्ञातव्य--इसमें पहले 'प्रेम प्रकाश' और फिर यह ग्रंथ लिखा है ।

संख्या २१२ड. शृंगारमजरी, रचयिता--सवाई श्री प्रताप सिंह जी 'व्रजनिधि', (जयपुर), कागज--देशी, पृष्ठ--१५ (१८ से ३२ तक), आकार--६ × ६इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२००, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८५२, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६८, पु० सं० २१२ ।

आदि--अथ शृंगार मंजरी दूसरी लिख्यतें ।।

छप्पै--चंद कलामय कांति कांति बहुभांतिन बरसत ।
जारयो कांम पतंग अंग बिन भयो जु परसत ।
महामोह अग्यान हृदय को तिमर नसावत ।
अपनो आतम रूप प्रगट कर ताहि दिषावत ।
दुति दिपत अखंडित एक रस अद्भुत अतुलित अधिकवर ।
जगमगत संत चित सदन मे ज्ञान दीप जय जयति हर ।। १ ।।

मध्य--पृ० २७ ।।

कामनि हुकमी काम यह नेन सेन प्रगटात ।
तीन लोक जीत्यो मदन ताहि करत निज हात ।। ६६ ।।
दीप अगनि मनि चद्रमा जगमग जोति सुठार ।
मृगनेंनी कामिन विना लागत सबे अंध्यार ।। ६७ ।।
चंद्रकांति सम मुख लसत नीलम केसहि पास ।।
पुसपराग सम कर लसे नारीरत्न प्रकास ।। ६८ ।।

अंत-- ।। दोहा ।।

महामत्त या प्रेम को जब तिय करत उदोत ।
तब वाके छल बल निरखि विधिहू कायर होत ।। १०० ।।
काहू के बेराग रुचि काहू के रुचि नीति ।
काहू के सिंगार रुचि जुदी जुदी परतीति ।। १०१ ।।
इह सिंगार की मंजरी पढ़त होत चित धीर ।
सुनत गुनत वांचत लिखत हरत जगत की पीर ।। १०२ ।।

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचिता शृंगार मंजरी **सपूर्ण ।।**

विषय--भर्तृहरि कृत संस्कृत ग्रंथ "शृंगार शतक" का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या २१३. अंगद रावण सवाद (आनुमानिक), रचयिता--परधान (?), **कागज**--देशी, पत्र--५, आकार--५$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि-- रामजी सति ॥ दडक ॥

आव रघुवीर की सरण अंगद कहै मानि मतिमूढ़ या वचन मेरो।
जाहु रे जाहु जब कोप लकेस कह्यौ भुजन मेरो वरयो काल तेरो॥ १॥
सुर असुर नाग वलईन तैं वसि कीयौ इद्र ब्रह्मादि सवही नवाये।
वात अद्भूत यहे अौर पीछै रहे रीछ कपि लैन गढ़ लक आये॥ २॥
बाम कर की अलप अंगुरी अंक भरि लंक गढ़ वंक छिन माहि ढाहु॥
का करू नेक मोहि संक रघुबीर की टंक तोहि मारि अवही उडाउ॥ ३॥
होहि अैसों वली मुगध कपि काहि तै वालि से वाप को वैर लीनू॥
तात के भ्रात की मात पतिनी करी सत्रु की सरण आई सीस दीनू॥ ४॥
हूते मम तात के रावरे से लछित धर्म की मेंड जिह फोरि डारी॥
धूरि परि है अवै राजिहू के वदन राम अवतार षल डंडधारी॥ ५॥

मध्य--

सुनत ही वचन मानू फनग को फन चप्यौ सिंह पूछ सोवत मरोरघौ।
पर जरी आगि उर बोस लोचन विकल पाकि भुज उठत मत्रनि निहारचौ॥ ६॥
जौ लौ यह अैड अभिमान मद की भरनि ग्रीव मैं वंक हे दिषि पेषी॥
सर सरन वाकरी भुजा रघुवीर की जौ लौं मूर्त्ति मूढ़ न नाहि देषी॥ ७॥
चपल वन चरन को जाति चवोर अति वहा राजान सो वोलि जानै॥
छना की छाह इद्रादि थर थर करै वक्त तहा धीठ नहि संक मानै॥ ८॥
ईस गिर सेर अधसेर सम गिनत तू आपनौ वल न जीय मौ विचारै।
कहत परधान महाराज रावण दली आभ सौं वाप मारै॥ ९॥

अंत--

परघौ वलि द्वार वलिहारि वावन गदा विवनी कोर दै दै जिवायो।
ता विसम पालनै आनि वाध्यो तवै रह पान मार कै वार रुवायो॥ १०॥
मर्म के वचन सुनि छेद हिय मै भयो चटपटी जीय भृकुटी चढ़ावै।
हैरे कोऊ सूर सावंत मेरी सभा मारिल्यौ मंद नहि जान पावै॥ ११॥
एक रहपट दिये मुकुट उडि जाहिगे सभा सब चरन सो चापि डारूँ।
वालि को पूत यह सोच जिय मै करूं सिंह होइ मेढकन कहा मारूँ॥ १२॥
सुनत अपराध उतपात छोटेन को बड़न को छिमा भूषन कहावै॥
जान धौ दूत अवलौ न मारघौ कहूं पशुन लरत जीय लाज आवै॥ १३॥
सूर किसोर जव वालिनदन कह्यौ कौन अव सीस तोसो पचावै॥
नेक धर धीर रणधीर रघुवीर मनि देषि तरवार कैसी बजावै॥ १४॥

विषय--इसमें रावण अंगद सवाद वर्णित है।

संख्या २१४. कवित्त, रचयिता--प्रधान, कागज--देशी, पत्र--१ खर्रा, आकार--८$\frac{1}{16}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३०, परिमाण (अनुष्टुप्)--५६, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि--श्री गणेशायनमः ॥

स्वारथ औ परमारथ माह जथारथ वात अहै सब जानी ।
राउ औ रंक को एकहि भाउ निसंक निपाउनि पार्टहि आनी ।
संकट प्रान परेहू "प्रधान" तऊ मुष आन न भार्षाहि वानी ।
लोभ की पोर लर्ष न कवौ अस पचन के परमेश्वर जानी ॥
आवैं न न्याउ न दाउ कछू लहि संपति पंचन्ह में गनि जाही ।
राजदुआर लर्ष जेहि चार तेही रुष टारि प्रसंग बताही ।
भाषै "प्रधान" चले एहि भाँति अनेति अधर्म कि मुरति आही ।
पूरि अभागि भई तेन्ह की जेन्ह के घर पंच ए भाषन जाही ॥ २ ॥

॥ वेद ॥

रोगी त नाम सुनैं जौ कहू सहसा निज डोलन्ह सो उठि धावैं ।
जाइ कै ताहि भरोस दे भूरि सो नारी नीरेषि कै रोग बतावैं ।
नीक करें लघु वोषध मे गृह रकहु के निज दवि लगावैं ।
भाषै प्रधान ए वैद सुजान जे कालहु के घर सो धरि ल्यावैं ॥ ३ ॥

अंत--

जाइ तो न आवैं वात वातन ठरकावैं दैव जोग से जो आवैं न वतावैं रोग नाम हय ।
भेद न बतावैं तात पानी पिआवैं व्रत डेठ सै करावें कहै याही मे अराम हय ।
भाषत प्रधान सान चौगुनौ धनतरि ते एक वेर देषि कै न ताके धाम ताहि कय ।
आपुना करैं अराम रोगी को कहै निकाम ऐसे वैदराजन को दूरि ते प्रनाम हैं ॥ ४ ॥

आक धतूर घमोइ भरे कपरी ये. . .ट की जग वेद कहावैं ।
जानैं नहीं कछु रोग के लछन सीत भए पर मठ पिआवें ।
हीसा करैं महा ब्राह्मन ते गुन ताके "प्रधान" कहा लगि गावैं ।
कुरिसत वैदन की करनी वैतरनी लीही तवही घर आवैं ॥ ५ ॥
पीठि पिराय तौ पेटहि होवैं पेट पिराई तो नारी निहारैं ।
दे पुरिया पहिले विष की पुनि पाछे मरे पर रोग विचारैं ।
वीस रुपैया सगुन लै लेहि न देहि जवाव न त्यागहि द्वारे ।
भाषै "प्रधान" ए वंइद कसाइ जो दैव न मारैं सो आपनु मारैं ॥ ६ ॥

--पूर्ण प्रतिलिपि

विषय--अच्छे और बुरे पचों एव वैद्यों पर कवित्त रचे गए है ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत रचना म केवल छ छद है । पता नही चलता कि यह पूर्ण है या अपूर्ण ।

संख्या २१५. बारहखडी, रचयिता--"प्रभुलाल" (?), कागज--देशी, पत्र--४, आकार--$८\frac{१}{१०}$ × $५\frac{३}{१०}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टप्)--६५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--ॐ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

ॐ कका कलिजुग नाम अधारा ॥ प्रभु शिमरो भव उतरो पारा ॥
साध संगत करि हरि रस पीजे ॥ जीवन जन्म सुफल कर लीजे ॥
:o: :o: :o:
ख खा खोजो सकल जहाना ॥ जाको गावैं वेद पुराना ॥
नीर्भे नाम हरी को लीजे ॥ चरन कमल को ध्यान करीजे ॥
:o: :o: :o:

ग गा गुण गोविंद के गावो ।। माया जाल भूलि जिन जावो ।।
धन जोबन तन रंग पतंगा ।। छिन में छार होइ यह अंगा ।।
:o: :o: :o:

घ घा घट घट बोलव भाई ।। जल थल में प्रभु रहे समाई ।।
ऊच नीच ज्ञानक करि देखो ।। ऐकहि ब्रह्म सकल में लेखो ।।
:o: :o: :o:

न ना निगम खोजि कर देखो ।। दुजा और नहि कोई लेखो ।।
सप्त दीप अरु ब्रह्मंडा ।। माहि छाई रहो नव खंडा ।।
:o: :o: :o:

च चा चित निहेचे करि राषो ।। मिथ्यावाद झूठ मति भाषो ।।
सत्य सब्द तव होई प्रमाना ।। झूठ वचन सोई पाप समाना ।।
:o: :o: :o:

"प्रभु लाल" गुरुदेव लषायो ।। त्रिष्मालोभ सव दूरि गमायो ।।

अंत--

ह हा हरि गये पाप पराछत तापा ।। श्री गुरु चरण कमल प्रतापा ।।
:o: :o: :o:

ल ला ले नेकुं हरि नामा ।। देने कुं है अन्न को दाना ।।
:o: :o: :o:

क्ष क्षा छुहो विष वंधन चाहिये ।। सत गुरु चरन सरन होय रहिये ।।
नाम मधुर रस पिवो सुजाना ।। जासे गर्भ वास नहि होय पयाना ।।
बाराषड़ी ज्ञान गुन गांवो ।। सव संतन कुं सीस नवाऊ ।।
दीन प्रति दास सुमाना ।। नमस्कार करूं गुरुदेव प्रनामा ।।

इति श्री सुदामा जी की वाराषरी ज्ञान गुनवान संपूर्ण ।। ३५ ।। श्री ।।

विषय--ज्ञानोपदेश ।

संख्या २१६. दधिलीला, रचयिता--प्रमादाम, कागज--देशी, पत्र--६, आकार--६½ × ३१⁄६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--४२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि--श्री गनेसाए नमह ।। श्री पोथी दधी लीला ।।

प्रथम सनद अपार के प्रभु दान लीला गाइए ।
जो कहत सुनत अनद उपज प्रम पद को पाइए ।।
व्रीषभान सुता सुकुमारी । दधी गोरस वेचनि हारी ।
ह्रीदए धरी अंतर ध्याना । चली सुमीरत श्री भगवाना ।।
जह सीतली कदम जुडी छाहा । तह वैठ कुअर नर नाहा ।।
सष्पो गेंडुरी षेलत आइ । तव क्रीस्न जी मुरली वजाइ ।
दधी वेचन चली व्रीज वाला । वीच आइ मीले नदलाला ।।
देहु देहु गुजरी दधी दाना । गही अंचल रोकत कान्हा ।।
तुम छाड़ु गुमान गवारी । फरिहौ कुच कंचकी सारी ।।
सब भूषन लेउ छीनाई । मटुकी दधी देउ लुटाई ।।
तुम वहुत कीहो चतुराई । छोड़ीहौ नहीं नंद दोहाई ।।

॥ छंद ॥

छोड़ी हौ न नंद दोहाइ गुजरी जान केव करी पाइहौ ॥
अब देषीहौ वल प्रभ तेर कवन आइ छोड़ाइहौ ।
सबन दीनो दान मोको तुम वहुत सरवरी करी ।
चतुर चचली ढीठी लंगरो देषी न ऐसी गुजरी ॥ १ ॥

सुनी गुजरी हरि मुष वैना । त्रीअ बक भए मुष नैना ॥
तुम समझी न वोलु मुरारी । हम है मथुरा की गुआरी ॥
जह ठाकुर कस भुआरा । सुधी सुनतहीं करीही सघारा ॥
न हम लादे लवंग सोपारी । हम गोरस बेचन हारी ॥
जब कस राइ सुनी पैहै । तब नंद हो पकरी मगैहै ॥
सब गौअन लेहै छीनाइ । गोकुला धन दैहौ लुटाइ ॥
तुम हो अपन मदमाते । ताते करहु अटपटी बाते ॥

करत अटपटी बात मोहन घात कछुउ न लागीहै ।
हम न होहि गवारि गुजरी डर तुमारे भाजीहै ॥
अब चीत चेतु बीचारु मोहन छाडु अंचल वाम की ।
लाइ कलक धराइ मागौ तौ सुता वृषभान की ॥

सुनी गुजरी वचन रिसाला । हसी वोले नंद के लाला ॥
काहु झूठ कलंक लगैए । अपनो परलोक नसैए ॥
बीना दान जान नही पैहो । जौ कोटिक त्रास दिषैहो ॥
हम आदी प्रभ अवतारा है । क्रीस्न जी नाम हमारा है ॥
हम ही सब दैत सघारा । वसुधा कर भार उतारा ॥
पुनि करब गऊ प्रतीपाला । है नाम हमार गोपाला ॥
सुषीयन के सुष देहौ । त्रीतु मंडल मे जस लैहो ॥
है त्रीभुवन नाम हमारा । का करीहै कंस बेचारा ॥
यसे तीया चरीत्र न लागै । हमसे चतुराइन फाबै ॥

॥ छंद ॥

चतुराइ न फाबै सुदरी जौ जान आतुर घर चहो ।
मानी रही रस करहु कीड़ा हरी भले तुमहु भली ॥
नग्र मुनी उपहास करी है कवन इत उत कीजिए ।
अब आपनो राषु सुदरी दान हमरो दीजिए ॥

॥ चौपाई ॥

जब कापै कहा अस बाता । तब गहो फटी फारेसी हाथा ॥
हम मातु पिता घर वारी । अस वोल न वोल मुरारी ॥
वरु षाहु दही भरी पेटा । आने वातन ते नही भेटा ॥
मटकी सीर ते उतराई । करु वोढे कुअर कधाइ ॥
नही ग्वाल दधी दोसी मागै । तह इत उत षैचन लागै ॥
दधी देत गुजरी अकुलानी । प्रभु नेकु न चीतवनी मानी ॥
एक भाजन लै भजी जाई । गेडुरी एक ग्वाल चोराई ॥
तह कांध करै विचवानी । मुष अंचल दै मुसुकानी ॥

॥ छंद ॥

मुसुकाइ मुष पर देत अंचल चतुर चंचली भामीनी ।
स्याम घटा घन घेरी आइ मनो दमकंत दामीनी ॥

कहती राधे चरन गहीके काध अब घर जान दे ।
कंकन मोतीन माल मुकुता कछुक आपन दान ले ।।
जब देन लगी सखी दाना । तब अति इतराने काना ।।
प्रभु मौनी साधि कै वैसे । जोगी मुनी जंगम जैसे ।।
करी जुवती अनेग चलावै । प्रभु नैनन्ह में चीत लावै ।।
तब राधे निकट चली आई । सुनी लीजै बीनती गोसाई ।।
हसही सब दास तोहारी । अत चरन सरन बनवारी ।।
धनी जीवन जन्म हमारा । जब दरसन पावो तोहारा ।।
अब जो चाहै सो लीजे । प्रभु क्रीपा आपनी कीजै ।।
कोइ वैठी बआरी डोलावे । कोइ बीरा षोली षीलावै ।।
हरी देषी गुजरी. . . . . . । हसी बोले सारग पानी ।।
हंसि बोले सारंग पानी सुंदर मानी रती रस भै रही ।
कर केलि कलोल कीन्हो सहस रंग रस भै रही ।।
करहु क्रीपा दरसन मोहन कमल लोचन राजही ।
"दास प्रेमा" प्रेम सोभा कहत कलीमष भागही ।।
—प्राप्त प्रति की पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—श्रीकृष्ण और गोपियों की दानलीला का वर्णन ।

संख्या २१७क. कृष्ण वृत्त चंद्रावली, रचयिता—प्रवीन कवि, कागज—देशी, पृष्ठ—११, आकार—८ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२४, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६२, पु० सं० ६।१।

आदि—।। श्रीकृष्णाय नमः ।।
सुमिरत हीं जाके चरित टरत विघ्न निःसेस ।।
वंदहि किंन्नर नर अमर संकट हरन गनेस ।। १ ।।
।। त्रिभंगी ।।
वंदे गजवदनं सुंदर रदन सुभमति सदनं विघ्नहरं ।।
विद्याखिल दानं प्रगट प्रमानं भवति ज्ञानं यद्रुचिरं ।।

मध्य—पृ० ८अ. हरिनी ल—दोहा ।
नसमरसहि क्रम सो धरो लघु गुरु देउहँ अंत ।।
षट् श्रुति मुनि सों विरति जहँ उहं हरिणी कहि कंत ।।३४।।

मध्य—तब हँसि कह्यो एरी लीजे दुकूलनु आइके ।
तुम कत रहीं पानी ही में महा दुखु पाइके ।
जब कुंवर सों नारी हारीं सबे मिसु जानिके ।
कुँवर तबही दीनी सारी महारसु पाइके ।।३५।।

अंत—कृष्ण वृत्त चंद्रावली तिहिते रची प्रवीन ।।
जाहि लखें जिय को तिमिर होत खरोई छीन ।।१८।।
जोलों सिव सिर गंगजल जोलों ध्रुवधर भानु ।
कृष्ण वृत्त चंद्रावली तोलों होहु प्रमान ।।१९।।

सुनत गाज गजराज की विपती हरी जो ग्राह ।
भक्तवछल सो हरि अबे मेरे होहु सहाइ ॥२०॥
मेरे औगुन सकल जेहे यह निरधार ।
कृष्ण वृत्त चंद्रावली जिहि ते करयो सिगारु ॥२१॥

इति श्री कृष्ण वृत्त चंद्रावल्यां गणादि नाम कथन नाम षोडशः कलाभेदः ॥ इति कृष्ण वृत्त चंद्रावली समाप्ता ॥ शुभं ॥

विषय--पिंगल विषय वर्णन । पृष्ठ संख्याएँ गड़बड़ है । प्रारंभ में १८ से २१ तक और बाद में १ से १७ तक है । ग्रंथ में १६ कला भेद है, जो इसके प्रकरण विभाग है । प्रथम कला भेद में छंदों के नाम, द्वितीय में गणों के नाम, तृतीय में एकाक्षरादि त्र्यक्षरान्त्य वृत्त, चतुर्थ में चतुरक्षरादि षडक्षरान्त्य वृत्त, पंचम में सप्ताक्षरादि नवाक्षरान्त्य वृत्त, षष्ठ में--दशाक्षरादि द्वादशाक्षरान्त्य वृत्त, सप्तम में--त्रयोदशाक्षरादि पंचदशाक्षरान्त्य वृत्त, अष्टम में--षोडशाक्षरादि अष्टादशाक्षरान्त्य वृत्त, नवम में--एकोनविंशत्यक्षरादि एकविंशत्यक्षरान्त्य वृत्त, दशम में--द्वाविंशत्यक्षरादि चतुर्विंशत्यक्षरान्त्य वृत्त, एकादश में--पंचविंशत्यक्षरादि षड्विंशत्यक्षरान्त्य वृत्त, द्वादश कला भेद में--द्वितीय त्रिभंग्यादि वृत्त कथन, त्रयोदश में--चंडवृष्टि प्रतापादि दंडक कथन, चतुर्दश में--द्विपथादि, पंचदश में--अर्द्धसमादि, सोलहवें में--गणादि नाम कथन ।

इस प्रकार सोलह कलाभेद है । वृत्तों के लक्षण पहले देकर बाद में उदाहरण लिखे है । छंदों में भगवान् का चरित्र वर्णन किया है ।

संख्या २१७ब. श्री द्वारकाधीश के विचित्र विलास, रचयिता--'प्रवीन' कवि, कागज--देशी, पृष्ठ--४८, आकार--८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--७२०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८१७, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ५८, पु० सं० ३ ।

आदि--श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ **श्री द्वारकाधीश के विचीत्र विलास लिख्यते ॥**

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन प्रनाम करि, गनपति कों सिर नाई ।
बानी को सुमिरन करों परम महा सुखदाई ॥ १ ॥
पूरन गिरा प्रसाद ते रचना रच्यो नवीन ।
द्वारावती नरेश की सोभा सरस प्रवीन ॥ २ ॥

मध्य--पृ० १६

पूरन हो सब भांति प्रसिद्ध काहालों प्रभु रसना को नचाइये ।
और सुहात न बात कछु जाते रसन कों धन दे ललचाइये ।
नेह प्रवीन लाग्यो तुमसो या नेह कहो कौन जायी जगाइये ।
प्रीति लगाइ गिरा के प्रसाद श्री द्वारवती के नरेश को गाईये ॥१२१॥

अंत--

रिखि विधि वसु ससि संवत ही तृतीया गुरु सुद महि ॥
यहे ग्रंथ पूरन कीयो भयो प्रवीन उछाह ॥८५॥

इति श्री द्वारिकाधीस विचित्र विलास वर्नन नाम दसमोल्लास श्री सुभं भवतु । श्री कृष्णाय नमः ॥

विषय--कांकरोली के श्री द्वारकाधीश भगवान् का और राय समुद्र तालाब का वर्णन। श्री द्वारकाधीश जी का ऐतिहासिक विवरण भी दिया है ।

संख्या २१८. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—प्राणचंद्र चौहान, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६$\frac{1}{8}$ × ३$\frac{3}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८० वि०, प्राप्तिस्थान—लाला सरयू प्रसाद श्रीवास्तव, ग्राम—रसराई, पो०—गगाय अकिल, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ चौपाई ॥

श्री राम नाम प्रह्लाद जो लीन्हा। ताके पिता बहुत दुष दीना॥
बहुत जतन के पढे बैठावा। श्री राम नाम बिनु और न भावा॥
राजा पूछा निकट बोलाई। का विद्या ताहि गुरू सिषाई॥
तब प्रह्लाद कही कर जोरी। विनती सुनहु तात एक मोरी॥
विद्या पढि सबै हम बाचा। एकै श्री राम नाम है साचा॥
सुनि कै राजा उठा रिसाई। निंदि गुरू तन भौंह चढ़ाई॥
ऐ अस कहा दोस सब तोरा। एह बालक का जाने मोरा॥
जेहि की आदि अंत नहि जानी। ताकर नाउ लेत दिन राती॥
वोह गुरु छोडि और गुरु दीन्हा। कठिन बहुत सिषावन दीन्हा॥

अंत—

जेहि के म्या में रहौ भुलाना। मनुज रूप कैसे के जाना॥
कबहु न दरस भगवाना। साकार जोग करहि धरि ध्याना॥
समाधान जो एहि मन लावै। प्रभु प्रसाद जो भक्ति वर पावै॥

यह कथा भाषी प्रानचद चौहान। यह प्रह्लाद चरित्र जो लषा सो लिषा। पंडित जन सो विनती मोरी अछर टूट मिलाउ जोरी। संवत १८८० मीतो भदो सुदी २॥ लिषा भगबान दास काएस्थ ॥

विषय—प्रह्लाद-चरित्र-वर्णन।

संख्या २१९. अर्जीनामा (प्राणनाथ का ग्रंथ), रचयिता—इंद्रावती और महामति (? प्राणनाथ), कागज—देशी, पत्र—४५८, आकार—१२$\frac{1}{2}$ × १०$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८६९५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८५६, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी। (दाता—कुँवर सुरेश सिंह जी, कालाकांकर, अवध)।

आदि—. . . . .

हार होसी तब ॥१८॥
ना कछु कात्या रात में ना कछू कात्या दिन।
सोवत न बीच सैयन में मुष उत्तार होसी तिन ॥१९॥
जो मोटा या बारीक तिन भी पाया मूल।
पर जिन कछुए न कातया तिन सु कछुए ना मूल ॥२०॥
हुकुम धनी को विध विध अनेक किये पुकार।
जिन सुनी न तिनकी वतंन मै वाले हुई विकार ॥२१॥
सुनते पुकार धनी की काल गया दिन ले।
पीछै मुष नीचा होएसी क्यौं न कातया चित्त दै ॥२२॥

अंत—

जिन पाइ राह रोज क्यामत। सो उठे फजर के नूर बखत॥
फजर पीछैं जब उमा दिन। तब तो तोबा तोबा हुई तम तंन॥ ४॥

तब तो दरवाजा मूंद के गया । पीछे तो नफा काहू को न भया ॥
सब जले जल्या अजाजील । जाए उठाया असराफील ॥ ५ ॥
एक सूरें उठाए के दिए । दूसरे तेरे में काएम किए ॥
यो क्यांमत हुई जाहिर दिन । महंमदे करी उमत रौसन ॥ ६ ॥२४॥५३१॥
॥ तारीष नामा तमाम ॥

॥ संवत् १८५३ ॥ के जेठ वदि ५ गुरो कों ॥

विषय—धामी सम्प्रदाय की रचनाओं का संग्रह ।

रचनाओं के नाम नीचे लिखे जाते हैं —

१. किताब जबूर—लक्ष्मी जी का दृष्टांत, प्रगट वानी, बेहद वानी, दूध पानी का बेवरा, भागवत को सार, पष पुष्ट मरजाद पखा—पत्र ४८–६१ तक
२. किताब षट्ऋतु और बारामासी—पत्र ६२–६९ तक
३. किताब तौरेत श्री कलस हिन्दुस्तानी—पद विरह का प्रकरण, अवतारो का प्रकरण, गोकुल लीला, जोग माया के प्रकरण, दया को प्रकरण, हासी का प्रकरण, जागने का प्रकरण—पत्र ७०–८९ तक
४. सनधे—पत्र ९०–१३१ तक
५. किताब कीर्तन—पत्र १३१–१८६ तक
६. खुलासा फुरमान—गिरोह दीन का, महराज नामे का खुलासा इस्लाम का, भिस्त सिफाएत का ब्योरा, हकी सूरत का, नाजी फिरका, रुहों की विने, नल सूरत, जलाकी पेहेचान, जहर नामा, दुनामा, मीजान की सूरत, अरस अजीम की हक, मारफत महाकारन, मोमिन आये अरस अजीम से—पत्र १८६–२११ तक
७ खिलवत—पत्र २११–२३८ तक
८. परिक्रमा—पत्र २३९–३०२ तक
९. किताब आठों सागर—पत्र ३०२–३३२ तक
१०. श्री राज जी का बड़ा शृंगार—पत्र ३३२–३६० तक
११. वानी आखर की सिंधी भाषा में तथा उसकी हिंदुस्तानी—३६१–४०५ तक
१२. किताब मारफत सागर—पत्र ४०६–४३३ तक
१३. कयामत नामा छोटो—पत्र ४३३–४३९ तक
१४. क्यामत नामा बड़ो तथा तारीख नामा—पत्र ४४०–४५६ तक

संख्या २२०. जेहली जवाहिर, रचयिता—प्राननाथ मोती, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जेहली जवाहिर लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

बानी बानी दीजिये बानी कहों बनाइ ।
रानी तीन्यों लोक की मॉनी मानों पाइ ॥ १ ॥
जेहरिपुर में जेहली बसें सबै सुष पाइ ।
कातर पुर ता पास पुनि वरयौ नयौ ही आइ ॥ २ ॥

॥ चौपई ॥

नित उठि झगरो लाग्यौ हौन । इँहिं ठाँ आइ बसे तुम कौन ॥
कातर किसबुरु जाति अनंत । देव कृपा तें एकै तंत ॥ ३ ॥

जौब कहौ तौ इँहिठाँ बसियें । नाहो तौ इँहि कालहि नसियै ।।
मतौ करन कों कियौ विचार । तामे लगो तनक सी बार ।। ४ ।।
बरस छसातक ह्वै कै गए । तब सब मिलि इक ठौरें भए ।।
नयौ गाँउ कातर पुर नाँउ । आनि बस्यौ है याहीं ठाँउ ।। ५ ।।

अंत-- ।। चौपाई ।।

धसिकं मारेंगे निसि सबै । तब हम भाजि सकैंगे कबै ।।
अमलिनु कियौ विचार सुनौ । जायें जानुन काहू जी कौ ।।४८।।
२। परवत ते पय नदी जु छोड़ी । सिगरे बहे परी नहि ओड़ी ।।४६।।
१। परवत ते पय नदी बहाओ । रहेब तिनकों मारि बहाओ ।।
अमलिनु अमलिन सों यों कही । नामरदन की रैयति सही ।।
अमल करें सैलन कों जाँहि । नामरदन पे तें लै बाँहि ।।५०।।
जौ ए कह्यौ हमारौ डारें । तौ इनको बातनु सों मारें ।।५१।।

।। दोहा ।।

मारे सोफी जेहली फते लही है आपु ।
कंचन रैयति प्रभु दई मिटचौ सकल संतापु ।।५१।।

इति श्री कवि प्राननाथ सोती कृत ।।जेहली जवार समाप्तः ।। शुभमस्तु ।। संवत् १७६० मिति आषाढ़ शुक्ला १ रवौ लिषितं मिश्र नीलकंठस्यात्मज मिश्र सोमनाथ स्वपठनार्थं ।।

विषय--मूर्ख (जेहली) और सुकुमार (सोफी) तथा व्यसनी (अमली) और नपुंसक लोगों की लड़ाई का वर्णन किया गया है। मूर्ख और सुकुमार एक ओर थे और व्यसनी तथा नपुंसक दूसरी ओर। पूर्वोक्त पक्ष लड़ाई में नष्ट हो जाता है। कथा हास्यरसयुक्त है। इसमें उपदेश कुछ नहीं।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल उल्लिखित नहीं है। लिपिकाल संवत् १७६० है। रचयिता का नाम पुष्पिका के लेख के अनुसार प्राणनाथ सोती है। इनका और परिचय अप्राप्त है। परंतु इसमें संदेह नहीं कि ये संवत् १७६० के पहिले हुए हैं।

प्रस्तुत प्रति महत्वपूर्ण है। इसकी प्रतिलिपि हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि सोमनाथ ने की है। इसमें उस समय के प्रसिद्ध कवियों की शुद्धाशुद्ध लेखन शैली के विषय में पता चलता है। अनुस्वार की जगह सर्वत्र चंद्रबिंदु प्रयुक्त हुआ है। प्रति शुद्ध जान पड़ती है। एक महाकवि को दूसरे के ग्रंथ की नकल करने में अपने दायित्व का किस प्रकार निर्वाह करना चाहिए, वह प्रस्तुत प्रति से प्रकट होता है।

संख्या २२१क. मनमोहन लीला, रचयिता प्रेमदास, कागज--देशी, पत्र--३, आकार--७$\frac{५}{१६}$ × ४$\frac{१४}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--५४, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी कैथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान--का० ना० प्र० सभा, वाराणसी, (दाता--प० शिवप्रसाद जी भट्ट, ग्राम--खोपा, पोस्ट--सराय अकील, जिला--इलाहाबाद)।

आदि--......................

मानो सषी सिषवन मेरो गेद स्याम को दीजै ।
जमुना जी में मंजन करिकै गवन भवन को कीजै ।।३७।।
चलो वेगही घरै आपनै सुनिये विनय हमारी ।
तनीक भूल पैइहै जो फेरी घर षीझै महतारी ।।३८।।

हसी के दीनो गेद राधिका लीजे मदन गोपाला ।
म दासी हों कीस्न तुम्हारी सुनीए दीनदयाला ॥
कालोदी को चली राधिका फिर फिर चितवत पाछे ।
इहा कीस्न जू चलन लागे सषा संग पुनि आछे ॥
नदलाल वषभान लडंली सुनीए वीनै हमारी ।
कृपा कटाछ हरीए जन पर "प्रेमदास" वलिहारी ॥

इति पंचरग्न गेद लीला प्रेमदास विरचितं सुपुरन ॥

अथ लीला लीषते महादेव कीस्न को

॥ दोहा ॥

प्रथम लाडली लाल के चरन कँवल सीर नाए ।
पुनो वदो जलजात से सोउ परसाद के पाए ॥ १ ॥
गुरु राम के पद गुर पकज तीनको...लगाई ।
राधा कीस्न चद की लीला के धरन मनाइ ॥ २ ॥
एक समै कलास सीषर पर तरु तमाल की छाहीं ।
तहा अतीक बठे सकर जु अधीक प्रेम मनमानी ॥ ३ ॥

अंत--सब घर सब आई अन ले जसुदा तुरीत पथने ।
सुनी के मह प्रभु का बाते हरहर क पछीताने ॥
धन्य धन्य नर नारी सब सुफल नन नीज कीन ।
मोहीं कहा ज पातकी सउ दरसन नहीं दीना ॥६०॥

इति श्री मनमोहन लीला प्रेमदास वीरचीत महादेव दरसन वरनो नाम प्रथमोध्याय ॥

विषय--श्रीकृष्ण की गेंदलीला और शिव दरसन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ आदि और अंत में खंडित है । केवल तीन पत्ते उपलब्ध हैं । रचनाकाल और लिपिकाल का भी कोई पता नहीं ।

संख्या २२१ख. प्रेमसागर, रचयिता--प्रेमदास, स्थान--विरजपुर, पत्र--२८, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, अपूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८२७ वि०, प्राप्तिस्थान--[illegible]पुर ।

आदि--श्री गनेस जू श्री सरसुती जू श्री महादेव जू श्री पारवती गौरामहारानी जू श्री लछमी जू श्री राधा कृस्न जू श्री राजा रामचंद जू । सदा सहाइ अथा प्रेमसागर छंद ललित लिषते ॥

जय विरच जल जय नारायन जय महेस गनेसा ।
जय सारद गुर जय जय देवा उर मे करहि प्रवेसा ॥

मध्य--पृ० सं० २८

लगी लिषन मन के दुष सबरे हती जौन जियं बाधा ॥
श्री मोहन नदलाल दुलारे जसुदा जू के वारे ॥
हितै श्री राधा गोपिन सबकी हे प्रानाम प्रिय प्यारे ॥
उति के समाचार सुभ चहिये सुनो कृस्न जे बैना ॥
हिन के समाचार सुभ जा दिन ता दिन देषे नैना ॥

अंत--पृ० सं० ५६

....
....

. . . .

प्रेम सहित भे मंत्रन करहै जांनहि पै विस्वास ।।
ताके भौन दलिद्र ना रेहै करै लछमी बासा ।।
प्रेम कहे हरदरस मिलन है संकर केरन विधाना ।।

विषय--गोपी उद्धव सवाद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ये कवि खोज मे नवोपलब्ध है । 'प्रेम सागर' की दूसरी प्रति भी मिली है जो पूर्ण है । दो अन्य पुस्तके भी इनकी प्राप्त हुई है । उनमे से एक का नाम 'नासकेत पुरान' है और दूसरी का 'पचरतनी गेद लीला' ।

संख्या २२१ग. गेद लीला, रचयिता--प्रेमदास, कागज--देशी, पत्र--४, आकार--६ × ४½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--५६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १६१७ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, एम० ए० (प्रिवियस), ग्राम--डुकमहा, पो०--कन्हौली, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गनेसाय नमः ।।

जय जय कृष्ण कमल दल लोचन दुष मोचन सुषदाई ।
जै गोंविंद व्रजनंद चंद सुत आरत हरन कन्हाई ।।
जै राधे व्रषभान डाडिली पूरन करिये साधा ।
जे नर आवत सरन तुम्हारी तिनकै रहत न बाधा ।।
अपनै हिय यह धरिकै राधै जिय दुविधा जिन राषौ ।
लीला ललित लाड़िली जू की प्रेम सहित कछु भाषौ ।।
ये सम प्रभु गेदन षेलत श्री वृंदावन माही ।
जमुना कुंज सघन कौ लीन्हे वसी वट की छाही ।।
तहा आई निकसी श्री राधे पाचौ सग सहेली ।
तिनकौ लषि रंभा रति लाजै कंचन कैसी वेली ।।
देषी गेद परी मोहन की राधा तुरत उठाई ।
हरि की दीठ बचाइ लाडिली ललिता हाथ गहाई ।।

अंत--चलौ वेगि अब घरै लाडली सुनिये अरज हमारी ।
तनक मोल जो हहै प्यारी तौ बचिहै महतारी ।।
हसि कै दीन्ही गेद राधिका लीजे मदन गोपाला ।
हम दासी है कृष्ण तुम्हारी सुनिये दीन दयाला ।।
कालिंद्री कौ चली राधिका फिरि फिरि चितवत पाछे ।
इहा कृष्ण जू षेलन लागे संग सषा सब आछे ।।
नंदलाल व्रषभान लाडली सुनिये अरज हमारी ।
कृपा कटाक्ष हेरिये जन पै प्रेमदास बलिहारी ।।

इति श्री गेंदलीला संपूर्ण ।। श्री चित्रकूट सीतापुर ग्रामे लिष्यतं ला: सीतारामदास ।। ।।फागुन।। सुदी ।। १० संवत् १६१७ ।।

विषय--श्रीकृष्ण की गेदलीला का वर्णन ।

संख्या २२१घ. पंचरतनी गेद लीला, रचयिता--प्रेमदास, ग्राम--विरजपुरा, पत्र--१६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१५, पूर्ण, रूप--नया, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८८५, प्राप्तिस्थान--लाला भगवान दास जी पटवारी, तहसील--रामनगर, जिला--छतरपुर ।

आदि--।। अथ पंचरतनी गेद लीला ।।

जय जय कृष्ण कमल दल लोचन दुख मोचन सुखदाई ।।
जय गुविन्द व्रजचन्द नन्दसुत आरतहरण कन्हाई ।।

मध्य--

तहाँ आन बैठी श्री राधा ललता जानत जी की ।।
तव ललता जानी मन केरी श्री फल टोर मगायौं ।।

अंत--

....
....
....
संवत् कहो अठारा सौ कौ पैंतालिस की साला ।
मार्ग वदी वार शनि को भई पूरन कथा रसाला ।।

इति श्री पंचरतन गेद लीला नाइन रूप वरननो नाम प्रेमदास विरचितायाम् पचमोऽध्यायः ।

विषय--पहली लीला--कृष्ण जी ग्वाल बालो सहित यमुना के तीर पर गेद खेलने गए, वहीं राधा भी थी । राधा ने गेद ले ली । भगवान् कृष्ण ने राधा से कहा कि तुमने गेद चुरा ली। राधा जी भी कहने लगी कि जैसे तुम चोर हो वैसे ही मुझे समझते हो । प्रेम वार्तालाप होने लगा । बाद में राधा जी ने गेद दे दी । ग्वाल बाल गेद खेलने लगे । राधिका जी भी सहेली, ललिता सहित जमना की ओर चल दी ।

दूसरी लीला--चीर हरण लीला का वर्णन ।

तीसरी लीला--राधा कृष्ण विहार और श्रीफल माँगन लीला ।

चौथी लीला--मान लीला ।

पाचवी लीला--भगवान् कृष्ण का राधा जी को देखने के लिये नारन का रूप बनाना ।

संख्या २२१ड. नासकेत पुरान, रचयिता--प्रेमदास, ग्राम--बिरजपुरा, पत्र--६४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१३, पूर्ण, रूप--नया, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--बा० रघुनंदनप्रसाद खरे, मुहल्ला-हटवारा, राज्य-छतरपुर ।

आदि--श्री गनेस जू सदां सहांइ अथां नांसकेत पुरांन लिष्यते

।। दोहा ।।

प्रथम बंद गननाइकहू गुर द्विज सारद ईस ।
कृपा करत सो मांत तुम्है चरन कमल धर सीस ।। १ ।।

मध्य--

.... प्रांनी ।
ठाढौ करत सुनौ यह वांनी ।।
तव नृप चित्त गुपित्र निकेता ।
पठवें तुरतहि दूत समेता ।।

अंत--

सुनें सुनावै कोई । नासकेत विष्यान यह ।।
मन वांछित फल होइ । प्रेमदास अैसो कहत ।।

इति श्रीपद्मपुराणे नासकेत विष्यने प्रेमदास विरंचितायां षोडसमोऽध्यायः ।

विषय--पद्म पुराण के आधार पर नासकेत कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--इस ग्रंथ में चित्र भी दिए गए है ।

संख्या २२२क. आभास रामायण, रचयिता--प्रेमरंग (विप्र), निवास स्थान--काशी, कागज--देशी, पत्र--३२, आकार--६ × ३$\frac{१}{१६}$'' इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--६१६, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--संवत १८५८ वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि--.........सांग हिय सेल धसी ॥११॥

पेहली रात वसे सव जनमें विना कहे चुपके सटके।
उठत राम नहि देखत रोवत घर आवत तिय जग झटके॥१२॥
गंगा वसर तरस हिय हरषेव शृंग बेर की मजल लिया।
गुह मलाह की जात कोंन सी दिल भर अपनों पार किया॥१३॥
गुह से मिलकर नदि उतरकर भरद्वाज सों जाय मिले।
एक दिन रहे फलार खाय कर चित्रकूट मों गए चले॥१४॥
दंडक वन कों धसे विहारी वनचर मृग मुनि अभय दिये।
कुटी वनाय भुलाय राज कों अचल अचल पर वास किये॥१५॥
वहां सुमंत्र वसत सुन में रोवत रथ कों फेर लिया।
रोये तुरंग कुरंग भृंग जल थल वन पंछि रोय दिया॥१६॥
पुछत नरनारी सव मिल मिल कहां राम तुम त्याग किये।
कौसल्या नृप जव पूछेंगे कोन वचन तुम कंठ किये॥१७॥

:o: :o: :o:

मुनिपद परसे अनुसूया ने सियमुख सुना स्वयंवर कों।
"प्रेमरंग प्रभु" सुख सों वसे धसे वन घन सर धनुधर कों॥४६॥

इति श्री वाल्मीकीय आभास रामायणे अयोध्याकांड समाप्तः॥

अंत--

चले सव देव मिल सान्तान। भये दिव्य देह चढे हैं विमान॥
अवध में लेखत देखा प्रांन। कहा वाल्मी पद अनिवन॥३५॥
अघमोचन कोट जनम का जान। ईती आभास अंतर्धान॥
कहा "प्रेमरंग" सियापत ग्यांन। गायन् सो राम मिलेंगे शत॥३६॥

इति श्री वाल्मीकीय आभास रामायणे उत्तरकांड समाप्त॥ अथ फल अस्तुति॥
रामायण आभास यह सात कांड वालमीक॥

:o: :o: :o:

छंदन रचन जानत नहीं नहीं जानत सुधराज।
छमा कीजे मोहे चतुर नर लखि रघुवर अनुराग॥ ५॥
कासी वासी विप्र हो रहत राम तट धाम।
पवनकुमार प्रसाद सो गाय रिझावत राम॥ ७॥
अज शिव शेष न कहि सके महिमा सीताराम।
इंद्रदेव सुरदेव सुरदेव सुत नागर कवि अभिराम॥ ८॥
संस्कृत प्रकृति दोउ कहे इंद्र पद्य के बोल।
बाल्मीकीय प्रसाद सों गाये रिसकिनि चोल॥ ६॥
अठारह सें अठावनां विक्रम शक मलमास।
कृष्ण पक्ष एकादशी रविकुल नंदन पास॥१०॥
जहां रा...........................।

विषय—वाल्मीकि रामायण के अनुसार संक्षिप्त रामकथा का वर्णन ।

रचनाकाल

अठारह सें अठावनां विक्रम शक मलमास ।
कृष्ण पक्ष एकादशीं रविकुल नंदन पास ॥१०॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । आदि में पत्र सं० ६ है और अंत में ३७ । रचनाकाल **संवत्** १८५८ वि० है । लिपिकाल ग्रंथ के खंडित हो जाने से अज्ञात है ।

रचयिता का नाम प्रेमरंग है, पर फलस्तुति के अंत में नागर कवि का भी उल्लेख हुआ है । ऐसा जान पड़ता है कि नागर 'कवि प्रेमरंग' के गुरु थे । रचयिता काशीवासी थे और जाति के ब्राह्मण थे ।

रचना राग रागिनियों में रची गई है । बालकांड का समस्त अंश खंडित है । अयोध्या कांड का आरंभ छोड़कर शेष उपलब्ध है । पश्चात् उत्तर कांड तक की कथा क्रमपूर्वक है । फलस्तुति, रचयिता का परिचय और रचनाकाल भी प्राप्त है । आगे थोड़ा सा ही अंश त्रुटित हुआ जान पड़ता है ।

संख्या २२२ख. आभास रामायण, रचयिता—प्रेमरंग, कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—११¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६७, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५८ वि०, लिपिकाल—सं० १८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी । (यह ग्रंथ बूंदी निवासी पं० लज्जाराम मेहता के पुस्तकालय से उनके भानजे ने सभा को प्रदान किया) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वाल्मीकी रामायण अनुसारे ॥ आभास रामायण प्रारंभः बालकांड प्रारंभः ॥

राग अहंग ॥ ताल ॥ १ ॥
॥ छंद रेखता ॥

ॐ तत्सत श्री सीतारामचंद्र परब्रह्म परमात्माय नमः ॥ श्री हनुमते नमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः हरि ॐम् ॥

गणपति के चरण पूज लाल बंदन दूब सों ।
सुभ काज करन सिद्ध सिद्धि वृद्धि घर्रणसों ।
बानी बचन विमाल और सालर भरी...... ।
दिलयें करों खुशाल शब्द जाल ख्याल सों ॥ १ ॥
:o: :o: :o:
हनुमान हुक्म माँग कहों राम की कथा ।
बाल्मीक ने कहा सो संक्षेप सजन सों ॥ ७ ॥
कहता है गाय भजन सजन रंजन राम ।
रघुवर सों रजा पाय सिर नवाय चरन सों ॥ ८ ॥
:o: :o: :o:

अंत—आसराम की कर अचल पास खड़े हैं जान ।
मान त्याग कर भगत हो मनस्वरूप धरि ग्याँन ॥ ६ ॥
कासी वासी विद्र हों रहों रामतट धाँम ।
पवनकुमार प्रसाद सों गाय रिझावत राम ॥ ७ ॥
अज शिव शेष न कहि सकें महिमा सीताराम ।
इंद्रदेव सुर देव सुत नागर कवि अभिराम ॥ ८ ॥

संस्कृत प्राकृत दोउ कहे इंद्रप्रस्थ के बोल ।
वाल्मीकीय प्रसाद सों गाये रागनि चोल ।। ९ ।।
अठारह सों अट्ठावनों विक्रम शक मलमास ।
जेष्ठ कृष्ण एकादशी रवि कुल नंदन पास ।।१०।।
जहाँ रामायन कहत कोइ सुनत कपी कर जोर ।
पुलकित अंग नयन स्रवत आनि रिपु असु घोर ।।११।।
प्रभू संग तज्यो नर सत ज्यों राख्यो कतिपन चाम ।
"प्रेमरंग" हनुमंत धन सुनत अर्हनिस राम ।।१२।।

इति श्री वाल्मीकीय आभास रामायणे फल स्तुति समाप्तः ।। श्री राम शरणं मम ।। श्री हनुमते नमः ।। अथ. . . . .

विषय--रामायण की कथाओं की सूचनिका वर्णित ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल संवत् १८५८ और लिपिकाल संवत् १८६७ है । हस्तलेख पत्राकार रूप में है । यह अपूर्ण है, समस्त ३० पत्र उपलब्ध है ।

संख्या २२२ग. गरबावली रामायण (वाल्मीकि रामायण के अनुसार), रचयिता--प्रेमरंग, कागज--देशी, पत्र--३८ आकार--११½ × ८¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--७६०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरीप्रचारिणी सभा (यह ग्रंथ पं० लज्जाराम जी मेहता बूँदी निवासी के पुस्तकालय से सभा को प्राप्त हुआ है) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। श्री सीतारामचंद्राय नमः ।। श्री हनुमते नमः ।। श्री हनुमते नमः ।। अथ बालमीकीय रामायणे अनुसारे गरबालख्या छे ।।

रागनी सोरठ ताल ।। १ ।।

गणपति सरस्वति गाई ।
श्री गुरु नामये, श्री हनुमत मने समाइ ।
रघुपति चित्त धरिये ।। १ ।।
जेणे रचिया चौदे लोक ।
निज माया व्यापी ।
जेणे राख्यो मारुत तोक ।
अमर करचो थापी ।। २ ।।
एवो दशरथ नंदन राम ।
रमाडे मुनि मन ने ।
पुरे मननाँ वाँछित काम ।
तरावे निज जन ने ।। ३ ।।

अंत--हनुमान सहाय थांय जेहने ।
रघुनाथ चरित्र बने तेहने ।
गाइ सभला वूछू सदा एहने ।
करु कोट प्रणाम प्रेम रग वेहने ।।

इति श्री वालमीकीय श्रीमद्रामायण अनुसारे गरबावला रामायेणे उत्तर कांड समाप्तः ।। अथ फल स्तुति प्रारंभ ।। दोहा ।। एवाँचे साँले शिखे शिखाते जेह "प्रेमरंगप्रभु" पद मले जीवन कृत कृत्य तेहा ।।

इति श्री फलस्तुति समाप्तः अजनानंद नंदन वरं जांनकी शोक नाशनं ।। कपीशम-क्षहंतारं बंदे लंका भयंकरं ।।

विषय—रामायण के लकाकाड और उत्तर कांड की कथाओं का वर्णन ।

संख्या २२३. वैताल पचीसी, रचयिता—फकीर सिह, कागज—देशी, पत्र—८७, आकार—६ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८२ वि०, लिपिकाल—स० १८४७ वि०, प्राप्तिस्थान—सरज स्वर्णकार, ग्राम—डेहमा, पोस्ट—डहमा, जिला—गाजीपुर ।

आदि................ ।

तब एह कथा रसाएन कहुँ ।। ठीकई पंडीत लोग सहैगो ।। बिनु बुझे जड़ जीव हसेगो ।।

।। दोहा ।।

सती रस बरत ग्रंथ मे चाहत दुख न दुष्ट ।
जो रे भावन पैठिकै उंठ काठ सो तुस्ट ।।
२ ८ ७ १
लोचन वसु मुनि भुग्र बरष माघ सुकुल ससीवार ।
तीथो वसंत की पंचीमी भवो ग्रंथ अवतार ।।

।। चौपाइ ।।

प्रतितृानपुर नग्गर एक ।। तहाँ मुदीत प्रजा अपने वीवेक ।
भुप भवो तहं गंध्रप सेन ।। र.जनीति रत वसै सुखेन. ।।
एक समै गोरी कानन चारी ।। खेलत रहो सीकार सीकारी ।।
तापस एक नीवी तरु तरे ।। लगी समाधी तपेस्वा करै ।।
न्रीप सुत रहीत तारी लखी डरै ।। मन महं कहै राज एह हरै ।।
फीरै नगर आए गृह अपने ।। भए वीकल कल परै न सपने ।।
होत प्रात सीहासन बैसे ।। हुकुम कीवो सेवक सन ग्रैसे ।।
गनीका नगर माह की लावो ।। औरौ पलकी टेकी मंगावो ।।
जीतनी मीलै आनी दै मोही ।। हीरा हेम देउ गो तोही ।।
....
:o: :o: :o:

अंत— ।। दोहा ।।

सीर नवाइ सीखवन लगे वीक्रम डारचो काटी ।।
टुक टुक करि मासुको गीधनी दीनो बांटी ।।
सांती सील के रुधीर ते कीवो त्रीपीत बैताल ।।
उन्ह दोन्हो वसु सीधी तब हरखे वीक्रम लाल ।।

इति श्री बैस बंसावतंस फकीर सीघ कारीते भाषा वैताल पचीसी सपुर्न ।। सुभ संबत ।। १८४७ समै नाम वुतीआ अखाड़ मासे कृष्ण पक्षे........ ।।

विषय—सस्कृत ग्रथ वैताल पचीसी का हिदी अनुवाद ।

रचनाकाल

२ ८ ७ १
लोचन वसु मुनी भुव बरख माघ सुक.ल ससीवार ।।
तीथी वसंत की पंचीमी भवो ग्रंथ अवतार ।।

संख्या २२४. वाक्भूषण "वा० भू०", रचयिता--"फणि नृपति" (?), कागज--देशी, पत्र--१८, आकार--११३/१० × ४६/१०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--५४०, अपूर्ण (खंडित), रूप--प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि--................ ।

तर्जित पछि कांगना निव हृदय तल स्कंधकं ।
षट्कल तुरगौ त्रिकल मनि विषम पदव निर्धोह ।
सप्त पादांते बंक कल मिति दोहा भवधोह ।
।। यथा ।। चरण सरोरुह मस्तु हृदि मद्वदन नव नाम ।
चर्तुष रूपं या वद सुरमय नो मम राम ।

।। दोहा ।।

द्विज वर युग मिहरचय । त्रिलघुक गणमथ कलय ।
सुललित कलित तरस यहि । सरसिज मुखि भवति यहि ।।
जगति विदित ललित मति । वर फणिपति रिपि वदति ।।
।। यथा ।। प्रावचल कुवलय नयन । जलनिधि कृत वर शयन ।
दिति तनय निवहद मन । शमन विविध भय शमन ।
मयिवर मुपनय सुचिर । मभिनव जलधर रुचिर ।
।। अरिल्ल ।। रोला वृत्तम वेहि नागपति पिंगल भणितम् ।
प्रति पद मिह चतुरधिक कलां विशंति परिगणितम् ।
एकादश मधि विर तिर खिल जन चिन्ताहरणम् ।
सुललित पद मद कारि विमल कवि कंठाभरणम् ।

:o: :o: :o:

भणिता फणि नायक पिंगलेन प्रकटिका सा षोडश कलेन यथा ।....

अंत--।। हंसी वृत्तम् ।।

कर संगि रुदर्ण द्वय दलया ताड़क मनोहरां स्वधरा ।
कुसुमत्रय राजछ्रवण विलोवत कुंडल मंडित रत्नधरा ।
भुज संगत केयूर यस विलासा पिंगल नाग समालपिता ।
किलसुंदरि कासानवनि तहा पद्मावती का कविराज हिता ।
.... अपूर्ण .... ।

:o: :o: :o:

विषय--पिंगल विषय।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है। केवल अठारह पत्रे (संख्या ४-२१) उपलब्ध है। रचनाकाल और लिपिकाल का कुछ पता नही चलता।

संख्या २२५. पंचायत का न्याय पत्र, रचयिता--फणींद्र मिश्र, पत्र--१, आकार--६×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७०१ वि०, लिपिकाल--संवत् १७०१ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी. (ग्रंथदाता--पं० दूधनाथ पाठक, ग्राम--नेवादा, पोस्ट-मुहौली, जिला--आजमगढ़)।

आदि--श्रीकृष्णशरणम् ।।

"लि० फणीन्द्र मिश्र" आगे हमने इहाँ भूमि के विवाद में मिताक्षरा पछै ऐलहि लाग वादी धाद राम प्रतिवादी बिजयी राम से बद दुनौ वादीक सुनल दुनौ वादी मोचलिका लिखि

बिहल मिताक्षरा के पूजा भंलि मिताक्षरा देयल मिताक्षरा की उक्ति तें धारु राय के दिव्य उतरल धारुराय लोहें आपन सत्व साधि लेहि वैशाख सुदि मह आदित वार के दिव्य होइ ॥ तथा च वाक्यं ॥

भोगे नष्टे ततः कश्चिद सोय मे भुनत्तचुत ॥

तद्दिवा देविधातव्यं दिव्यं विसारदे रिति वचना देर्शात किवंहु विस्तरेण--संवत् १७०१ चैत्र वदि चतुर्दशी शनंश्चर--लिखनक वृतान्त दशी रेवती राम पाठक--

विषय--धारूराम और विजयीराम नाम के दो व्यक्तियों के भूमि संबंधी विवाद के विषय में पंचायत का न्याय।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत हस्तलेख ग्रंथ न होकर 'पंचायत का न्यायपत्र' है। यदि इसका नाम रख दिया है। यह संवत् १७०१ में हुए एक पंचायत का न्याय है जो प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमें लोहे द्वारा दिव्य (सत्य) होने का उल्लेख है। यह नेवादा गाँव (आजमगढ़) में मिला है। जहाँ संभवतः पंचायत हुई थी। इसकी भाषा स्थानीय (अवधी भोजपुरी मिश्रित) है और सरल गद्य में है।

संख्या २२६. बिरह बैतनी, रचयिता--फेकू द्विज, कागज--देशी, पत्र--२, आकार--१० १/६ × ६ ५/८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप)--५०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, ग्राम--नदना बरहज, पोस्ट--बरहज, जिला--गोरखपुर।

आदि--श्री गणेशाय नम. ॥

आयं मास असाढ सखि स्याम गये परदेश ।
पीय पाय कन्त पपीहरा को ले आवे सनेस ॥ १ ॥
सावन आयउ हे सखि स्याम घटा चहुं ओर ।
दादुर सब्द सुनावहि नहि आए पिय मोर ॥ २ ॥
भादव रैनि भयावनी है सखि नहि भावण गृह सेज ।
पियरोइआ पिय बिनु भई बिहरत करेज ॥ ३ ॥
घरहो रहत सुष नाहि लहत योजन करत हलाक ।
नहि चित सो बिसरत सखि सुगा अस पिय नाक ॥ ४ ॥
अस्विन आयउ हे सखि नदीअन जल भव थोर ।
अजहु न आए स्याम गृह चितवत चंद्र चकोर ॥ ५ ॥
वारहि पिय परदेश गये अजहु न आये स्याम ।
चकवाक जोवन भए पीड़त मम तन काम ॥ ६ ॥
चंचल चितवत दूषित अति नहि भावे कछु काज ।
बोलहु कागा छुलछना जो पयि आवे आज ॥ ७ ॥
चहु दिस गरजत सघन घन उठतु जनू कपहार ।
जोवन जुग टेटिहा भए थभन के एह भार ॥ ८ ॥
पिय खोजत मैं चली सरिय सरित मिले अथाह ।
उडत बुडत पार भइ जस गौरी जल माह ॥ ९ ॥
पिय मोहि चुनरी दे गए जब उन्ह के रही संग ।
कवन वरण भारयो सषि जस मतीया को रंग ॥ १० ॥
जैसे सर्पया देषि सखि सर्गटा चिचियात ।
तैसे परपति हेरिय सषि बिकल होत मम गात ॥ ११ ॥

गवरहिं षोता लाइआ वहु विध करत प्रसंग ।
हस योग विचारिके तन अति चढ़े अनग ॥ १२ ॥
जव तुअ पिय गृह आइ हे पुलकत वदन हजूर ।
तव तुम सभ दुष हरि लिहे जसे दिवय गरुण ॥ १३ ॥
जव हमको कोई कहत कछु प्रिय स्रुति परत ३.वाज ।
तुरिते धावत तात पर जैसे झपटत वाज ॥ १४ ॥
एक दिन पिअ आइउ सखि मो पर करि अभिलाष ।
सतेकयणा वेधि के जस वकुला के पाष ॥ १५ ॥
पिय विन् छूटत प्रान अव को एह षवर जताउ ।
जैसे हारिल भू तजै तैसे मोहि विसराउ ॥ १६ ॥
दसो दुआरा षुलि गए भवरषा को अंत ।
नीलकंठ देषन चले अजहु न आए कंत ॥ १७ ॥
दुती भेजी हो (हे सखि) स्वामी के मालूम ।
प्रभु पर ध्यान लगाइ हो जस पंडुक के हुम ॥ १८ ॥
रितु वसंत आयहु सषि तेह देषि डरपत जीव ।
कोइली सब्द सुनावहि अजहु न आए पीय ॥ १९ ॥
नाचत वोलत वहुत विधि भल सहरग को रंग ।
धनि उहको तिय जानि अति कवहु न छाणत संग ॥ २० ॥
धनि उह प्रीति कपोत की उडत जात अकास ।
मेदि कारण गिरि परत जिअन को नहीं आश ॥ २१ ॥
आवत जानि असाढ सषि सभन बनायो धाम ।
चोचा षोता लावहिअजहु न आयो स्याम ॥ २२ ॥
पंछी वहुत अनेक स्वर तरु पर लेत न वास ।
हमरी जस गती हंस की मानसरोवर ले वास ॥ २३ ॥
स्याम हिंकोला लाइआ सभ कोइ झुलत वाम ।
स्यामा पकरि झुलइआ पुरन मन को काम ॥ २४ ॥
प्रियतम चले नहान सषि हमसे विदा मागि ।
मयना जानो हे सखि पिय जइहै मोहि त्यागि ॥ २५ ॥
जस बोलत तीतल वचन अयमि मोरि वात ।
भल तेरो कुदरति सषि पिय चाहत कुसलात ॥ २६ ॥
कमल का लेसि कुच जुगल चंपा दल सम गात ।
खंजन अयसो नयन सषि पिय विन निफल जात ॥ २७ ॥
पिय मोहि सउपे लाल एक मय लिहो कर जोरी ।
कवन उत्तर देहु सषि षेल गए कपटि चिलहोरि ॥ २८ ॥
सभ सखि घर घर सुख करे जाको हय गृह स्याम ।
तस क्रीड़ा वहु विधि करौ जस परिहर जल माह ॥ २९ ॥
सगुन विचारन हे सषि साजहु सकल समाज ।
वहु विधि मोरा वेधि के तुम प्रभु अइहै आजु ॥ ३० ॥
कहत फेंक द्विज समझि चित्त षेमकरणी विश्राम ।
नृपति सभा में वैठिके चिरइ चेतनि नाम ॥ ३१ ॥

॥ समाप्त ॥

--पूर्ण प्रतिलिपि

पपीहा । गोरी	सुगा । गवरा ।	नीलकंठ ।	मोर । पीग्ररो-	स्यामा । मयना
नीलकंठ । मैना ।	सहरस ।	हारील । पंडुका ।	इग्रा । चकवा ।	तितिल । षंजन ।
पियरोइया ।	चिल्होरी ।	कोइली ।	काग । नील ।	गवरा । गरुड ।
सरगटा ।	चकोर । गरुड ।	सहरस ।	सरगटा । वाज ।	वाज । वकुला ।
कोइली । खंजन ।	कपोत । पनिहर ।	कपोत । चौवा ।	वकुला । पंडुक ।	टेटिहा । गैरी ।
चकोर । गरुड ।	चकवा । वाज ।	हंस । श्यामा ।	कोइलि । चोवा ।	मुनिया । सर-
कपोत । पनिहर ।	चोवाजोरा ।	मयना । तीतील ।	हंस । तीतीर ।	गटा । चिल्हो-
काग । वकुल. ।	काग । वकुला ।	षंजन ।	खंजन । जोरा ।	रोरि । पनिहर ।
हंस । षेमकरी ।	हंस । षेमकरी ।	चोल्होरी । परि-षेमकरी ।	हरजोरा षेमकरी ।	जोरा । षेमकरी ।

विषय--विरह शृंगार का वर्णन करके प्रत्येक दोहे मे गुण सादृश्य अथवा श्लेष से एक पक्षी का नामोल्लेख किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है, परंतु कागद और स्याही को देखने से रचना प्राचीन जान पड़ती है । रचयिता का नाम "फेकद्विज" है जो अंतिम दोहे मे प्रयुक्त है । अन्य परिचय नही मिलता । उक्त दोहे से इतना और विदित होता है कि ये किसी राजसभा मे रहते थे --

कहत "फेकद्विज" समुझि चित षेमकर्णी विश्राम ।
नृपति सभा मे बैठि के 'चिरइ चेतनी' नाम ॥

रचना का नाम "चिरई चेतनी" भी इसी दोहे से प्रकट हो सका है ।

संख्या २२७. भोज प्रबधसार, रचयिता--पं० बंशीधर, कागज--आधुनिक, पत्र--४२, आकार--८½ × ५⅙ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२५, परिमाण (अनुष्टुप्)--११८१ पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सन् १८७७ ई० के लगभग, प्राप्तिस्थान --पं शिवनाथ पांडेय, ग्राम--बरुई, पोस्ट--मिसरौली, जिला--सुलतानपुर ।

आदि--भोज प्रबंधसार ॥

विक्रम के वंश में एक राजा सिंधुल हुवा उसके बुढ़ापे में भोज एक लड़का पैदा हुआ वह पाँच ही वर्ष का था कि जब उसके बाप ने मरने के समय अपने मंत्री बुद्धिसागर को बुलवाया और कहा कि जो भोज को राजगद्दी देता हूँ तो मेरा भाई मुञ्ज जो बलवान है इस लड़के को वृथा मार डालेगा और आप राज भोगेगा क्योंकि लालच बुरी वस्तु है--यथा,

लोभात्क्रोधः प्रभवति लोभाद् द्रोहः प्रवर्तते ।
लोभान्मोहश्च मदश्च मानोमत्सर एव च ॥ १ ॥

क्रोध और बैर मोह और तोड़ फोड़ अहंकार और इषा ये सब लोभ ही से उपजते हैं, लोभ की एक और भी बहुत बुरी प्रकृति है कि--

अंत--रानी यह दशा देख कर एक को जो कि कुछ भी अक्षर सीख गए थे पारितोषिक दिया और जिन्होंने धन के अभिमान से कुछ भी अक्षर न सीखे थे उनके लिए यह दण्ड ठहराया गया कि हर एक चौकीदार अपनी अपनी गली के ऐसे धनवान मूर्खों को लेकर निरंतर दो घण्टे गति अर्थात् बराबर टहलाने में रक्खे और दो दिनो में हर रोज चार चार अक्षर सिखावे जो कोई चौकीदार के कहने से न आवेगा एक महीने सरकारी कैदखाने में रहेगा । इस दण्ड के सुनते ही सबके कान (खड़े) हो गए और थोड़े ही दिनों में बारह खड़ी पूरी की । इस राजा भोज और रानी लीलावती ने क्रम२ से उज्जैन नगरी में विद्या का प्रचार किया और नाम पाया ॥

आगे साहब डैरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन बहादुर की आज्ञा होगी तो दूसरा भाग भी बनेगा ।

पहिला भाग समाप्त हुआ ।।

विषय--राजा भोज और रानी लीलावती की विद्याभिरुचि का वर्णन किया गया है ।

संख्या २२८. इश्क शतक, रचयिता--श्री महाराजा जी श्री उमेद सिंह जी सुत महाराजा श्री बखत सिंह जी, कागज--देशी, पत्र--८, आकार--५। × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--९७, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ७८, पु० स० १० ।

आदि-- ।। श्री गोपी जन बल्लभाय नमः ।। दोहा ।।

मुरलीधारे अधर पर नागर निपट प्रवीन ।। तुम पर वारूं ए सबै सुर नर खग मृग मीन ।।१।।
मेरा तू महबूब हैं दिल भर सचे यार । बखता की बीनती सुनो नंदनंदन रीझवार ।।२।।
मेरे हीय की बात सब जानत हो व्रजराज । तुम्हमे ठाकुर सीस पे बखत सिंघ की लाज ।।३।।

मध्य--पृ० ८--९

मेरा मन मस्तान हे सुनियो दिल भर यार । रसिक सिरोमन लाडिले तुम सूं मेरा प्यार ।।५५।।
देख्या मे महबूब को गल बिच चोला लाल । जरद दुपटा हाथ में बिथरे सुथरे बाल ।।५६।।
लगन लगी महबूब सों अब कोई बरजो लाख । बिन देखे कल ना परें तिस्कि कादर साख ।।५७।।
दिल जानी महबूब मसीनां रखियो माफ । आसिक मे तकसीर सो आप करोगे माफ ।।५८।।
अजब खूब महबूब हो मेरे जीवन यार । आशिक आए दूर से देखन कों दीदार ।।५९।।
ते कीन्हीं महबूब सब मुसकिल ते आसान । तुही जीवन मुर है तो सों लपटे प्रान ।।६०।।

अंत--

अजब नैंन महबूब के कमल पत्र के रंग । देखे आसक दिल दीये पे होय ऊमंग अंग अंग ।।९९।।
नहीं तुमसा महबूब कहि दिलकी जानन हार । अछे आसिक ऊपरे दिल सरेखो प्यार ।।१०१।।
बखत बरन दूहन बिषे कही इसक की रीति । जो वाँचे समझे अरथ लगे व्रह्म सों प्रीति ।।१०१।।

इति श्री महाराजा जी श्री उमेद सिंह जी सुत महाराजा श्री बखत सिंह जी कृति इश्क शत संपूर्ण शुभं ।।

विषय--इश्क (प्रेम) वर्णन । कवि ने फारसी मिश्रित हिंदी भाषा मे भगवान् कृष्ण तथा राधा के प्रेम का वर्णन किया है ।

संख्या २२९. अनभौ प्रकास, रचयिता--बदलीदास, कागज--देशी, पत्र--५८, आकार--८ × ६$\frac{9}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--६१३, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १९५० वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेसायनमः अथ लिष्यते अनभौ प्रकास ।।

।। सोरठा ।।

गुर पद रज सिर राषि अनभौ ग्यान प्रकास करि ।
तुम्हहि कहौं प्रभु भाषि दास हिंदे वसि विमल गुन ।।
मोहि करु आपन दास गुर साहेब सुषदानि तुम्ह ।
देहु मोहि विश्वाम नाम जिकरि छूटै नहीं ।। २ ।।

गुर साहेब सुषदानि नाम "जलाली" सुषसदन ।
भक्ति ज्ञान गुनषानि षेवक भवजल के सदा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

मायातकि मन मडर अति निडर करौ करतार ।
"बदलिदास" कहैं दीजिए केवल नाम अधार ॥
कवि गति मति नहि रमि सके विन पाये कछु छांह ।
अनभै बानी सो कहे जेहि सिर राषौ बांह ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु चेला गत अघ हित बानी । भव तारन समुभत सुषषानी ॥
जीव कृतारथ जेहि विधि होई । सो उपदेस कहत हो सोई ॥ २ ॥

मध्य--
मांग चले ते वहरि न आये । नाम सरोवर सतपुर पाये ॥३८३॥
नांहि सब्र हर बल यहि जागा । काल बधिक धरि धरि नित मारा ॥
विन गुर ग्यान गली को पावै । काल कठिन भर्म फासि बभावै ॥
है दुष मूल मूल अति भारी । यह जग माया की फुलवारी ॥
ताते यह मन लेह सकेली । सत गुर ग्यान पंथ रस षेली ॥
जेहि मारग सब सना सिधारे । दुषित भये दुष नगर उजारे ॥
तेहि मग चलत बहुत सुष पावै । समन फाँसि प्रान न आवै ॥
जग भरोस आसा सब त्यागी । यह मन राषु नाम ते लागी ॥३९०॥

अंत-- ॥ दोहा ॥

जो चित पावै संत गति तौ मन होइ निरास ।
जथा देह पौरुष थकै है इंद्री रुचि नास ॥
चित की थिरता होत यति मन की थिरता चित्त ।
मन थाके कारज मिटै भेंट आतम मीत ॥

इति श्री अनभौ प्रकास समपूरनं शुभमस्तु ॥ इस्लोक ॥
जगंनाथं मगोहिमा पथनाथ जनार्दनं । कोटि जन्म भयो विप्रा वेदपाठ धनार्धनं ॥१॥
मारकंडे कहे किसना रोहिन्या च महोदधो । इंद्रदवन करते पुरनेत जन्म नहि विदते ॥२॥

॥ दोहा ॥

विकर्म की साका लिखी सवत याको नाम ।
वनइस से पच्चास भे सुमिरन आठौ जाम ॥ १ ॥
जेठ सुक्ल सुभ दस्मी गुर वासर को पूर ।
साई तें यह मांगऊ सवं दुष्ष करु दूर ॥ २ ॥
अनभौ प्रकास लेषन कियो "दास फकीर' के हेत ।
जाति ठठेर रघुवर अहै नाम हिदै महँ लेत ॥ ३ ॥
दास फकीर सुष आपने कहिन मोहि समुझाई ।
तव रघुवर लिषते भये नाम मे सुरति मिलाइ ॥ ४ ॥

विषय--ब्रह्म ज्ञानोपदेश किया गया है ।

संख्या २३०क. अनुराग विवर्द्धक रामायण, रचयिता--बनादास (अयोध्या), कागज--देशी, पत्र--८५, आकार--१० × ५$\frac{२}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८०९, पूर्ण, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० २०वीं सदी का प्रारंभ, लिपिकाल--सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान--श्रीयुत भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० हाईस्कूल, बलरामपुर, गोंडा।

आदि--श्री गणेशाय नमः श्री गुरुचरण कमलभ्यो नमः श्री जानकी वल्लभो विजयति ॥ अथ अनुराग विवर्धक रामायण उत्तर कांड लिष्यते ॥ घनाः ॥

राम बन गवन कि अवधि बर्ष चौदह की चौदह भुअन मांह ऐसो कौन जाने है ॥
भरत करार चित्रकूट की विदित जग सब कोउ करै सदा मनन सयाने है ॥
जानिकै सुसमय सिद्ध मुनि संतगन चले तीरथ त्रिलोकइ के सबल पयाने है ॥
"बनादास" अहै राम निज रजधनी अब हौं है राजगादी हिय माह हरषाने है ॥१॥
देस देस के नरेस राजन के राजा सारे साजि कै समाज पुर अवध सिधाये है ॥
हाथी घोड़े रथ नाना जान मनि चीर चारु मगन दरब हेम कमल सोहाये है ॥
बहु षग मृग नाम कहा ले गनावै क...................... ॥

:o: :o: :o:

अंत--इति श्री राम चरित्रे कलिमल मथने अनुराग विवर्धक रामायणे उत्तरकांडे एकदसो अध्याय ॥ ११ ॥ सुभमस्तु--

सन संमत जानो नहीं बचन काहू ते जाउ ॥
इन सबते मतलब नही राम नाम लउ लाउ ॥

सुभ संवत १९२२ ॥ वैशाष कृष्ण--

:o: :o: :o:

विषय--राम चरित्र वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडित है। बीच के कुछ पत्रे लुप्त हैं। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सं० १९२२ वि० है।

संख्या २३०ख. माला मुक्तावली, रचयिता--बनादास (अयोध्या), कागज--देशी, पत्र--२७, आकार--१२$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--३८३, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९२० वि०, प्राप्तिस्थान--श्री रामरक्षा त्रिपाठी, "निर्भीक", अध्यापक, फार्म हाई स्कूल, फैजाबाद।

आदि--श्री जानकीवल्लभो जयति ॥ अथ माला मुक्तावली ग्रंथ लिषते ॥

कर्म वचन मन बंदिये गुरु सिय रघुवर पाय ॥
सोवत जागत नाम गति दूसर नाहि सहाय ॥ १ ॥
का कहिए गुन नाम को पाए मुखनि करोरि ॥
बनादास एकै बदन तापै मति अति थोरि ॥ २ ॥
को जानैं संकर कछुक रामनाम परभाव ॥
बनादास श्रुति सारदा गावत पार न पाव ॥ ३ ॥
किन का मम सब लागिहै जब अहै उर ज्ञान ॥
ताते हरदम नाम जपि निसि दिन धरिये ध्यान ॥ ४ ॥
कुलि साधन को छोड़िकै रामनाम जपि लेहु ॥
बनादास यादे कहै परम तत्व है येहु ॥ ५ ॥

अंत—

येन पाचौ के कारने लागत नही ठेकान ।।
काम क्रोध मद लोभ है मोह बरो बलवान ।। २३ ।।
यारौ गाफिल मति परौ मारा चाहत काल ।।
कोउ उपाय ते बचब नहि भजिले दसरथ लाल ।। २४ ।।
येक भरोसा येक वल येक आस विस्वास ।।
बनादास येकै कि गति सो अनंन्य है दास ।। २५ ।।
यौही यौही बीतिगै रही तनिक सी आय ।।
वनादास अजहू भज करिहै राम सहाय ।। २६ ।।
यह संसार असार अति गहिये ज्ञान जो सार ।।
भाति और वैराग गहि राम कृपा ते पार ।। २७ ।। ३३४ ।।

इति श्री मात्रा मुक्तावली ग्रंथ सम्पूरन सुभमस्तु समत १६२० अनुष्टुप् ३८३ ।।

:o: :o: :o:

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश ।

संख्या २३०ग. ब्रह्मायनद्वार, रचयिता—बनादास (अयोध्या), कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—१२ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६२६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० स्कूल, बलरामपुर, गोंडा ।

आदि—अथ बनादास कृत ब्रह्मायनद्वार ग्रंथ लिष्यते ।। श्री रामो जैति ।।

।। सोरठा ।।

आदि अन्त मधि हीन नाम रूप गुन ते रहित ।
सत चित आनद पीन बार बार तेहि वंदिये ।। १ ।।

गुर मूरति सूरति लागि रही ।।
नष सिष रूप अनूप वपुष हरि को महिमा कहि पार लही ।।
सरनागत पालक पद पकज ध्यान करत भवताप दही ।।
गुर पद वेमुष न सपन लहै सुष भव सागार में जाय नही ।।
ससि आनन चकोर चित त्रिपित न बार बारहि अचाह चही ।।
हरिपद सहज सरूप के दाता अव दुसरी ठाव नही ।।
जासु कृपा त्रैताप नसावत सोक मोह जरि जाय सही ।।
रिधि सिधि सम्मति की अटकर चरन धरि श्रुति चारि कही ।।
"दासबना" गति अवरि न दूसरि निसिदिन पल जिन सरन गही ।।

।। सुमिरत तुलसिदास पद पावन ।।

भादौ मास पछ सीत पूनष भौम सुवार ।।
दस नौ सत सम्मत अहै वर्ष बीस नौसार ।।
सन बारह सै असी में ग्रंथ होत निरमान ।।
अवध धाम धामन परे को करि सकै वषान ।।

ब्रह्मायन को द्वार यह विचार करिकै याही करि पैठार लहै परम विश्राम कों ।।

अंत—

ईस्वर अव्यक्त राम प्रेरक परम पद अव छिन्न एक रस गाये है ।।
अजय अकंटक कूटस्त निहसंग श्रेष्ट निःकलंक निःप्रपंच पार कौन पाये है ।।

निराधार सर्वाधार नृविकार नृविकल्प नैतिक है निगम सो जानि किमि जायो है ।।
"बनादास" अगमं अगोचर गोतीत गुहू ज वरन विहोन वुद्धि मनहु न आए है ।।२२८।।

इति श्री वनादास कृत ब्रह्मायन द्वार ज्ञान विज्ञान मिश्रित अग निरूपन नाम एकादस परिकर्न समाप्त सुभमस्तु श्लोक ८०० अनुष्टुप् ।।

विषय--ज्ञान-विज्ञान निरूपण। ग्रथ ग्यारह अध्यायो मे है।

रचनाकाल

भादौ मास पछ सीत पूनष भौम सुवार ।। दस नौसत सम्मत अहै वर्ष बीस नौसार ।।

संख्या २३०घ. "विज्ञान मुक्तावली", रचयिता--बनादास (अयोध्या), कागज--देशी, पत्र--८, आकार--१० × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--२२०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १६२४ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री रामरक्षा त्रिपाठी "निर्भीक", अध्यापक, फार्स्स हाईस्कूल, फैजाबाद।

आदि--श्री गणेशाय नमः श्री सतगुर अथ पाहारा लिष्यते ।

एक एक कै लरै दुसरे सब्द संतन की गहे ।।
दृष्टि नासिका अग्र सदाही । "बनादास" भवमूल नसाही ।।
दुआसदा द्वैत मत नासे । जब अद्वैत प्रम पद पासे ।।
अनहद माह सदा चित राषै । बनादास सुख को सुष चाषै ।।
तीआ तृगुन फादी काहे । गुनातीत ह्वै कमन डाहे ।।
तिरबेनी के घाट नहावे । बनादास द्वौविधा नसावे ।।
(अस्पष्ट)

चौथे वेति चारि विसरावै । चौथे घर मा पट बिछावै ।।
चारि चारि को कबहुं न चाहै । "बनादास" चोरासी दाहै ।।

अंत--(अक्षर मिटकर अपठनीय हो गए है)।

अन अविनासी आतमा सब घट एक प्रकास ।।
कार्तिक सुदि सुक्रवार.......तिथि भारी परम ।।
भयो ग्रंथ अवतार उर प्रेरक सीतारवन ।। ८३ ।।

इति श्री "विज्ञान मुक्तावली ग्रंथ" कृत महाराज बनादास कृत्य सपुरण सुभमस्तु मिती अगहन सुक्ल १४ दसी समत १६२४ साल।

विषय--भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या २३१. दशकुमार चरित, रचयिता--बलदेव कवि, कागज--देशी, पत्र--६४, आकार--$11\frac{1}{16}$ × $5\frac{6}{16}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप)--६२४, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--कुंवर लक्ष्मणप्रताप सिह, ग्राम--साहिपुर (नीलखा), पो०--हडिया खास, जिला--इलाहाबाद।

आदि--श्री गणेशाय नमः श्री सीता रामाय नमः ।।

श्रीगननायक ध्याइ हिय मंगल काज सवारि ।
सकल सुरासर नाग नर देव पुरारि मुरारि ।।
दीन्हो आयसु करि कृपा श्री विक्रम महिपाल ।
दस कुमार की सब कथा भाषा करो विसाल ।। ५ ।।

पाइ हुकुम बलदेव कवि कीन्हो ग्रंथ प्रकास ।
जाते जाने जगत के नृप नृप नीति विलास ॥ ६ ॥

अंत—— कह्यो सबै अब समय तुम्हारा ।
कहौ आपनी कथा उदारा ॥
हसि प्रनाम करि विनय अनेका । लग्यो कहन मोउ सविवेका ॥

इति सकला राति जना की कीर्ति छपा शुभाभ्युदित रसचंद्र चंद्रिकानंदित मित्र चकोर बघेल वंशावतंस श्री महाराज कुमार चरिते उपहार वर्मा चरितं नाम सप्तमो उछ्वासः ॥ ७ ॥

॥ उपहार वर्मा ॥

फिरत मही जो मं एक वारा । देषी मिथिला जाइ उदारा ॥
जा विदेह नृप की रजधानी । भूमि स्वर्ग सी विबुध बषानी ॥
निकट जाइ नहि कियो प्रवेसा । बाहर लषि एक कुटी सुदेसा ॥

:o: :o: :o:

चिरजीव यह गिरा निकारी । कह्यो सभाग सु.......

:o: :o: :o:

——अपूर्ण खंडित

विषय——संस्कृत ग्रंथ दशकुमार चरित का हिंदी अनुवाद ।

संख्या २३२. गीता भाषासार, रचयिता——बलराम दास, कागज——देशी, पत्र——२७, आकार——११ x ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१५, परिमाण (अनुष्टुप)——११११, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य——गद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पिट बंधः ॥
श्री कृष्ण कहे अर्जुन सुणी गीता ग्रंथ सार ।
स योग बलराम दास भणीयें आज्ञा देले जगन्नाथ ॥ १ ॥

॥ द्वितीय पीठबंध ॥

श्री हरि धेनीण पाइन चल जाई प्रवे... रंगस्थान ॥
आरंभ सहित संग्राम भूमी आसि मोहिल करबमान ॥ १ ॥

॥ तृतीय पीठबध ॥

एस नेक समर्थ व्यास मुनि विजए धृतीराष्ट पास ॥
कल्याण करिण बोलई गापे दुःख देखि कुटी कि आस ॥

॥ चतुर्थ पीठबंध ॥

जट मे व्यास प्रभु आज्ञा पाईण करट कराइया पाई ॥
पुत्र मोह देखि ताकु तेपु नृपति की राई ॥ ० ॥

॥ गीत ॥ भारथवाणी बये ॥

नयन नाहि देखिवि काहि ॥ एमतविचार अबा ॥
सरधा मिल कहसि नृपवर ॥ दिव्य चक्षुतो ते देवा ॥
एमंत रोन होइब गोल लेहु जाहा कइ जुझि ॥
ताहि पाहि माही केहु काहा काइ सकल कथा तु बुझि ॥ ३ ॥
आखिरु लोह पुछे कुंती पुय असनेण धर्म सुमरी ॥
बया रें खेद पाई बड विकल तलकु बदन करी ॥ १२३ ॥

के बेहें युध्यन करीण सय वाहुडी जिवा कुइछा ।।
श्री हरि डरे कथा न काहि पोर नो होई आपणा इछा ।।१२४।।
प्रथम अध्या गीता प्रभुधावल रामदास भणी ।।
नील गिरी जगन्नाथ प्रसने परम रस बखाणी ।। १२५ ।।

अंत--जे मोर भगत लोक ताकु एहा कहि से मोर अत्यंत प्रीति सेहु मोक्ष पाई मोहोर सेवक आगे एहा जे वरवाणी ताहा तहुं आने प्रिति मोते नाहि जाणि ५०

:o: :o: :o:

५६ धृतिराष्ट आगेण संजए एहा कहा वासुदेव आज्ञाए अर्जुन तोस होये सुणविरे एथुं अनंतरे आनरस श्री जगन्नाथे सेवि भणे बलरामदास ५७

:o: :o: :o:

राम राज्य लक्षिम भोग करु थाई श्री जगन्नाथ प्रसने गिता शास्त्र एहि अष्टादश अध्या गितासार ए संपूर्ण पुठिला सुणिला लोकंकर बउ पुन्य लिल हरी बिजये मो प्रभु जगन्नाथ मुकुट कुंडल हार संख चक्र हस्त स्थूल जोग भोग पुन्यर प्रकास नीलमुन्द्र भाबि भणे बलराम दास ६०

मंत्रीवर महापात्र सोमनाथ नाम ताहार तनये मुहि "बलराम" जगन्नाथ ठाकुरे सुदया मोते कले बिष्णु र पिरित बोलि लोके प्रते गले ६१

मंथन चतुरो वेदा सार उद्धार षाडसि लवणी भुजंति ज्ञानिनो तिस्त भक्षति पण्डिता ।।

विषय--गीता का अनुवाद ।

संख्या २३३. विवेक कली, रचयिता--बलिराम, कागज--देशी, पत्र--९, आकार--८¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--११३, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--विवेक

परब्रह्मणे नमः अविघ्नमस्तु ।।

।। चौपई छंद ।।

बोध कली जब मन मै फूलै ।। जन्म मर्न का झगरा भूलै ।।
बिधि नषेद की कथा न जानै ।। पुन्य पाप की बात न मानै ।। १ ।।
हंता ममता कौं तब त्यागै ।। त्रिगुन नींद सो सोयो जागै ।।
मन कौं गगन मगन करि मोलै ।। ॐ सोहं हंसो बोलै ।। २ ।।
अवगति ध्वनि मैं आस न करै ।। उनमन अमृत सौ ले भरै ।।
सुरति निरति कै परै बिलासी ।। अनुभव सागर जोति प्रकासी ।। ३ ।।
आदि अंत मध्य सम पावै ।। ज्यों कार्य देह इन्द्रि छावै ।।
द्वैत द्वंद द्विविधा नहिं जानै ।। अद्वै अज अक्रिय पहिचानै ।। ४ ।।
निराकार गति सहज समावै ।। पाच पचीस इती न भलावै ।।
सब मे वहि उसमै सब अपै ।। कनक बिना भूषन नहि पेषै ।। ५ ।।

मध्य--उतपतु परलै तहाँ न पैये ।। आदि अंत बिन प्रगट लैये ।।
तहाँ देह गुन इंद्री भूलै ।। निर्भै गगन हिंडोरे झूलै ।।३३।।
चित चितवनि तब जावै त्यागि ।। रोम रोम उपजै बैराग ।।
चिंता चाह रहै नहिं कोई ।। द्वंद्वं चाल सब जावै षोई ।।३४।।
मधुर मधुर ध्वनि अमृत सु बरसै ।। बड़भागी कोई या गति दरसै ।।
सहज समाधि तहाँ बसि रहै ।। अवगति गति कोउ बिरला लहै ।।३५।।

जो पावै सो फिर नहिं आवै ।। जो आवै खोजै सो पावै ।।
तिल तैं तेल जतन बिन नांही ।। घृत को वास सदा दधि माही ।।३६।।
गंध पुष्प महि करं विलास ।। पाथर माहिं अग्नि को वास ।।
पुष्प संग जो तिल को वासै ।। दधि तैं घिरत विलोय निकासै ।।३७।।

अंत--हममै सब सब मैं हम एकं ।। हम सौ बरनरु भेष अनेकं ।।
अनेक भेष मैं हमहीं पंथा ।। ज्यौं के त्यौ हम जल थल संथा ।।६६।।
हमहीं वरनाश्रम आचारी ।। हमही तत्वं असि त्व विचारी ।।
हमहीं मुनकर हमहीं साकर ।। हमहीं सेवक हमहीं ठाकर ।।७०।।
हमहीं सिध साधक घरबारी ।। नहिं अवतार हमही अवतारी ।।
निराकास हमहो आकास ।। निराभास हमही आभास ।।७१।।
हमहीं कर्त्ता कारज कारन ।। हमहीं तरन रूप अरु तारन ।।
हमहीं वैरागी अरु जोगी ।। अनभोगी हमही सब भोगी ।।७२।।
षट दर्शन मैं हमहीं छाजैं ।। बली रूप निर्द्वंद विराजैं ।।
जो कोई हमरी गति पावै ।। चौरासी मै फेरि न आवै ।।७३।।

सर्बाधिष्टान बलीराम विरचितं विवेक कली ।। समाप्त ।।

विषय--ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २३४. रेखता तथा कीर्तन (खड़ी बोली में), रचयिता--गो० श्री बल्लभ जी, कागज--देशी, पृष्ठ--२६, आकार--६½ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--३१६, पूर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० ब० ४२, पु० सं० ८।

आदि--श्री कृष्णाय नमः ।। राग सोरठि ताल पिस्तो
'सु' आदि खलादीदार जु होहे दिलदार वे ।
प्यारी ज्यान प्यारी मेरी तुजसे मेरा प्यार वे ।। १ ।।
तेराह सन देखे बिन रहेता न करारवे ।
सीनें से लिपटांना प्यारी जद मिटेमार वे ।। २ ।।

मध्य--पृ० १४
प्यारी प्यारी अरजी मेरी सुनना हजूर ।
दिल फस्या हे तुज में कहा रहति हो दूरि ।।
फिदवी चाहता प्यारी अब राखीये हजूर ।। १ ।।
हर दिल अजीज सेली कहने की क्या जरूर ।
टुक महर की नजर सो प्यारी आनि दिखावो नूर ।
बीडी बनाय विध से सुंदर रखो कपूर ।
लोंग इलायची जायफल जिनो का धरा चूर ।
मुखडे रंग केसरि जैसे बनी हे हूर ।

अंत--तिखी चितवन तेरी प्यारी लीया हे मन मुष्ण ।।
तेरी अदा आगे प्यारी कोई न आवे पुष्ण ।।
कीजे महर मुजपे प्यारी का कठ अब तुस्मे ।।
ताबेदार तेरा प्यारी किया हे मों बस्मे ।। ३ ।।
एक चाह हमकूं प्यारी चाहा तेहे तो हुष्णे मुराद पुरी मेरी प्यारी बाधे क्यों कुच करन ।।

संबल लगावों अंग प्यारी लाऊ सुंदर धम्ण ॥
बल्लभ के संग रंग करो महदी लगावो लव्न ॥ ५ ॥

इति श्री बल्लभ जी कृत रेखता तथा कीर्त्तन संपूर्ण ॥ श्री शुभं ॥

विषय—नायिकाभेद का वर्णन ।

संख्या २३५. बारह बाट अठारह पैंडे, रचयिता—बल्लभ रसिक, कागज—देशी, पृष्ठ—६ (१० से १६), आकार—७३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ११८, पु० स० २१२ ।

आदि—॥ श्री राधा वल्लभो जयति ॥

श्री गुरु चरणि प्रताप ते गयो उरणि अधियार ।
कुंज घरनि विहरति लखो जुगल रूप घनसार ॥ १ ॥
रसिक अनन्या नन्यपिय हिय जिय की सुखदानि ।
प्यारी रूप घटा उमगि बरखी बानी आनि ॥ २ ॥
वल्लभ रसिक सहचरी वानी ।
जुगल लगनि आसव कों सानी ॥ ३ ॥
मतमत वारी अखिमनि वाचो मतवारे की अखियनि वाचो ॥ ४ ॥
अधरम धरम जहां अधरम एसी कछुक रसिकता आहि ।
इन दोऊन के मरमहि जाने तो रसिक सरम कों सके निवाहि ॥ ५ ॥

मध्य—पृ० १३-१४

झूलत फूलत रहें निरंतर । महा स्वतंत्र महा परतंतर ॥६२॥
ओरो सुनि अँखियन के काम । नेकु न ठाली आठो जाम ॥६३॥
सरस रसिक हिय करै खजानो । ताते उमगे रस सब जानो ॥६४॥
कुलवा उर हिय कंथ वखाने । सात ठोर में आइ झुलानो ॥६५॥
सात फुहारे छूटन लागे । तिन में तीन जुर अनुरागे ।
एक अकेलो वोलिन जाने । बोलनि ही में सब रस माने ॥६७॥
द्वै मिलिया बोलिन कों सुने । जुगल सुगंधहि द्वै मिलि चुने ॥६८॥
द्वै पुनि गुगल रूप रस पागे । इनि सम कोऊ नाहि सभागे ॥६९॥
एसे तिनि जुगल ह्वै छूटे । एक अनेक परम सुख लूटे ॥७०॥

अंत— ॥ दोहा ॥

वल्लभ रसिक लही कही सहीक करो जो कोइ ।
यारस यारस होइ तो वारस वारस होइ ॥१०७॥
जब लगि अखियाँ लखिया नाही राखो पकरि पकरि सब मेडे ।
जब अखियनि अखियां लखि पाई तो वारह वाट अठारह पेंडे ॥१०८॥
पेरी करी एक सो आठ । वल्लभ रसिकनि को जप पाठ ॥
जो कोऊ जपे र पढ़े पढ़ावे ॥ जुगल रूप दरसन को पावे ॥१०९॥

इति वारह वाट अठारह पेंडे ग्रंथ संपूर्णतांगतः ॥श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—वल्लभ रसिक ने युगलस्वरूप (राधाकृष्ण) का वर्णन काव्य की विचित्र शैली में किया है ।

संख्या २३६. अद्भुत रामायण, रचयिता--बहोरन (द्विज), कागज--आधुनिक, **पत्र**--११, आकार--१३ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२२०, खंडित, रूप--प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० महादेव मिश्र, ग्राम--बटसरा, पोस्ट--कमिया, जिला--गोरखपुर।

आदि--श्री गणेसाए नमहः श्री भवानि जि सहायः श्री गंगा जि सहायः श्री शंकर जी सहाय, श्री सरोस्वती जि सहायः ॥

गजमुष सनमुष होत है से बिघिनि बेमुष होए जात ।
जब पगु परत प्रयाग मग त पाप पहार बिलात ॥
:o: :o: :o:
श्री गनेस गुर द्विज चरन साधुन्ह जुत सिर नाइ ।
जग जननि को जस विमल कहौं--म सब पाइ ॥

॥ सोरठा ॥

बीजवर विमल कुलीन सुकवि "बहोरन" नाम रत्न ।
जनकसुता आधीन कहत तासु महिमा कछुक ॥

मध्य--

॥ दोहा ॥

बहु प्रकार निसचर कपि रहि समर सूर बहुरंग ।
रघुवर बान अनल मह परे है होइ पतंग ॥

इति श्री अद्भुत रामाएन जानकि विजै बहोरन दीज विरंचीते चौथे जुध्यः

विधि बानी सुनो कान हर्ष राम रीषीवर ।
...हीं तजही अग्यान जोरी पानी बीन करत ॥
:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--सीता जी द्वारा युद्ध मे सहस्त्रबाहु रावण के मारे जाने का वर्णन ।

संख्या २३७. द्रष्टिकूट के पद भाषा टीका, रचयिता--सूरदास जी, टीकाकार--बालकृष्ण वैष्णव (भावनगर), कागज--देशी, पृष्ठ--७१, आकार--८ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८६१, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० ब० ८८, पु० स० १ ।

आदि--श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ सूरदास जी कृत द्रष्ट गूढ के पद तिनको टीका अर्थ लिख्यते ॥

श्री गोवर्द्धन धरन जय करन सरन जन मोद ।
वृंदावन वंदित सकल वृंदा विपुन विनोद ॥ १ ॥
श्री बल्लभ विट्ठल वंदत विसद विचारि ।
बढत सुविद्या बुद्धि बल विनसत विकट विहार ॥ २ ॥
भक्तन के पद हिय धरत जोय को प्रीय कर होत ॥
तम जिन ऊतिमता ऊदित विदित जगत को पोत ॥ ३ ॥
यह संसार असार में हरि कीर्त्तन सुखसार ॥
कहें त करत सब अवहू सों बडडे रेवे कवर विसार ॥ ४ ॥

मध्य—पृ० ३५ ॥ राग सारंग ॥

विधु में देखे बहोत प्रकार ।
जलरुह कनक लता ऊदयो ढिग मोतिन को हार ॥ १ ॥
कीर कमठ अलि मृग मन्मथ धनु झलकत हेम तुषार ॥
बिंब आनार बीजत तितहि मिल कोकिल सब्द ऊचार ॥ २ ॥
मणिधर सिखिर रक्त रेखा जुत. विविधि कुसुम सिंगार ।
मध्य प्रवाह स्वहत सुर सुरि को चितवत जात विकार ॥ ३ ॥
सुनि कौतुक चकि चितवत मोहन मन में करत विचार ॥
ऊवित भयो ससि सूर स्याम हित स्याम स्थामा वदन उदार ॥ ४ ॥

याको अर्थ :—श्री स्वामिनी जी को श्री मुख चंद्रमा को वर्णन सखी की उक्ति । श्री ठाकुर जी सो कहि के मिलायो चाहत हे । श्री मुख रूपी जो विधु चंद्रमा तामें अनेक प्रकार हे । सो मेंनें देखे श्री ठाकुर जी सों कहत हे ।

अंत—कोकिला सो कोमल वचन हे । जिनके ओर तिमिजो रात्र ताको रिपु सूर्य, ताको सुत कर्ण, ताको भ्राता अर्जुन, ताको पितु इन्द्र, ताको वाहन हस्ती, ताको सत्रु सिंघ, ताके कटि समान सूक्ष्म हे, कटि हे जिनकी बनी ।३। पीन सा उजो ऊंचो पर्वत तद्वत हे । कुच जिनके तापर अहिरिपु जो कांचली सो कंचुकी राजत हे । विहार करत ताके तनी टूट रही हे । एसे सूरदास प्रभू को निरखि हरषि आनंद भयो ॥ अत्यंत प्रीत बाढ़ी ॥४॥ इति श्री आश्रय के द्रष्टिकूट के पद संपूर्णम् ॥

विषय—सूरदास जी के प्रसिद्ध कूट पदों की टीका की गई है । जिनमें पदों का भाव समझाकर भगवान् श्रीकृष्ण की लीला, प्रेम, माहात्म्य आदि का प्रतिपादन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—श्री जवाहर लाल जी चतुर्वेदी निम्नलिखित सूचना देते है —कठमणि जी ने इन्हें भावनगर का माना है जो गलत है, य महानुभाव काशी के ही थे गुजराती-बनियाँ (वैश्य) । हस्ताक्षर, ज० चतुर्वेदी, मथुरा ।

संख्या २३८. राम नाम गुण सागर, रचयिता—विट्ठलदास, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—६¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १७६५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—

जाहि निमष रति राम चित ताहि परम प्रिय मानु ।
जाहि छिनक प्रभु बीसरे सु कोटु सत्रु सम जानु ॥ १ ॥
जिहि संगत कीये कछू जो मनु होइ हलाउ ।
कृपा करो रघुभीर जी ताहि न मोहि मिलाउ ॥ २ ॥
जिहि संगत कीएं कछू जो मनु होइ गिलान ॥
मन वच क्रम रघुभीर जी करियो जिन पहिचान ॥ ३ ॥
जिहि संगत कीएं कछू जो मनु होइ प्रकासु ।
त्योंही त्योंही जतन रति छाइ जाइ करि वासु ॥ ४ ॥
छिन में मनुआ यो रहे छिनही और को ओहु ।
ऐसी रघुभर कभ करहु जैसी चंद्र चकोर ॥ ५ ॥

मध्य—

ग्यान भरोसो लागि के जनम गवावहु अंद ।
के उठि कोसलनाथ भजु के बृंदावन चंद ॥११४॥

भक्ति पदारथ छाड़ि करि मत कूटो तुषधानु ।
हार्थनि बहुते श्रम भम्रो कतहू न निवयो ग्रानु ॥११५॥
वेद पुरान समृति सभे भरनात हे सब कोहि ।
राम तिहारे नाम को बड़ो भरोसो मोहि ॥११६॥
राम चरण गति राम रति राम सुमति दे मोहि ।
नाथ क्रिपा करि दीजिए जांचत हो नित तोहि ॥११७॥

ग्रंत--

घटती बढती देषि के राषु न मन (में) मेल ।
जो ग्रपने जीय ना रुके सु भेग कढियो पेल ॥२४०॥
सोक मोह की पोषणी प्रेम पोषणी ग्राहि ।
जोति वढ़ावनि तमहरनि भान किरन जिम चाहि ॥२४१॥
वुधि निपुन ग्रौर सुध मनु जो जनु ऐसी होइ ।
इह पोथी के ततु को ग्रधिकारी हे सोइ ॥२४२॥
रामाइ राम भद्राय रामचंद्राय मेधसे ।
रघुनाथाइ सीताइपतऐ नमः ॥२४३॥

इति श्री राम नाम गुनसागर भीठल दास कृत लिप्यते संभतु १७६५ पोह १६७ ॥

विषय--इसमें रामचद्र जी की महिमा का वर्णन ग्रौर उनका गुणगान किया गया है ।

संख्या २३६क. श्री यमुनाष्टक की टीका भाषा मे, रचयिता--श्री गुसाई विट्ठलनाथ, कागज--देशी, पृष्ठ--१३ (२८ से ३८), ग्राकार--७ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)--२३८, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १५८५ से १६८० के लगभग (ग्रनुमान), प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या-विभाग, कॉंकरोली, हि० व० स० ८५ पु० म० ७ ।

ग्रादि--ग्रथ श्री यमुनाष्टक की टीका भासा में लिख्यते ॥ श्री ग्राचार्य जी महाप्रभू ग्राठ श्लोकन करि श्री यमुना जी की स्तुति करत हे । ताकी टीका श्री गुसाई जी करत हे तहां श्लोक कहत हें । श्लोक ।

विश्वोद्धारार्थमेषाविर्भूत वृंदावन प्रिया ।
कृपयंतु सदा तात चरणामय विट्ठले ॥ १ ॥

याको ग्रर्थ ॥ याको ग्रर्थ श्री गुसाई जी कहत हे । एसे जे श्री ग्राचार्य जी महाप्रभू ते हम पर कृपा करो ।

मध्य--पृ० ३१

॥ याको ग्रर्थ ॥ श्री ग्राचार्य जी महाप्रभू श्री यमुना जी सों कहत हैं । ग्रहो श्री यमुना ऐसे जे श्री पूर्ण पुरुषोत्तम तिन विषे तुम हमारे मन कहं मिलायो हे केसे हे पूर्ण पुरुषोत्तम ग्रनंद जे गुण तिन करिकें परम सोभित हें फिरि केसे हें महादेव ग्रोर ब्रह्मा ग्रौरहू देवता सब कोई जिनकी स्तुति ही करत हें ।

ग्रंत--

ग्रोर श्री ग्राचार्य जी महाप्रभू तो श्री ठाकुर जी के साक्षात् संबंधी हे ताही ते श्री ठाकुर जी के स्वरूप को ज्ञान इन कहं भली भांति सो हें ता हीते श्री यमुना जी को जेसो स्वरूप हतो ते सोई ग्राप निरूपन कीये है ग्रौर प्रतिज्ञा हू किये है ताते या बात में कछू संदेह न करनो । ग्रोर या ग्रंथ को पाठ सो तो नित्य ही करनो ॥ इति श्री वल्लभाचार्य विरचितं श्री यमुनाष्टक की टीका श्री गुसांई जी कृत भासा में संपूर्ण ॥

विषय—श्री यमुना जी की स्तुति। श्री वल्लभाचार्य कृत 'यमुनाष्टक स्तोत्र' संस्कृत में है। उसकी टीका संस्कृत में ही उनके पुत्र श्री विट्ठलेश्वर जी ने की। उसी संस्कृत टीका का व्रजभाषानुवाद प्रस्तुत ग्रंथ है। वास्तव में हिंदी टीका गुसाईं जी कृत नहीं है। प्रसिद्धि है कि यह भाषा टीका श्री हरिराय जी कृत है जो संप्रदाय के एक अन्यतम विद्वान् आचार्य थे।

संख्या २३६ख. यमुनाष्टक की टीका, रचयिता—श्री गुसाईं विट्ठलनाथ जी, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—७ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३८, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० ब० ५६, पु० सं० ११२।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ **अथ श्री यमुनाष्टक लिख्यते टीका श्री आचार्य जी महाप्रभु आठ श्लोक करि श्री यमुनाष्टक यमुना जी की स्तुति करत हे। ताको टीका श्री गुसाई जी करत हे।**

॥ श्लोक ॥

विश्वोद्धारार्थ मेवा वीर भूत वृंदावनं प्रियां।
रूपयंतु सदा तात चरणार्मयो विट्ठले ॥ १ ॥

याको अर्थ श्री गुसांई जी करत हे, ऐसे जे श्री आचार्य जी संपूर्ण विश्व के उद्धार के लिये प्रगट भए। काहे ते श्री आचार्य जी के प्रागट पहले वेद सो सबन को उधार हतो स्त्री सूद्रादिकन को उधार न हतो, काहे ते उनको वेद मे अधिकार नांहि। ताते सबन के उधार के लिए श्री आचार्य जी प्रगट भए।

मध्य—पृ० ६ ॥ श्लोक ॥

भुवं भूवन पाविनी मधिगता मनेच स्वनैः।
प्रियाभि रवि सेवितां शुक मयूर हंसादिभिः।
तरंग भुज कंकणः प्रकट मुक्तिका बालुका।
नीतंब तट सुंदरी नमत कृष्ण तूर्य प्रियां ॥ ३ ॥

या श्लोक को अर्थ—श्री आचार्य जी कहत हे श्री यमुना जी केसे हे। जे कृपा करि व्यापि वैकुंठ तें भूलोक पधारे। सो कहा प्रयोजन, सब लोकन को पवित्र करिबे के लिये सो केसे हे श्री यमुना जी जो भांति भांति के शब्द जिनके ऐसे जो सूवा मोर हंस इनादिक जे पंछिन करि श्रवन हे। तेउ पंछी जब एकांत समें ठाकुर को रमण होत हे तब बोलत नांहि। सो कोंन भांति जेसें एक मुख्य नायिका होई सो अपनी प्रतिवंत सखी तिनको मिलके जेसे अपने पति पास आवे ते सखी, हू जब उनको एकान्त हो समे रमण को होई तब कोउ बोलत नाहीं। गानादिक करे नांहि। काहू के आगे वात करे नांहि। ता भांति श्री यमुना जी सूवा, मोर, हंस इत्यादिक पक्षीन सों मिलि करि ठाकुर पास आवत हे यह जाननो।

अंत—ताते श्री यमुना के स्वरूप को ज्ञान भली भांति हे। ताते यह जेसो स्वरूप हतो तेसो निरूपण हू कियो। और फल या स्तोत्र को इतनो निरूपण कीयो पाठको, और प्रतिज्ञा हू कीये। ताते या बात में संदेह न करनो।

विषय—श्रीयमुना जी की आठ श्लोको मे श्री आचार्य जी महाप्रभु जी ने स्तुति की। उसकी टीका श्री गुसाईं जी श्री विट्ठलनाथ जी ने की।

संख्या २३६ग. चतुःश्लोकी टीका, रचयिता—गो० बिट्ठलनाथ जी (मूल संस्कृत टीकाकार), कागज—देशी, पृष्ठ—३२, आकार; ६ × ५ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०२, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४४ के अनन्तर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० वं० ६१, पु० सं० १–१।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥..........टीका लिख्यते :: श्री गुरु...... र्य जी महाप्रभून को नमस..........तुश्लोकी का टीका कहत हे।..........जेश्वर लीला या हृदयागाध सागर। निज जन कृपा दृष्टि वृष्टि प्रेम महारस ॥ १ ॥ याको अर्थ ॥ श्री आचार्य जी सो श्री गुसाई जी कहत हे। जो तुम केस हो श्री व्रजेश्वर जो श्री पूर्ण पुरुषोत्तम श्री कृष्ण चन्द्र जी तिनकी जो लीला को समुद्र सो तुम्हारे हृदय मे भरो हे। अथवा तुम्हारी जेसी ईछा होइ तेसी लीला श्री ठाकुर जी कर काहे ते लीला के पति तो एक तुमही हो।

मध्य—पृ० १८ ॥ श्लोक ॥

अतः सर्वात्मना शश्वद्गोकुलेश्वर पादयोः।
स्मरणं भजनं चापि न त्याज्यमिति मे मतिः ॥ ४ ॥

याको अर्थ ॥ अतः अपना जो आत्मा सो श्री ठाकुर जी को समर्पन करि गोकुलेश्वर के चरणारविंद को सुमिरन भजन करनो। यह श्री आचार्य जी के मत मे सिद्धात हें। तहां कोई संदेह करे जो और देवतान को अनादर भया ; तब और देवता याको भक्ति करन में विघ्न करे तो भक्ति केसे सिद्ध होय। यह कोइ संदेह करे सोऊ न करे। काहे ते श्री भागवत में अमरीष राजा पास दुर्वासा शाप दीयो हे। तिन में रास करिहे। सो उलट्यो दुर्वासो विपत्ति परी। सो कोई राखि सके नाहीं। श्री ठाकुर जी हू यह कहे। जो मेरो अपराध तो हू क्षमा करू। और मेरे भक्तन को अपराध करे ता में नाहीं सहों।

अत—संदेह हे सो आसुर भाव हे। और विश्वास हे सो भगवद्भाव हे ताते वैष्णव कों संदेह कबहूं न राखनो। और अपने मन मे श्री आचार्य जी के वचन को द्रढ विश्वास राखनो यह वैष्णव को धर्म हे। ताते वैष्णव को विवेक संयुक्त रहनो। यह श्री गुसांई जी अपने वैष्णव को कृपा करिके सीखा दीये। ताते वैष्णव को याते अधिक भाव राखनो। काहे ते या मे श्री आचार्य जी श्री गुसाई जी के दोऊ जन के वचन मिले हे। ताते या ग्रंथ को निरन्तर पाठ करनो। यह टीका भलीभांति संपूर्ण भई।

इति श्री वल्लभाचार्य विरचित चतुःश्लोकी ग्रंथ ताकी टीका श्री गुसांई जी कृत भासा संपूर्णम् ॥१॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

विषय—श्री पुष्टिमार्गीय सिद्धान्त के अनुसार श्री वल्लभाचार्य जी ने चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का प्रतिपादन इस चतुःश्लोकी ग्रंथ मे किया है। उस ग्रंथ की संस्कृत टीका उनके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी ने की है, जिसकी टीका प्रस्तुत हिंदी भाषानुवाद है।

विशेष ज्ञातव्य—आरंभ के तीन पत्रे उनके ऊपरी कोनो पर चूहों के कुतरे हुए है।

संख्या २४०. रामायण माहात्म्य, रचयिता—विहारी "रमणेश", कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—११½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

नलिन नयनमीशं शंप्रदं जानकीशं शुभदमपि हि नत्वा दिव्य माहात्म्यमस्य।
दुरित दमनमद्धा पावनं शंकरोमी प्रभतुष्टस्तेन रामः स एव ॥ १ ॥

सोरठ पावन परम पवित्र रामायन माहात्म्य सुचि ।
भव पाथोधि वहित्र बरनहु सिय रामहि सुमिरि ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

सीतावर चरित्र अति पावन ॥ प्रथम कौन विधि रचि मनभावन ॥
ललित अनुष्टुभ छंद प्रमाना ॥ पद्य कीन्ह सतकोटि सुजाना ॥ ३ ॥
देखि ग्रंथ कर बड़ विस्तारा ॥ पुनि मन मह विधि कीन्ह विचारा ॥
मनुज लोक जे मानस देही ॥ जियहि सताऊ धर्म प्रिय जेही ॥ ४ ॥
ता मह तीश वस रति लाई ॥ वीश वरस भोगवहि वृद्धाई ॥
वर्ष साद्रि रहे मध्यम जोई ॥ ता मह युग विभाग पुनि होई ॥ ५ ॥
निंद्रा विवश तीस तहँ खोई ॥ शेष जु तीस वर्ष रहे जोई ।
ईन मह भोजन आदि उपाई ॥ करतहि करत काल वह जाई ॥ ६ ॥
जाते अल्प काल रहि जावै ॥ या की वार मनुज कमि पावै ।
असि विचारि विधि शिवहि बुलाई ॥ यहि बाटहु कह भागन भाई ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि शंकर विधि बयन तब मन मह करि अनुमान ।
भाग विचारे तीन पुनि बांटन लाग सुजान ॥ ८ ॥

मध्य--

॥ दोहा ॥

नारी केर सुभाव अब कहहुं सुनहु चित लाइ ।
पति अपनावन काज ते बोलहि नयन मिलाय ॥ ५८ ॥

॥ चौपाई ॥

खाँहि वहुत सोवहि दिन राती ॥ करही वात अपने मन भाती ॥
गृह कूरा कचरा नहिं झारै ॥ वेस्या जिमि निज रूप सवाँरै ॥ ५६ ।
दुहूं हाथ वजवावहि सीसा ॥ हँसहि देखावत दांत वतीसी ॥
पति से पहिले भोजन करहीं ॥ पति लै जई उच्छिष्ट लै धरही ॥६०॥
औरन से हंसी हंसी वतरावै ॥ पतिहि देखि पाखंड वनावै ॥
पेट सीस की पीर वतावै ॥ पति से मलवावे दववावै ॥६१॥
कबहुं कहैं सुनु पीतम प्यारे । पग दुख निकसत प्राण पियारे ॥
अस कहि पद सेवा करवावै ॥ नवपियार करि हिये लगावै ॥६२॥

अंत--

नहिं कलि जप तप योग विरागा ॥ केवल राम चरित्र अनुरागा ॥
देई परम गति कह सब कोई ॥ यहि विधि आन उपाय न सोई ॥२३॥
ताते तुम तजि सकल उपाई ॥ राम चरित्र रहहु लव लाई ॥
सो तुम्हार सब भाँति सुधारी ॥ सत्य सत्य यह रमण विहारी ॥२४॥
कनक भवन श्री अवध मझारा ॥ तह महंत रसिकेश उदारा ॥
तिनकर मैं लघु शिष्य कहायऊं ॥ रमण विहारी यथा मति गावहुं ॥२५॥

॥ दोहा ॥

श्री रामायण कृपा यह माहात्म्य मैं गाव ।
प्रेम सहित सज्जन सकल सुनहु राखि चित चाव ॥१२६ ॥

इति श्री रामायण विहारी बिरचितं सकल कलि कलुष विध्वंसन मानसरोवराख्य तुलसीकृत रामायण माहात्म्यं संपूर्णम् ॥ श्री रामचंद्रार्पणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ संवत् ॥ १९३८ ॥ सन् ॥ १८८१ ॥ पौस मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दस्यां भौमवासरे लिखेत्वा विंध्येश्वर पांडे ॥

॥ श्री रामचंद्रार्पण मस्तु राम ॥

विषय—इसमें गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस का माहात्म्य वर्णित है।

संख्या २४१. नीलकंठ स्तोत्र, रचयिता—वैजनाथ, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८ × ५ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० महादेव मिश्र, ग्राम—बटसरा, पोस्ट—कसिया, जिला—गोरखपुर।

आदि—. . . . .

ल आसन मासनं पद आसनं ॥ श्री नीलकंठ० ॥ ७ ॥
मथत दधिजल सेस दिगलित घुमत मेरु सुमेरुतं।
सर्व विधि जल दिपक प्रान वत घुमत नेत्र सघुरितं।
महादेव सुदेव सुरपति सर्व दीप विसंभरं ॥ श्री नीलकंठ० ॥ ८ ॥
ऋतु वसंत सुचक्रम चहं दीस प्रापते फल दाएकं।
पुरब कामि भए उपासी प्रात मंगल गाएनं।
अंब के तट वैजानाथ ससैल सीषिर विसंभरं।
श्री नील कंठहि भाल जल थल विस्वनाथ विसेसरं ॥ ९ ॥

इति श्री वैज्यनाथक ठं निलकंथ मकं सुभं श्री निलकठाए नमः।

विषय—श्री नीलकंठ महादेव की स्तुति की गई है।

संख्या २४२. झूलना, रचयिता—बोधदास या बोधीदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६३/४ × ५ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी और नागरी मिश्रित, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट—बरदह, जिला—आजमगढ़)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ **इती सी नवनीत चरणे कमलाभ्या नमः राम श्री हृषिकेशाय नम राम राम ॥**

'क' काम औ क्रोध का संग परीते जीए नाम गोविद का गाइए जी।
मोह अभीमान मद ढाही मैदान करी प्रेम के भवन मो जाइए जी।
सील सतोष अनुराग उरधारी हेरकत होइ नाम ल लाइए जी।
कहै दास बोधी एह षेल नीरवान को गगन के सबद सुष पाइए जी ॥ १ ॥
"क" काज ऐसी जीव काहो होगा राम से और नर धरो सब झूठी आसा।
साहेब सब जीव का एक नीरवान है और ताही लोक में सकल दासा।
सो पुरुष परने जी नरदेव दानो सेवै परोगा अंत जम काल फासा।
कहै दास बोधी एक अलष के नाम विनु छुटै ना जीव कौ ग्रबवासा ॥ २ ॥

अंत—

राम्ही तात अरु मात गुरु राम्ही राम्ही पीव अरु राम प्यारा।
राम्ही जाती अरु पाती कुल राम्ही इस्ट औ राम्ही राम यारा।
राम्ही देन सेवा सम राम्ही राम्ही वंधु अरु राम वारा।
"कहै दास बोधी" मोही सरन गती रामही रामही जीवनाकंत सारा ॥ ५० ॥

'ल' लागु वे लागु तुम ग्रापु में उलन कै ग्रौर सब लागु वे भ्रम माया ।
जोहीले द्रीस्ठ मो वस्तु जो ग्रावता सकल बीनसाए जो मेघ छाया ।
ग्रजर ग्रवीकार ग्रा देष जो ब्रह्म है हीए मो ताही कोई संत पाया ।
"कहै दास बोधी" संत सबद जो जानीए ग्रानद घर होइगा कीयो दाया ।।५२।।
"ल" लोक ग्रौ वेद की राह सब छाडी कै चलतु है प्रेम को पंथ माही ।
पाप ग्रौ पुन्य का षेल सब दुरी कै राम को षेल मो ग्रालन माही ।
नरक ग्रौ सोरग का ग्रास बीसराइ के सुरत रषु राम रघुनाथ पाही ।
"कहै दास बोधी" पुरुष नर ना........................।।

:o: :o: :o:

—ग्रपूर्ण

विषय—संत मतानुसार भक्ति ग्रौर ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खंडित है । पत्र संख्या ६ तथा सख्या १३ के पश्चात् के पत्र नही है । लिपिकाल ग्रौर रचनाकाल भी ग्रप्राप्य है ।

रचयिता का नाम बोधीदास है । ग्रन्य परिचय नही मिलता । ये सत जान पड़ते हैं । इनकी रचना संतोचित विचारो से युक्त है । कविता भूलना छदो मे की गई है । प्रति कुछ ग्रसावधानी के साथ लिखी गई है । बहुत सी ग्रशुद्धियां है । ग्रथ का नाम नही दिया है । रचना भूलना छंदों मे होने के कारण यही नाम रख दिया गया है ।

संख्या २४३. सोना लोहा वाद, रचयिता—बोधलाल, कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), ग्राकार—१२ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महत ईश्वरशरण भारती, ग्राम—बाँसी, पोस्ट—भाटपार रानी, जिला—गोरखपुर (रचना सभा के लिये प्राप्त हो गई है) ।

ग्रादि—श्री सूर्य्यायनमः ।।

कहत सोवर्ण लोहा हयत चेरा । बड़ बड़ माने वचन मेरा ।।
छनही मे करो भुपति रंक के । पहिरे पोसाक जस देत कंक के ।।
ग्रभरन बनाव माला राषत गले । माने ग्रादर जस मीर के भले ।।
सुन सुन रे सोना के । पूछे तोके तोहरोके ।
ठोक ठाकि हमही गढ़ी । पावक में डारिके ऊपर करि ।।
तोहरो के पहिरि नारि सेज ऊपर जाय । हमरा के पहोरि विर रण फहराय।।
गवरो वचन सुनि बोले सोना जगती के । नाति भल चाहे मोके ।।
सुन खन वारी विच राषे गले ।
राधे वो रुकुमिनि लिये । हिये हर्ष नरे सजो सिर पर दिये ।।
कोटि कोटि हस्ती मेरे ग्रागे चले । लोहा गवार का मोसे बोले ।।
ते त हउ बंक्यदर सोना हम होइ मरद । छनही मे लुटि पाटि कइ दिले गरद ।।
सगरे संसार बसे हमरे दोहाइ । विना लोहा नेकहु करे कमाइ ।।
ममके तरु ग्रारि देषी रहे सोना । ना सरबरि करे का रहे कोना ।।
तेत हौवे लोभी लोहा धुरि पर धावेल । से ग्रधिक ग्रपार हौये जान ग्रति मारेल ।।
सि छुरी कतर्नी नहरनी हजाम के थोर थोर मोलहो एक उडी पर ग्रावेल ।
सि दरजी की घर जाइ लुगा सिवावेल ।।
सिपापी चंडील के ग्ररई तेरी । ऐसी ऐसी जाति करै सरबर मेरी ।।

अंत—

लोहा कहे कोपि बात । सुन सोना मोरि बात ।।
एतना बकबाव का करते मोसे ।।
हमहु गोबी(?न्द) जी के होइ चकरपानी । बांधि लेत दानो असुर अभिमानी ।।
हमहु त्रिसूल गौरी नाथ कि करे । वज्र घहरात इन्द्रव हाथ के धरे ।।
महिषासुर दानो जो मारे भवानी हमरोके भीम से ।
निकर गहि लीन गदा किन्ह जुद्धि भिमसेनि राय सरहोसे ।।
राम मारे रावण के जाय । हस्ती के मस्तक पर आकुश सोभा विना लोहे नाही जग निरवाह ।।
गडुर कढि आये जहा जादो मुरारि । "बोधलाल" कृष्ण जहा समत विचारि ।
सोना लोहा हव देहे हमार ।। १ ।।

इति सोना लोहा वाद समाप्तः ।।

विषय—सोना और लोहे का विवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना 'किसान सिपाही झगरा' नामक रचना के साथ एक ही खर्राकार पत्रे मे है ।

संख्या २४४. ब्रजविहार (द्वितीय सोपान), रचयिता—ब्रह्म ज्ञानेन्दु, कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—१०½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८४४ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—ओं नमो भगवते व ...... ।।

श्री मत्सकल कलि कलमष क्षालि न्यैषारंगिनी महा अध्यात्मिकादि तापत्रयोन्मूलिनी सकल कल्याण कारिणी अनिमित्ता भागवती भक्ति प्रबोधिनी वैराग्य ज्ञानोद्बोधिनी चतुर्वर्ग फल प्रदायिनी विरूपसाक्षात्कार कारिणी अज्ञानांधकार विध्वंसनपरायिणी ।। श्री शुक्राचार्य शिष्येण श्री भागवत ब्रह्मज्ञानेंदुना कृता श्री भागवत सार ग्रंथे श्री वृजविहार नाम दुतिय सोपाने बशमे भक्त्योपासना प्रेम प्रकाशिका श्रीकृष्ण चरित्र संवाद संबंधिनी सुयुग्या कथा प्रस्तूयते तत्र श्रोतारः सावधानतया शृण्वंतु श्री पुराण पुरुषोत्तम प्रसन्नोस्तु ।। श्रीमता वचन ।। छंद छाया ।।

अहो धन्नि रचना अनप श्रुतिसार सुगाथा ।।
जासु श्रवन मुवभावदेव मैं भई सनाथा ।।
अव वानक वर वृज व्हिार विस्तार सुनैयै ।।
भक्ति वत्सलता जहाँ परम सर्वेस्वर पैयै ।।
प्रेम प्रभावहि ताहि प्रति लसतय चरित कौने कवन ।।
कहिय सकल रावर सम्महि को वक्ता मंगल भुवन ।। १ ।।

।। श्री भागवत वचन ।। सोरठा ।।

सुनिय अब चित लाय व्रजविहार मंजुल कथा ।।
अविरल प्रेम प्रभाव मुठि विधान बर्नन करौं ।। २ ।।

मध्य—जैसे स्वांगी कोय जिहि विधि स्वांग सम्हारहीं ।।
सोहन अधिक न होइ विन प्रगटे सब अंग तिहि ।।७८।।

।। चौपाई ।।

पुनि रितु सिसिर सीत को आगर ।। भई आन निज समय उजागर ।।
नित प्रति अतुलित श्रवत तुषारा ।। पवन झकोरति विविधि प्रकारा ।।
ऐसी रितु हू मैं ब्रजराजा ।। मुदित रमत वन सहित समाजा ।।

ऊंची ठौरि विलोक सुहाई ।। जहाँ तेज रवि अधिक दिखाई ।।
लै मित्रनु बैठत सुखदाई ।। गऊवों सकल विपन छुटिकाई ।।
करत परस्पर पर्म किलोलै ।। संजुत रहसि वचन बहु बोलै ।।
कबहूं धुंधि रहति नभ छाई ।। भान तेज सबही दुरि जाई ।।
तब नित सघन हेत हरि देषी ।। प्रगटत आनन प्रभा विशेषी ।।७६।।

अंत—— ।। चौपाई ।।

व्रज विहार छंदनु गिनती अब ।। जोरौ विधिवत बनक तासु सब ।।
सौ सैंतीस सोरठा जसई ।।१३७ ।। चौपाई सततेरह रहई ।।१३३।।
मात्र छंद बीसद्वै भाषे ।।२२ ।। पुनि सै डेढ़ दोहरा राषे ।।१५०।।
पंच त्रिभंगी विव चौवोला ।। ७ ।। येक आरती शब्द अमोला ।। १ ।।

तोमर——

।। १ ।। भुजंग प्रयाता १ मनहरन १ ।। पुनि त्रोटिक १ प्रजुलिय १ ओवरन ।।
छप्पा १ जुतये जिषट निज निजही ।। चतुर्वधायी ४–सुखद सहजही ।।
अष्टपदी अरिल्ल जेहि नामा ।। गने चारि ४ तेऊ इहि ठाँमा ।।
अरु चौवीस चक्षु वैंगाए ।। २४ ।। दंडक कवित पचीस गनाए ।।२५।।
ऐसी विधि सब पाच सै अरु ऊपर विवि जान ।।
गनति ब्रह्म ज्ञानेन्दु सब वृज विहार पहिचान ।।५६२ ।।

।। छंद छप्ता ।।

वहुरौ गन अंक्षिरनु छंद पुस्तक इक ठाँही ।।
जोरे सत सठि सहस और सत चतुर तहाँही ।।६७४००
तिनहि अंक बत्तीस भाग जो थय श्लोका ।।
विव सहस्र सत एक षष्ट ।।२१०६।। तव तिहि अवलोका ।।
गिनति ब्रह्म ज्ञानेदु गुनि गति श्लोक अरु छंदही ।।
गुनै गुनी रति भक्ति श्रीकृष्ण सच्चिदानंद ही ।।

इति श्री शुकाचार्य शिष्येण श्री भागवत ब्रह्मज्ञानेदुना विरचितं श्री भागवत सार ग्रंथ श्री वृज विहार नांय द्वितिय सोपाने भक्त्योपासना प्रेम प्रकाशिका श्रीकृष्ण चरित्र प्रथम निवास व्याख्या समाप्ता ।। शुभमस्तु ।। संवत् ।। १८४४ ।। प्रतिलिखितं मनीराम व्रथरीष ।। शुभं भूयात् ।। श्री गुरु चरणक यह सोपान किसोरतन्दि भाजवती कौ दयो पठन समझनार्थ सही ।।२।।

विषय——भागवत के अनुसार इसमे श्रीकृष्ण चद्र के व्रज विहार का वर्णन है ।

संख्या २४५. शृंगाररस सिंधु, रचयिता——भागवतदास, पत्र——११३, आकार——७।। × ४।।। इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——३२, परिमाण (अनुष्टुप्)——२७००, पूर्ण, रूप——साधारण, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——सं० १७७०, लिपिकाल——सं० १७७७, प्राप्ति-स्थान——श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ७१, पु० सं० ३।१ ।

आदि—— ।। श्री गोकुलेशो जयति ।।

अंकुर हे भाव प्रेम कंदल प्रणय साखा पल्लव है राग सोई नीके कर जानीए ।
अनुराग कलिका सों झुकि रह्यो चहूं ओर बिसन कुसम नित प्रफुलित मानीए ।
नेह फल नूतन अखण्ड हे विराजमान कहे रिझवार भाव पूरन प्रमानीए ।
लपटि रही हें व्रजसुंदरी लगनि जहाँ एसो रस रूप सुरतरु उर आनीए ।।१।।

मध्य——पृ० ८७ आलिंगन रूप संभोग शृंगारो यथा ।। दोहा ।।
आठ भांति की हे कही आलिंगन की रीत । ग्रंथ रीति सों कहत सुनो रसिक करि प्रीत।।१।।
वृक्षारूढ़ सो प्रथम कहि लतावेष्टितक जानि । तीजो लाघव हे कह्यो चोथो त्रिजक मानि ।।२।।

उपय गूढ सु पाचमो तिल तंदुल सुख कारि। क्षीर नीर लालाटिक वर नारि ।।३।।
तत्र प्रथमं यथा ।।

एक पाइ सों चांपि पग दूजे दूजो पेलि।
वृछारूढ सो जानिये पिअ भुज अंतर मेलि ।।४।।
छातीसों लपटाइ के लटकी रहे जो नारि।
वल्लरि वेष्टितहू कह्यो आलिंगन सु बिचारि ।।५।।

अंत—कविता रस भगवान के भई जु कछु इहिं वार ।।
नवरस मधि बहु प्यार करि बरनत् कियो सिंगार ।।१६।।
हों सबको रस रीति के पदरजहू निरधार ।।
बरनत भूल परी कछू सो छमियो इहि बार ।।२०।।
संवत् सत्रहसे सुभग सत्तर बरष बखानि।
माधवसित तृतीया गुरौ धाता सोभन मानि ।।२१।।

इति श्री कृष्णदास वंस संभव भगवद्दास प्रकासिते शृंगार रस सिंधौ द्वादसमास वर्णनं **नाम द्वादश कल्लोल संपूर्ण ।।**

इति श्री सिंगार सिंधु संपूर्ण ।। संवत् १७७७ आषाढादि वर्षे शाके १६४२ प्रवर्त्तमाने **आषाढसुदि १५ शुक्रे संपूर्ण ।।**

विषय—इसमें द्वादश अध्यायों (कल्लोलों) में शृंगार रस का वर्णन है। शृंगार रस का शास्त्रीय रीति से विवेचन सादाहरण किया गया है। कामशास्त्र संबंधी कलाओं के भेदोप-**भेदों** का भी वर्णन है।

संख्या २४६. राम सावित्री, रचयिता—भगवतदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४$\frac{२}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१२ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० राधे-श्याम, ग्राम—कूढ़ा, पोस्ट—जटरामपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशायनमः ।। अथ राम सावित्री लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

श्री मन्नारायण चरण अस्मद गुरु परजंत।
श्री रामानुज आदि दै वंदौ श्री गुर संत ।।
सावित्री श्री राम की पावित्री श्रुति मूल।
विरची भगवतदास सुनि मिटै मूल भव सूल ।। २ ।।
ब्रह्मा ते नारद सुनो वीनाधर ते व्यास।
कहि वसिस्ट हनुमंत ते जग जिमि सुर्ज प्रकास ।। ३ ।।

।। छंद ।।

सत्य सनातन ब्रह्म वेद जेहि नेति पुकारा।
धेनु धरासुर साधु हेत तेहि नर वपु धारा ।।
चैत्रमास सितपक्ष पुनर्वसु सोम नौमि जुत।
कर्कट लगन सुमध्य देव सम राम भूप सुत ।।
चतुर्व्यूह चहूं बंधु राम अरु भरत सूर्यसम।
लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न कलानिधि सद्रस हरत तम ।। १ ।।

अंत--

नव सै सरसठि बरष सिया तह किये विश्रामा ।
रिषिन्ह पठाये पुत्र सुमृति श्रुति हरि गुण ग्रामा ।
रामहि पुत्र समर्पि सिया किय भूमि प्रवेसा ।
अयुत वर्ष करि राम राज्य पुत्रन्ह उपदेसा ॥ ४२ ॥
अमत यज्ञ तपदान धर्म विप्र लडाये ।
प्रजा बंधु पुर सहित हरषि निज लोक सिधाये ॥
यह श्रीराम चरित्र प्रेम जुत सुनै जो गावै ।
सर्व पाप मिटि जाइ चारि फल सहजहि पावै ॥
विरची भगवत दास राम सावित्री येहा ।
सुनै येकहू वार लहै श्रीराम सनेहा ॥ ४३ ॥

इति श्री भगवतदास जी कृत राम सावित्री संपूर्ण ॥ संवत् १६१२ कार्तिक मासे शुक्ल १ तिथि हस्थ अक्षर पीतांबर दास ॥ शुभमस्तु ॥ रामकृष्ण ॥ रामकृष्ण ॥

विषय--श्री रामचंद्र जी की लीलाओं और घटनाओं का तिथिक्रम वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--पुस्तक खंडित है । बीच के पत्रे, संख्या २ से लेकर संख्या ५ तक नहीं है । इसकी दूसरी प्रति भी मिली है जिसका केवल प्रथम पत्र खंडित है । परंतु दोनों को मिलाने से पुस्तक पूरी हो जाती है ।

संख्या २४७. दीप रामायण, रचयिता--भगवतदास (आवास, अयोध्या), कागज--देशी, पत्र--४१, आकार--११½ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--६८२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री ठाकुर जयराम सिंह, ग्राम--तिह्निया पोस्ट--महम्मदपुर (सेमरी), जिला--सुलतानपुर (अवध) ।

आदि--श्री रामयनमः ॥ अथ रामायण दीप लिख्यते ॥ दोहा ॥

एकरदन पद कमल जुग प्रनवों वारवार ।
सुमिरे करतल मिलत बुद्धि विभूति बिचार ॥ १ ॥
गिरिजा सहित महेश पद वन्दो सुखधाम ॥
जो...ने पुर जीव कह देत अंत कहि राम ॥ २ ॥
जासु कृपा जन मूकहू होत निगम वाचाल ।
पंगु शैल दुर्गम सुमिरु सो राम कृपाल ॥ ३ ॥

राम कथा जलनिधि अवगाहा ॥ शारद सेश कि पावहि थाहा ॥
सो किमि कहों बाल मति रंकू ॥ उतरु कि सिधु पपील असंकू ॥
छमिहि सज्जन मोर ढिठाई ॥ बाल बोल इव मातु सोहाई ॥
पारस मणि सतसंग प्रभावा ॥ कोन भुवन सुंदर जस पावा ॥
कहहुं कथा रघुनाएक केरी ॥ सुनहिं जाहिं सब तीरथ घेरी ॥
यद्यपि काव्य भेद कछु नाहीं ॥ तदपि राम महिमा एहि मांही ॥
शुनिहहिं सज्जन मन चित लाई ॥ राम चरित पर चाह शोहाई ॥
काव्य दोष गुण शोध जो करहीं ॥ राम हीन बुध नहिं आदरहीं ॥
जेहि सर बक मंडूक विराजा ॥ किमि तह जाइ मराल समाजा ॥
अस विचारि कीरति मन हरणी ॥ कहिहों जीह विमल की वरणी ॥
नारदादि मुनि थाह न पावत ॥ मति अनुरूप राम जस गावत ॥

॥ दोहा ॥

अस विचारि मम हृदए मे चाह भयो अवगाह ॥
कहिहो कछु रघुनाथ जस पावन विश्व सनाह ॥ ७ ॥
अवधपुरी ते जाम्य दिशि पावन आसव वास ॥
तह वसि रघुवर की कथा रचत भागवत दास ॥ ८ ॥

॥ शोरठा ॥

रामायण सुखसार वालमीक मुनि आदि कृत ॥
महिमा तासु उदार सूत कहेउ मुनि जन सभा ॥ ९ ॥
भाषा भणित सो ग्रंथ करो सकंद पुराण की ॥
रामधाम को पंथ रामायण दीपक रतन ॥ १० ॥

ग्रंत--

॥ शोरठा ॥

तेही "प्रसाद" की हेत बाल बुद्धि मैं एह रचिउ ॥
जेहि प्रिय रघुकुल केतु दीनबधु अशरण शरण ॥ ७१ ॥
श्री रामायण दीप भाषा बंध सु सरल पद ॥
श्री रघुनाथ समीप कृपा हेतु अरपन किहेउ ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

राम उपासक चरण युग कमल पराग सुवास ॥
राषि हृदं एह रचि कियो सुगम भागवत दास ॥ ७३ ॥
पढ़हि सुनहि जो प्रेम करि हृदय सुमिरि श्रीराम ॥
सुर दुर्लभ सुष भोग करि राम धाम परिनाम ॥ ७४ ॥

इति श्री रामायण प्रकास करण रामायण दीप समाप्त: शुभमस्तु ॥ श्री सम्वत् १८९९ भाद्र शुक्ल चतुर्दश्यामर्क वासरे ॥ लि: भवानी दीन पंडित रघुवर दास श्री

विषय--रामकथा ग्रौर रामायण की महिमा का वर्णन तथा ईश्वरभक्ति का उपदेश ।

संख्या २४८. प्रयाग शतक भाषा, रचयिता--भगवतदास या भागवतदास महात्मा, (स्थान-प्रयाग), कागज--ग्राधुनिक सफेद, पत्र--२६, आकार--८ $\frac{2}{10}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)--१५६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, मुद्रणकाल--सवत् १९१९ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० भगवतीप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम-जूडापुर बौहर, पोस्ट-हॉलागढ, जिला-इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नम: अथ तीरथराज महात्म प्रयाग शतक भाषा लिख्यते ।

॥ दोहा ॥

रामानुज पद रामपद सिय पद पदुम सुवास ।
भवरुज गद गति उच्च पद वंदत "भगवतदास" ॥ १ ॥
गंगा यमुना सरस्वती श्रीमाधव पद रेणु ।
कामद शिर धरि नरनि हों प्रयाग शतक सुर धेनु ॥ २ ॥

॥ अथ प्रयाग निवास महिमा ॥

॥ दोहा ॥

सुलभ स्वर्ग अपवर्ग गति अक सुरधेनु ।
प्रयाग निवासी नरन्ह की है दुर्लभ पद रेणु ॥ ३ ॥

यज्ञादिक शुभकर्म जे तप तीरथ व्रत दान ।
प्रयाग मांहि एक त्रुटि बसै सब नांहि ताहि समान ॥ ४ ॥
आवत मज्जे प्रयाग जो अथवा मज्जे जात ।
तेहि दरशे परशे तुरत पाप पहार बिलात ॥ ५ ॥
तीरथपति की रेग ढिग कचन मणि केहि काम ।
कतहुं परी मूरी बसन अधम गयो हरि धाम ॥ ६ ॥

अंत--

प्राग शतक यह जो पढ़ै सुनै मानि विश्वास ।
सर्व तीर्थ अस्नान फल पावै भगवत दास ॥ १८ ॥
नित पढ़िये अस्नान कै करि सुकर्म उपवास ।
प्राग शतक सुरधेनु सम बरनी भगवत दास ॥ १६ ॥
तीरथराज प्रयाग में टहलदास सुप्रास ।
तिनके दासन दास को दास भागवत दास ॥ २० ॥

इति श्री तीर्थराज महात्म प्रयागशतक भागवतदास भाषा कृते प्रयाग महिमा वर्णनो नामः पंचमो विश्राम :: ॥ ५ ॥

समाप्त शुभमस्तु

विषय--प्रयागराज का माहात्म्य वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--पुस्तक मे रचनाकाल का उल्लेख नही है । यह संवत् १६१६ मे प्रयागराज मे बा० काशीदास मित्र के लक्ष्मी विलास छापेखाने मे संशोधित होकर पहली बार छापा गया ।

संख्या २४६. बोधरतन, रचयिता--भागवतदास, कागज--देशी, पत्र--१२, आकार--७$\frac{6}{10}$ × ४$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६८, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि,--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

रामानुज वंदत गुर चरन कमल उर धारि ।
जय सचिता नंद श्री दीने ग्रंथ सुधारि ॥ १ ॥
बोध करन जमे भए व रतन करन शो नाम ।
जेहि पढ़े ते भ्रम मिटै मन पावै विश्राम ॥ २ ॥
मन दुषिया कंगाल सो सुष पावै कहु नाहि ।
बोध रतन धन पाइकै तौ पुनि धावत नाहि ॥ ३ ॥
मन तुरंग मुख जो रहै शश लगाम चबात ।
चाबुक............ताहि देषि डरि जात ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
सदन कंदरा गिरिन्ह के अजित सो रक्षक जान ।
सब संकल्प विकल्प तजि करु मम चरनन ध्यान ॥ ३२ ॥

इति श्री बोध रतनाकर जीव ईश्वर संवादे वैराग्य बरननो नाम प्रथमो विश्रामः ॥ १ ॥

अंत--

बोध भयो जब जीव को पायौ परम प्रकाम ।
राम सचितानंद को जान्यो "भगवत दास" ॥ ३६ ॥

बोध रतन संचित करै पढ़ै सुनै मन लाइ ।
लहै भक्ति धन साधु मम सब दरिद्र मिटि जाइ ।। ३७ ।।
एहि जग सूषे रूप को मन बिहंग मति भूल ।
राम नाम जिमि कल्पतरु भजौ मिटै सब सूल ।। ३८ ।।
..............कामधुक राम नाम के दास ।
परम बोध यह जानि कैसे वहु "भगवत दास" ।। ३९ ।।
बोध रतन निरमोल है मूरष को न देषाव ।
ज्यौं बनवासी नरन मे नहि..............।।

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेशक वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ बीच और अंत से खंडित है ।

संख्या २५०. रमलसार, रचयिता—भगवान दास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, मैनेजर अमेठी राज्य, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः मंत्र ॐ पार्वती वो सिद्धिदये नमः अथ रमल ।।

।। दोहा ।।

गननायक अरु सरस्वती संभु उमा पद नेह ।
सुमिरि वदि अछर धरौ विमल वुद्धि मुहि देह ।।
सिया राम पद राषि हिय सर्व देव सिर नाइ ।।
रमल सार भाषत प्रगट सब मिलि होतु सहाइ ।।
चारि तीनि द्वै एक पुनि यासे अंक निहारि ।।
वार तीनि करि डारिए देखहु प्रस्न विचारि ।।
सात वार पढि मंत्र कंह रमल अगोचर प्रस्न ।।
अक्षत पुंगीफल धरहु अस्नान ध्यान करि विस्न ।।

अंत— ।। दोहा ।।

वेदशास्त्र कलि गुपत जव तव बाचै यह कोइ ।।
ताही कह जग जानीबी है वह पंडित सोइ ।।
आगे जे कबि ह्वै गये भाषा के जग मांहि ।।
तिनसो कै है देवता हम सौ कवि ठहरांहि ।।
विश्वाकरन अरु संसक्त भाषित वांचत जोइ ।।
विधि हरिहर अवतार कहि अस ह वै कलि सोइ ।।
"भगवानदास" सिव सक्ति की वरनी रमल विचार ।।
सगनौती जे जगत मंह तिन तै हैं सुभमार ।।

इति श्री रमलसार संपूर्ण मिति फागुन सुदी १० सनीचरु सं० १८९९ सन् १२५० ।।

विषय—रमल विषय वर्णन ।

संख्या २५१. गीता माहात्म्य, रचयिता—भगवानदास "निरंजनी" कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—६$\frac{5}{10}$ × ४$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--श्रीमते रामानुजाय नमः ।। अथ गीता माहात्म पद्मपुराणे वेदव्यास उक्ति लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

गुरु गोविंद परणाम करि शारद पुनि गन ईश ।
चरन कमल रज संत के धारौं अपनें सीस ।। १ ।।
गीता की महिमा कहौं कही प्रथम जो व्यास ।
निकसी पद्मपुरान तें सबकी पूरन आस ।। २ ।।
गीता बांचै जो सुनै नैननि देखै जोइ ।
नयननि को दरसन करै भुक्ति मुक्ति फल होइ ।। ३ ।।
सो इतिहास सुनै गुनै कहि पुरातम साषि ।
लक्ष्मी सौं वैकुंठ मैं नारायन जू भाषि ।। ४ ।।
उत्तम गिरि कैलास निति तहा रुद्र को धाम ।
प्रश्न करी तब सैलजा सबको पूरन काम ।। ५ ।।

।। पार्वत्युवाच ।।

मैं प्रभु तुमकौं पूछौ सोई । कातै तुम पवित्र तन होई ।
सकल जीव तुमही कौ ध्यावै । तुमरी दई मुक्ति सब पावै ।।
बैल चढे ओढ़े मृगछाला । अंग भस्म रुंडन की माला ।।
विषधर सर्प कंठ मह सोहैं । विष धतूर को भक्षन जो हैं ।।

:०: :०: :०:

सकल सारको सार है सकल ज्ञान को ज्ञान ।
सकल धर्म सुभ कर्म है कह्यौ भाषि भगवान ।। २ ।।

इति श्री पद्मपुराणे सतीईश्वर संवादे उत्तरकांडे गीता महात्म्ये भगवानदास निरंजनी जथामति भाषा कृते प्रथमोध्यायः ।। १ ।।

अंत--

हाथी मरेउ दर्व्य पुनि गएऊ । और जगत मैं हासी भएऊ ।।
सब मिलि कहहि राय गज हारो । राजा सोच आपु मै धारौ ।। ६ ।।
योही सोच बहुत दिन करेऊ । सोचहि माहि सो राजा मरेऊ ।।
ताहि बांधि जमपुर लै गयऊ । धर्मराज तब पूछत भएऊ ।। ७ ।।
धर्मराय याकौं गज करेऊ । गज के मोह माह यह मरेऊ ।।

--अपूर्ण

विषय--गीता का माहात्म्य वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण है । संख्या ३८ के पश्चात् के पत्रे उपलब्ध नहीं । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या २५२क. रुक्मिणी मंगल, रचयिता--भगवान हितुराम राय, कागज--देशी पत्र--२१, आकार--८३/४ × ४३/४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६४, पूर्ण, रूप--नया, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि---श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णाय नमः ।।

राग सूहा बिलावल

जै जै जै गिरधरन नाथ करुनामई ।
सरणागत वत्सल मनहर कीरति नई ।। १ ।।
गोकुल मधुपुरी द्वारका त्रिविध लीला करी ।।
भक्तन पूरण काम विजं रुकिमिनि वरी ।। २ ।।
सो सुंदर हरि को विवाह उत्सव अति ।।
निज जन सदा लडावें कृष्ण रुकमनी रति ।। ३ ।।
विदर्भ देस कुंडन पुर परम सुहावना ।।
नरपति भीषमक नाम धर्म धुज पावना ।। ४ ।।
रुकुम आदि है पांच पुत्र ताके अति बली ।।
कन्या एक रुकमनी सब भातिन भली ।। ५ ।।
सुंदरता की रासि सील गुन आगरी ।।
मानो सब मंगल हरि हित त्रय छवि धरी ।। ६ ।।
नव जोबनी हरिगुन सुन हीयें अति रति बढ़ी ।।
हरि नाग रहित भरत कोक पिंगल पढ़ी ।। ७ ।।

मध्य--- ।। छंद ।।

जै जै कमल लोचन कलानिधि कामिनी रति वर्धनी ।।
तुम सरण सदा वार वार करें परनाम दासी रुकमनी ।। १ ।।
कल्याण गुन प्रभू के श्रवन सुनि रची रूप विचारि कै ।।
तुम दस कारण किंकरी भीइ लाज काज विच्यारि कै ।। २ ।। ११ ।।
सोई कन्या भली जो तुम को अनुसरे ।।
सो क्यों हूं भली नाह जो तुमको ना वरे ।। १ ।।
अद्भुत करीयें मोहि अपनावत जिन लजौ ।।
दीन उधारण सरणागत कौ जिन तजौ ।। २ ।।
महापुरष बली सिद्ध भाग तेरौ तोहि लवै ।।
यहै ससि पाल सेयार लै जाय क्यों संभवै ।। ३ ।।

अंत---

बहुतक राज कंन्या रुकमनी कौ सौ व्रत धरौ ।।
कृष्ण कथा श्रवणन मैं पैठ कै हीयौ हरयौ ।। ७ ।।
कृष्ण रूप गुण सुन लुभाय यह व्रत धरौ ।।
रीझ आपनपौ वार स्यांमघन बरबरौ ।। ८ ।।

।। छंद ।।

बर वरौ हिरि बड़भागनी पति प्रीत मंडन पाइयौ ।।
तिनहूं कौ यह पद निज भजे यह भा उधर हरि ध्याइयौ ।। १ ।।
ते धन्य सब विधि रूप कमनी मंगल तन मैं गावहीं ।।
श्री राम राय गिरधरन भज भगवान प्रभू मन भावहीं ।। २ ।।

इति श्री रुकमनी मंगल संपूर्ण लिष्यते शुभमस्तू ।।

विषय---कृष्ण रुक्मिणी विवाह का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत ग्रथ अन्य ग्रंथो---रामदास वरसानिया कृत राधाविलास और अली रंगीली कृत, रास पचाध्यायी के साथ एक हस्तलेख मे है ।

संख्या २५२ख. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—भगवान हितु रामराय, पत्र—२, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० बं० १३२, पु० सं० ११३ है।

आदि—प्रह्लाद चरित्र ।। रागु भेरों ।।

हरि इ जप प्रह्लाद । हरिके भजन बिनु पढ़िबो बाद ।। १ ।।
पढ़िनिसाल प्रह्लाद जु पढ़े । कृष्ण गोविंद राम नाम रढ़े ।। २ ।।
पाढ़े सुनि हृदि खावे त्रासु । शंक न माने हरि को दासु ।। ३ ।।
पूछ सखा अहो निजु मित्र । कहाँ पायो तुम कृष्ण चरित्र । ४ ।
नारद मुनि मोसों कह्यो हे भेद । कृष्ण भजन हरि सुमरन सेव । ५ ।

मध्य—पृ० १३

क्यो रे निडर शंक नहीं करे । हरि को नांउ हित सों ऊचरे । २८ ।
राज रीति को पड़नो बिसारचो । मम रिपु श्रीपति तें उर धारचो । २६ ।
अहो बाबा में हरि न बिसारों । इह तेरो राजु राम पर वारों । ३० ।
सुनि हरनांकुस रीस भरचो । निभेजिन प्रह्लाद न डरचो । ३१ ।

अंत—

प्रेम सहित हरिकंठ लगाए । चुंबत चाटत अति सुख पाए । ५६ ।
कृष्ण भजो भैया इ जानि । हरि पीतम सो नाहिंन आंनि । ५७ ।
भक्त वछल गुनरूप निधाना । राम राइ हित कहे भगवाना । ५८ ।

प्रह्लाद चरित्र संपूर्णम् ।।

विषय—कवि ने प्रस्तुत चरित्र में प्रह्लाद की भक्ति और भगवत्कृपा का वर्णन किया है।

संख्या २५३. बृहत्संहिता भाषार्थ, रचयिता—भट्टोत्पल, कागज—देशी, पत्र—२६३, आकार—६$\frac{9}{10}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०४१, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८४८, प्राप्तिस्थान—पं० रामप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—अदभी, पोस्ट—त्रिसुंडी, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि...................

......सो डराय कैं यह कहत भयो कैं एक ओर ते मार्ग देहों यह सुनि कैं मुनि क्रोध करत भये अरु यह कहत भये हमारी आज्ञा भंग ते कबहूँ न रहिहौ तातें विधि डराइ कें पूर्वरूप होत भये अरु यह कहत भये जौ लों तुम ऐहौ तौलौ न वढिहै यातें नाही आवत ।।

केतु की राहु की नाही उत्पति जानियें तथा च भगवान् गर्गः ये जे है थोरे प्रयोजन के तनको छाडिकें और जे है गणित गोल तें बाहिर असार भूत तिनहूँ कों छाँडि कैसे कोन जैसे भुवन के विभाग मे महा प्रमान दर्पन के स्वरूप पृथ्वी को कहत है और सुमेरहु को महाप्रमान अरु गोल स्वरूप है तापर ध्रुव है और गृह नक्षत्र सुमेर ही के अवलंब है सो परासर मुनि कह्यो है असी कोटि सत सठ हजार जोजन भूमि है जाको भूमंडल कहियत है ताके आगे बड़ो अंधकार है भूमध्य सुवर्ण को सुमेरु है सो कैसो है ८४ चौरासी हजार योजन ऊपर चौकोर है ताही कों स्वर्ग कहत है सुमेर के अर्द्धभाग तें सूर्य चंद्रमा पर्यटन करत है अरु ताही कों ज्योति चक्र पर्यटन करत हैं ग्रह नक्षत्र तारका सहित सूर्य चंद्र इनकों काल विभाग कीन हों।

अंत—ये इतनी वस्ते चारि सहस्त्र श्लोकन करि कही याही में अंतर्भूत प्रयोजन है बहुत आश्चर्यकारी जातक करण शरद रितु के द्वितीया के चंद्र सम स्वेत डाढ़ सी बुद्धि कों धरें अरु शेष

के फणिमंडल पर रत्नावली किरणन मे पद धरि कै कुमत तें बहुत काल तें ज्योतिष रूपी भूमि कों निकासत भमें सो वराहामिहिर के मिस ह्वै विष्णु रक्षा करैं ।।

इति श्री भट्टोत्पल विरचितायां संहिता वृत्तौ श्री महाराज कुमार अचल सिंहाज्ञया भाषार्थ कथनं नाम अनुक्रमणिकाध्यायः ।। १०६ ।। संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १८४८ वर्षा कृतौ ।। श्रावणे मासि कृष्णे पक्षे द्वितीयायां रवौ विष्णुवंधु पुर्य्यां लिखितं सीताराम सनाढ्येन श्रीरस्तु ।। गोविंदाय रामाय कृष्णाय वामना नृसिंहाय ।।

विषय—वराहमिहिराचार्य कृत वृहत्संहिता का भाषा गद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । कुल ३२८ पत्रो मे से २६३ पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल का कोई पता नही । संभवतः आरंभ मे दिया रहा होगा । जो अप्राप्त है । लिपिकाल संवत् १८४८ वि० है ।

संख्या २५४. भड्डुली ज्योतिष (टीका), रचयिता—भड्डुली (?), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८$\frac{१}{१६}$ × ६$\frac{७}{१६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० राघवराम द्विवेदी, ग्राम–धूरेडीह, पोस्ट–सराय ममरेज, जिला–इलाहावाद ।

आदि— :o: :o: :o:

......मागीसर रै महीने विजली चमक गाजे वादला होवे तो गर्भ रहा जाण जे आवतो जमानो सषरो होसी हे भड्डुली तु चिता मति कर मति कर मतो तुन साच कहु छु ।।२।।

।। दोहा ।।

मगसीर फल पौस मास विजली चीमक ।
गाज वायरो वाज भडली जलहर पंथ्यो गभ ।। ३ ।।

पोस के महीने विजली चीमक पुरव की पवन वाज: वादला होवतो वार जाणज हे भडली गर्भ रहो जाण जे ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत—वीस्पतिवारी संक्रांति होइ तो ते मंदाकनी नाम कही जाइ ध्यापारी लाभ धण पामें प्रजानें वंल घणा हुवई हलदी सोनो पीलो वस्त्र सव सौहगी होइ लोक सुषी पावैं ।। ५ ।। इति गुरुफलं ।। शुक्रवरी संक्रांति ए नाम मीश्रा का कहीजे तीणनें शुभ मंगलीक घणा हाथी घोडा ऊट भैंसी गाय वो पद नीट ह्वी अन्न सोहागा घीर तेल सर्व सौहगा ।।

।। इति शुक्रवार फलं ।।

शनीसर वारी संक्रांति होइ तो तेहनो नाम राक्षसी कही जइ लीस मास....मुह गा सु पुनी............

—अपूर्ण

विषय—खेती, वर्षा, वार, नक्षत्र और संक्राति आदि के संवध मे शुभाशुभ फल कथन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । केवल पाँच पत्रे, संख्या २, ४, ६ और ५४ तथा एक बिना संख्या के उपलब्ध है ।

संख्या २५५. नलोपाख्यान, रचयिता—भरसी मिश्र रामनाथ पंडित (मेंहा ग्राम, आजमगढ़), कागज—देशी, पत्र—८६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६५५, खडित रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० देवराज पाडेय, ग्राम–नोनरा, पोस्ट–रामपुर, जिला–गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ १ चौपाई ।

वंदौ गनपति चरन पुनीता । विघन हरन तिहु पुर मह गीता ।
जाकह......................रता पदवी कह पाएउ । २
सहस किरिनि ह्वै रवि वहुतएउ । गनपति कृपा परम जव पएउ । ३
:o: :o: :o:
......ह नल कथहि बषानै । वेद व्यास महा प्रभु जानै । ६
नौषध कवि श्री हर्ष वनाए । विधामानन्ह के..... ।
ताहि विलोकि कियो हम भाषा । भारथ कथहि कछुक तह राषा । ८
"उपाख्यान नल" को यह कीन्हा । नाम ग्रंथ को कोइ धरि दीन्हा । ९
:o: :o: :o:
आजमगढ़ के दछिन अहई । मेहा ग्राम विदित जग कहई । ११
ताके दखिन महदेवपारा । तापर राम दयाल कृपाला । १२
:o: :o: :o:
राम नाथ पंडित तंह रहई । राम कृपा ते वह सुख लहई । २४ ।
:o: :o: :o:
सोम वंस एक राजा भएउ । वीरसेनि नामा जगतएउ ।
जस सागर नागर सुख धामा । वीरसेनि राजा शुभ नामा । २७

॥ दोहा ॥

धर्मसील नल सम नृपति भयो न ह्वैहै जानु ।
दाता सुजस प्रताप जुत कीरति तें अनुमानु ।
:o: :o: :o:
नल को तेज दिवाकर तएउ । जस राका ससि निहिचै भएउ ।
:o: :o: :o:

अंत—

चित चकमक छतिआ पथर काम अ......पू गात ।
नैन नीर वरषत नहीं तौ तन जरि बरि जात । १४
होत रहै दिन दिन रहै विसुच.......हरि नेह ।
यह अचरज जल नैन को सींचे सूंकति देह । १५
मन रंजक छाती तुपका वरह पलीती लाल ।
आपु आवाज न निकसती जाती फूटि जमाल । १६
देखों जागि तवै सि.....ति द्वापर मह नल नाम ।

॥ दोहा ॥

सुछम कथा हिए अभिलाषा । कहिवे कह सोई हम रा... ।
ग्रंथ माह विस्तार न कीन्हा । स्वल्प कथा नल की लिखि दीन्हा । २

॥ दोहा ॥

भयो न ह्वैहै कोउ नृपति नल समान जग माह ।
दानी ज्ञानी जस वली नेत्रवंत नरनाह ॥ १ ॥

इति श्री भरसी मिश्र रामनाथ पंडित विरचिते नलो पाख्याने दशमोध्यायः समाप्तोयं ग्रंथः ॥

विषय—श्री हर्षकृत नैषध का हिंदी में पद्यानुवाद किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। समस्त छियासी पत्रे उपलब्ध हैं। बीच बीच से कई पत्रे लुप्त हो गए है। कुछ पत्रे आपस मे इस प्रकार सट गए है कि उन्हे छुड़ाना कठिन हो गया है। लिखावट भी भ्रष्ट है।

संख्या २५६क. रामजी के बारहमासा, रचयिता—भवानी (अयोध्या), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—६, आकार—७$\frac{8}{10}$ × ६$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीमती चौरामा देवी, धर्मपत्नी, स्व० रामशंकर पांडे, ग्राम—सुरसुती (कोडीहार), पोस्ट—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गनेस जी सहाए॥ श्री महादेव जी सहाए॥ श्री सीताराम जी सहाए॥ श्री काली जी सहाए॥ श्री दुरगा जी सहाए॥ श्री पोथी राम जी के बारहमासा॥

॥ चइत ॥

चइत अजोध्या जनमें राम। चनन सो लीपवाएव धाम॥
गज मोतीअन के चौका पुराए। सोने के कलसा दियो भरवाए॥
बरेपट मंदीर।
पठए तुम नार बैरन बन बालक मेरो॥

॥ बैसाष ॥

बैसाष मास रोतु ग्रीषम लाग। पवन चलें जैसे जजर के आग॥
जैसे जल बिनु तलफत मीन। सो गती हमरी केकई कीन॥
पठए तुम नार बैरन बन बालक मेरो॥

॥ जेठ ॥

जेठ मास लोहु लागत अंग। राम लषन औ सीता संग॥
रामचंद्र पद कमल समान। तलफत धरनी औ असमान॥
चलो कहो कैसे
पठए तुम नार बैरन बन बालक मेरो॥

अंत—

॥ फागुन ॥

फागुन में रंग रचउ रंग। चोवा चनन लाएउ अंग॥
रतन सिंघासन बैठे राम। ठाढे भरथ जी करे परनाम॥
अनंद बधाए।
पठए तुम नार बैरन बन बालक मेरो॥

॥ भोग ॥

जो नर गावही बारह मास। तेही कर होए बैकुंठ ही बास॥
गावें भवानी अवधपुर धाम। बन से आए लछुमन राम॥
मीलें कौसीला सं।
पठए तुम नार बैरन बन बालक मेरो॥
इति श्री पोथी बारहमासा संपुरन॥

जो देषा सो लीषा मम दोष न दीअते संमत् १९४१ मीती पुस बदी एको लीषा है दसषत हनुमान पांडे।

विषय--राम के वन चले जाने पर कौशिल्या का विलाप वर्णन ।

संख्या २५६ख. कौशिल्या की बारहमासी, रचयिता--भवानी (?), कागज--देशी, पत्र--८, आकार--६ × ४$\frac{७}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--कैथी, लिपिकाल--सं० १६३३ वि० सन् १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान--मुंशी मदनकिशोर लाल, ददरीघाट, पोस्ट-गाजीपुर, जिला-गाजीपुर ।

आदि--श्री गनेस जी सहाए ॥ श्री सुरसती जी सहाए ॥
श्री कौसिल्या की बारहमासी ।
पठए तुम नार बैरन बन बालक मेरो ॥

:o: :o: :o:

— १ —

चंइत अजोध्या जनमें राम । चंदन से छिरकावत धाम ।
की गजमोतीअन के चौक पुराए । सोने के कलस दीअना धराए ।
पठए तुम नार बैरन बन बालक मेरो ॥

अंत--
फागुन मास सरसाने अंग । रंगा चोवा चंदन लावत अंग ।
की लीही भरथ जी घोरे अबीर ।
केही पर छीरकौ विना रघुबीर ।
पठए तुम नार बैरन बन बालक मेरो ॥

:o: :o: :o:

जो यह गावही बारहमासा । सो पावही वैकुंठ नीवासा ।
की कहत भवानी अवधपुर धाम ।
वन से आए लछमन राम ।
मीलती कौसिल्या
पठए तुम बार बैरन बन बालक मेरो ॥

कौसील्या की बारहमासी संपूरन लीखा सुभ महीना जुलाई तारीख २३ सन १८७६ ईसवी ।

विषय--राम के वियोग मे कौशिल्या की अवस्था का बारामासा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है । कुल आठ पत्रे है । रचयिता तथा रचनाकाल अज्ञात है । एक स्थान पर "कहत भवानी" आया है । इसके आधार पर रचयिता भवानी प्रतीत होते है । अन्य कोई परिचय नही मिलता । लिपिकाल सन् १८७६ ई० (संवत् १६३३ वि०) है । रचयिता ने भगवान रामचंद्र जी की अनुपस्थिति मे कौशिल्या की अवस्था का वर्णन सरल भाषा मे बडी उत्तमता से किया है । यह दिखलाया कि वर्ष के बारह महीनों किस प्रकार उनकी वियोगाग्नि (दुःख) मे परिवर्तन हुआ था ।

ग्रंथ की लिपि कैथी है । काव्य की दृष्टि से ग्रंथ उत्तम है ।

संख्या २५७. सत कविकुल दीपिका, रचयिता--भारथ साहि या भारथ सिंह (स्थान-देउरा), कागज--देशी, पत्र--७४, आकार--११$\frac{६}{१०}$ × ५$\frac{१}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२७१४. पूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि-नागरी, लिपिकाल--सं० १८६७ वि०, प्राप्तिस्थान--ठा० लाल संकर्षण सिंह, ग्राम-सुंदरपुर, पोस्ट-बारा, जिला-इलाहाबाद ।

आदि..............अस्तोत्र लिषते ॥

॥ त्रोटक छंद ॥

ससि सीस गज मुख कर्न जुतं । गिरिजाज गणेस स...... ॥
उ................ वितं । उर ध्यान धृतं कृततुं कवितं ॥
सुभ कंचन कुंकुम काए वरं । इभ मुक्त मई सुभ माल गरं ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

श्री जगदंम कदम बल मोहि जासु विस्वास ।
एह सत कवि कुल दीपिका तेहि वुधि कीन प्रकास ॥
बांधव गढ़ सब गढ़नि वर विरच्यौ जेहि सौमित्तु ।
दुर्गम दुसह दुरुह अति उन्नत अमित पवित्तु ॥
दीर्घ कोस लौ उच्च अति कोस चकरई चारि ।
केदली केतकि आदि वन चहुँदिसि पूरित वारि ॥ ४ ॥
घेरि सिषर चहुँ फेरि जहँ सिध्यन केर निवास ।
होम धूम प्रगटत महा निसि वासर चहुं पास ॥
अस गउ के वर भप भै सालिवाँह तेहि नाव ।
ताहि सहोदर पुन्नि मे प्रीथीचंद भै राव ॥
वांड पर्दवा पाइ तिन कीन अमलिआ धाम ।
जमुना तट पावन परम सुष समूह वसु जाम ॥ ७ ॥
रवितनुजा पुनि हरिप्रिया जमअनुजा कहि सोइ ।
गुनावाद को कहि सकै सेस सारदा सोइ ॥ ८ ॥
प्रिथी चंद के प्रथम सुत कर्नराए जेहि नाम ।
छोड़ि अमिलिआ सो वसे देउरा गुनमै धाम ॥ ९ ॥
ताके सुत वर पुन्नि मै नाम मेदिनी सिंघ ।
तेहि सन्मुष खलहु हृदै भुलिहु रहै न रिंघ ॥ १० ॥
ताके प्रथम कुमार भे मानसिंघ जेहि नाम ।
ताके सुत वर पुन्निमै राईसिंघ जसुधाम ॥ ११ ॥
तासु तनै वर जुध्य कृत जसी राव कल्यान ।
फते सिंघ ता सुत भए सुंवर सीलनिधान ॥ १२ ॥
ता सुत भे पुनि राइ जिव महासुभट रनधीर ।
वानि षानि गुन मानि हित अति भरि ग्यान गंभीर ॥ १३ ॥
सत्रुसाल ता तनुज भो जाचक करत निहाल ।
गाऊपाल ब्रहमन सहित सत्रुन के वर काल ॥ १४ ॥
प्रिथीपति ता सुत भए महा सुभट रनधीर ।
तेज देवाकर रूपससि सारग ज्ञान गंभीर ॥ १५ ॥
ताके प्रथम कुमार भो नाम विक्रमाजीत ।
जनपालक घालक दुमन ब्राभन कुल के मीत ॥ १६ ॥
प्रतापदित्य ता तनुज भो जग्रराज सुत ताहि ।
छत्रपती ता सुत भए दाता सील निवाहि ॥ १७ ॥
हरी सिंघ विक्रम अनुज ता सुत भारथ साहि ।
एह सत कवि कुल दीपिका कीन्हौं ग्रंथ निवाहि ॥ १८ ॥

छंद चौपाई जाति सब सबके वर्न प्रमान ।
दूषन भूषन नाएका समुझेहु चतुर सुजान ।। १६ ।।
अलंकार रस हावजुत भाव अनेक कवित्त ।
सोरठ छप्पै दोहरा सो सब समुझेहु चित्त ।। २० ।।
अरुन असित सित पीत पुनि मिश्रित नील सु धूम ।
प्रथमहि सतकवितो कहा सो सब भाषेउ भूम ।। २१ ।।

।। अथ कवित्त दूषन बर्नन ।।

दुज नेगी मूरष सषा दोषित कबित समाज ।
भनि भारथ एह परिहरयौ कहत सकल कविराज ।। २२ ।।
पंगु वधिर आंधर मृतक नग्रन कीजे मित्त ।
भनि भारथ एह भांति सव दूषन कहत कवित्त ।। २३ ।।

मध्य---अथ भाव अभाव मुग्धा अभिसारिका के उदाहर्न ।।

।। घनाक्षरी छंद ।।

नवल सलोनी लोल लोचन विसाल जाके उरज माल मुष सोभित मयंक है ।
आई वृजवाल वाल वोल निसु शैन काजै चलहु गोपाल लाल बैठे परजंक हैं ।
प्रथम जुवति जानि प्रीतम सनेह पुरे समुझि कलेस वड़ पाछे किअ संक हैं ।
"भारथ" भनत भामयी रथै निधान रंगी परिहि निदान कीन्हें दीन्हौ विधि ग्रंक हैं ।।६४।।

।। दोहा ।।

गवन कीन निज पति भवन अली ढकेलति ताहि ।
मांनहु मत गयंद वर लिहे महावत जाहि ।।२८२।।

।। अथ विरोधाभाव लछन ।।

बरनत होहि विरोध जहं उहै विरोधाभास ।
प्रथमहि ग्रंथनि बूझि मत कविजन कीन प्रकास ।।२८३।।

अथ विरोधाभाव अलंकरि मध्या अभिसारिका के उदाहर्न ।।

।। सवैआ ।।

केलि के भौन तहा तकिकै पति साँझैहि ते हठि सेज बिछायो ।
आइ गई ललना पलना ढिग धै चोलना तह लाल बलायो ।
प्रेम अनंद समूह बढ़यौ हसि लाजनते तिन दीठि छिपायो ।
माल सवारति लालन ही मुष बाल रसाल महा छवि छायो ।। ६५ ।।

।। अथ विसेषा अलंकार लछंन ।।

।। दोहा ।।

जेहि कारज की साधना विरह विकलता होइ ।
भनि भारथ भै सिद्धि सो कहब विसेषा सोइ ।। २८४ ।।

ग्रंत---

सारथ मधू वुध्य रस जानी । कुसुम सार्क मकरंद वषानी ।।
द्रीगो ह्रिषिक पुनि इंद्री होई । एहि प्रकार भाष्यौ कवि सोई ।।
जुगल जमल जुग दुंद वषानी । उभै मिथुन विवि द्वौ विअ जानी ।।
माल्य कहिस श्रक कवि भाना । दाम गुनवती नाम वषाना ।।
हे कवि जन एह मोर निहोरे । वांचेहु टुटव वरन सव जोरे ।।
मोर विनै एह मानब भाई । विसरे वरन सुदेव बनाई ।।

॥ दोहा ॥

लंबोदर श्री सारदा तुअ पद करत प्रनाम ।
त्राहि त्राहि भाषत तुम्हें करहु हिदैं मम धाम ॥ ६७१ ॥

इति श्री मत विविधि विधि सत कविकुल दीपिकायां श्री भारथ सिंह विरचितायां ग्रंथ समाप्त संमपुने सुभस्तु । कवितं दुषन भेद गनागन देवता फलाफल झूठ साँच वर्न टेढ भृको अवर्त सौतिन्ह कठिन सुष दुष चंचल वर्न रितुराज श्री राजारानी राजकुमार प्रोहित सेनापति आषेटक मंडन भेदजुक्त जुक्त भरि अतिसयो उपमा अलंकार किलकिंचित हाव नसिका भृगुटी बेनी केस नाक मुक्ता लोचन मुष पद नषसिष सर्व अंग भूषन वसन सर्व सिंगार राग अनुराग अर्थ विधान नाम निधान भरि वर्ननो नाम नौमो अध्याई ९ जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष ना ॥

॥ दोहा ॥

जो प्रति देषा सो लिषा बौर बुध्य नहि मोहि ।
लंबोदर श्री सारदा बिनै करत मै तोहि ॥ १ ॥
ग्रंथ समाप्त कौन है कृष्ण पक्ष कहु सोइ ।
बुधजन सो एह बिनै करि दोष न दीजै कोइ ॥ २ ॥
संमत एक आठ सए नवे मात कहाइ ।
भौमवार बौ त्रयोदसि ग्रंक महीना आइ ॥ ३ ॥

राम....राम....राम....राम....राम....राम....

विषय--पिंगल, झूठ, सत्य, टेढा, त्रिकोण, आवर्त, सौत, कठिन, सुख, दुख, चंचल, वर्ण, ऋतुराज, राजा, रानी, कुमार, पुरोहित, सेनापति, आखेट, जुक्ताजुक्त, अतिशयोक्ति, उपमा अलंकार, किलकिंचित हाव, नखशिख, शृंगार, राग अनुराग और अर्थ विधान आदि विषयों का वर्णन किया गया है ।

ग्रंथ में निम्नलिखित नौ अध्याय है --

१. अध्याय--कवित्त दोष वर्णन--पत्र १ से ४ तक
२. अध्याय--देवता, फलाफल, झूठ, साच, टेढ त्रिकोण आदि वर्णन--पत्र ४ से ११ तक
३. अध्याय--ऋतुराज, राजा, रानी वर्णन--पत्र ११ से १६ तक
४. अध्याय--राजकुमार, पुरोहित, सेनापति और आखेट वर्णन--पत्र १६ से २७ तक
५. अध्याय--मंडन, भेदवर्ग युक्तायक्त वर्णन--पत्र २७ से ३५ तक
६. अध्याय--अतिशयोक्ति, उपमा, किलकिंच हाव वर्णन--पत्र ३५ से ४३ तक
७. अध्याय--नखशिख वर्णन--पत्र ४३ से ५३ तक
८. अध्याय--मुखपद, नखशिख, सर्वअंग, सर्वभूषण वसन, सर्व शृंगार, अनुराग और अर्थ विधान वर्णन--पत्र ५३ से ६३ तक
९ अध्याय--वस्तुओं के नाम वर्णन--पत्र ६३ से ७३ तक ॥

संख्या २५८. डंगवे पुरान, रचयिता--भीम, कागज--देशी, पत्र--३१, आकार--८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--६६७, पूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि--कैथी, रचनाकाल--सं० १५५० वि०, लिपिकाल--सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० राम अनंद तिवारी, ग्राम--दरवेशपुर, पोस्ट--भरवारी, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--

श्री गनेस नमह भवनी मत सहोइ । गुर गोविंद ए नमही ॥
प्रथमी बंदौ गुर कै पव । जेतौ उपदेस जगती की छुट्टी ॥

नवन नरायन गनपती देवा । सद सुमन कै वंदौ पाआ ।।
बोगुन हरन सीव संकर सोहे । हरो लट चंद्र तीनुपर सोहे ।।

:o: :o: :o:

सुमीरे स्वामी गनपती कुछु सुमतो गती पऊ ।
भवै कथा डगवै प्वा कुरमौ रउ ।।

सारद और गनेस वर दीन्ह । तौ मं कथ अरभेन कीन्ह ।
तेही पछे सवैरं गन नहा । कर सहस जग पर गहा ।।
कीस्न कस कोन्हौ हररो । कंस पडवन लीन्ह उबरो ।।
कवने रूप उरभसो कवइ । कंसे डगी हीं षारों लगइ ।।
सो सव 'भीमी" कहा समुझाइ । बाढें धर्म पाप छे जाई ।।
केसे भउगी केल्ही लगी । सत्य वचन कहा सुभगी ।।
जेहेरे कहे अनेग कली रीपुन च परें पर्रा ।
कीस्न चरी कछु गवें भरथ कथ वीचरो ।।

संवत् पंद्रह से पचास जव भएउ । द्रुमुख नम सवत चलो गयेउ ।।
सावन सुकुला सतीमी आइ । डगव कथा "भीम" सुनाइ ।।
कवन नग्र कैस्नो ठाऊ । कान देस कान सो गाऊ ।।
जहव भए कवी सर वीचरा । तहं वसत हे कौन भुअर ।।
पुहुमी धर्म प्रन एक देसा । वस लाग नीमल रेह ।।

:o: :o: :o:

तव वसहो भोपती मन असे । जकरी कीती चहुपड मे वसे ।।
अती उरहा भ अनसन । नरपती अहीन काउ सन ।।
सुवत नीह देन वहुत सो दीन्ह । कसो गव करवट कीन्ह ।।
तकर पुरुष कहे वीचार । जकर मंडन सव संसार ।।
तेही संगल मनीक देरनी । प्रतछक दुग्र अदीभ वनी ।।
दोउ पछसो न मिलो जेही के गारी अरधंग ।
पुर्वाल फल सो पावें प्रतछ्व देवी गंग ।।

नसैं कवी दोसन को देही । जो कर्वा अपन नाउ न लेइ ।।
कवीत तहवां भं उतपता । कंसन नग्र कौन सो जती ।।
नग्र अमर सव बरे कहा । वसुक इंद्र देव तीस लहा ।।
जती के कएथ करन कुवेरु । मही मतही कली नेम अचरु ।।
तासुत नौरतन वर वीरू । अती प्रचंड नीक सुसरीरू ।।
मत मतग वीरु मन दीन्ह । तव तेनह सव गवरह लीन्ह ।।
तेही कुल भीम वरीआरा । वैरी वुधी वहु वंसरा ।।
कहै चहै कछु कथ सुभउ । भरथ कथ डंगवे गऊ ।।
चह्ल उषं फीरी अवे कम्हइ । सोइ प्रीती कंठ मन लइ ।।
मंज अभै वती पालहु जनी कोउ होइ अरीच ।
वोछ सवरेहु....धी जन मुरष के नं न सोच ।।

:o: :o: :o:

अंत—

कहै भीम सुनु स्वामी प्रसन दीलवयाल ।
अंत कल नही वचै कीपवंत जन जाल ।।

इति श्री महभरथ डंगी.....सरन संपुरन सुभवस्तु सुभरस्तु ॥ संवत १७७७ समै मम संवतसरे मीती जेठ वदी पंचर्मांकि पोथी उत्तर नरएन षी....म....**जो देष सो लीष मम दोस न दीजै**......।......

विषय—महाभारतातर्गत डगवै कथा का वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

१५ ५०

संवत पंद्रह सै पचसै जव भएउ । द्रुमुष नम संवत चली गयेउ ॥
सावन सुकुल संतीमी आइ । डगवे कथं 'भीम' सुनाइ ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है, पर अत्यन्त जीर्णावस्था में। यह पत्राकार रूप में लिखा गया है। रचनाकाल संवत् १५५० वि० है और लिपिकाल संवत् १७७७ वि०।

संख्या २५६. हरि लीला सोलह कला, रचयिता—भीम, कागज—देशी, पत्र—१००, **आकार**—६$\frac{१}{१६}$ × ५$\frac{१}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १५४१ वि०, लिपिकाल—संवत् १७२६ वि०, प्राप्तिस्थान—संग्रहालय हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

आदि—**श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वै नम. ॥ श्री गुरूचर्नकमलेभ्यो नमः ॥ भीम कला भागवत लषं छे ॥**

श्रीकृष्णाय नमःस्तुभ्यः भक्तान्न गृह कारणे ।
न्म पत्रय नीवारणे वासुदेव नमोस्तुतेः ॥ १ ॥

॥ पूरव छाउ ॥

प्रथम श्लोक पाचे करी कीधो कृष्ण प्रणाम ।
वीघ्न रहीत वाणी वांषे गासु हरी गुण ग्रांम ॥ ६ ॥

॥ चोपई ॥

मूष जीह्वा वीष वेली संमान्य । श्रेणे नही गोव्यंद गुण गांन ॥
कथा शुंणे नहीं को तरस कर्णः । वक्ष तणाते कोटर कर्ण ॥ ८ ॥
तूंबी फल नर मस्तग तेह । वोल्नूं चर्णन मे नही येह ॥
हरी कथा जे आदर नही । पुरुष स्थाणु ते कहिए सही ॥

मध्य—**गीतराग वसंत वेराठी**

अनंव एक अभी नवोरि वृंदावन मो झारय ।
वंश वजावै वठिलोगी तेणि छंदि नाचे नारय ॥ ३५ ॥
वृंदावन गोपी नाचेरि तेणि एंये राचे राम ।
राग मधूर स्वर अलवेरि गाए हरी वीलास ॥
सुंदरी श्रवन व पाव नारि रंग मरच खेल्ये रास ॥ ३६ ॥
पावन्य वृंद वीनती तरुणीरि । माहे सामल वनः ।
"भीम" भणे अंतरय ले लागोसि ध्यंन्य ध्यंन ते गोपी जन ॥ ३७ ॥

अंत—

भक्त वैराग्य वीवेक वीचार । सम्यक पाया पोहोता च्यारः ॥
सोल कला समरस ए कथा । सोहे स्वजन तणं मन यथा ॥ ६ ॥
आसो मास तणी पूर्ण्यमा । जांण्ये करच ऊग्यो चंद्रमा ॥
सोल कला शशी हरनी कलंक । एह श्रीकृष्ण कथा सकलंक ॥ ७ ॥

संवत १५ रुद्रनी वीस । व्रर्ष एक उपरय च्यालीस ।।
ऊतमे ऊत्तरायण वीशेष । रतू वसंतः संक्रात्य मेष ।। ८ ।।
पत्थ मदसूदनः मास वैईसाष । तीथी सप्तमी अजूआलो पाष ।।
गंडयोग पूष्प रूषी गुरूवार । व्यंग्णज कर्ण शुभ लग्न अपार ।। ६ ।।
सीध्य क्षेत्र माधव सरस्वती । रुद्रदेव श्री कर्दम ज्यती ।।
अलष गणेशनि ईश केदार । गोव्यंद स्वामी भक्त साधार ।। १० ।।
सांनीध्य संमस्त वईष्णव तणी । कथा अनोपम शोभा घणी ।।
हरी लील्ला सोल कला नांम । वीष्णु भक्त केरो वीश्राम ।। १ ।।

:०: :०: :०:

"भीम" भणे भागवंत वीचार । ग्रंत क्रमणी रमणी उपार ।।
ब्राह्मण तणे प्रसादे करी । की धी कथा संतोषो हरी ।। १८ ।।

इती भागवत स्थानूक्रमणी रमणी कृता। व्रांह्मणना प्रसादेनः । भीमेनानंत प्रीतए ।। १६ ।।

इती श्री हरी लील्ला सोल कला भीम वीरचितेः सोल कला सम्ल संपूर्णमिति ।।२०।। स्माप्तः शुभं भवतु । श्री कल्याणमस्तुः ।

:०: :०: :०:

यादृशं पूस्तकं द्रष्टा तादृसं लिषतं मया । यदी शुद्धमशुधं वा मम दोषो न दीयते ।।३।।

संवत १७२६ वरषे अश्वन वद पंचमी शूक्रे वाराणषी वास्तव्यं । श्रारे लासां तीयत्र वाडी पूंजी आसूत त्रवाडी प्रेमानंद लषीतं । स्वयं पठनार्थ ।। श्रीरस्तु ।। ६ ।।

विषय--भागवत का विषय संक्षेप मे वर्णन किया गया है। ग्रथ सोलह अध्यायो (कलाओ) मे है।

रचनाकाल

संवत १५ रुद्रनी वीस । वर्ष एक ऊपरय चालीश ।।
ऊत्तमे ऊत्तरायण वीशेष । रतू वसंतः संक्रात्य मेष ।। ८ ।।
पत्य मदसूदन मास वैईसाष । तीथी सप्तमौ अजूआलो पाष ।।
गंड योग पूष्य रूषी गुरुवार । व्यंग्णज कर्ण शुभ लग्न अपार ।। ६ ।।

संख्या २६०. चक्रव्यूह, रचयिता--भीमसेन, कागज--आधुनिक मोटा सफेद, पत्र--१६, आकार--११½ × ८ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--४६४, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सवत् १६०७, प्राप्तिस्थान--डा० राजाराम सिंह जी, ग्राम--जगतपुर, पोस्ट--मरदह, जिला--गाजीपुर।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। श्री पोथी चकराव्दुह लीष्यते ।।

विघन विनासन भयहरन होत वुधी परगास ।
नाम लेत गनेस कों होत सबु कों नास ।।

।। चौपाई ।।

गननायक मोहि कीजै दाया । केस छोरि बंदो तुम पाया ।।
लेउ देवी अब नाम तुमारा । असुर जिति महिषासुर मारा ।।
भीम सुमिरिकैं कीचक मारा । कृष्ण सुमिरि कंसासुर मारा ।।
राम सुमिरि रावन कहु मारी । महायुध कीन्हा बनवारी ।।

॥ दोहा ॥

दोइ कर चरन मनावो मोहि सुमति मति देहु ।
कंठ मोरे निवासहु जग जननी जस लेहु ॥

अंत—

॥ चोपाई ॥

जो फल कीन्हे तीरथ केदारा । चक्राव्हू सुने वेवहारा ॥
जेइ सुनै मन हुवै वीचारा । जनु दरसन भये वाल मुरारी ॥
परसोतां सुनं जो मन चीत लाई । सुनतहि कन्या मोछ होय जाई ॥
गउ धन माह जो कहे बुझाइ । पसु के रोग तो सवे नसाइ ॥
नर के रोग जो कैसहु होई । सुनतेहि कथा सुफल तेहि होइ ॥

॥ दोहा ॥

चक्रावुह कथा जा सुनै एक चीत लाय ।
भीमसन कविता कहे वाम्हलोक सो जाय ॥

इति श्री पोथी चक्रावुह सपुर्ण जो देषा सा लीषा मम दाष न दियते ॥ पंडित जन सो बीनती मोरी टूटा अछर लेव सब जोरी ॥ सबत १६०७ चत सुदि २ सुक्र वार के राम ॥

:o: :o: :o:

विषय—महाभारत के अन्तर्गत चक्रव्यूह की लड़ाई का वर्णन ।

संख्या २६१. माधव विलास या माधवानल काम कंदला, रचयिता—भीष्म, कागज—देशी, पत्र—५७, आकार—६¾ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०० वि० (संभवत), प्राप्तिस्थान—कुंवर लक्ष्मणप्रताप सिंह, ग्राम—साहिपुर (नीलखा), पोस्ट—हंडिया खास, जिला—इलाहाबाद ।

आदि . . . .

नभ वसु (८०) बरष गणिए सुपद कातिग मास ।
सुरगुर सुकुल त्रयोदसी कीन्हो ग्रंथ प्रकास ॥
अति पुनीत पुष्पावती पुरी सुन्दर सब काल ।
पुन्य पुंज तह अवतरयो गोविंद चंद भुवाल ॥

:o: :o: :o:

जुवती तिहि क्षितिपाल को कहे सुकवि से सा. ।
. . . .
. . . . . .सील जोवन गुण सो सब क्यो कहि जात ॥
. . . .

:o: :o: :o:

॥ कुंडलियां ॥

जैसे मे संसार की रचना रचत अनूप ।
तैसे सुरपति सारदो रचत सु अद्भुत रूप ॥
रचति सु अद्भुत रूप कृपा जापर अनुसरई ।
अति मति मंद सुरेस ताहि मोसम हरि करई ॥

अंत—

॥ सवैया ॥

मूरति माधव की उर राखि रही हठिकै नरनायक सौ जब ।
चंदकला जीय जानि नरेस हरे हिय उपर पाप धरयो तब ।

संकट सौंह दिवाइ रिसाइ कह्यौ इमि प्रीतन क्यौ परस्यो अब ।
धेनु धरासुर कों पग सों परसे नसै पुण्य पुरातम को सब ।। ४०१ ।।
कलहंस
सुनि तासु असंभव बैन नसो नृपना................
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—माधवानल कामकंदला की कथा का वर्णन ।

संख्या २६२क. गीता, रचयिता—भुग्राल, कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—$४\frac{९}{१०} \times ३\frac{९}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पंडित रामलछन पांडेय, ग्राम व पोस्ट—नवली, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेस सए णमः ।। श्री रमजीउ सहइः श्री हणमणजीउ सहइः ।। श्री पोथी अरजुण गीत लीखतणमः ।।

सुमिरौ अदी एक करातर । सुमिरे नम होइ णीसतर ।
सुमिरौ गुरु गोविंद के पउ । अगम अपरा है जेहकरा नउ ।
करणम प्रभु अंतराजमी । अगम अपर है जेह कर नम ।
भगत भउदे गरुरागमी । दीणदअल तुम वल कनइ ।
अपने जन क होहु सहइ । कीरप करहु तुम सरगपती ।
नीरमल अछर कहीं वखनी ।।

।। दोहा ।।

कीराप करहु जग जीवन, वीनती सुनहु प्रभु मोरी ।
अपने नम प्रगसहु कहै भुजल कर जोरी ।

:o: :o: :o:

संवत सुनै कहै परावण । सहस्त्र रूप तीन्ह कही जन ।
मक्र मस जो कीसन पछ भएव । दुतीए अरथ रहसुए गएव ।

अंत—

मन चकीत के राखेहू परसम मन लाइ ।
त्रीवीधी पाप सव नसै कीसन कहै समुझाइ ।

श्री भगवनो वचः इती श्री भगवत गीता सुपनेस असतुति ब्रभ वीश्व लोग सहस्त्र श्री क्रीसनो अराजुनो समध नम अठरहमो अध्य ।।१८।। इती श्री भगवन गीत भगवन भरव अराजुनो संमधा ।। ग्यान पत्रं संपूरनः जो सुनै औ पढै तेही क गंग असनन् ।। औ पुत्र कल्पन ।।

पंडित जन सो वीनती मोरी । टूट अछरा लेव जोरी ।
सब संत कैं सीत राम । श्री व्रह्मन को प्रनम ।

प्रती देखा सो लीख मम दोख न दीअते । महीन पूस सुकुला पछी तीथी पंचम को संपूरन ।

:o: :o: :o:

विषय—भगवान् श्रीकृष्ण का अर्जुन को ज्ञानोपदेश करना ।

संख्या २६२ख. भूगोल पुरान, रचयिता—भुग्राल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—$६\frac{३}{४} \times ६\frac{३}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८६२, प्राप्ति स्थान—ठा० रघुनाथ सिंह व ठा० जंगबहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री भूगोल पुरान ।। श्री गनेस अएनम्ह ।। श्री सारदा भवनीअएनम ।। श्री भूगोल पुरन ।।

वार्नो अदी अलष करतार । सुमीरहु नाम होए नीस्तार ।।
सुमीरो गुर गोवीद कर पाउ । अगम अपार जही कर नाउ ।।
करुनामै तुम्ह अंतरजामी । भगती भाव दे गरुडगामी ।।
कीपा करहु तुम मारंगपानी । नीरमल अछर कहो वषानी ।।
दीन दआल तुम बाल कन्हाइ । अपने जन कह होहु सहाई ।।
कीर्पा करहु तुम सामी बीनती सुनहु हमारि ।
भगतीभाव देहु स्वामी कहै "भुआल" कर जोरि ।।

अंत—

राज वीक्रम भये ।। राज वीक्रमाजीत भए ।। वीक्रमजीत के भावी भए ।
भावी के करकु भए ।। करकु के महीपानी भए ।। मही पानी के पानी भए ।
पानी के मही दुपानी भए । मही दुपानी के वीक्राम देव भए ।
:o: :o: :o:

तन कुर के राजा सुक्रकेतु भए । एते राज उतपन्न भए। लीप्रकहू को सके ।।

इती श्री भोगल पुरान सपुरन समात पंडीत जन सो वीनती मोरी टुट अछर सब लेहु जोरी संवत १८६२ ।। कं मल सर्म नम मानी अषट वदी तेरसी १३ वरा बुध वराके ली० सीउवकस सींघ सोमवंसी कथ सामातुल ।।

विषय—भगोल का वर्णन किया गया है ।

संख्या २६३. महाकवि भूषण के कुछ नवीन छद, रचयिता—भूषण, कागज—आधुनिक मनदार, पत्र—१३, आकार—८ × ६¼ इच, पन्क्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११० पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—जयपुर के महाराज रामसिह की प्रशंसा ।

अकबर आयो भगवंत के तनय जू सो बहुरि जगत सिह महा मरदाने सों ।
"भूषन" यो पायो जहागीर महासिह जू सो शाहजहाँ पायो जयसिह जग जाने सों ।
अब अवरंगजेब पायो रामसिह जू सो औरो दिन दिन पै है कूरम के माने सो ।
केते राव राजा मान पावं पातसाहन सो पावें पातसाह मान मान के घराने सों ।।१।।

जयपुर के महाराज जयसिह की प्रशंसा

भलो भाई भासमान भासमान भानजा को भानत भिखारिन के भूरि भय जाल है ।
भोगन को भोगी भोगीराज कैसी भांति भुजा भारी भूमिभार के उबारन को ख्याल है ।
भावतो भभानि भूमि भामिनी को भरतार भूषन भरतखंड भरत भुवाल है ।
बिभौ को भंडार और भलाई को भवन भासे भाग भरे भाल जयसिह भुवपाल है ।।२।।

अंत—

आपस को फूट ही ते सारे हिन्दुवान टूटे टूटचो कुल रावन अनीति अति करे ते ।
पैठिगो पताल बलि बजधर ईरषा ते टूटचो हिरनास अभिमान चित धरे ते ।
टूटचो शिशुपाल बासुदेव जू सो बैरि कर टूटचो है महीश दैत्य अधरम चरे ते ।
रामकर छूवन ते टूटचो ज्यो महेश चाप टूटी पातसाही शिवराजे संग लरे ते ।।२६।।

विषय—महाराज राम सिह (जयपुर) महाराज जयसिह (जयपुर), शिवाजी और साहू जी के प्रशसा के तथा नायिका भेद-विषयक कवित्तो का सग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य---रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए है। रचयिता भूषण हैं जो शिवाजी के आश्रित थे। प्रस्तुत कबित्त नए प्राप्त हुए है। "प्रभा" ये मे प्रकाशित भी हो चुके है।

संख्या २६४. सुमनप्रकाश, रचयिता---भोलानाथ (भरतपुर ?), कागज---बाँसी, पत्र---५०, आकार---८$\frac{3}{4}$ × ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१८, परिमाण (अनुष्टुप्)---६१०, अपूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि---श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुमन प्रकाश लिष्यते ॥

ए मन मधुकर रसिक तूं जौ चाहै सुष मित्त ॥
तौ बिहार करि कृष्न के चरण सरोरुह नित्त ॥ १ ॥
ब्राह्मादिक कीनी विनय क्षीरोदधि के तीर ॥
जदकुल में अवतार मो ह्वै है परह (र) पीर ॥ २ ॥
तह लीनो अवतार प्रभु करे सबै सुर काज ॥
व्रज लीला कीनी प्रथम लीने सुष के साज ॥ ३ ॥
प्रगट भये तिहि वंश में श्री वदनेस नरेस ॥
मथुरा राजधानी लई कीनौ राज सुदेस ॥ ४ ॥
तिनकौ पुत्र प्रसिद्ध भौ सूरज मल्ल महीप ॥
सूरज लौ परताप तिह सबही जंबू दीप ॥ ५ ॥

मध्य--- ॥ उत्तमा लछन ॥

पिय के हित सौ हित सदा अनहित सौ नहि काम ॥
ताही सौ सब कहत है नारि उत्तमा नाम ॥ ३१ ॥

यथा---

चितवत चौहू कौद चारो जाम बीने इन्है पलन लगाये पल एकौ यों बिलषियाँ ॥
रही धरि ध्यान सही बिथाले कहि न जाहि लाष लाष भाति आन भात कैं न लषियाँ ॥
प्रात आये प्रीतम सुजान तुम मेरे गेह एतौ भोला शंकर जोरै रुष रषियाँ ॥
रावरो सलोनो रूप देषै न अघाती मेरी पतीव्रती जू उपासी प्यासी अषियां ॥३२॥

॥ मध्यमा लछन ॥

पति हित कीनै हित करै अनहित कीनै मान ॥
ताहि मध्यमा कहत है जे हैं रसिक सुजान ॥ ३३ ॥

अंत--- ॥ प्रवास लछन ॥

किहूं काज के हेत सौ गयौ पीव परदेश ॥
सो प्रवास जिय जानियौ जानत रसिक नरेश ॥ ३६ ॥

॥ यथा ॥

जबतै गये हैं तबतै न नींद नैनन मै नीदत है दिन रैन बैन गुन गथ के ॥
चैन चित में न इत आवत न काहे हरि बसि कै विदेस बस भए हैं अरथ के ॥
रथ के चढ़े तक ही आये इह आशा लगे रहत है भोलानाथ प्रान नित अथ के ॥
अकथ कथा है बाढ़ी बिपत बिथा है रही नैंकु न तथा है वीर पथिक वा पथ के ॥३७॥

॥ करुण रस लछन ॥

मिलिबो क्यौ हूं बनत नहिं दुष मै जिय अकुलाय ॥
करै दुष्ष करुणा विरह कहियतु है समुझाय ॥

---अपूर्ण

विषय—इसमें रस, नायिका भेद और काव्यांग आदि वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रंथ अपूर्ण है । इसके अंत के कुछ पत्रे नष्ट हो गए हैं ।

संख्या २६५. बारामासी, रचयिता—मंडन, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—५¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—**अथ बारामासयो**

प्रथम चैत को आदि कै चितुराई चित आइ ।
याही क्रमकी आदि सूं कहियत सर्बनि सराहि ॥ १ ॥

चैत्र मास यथा

आयो यह चैत चित चेत ले चतुर चित चिहु ओर चाइ सों चलत पौन मंद मंद ।
फूले बन उपवन सरिता सरस फूली गहगह सुबास फूलि फूलि अति अरविंद ।
मंडन मराल फूले फूल्यो है बिहंग वृंद फूले अति गुंजरत कै कै पान मकरंद ।
फूलि फिर ग्वाल ग्वारू बालगन फूले फिर गाइ गाइ गोकुल मैं नंद ॥ ३ ॥

अंत—

रैन लिष दिरघ दुराइ दल दौरि है एक छन बसै है बिरह निधाम को ।
सीरे सीरे सब ताते ताते ताल लागि जैहे सरस सवाद धन धाम को ।
कैसे कै बिदेस कुं गवन ऐसे करियत है रूसनो न सह्यो परै ज्योंहू एक जाम को ।
मंडन रसाल ब्रजराज बिन जानि परै पोंस नाहि आयो है जसूस यह काम को ॥२०॥

माघ मास यथा

माघ रित आयो यह सकल सवादिन को बन उपबन खग बोलत. . . . . .

—अपूर्ण

विषय—शृंगार विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के दो पत्र संख्या १८ और २२ नहीं है । रचनाकाल और लिपि-काल भी अज्ञात है ।

संख्या २६६. बारहमासी, रचयिता—मगन जी, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—**बारैमासी. . . . .**

लग्यौ है असाढ जब उमगि बादर उठे मोर दादुर करै टैर गहरी ।
पीव ही पीव चात्रिक रटे मास तन कौ घटे कोकिला कुहक सुनि भई बहरी ।
सुनी है टेर जब मदन जोरयो धरयौ बिरह की नदी जहा बहुत गहरी ।
धरकै हियो और फरकै भुजा सोइ तलफै नैन अब वाहा ठहरी ।
कियौ जी मगन अब स्याम गाढौ हियौ सांवरी देह अजहू न लहरी ॥ १ ॥
लग्यौ है सावन सब ताल सरवर भरे दामिनी दमकै इंद्र गरजै ।
पीव परदेस मैं सेज सूनी परी सुनत घनघोर जोवन लरजै ।
जात अहीर पर पीर जानै नही भूलि कैसे गयौ बिरह दरबै ।

द्यौस तौ कढि गयौ राति दुर्लभ भई हमैं कहो बिधना ऐसी सिरजै।
काष मै कतरनी वचन मीठे कहे देषि जी मगन या देस बिरजै॥ २॥

मध्य--

कृष्ण गोपीन की कहा महमा कहूं कही नहि जाय बरनी न आवैं।
कृष्ण गोपीन की मिलनि बिछुरन कथा वहै, जानैं और कौन पावैं।
कृष्ण गोपी मिलैं बौहत आनंद भयौ "मगन" कू मौज दई मगन करिकैं।
कृष्ण गोपी कथा सुनैं सीषैं र गावैं ते नर वैकुंठ बसेरौ पावैं॥ १३॥

विषय--कृष्ण के द्वारिका चले जाने पर गोपियों का विरह वर्णन। जेठ मास मे कृष्ण से मिलन हो जाता है।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल शालिग्राम स्तोत्र के आधार पर स० १८२५ से पूर्व जान पड़ता है।

ग्रथ के साथ निम्नलिखित ग्रथ भी समिलित है.--

१. बारहमासी--अवधूत कृत
२. ,, --लालदास
३. ,, --रघुजी
४ ,, --अज्ञात
५. ,, --खैरामाह कृत
६. जानकी मगल--गो० तुलसीदास
७. कृष्ण मगल--गो० तुलसीदास
८. भक्त विरदावली--अबरदास
९ मांझे--अबरदास
१०. फुटकर (माधोदास कृत "हरषै जानदे" की टेक का पद)
११ शालिग्राम स्तोत्र--संस्कृत

रचयिता का नाम मगन है। इनका और विवरण नही मिलता। इनका यह ग्रथ साधारणतया अच्छा है।

प्रस्तुत ग्रथ की एक दूसरी प्रति भी है जो अपूर्ण है। दोनो प्रतियां एक ही बस्ते में है।

संख्या २६७. गोविद स्तुति, रचयिता--मटुक मनि, कागज--देशी, पत्र--१, आकार--८ × ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--६, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--प० महादेव मिश्र, ग्राम--बढगरा, पोस्ट--कसिया, जिला--गोरखपुर।

आदि...........................

प्रभुजी सुंदर सील नीधान।
गोविद सिरोमनी हे॥

भूषन वंस विभूषन रघुवर दसकंधर सीरहारी।
दीनानाथ दोष भवभंजन जन रंजन हीतकारी॥ गोविंद०॥
करुनामए कंसा सिर षंडन केक पछ सीर सोभैं।
कंज ललीत मुष कोटि काम छवि देषत त्रिभुवन मोहे॥ गोविंद०॥
भृकुटी वीलास स्त्रोष्ट लयकारी कही गावही श्रुति चारी॥
सलेए मोचन विस्व विमोचन अगम अषंड बरारी॥ गोविंद०॥

अभिनासी मन मोहन मुरती अगुन सगुन अनुगामी ।
मन व्यापक हरी अलष अगोचर नाम निरंजन स्वामी ।। गोविंद० ।।
सेवही सेस सक्र कमलासन पती गोरीराज कुमारी ।
चरन रेनु परसत पद पकज भए सीला ते नारी ।। गोविंद० ।।
राम नाम मन विमल वारी धर वरनी ना जात विचारी ।
वाम मटुकमनी सरन राषु प्रभु कथका कहत पुकारी ।। गोविंद० ।।
:o: :o: :o:

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—गोविंद की स्तुति ।

संख्या २६८, कठाभरन टीका, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पृष्ठ—३६, आकार—६½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६१, पु० सं० ७ ।

आदि—अथ कठाभरन की टीका लिख्यते मतिराम जी कृत ।।
कक कवित्त के प्रथम जानिय । पाछे तुक के अंक जानियें ।
अंक १ तुक २ प्रीति दयो करी ३ थारे क्रम सा जो अक्षर सो क्रम त कहो हो अलंकार रीति सों । २ ।। कविता कैसी है चरन छद का चोथो वाटो । वरन जो अक्षर लक्षन जो लक्ष लछन ये सुंदर है करतार जो कवीस्वर रंचिक रीज्यो प अलंकार विना सो मान पावें ।

मध्य—पृ—२१
असंगति अलंकार प्रकार । पहलो भेद । कारन और जगो होय कारज और जगें होय मध्याधीरा नायका, रेनि तुम जागे आलस हमारे अंग में छायो । दूसरो भेद । और ठौर करिबे की वस्तु और ही ठौर करे वह ही मध्याधीरा है दीज जावक पानि में सो लाल भाल मैं दियायो है ।। २ ।।

अंत—यह अत्युक्त भई । उदात्त के अरु याके भेद । उदात्त में संपति बनै । यामैं दान बनें । कलप वृच्छ तो दयो तेर तेज ले सिंधु सूकि गये । पर तेरे रिपुन की रानी रोई यातें फेर भरि गये तो यह सूरता भई, पहलो सूरता साहित्य । पीछे उदारता इहां उलटे सुलटे हैं । निरुक्ति । नाम के योगते और अर्थ थाप सोच गोपाल जो गवार अये राधे सौ वियोग कियो यातें । १ ।। प्रलिखे ध विधि सिद्धे हेते ए अनुजा पीछे व हेंगे । काहू राजा के नाम के लिये राखे आछो चीज है सो पहले चलि गयो अथवा इनमें नायका भेद है तातें न कहे आछी वस्तु कही ग्रंथ वन्यो है यातें प्रसिद्ध बहुत भयो । ली

विषय—नायिका भेद और अलंकार वर्णन ।

संख्या २६९. ब० वा० (बरवै नायिका भेद), रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६½ × ४⅝, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, (दाता—पं० प्रसिद्धिधर जी द्विवेदी, ग्राम—अजगरा, पोस्ट—मदियापार, जिला—आजमगढ) ।
आदि—(१ स्वकीया) लक्षन दोहा
लाजवंती निमु दिन पगी निज पति के अनुराग ।
कहत स्वकीआ सील मैं ताको पति बड़भाग ।। ४ ।।

॥ उदाहरन बरवा ॥

रहत नैन के कोरवा चितवनि छाये ।
चलत न पग पैजनिआ मग ठहराये ॥ ५ ॥

॥ मुग्धा लक्षन दोहा ॥

अभिन (? व) जोवन आगमन जाके तन में होइ ।
ताको मुग्धा कहत है कवि कोविद सब कोइ ॥ ६ ॥

॥ उदाहरन बरवा ॥

लागौ आनि नवेलिहि मनसिज बान ।
उकसनु लागु उरोजवा द्रिग तिरछान ॥

मध्य--॥ षंडिता लक्षन दोहा ॥

पिअ तन और नारि के रति के चिन्ह निहारि ।
दुषित होइ सो षंडिता बरनत सुकवि विचारि ॥ ६६ ॥

॥ मुग्धा षंडिता उदाहरन ॥

सषि सिष सांषि नवेलिआ कीन्हेसि मान ।
पिअ लषि कोप भवनवा ठानेसि ठान ॥ ६७ ॥

॥ यथा ॥

सीस नवाइ नवेलिया निचवा जोइ ।
छित षनि छोरि छिगुनिआ सुसुकन रोइ ॥

अंत-- ॥ दरसन दोहा ॥

दरसन आलंबनहि में "कवि मतिराम" बषानि ।
श्रवन स्वप्न पुनि चित्र अरु तौ परतक्ष बषानि ॥ १५५ ॥

॥ जथा ॥

प्रीतम मिलेउ सपनवा भौ सुष षानि ।
जाए जगाएउ चेरिआ भौ दुष षानि ॥ १५६ ॥

॥ जथा ॥

पिअ मूरति चितसरिआ देषत बाल ।
सुमिरत औध बशेरवा जपि जपि माल ॥ १५७ ॥

:o: :o: :o:

॥ परिहास बरवा ॥

बिहसत भौह चढ़ाए धनुष मनोज ।
लावत उर अपठनवा ऐंठि..........

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--नायिका भेद कथन ।

विशेष ज्ञातव्य--हस्तलेख खंडितावस्था मे है । आदि, अंत और मध्य के कई पत्ने लुप्त हो गए है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या २७०. नीति विलास, रचयिता--मथुरादास कवि, कागज--देशी, पत्न--७, आकार--७ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--११०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १६२६, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, पह० बं० ७३, पु० सं० २३ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ नीति विलास लीखते ।

॥ छप्पय ॥

श्री गोपी जन देव नाथ प्रभु सकल सिधकर ।
मेम आद दे देव रहे चरणन के बस हर ।
श्री वल्लभ के चरण जांवे गोपीनाथ हे बिठल ।
सकल श्रेष्ठ सुख करण देव ध्यावे प्रभु जल थल ।
नरदेव सकल चरणन रहे देव रूप दीखे हदा ॥
दासान चित चरण धरे बुद देयो बांनी सदा ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ७ दोहा ॥

जो नर अपने नाम ते भोत होय प्रसिध ।
सुख सपत आनद मे सदा रहे धर रिध ॥

॥ छप्पे ॥ १६ ॥

पीता नाम प्रसिध होय वो पुत्र रहीयें ।
माता ते प्रसिध होय वो खोटा कहीये ।
नारी ते प्रसिध होय सो निष्ट मानणो ।
ससुर नाम प्रसिध होय फेर निष्ट जानणो ।
बेर व्याह अरु प्रीत ये लायक नर जिनसो करो ।
नागे मनुष्य जगमे बसे वेन शुचित मन मे डरो ॥ १७ ॥

अंत— ॥ कवित्त ॥

आनंद उमंग सो उछरत उछाह लीये गोपी सब ग्वाल बाल वाचत के लोल सो ॥
मदन मोन राजा देव देवन नरेस बली झूलत हे पलनां माहा मंगल हीलोर सो ।
नंद आनद भयो बोरी हरखांनी सब रूप नरम सदा प्रेम अरु चोल सो ।
दास चरण रेणु श्री शरण प्रभु वार वार आप अब राखो दया मे तो रज मोल सो ।३३॥

संवत् १८७६ पोष बदि १ लीखत मथरा दास नीतबिलास सपूर्णम् ॥

विषय—नीतिविषयक दोहे, कवित्त और छप्पय आदि का सग्रह ।

संख्या २७१. गीतगोविंद भाषा पद्यानुवाद, रचयिता—भारद्वाज मथुरानाथ, पत्र—१६, आकार—८। x ६। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२५ (सभवत), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग कांकरोली, हि० बं० ६३।६४, पु० स० ४ ।

आदि—श्री राधा वल्लभाय नमः ॥ अथ हरिगीत छद ॥

नव जलद मेदुर गगन घनबन द्रुमन स्यामा मेदिनी ।
तबु उपरि तिमिराबलि निशा चहु ओर कज्जल भेदिनी ।
इह कृष्ण बालक भीरु है वृषभानुजे निज सत्थ लै ॥
सुभ हत्थ लै निज हत्थ मे गृह गवन कीजै यश्रलौ ॥ १ ॥

मध्य—पृ० १७ अथ विप्रलब्धा नायका वर्ण्यते ॥

ब्रजपति आगम जटित सबाधालखि परिताप प्रकरमति राधा शशधरि बिंब
शशधरि बिंब उदित ज्यो दरसै । अंग अंग आसीविष परसै ॥
हैम भचित सखीजन बचननि । इह बन आइ ठगी हरि रचननि ।
हरि बिन रूप वृथा मम योवन । बिफल सकल शृंगारनि जो जन ॥ ३ ॥

अंत—छंद सोरठा ॥

श्री पद पूरब भोज देव जनक आनंदमय । रामा देवी सो जगत सुक बिजय देवकी ॥३८॥

पाराशर प्रिय वृंद जै हरि राधा चरण जय ।। सो श्री गीत गोव्यंद कंठ बसत जाके सदा ।।

इति श्री भारद्वाज कुलावतंस मथुरा नाथ विरचिते भाषा गीत गोव्यंदे महाकाव्ये जयदेव कृते स्वाधीन भतृका वर्णने पीत पीतांबरो नाम द्वादशसर्गः ।। १२ ।। संवत् १८२५ ज्येष्ठ शुक्ल ११ भृगु बासरे महातमा उतिम चंद लिपंकृतं ।। रुदाई जयपुर मध्ये । श्रीरस्तु श्री कल्याणमस्तु ।।

विषय--संस्कृत रचना । गीत गोविंद काव्य का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या २७२क. चितामणि या हरिनाम गुरु नाम चितामणि, रचयिता--मनसाराम (संभवत.), कागज--देसी, पत्र--४, आकार--६$\frac{3}{4}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--८३, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--**अथ चितामणि लीध्यते ।।**

श्री नरहरि को ध्यान निस बासर उर मै धरो ।
परम सरूप निधान मन वांछित फल देत है ।। १ ।।
सब संतन को जस गाऊं । कछु ध्यान सरूप बताऊ ।।
निस वासुर वुधि विचारो । आपन सबै दुष निवारो ।। २ ।।
निमाहिष कृन सरूपा । त्योर भयउ जल कूपा ।।
ताकै है सिरय अनेका । गोविद दास है वुधि विवेका ।। ३ ।।
तिनके है उधो दासा । केवल दास है वृह्म प्रकासा ।।
रेवादास है वुद्धि प्रकारी । "मनसा" गुन गावै सारी ।। ४ ।।
तिन कीने सिष्य विवेका । व्रह्म वंस मै वुद्धि प्रवेसा ।।
धर्मदास दया विस्तारी । करिहै परि उपगारी ।। ५ ।।

अंत--

श्रीगुरु देव के परताप तै स्वप्न भये निज आय ।
धर्मदास अंके कियो हरि चरण चित लाय ।। २५ ।।
हरि चरणा चित लाय वृह्म कौ निश्चै धावै ।
वृह्म स्वरूप विचारि भक्ति को मारग पावै ।
आवागमन सौ रहित है मतिजा जाणो यह भेव ।
श्री गुपाल कौ रटत है ग्यान भक्ति उपदेश ।। २७ ।।

इति श्री हरिनाम गुरु नाम चितामणि संपूर्ण ।।

विषय--हरि और गुरु के यश का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है । रचयिता का नाम भी सदिग्ध है । परंतु पूर्व विवृत ग्रथ "चौबीस अवतार को जस" की तरह इसमे भी मनसाराम का नाम आने से वही इसका रचयिता मान लिया गया है । यह रचना और 'चौबीस अवतार को जस' एक ही हस्तलेख मे है ।

संख्या २७२ख. चौबीस अवतार को जस, रचयिता--मनसाराम (संभवत:)' कागज--देशी, पत्र--११, आकार--६$\frac{3}{4}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--११८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्य भाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--चौबीसौ अवतार को जस लिष्यते ।।

धर्मदास गुरुदेव कौं तन मन अर्पो सीस ।
पाहन सौ पारस करो सुमर सुमरि जगदीश ।।
हरि गुरु दोउ एक है यो मति जाणो दोय ।
जे जाणेगा दूसरा जाको मुक्ति न होई ।। २ ।।
परसीन के द्वार मै कहुं न पावै ठोर ।
धर्मदास गोपाल को हरि गुरु कै सरनै होय ।। ३ ।।
विज्ञानी वन मै बसै थिर है मंड माहि ।
ज्ञानी पावै ज्ञान कौ बसै गाव कै मांहि ।।

मध्य--

जोगी संकट वोहोर न आवै । जै आवै तो हरि का दास कहावै ।।
मनसा राम परम पद पावै ।। ६७ ।।
निराकार सौ रहै छै नीडा । प्रभु आवागमन मिटावै मेरा ।। ६८ ।।

इति श्री चोवीस अोतारा कोस संपूर्ण ।

यथा--

जोगी संकट वोहोर न आवै । जै आवै तो हरिका दास कहावै ।
'मनसा राम' परम पद पावै ।। ६७ ।।
निराकार सौ रहै छै नीड़ा । प्रभु आवागमन मिटावै मेरा ।। ६८ ।।

विषय--चौबीस अवतारों के यश का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं है । रचयिता का नाम भी संदिग्ध है । ग्रंथ स्वामी श्री मायाशंकर जी याज्ञिक ने संदिग्ध अवस्था मे गोपाल को रचयिता लिखा है । परन्तु मेरी समझ से "मनसा राम" रचयिता विदित होता है । यह नाम ग्रथात मे दिया है --

यह ग्रंथ नव विवरण ग्रंथ "धर्म सवारे" के साथ एक हस्तलेख मे है ।

संख्या २७३क बैताल पचीसी, रचयिता--मनिकंठ मिश्र, कागज--देशी, पत्र--६७, आकार--१३ ३/१० × ५ १/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१४२४, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७८२ वि०, लिपिकाल--सं० १८८१ वि०, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, काशी (दाता--स्वामी देवानंद सरस्वती, परमपुरा, पो०--मार्जापुर) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। **अथ बैताल पचीसी कृत मनिकंठ मिश्र ।।**

।। दोहा ।।

बरषा रितु जल जलद देक वह जोग सुभ पाए ।
जाके कर जाचकन को प्रति दिन बरषत आए ।

।। दोहा ।।

कबि कोविद मनिकंठ तहाँ ता ढिग बसै निसंक ।
फकीर सिघ सेवन कियो कथा बनावन अंक ।

।। दोहा ।।

फकीर सिघ मनिकंठ कह कीन्ह प्रेम अति पुष्ट ।
भूमि हेम बाजिन दियो करि राषेव संतुष्ट ।

॥ चौपाई ॥

बहु धन दै उन कीन्ह निहोरा । विनती यही एक द्विज मोरा ।
आवर कथा मोसो नाही वचीसी । करु भाषा बैताल पचीसी ।
हुकुम राषि सिर उपर महु । तब इह कथा रसायन कहु ।
ढीठे पंडित लोग हसैगे । विन बूझे जड़ जीव हसैगे ।

॥ दोहा ॥

श्रुति रस बरन में चाहत दुषन दुष्ट ।
जेवर भावन बैठिकै नट कांट सो तुष्ट ॥
लोचन वसु मुनि मुक्ष मे माघ सुकुल ससिवार ।
तिथि वसंत की पंचमी भएव ग्रंथ श्रौतार ॥

अंत-- ॥ दोहा ॥

स्वाती सील के रुधिर ते, लिपित कियो बैताल ।
उन दीन्हो वस्तु सिद्धि तव हरषे विक्रम लाल ॥

॥ दोहा ॥

सिर नवाइ सिषवन लगे विक्रम डारी काटि ।
टूक टूक करि मास को, दीन्हों गिद्धन बाँटि ॥

इति श्री वैस वंस अवतंस फकीर सिंध कारिते भाषा बैताल पचीसी ग्रंथे पंच विंशति कथानकं ॥

संमत को परवान इह संत मेष अष्ट सिंगार ।
पूस मास कृष्ण पक्ष पंचमी सुभ रविवार ॥

॥ दोहा ॥

तादिन सुभ पुस्तक लिषो महा विचित्र सुठारि ।
अधीन दास लेषिता हुतो आजमगढ के बीच ।
वंचक सो विनती करो हौ करनी को नीच ।

॥ सोरठा ॥

अधीनदास अस नाम भीषा को चेला हुतो ।
सुमिरचौ सीता राम गुरु अग्या ते लिषि गई ।

श्री सम्वत १८८१ भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदायां भौम वासरे । राम नेवाज अवस्थी ना लेषि पुस्तक लिषाया भैया राधाकृष्ण मोहन लाल वेचूं लाल जी । श्री कृष्णो विजयतेत-राम् । हरिः------

विषय--संस्कृत ग्रंथ बैताल पचीसी का हिंदी पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

लोचन वसु मुनि मुक्षमे माघ सुकुल ससिवार ।
तिथि वसंत की पंचमी भएव ग्रंथ श्रौतार ॥

संख्या २७३ख. बैताल पच्चीसी, रचयिता--मनिकठमनि, कागज--देशी, पत्र--१०६, आकार--१० × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५२६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८९२ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० चंद्रचारुमणि त्रिपाठी, ग्राम--सिरजम, पोस्ट-गौरी बाजार, जिला-गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरवे नमः ॥ श्री गुर रहित हरि गीता

गाधिपुर सरकार में नगरा नगर विख्यात ।
बहु भ सिरोमनि पुर बसै आनंद मय सुष सांत ॥
बेद विधि चारो चरण नर चलत वेद विचारि ।
रथनेम जो मग आपनी नीज धर्म रत शुषकारि ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

तहा राजनीति प्रतीति द्विज पद प्रेम उर में चाहि ।
वंश वम सरोज पुषन भये गांजन साहि ॥

कुण्डलिया

मरदाने ताको भयो वागणसीह सुष धाम ।
दाता दीन दयाल अंनि मदर नत ज्यों काम ॥

:o: :o: :o:

बाना केहरि को भये कृरण सिंह मरदान ।
ताशो लहुरो विदित जग जिन्दसिंह जग जान ॥
दूनो ते लहुरो बहुरि भयो वीर वर वीर ।
पातष मैं कलिकाल लगि गयो सो त्यागि सरीर ।

:o: :o: :o:

विष्ण सिंह के पुत्र है करने दयो विचारि ।
फकीर सिंह जेठो भयो जिन्ह रिपु हयो प्रचारि ॥
अनुज भयो वलभद्र साहि । निज राज राषि के लाज जाहि ॥

:o: :o: :o:

श्री फकीर सिंह हिदयो राज तिलक को भार ।
साम दाम दंड अरु भेद अनुग्रह वीति ॥

:o: :o: :o:

कवि कोविद "मनि कंठ मनि" तहवा बसै निसंक ।
फकीर सिंह को निरषि के अभय बजायो डंक ॥

:o: :o: :o:

वह धन दै उन्हि कीन्ह निहोरा । वचन एक मानि लै मोरा ॥
अवर कथा मो सो न बची सो । करु भाषा बयताल पचीसो ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

कह्यौ महीपति काहु को कीन्ह न मैं प्रणाम ।
कीजं जवने जुक्ति ते सिषै देहु गुण धाम ॥
शिर नवाय सिष वन लगे विक्रम डार्यो काटि ।
टूक टूक करि याहि तन दियो गिधनी वाटि ॥
सांति शील के रूधिर तें किन्हो वृन वेताल ।
उन्ह बीन्हे वह सिषि वहरि हर्ष विक्रम लाल ॥
अगिअन मे तेली भयो कोइला नाम कोहार ।
दोउ विक्रम बांमि परे कहै करै बेवहार ॥

इति श्री वंसवंसावतंस फकीर सिंह कारिते भाषा वैताल पचीसी ग्रंथे पंच विसंति कथ मः ॥२५॥ समाप्तोयं ॥ १८६॥ शा ॥ १७५७ ॥ मार्ग सिर्षे कृष्ण पक्षे चतु गुर्रोदिने ॥ श्री प्रणाममणि त्रिपाठिना आत्महस्तेण लेषणियं स्व पठार्थम् ॥

विषय--संस्कृत ग्रंथ वैताल पच्चीसी का हिंदी पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल का पता नहीं । लिपिकाल संवत् १८९२ है ।

संख्या २७४. वरन चरित्र, रचयिता--मनोहरदास, कागज--आधुनिक, पत्र--९, आकार--७$\frac{१}{६}$ × ६$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--६७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--कैथी, लिपिकाल--संवत् १९३५ वि० (लगभग), प्राप्तिस्थान--पं० छोटकधर जी द्विवेदी, ग्राम--अढनी, पोस्ट--सरायममरेज, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गनेस जी सहाए ।। श्री राम जी सहाए । श्री काली जी सहाए । श्री सुवसती जी सहाए ।। श्री पोथी व्रन चरीत्र ।

धोबी	बड़हो	बहेलिआ	मछुवा
तेली	हजाम	मुसलमान	कलवार
बाभंन	रजपूत	नेटुआ	कसरवानी
काएथ	ततया	रसतोगी	कुरमी

।। दोहा ।। १ ।।

ग्यान के साबुन लेइ के घस धोबीआ मन मीत ।
अंत बीच सफा कर सफल बाजी लगे जीत ।।

।। दोहा ।। २ ।।

नीर छीर एक संग बसे ग्वाला मथी के नीकार ।
झूठ साच मन मे कहै जुदा जुदा करी डार ।।

।। दोहा ।। ३ ।।

पकासरी सो तेलीआ पेरे चुए पका तेल ।
कचासरी सो पेरी के करहु आनही तेल ।।

अंत--

।। दोहा ३० ।।

**सवद अगरवाला होइ रहा देषो मने वीचार ।
मोह भरम सव त्यागी के उतरी चले भौपार ।।**

।। दोहा ।। ३१ ।।

**वरन चरीत्र के भेव एही कहै "मनोहरदास" ।
कुरमी करनी भगवंत की पइहहु नीसचल पास ।।**

समापता

दसषत पंचमराम ।। साकीन कलकत्ता ।। मछुआ बाजार ।। गाडी खाना ।। समत १९३७ ।। मीती चइत वदी ५ दीन रवीवार को तइआर ।।

विषय--प्रत्येक दोहे मे एक वर्ण (जातिगत) का नाम लेकर ज्ञानोपदेश किया गया है ।

संख्या २७५. साखी, रचयिता---मलूकदास, (कड़ा मानिकपुर, इलाहाबाद जिला), **कागज**---देशी, पत्र---१६५, आकार---१०. × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१२, परिमाण (अनुष्टुप्)---८७७, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य लिपि---नागरी कैथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान---बाबा मथुरा प्रसाद और महेश प्रसाद, स्थान व पोस्ट-कड़ा, जिला-इलाहाबाद।

आदि---भैरो

राम कहु राम कहु राम कहु बावरे।
औसर न चुकु भाइ पाआ भला दाऊ रे॥
जीनी तोको तनु दीन्ह ताको न भजनु कीन्हों।
जनम सीरानो जात लोहे को सो ताउ रे॥
कहत मलूक दास छोडी देहीं झूठि आस।
आनद मगन होइके हरी गुन गाउ रे॥ १॥

अंत---बीलावल

अब काहे बहीरे भए हरी सुनते नाहीं।
बरसहु मेहु अघाइ क नीके जग माहां॥
बुरा जोत कै आन क गुष कबहु न सावै।
उबरी जाइ जरयूल ते सार धुर्ना धुनी रोवै॥
कहा हमारा मानीए अब बोल बन कीजे।
टके पसेरी अन करौ सभना गुष दीजे॥
कलजुग ते सतजुग कीजै सभ कंटक मरे।
पापु बढ़त उड़ी गआ राम भले सभले॥
कौरपा क गोपाल जोउ बरसा ओपनी।
कही मलुक अनद भओ सभ जरनी बुझनी॥ १॥

साषी सब एक सए छोअतर १७६ साषी सभ २७६॥ पन्ना १६५॥ आरती कहु ५६॥

विषय---भक्ति, उपदेश, नीति और चेतावनी आदि विषय वर्णित है।

संख्या २७६. बैत सरमद की, रचयिता---महम्मद औलिया (? सरमद), कागज---देशी, पत्र---५, आकार---६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१०, परिमाण (अनुष्टुप्)---३७, अपूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता---पं० हनुमान प्रसाद मिश्र, ग्राम-सोनई बड़ी, पोस्ट-करछना, जिला-इलाहाबाद)।

आदि---दया गुरु की॥ लिख्यते बैत सरमद॥

सभी षलक मे हम फीरै देषा षूब पैछानिकै।
एक रोग गाल्य षलक मे छाया है जालम आनिके॥ १॥
देषा षूब पहिचानि कै एहि आग घर घर जरै।
एक नाम रोग के बीच मैं देषो सभी दुनिया मरै॥ २॥
देषा सुषन पैछानि कै दील बीच मे माने कीया।
एक नाम रोग के बीच मे मुये बुजरुष औलिया॥ ३॥
एक लाष असी हजार ईस रोग मे मरि मरि गये।
कलमा एहि नामा आपने को भिन्य भिन्य कर धरि गये॥ ४॥
कर कर उमत आपनी नाम कारन सिर दीया।
दूजी मजहब तरक कर अपना मजहब काएम कीया॥ ५॥

कहते "महमद औलिया" हम भिस्त कारन आईया ।
सभी षल्क भूली फीरो मर्म काहू नहि पाईया ।। ६ ।।

अंत--

काजी औ पंडित षल्क मे ईलम वेद वषानते ।
करते हकीमी सबन पर ईस रोग को नहि जानते ।।२५।।
कहते सकल जग रोगीया पथ ईलाज सब का करै ।
तहकीक करि देषै नहीं ईस रोग मे हम वो मरै ।।२६।।
इस रोग........................ ।

--अपूर्ण

विषय--सांप्रदायिक द्वेष मिटाने के लिये ज्ञानोपदेश किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचना अंत से खंडित है । रचनाकाल, लिपिकाल दिए हुए नहीं है । विशेष के लिये देखिए दत्तलाल की 'बारादरी' का विवरण पत्र ।

संख्या २७७. रुक्मिणी मंगल, रचयिता--महरचंद, कागज--देशी, पत्र--३७, आकार--७३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप)--८१४, पूर्ण (प्रथम पत्र खंडित)--रूप--जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७१६ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--गुरु पद वदन प्रथमही ।। दुतीय सकल सुहृद (?) ।।
नमस्कार करि जोरि कै ।। वरण सुमरिण छंद ।। १ ।।
गोविंद गौरी गनेस भज ।। तजि मन सकल विषादि ।।
सुफल होय कारज सकल ।। तिनके चरण प्रसाद ।। २ ।।

।। सोरठा ।।

मन उपज्यौ अबिलाष ।। रुकमणि मंगल करण कौ ।।
तीन देव करि साषि ।। ब्रह्मां विष्णु महेस जुत ।। ३ ।।

मध्य--

सो रुकमनि परतिग्या ठांनी ।। आप दरै मोहि सारंग स्वांमी ।।
उहां गयौ उह वृधि मति हीनो ।। कारज उनै भलौ नहीं कीनो ।।
देस देस के भूप चलि आये ।। अनगिन भुवन जात गिनाए ।।
जो उहा विन सु होई लराई ।। कहौ तिनको कौन सहाई ।।
कहै हलधर में अवहीं जाऊं ।। असुर मारि हरि व्याह कराऊं ।।
चढे कोट छपन जब जादौ ।। ज्यौ घन उमड़ै सामन भादौ ।।
चलौ चलौ भाषै सब कोई ।। वार पार वाकै नही कोई ।।
वालिक वृधि तरुन नर नाहा ।। सवहीन के मन भयौ उछाहा ।।

अंत-- ।। दोहा ।।

संवत सतै सै वरस गये शुणीसी वीति ।।
पोस सुदी तिथि पंचमी सौमवार सप्रीति ।।
मंगल कीयौ हेत सौं माहि गंग सुथान ।।
महैर चंद द्विज जग सुन्यौ नगर रूप विधान ।।

।। सोरठा ।।

होयें हरषि नरनारि यह सुनें हित हेत सौं ।।
तिरत न लावै वार भवसागर में आय कें ।।

॥ दोहा ॥

कीयो न मन में ज्ञान कछू श्रवनन सुनी पुरांन ॥
जनम अकारथ हो गयो वढ़ि वढ़ि अभिमान ॥

॥ सोरठा ॥

हरि सुं लावो हेत गुंगा गहिला आंधरा ॥
भक्ति विना नर प्रेत चतुराई जर जान दें ॥

॥ दोहा ॥

सब तजि भजि राधा रमन जब लग घट मे प्रांन ॥
मन वच कर्म करि द्विज कहे पावे पद निर्वान ॥

इति श्री रुक्मिणी मंगल सपूरण ॥

विषय—रुक्मिणी के विवाह की कथा का वर्णन है।

रचनाकाल

संवत सत्रंगं बरस गये गुणीसी वीति ॥
पोस सुदी तिथि पंचमी सोमवार सप्रीति ॥

संख्या २७८. गनगोर के ख्याल (गीत), रचयिता—महादास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७¼ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९२३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, बं० सं० २९, पु० सं० ८।

आदि—श्री द्वारकेशो जयति ॥ संवत् १९२३
अथ गन गोर के ख्याल लिख्यते ॥ राग लुर सारंग ॥
जोबन हो लाग नाजी प्यारा मोया जी सलोना मारा स्याम ॥
आयो गोरल को दिन नीको ताते कायो री सिंगार ॥ १ ॥
सब ब्रज वनता बन बन आई सिर पर कुंभो धार ॥
चली जमुनां बिस्रात घाट पर मिलकर देता एक सार ॥ २ ॥

मध्य—
गोरल सावलडो मारे आज रहोनी मिजमान ॥
आगरा रो घाघरो दखणीरा चीर सिर बिंदुली मुख पान ॥ १ ॥
केसरी याग करोनी कसुंभा गाओनी मीठी तान ॥
राधा जू के महल पधारो व्रजनिध चतुर सुजांन ॥ २ ॥

अंत—प्राप्त नहीं।

...

विषय—चैत्र शुक्ल ३ का गनगोर नामक त्योहार होता है। उस पर गाये जाने के पदो का संग्रह।

संख्या २७९. निघंट मकरंद (ग्रंथ वैद्यक), रचयिता—महाराज कवि, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—१३½ × ५¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपिकाल—सं० १९०७, प्राप्तिस्थान—पं० हरष नारायण द्विवेदी, ग्राम—बढ़ैया (ऊरहार) पोस्ट—शंकरगढ़, जिला—इलाहाबाद।

आदि——श्री गणेशायनमः श्री रामचंद्राएनमः अथ लिष्यते निघंट ।।

।। दोहा ।।

छीर सिंधु में वास जेहि पीत वसन भुज चारि ।
ताहि वंदि "महाराज कवि" नाम विति निरधारि ।।
वैद्य वेद विद्या सुगम औषध नाम निकंट ।
ता हित जानन हार के कीन्हों नाम निघंट ।। २ ।।

अथ हरै नामगुन

कयेथ्या पथ्या अव्यथ्या शिवा स्रयेसी जानि ।
अम्र चेतकी हरित की अभया हरर वषानि ।। ३ ।।
प्रमदा मोद विजया जया पूतज पूतन होइ ।
तुघ रोहिनी हरितकी हेम जीवन सोइ ।। ४ ।।
हररौ सात प्रकार को फल औ पात्र सरूप ।
जीवन्ती फल सोर्ण सम विजया तुंवक रूप ।। ५ ।।
अम्र अम्र लाल फल रोहिनि जाने जात ।
भया पूतजा चेतकी अष्ट पंच त्रैताप ।। ६ ।।
वसत कलिंद्री तीर मैं जहां सिध्य सब जोग ।
बात पित्त कफ तीनि को हरत उदर को रोग ।।

अंत——अथ एलाइचि नाम गुन

एला लाइची निहकुटी त्रिकुटि वेलिका वेलि ।
तन सुगंध ससि कन्यका दाह पित्त कह रेलि ।।९८।।

तांवूल नाम गुन

तांवूल अहिवेलि दल द्रुज मुष मंडन पान ।
हरत रोग सब दोष कफ त्रैदस गुन औसान ।।९९।।

।। अथ नारिअर नाम ।।

वानर मुष लांगूल पुनि नारिकेलि सुभ काम ।
नारियर कहि विवि लोचनो राज ठोर विश्राम ।।१००।।

अथ सुपारी नाम गुन

पुंग..............................

:o: :o: :o:

——अपूर्ण

विषय——औषधों का नाम तथा गुण वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ अंत में खंडित है । केवल ५ पत्रे रह गए हैं ।

संख्या २८०. बाल चरित्र, रचयिता——महावदास (राजस्थान), कागज——आधुनिक, पत्र——४, आकार——६ × ५$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१८, परिमाण (अनुष्टुप्)——७२, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग ।

आदि——श्री कृष्णाय नमः अथ बाल चरित्र लख्युछे ।।

।। राग मारू ।।

सकल श्री वैष्णव जन रे ।
तम परताप बोहुतो बाल चरित्र गाउरे ।।
मुका वू पापथि ।। १ ।।

ब्रह्मा जेनो पार न पामेरे बखाणे वेद मारे ।
हरि गुण गालाने ईछुरे पिछु नहीं धेद मा ॥ २ ॥
नंद जसोदा जी नुरे के मोटू भाग्य छे ।
श्री कृष्ण जी पुत्र न भावेरे नये नित्य पाग्यने ॥ ३ ॥
महा सुख सागर प्रगट्यो रे भलो व्रज वास मा ।
कोए जोनी बरसे वाधेरे प्रभु एक मास मा ॥ ४ ॥

अंत--

हुतो गोर जमा चालुरे वैकुंठ थी व्रजमुने वालुरे ।
जगत नेहु अंतर मा राखु रे आहिर डानु बोटु चाखुरे ॥३५॥
भुल लीला वीस्तारीरे गोकुल राख्यु नीर धारी रे ।
पवित्र बाल चरीत्र गाएरे महावदास भामणे जायेरे ॥ ३६॥

लीखीतं: ॥ व्यास लक्ष्मी शंकर ॥ महस्त्र अवदीत्र श्री कासी मधे बाल चरीत्र संपुरणं ॥

विषय--कृष्ण की बाललीला का वर्णन ।

संख्या २८१क. रससिंधु, रचयिता--महावदास वैष्णव, (गोकुल), कागज--देशी, पत्र--२०, आकार--१०।× ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१०८०, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८३५, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० १०७, पु० स० ७१२ ।

आदि--॥श्री कृष्णाय नम: ॥ अथ रस सिंधु ग्रंथ लिखियतु है ।

एक समे मोटा जी तथा महाव जी ये दोऊ भगवदी श्री गोकुल मे एकांत बैठे हते । तहां महाव जी भाई ने मोटा जी सो पूछी, अजी मोटा जी मोकों एक बडोही संदेह उत्पन्न भयो हे । जो श्री विठ्ठल कुमार श्री बल्लभ जी के दरशन करियतु हें । और श्री यमुना जी को जलपान हू करियत हे । बडोही दुख होत हे ।

मध्य--पृ० १८

और सब कहत हें जो वैराग्य मार्ग खांडे की धार हे एसे सब ही कहत हे । पर याके भेद तो कछु जु देइ हे । सो एक चित्त ते सुनो, जेसे खांडे की धार एक तो शत कोस लांबी हे और एक कोस ऊंची हे और वाकी धार अति तीखी हे । या प्रकार की खांडे की धार उतर करि पेले पार गयो तब उहां महा सुख पावे । उहां सब सुख हे ।

अंत--यह तो मोटा जी की कृपा ते जान्यो मोटा जी भक्तशिरोमण हें । उनकी कृपा मोपर बोहत हे । ताते श्री गोकुलपति मे जानो ॥ इति श्री गोकुल वासी महावदास कृत रस सिंधु ग्रंथ संपूर्ण संवत १८३५ चेत्रादि मिती श्रावण सुदि ११ भौमवारे लिखतं मोहनदास सुत गोवर्धनदास कार ब्रान मे लिखी है ।

विषय--प्रस्तुत ग्रंथ संवादात्मक है जिसमें वैष्णव धर्म (पुष्टि मार्ग) के संबंध मे सैद्धांतिक प्रश्नोत्तर है ।

संख्या २८१ख. रससिंधु, रचयिता--महावदास वैष्णव, (गोकुल, मथुरा), कागज--देशी, पत्र--५, आकार--१०।। × ६।। इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--२८०, अपूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ११८, पु० स० ६ ।

आदि— ।।श्री कृष्णाय नमः ।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।।

अथ रस सिंधु ग्रंथ लिखियत है । एक समें मोटा जी तथा महावदास ये दोऊ भगवदी श्री गोकुल में एकांत बैठे हते तहां महावजी भाई ने मोटा जी सों पूछी अजी मोटा जी मोकों एक बडे ही संदेह उत्पन्न भयो हे । जो श्री विठल कुमार श्री बल्लभ जी के दरशन करियतु हैं । श्रोर श्री यमुना जी को जलपान हू करियत हैं । बडो ही सुख होत हे अति आनंद उपजत हे परंतु स्नेह उपजत नहीं याको कारण कहा सो मो पर कृपा करि समझायकें कहो ।

मध्य—पृष्ठ ५

अब अभिमान को कुटुंब कहत हे । अभिमान तो राजा, क्रोध प्रधान, प्रतिष्ठा स्त्री, निंदा दासी, लोभ आसन, दोष गादी, हठ सखा, मद मत्सर दंभ दोष छल बलादिक ये पुत्र, असत्य भाई, गर्व भूषण, मोह ग्रह, यह जानियो, चिवद्रूप सारिखो दृवंधी कोई नहीं वाहुते क्रोध बुरो । यातें क्रोध चांडाल हे तातें वाहुतें बुरो । याते एसे कों हृदय में राखनो, मोंडतें कहनो जो मेरे अन्य आसिरी कछु नहीं, क्रोध होय तहां आनंद न होय । जहां आनंद नहीं तहां ठाकुर नहीं भगवदीन कोंहू बल्लभ सो आनंद सो हृदय कमल में रहत हे ।

अंत—ताते श्री बल्लभाचार्य जी ने विवेक धैर्याश्रय ग्रंथ में कहे हैं सो अब अर्द्ध श्लोक कहत हैं। प्रार्थना कार्य मात्रे पि तस्त्याज्य त्र विवर्जयेत् ।। याको अर्थ—कार्य मात्र के विषें विपत्य पडेतो कहा करें सो कहत हे । जेसे ललिता जी श्री ठाकुर जी को प्यारे हैं तेसें ही भगवदीहू श्री ठाकुर जी को वोहोत प्यारे हैं ताते भगवदीय आगे दीनता सर्वथा करिये । श्रोर भगवदी की सेवा करिये ।

विषय—पुष्टि सप्रदाय के भक्ति-विषयक उपदेश ।

संख्या २८२. कवि कुल तिलक प्रकास, रचयिता—महीपति या महीप (रायपुरा, गढ़ अमेठी, सुलतानपुर), कागज—आधुनिक बादामी, पत्र—१०८, आकार—$६\frac{९}{१०} \times ६\frac{१}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०४५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १७६६ वि०, प्राप्तिस्थान—ददन सदन, पो० अमेठी (इ० आई० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री चण्डिकायै नमः श्री गणेशाय नमः ।।

चारि भुजा अरु चंद्र लिलार लसै रद एक महा सुमती को ।
दैं मुष मंडल वंदन वेष धरेहीं उदार बड़ेही जती को ।
सेवत जाहि सदा सनकादिक प्रासोन आनि करै बिनती को ।
आदि "महीपती" को सुखदायक लायक पूत है पारवती को ।। १ ।।
संवत सत्रह सै मिले तापर छासठि दीन्ह ।
भादौ सुदि दशमी गुरौ विदित ग्रंथ तब कीन्ह ।। ७ ।।
गढ़ा अमेठी देश है रायपुरा शुभ थान ।
आश्रम चारि वसै जहां सब पंडित सब जान ।। ८ ।।
सुललित ताही नगर मे कियो "महीपति" वास ।
तिन्ह कीन्हो सुष रासि यह "कविकुल तिलक प्रकास" ।।
नवहू रस के भाव जे नाहि कहत यह ठौर ।
आगें हौं कहि हौं सबै है यह मन की दौर ।।१०।।

।। अथ शृंगार रस निरूपनम् ।।

नवहू मे रसराज यह याहि कहत एहि हेत ।
स्याम देवता स्याम रंग याते कहत सचेत ।।११।।

अंत—

काव्य करत कल्यान कों काव्य सुषनि कों हेतु ।
काव्य करत उपदेश को सकल सुर्भनि को हेतु ।।३५।।
बरनन राधारमन को कहूँ कहूं रघुनंद ।
"कविकुल तिलक प्रकास" पढि वाढे सदा अनंद ।।
चारि पदारथ देत है पढ़त याहि गोविंद ।
ज्यों दिनकर की किरन तें बढ़त जात अरविंद ।।३७।।
संकर सारद सेस हूँ सवत होत सहाइ ।
"कवि कुल तिलक प्रकास" को पढ़ै सबै चित लाय ।।
"कबिकुल तिलक प्रकास" को आदि अंत लो देषि ।
ग्राह् त्याग मै जानिबो जानि अजान विसेषि ।।३६।।

इति श्री महीप (?ति) कृते कविकुल तिलक प्रकासे छंद भेद बरननो नाम उनवीशो लोकः ।। शुमम्भूयात् ।।

विषय—नायिका भेद, रस, अलंकार, काव्यगुण दोष और पिंगल आदि का वर्णन । ग्रंथ मे 'लोक' नाम से निम्नलिखित अध्याय है :—

१. मंगलाचरण, कवित्त और स्वकीया वर्णन	पत्र	१ से ६ तक
२. नायिका परिच्छेद	,,	६ ,, ११ ,,
३. अष्टनायिका	,,	११ ,, २१ ,,
४. संयोग वियोग शृंगार तथा मान वर्णन	,,	२१ ,, २७ ,,
५. उत्तमादि सखी तथा दूती भेद वर्णन	,,	२७ ,, २६ ,,
६. नायक परीक्षादि	,,	२६ ,, ३३ ,,
७. चित्रदर्शन और हाव वर्णन	,,	३३ ,, ३७ ,,
८ स्थाईभाव कथन	,,	३७ ,, ३६ ,,
६. अनुभाव वर्णन	,,	३६ ,, ४३ ,,
१०. अनुभाव, सात्विकभाव, व्यभिचारी भाव वर्णन	,,	४३ ,, ५१ ,,
११. संपूर्णरस वर्णन	,,	५१ ,, ५३ ,,
१२. वृत्ति निरूपण	,,	५३ ,, ५४ ,,
१३. रसनिरूपण	,,	५४ ,, ५७ ,,
१४. समस्त रस निरूपण	,,	५७ ,, ५६ ,,
१५. दोष (काव्यदोष) निरूपण	,,	५६ ,, ६६ ,,
१६. गुण (काव्यगुण)	,,	६६ ,, ६६ ,,
१७ अलंकार निरूपण	,,	६६ ,, ८३ ,,
१८. रीति, वृत्ति लक्षण	,,	८३ ,, ६२ ,,
१६. पिंगल अंतर्गत गणागण नियम वर्णन	,,	६२ ,, ६३ ,,
२० मात्रिक छंद वर्णन	,,	६३ ,, १०० ,,
२१. वर्णवृत्त तथा ग्रंथ समाप्ति	,,	१०० ,, १०८ ,,

रचनाकाल

संवत सत्रह सै मिले तापर छासठि दीन्ह ।
भादौ सुदि दशमी गुरौ विदित ग्रंथ तब कीन्ह ।।

ग्रंथ मे एक अध्याय गड़बड़ है ।

संख्या २८३क. रस सारिणी, रचयिता—मातादीन मुकुल, अजगर, प्रतापगढ़, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१०, आकार—१० १/१० × ६ १/२ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०३ वि०, मुद्रणकाल—स० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० देवनाथ उपाध्याय, स्थान—खेतकुरी, पोस्ट—धम्मौर, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। दोहा ।।

मदन कदन सुत गजवदन विघ्नहरन जनपाल ।
एकरदन गुनगन सदन पाहि बाल शशिभाल ।। १ ।।
उदाहरन संछेप अति जाते बढ़ै न ग्रंथ ।
बाल हेतु रस सारिणी भाषा रची सुपंथ ।। २ ।।

।। अथ नवरसाः ।।

रस शृंगार अरु हास्य कहि करुण रौद्र पुनि वीर ।
भयानको वीभत्स लहि अद्भुत शांतहि धीर ।। ३ ।।

।। उदाहरन ।।

लक्ष्मी लषि लोभी जोई हसत निगम को पेषि ।
शोक करत मख पशुन्ह को क्रोधित क्षत्रिन्ह देषि ।। ४ ।।
पुलकित रन लषि रावनहि दधि चोराय अति भीत ।
म्लेछ रुधिर जुत क्षिति दशन सो सहाय पट पीत ।। ५ ।।
रस प्रधान शृंगार है वहाँ भेद कछु तासु ।
आलम्बन उद्दीपनो है विभाव द्वै जासु ।। ६ ।।

:o: :o: :o:

।। अभिसारिका लक्षन ।।

समय जोग्य भूषन किहे सकल चतुरता धाम ।
जाय सहे टहिं पिय मिलन आभिसारिका सु बाम ।।७१।।

अंत—

अथ विरह की दश अवस्था

अभिलाषा चिन्ता स्मरन गुन कीर्तन उद्वेग ।
अरु प्रलाप उन्माद रुज जडता निधन अनेग ।।९९।।
निंदक दुरजन जदपि है तदपि कहा नहि गोय ।
पशु खर शूकर चरन भय कृषी तजत नहि कोय ।।१००।।

१ ९ ३

एक सहस नव सै त्रिजुत संवत मिति वदि जेष्ठ ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ ।।१०१।।
माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर ।
सब प्रभुता को पद गन्यो ढरचो अरज पग मेर ।।१०२।।
एक एक अक्षर पढ़ै एक एक तजि देय ।
या दोहा मों नाम कुल देश ग्राम लषि लेय ।।१०३।।

इति रस सारिणी पूर्तिमगात् ।। आषाढ़ पौर्णमास्यां लिखितेयं रस सारिणी सकल दर्शनाभिज्ञ विबुध नाथूराम त्रिपाठिना शुभम् ।। सम्वत् १९२२ ।।

विषय—नायिका भेद का संक्षेप में वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

एक सहस नव सै त्रिजुत संवत मिति वदि ज्येष्ठ ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ ।।१०१।।

संख्या २८३ख. रस सारिणी, रचयिता—पं० मातादीन शुक्ल, (अजगरा, प्रतापगढ़), **कागज—आधुनिक,** पत्र—१६, आकार—६½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (**अनुष्टुप्**)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ **वि०, लिपिकाल**—सं० १९३१, प्राप्तिस्थान—पं० सरस्वती प्रसाद उपाध्याय, ग्राम–सुदीकपुरा, पोस्ट–फूलपुर (तारडीह), जिला–इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

मदन कदन सुत गज बदन विघ्न हरन जन पाल।
एक रदन गुन गन सदन पाहि बाल शशि भाल॥ १॥
उदाहरन सक्षेप अति जातें बढ़ै न ग्रंथ।
बाल हेतु रस सारिणी भाषा रची सुपन्थ॥ २॥

(अथ नवरस)

रस शृंगार अरु हास्य कहि करुणा रौद्र पुनि वीर।
भयानको बीभत्स लहि अदभुत शांतहि धीर॥ ३॥

अंत—

एक सहस नव सै त्रिजुत संवत मिति वदि ज्येष्ट।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ट॥१०१॥
माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर।
सब प्रभुता को यह पद गयो हरयो अरज पग नेर॥१०२॥
एक एक अक्षर पढ़ै एक एक तजि देय।
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम लखि लेय॥१०३॥

इति रस सारिणी पूर्तिमगात्॥ आषाढ़ वदि १३ लिखितेयं रस सारिणी सकल वर्णनाभिज्ञ विबुधवर चरण सेवक नागर ब्राह्मण मुरलीधर संवत् १९३१॥

विषय—रस और नायिका भेद का संक्षेप में वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

एक सहस नव सै त्रिजुत संवत् मिति वदि ज्येष्ट।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ट॥

संख्या २८३ग. रामायण माला, रचयिता—पं० मातादीन शुक्ल (अजगर, प्रतापगढ़), **कागज**—देशी, पत्र—३८, आकार—९½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (**अनुष्टुप्**)—३१३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९६ **वि०, प्रकाशनकाल**—सं० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० सरस्वतीप्रसाद उपाध्याय, ग्राम–सुदीकपुरा (तारडीह), पोस्ट–फूलपुर, जिला–इलाहाबाद।

आदि—॥ दोहा ॥

श्री गोपाल चरन सरन विघ्नहरन हिय आनि।
हरि गुनगन बरनन करो होय सकल अघ हानि॥

॥ चौपाई ॥

मधु शुचि ग्रह तिथि अदिति बलीना। दशरथ गृह नर तन हरि लीना॥

॥ दोहा ॥

कौशल्या के रामसुत भरत केकई जात।
लछिमन अरु शत्रुघ्न द्वौ लहो सुमित्रा मात॥

रामचंद्र अरु लषन तें बाढ़ी प्रीति अपार ।
भरत अवर शत्रुघ्न तें पितृभाग अनुसार ।।

अंत--

जोजन चारि प्रयाग ते उत्तर अजगर ग्राम ।
तासु दून है अवध ते दक्षिन जहँ मम धाम ।।

मा	धो	ता	रो	दी	न	न	र	र	
सु	नो	कु	श	ल	का	दे	र		
स	ब	प्र .	भु	ता	को	प	द	ग	न्यो
ह	रघो	अ	र	ज	प	ग	ने	र	१

एक एक अक्षर पढ़े एक एक तजि देय ।
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम लखि लेय ।।
अट्ठारह सै छानबे संवत मिति वशाख ।
रामायन माला रची एकादशि सित पाष ।।

इति श्री रामायन माला संपूर्णम् ।।
सम्वत् १९३१ ज्येष्ठ शुक्ल १५ लि० नागर ब्राह्मण मुरलीधर ।।
विषय--राम चरित्र का सक्षेप मे वर्णन ।

संख्या २८३घ. राम गीताष्टक, रचयिता--पं० मातादीन शुक्ल (अजगर, प्रतापगढ़), कागज--आधुनिक, पत्र--११, आकार--६$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--६१, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८९६ वि० (लगभग), लिपिकाल--सं० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० सरस्वती प्रसाद उपाध्याय, ग्राम--सुदीकपुरा (तारडीह), पोस्ट--फूलपुर, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। अथराम गीताष्टकं लिख्यते ।।

।। सोरठी राग ।।

रघुबर अस कैसे बनि आवै ।
जब निज तन सु धरत जन तन धरि सो सपनेहुं नहिं भावै ।। १ ।।
सहन शील संतोष दया हरि भजन भलो श्रुति गावै ।
कोह क्रूरता द्रोह मोह तन पोहन ही मन धावै ।। २ ।।
असमंजस सब भांति पाप करि दाप ताप तिहुँ पावै ।
श्री रघुनाथ अनाथ नाथ बिनु को हिय तपनि बुझावै ।। ५ ।।

अंत--

अबहिं तें अकुलात गै जमजातनौ निअराय ।
फस्यो बूक विनु मेढ खाये पाल पहुँचो आय ।। ६ ।।
उचित शम दम दान जप तप निगम आगम गाय ।
आपु सम सब लोक जानहु सहज शोक नशाय ।। ७ ।।
अजहुँ भल है भजहु चित दै तजहु जग की वाय ।
दीन जानि स्वलीन करिहै कबहुँ कोशलराय ।। ८ ।।

इति संवत् १९३१ लि० ना० मुरलीधर ।

विषय——राम की स्तुति की गई है ।

संख्या २८३ङ. राम गीताष्टक, रचयिता——मातादीन शुक्ल, स्थान——अजगर; प्रतापगढ़, पत्र——३, आकार——१०$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१३, परिमाण (अनुष्टुप्)——९१, पूर्ण, रूप——प्राचीन, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान——पं० देवनाथ उपाध्याय, स्थान——छटकुरी, पोस्ट——धम्मौर, जिला——सुलतानपुर (अवध) ।

आदि——अथ राम गीताष्टक लिख्यते ॥

॥ सोरठी रागे ॥

रघुबर अस कोने बनि आवै ।
जब निज तन सुधरत जन तन धरि सो सपनेहुँ नहि भावै ॥ १ ॥
सहत शील मनोज दया हरिभजन भलो श्रुति गावै ।
कोह कृपा द्रोह मोह तन पोषत हौ मन धावै ॥ २ ॥
ठवर जवर दिशि गमन अवर दिशि कवन भवन पहुँचावै ।
निज अवरन विपरीत दोष एह रीति भीनी सतावै ॥ ३ ॥
नयन कोन मम ओर निरखि मुनि के निहोर अपनावै ।
कौतुक तोर न थार मोर हित अब प्रभु भोर न लावै ॥ ४ ॥
असमजस सब जानि पाप करि दाप ताप तिहुँ तावै ।
श्री रघुनाथ अनाथ नाथ बिनु को हिय तपनि बुझावै ॥ ५ ॥
विषयलीन मतिहीन दीन को बिगरी कवन बनावै ।
अजुन गीध गुह गज गनिका गति सुनि भरोस दृढ़ आवै ॥ ६ ॥

अंत——

हे मन भरत नाहक धाय ।
दुख हरन सुख करन रघुबर चरन सरन बिहाय ॥
उचित शम दम दान जप तप निगम आगम गाय ।
आपु सम सब लोक जानहु सहज शोक नशाय ॥ ७ ॥
अजहु भल है भजहु चित दे तजहु जग की वाय ।
दीन जानि स्वलीन करिहे कबहुँ कोशलराय ॥ ८ ॥

इति ॥ सम्वत् १९२२ आषाढ़ शुक्ल पौर्णमास्यां लिखितेयं रामगीता सकल दर्शनाभिज्ञ विबुधवर नाथूराम त्रिपाठिना ॥ शुभमस्तु ॥

विषय——रामभक्ति वर्णन ।

संख्या २८४. अध्यात्म रामायण (बाल तथा अयोध्या कांड), रचयिता——माधव दास (मनसादास), कागज——बांसी, पत्र——८३, आकार——१२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)——१४, परिमाण (अनुष्टुप्)——१५०५, पूर्ण, रूप——जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि——श्री सरस्वत्य नमः श्री राम चरणाय नमः ॥ अथ रामायण लिष्यते ॥

॥ चोपाई ॥

सुत बर्णर्पणं ॥ केवल ब्रह्म अमृतपानं ॥ टेक ॥
नारद गये ब्रह्म लोक मझारी ॥
संका सहत कीन्ही..... ब्रह्मा कूं कीन्ही संतवन ॥
नमो देवाधि देव प्रभु भगवन ॥ १ ॥

तहां मारकंडे आदि मुनि....हन...हि जैसे ॥
तांहा नारद कीनौ जै जै कार ॥
नमो श्रब ससय षोवणहार ॥ २ ॥
कहिन......................सी संक ॥
अबही तोहि कहूँ निहसंक ॥
अपनै उनमान कहूँ मै पुत्र ॥
रवांन सु मोहो तै अति उ...........॥ ३ ॥
तब नारद यह कह्यौ विहांसि ॥
इकतो कहि मो हित तर हांसि ॥
पूजै प्रभू कलिजुग के लोक धौति मोहि व्यापै सोक ॥ ४ ॥

मध्य—

तो कीजै राघव भक्ति तुम्हारी ॥ तोकूं सरवैश्वर जांणि मंझारी ॥
सनै सनै जीतै तन मन प्रांन ॥ होइ एकमेक धरि तेरे ध्यान ॥३२॥
कदाचित भक्ति न करणी आवें ॥ तन मन प्राण मथत दुष पाव ॥
तोज ज्ञांनी भक्त तुम्हरा ॥ तिसको संग करै हित कारा ॥३३॥
जे जन ग्यांन विज्ञांन मैं अंतर ॥ अरु तेरा भक्ति को करै निरंतर ॥
तिनकी आइ करत जे सेवा ॥ ते सुलभ मुक्ति को पावै देवा ॥३४॥
जे तेरे दासन के दास ॥ सेवहि निसि दिन बरन आस ॥
तो तिनको किंकर करो मोहि तारक ॥ दासन के दास को परिचारक ॥३५॥
तो मोको रावत कैसो होइ ॥ जो मो उपजावत हो मोह ॥
जो मोहि सुगावत हूँ संसारी ॥ यहै दोषो मोहि धरै मझारी ॥३६॥
यौं कहि नारद दीनौ रोय ॥ प्रेम पुलक आनंदमय होय ॥
ब्रह्मा पुत्र तुम्हारो हो तो ॥ राम सूं मेरो दादो हूँ तेरो पोतो ॥३७॥

अंत—

ता पाछै सीताराम जिमाये ॥ लषन सहित घरमैं वैसाए ॥
करि पूजा विधांन पाछै कह्यौ असै ॥ सरबेश्वर सन वही एते सैं ॥ ७ ॥
पूरब राम तुहो तौ एक ॥ तब नही हो तो पू···॥ ८ ॥
पंच अनेक तैं पुनह आपतै सृष्टि उपाई ॥ लोक चतर्दश कीये वनाई ॥ ८ ॥
पुनह तीन लौक रख्या हेत औतार ॥ आपने विसमही —त ॥
सुरमानुष द्विज कूं वय धरत ॥ ज्यौ लौक कृष्य की रख्या करत ॥ ६ ॥
उतपति रख्या प्रलय देव ॥ माया गुण करि सिरजत एव ॥
सौ माया सबकौ ग्रसन करत ॥ मौद करि सबके ग्यांन हो हरत ॥१०॥
वह माया तौतै भलै डरत ॥ तेरे ग्यान ही कवहूं न हरत ॥
उतपति रख्या प्रलय निवास ॥ तुम अवध के तेरे दास ॥११॥
ते धनि जे तव सुमिरण करहीं ॥ संसार सागर कौ ते तरहीं ॥
तेरो समरण मेरो धन ॥ हम अवर कहीं नहीं राखत मन ॥१२॥
इस प्रभाव भए हम मुनि ॥ तौ विन हमरै संग लै सुनि ॥
असे हम कहाए ब्रह्म ऋषि ॥ जगत के गुरपति तेरे सिषि ॥१३॥
अजोध्या कांड समापित भयौ ॥ सुनि काग नितारक संगिक जयौ ॥
अध्यातम रामायण निधि ॥ ब्रह्मांड पुराण मौषिकी सिधि ॥१४॥
नौ बिश्रांम हंता क्यासी ॥ चौपही जौड पांच इक्यासी ॥
बालमीकि की सिष्या श्लोक सहस ॥ इस उस दौउ मै भिन्न न रस ॥१५॥

पाप हंता दौउ रामाइण ।। सीख गुणत करै पारायण ।।
श्री दामोदर को सिषि वषांणत ।। मधवा दास कछू नहीं जाणत ।।१६।।
विषय—बालकाड और अयोध्याकाड तक रामचरित्र वर्णन ।

संख्या २८५. तत्व चितामणि, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—५½ × ८½ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५६०, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० २६, पु० स० ५ ।

आदि—अथ तत्व चितामनी लिखते ।।
सत्य सब्द श्री गुर के उर धरि । हरि किन भजीये मन वचक्रम करि ।। १ ।।
अपावन बंदनें पावन वप भयो । ताको मरम कछु नहि लयो ।। २ ।।
गरभ वास मै किहि विधि होतो । गरबीत भयो विसरि गयो सोतो ।। ३ ।।
नीचो मुख ऊचे हे पाय । तहां तू ववत ऐक चित लाय ।। ४ ।।
मध्य—
धनि धनि भाग व्रज नारि ।। तिन संग रमत कृष्ण मुरारि ।। ११।।
सुर नर नहि न पावत पार ।। सो हरि षेलत नंद द्वार ।।१२।।
विस्व करमा विथकित भयो देषि देषि नंदनंद ।।
घुटरनिलनि किलकत हसत अवगति आनंद कंद ।।१३।।
अंत—
निस दिन गावत है हरिदास ।।
तुम न मांनि करि व्रज वास ।।१८।।
व्रजरज सुभग जिवनि मेरे ।।
सरनै राखि नंदकिसोर ।।१६।।
सब विधि कारन करन तुम जान राय जगदीस ।।
माधौदास वंछित इहै चिन्हन चरन को सीस ।।
इतो श्री ततु चितामनी संपुरन शुभ ।।
विषय—भक्ति और ज्ञान विषयक वर्णन ।

संख्या २८६क. मुरली की लीला, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—५½ × ८½ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० २६, पु० स० ५। ।

आदि—अथ मुरली को लीला लिखते ।।
श्री गुर गोंमिद को सिर नाऊं ।। तुम्हरी कृपा मुरली गुन गांऊ ।। १
मुरली मोहन कुं अति प्यारी ।। छिन न रहत गिरिधर तें न्यारी ।। २
कबहुक कबहुं कटि सोहै ।। मुखि बैठी मोहन मन मोहै ।। ३
अचल चलै चल धीरज गहै ।। प्रेम प्रवाह सबनि उर बहै ।। ४
नंदनंदन ऐसें बस कीनें ।। भए त्रिभंगी अति रस भीनें ।। ५
मध्य—
फुनि बुझन लग्यो पुत्री समझाय ।।
सब अपनी परकरन सुनाय ।।१०५।।

तब मै कहा पाछली बात ।।
सिरधुनि धुनि नाइक पछितात ।।१०६।।
पुत्री जीय दुख अन . जिनि धरौ ।।
पति अपने को चितवन करौ ।।१०७।।

अंत—

कुंडल मुकट पीतांबर राजै ।। मुक्त माल बैजंती विराजै ।।२०६
नाचत भए कृष्ण नटनागर ।। सबै भेद जानें गुनसागर ।।२०७
भावतो वर दीनौ नंदलाल ।। परमानंद लह्यो सब बाल ।।२०८
यह लीला जो सुनै सुनावै ।। चिंतत फल निश्चै करि पावै ।।२०९
माधौ दास जाय बलिहारी ।। चरन दास दीजै गिरधारी ।।२१०।।

इति श्री मुरली जु की लीला संपूरन समापता ।।

विषय—श्री कृष्ण का वन में मुरली बजाना, वहाँ गोपियों का आना और मुरली चुरा लेना इत्यादि वर्णित है।

संख्या २८६ख. दशम स्कंध संक्षेप लीला, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१०$\frac{1}{2}$ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० १७, पु० सं० ६ ।

आदि— ।।श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ।। **अथ श्री भागवत में दशम-स्कंध लीला संक्षेप जो माधवदास कृत सूचनिका पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध की लिखियत है ।।**

जय जय जय श्री जगन्नाथ श्रुति नाथ मुरारी ।।
दिव्य दीव्य कर्म करि कलिमल अघहारी ।। १ ।।
भूमि सहित ब्रह्मा इन्द्र की जब सुनी गुहारी ।।
तब जदुकुल अवतरे आय मधुपुरी मधुहारी ।। २ ।।
जगन्निवास श्री वासुदेव देवकी गर्भ वासा ।।
पुरब दिसा जानु उदित भानु तिहु लोक प्रकासा ।। ३ ।।

मध्य—

सात बरष के बाल कृष्ण कर्म कीयो अधिकाई ।।
नंद प्रबोधित चकित गोप गर्ग वचन सुनाई ।।३०।।
सक्र सुर अभिषेक करयो देवन दुंदुभी बाजी ।।
गोरक्षा तें नाम भयो गोविंद सुर राजा ।। ३१।।
नंद वरुन तें आँनिए बैकुंठ दिखाई ।।
रास विलास कियो हरि मनमथ हरिराई ।।३२।।

अंत—प्राप्त नहीं ।

विषय—श्रीमद्भागवत दशम स्कंध लीलाओं का संक्षेप मे वर्णन ।

संख्या २८६ग. नारायण लीला, रचयिता—गुसाई श्री माधव दास जी, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—५।।। × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ट)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० वं० ७२, पु० सं० ३ ।

आदि—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

जय जय जय श्री जगन्नाथ नारायण स्वामी ।
ब्रह्मादि कीटान्त जीव सर्वान्तर्जामी ॥ १ ॥
सचराचर बहिरावृता अभिअंतर होई ॥
सर्वात्मा सर्वज्ञ नाम नारायण सोई ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १७

हाथ न हरिके कर्म करि पायन प्रदक्षिणा दीजै ।
नयन निरखि श्री जगन्नाथ आत्मा समर्पण कीजै ॥३८॥
कोटि ग्रंथ को इहै अर्थ श्रुति स्मृति पुकारा ।
वासुदेव की भक्ति बिना प्राणी नाहि निस्तारा ॥३९॥
यह प्रह्लाद के वचन सुनत असुर उठ्यो रिसाई ॥
मारि मारि दुष्ट ब्राह्मन कों जिन इह बुद्धि सिखाई ॥४०॥
विप्र कहै सुनु महाराज मिथ्या दोस न दीजै ।
याको यहै सुभाव जो भावै सो कीजै ॥४१॥
तब बोले हिरनकसिपु पुत्र तोहि इहै बुधि कौन सिखाई ॥
अंजलि जोरि प्रह्लाद कहै सुनो दैत्य के राई ॥४२॥

अंत—

प्रफुल्लित कमल लोचन बिसाल भाल तिलक विराजै ।
चंदन —पन सकल गात्र बनमाला छाजै ॥६४॥
शंख चक्र गदा पद्म मुकुट कुंडल पीतांबर धारी ॥
नील सिखर श्री राजमान सेवक सुखकारी ॥६५॥
श्री जगन्नाथ को रूप देखि मन भयो उलासा ॥
श्री जगन्नाथ को दास गावैं गुसांई श्री माधव दासा ॥६६॥

इति श्री मद्भगवद चरित्र नारायण लीला गुसांई श्री माधोदास कृत संपूर्ण ॥

विषय—श्री भगवान् के अवतारों की कथा पद्य में वर्णित है । जिसमें भगवत्स्वरूप, उनके अवतार धारण का कारण, भक्तों की महिमा और भक्ति का वर्णन है ।

संख्या २८७. दानलीला, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—५ × ४॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० ३२, पु० सं० १४।५ ।

आदि—दान लीला लिख्यते ॥ राग बिलावल ॥

हमारो गोरस दान नदांनत होई मोहन लाडिलें हो ।
कब के तुम दांनी भये लाल कब तुम लीनो दांन ॥
गाय चरावें नंद की तुम सुनो अनोखे कान्ह ॥ १ ॥मो०॥
हम दानी तिहूं लोक के तुम च्यारों जग जुग वार ॥
दान न छांडो आपनो तेरो गहनो राखो हार ॥ २ ॥
ग्वारि हठ छाड दे हो हमारें ममत फिर गवार ॥

मध्य—

नैन चाचौं चातुरी लाल बोलो सांचे बोल ।
मेरो हर करोरिकों तेरी सब गायन को मोल ॥ ३ ॥ मो० ॥

ये गइया तीहू लोक तारनी पुजवें मनकें काम ॥
दूध दही तिहू लोक में तेरो हार लहे दस दांम ॥ ४ ॥ मो०
रतन जटित कोई ढुरी लाल हीरा जरिया हार ॥
ताहि तू राखन कहत हे कमरी के बोढन हार ॥ ५ ॥ मो० ॥
ब्रह्मा तानो पूरियो ओर बनियो बेठि महेश ।
सोहम ओढी कामरी जाको पार न पायो सेस ॥ ६ ॥ मो० ॥
मोर पंखवा सिर धरे लाल बंस फूकनी फेट ।
अधिकन करि ढोटा नंद के सो तो पासि गार पर एठ ॥ ७ ॥ मो० ॥
हम बेटी वृषभान की तुम नंद महर के कान ।
प्रेम प्रीति रुचि मान ले ढोटा जिन करे गुमान ॥ ८ ॥ मो० ॥

अंत--

वृंदावन क्रीडा करी ओर कीने रास विलास ।
सुर नर मुनि जे जे करें जन गावे माधोदास ॥ ९ ॥ मो० ॥

इति श्री दानलीला संपूर्णम् ॥

विषय--श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन ।

संख्या २८८. रामचद्र जी रो राम रासो, रचयिता--माधवदास चारण, कागज--देशी, पत्र--१५, आकार--१२$\frac{1}{4}$ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--४४, परिमाण (अनुष्टुप्)--१४८५, अपूर्ण, रूप--जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--श्री रामचंद्र जी रौ राम रासौ गुण लिख्यते गाहा चौसर

ओंकार सु आप अनत अंतरजामी जीव अनंत . . . .
आप भगति वरदान अनंत अहं प्रणमामि अनेक अनंत ॥ १ ॥
श्रवणि सुमित्र सवछू जास पसाय पाप पद हरि जस . . .
मुनिवर करमा नंद तीय गुरु देव तुरयं नमः ॥ २ ॥
हंसा गमिण ब्रहमाणी हंसारूप हंस आरूढा . . . .
देवर गुण वरदाणी निधलाणी तुरयो नमः ॥ ३ ॥
संभू गवरि सुतनं कारण करणेक लंबोदर . . . .
सुधि वुधि प्रसनस्तु ग्यांन नारायण तुरयो नमः ॥ ४ ॥
चत्र मुष वेद चिआरं अंवज तिसन नाभि उतपनं . . .
वड़ जग जड़ विसतारं निधि विद्या तुरयो नमः ॥ ५ ॥
बल २ कंठ विसालं हार भुजगम गंग सिर षलहल . . . .
विधि भलहल मणि वासं नृप त्रिपुरारि तुरयो नमः ॥ ६ ॥
क्रसन व्यास जैदेव कवि वालमीक सुषदेव . . . .
अन कवि गुरु सिष कवि अहं भाउ वंद शरण लेउं ॥ ७ ॥

मध्य--

आप वालि वालि मांतग संभरीया आइ गिरि मूक सुग्रीव उवरीया ।
भणे लषमण हणमंत भाई सकल कथा धुरवेध सुना ॥ २२ ॥
आवो पगे रांम उवारै वालि ताप व्रतकाल निवारै ।
लषमण वयण हणउ मंत देयो दुहाई वंनर राऊ सुग्रीव वधाई
जाता वाहर दशरथं जापा ए रघुनाथ भागता आधा ॥ २४ ॥

सास कांम तो राम सुधरसी साइक मेक बालि संधरसी
वडां वडां सो देप वडाई मोटां सुं कीजं मित्राई ।।२५।।
ए कपिराव काजि अपारणं उदधि उलंघे सीता आणी ।
अतारे गिरि जुं पति आरति मेले राम सुग्रीव हराउ मंति ।।२६।।

अंत-- ।। दोहा ।।

रासौ जस श्री रामरो वदं विबुध सुवेद ।
करण कुं कवि जांणं किसुं सौरंभ कब सुभेद ।। १ ।।
नर मर्कट जिमि नाचवं जंत्री जंत्र वजेव ।
कहिया पं तिम मैं कथे दासन दूषण देव ।। २ ।।

।। राग सोरठ ।। गिरनारी भरथ पासव रघुनाथ वडाई ।
अधि कपि वलि सुग्रीव निवाजे के कंधाव कुराई ।। १ ।। टेक ।।
मम वलहीरा अलप साषा मिनि कट सलिलन कुदाई ।
राम प्रताप स्यंघ सौ जोजन उलंघत पलक न लाई ।। २ ।।
उह जलही पाथर तलि बूडत तिलक प्रमाण कुणंराई ।
लिष श्री राम नाम गिरि डारत वधि मिर जात तराई ।। २ ।।
ऐंद्रजीत कुंभ दसारण सुर ग्रहि वंधि वौडाई ।
मकल संग्राम मृत के कपि सेना अमृत सींच जीवाई ।।

विषय--इम ग्रथ मे लका के मेतुबधन तक राम चरित्र वर्णित है। शेष भाग अप्राप्य हैं।
विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ अत मे खडित है।
हस्तलेख मे निम्नलिखित चार ग्रथ है :--
१ कोकशास्त्र भाषा--आनद कवि कृत
२ सदैवच्छ सावलिंग्यारी वात
३ ढोला मारू चौपाई--कुशल लाभ द्वारा सपादित
४ रामचद्र जी रो राम रासो--
प्रथम तीन ग्रथ ही पूर्ण है।

सख्या २८६. भाषा कोष (हिंदी सस्कृत मे), रचयिता--माधवदास भट्ट, कागज--देशी, पत्र--३, आकार--४ × ३½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--४४, परिमाण (अणुष्टुप्)--६३२, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार--श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६२, पु० स० २।

आदि--प्रणम्य द्वारिकानाथं भक्तानां सुख हेतवे। इयं विरच्यते भाषा माधवेन मनोहरा ।। १ ।।

स्वतो भजामि	स्वर्ग
देयंते शर्मा	देवता
अरचित्व या जगत	असुर
दैवान्मिलां	दैत्य
अनमद्धाता त्वांच	अपछरा
अस्मानव ध्रुवं	आकाश

मध्य--पृ० २३

पौलस्त्य नाशकां	पोता
धर्मादव	आजा

दानव नाशन	दादा
भाविश्रानयमें	भानेज
भावं देहिमे	भाभी
वरयामिते	बहिनि
शार्वरंह्	शालक
मोव्गीत	मोसा
सादरं मित्र	साढू
जेम हिन्	जमाई

अंत—

अहो अये	करघो करे
अयि पुनि	करि
अर्द बहुरि	करी
अये अचारु	करे
बहुरघो अंभो	मेंते
अंग भो	में ते
ह्रांतनेर्षि	ह्राँ
निहारु	॥ ए ॥

विषय—शब्दकोष विषय । यह अमरकोष की शैली पर है ।

संख्या २६०क. राग प्रकाश, रचयिता—राधामाधव सिंह, (अमेठी, सुलतानपुर, अवध), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—७८, आकार—८ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—शकाब्द १७८०, प्राप्तिस्थान—ददन मदन, पो०—अमेठी (ई० आइ० आर०), जिला—सुलतानपुर, अवध ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥

श्री सत गुरुपद पंकरुह प्रनवो सहित सनेहु ।
दास विनै सुनि करि कृपा विसद विमल मति देहु ॥ १ ॥
भवतारनि कारनि जगत सुवस विहारनि मातु ।
अधम उधारिन अघहरनि सुजस वेद विष्यातु ॥ २ ॥
:o: :o: :o:
दिनकर कुल कछवाह तें वंधुल गोत प्रसिद्धि ।
"नृप माधव छितिपाल जू" कियो राग की वृद्धि ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

विदित अमेठी देश अवध जन्हुजा मध्य में ।
कीन्हघो वास नरेश रामनगर आश्रम सुभग ॥ ५ ॥
गुरु पंचमी मधुमास साके सत्रह सै असी ।
विरच्यो राग प्रकाश वहु ग्रंथनि अवलोकि कै ॥ ६ ॥
बुध जन तजै न वानि रहै भलाई भलेन की ।
काव्य पथश्रम जानि भूलो देषि सुधारि है ॥ ७ ॥

अंत—राग देश ताल कव्वी होरी

सजि भानु तनै गृह होरी ।
मुनि क्रोध प्रगट की जोरी ।
निसि वीत समय जो होवै ।
दोऊ लै लै अंग भिजोवै ।।
प्रथमहि जो माता धोवै ।
सो लपटि प्रीति सो तोरी ।।
जमन शोक विच होई है भूषित वा थल सोई ।।
तप्त पति शिर जोई उडि दिशा पूरि चहुँ बोरी ।।
तू वेव सदा उपकारी सुन हे मिथिलेश दुलारी ।।
यह वास विनै अति भारी "क्षितिपाल" क्षमा भुमखोरी ।।४४०।।

विषय—राग रागिनियों कासग्रह ।

रचनाकाल

गुर पंचमि मधुमास साके सत्रह सै असी ।
विरच्यो राग प्रकाश बहू ग्रंथनि अवलोकि कै ।। ६ ।।

संख्या २९०ख. स्तुति (?), रचयिता—नृपति माधव, पत्र—१०, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—१०, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कु० हाकिम सिंह, ग्राम–खजुराहा, तहसील–रामनगर, राज्य–छतरपुर ।

आदि—

गिरजा अति सोहन सुदर सुष मय प्यारी ।।
मुंड माल गर चंद्र भाल लषि गरल कंठ छविवारी ।।
सीस जटा अहि मुकटि विराजति निकल गंग जलधारी ।।
नंदी गन बाघंवर सोभित भस्म अंग सुभकारी ।।
भांग धतूर अहार करन नित अवढर दांन दारी ।।
कह लग कहौं त्रिलोचन तुव गुन सारद की मति हारी ।।
माधव नृपति चरन सेवक लष अलबेली छवि भारी ।। ६ ।।

मध्य—१२ सं० पृ०

......वारध मै रैन दिन क्यौ भटकत मतिमंद ।।
माधव नृपति सीष सुनि भनि श्री गोकुल चंद ।।३८।।

अंत—प्रभु दस अवतार धरे ।

मछ्छ रूप ह्वै वेद अवारे धर्म हि प्रगट करे ।।
कछ्छ रूप भूमि के भारहि आपुन लै निबरे ।।
सूकर रूप बसन धर धरनी जल ऊपर निसरे ।।
नरहर ह्वै हिरनाकुस.................... ।।
.... ।।
.... ।।
..................................।।५६।।

विषय—भगवती, भगवान शंकर, भगवान् कृष्ण, भगवान् राम आदि देवी देवताओं की स्तुति की गई है ।

संख्या २६१. वनविहार माधुरी, रचयिता--माधुरीदास कपूर, पत्र--५, आकार--६३/४ × ७ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६२, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० बं० २४, पु० सं० ८ ।

आदि--अथ विहार माधुरी लीख्यते ॥

। दोहा ॥

कृष्ण रूप चैतन्य की सदा सनातन केलि ॥
गिरि बन पुलिन निकुंज बन द्रुम द्रोनी बन बेलि ॥
सदा एक रस रसिक बर बिहरत सदा सुभाय ॥
पिया पिय के जोय में पीय जपि पीया समाय ॥

मध्य--

छांडी हुलस मान पर संग ॥ केहें कछु रंग में रंग ॥
देखो पिय विपिन की सोभा ॥ ऊपजत हे कछु मन अतिलोभा ॥
अरु सुरंग दारिम सुमनाली ॥ कहु रस भरे करक फल पाली ॥
कहु गोर माकंद रसाल ॥ कहुं डोलत मधुपन की माल ॥३२॥

अंत-- **॥ दोहा ॥**

न बिहार विहरहु सदा सदा माधुरी केली ॥
बन केली बेली रुचिर श्री वृंदावन की केली ॥७०॥
जे गावे सुमरे सदा मन वच विपिन विलास ॥
ते पावे सुख सहज में श्री वृंदावन बास ॥७१॥
जो लालच कोटिक मिले तोहु न चित ललचाय ॥
तजि वृंदावन माधुरी सपनेहु अनत न जाय ॥७२॥

इति श्री मदन मोहन द्वार बासी माधुरी दास कपुर विरचिता बन बिहार माधुरी संपुर्ण ॥ १११ ॥

विषय--भगवान् कृष्ण के वन विहार का दोहा चौपाइयों मे वर्णन है।

संख्या २६२क. सयोग बत्तीसी ,रचयिता--मान कवि या मुनि मान, पत्र--३, आकार--१० × ४३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२००, पूर्ण, रूप--साधारण; पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १७३१ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० ब० ७२, पु० स० १५ ।

आदि--अथ संयोग बत्तीसी लिख्यते ॥ दोहा ॥

बुद्धि वचन वरदायिनी सिद्ध वचन शुभ काम ।
सारद सौ माननि समरि हिर की पूरन हाम ॥ १ ॥
राग सुभाषित रमणि रस तिहुंयण मै ए गूढ ।
जे योगीसर जंगली न लहैं ते को मूंढ ॥ २ ॥

॥ अथराग वर्णनन ॥

नाग कुरंगम रागरत गिरणं न हेत अहेत ।
बाढो रहि विलतै निकसि जांनि बूझि जीव देत ॥ ३ ॥

॥ अथ राग महिमा वर्णनं ॥

॥ सवैया ॥

सुखी धनवान ताको सुख को निधान गान रमनि के रंग संग राग मैं मगनता ॥
दुख को दुराउ अरीले बाल हू को ख्याल विरही को साल जाकी कहुंक लगनता ॥

भूचर गगनचार पशु पंछी चित्र के मे होइ ताके सुनें चुके चितकी चगनता ।।
पंचमोपवेद ताको अगम अपार भेद सुगुन कूं सुगम है ठगीले कूं ठगनता ।। ४ ।।

मध्य--पृ० २ प्रथम नायक वचन

मेरो मन आतुर अधीर अति प्रानप्यारी मन मैं भुलायो जानुं धाय मिलु अबही ।।
लांबी बांहि करिकें लगाय लेहु कंठ २ चुंबन अधर पान तृषा मोहि सबही ।।
कर सौं मसकि कुच कुंभ की कठिनताई देखहुं कहत मान जक परें तबही ।।
छिन एक जास्यो तो वरसें विहात सात तुम कहो राति प्रराति परें कबही ।।३०।।

तदनंतर नायका के वचन सवैया ।। ३१ ।।

जोइ तुम कही सोइ लिखी है करेजा बीचि मेरे वस नांहि प्यारे मोहि ब्याही रली है ।
जानत जगदीस कै यो जानन हमारो जीव पीउ तन वारि डारु ग्रोर कहा चली है ।
गए विहुं जाम तिहुं याम जात कौन वेर हाथ अध हाथ में यों बात आय मिली है ।
इतनी अधीरताई छोरि देह प्रानप्यारे तुम हो सुजान मान लोक लाज भली है ।।३१।।

ग्रंत--- ।। सवैया ।।

आदि सुराग सुभाषित संदर रूप अगूढ रु गूढ बतीसी ।
पंच संयोग कहे तदनंतर प्रीत की रीत बखान तीसी ।
संवत चंद्र समुद्र शिवाक्ष सशी युत वर्ष विचारत तीसी ।
चैत्र सिता वसु छवि गिरापति मांन रची युं संयोग बतीसी ।।७३।।

इति श्री मनमान कवि विरचितायां संयोग द्वात्रिंशकायां नायक नायिका परस्पर संयोग नाम चतुर्थोन्मादः ।। पं० केसरीचन्द्रेण लिपि कृत ।।

विषय--संयोग शृंगार के भेदोपभेदों का वर्णन संक्षेप में किया गया है । ग्रंथ की भाषा परिमार्जित और टकसाली है ।

संख्या २६२ख. कवि कोविद, रचयिता--मनिमान जी, (बीकानेर), कागज--देशी, पत्र--११८, आकार--६$\frac{1}{0}$ × ५$\frac{1}{0}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--६७६, पूर्ण, रूप--प्राचीन पद्य लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७८५ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० सुरेंद्रनाथ चौबे, ग्राम--लगनपुर, पो०--पीरनगर, जिला--गाजीपुर ।

आदि--श्री गणेशाय नमः अथ श्री कवि विनोद लीख्यते ।
उदित उदोत जगमग रह्यौ भानु कवि ग्रंसे ही प्रताप आदि रिष्यव कहत हैं ।
ताको प्रतिबिंब देखि भगवा न रूप रेख नाहिन सो पाप पेषि मंगल चहत है ।
ग्रैसे वारो दया मोहि ग्रंथकरो टोहि टोहि धरो ध्यान तोहि उमगत है ।

।। दोहो ।।

परम पुरुष परगट वहति त्रिभुवन रवि सम वीर ।
रोग हरण भव सुख करण उदधि जमे गंभीर ।।

:o: :o: :o:

गुरु प्रसाद भाखा करी समुझ सकै सब कोइ ।
ग्रौर वध रोग निदान सभ रुवि विनोद यहि होइ ।।

:o: :o: :o:

सवत सतरह सेय पंतालीश वैसाख शुकल पक्ष येमी दिनै सोमवार दै भाख ।
ग्रौर ग्रंथ सभ मथन करि भाखा कहौ बखान ।।

जाको गछवासी प्रगट वाचक सुमती मेर ।
ताको सिस "मुनिमान जी" वासी बेकानेर ।।

अंत—अथ पुरा पड़ कथनं ।

शास्त्र दान स दान बहु दान अभय निर वहि ।
भोजन दै तो सुख अधिक भेषज निरख्या धोहि ॥
रोग हरण तातै अधिक लोभ छाडा कै देह ।
वर्धै सुज संसार मै परभव सुख का गेह ॥

इति श्री खरत स्य छ प वाधनाचार्य श्री सुमति मेरु गणित शिष्य "मुनीमान जी" कृत कवि विनोद नाम भाखा सप्तम खंड समाप्तः ।

बंधेज का औषध गोंद किकर की गाजर बीज गोप्रक्षरु बीज बंव तालमखणा तज सब सब मलेणे सभ सम मिश्री बुरराक पैसा १ औषध न जले कों त्रिविधि ठीम से ४ तमेबी गिरी मासे ४ गाड़ी कूं मासे ३ धतूरा का तामरच रत्यां ३ सौफ मासे ३ आमलतास रती ४ में ॥

विषय—वैद्यक ग्रथ रोग और ओषधियो का वर्णन ।

संख्या २६३. पाडे लीला, रचयिता—मानिक, कागज—सफेद, पत्र—४, आकार—४$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १७११, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० व० ७, पु० स० ३ ।

आदि—प्राप्त नहीं......

मध्य—पृ० ४

परम प्रवीन पाक करि लीन्हों । व्रजरानी जी आय दीन्हों ॥३७॥
पनवारे की रचना करी । बहुत पांति दूननि की धरी ॥३८॥
लीबू पांच कागदी आने । दूना बीसक धरे संधाने ॥३९॥
पनवारो कीनो परस्यो सब । जीबो जगजीवन मेरे प्रभ ॥४०॥

अंत—

पांडे कह्यो सो जसोदा जान्यो ।
जसोदा कह्यो सो पांडे मान्यो ।१०१
पाय प्रसाद मोद मन आन्यो ।
जीवन जन्म सुफल करि मान्यो ।१०२
बार बार यह गाथा गाई ।
मानिक महरि गोद भरि लाई ।१०३
कहे सुने हरि लीला गावे ।
सो हरि नाम परमपद पावे ।१०४

स्माप्तः ॥ संवत् १७११ वर्षे मार्गसर मास सिते पक्षे प्रतिपदा दिने बुधवासरे समाप्त लीखत चर्णरज मात्र गोकुल दास सोम जी ॥

विषय—श्रीकृष्ण की पाडे लीला का वर्णन ।

संख्या २६४. समरसार, रचयिता—मिहिर कवि और छत्रपति चौहान, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{1}{4}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१२ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० कृष्णसेवक मिश्र, ग्राम—सहनुडीह, पोस्ट—बरदह, जिला—आजमगढ) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ डाक चक्रम ।।

कवित्त

भानु के भादि को आदि करो रजनीपति लैं गनना करिये ।
हर नएन ३ के भाग सो शेष रहै एक पंथ चलै न धरै डरिए ।
भूमि भयानक है दुसरे तिसरे सब सिद्धि सदा कहिए ।
शिर शत्रु हू के रन खंडन को मत गुप्त विचारि सदा रहिए ।। १ ।।

:o: :o: :o:

रजनीपति आदि गनै भटभादि किए ग्रह शेष बचै नव एक न ग्राम में शत्रु सिवान कही ।
नेत्रा २ षू ८ बचै पुर मध्य रहै मुनि ७ राम ३ महीपंथ जात सही ।
बेदा ४ ग ६ बचै गृह मध्य रहै शर ५ शेष बचै निज सैन्य कही ।
एह "छत्रपती चौहान" भनै "बलिराम प्रताप" ते सिद्ध यही ।। ६ ।।

जन्म पंचमे सप्तमे उदय अस्त स्वर जाहि ।
"मिहिर" कहे कवि काम सो संगम लीजै ताहि ।।

अंत— ।। अथ क्षेत्र पाली ।।

पूरब ते मधुमास दई अपमध्य चतुष्ट दिशा ठहरानी ।
मघवा दिशि ते पुनि मारग मास चलै दहिने गुनवास बखानी ।
भुक्ति चतुर घटिका कहिए दहिने अरु पृष्टि रहै मनमानी ।
नरमध्य हजार के बीच हराउ लहै न हिए भय मानी ।
द्वादस १२ पत्र अजा १ दि लिषौ अप सब्द जहा रवि भादि परै ।
कोनन पांच घरी को नेवास दिशा मे अढ़ाइ घरी न टरै ।
एन्ह की गति मध्य सदा कहिए यह चारु विचारि के युद्ध करै ।
नर केहरि है परसैन्य के बीच परै गज यूथ हजार हरै ।।

इति समर सार समाप्तम् ।। सं १६१२ आश्विन वदी ६ आजमगढ़े ली० ।।

विषय—युद्ध में विजय पाने के निमित्त शुभाशुभ फल वर्णन ।

संख्या २६५. गंगा पुरान, रचयिता—मुकुंद, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री गंगा पुरान लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

श्री गुरु चर्न शरोज रज शिर पर धारन कीन ।।
सिव मुकुंद वर गुन कहे सरस्वती वर दीन ।। १ ।।

।। चौपई ।।

तीन नैन उपवीत भुजंगा । सदा पार्वती तन के गंगा ।।
ससि लिलाट माँथे मै राजै । भागीरथी जटामें गाजै ।। २ ।।

।। सोरठा ।।

संकर दीन दयाल, विन्ती मेरी मानियें ।।
निज्जन होउ क्रपाल, आसख दीजै पर्म हित ।। ३ ।।

।। चौपई ।।

सुनहुँ नाँथ एक विन्ती मोरी ।। स्तुति कवन मति करौं तोरी ।।
मैं मतिमंद सर्व गुन हींना ।। कैसें संकर गुनगन चींना ।। ४ ।।

॥ सोरठा ॥

सदा कृतारथ रूप मो पर प्रभू रह्या करहु ॥
मत समगुन त्रपुरारि वर्ण संकर गुन विमल ॥ ५ ॥

२ मध्य--चौपाई : पंचमया अध्याय वखांनौ । मन मुकुंद कौ गुनवर जानौ ॥
पूरन वश्व आदि अविनीसा । पार ब्रह्म परमेश्वर शीसा ॥

कुंडलिया

रथ शरीर या पुरुष कौ ताकै इंद्री बाज ॥
रथी विराजत आतमाँ चक्र मनोरथ साज ॥
चक्र मनोरथ साज बाज अति चंचल आही ॥
जितही कौ मुख परै खेंचि तितकौ लै जाही ॥
ग्यान रज्जु जो बाँधि धीर जो धरत आप हथ ॥
कठिन पंथ संसार भलै निवहत जैकौ रथ ॥ २ ॥

ग्रंत--श्रावण, वैशाख, कार्तिक, फाल्गुन, मार्गशिर ये मास सभ हैं या कार्य मैं लग्न यै लीजै व्रष सिंघ व्रश्चिक कुंभ ये लगन देवता पदराने कुं अछीः चंद चार विचार रात्री की पंहैलै दोपहर पुर्व कुं अछीः अर्ध परै की पहर दो उत्तर कुं अछीः प्रात की दो २ पहर पश्चिमै सभ हैं मध्यान परै की दोपहर दक्षिन कुं सुभ है : यात्रा मेंले के वास्तै वौहौत श्रेष्ट है : विद्या पठन गुरवार कौ श्रेष्ट और न सिद्धी पंचक है सतविषा धनष्टा पूर्वा भा० उत्तरा भा० रेवती इन नक्षत्रन मं काष्टनः संग्रह न करनौ कौ ये पंचक कहैलाते है : अम्रत योग दीतवार कौ हस्त नक्षत्र होय थी अमत सिद्धि योग है : अव अैसैं ही कहूं सौम कौ मृगशिरः वुद्ध कौ अनुराधा वृहस्पति कौ पुष्य, सुक्र कूँ रेवती शनीश्चर कौ रोहनी इन नक्षत्रन ते अमृत सिद्धि योग उपजै सौ जाँ प्रश्न सगुनौती जानि इन चिन्हन ते समझनौ उचित ॥

विषय--प्रस्तुत ग्रथ सात अध्यायो मे विभक्त है :--

१. अध्याय--ईश्वर वदना
२. ,, --नरेद्र (गगा प्रसाद) गुण ।
३. ,, --धर्म पुत्र के गुण ।
४. ,, --पूर्व जन्म की वात ।
५. ,, --कानून (शासन पद्धति तथा नियम) ।
६. ,, --नायिका भेद (लक्षण) ।
७. ,, --ज्योतिष ।

संख्या २६६. विनय विहारी रूप उत्सवाष्टक, रचयिता--मुकुंद (? सभवत रूप-देव्या), कागज--देशी, पत्र--३०, आकार--६ × ८ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३७१, पूर्ण, रूप--श्रेष्ठ, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८०६ वि०, लिपिकाल--संवत् १६२८, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हिं० बं० २६, पु० स० ३१२ ।

आदि--अथ विनय विहारी रूप उच्छवाष्टक लीख्यते ॥ दोहा ॥
मदन कदन सुत गजवदन रदन एक सुनि मोर ॥
प्रभु उछव वरनम करूं दै अक्षर सुभ जोर ॥ १ ॥

कवित्त

माघ सुभ मास शुध पक्ष पाचें सोमवार संवत गुणीस आठ उग्र काज कारी को ।।

मध्य—पृ० ११५

श्री गौरीपति महाराज शंभु बडे देवा ।।
आप आहार करत विजिया को देत जनन कूं मेवा ।।
सुर नर मुनि जिहें ध्यान धरत है करत निरंतर सेवा ।।
रूप अनूपम बरनि सकें को निगम न पावत भेवा ।। ७ ।।

हिमतनया शंकर की प्यारी ।।
पीतम अर्द्ध अंग मधि राजत विडद धरत अति भारी ।।
जासु नाम जन जपत निरतर तन मन पावक हारी ।।
लहत सुरूप अनूप रिद्धि सिधि कहि पुरान श्रुति चारी ।। ८ ।।

अंत—

मैं तो होरी खेलूगी सुख रग जोगी रग भीना संग ।।
जोग जुगत बनायकें सजनी पीतम प्रीत उमंग ।।
जोगन नाचन चायकें डफ डरु बाजन चंग ।।
रुप संजगो जोग अनोखा निरमल नीर सुगंग ।।

इति श्री रूपदेव्या विरचिते रुपमजरी ग्रथ सपूर्णम ।। श्री माजी महाराज रुहादुर वाला लिखायतम् । अलवर मध्ये माघ कृष्णा ५ संवत् १९२८ ।।

विषय—स० १९०८ माघ, शु० ५ सोम को विनय भूप की रानी रागावत ने मदिर बनवाकर उसमें ठाकुर जी को पधराया, उसी का प्रस्तुत ग्रथ में वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—लिपि सुदर है । पुस्तक के आदि भाग में 'रूप मजरी' नामक ग्रथ लिखा गया है ।

संख्या २९७. भ्रमरगीत (प्रेमरस पुजनी लीला), रचयिता—मुकुददास, जनमुकुद (नददास), पत्र—७, आकार—६।। × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, जि० ब० स० २८, पु० स० ८ ।

आदि—उधो के उपदेश सुनो ब्रज नागरी ।।
रूप शील लावन्य सबे गुन आगरी ।।
प्रेम धजी रस से रूप नी उपजा रमा निरसपुज ।।
सुबर स्याम बिलासनी नव वृंदावन कुंज ।। १ ।।

मध्य—चोर चीत ले गए, कोऊ कहे ऐ निठुर इन्हें पातकु नही लागे ।।
पाप पुन्य के करन हार ऐइ आये ।
इनके निर्वे हममे नाहीन कोऊ चीव ।
पप्यावत प्रांनन हरे पुतन बालि चरीव ।।३५।।

अंत—तरंगनी वारी जो ।
गोपी आपु दीखाय ऐक कीनी बनवारी ।।
ऊधो भऐ माह बारी डारी भ्यय मोह कवारी ।।

अपनो रूप देखाइ के लीनो बोहोरी दुराइ ॥
जनमुकुंद पावन भयो सो यह लीला गाय ॥७५॥ प्रेमरस पुजनी ॥

इति श्री मकदवास कृतौ प्रेमरस पुजनी लीला संपुरण ॥ = ॥।

विषय--गोपियो के प्रति उद्धव का उपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य--पृष्ठ सख्याएँ लगी हुई नही है । हस्तलेख के मध्य भाग मे यह ग्रथ लिखा है ।

संख्या २६८. पिगल, रचयिता--मुकुंदलाल (सभवत), कागज--देशी, पत्र--१३, आकार--१० × ४१⁄२ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६६, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि--................अन्त गुरु तोपि अन्त लहु एण ॥३३॥

अथ गण देवता नामानि

पुहु वीजल सिहि आलोग अणं सूरो ।
अचंद मारणाओ गए अट्ठ इट्ठ दओ जह संखं पिगलेक आहि ॥३४॥
मगण णगण दुहु मित्त हो यगण भगण हो मिच्च ।
उआशीण जत दुअउ गण अवसि भये अरि णिच्च ॥३५॥
मगण रिद्धि थिरकंज यगण सुह सुप अट्टिज्जइ ।
रगण मरण संथलइ जगण रवल किरण बिसज्जइ ।
तगण सुगण फल गहइ सगण सह मउ छासइ ।
भगण कहइ मंगल अणे केइ पिगल भासइ ॥
जतकट्टग्गह दोहइ मणद्गण गण होइ पठमखखरइ ।
तसु रिद्धि सिधि सधइ फुरहरण राउल दुतर तरइ ॥३६॥

॥ अथ माया मर्कटी कर्त्तव्यता ॥

वृत्त अंक इक आदि क्रम भेद उदिट्ट सरन्न ॥
भेद वृत्त गुनि मत्त गण मत्त वरन्न बरन्न ॥
:o: :o: :o:
वर्ण वर्ण के अर्ध करि तासम गुरु लहु तासु ।
तासु मत्त गुरु वर्ण मिलि "लाल मुकुंद" प्रकासु ॥

अंत--॥ अथौ लाल लक्षणम् ॥

तिरिण तुरंग मति अलतंह छअ चठलि अठवि अंत ।
एमुल्लाला उद्दवहु विहुदल छथ्यरण भक्ष ॥
जजा आजा अद्धंगे सीसे मंगलो लंती ।
सधा आसा पूरती सधा दुरखा तो लंती ॥
राग आहारादी सावासा भासंता बे आआला ।
जा संगेण ह्वा दुट्टा सासन्वा ॥
णा चन्तां कंजा उच्चावे तालो भूमी कंपदो ।
जादिसे मोर खापा विज्जे सो तुम्हाणं सुध्यंदो ॥
:o: :o: :o:
अज अविज अवलि करम वीरवे आल ।
वह ण लमक्कलुहरिहर वक्क इंव धंवण असुह कहल ॥
:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--पिंगल विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडित है । केवल संख्या ५ से १७ तक के पत्ते उपलब्ध है ।

संख्या २९९. सतान कल्पलतिका, रचयिता--मुन्ना, कागज--आधुनिक, पत्र--४, आकार--१०३/४ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१७, परिमाण (अनुष्टुप्)--६४, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस (दाता--कृष्ण सेवक मिश्र, ग्राम-महनुद्दाह, पोस्ट-बरदह, जिला-आजमगढ़) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः अथ सतान कपलतिका (?लि) ष्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमहि नारि पुरुष की लेइ परिछा बूझि ।
फिरि पीछे सह्य युक्ति करि करै परै सी सूझि ॥
सेत सर्ष या मूत्र मे दूनो देइ भिगोइ ।
तिसरे दिन जामै नही दोष जाहि मे होय ॥
वध्या सात प्रकार की सुनहु तासु कर नाम ।
ताको विधि जो लिषत है करे साइ सिद्धि काम ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

बंध्या प्रथम नाम है सिमिर । उवमा दूजे सुनिए तिसर ॥
यहै मालो अनौली चौथी को । चर्चा दीप चई को टीको ॥
छटई कुम सतई संतानी । सातौ नाम क्रम ते जानी ॥
लक्षण पृथक पृथक सकेरा । कहत उमा सो सुनहु निवेरा ॥

अंत--होइ है सुपुत्र सुंदर जाहिर जहान में ।
यह बात सत्य मानो आइ "मुन्ना" के मन में ॥

:o: :o: :o:

वनवाय के सोहाग सोंठि नारि षाय जब ।
इससे किए से वेगि तासु रोग जाई सब ।
तब सुद्ध होय चौथे दिन तव नहाइ कै ।
फिरि सो विलास करै मर्द संग जाइ कै ।
लोहबान कोटि आओ इलाज औ जीज पुनरनवा ।
लेप वाटि लिंग लावं यह तीनो दवा ॥

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--वंध्या रोग की औषध आदि का वर्णन ।

संख्या ३००. मेघमाला, रचयिता--मुनि मेघराज, (स्थान-फगवाड़ा), कागज--देशी, पत्र--५३, आकार--८ × ५१/२ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--७६५, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८१७ वि०, लिपिकाल--सं० १९३९ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री पं० रामसुंदर पांडेय, ग्राम-पांडेपुर चक, पोस्ट--बरुआ, जिला-जौनपुर ।

आदि--ओं श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री भडली मेघमाला लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

परम पुरुष घट घट रम्यौ ज्योति रूप भगवान ।
सकल सिद्धि सुख देम प्रभु नमो मेघ धर ध्यान ॥ १ ॥

बाहन जाको हंस सित श्रौ संग सिव सीय ।
शिवा भवानी शारदा सकल एक नहिं बीय ॥ २ ॥
चरण नमो युग तासु के श्रगम बारिग वरवाइ ।
तिस प्रसाद इस ग्रंथ कों रचो सकल सुखदाइ ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

जोतिश ग्रंथ अपार मग जानत इक जगदीश ।
मानुष जन जानत नहीं तातें मो मती बीस ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

जोतिश छनो श्रपार मूच श्रादि परसत जगत ।
इह मह समाश्रचार काल दुकालहिं विधि सगुन ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जोतिश ग्रंथ समुद्र है ताकी तै इक बूंद ।
मेघमाल मेघहिं रची प्रगटहि ज्यौं जग चंद ॥

॥ चौपाई ॥

मेघ विचारत प्रथमे वाय । जैसे ढकी कही बनाइ ।
काल सुकाल तनी यह बात । गुरु कृपाते करु विख्यात ॥१३॥
कातिक श्राहि जु देखिए श्रासिन मास जु श्रंत ।
नीम धरी इह समौ की जानो सब विरतंत ॥१४॥

॥ दोहा ॥

श्रथ कातिक फल ॥ दो० ॥

कातिक सुदि दुतिया दिने चढत चंद्र जो लाल ।
पश्चिम दिशि बापर करत तौ मेटत जगकाल ॥

:o: :o: :o:

श्रथ मघ्रमासफल ॥ डो० ॥

मघ्रवदी जो पंचमी घटा होत चहु श्रोर ।
वरषत वरषा मास मै चारि मास जल चोर ॥२५॥

:o: :o: :o:

श्रंत--॥ इति ग्रंथ समाप्त लीलावती छंद ॥

यह देस जलंधर सोभासुंदर नाम सुश्रावाठौर कह्यौ।
शुभ दान पुन्य की यही ठौर है मानो सुरपुर श्रानि रह्यौ ॥
तामहि पंडित नर सोभै कवि भारी गीत व जंत्र न रेगरस्यौ ।
घर घर मंगल चार जुबोवहिं तामहिं परइक एह वस्यौ ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

सकल रिधिकर सोभ है फगवाड़ा शुभ थान ॥
तहां मेघ कविता करी श्राछी विध मनि श्रान ॥५७॥
भूर मेल जो चौधरी फगवाडा सो राइ ।
चतुर सैन कर सोभ है जिव ससि उडगन भाई ॥५८॥
सब कवियन सो बीनती कर मेघ कर जोरि ।
करो सुध इस ग्रंथ को कह्यौ श्रधिक जिहि ठौर ॥५९॥

:o: :o: :o:

समुझ करो इसका शुबिचार । मेघ माहि मेघै विस्तार ॥
काल सुकालहिं सगुनैधार । सब कछु इसमै करौ विचार ॥

॥ चरपटछंद ॥

श्री जटमल मुनिस जी सब सब साधन राजा ।
परमानंद मसो जहे गृंथन गुन साजा ॥
सदानंद भयो शिष्य ताहितें उपमा भारी ।
चौदह विद्या जुक्ति सुगुरु के अज्ञाकारी ॥६५॥

चौ० तासु शिष्य नारायन नाम, ताको शिष्य सुनरोचम, तिनकी दया भई मुझ पर ।
मुनि ससि बसु महि जान विक्रमदित संवत आषत ।
कातिक सुदी गुरुवार पंचमी तिथि सुभभाषत ॥

इति श्री मेघ माल मुनि मेघराज विरचिते. . . पंचमोध्याय भडली ग्रंथ समाप्तम सुभ संवत् १९३९. . . . . ।

:o: :o: :o:

विषय--दिन, मास और बादलों को देखकर वर्षा का वर्णन ।

रचनाकाल

मुनि ससि बसु महि जान विक्रम दित संवत आषत ।
कातिक सुदी गुरुवार पंचमी तिथि सुभ भाषत ॥

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है । केवल चौबीसवां पत्र लुप्त है ।

संख्या ३०१क. ऊषा चरित्र, रचयिता--मुरलीदास, कागज--देशी, पत्र--३३, आकार--५¼ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६१, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--संवत् १८८८, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ ऊखाहरन लिख्यते ॥
सब संतन की आज्ञा पाऊं । सत मन सत गुरु को सिर नांऊं ॥ १ ॥
सारद मोहि बिसरि मति जाइ । भूले अक्षर देहु बताइ ॥ २ ॥
जे जे कृष्ण रुक्मणी राणी । रटत परद मुनी के मन मांनी ॥ ३ ॥
ऊखा अनरुद को संजोग । चित दे सुनो कटे जो रोग ॥ ४ ॥
बाणासुर प्रेहेलाद को पती । बल को सुत लोचन को नाती ॥ ५ ॥
जिनकी उतपति कुंवरि भई जो । जिनके निमति अनग्र सुत आई जो ॥ ६ ॥
जनमत अग्य मदीए जनाई । असुर भुजा कांपी अकबाई ॥ ७ ॥
ऐरे पंडित चतुर बिबेकी । लगन घड़ी जन मोती देखि ॥ ८ ॥

मध्य--
जोगसो अरम परम ह्वै बोले । अंतर कमल किवारी खोले ॥२०२॥
राधाबर रुकमनी कुबजाबर । धरनीधर मुरलीधर गिरिधर ॥२०३॥
सदा रहित हमारे मस्तक पर । बिप्रत सुबत बरनी उनमाना ॥
कृपा करी कछू गुरु भगवाना ॥२०४॥
गुरु भगवान कृपाकरी वानी होत प्रकास ।
कछुक गुन ऊखा अनरुद के बरनत मुरलीदास ॥२०५॥
इति श्री ऊखा चरित्र संपूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥ हरि ॥

विषय--ऊषा अनिरुद्ध की कथा का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रंथ चतुर्भुज दास कृत 'मृग कपोत की लीला' के साथ एक हस्त-लेख में है ।

संख्या ३०१ख. सुखदेव लीला, रचयिता—मुरलीदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—५३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमे ।। अथ श्री सुषदेव लीला लीषते ।।

सुमरि सूमरि गोविंद गुसाईं । गूरसंतन के लागू पाईं ।।
गूर संतन मोइ अग्या दई । मुरली दास कथा मेहे बई ।।
समरू ब्रह्मा विसन महेस । जिन मोइ दीनी वृधि विसेष ।।
गवरी सेहेत गणेश मनाऊ । सूमर सारदा अग्या पाऊ ।।
एक समैं नारद मूनी आए । पारवति उठि दरसन पाए ।।
दरसन परसन पुरन भये । वाढ़े पुनी पाप छै गये ।।
महादेव अस्नल कू धाये । पारवती अनद उपजाये ।।
तूमरे कंठ कहा है स्वामी । गुपत कथा हम परघट जानी ।।

अंत—

य लीला सुषदेव परवाना । सीषे सुनैं होय कलाना ।।
चीत दे सुनैं पीती दै गावैं । जो नर कहै सोई फल पावा ।।
अमर कथा सुषदेव की बनी भई परगास ।
सीरीसंत वोप्रते तास नंदन भपते मुरलीदास ।।
ऋसन गईयौ ।।

इती श्री सुखदेव लीला संपूरन वांचै सुन जीनै राम राम पोथी वांचै सुनै सुषदाई ।।

विषय—श्री शुकदेव मुनी की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल उल्लिखित नहीं है । लिपिकाल भी अज्ञात है । लछीराम-कृत 'करुणाभरण' प्रस्तुत ग्रंथ के साथ एक हस्तलेख में है । इसी में 'श्याम सगाई' (नंददास) और गुरु महिमा (सुखदेव) नामक रचना भी लिपिबद्ध है ।

प्रस्तुत ग्रंथ के साथ एक ही हस्तलेख में निम्नलिखित अन्य ग्रंथ भी हैं :—

१. करुणाभरण नाटक—लछीराम कृत
२. श्याम सगाई—नंददास कृत
३. गुरु महिमा—सुखदेव कृत

पहले ग्रंथ को छोड़ शेष ग्रंथ बहुत भद्दे ढंग से लिखे गये हैं । उनमें लिपिकाल भी नहीं दिए हैं ।

संख्या ३०२. बारामासी, रचयिता—मुरलीदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—५३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० २३, पु० स० ६ ।

आदि—श्री गोपीजन बल्लभाये नम ।। राग बारामासी लषीतां ।।

असाढ आयो अवध पुजी आव मेरे चांइआं ।।
आरतवंती करत आरती कोमल जुंमर जाइआं ।।
कामनी उठे बेठे भुई परे ।।
वार फेरी डार मोहन एसो नगर जन करे ।।

नगर तमारो मनरह मारयो ॥
दर्शन बिना दुःख पाय भनत मोरली दास आयो मेरे चाईआं ॥ १ ॥

मध्य--

माह मनकी मनहि जाने मनहि मन करवट बही ॥
देखो री सखी हम मरे न जीवे ॥
जेसी परी तेसी सहि कसन कस मीस धमके ॥
सीत मेल्यो मान के पेले दाख दिखाय आछे जहर दीयो हर जानके जरन मिटगर नीज कतज भइ ॥
कहो कहा बाते भइ भनत मुरलीदास बन जाउ मनही मन करवट बही ॥ ८ ॥

अंत--हर आये मेरे मन्द भगो सखियन चोक पुराइय्यां ॥
अठमठ तिरथ नाहे को सोजहि फल बारोमासी गांइया ॥१३॥

विषय--वियोग और संयोग शृंगार पूर्ण बारामासी।

विशेष ज्ञातव्य--इस ग्रंथ में पाठ संख्या सही नहीं है। आदि में अन्य पद और अन्त में पत्रों में भी अन्य पद लिखे हैं। मध्य के पत्रों में यह बारामासा है। पुस्तक जल से भीगी हुई प्रतीत होती है।

संख्या ३०३. भागवत भाषा पंचम स्कंध, रचयिता--मुरलीधर, कागज--देशी, पत्र--५५, आकार--१०¾ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५८०, खंडित, रूप--प्राचीन (अत्यंत जर्जर), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि--श्री गणेश. . .म. ॥ अथ भागवत पचम स्कंद भाषा लिष्यते श्री मुरलीधर कृत्य ॥

॥ छप्पै ॥

परम जोति पूरण प्रकास भनत अकास गति ।
नित्य शुद्ध चतन्य अधिक सूछम असेष मति ।
जलथल रह्यो समाइ लोक लोकनु कौ बासी ।
आदि अनत अगाध अखिल व्यापक अविनासी ।
नायक अखंड ब्रह्मंड को बहै जसोमति सुत भयो ।
सुमिरतु मुरलीधर जोरि कर प्रतिपालक जिनि पन लयो ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

बरनो श्री सुकदेव करी वृष्टि जिनि अमृत की ।
परम भागवत भेव जगत कृतारथ को कियौ ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

जाहि बिरंचि समाधिनि साधि अगाध अनंत न भेद बतायौ ।
जाके लिये सब सिद्ध प्रसिद्ध सदा धरयो ध्यान नहीं मन आयौ ।
जाकहु बेदहू सोधि रहे अनुमान ही ते सुमिरयौ गुण गायौ ।
सो मुरलीधर श्री शुकदेव परीछत कौ परतछि सुनायौ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

नवल सिंह नृप नै कही मुरलीधर कविराइ ।
स्कंध पांच यौ भागवत भाषा देहु बनाइ ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

कविनि की कामना पुजामन कौ सुरतर कामिनि के उरनि मनोज अनुमान है।
मित्र कुमुदनि के बिकासिबे कौ कलानिधि अरितम तोरिबे को तेजवंत भान है।
बीरनि में महाबीर नृपति नवलसिह रसिकन माझ सोहै रसिक सुजान है।
ज्ञानिनु में देषियतु पूरो ज्ञानमान पुनि मुनिनु की आसिषा है गुनिनु को प्राण है।

मध्य--॥ कुंडलिया पद्धरी ॥

हुँ माल्यवान पहिला बषानि। पुनि त्रुतीय गधमादनि सुजानि।
पुनि नील निबध ए कहत नाम। द्वै सह पृश्रुल जा जलनिधाम ॥१३॥
इहि भांति कहे नव षड मानि। पुनि कहे सुगिरि ताके प्रमान।
अरु मेरु अद्रि के आस पास। गिरि धारि प्रगट सोहब प्रकास ॥१४॥
है मंदर पहिलौ पछ देषि। पुनि त्रुतीय मेरु मंदर विशेषि।
पुनि तृतिय सुपारस कुमुद और। ए लसत अद्रि निजु ठौर ठौर ॥
है अयुत सहस्र योजन प्रमान। प्रति एक एक तिथि के बषान ॥
तिनि ऊपर है ए वृक्ष चारि। जिमि लसति धुजा गिरि की निहारि ॥

:o: :o: :o:

॥ छंद हरिगीत ॥

पंचम स्कंध जु कोउ सुनतु है चितु लाइक।
ताकौ तलक नहि होति व्यथा कृपा प्रभु की पाइक।
जो पाठ याको करै निसिदिन परम भक्त सुनावहीं।
इहलोक अरु परलोक मे फ...हुत के सुष पावहीं ॥५१॥

अंत--॥ अथ ग्रंथ कारणमाह ॥ दोहा ॥

नवलसिह नृप सासन हि...दा पाइ जदुराइ।
स्कंध पांच श्री भागवत बरन्यो भाषा लाइ ॥५२॥
जो कोऊ या ग्रंथ कौ समुझि लेइ हित लाइ।
ताकों विधि ब्रह्मांड की सबही परत लषाइ ॥५३॥

:o: :o: :o:

हरि...त्र चक्रवर्ति सुजान को सुत नवलसिह सुजान है।
सनमान दान कृपाणं...धि बलवान है।
तिनि हेत मुरलीधर कियौ श्री भागवत भ...।
पंचम स्कंध अध्याय षट विंसति सकल पूरण भयौ ॥२६॥

श्रीरस्तु...ती अस्वन वदि ८ भृगुवार दसषत सेवाराम के पठनार्थे लालाजी तेजसिंह बहादुरि शुभं भूयात् ॥

विषय--भागवत पचम स्कध का भाषा मे पद्यानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य--हस्तलेख अत्यत जीर्णावस्था मे है। इसके बीच के कई पत्ते और ५, ६, ७, ८ सख्या वाले अध्याय नही है। रचनाकाल का उल्लेख भी नही है। लिपिकाल दिया था, परतु उस स्थान का कागज फट जाने के कारण वह भी अज्ञात रह गया।

संख्या ३०४क. नलचरित, रचयिता--मुरलीधर, स्थान--आगरा (टोला मथुरिया), कागज--आधुनिक, पत्र--६७, आकार--८$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१७५६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८१४ वि०, लिपिकाल--सं० १६१० वि०, प्राप्तिस्थान--भारती भवन पुस्तकालय, इलाहाबाद।

आदि—**श्री गणेशाय नमः ।। अथ नल चरित्र लिख्यते ।।**

।। छप्पय ।।

मुष मतंग उत्तग रग चर्चित सुरगवर ।
सुड वड सिदूर भूरि पूरित प्रचडु कर ।
जगमगात दुति दसन रसन मधि वानी राजे ।
मुरलीधर शशिबाल भाल पर सदा विराजे ।
सेवत सुरेश गधर्व गन गुन मंडित पंडित सरन ।
नवनिद्धि वृद्धि दायक वरद गननायक बदहु चरन ।। १ ।।

।। दोहा ।।

एक समे उरमे उठी कठिन विरह की लाय ।
जतो ताहि बुझाइये तेतो बाढ़ति जाय ।। २ ।।
अकसमात सतसंग ते सुनी कथा दे कान ।
बहुत नृपति की बिपति सुन समुझन लागे प्रान ।। ३ ।।
आषधि को करिबो उचित जग दीरघ रोग ।
तेसेंही विपदा परे धीरज धरिबो जोग ।। ४ ।।

मध्य—

।। छप्पय ।।

एक आपु कछु देहि और प नहि दिवावे ।
एक दिवावें दानु देन म नहि मनु लावे ।
एक दिवहि दहि बेन मृदु बोलि न जाने ।
"मल्लिधर" इहि भांति दान गुन गनन बखाने ।।
कछु देहि दिवावहि इते पर मधुर बचन मुष पर तरहि ।
गुन सहित तीन ससार मे कहूं कहू सपुरष बसहि ।।६८।।

।। सवैया ।।

हेरत हूँ नहि हेरत हो हम बात कहै तुम बोलत नाहीं ।
मागत मे मन रूषो करो चरचा मे लखें छल की परछांही ।
पूछत हो नलराय तुमे तुम झूठ की वीथी किती अवगाही ।
चद तो राषत एकही अक अनेक कलक बसे तुम मांही ।।६६।।

।। तोमर ।।

यह सुनत नृप नलराय । लिय ललित नेन नवाय ।
सुरराज सो यो बेन । हँसि कहि उठे सुषदेन ।।७०।।
हम होहि तो नव दूत । तुम देहु शक्ति अभूत ।
लहि चहै मंदिर जाय । नहि नेक होय लषाय ।।७१।।

।। दोहा ।।

तबे सुरन मिलि वर दियो तुम्हे लषे नहि कोय ।
हम चहुन में एक को दमयती तीय होय ।।७२।।

:o: :o: :o:

अंत—वेद भूमि वसु सोम लषो सवत माघ सुमास ।
कृष्ण पक्ष कुज सप्तमी कीनो ग्रथ प्रकास ।।८८।।

अथ कवि कुल वर्णनं ।। दुमिल छंद ।।

विप्र माथुर वश भारद्वाज प्रगट्यो आय ।
पिता दिनमणि पढ़े ज्योतिष भए ज्योतिष राय ।।

पुत्र मैंने पढ़ी कविता भयौ रघुवरदास ।
नाम मुरलीधर दियौ उन कियौ जगत प्रकास ॥८६॥
दई करिके जीविका उन गेह दिल्ली ईस ।
भयौ अब उत्पात उनके वंस विश्वावीस ॥
ह्वै गयौ है राज औरे गई गुन की चाह ।
रहत बेठ्यौ सदन रघुवर करत सहज निवाह ॥९०॥

॥ सवैया ॥

जिनको जनम भरि वनज न करि आयौ साहू सन थायौ सेवामूर ताकीको करै
ह्वै सके न पंच परपंचहूं न करि जान्यौ मार्यौ तिनहूं सो रदाद मुखै न ह्यो न परै ।
देवन अराध्यौ कोऊ वृत्त नहि साध्यौ "मुरलीधर" रघुवर सोच पले पै सबै हरे ।
ऐसे ऐसे कायर कपूतन के पेटन कौ पूत दशरथ के सपूत बिन को भरै ॥९१॥

॥ गीतिका ॥

पुरिषा सदा ते वसत आए आगरे सुभथांन । टोला मथुरिया कोटि के ढिग निकट तनयाभान ॥
अबलो वन्यौ है वास ह्वांही कृपा रघुवर पाय । नल भीम जाकी कथा वरनों हिये हर्ष बढ़ाय ॥

:o: :o: :o:

पवित्रता सरीर में सदा बनी रहे सुभाय । अनेक भोगभाग पुत्र मित्र को लहे बनाय ।
बढ़े प्रभाव ठौर ठौर शंभु को प्रसाद पाय । नलेस भीमजा कथा पढ़े सुने जु चित लाय ॥९६॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नलोपाख्याने नल दमयंती स्वदेशागमनं नाम षोडशो विलासः ॥१६॥ समाप्तोयंग्रंथश्च ॥ संवत् १९१० मिति माघ शुक्ला १२ गुरौ लि० भोलानाथ पठनार्थ घनस्याम ।

विषय––महाभारत के आधार पर नल चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

४ १ ८ १
वेद भूमि वसु ससि लषौ संवत माघ सुमास ।
कृष्णपक्ष कुज सप्तमी कीनी ग्रंथ प्रकास ॥८८॥

संख्या ३०४ख. रामचरित्र, रचयिता––मुरलीधर, कागज––आधुनिक सफेद, पत्र––९२, आकार––१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––३७, परिमाण (अनुष्टुप्)––४५७४, पूर्ण, रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––संभवत १८१८ वि०, लिपिकाल––संवत् १९०९, प्राप्तिस्थान––भारती भवन (पुस्तकालय), इलाहाबाद ।

आदि––श्री गणेशाय नमः ॥ छप्पय छंद ॥

विघ्न विनासन हेत जिन्हे ब्रह्मादिक ध्यावै ।
जिनके गुन गन गनत शेष नहि पारहि पावै ॥
शंकर सुत कुल कलश कठिन कल्मष कुल नाशै ।
सेवक संतत जानि सुमति दै वृद्धि प्रकाशै ॥
सुमिरत "मुरलीधर" जोरि कर गनपति विनती चित धरौ ।
मुष चरित राम चाहत कह्यौ सकल ग्रंथ पूरन करौ ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अवध पुरी के भूप भए दशरथ उदार मति ।
जीति लई दिशिचार जो अपनी भुजानगति ॥

जग के जिते नरेश रहे कर जोरे ठाढे ।
सिंधु पारह धार तज सीम जिनके वाढे ।
जगमगत जग मे राज अति महादान षोडश दिये ।
"मुरलीधर" भूपन भूमि के कोटि जग्य जिन जग किये ।। ३ ।।

मध्य—भुजग प्रयात छन्द

दसग्रीव के चित्त मे रोस बाढ्यौ । बडे जोर सौ अक्ष प्रत्यक्ष काढ्यौ ।।
अबै वा कपी को करो प्रानहीनं । इहा आय जानै इतौ जोर कीनौ ।।७५।।
तबै अक्ष सोहे लिये रक्ष आयो । हनूमान को बोल वाको सुनायौ ।।
अरे मूढ तै क्या कियो मार भारी । इहा जायगा मारा हेरो हमारी ।।७५।।
तहा रक्ष दौर्यौ लिये रक्ष सेना । हनूमान ठाढो किये क्रुद्ध नैना ।।
जहा भाल को एक भाला चलायो । लियो हाथ सो अचि के सो गिरायौ ।।७७।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

यह रावन कानन सुनी लियो अक्ष को मारि ।
तब चिता चित मे करी लियो प्रहस्त पुकारि ।।८२।।

।। छंद हरिगीतिका ।।

यह सुनी रावन सिंधु पर रघुनाथ आये दल ले ।
सग बालि मार्यो भग अगद राज गृद सुग्रीव ते ।
कपि पुज कीनो सोर भारो चढ अद्रिन आयके ।
लगूर डारे फिरत दिसि दिसि रहे जहे तहें छायके ।। २ ।।

अंत—।। अथ कविवंश वर्नन ।।

गगा जमुन के मधि गभीरा पुरान को गाऊ है ।
वहु कोट ऊंचो सुंदर नीका परम उत्तम ठाऊ है ।।
शुभ सरोवर तट विराजत सिद्ध वीरेश्वर थली ।
उन अधिप की धर्मज्ञ कीनौ कृपा की भांतिन भली ।।
माथुर वस जायक तहा सजे सदन सुहावने ।
मुनि से लसत है निगम आगम गुनन ज्ञान वढावने ।।
उनही मे परमानंद प्रगटे पढ़ी विद्या जिन भली ।
गुनगन सुनत ही वोलि लीनौ आगरे अकबर वली ।।
चरचा भई दरबार के मधि रीझि के अकबर कह्यौ ।
हम कह्यौ तुमहि सतावधानी आन मे नहि गुन लह्यौ ।।
वकसीस कीनी वहुत उनकौ मिश्र की पदवी दई ।
उन वास अपने ग्राम राख्यौ चाकरि लाकरि लई ।।
उनके सनाभि कपूरचंद तिन वास अर्गलपुर कियो ।
टोला मथुरिया कालिंदी तट सदन वसिवे को लियो ।।
वे वसे आय कुटुंब के जत सील गुन मति षानि है ।
सवहीन जान्यौ सवन मान्यो सवन सौ हित वानि है ।।
तिनके तनय "पुरुषोत्तम" सु जिनकी सुनी कविता अति भली ।
दिल्लीस के सेनापती की चाकरी तिनकौ फली ।।
वे मिले साहिजहा वली सो मिली वकसीस प्यार मे ।
सोभा वड़ाई साहि जिनकी कविन के दरबार में ।।

तिनके भये सुत "प्रेमराजन" चाकरी चित में धरी ।
मिलवौ करै सज्जननही सौ जीवका सहजे करी ।।
तिनके सु "पृथ्वीराज" तिनने लह्यौ गुन अरु ग्यान है ।
सवही सराहे सुघरता कौ परम बुद्धि निधान है ।।
तिनके तनय "दिनमणि" भए जिन ग्रंथ ज्योतिष के पढे ।
. . . . ।।
तिनके सुतन में भयौ "मुरलीधर" कछुक गुनवान है ।
कवि कोविदन ने कृपा करिके लई कविता मानि है ।। ४ ।।
दिल्लीस महम्मद साहि सौ मिलि चाकरीहूं करि लई ।
औरों अमीरन कृपा करि मन रीझि के वकसिस दई ।।
यह कथा अपनी कही में अब ग्रंथ कौ कारन कहौ ।
इक वार समयौ भयो ऐसौ थिर न काहू कौ लहौ ।।
पश्चिम दिशा ते प्रबल आयो शत्रु शौर बढ़ाय के ।
उन दावि लीनौ राज दिल्ली गर्ज सब भय पाय के ।।४६।।
उन किते मारे किते लूटे किते कीने वंदि में ।
केतेक अपने संग लीने फसे बाकी फंदि में ।।
वह गयौ ह्वांहि दुवान के मधि राज औरे ह्वै गयौ ।
सब मिटि गई गुन ग्यान चर्चा कृपन जग सिगरौ भयौ ।।४७।।
तब चित्त आई हौहू चाकर चरित बरनौ राम कौ ।
सभै कहूं जौ कृपा करिहै तौ सबै ही कांम कौ ।।
:o: :o: :o:

८ १ ८ १
वसु ससि वसु ससि में लषौ संवत कातिक मास ।
शुक्ल पक्ष एकादशी रवि भौ ग्रंथ प्रकाश ।।६४।।

हरिगीता छप्पय

यह चरित्र . . . . जल है ।।६५।।

इति श्री मन्मूर्त्ति मिश्र मुरलीधर विरचिते श्री रामचरित्रे श्री राम गुणांनुवाद वर्णनो नाम चत्वारिषंतमः प्रभावः ।।४०।। समाप्तोयं ग्रंथ श्र . . . . . .सवत् १६०६ वर्ष अशाढ़ शुक्ल ८ भौम वासरे लिषितं चौवे भोलानाथ पठनार्थ पंडित घनश्याम लालस्येदम् ।। पोथी राम चरित्र की लिषी विचारि प्रचारि । भूल चूक करिहै क्षमा बुधजन सुघर निहारि ।।

श्री रामचंद्राय नमो नमः ।। श्रीरस्तु ।।

विषय—श्री रामचरित्र वर्णन किया गया है । ग्रंथ में निम्नलिखित ४० प्रभाव है :—

१०.	,,	—सीताराम लक्ष्मण वन प्रस्थान वर्णन	,, २० ,, २३ ,,
११	,,	—भरत समागम वर्णन	,, २३ ,, २६ ,,
१२	,,	—अयोध्या कांड समाप्त	,, २६ ,, २७ ,,
१३	,,	—श्री राम पंचवटी निवास	,, २७ ,, २७ ,,
१४.	,,	माल्यवान पवन समागम	,, २८ ,, ३१ ,,
		सुंदरकांड प्रारंभ	पत्र ३२ तक
१५.	,,	—श्री राम सिंधु आगमन वर्णन	,, ३२ से ३३ तक
		लंक कांड प्रारंभ	
१६.	,,	—सिंधु सेतु बंधना नाम	,, ३३ ,, ३५ ,,
१७	,,	—रावण प्रति दूत संभाषण	,, ३५ ,, ३६ ,,
१८	,,	—सेना अवरोध वर्णन	,, ३६ ,, ३८ ,,
१९.	,,	—रावणांगद संवाद	,, ३८ ,, ३९ ,,
२०	,,	—सेना द्वंद युद्ध वर्णन	,, ३९ ,, ४१ ,,
२१	,,	—मायानंद्र वर्णन	,, ४१ ,, ४३ ,,
२२	,,	—धूम्राक्षादि प्रहस्त वधनाम वर्णन	,, ४३ ,, ४५ ,,
२३	,,	—रावण युद्ध वर्णन	,, ४४ ,, ४६ ,,
२४	,,	—रावण कुंभकर्ण संवाद	,, ४६ ,, ४८ ,,
२५	,,	—कुंभकर्ण वध वर्णन	,, ४८ ,, ५० ,,
२६	,,	—रावण पुत्र युद्ध वर्णन	,, ५० ,, ५२ ,,
२७	,,	—इंद्रजीत वध वर्णन	,, ५२ ,, ५७ ,,
२८	,,	—रावण विरूपाक्ष वध	,, ५७ ,, ६० ,,
२९	,,	—सीता आगमन वर्णन	,, ६० ,, ६३ ,,
३०	,,	—राम भरद्वाज आश्रम आगमन	,, ६३ ,, ६५ ,,
		लंकाकांड समाप्त	६६ ,,
३१	,,	—भरत आश्रम आगमन	६७ ,,
३२	,,	—राम राज्याभिषेक वर्णन	,, ६८ ,, ६९ ,,
३३.	,,	—रामराज्य वर्णन	,, ६९ ,, ७६ ,,
३४	,,	—सीता वाल्मीकि आश्रम आगमन	,, ७६ ,, ७८ ,,
३५.	,,	—लवणासुर वध वर्णन	,, ७८ ,, ८० ,,
३६.	,,	—शत्रुघ्न मूर्छा वर्णन	,, ८० ,, ८२ ,,
३७.	,,	—लक्ष्मण मूर्छा वर्णन	,, ८२ ,, ८५ ,,
३८.	,,	—अश्वमेध यज्ञ वर्णन	,, ८५ ,, ८८ ,,
३९	,,	—नपवण वर्णन	,, ८८ ,, ९० ,,
४०	,,	—राम गुणानुवाद तथा कविवंश वर्णन एवं माथुर चतुर्वेदी वंश वर्णन	,, ९० ,, ९२ ,,

रचनाकाल

वसु ससि वसु ससि में लखौ संवत कातिक मास ।
शुक्ल पक्ष एकादशी रवि भौ ग्रंथ प्रकाश ॥६४॥

संख्या ३०५. बारहखड़ी, रचयिता—मोकमदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—७¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३५ वि०, लिपिकाल—सं० १८४० वि०, प्राप्ति स्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि--ॐ श्री गणेशाय नमः ।।

संवत अठारे सै पैंतीसोतरा मगसिर वदी तिथ दूज ।
सुभ दिन सुक्करवार को लिखूं सुरसुती पूज ।। १ ।।
संभरपुर बावन जग पधान ।
सुखवासी जोगीपुरा खंडेत नगर सो थान ।। २ ।।
प्रथमै सुमरा सुरसुती फुरत देह निहार ।।
जननी जनपै दया कर रिध सीध की दातार ।। ३ ।।

:o: :o: :o:

मध्य--अपनातो कोइ हे नही स्वारथ को संसार ।
"मोकमदास अधीनजी" सतगुर पार उतार ।।१०।।

:o: :o: :o:

सुर नर मुन धावे तुमे विद्या निगम विचार ।
"मुकंमदास" अधीन है सतगुर पार उतार ।।१४।।
"कके" करता ये सकलघर माही । बिन हरभगत मोकत हो नाही ।।
करो याद गोविंद गुन गावो । मानष जन्म पदारथ पावो ।।
संत सोइ चरनन नित ध्यावे । वस वैकुंठ मुकत फल पावे ।।
मोहकम हर को भगत पियारी । जो सुमरे सोइ अधिकारी ।।१६।।
"षषे" षोल कपट मन भाई । दुभधा दिल से देह वहाई ।।
अंत--छछे छत्रपति राजा है सोइ । जाको सरवर करै न कोई ।।
हती कछुवन ज्ञान गुप्र मम दइ दिखाता । सुमरो गुरगनेस धन सुरसुती माता ।।
दीनदयाल दया कर भाई । तब यह बाराषडी बनाई ।।५१।।

।। दोहरा ।।

भगतहेत बाराखडी पढे सुने चित लाय ।
सतगुर के परताप से कोट पाप मिट जाय ।।
डाडे राउ करे कछु हाथ न आवे । महनत करै मजूरी पावे ।।
दुवधा दिल से दूर भगावे । जब सतगुर का दरसन पावे ।।
बाराषडी गुनो मन लाइ । बाढे पुन्य पाप छो जाइ ।।

इति श्री बाराषडी संपूरन संमत १८८० आसून वदी १३ श्री सुभमस्तु ।। राम ।। राम ।।

विषय--'क' से लेकर 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर कविता रचकर भगवद्भक्ति का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल संवत् १८३५ और लिपिकाल संवत् १८८० है। प्रस्तुत रचना के साथ 'रुक्मिणी मंगल' भी लिपिबद्ध है, जो अपूर्ण है।

संख्या ३०६क. गणेश पुरान, रचयिता--मोतीलाल, (नौबस्ता, प्रयाग), कागज--देशी, पत्र--२३, आकार--८१/२ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--४१८, पूर्ण रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--संवत् १८७२ वि०, शक १७३६ प्राप्तिस्थान--पं० रामबन बिन्हौवा द्विवेदी, ग्राम--दीया, पोस्ट--कन्हैली, जिला--इलाहाबाद।

आदि--श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः ।। श्री गुर चर्णाभ्यौ नमः ।। श्री सीतरामानुजाय नमः ।।

।। दोहा ।।

येकरदन गजवदन कर पद वंदौ क्र जोरि ।
करहु कृपा सिवनंदन वढै वुधि जेहि मोरि ।। १ ।।

विधि बानी हरि इंद्रि वृषभध्वज गिरि जातु ।
करहु क्रिपा जन जानि के सकल जगत पीतुमातु ॥ २ ॥

अंत--

॥ दोहरा ॥

गननायक की कथा येह संस्कृत मध्य विसाल ।
जथा बुधि भाषा रची जड़मति मोतीलाल ॥४८॥

॥ दोहा ॥

नाग नगर के प्रागतः लोदस्ना सुभ ग्राम ।
सुरसर के तट बसत न यहां है कं्ज को धाम ॥ ४ ६॥
षट जोजन है प्राग ते पछिम दिसि सो गाउ ।
वर्स बिप्र बुद्धिमान तह नावन्ता जेहि नाउ ॥५०॥

इती श्री महाभारते श्री गणेश कथा संपूर्न ॥ मार्ग वदी तिथि पंचिमी पुष्परिक्ष भृगु-वार। मारुत सुत को ध्यान करि कियो कथा विस्तार ॥५१॥ इति श्री महाभारते श्री गणेश कथा संपूरन सुभमस्तु संवत १८७४ साके १७३९ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे रविवासरे क लिखित यदि पोरहकं भवानी दीन उपाध्यायेन ॥

विषय--श्री गणेश कथा का वर्णन ।

संख्या ३०६ख. गणेश पुराण, रचयिता--मोतीलाल, कागज--आधुनिक, पत्र--२४, आकार--७ ११/१६ × ४ ७/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३६४, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं. संवत् १७६६, प्राप्तिस्थान--पं० रामसरण मिश्र, ग्राम-तिल्हापुर, पोस्ट-तिल्हापुर जिला-इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ श्री भवानी जी सहाये नमः ॥ श्री पोथी गणेश पुराण लिखते ॥

॥ दोहा ॥

एक दर (? रदन) गजवदन को पग वंदौ कर जोरि ।
कृपा करो सिवनंदना बुधी बढ़े जेहि मोरि ॥ १ ॥
व्यास आदि कवि पगवा नारद आदि मुनीस ।
जो कर ब्रह्म नेत गरा सब कहनावउ सीस ॥

॥ चौपाई श्री राज जदुदीस्टल उवाच ॥

सुनो स्वामी तुम मदन गोपाला । सदा करो संतन प्रतिपाला ॥
बिपति हमारी बिलोकोउ स्वामी । क्रिपा सींधु उर अंतरजामी ॥
छल कीनो जीराजोधन राजा । जीनी लिन्ह मरो राज समाजा ॥
अनुज सहित जवती संघ लाई । वन नीकारि दीन्ह दुषदाई ॥
तेहिते प्रभु बीनवौं कर जोरी । केहि विधि पावौ राज वहोरी ॥

अंत--नारी पुरुष करें व्रत कोई । सकल सिधि फल पावे सोई ॥
जो यहा कथा सुनाई जो गावे । अंतकाल सुरापुर पाहुचावै ॥

॥ दोहा ॥

गनपति की कथा एहा संसक्रीता मध्या वीसाल ।
आथा विधि भाषा रचेउ जाडमति "मोती लाल" ॥

इति श्री गनेस पुरान की कथा संपूर्णम् ।। शाके शालिवाहन ।।१७६६ ।।कुवर क महिना कोस्न पछ ऐतवर दसमिका शंपूर्णम् ।। जो प्रति देष सो प्रति लिषा मम दोष न देते ।। पंडित जान सो बिनतो मोरी ।। टुट अछर वचेव जोरी ।।

विषय––गणेश कथा का वर्णन किया गया है।

संख्या ३०७क. आनद लहरी रचयिता––मोहन कागज––देशी पृष्ठ––२५, (३७ से ६१), आकार––६३⁄४ × ८१⁄२ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––२०, परिमाण (अनुष्टुप्)––१८०, पूर्ण, रूप––साधारण, पद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल––स० १७८६, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० ब० ७३, पु० स० ६।

आदि––अथ मोहन कृत अनंद लहरी लिखियत हैं। अथ चोपाई ।।

सहजे सुमिरो नित्त विहारी । व्यापक सीध पुरुष ओ नारी ।
सबते दूरि सवन तें नेरा । लखे न कोऊ तहाँ उर भेरो ।।
आनंद मगन कलोल बिलासी । बिहरे सब ठाँ नेंह निवासी ।।
सब खेलनि में खेले न्यारो । सकल जगत कर लोइन तारो ।।

मध्य––पृ० ५४ ।। छंद ।।

भावता संगही रहे यो सग छाडहु संग ।
नाउ तो तबहीं मिटे जानाउ देखा अग ।
रूप तो तबही लखो जो बात पेषहु नेन ।
चेन तो तबही लहो जो बंन भूले चेन ।
रीति तो तबहो लखो जो रीति राखहु गोइ ।
सो प्रीति जाने मोहनां जो मोहनां ही होइ ।।५२।।

।। दोहा ।।

जिय भूले पिय भेटिये पिय भूले जिय होइ ।
दोऊ भूले मोहनां तो मोहन सब कोइ ।।५३।।

अंत––मनु औ नेन पेम हि गए । तिहि दोऊ न्यारे केदए ।
मनुले पहुचायो पियपासा । नन एक ले रहे निरासा ।।
ए बहि लोइन दिग ओ राखी । एहन अपनों बाल संघाती ।।७१।।

।। दोहरा ।।

मन पिय पें नेनां अनत । सेवहि सोवहि नांहि ।
पेम पंथ रोके सबे । क्यो बत हो लें जाहि ।।७२।।

इति श्री मोहन कृत आनंद लहरी समाप्ता ।।

विषय––प्रेम (आनद) का आध्यात्मिक वेदात के ढग पर वर्णन है और सयोग शृंगारांतर्गत अद्वैत भावना की विशेषता वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य––हस्तलेख मे प्रथम 'मोहन हुलास' बाद मे प्रस्तुत ग्रथ और अत मे "कलोल केलि" रचना है।

संख्या ३०७ख. कल्लोल केलि, रचयिता––मोहन, कागज––देशी, पृष्ठ––१६ (६१ से ७६), आकार––६। × ८।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)––२०, परिमाण (अनुष्टुप्)––१३०, पूर्ण, रूप––साधारण, पद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल––स० १७८६, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ७३, पु० सं० ६।

आदि—अथ मोहन कृत कल्लोल केलि लिख्यते है ।

॥ चौपाई ॥

नमो प्रेम परमातमा प्यारे । [illegible] सकल जगत उजियारे ॥
बढे घटे नहि कला तिहारी । [illegible] उजीयारी ॥
निहकलंक निरमल सुखदाई । सदा [illegible] न उगाई ॥
नहो [illegible] **रथ** [illegible] । [illegible] नहि जाही ॥
घट घट में प्रतिबिंब कलोले । ज्यों [illegible] नहि डोले ॥

मध्य—पृ० ७० ॥ [illegible] ॥

सर बासर सतत सरूप सनेह मन [illegible] **कछेरीये ।**
जोबन प्रकास ज्योति नेन निज जगमग [illegible] **करि फेरिये ।**
यहे नेम पेम परगट पाइबे को [illegible] हित नेरीये ।
नेहर सजो हिये तबही इन लोइनन [illegible] स्याम धाम हेरीये ॥२३॥

॥ [illegible] ॥

पेम निसर औ दीपको [illegible] ।
जबही चाह्यो दीप तुम [illegible] पाइ ॥२४॥

अंत—जबही मोहन प्रेम सो सहज भई पहचानि । [illegible] **लोइन कानि ॥५०॥**

इति श्री मोहन कृत कलोल केलि समाप्ता ॥ [illegible] ॥ गोस्वामी **श्री गिरिधर लाल जी सुत श्री व्रजभूषण जी पठनार्थ** ॥ [illegible] **लिखितमिदम् ॥ श्रीरस्तु । संवत् १७८६ वर्षे चैत्र सुदि २ सोमे ।** [illegible] **जी की पोथी मेते उतारे अहमदाबाद मध्ये ।**

विषय—प्रेम (आनंद) [illegible], माहात्म्य प्रतिपादन किया गया है । ग्रंथ महत्वपूर्ण [illegible] ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख में प्रथम [illegible] 'आनंद लहरी' और बाद में यह ग्रंथ लिखा है ।

गो० श्री व्रजभूषण जी [illegible] १७३५ से १८३३ तक है

संख्या ३०७ग. मोहन हुलास, [illegible] पृष्ठ—३७ **आकार—**६$\frac{1}{8}$ × [illegible] इंच, [illegible] (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण **रूप—**साधारण, पद्य, लिपि—नागरी [illegible] प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरौली, [illegible] ।

आदि—॥श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ मोहन **कृत मोहन हुलास लिख्यते ॥**

॥ चौपाई ॥

नमो रूप आतम नव नेही । [illegible] धरि हित देही ॥
दृष्टि अगोचर लख्यो न जाई । पूरन जहां तहां रह्यो समाई ॥
दारु अगिनि फूलन ज्यों बासा । त्यों जग [illegible] निवासा ॥
व्यापक जहां तहां आहि कलोलैं । [illegible] नहि बोलैं ॥

मध्य—पृ० १७

॥ [illegible] ॥

आउ कहो मतभाउ सहेली । जो तू चाहे प्रेम पहेली ॥
जिहिं जिहि ठाहरि लागहि नेनां । तँहँ तँहँ ठां सोई मूरति मेंनां ।

! तेहि चारि चिन्हा रन रहई । उपजत होजिय पिय दुख रहई ।
रहे न प्रीति रीति मन माही । प्रीत रूप आये ह्वै जाही ।
प्यारे सो ऐसे मिलि रहिये । हितके मनको भायो कहिये ।

॥ सोरठ ॥

भावंता की भांति भांति भांति में पाइये ।
लोइन सदा असांति काति निहारत रैन दिनु ॥६२॥

॥ दोहा ॥

अंत—मति पातर हित भ्रम परी नाचे अन अन ताल ।
ता अक प्रेम सुभाइ जग खेलति अपुने ख्याल ॥१२६॥
नांउं गांउं सुमरन सुरति नाता पिय अनुहारि ।
रा भूली भूले नही मोहन बाल चिन्हारि ॥१३०॥

इति श्री मोहन कृत हुलास मोहन संपूर्ण ॥ श्री हरिः ॥

विषय—विविध छंदों में संयोग और वियोग शृंगार का मंजुल भाषा में प्रतिपादन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख में मोहन कृत "आनंद लहरी" और "कल्लोल वेलि" ग्रंथ भी है ।

संख्या ३०८. दत्तात्रेय लीला, रचयिता—मोहनदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७¾ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५३ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—कृष्णाय नमः ।

॥ चौपाई ॥

द्वारावती एकांत निवासा । हरि कौं बूझै उधव दासा ॥ १ ॥
ज्ञान विचार विवेक सुनाओ । मेरे मन कौ तिमिर नसाओ ॥ २ ॥
कौन पुरष कैसी तेरी माया । कहो कृपा करि त्रिभुवन राया ॥ ३ ॥
कैसें यह प्रानी सुचि पावै । काल व्याल भय दूरि गमावै ॥ ४ ॥
श्री भगवान कहै निज ज्ञानं । तत्व उपदेस सुनौं दै कांनं ॥ ५ ॥
सकल चराचर मोमें देषं । मोतें भिन्न कछू नहि लेषं ॥ ६ ॥
भाव अनन्य करै मम सेवा । जाचै नहीं आंन कोउ देवा ॥ ७ ॥

मध्य—

ऐसे साध सो संग्रह जांनां । जो कछू लहै सो करिहै दांनां ॥२४॥
कपोत एक सो वनहि मझारा । संग कपोलिनी रच्यो ग्रह द्वारा ॥२५॥
दोउ मिलि प्रीति निरंतर बाढ़ी । अधिक सनेह रुचि उपजी गाढ़ी ॥२६॥
तन सौं तन नैननि सौ नैनां । मन सौं मन बैननि सौ बैना ॥२७॥
भोजन सेन करै एक साथा । कही न जाइ प्रेम की गाथा ॥२८॥
प्रथम प्रसूति इक पुत्र उपायौ । ताकौ देषि अधिक सुष पायौ ॥२९॥
ज्यौं ज्यौं बोलै तोतली वानी । जीमन जनम सुफल करि मानी ॥३०॥

अंत—मन मैं करै जानि विस्तारा । जग सीजै अरु करै विहारा ॥६६॥
ऐसे देषा ज्यौं सरकारा । चरण कमल से चित नहि टारा ॥६७॥

भुजंग ज्यों आश्रम न कराही । असी विधि मुनिवर अनुसरहीं ॥६८॥
असे ज्ञान कह्यौ नाना विधि । तब भर्त्ता कों सौंपी अपनी निधि ॥६९॥
असे जानि तजे जदुराजा । करि हरि भजन सवांरे काजा ॥७०॥
जो यह लीला सुने अरु गावै । ज्ञान वैराग भक्ति उपजावै ॥७१॥
सेस महेस पार नहीं पावै । मोहन दास जथा मति गावै ॥७२॥

इति श्री एकादश स्कधे भगवान उद्धव संवादे दत्तात्रेय लीला संपूरण सुभंमस्तु श्री वासुदेवाय नमः संवत् १८८३ मिती असाढ़ सुदी १३ भौम वार बयानै सुभ स्थान लिखी सीताराम मिश्र पठनार्थं शुभ भुयात् श्री राम माधव जी वासुदेव भीषा भट्ट ॥

विषय--दत्तात्रेय लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रंथ 'सिंहासन बत्तीसी' के साथ एक ही हस्तलेख में है ।

संख्या ३०९ भाव चंद्रिका, रचयिता--मोहन मिश्र, निवासस्थान--चंद्रप्रभापुर पत्तन, कागज--आधुनिक, पत्र--३८, आकार--६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११२ परिमाण (अनुष्टुप्)--८५८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं०, १८५१, लिपिकाल--सं०१९१५, प्राप्तिस्थान--ठा० कामता प्रसाद सिंह जी, स्थान--विशनपुर पोस्ट-गैंवटा, जिला--आजमगढ़ ।

आदि--श्री गनसाय नमः ॥ लिख्यते रसिक गोविंद का टीका ॥

भाल लसत सिंदूर पूर मंडल ससि मंडन ।
सुंडादंड प्रचंड चंड दुष दंड विहंडन ।
दारिद्र वन दावाग्नि दुरित करि चय पंचानन ।
मार्तंड प्रनत सु प्रफुल्लित पंकज कानन ।
कहि मोहन जो चाहत विमल बुधि सेव पद कमल रज ।
अविरल सुखद जगदंब सुत लंबोदर हेरंब भज ॥ १ ॥
श्री जयदेव पदमिनि कृत देवगिरा अति गूढ़ ।
कोपि विबुध भाषा किया अर्थ दिमोहन मूढ़ ॥ ३ ॥
ताहि निरखि निज बुधि बल वरनत सुषद सुछंद ।
"भाव चंद्रिका" नाम यह अवलोकि सुषकंद ॥ ४ ॥
मैं लघुमति रुचि अति प्रबल साधन परम असाधु ।
भूल परै जहं छंद मैं छमिजो कवि अपराधु ॥ ५ ॥

१ ५ ८ १
इंदु बान वसु भूमि सुचि मास सुक्र तिथि आदि ।
भाव चंद्रिका ता दिना आरंभी सुष सादि ॥ ६ ॥

॥ विजय ॥

राज सिंघासन चंद्रप्रभा पुर पत्तन कौ जस सुंदर नीकौ ।
भूपति दै सनमान समेत तहां सुषधाम प्रकास कवी कौ ।
ताढिग जोजन अंतर दोय कहे ललितापुर सुंदर नीकौ ।
ता मधि सिंघ प्रबोधन हेत कियो सुभ गीत सुविंद सटीकौ ॥ ७ ॥
रूप सनि मधुकर साहि कौ बंस कुमुद राकेस ।
रामचंद्र को राज अब राजत जगत सुवेस ॥ ८ ॥
ताकुल के प्रोहित प्रगट मिश्र कपूरे नाम ।
तिनको मानें सिंघ नृप गुरु ज्यों सुरपति धाम ॥ ९ ॥

तासु बंस मोहन भयौ कुटिल महा मतिमंद ।
भाव सुगीत गुविंद कौ बरनत भाषा छंद ॥१०॥
गुरु पद पंकज धार उर सकल कविन सिर नाय ।
बरनत गीत गुविंद कौ भाव अर्थ सुषदाय ॥११॥

अंत—कहत राधिका सुनहु न माधव हौ जु परी तुव चरना ।
तुम विन मोहि सुधाधर बाहत राषहु असरन सरना ।
जग पर श्रवत सुधा की धारा मो पर अनिल बहावत ।
जान स्वसा कौ सवत मोहि तिहिथैं हटकै तन तावत ॥ ६ ॥
तुव वियोग थैं होत चित्त भ्रम आगे तुमहि विलोकत ।
विलपत हसत विषाद करत वहु जलपत आंसुनि मोकत ।
ध्यानहि ध्यान मिलत क्रीडा हित मात सुलोचन लोचन ।
जव तुम देत अलिंगन निर्भय तवन ताप त्वं मोचन ॥ ७ ॥

:o: :o: :o:

॥ घनाक्षरी ॥

ए हो मधुर षरी मिठास कौन चिंता कछू सर्करा समान कर्करान के लगत है ।
ाष तुमैं देवैं है भकोउ हे अम्रत तुम म्रतक समान रहौ छीरनीर गत है ।
त करौ रुदन अधर कामनी के तुम जाव न पताल जो मिठाइन कौ मत है ।
ादर तुमारौ कोउ करे है न जौ लग हौ तोलौ जयदेव जू की वानीया जगत है ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

वरनी श्री जयदेव नैं स्वाधीना पति वाम ।
"मोहन" द्वादस सर्ग यह पीतांवर सुभ नाम ॥१२॥

इति श्री गीत गोविंद टीकायां समाप्तं ॥ मिति जेठ सुदि ११ ॥ संवत् १६१५ ॥
ुकां वानपुर ॥ राम ॥

विषय—संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ गीत गोविंद का भाषा में पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

१ ५ ८ १
इंदु वान वसु भूमि सुचि मास सुक्र तिथि आदि ।
भावचंद्रिका ता दिना आरंभो सुष सादि । ६४ ॥

संख्या ३१०क. फूलमंजरी, रचयिता—मोहनलाल, स्थान—कुम्हेर (भरतपुर), ागज—देशी, पत्र—४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४, पूर्ण, प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८८५ वि०, प्राप्तिस्थान—ार्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—अथ फूल मंजरी लिष्यिते ॥

॥ दोहा ॥

कमल नैन कन्हर लला ॥ संवर शामल गात ॥
बन तैं आमत सुरभी सगि ॥ मंद मंद मुसकात ॥ १ ॥
पीति पगा झीनौ झगा ॥ कर कशूभ रूमाल ॥
नगनि जटति कर मुरलिका ॥ वाजति शब्द रसाल ॥ २ ॥

हौ न गई हरि सँग अली ।। मो मति की अति भूल ।।
संग सुंदर करिके धरी ।। आवत रस के मुल ।। ३ ।।
भवर विलंबे केतगी ।। लेत सुपरिमल वास ।।
ऐसे मोहन लाल ते ।। नित मिलि करत विलास ।। ४ ।।
न्हात सबं लषि सुंदरी ।। नेक न करयौ विलंब ।।
चीर चोरि लंगर लला ।। लेके चढ़यौ कदंब ।। ५ ।।

मध्य--हूं तोहि पुछु हे भटु ।। कौन से वर्त ते कीन्ह ।।
ताते वर कान्हर लहे ।। हमहूं ताकौ कीन्ह ।।२३।।
चक्र सुदर्शन धारि प्रभु ।। मुर मारयौ तेहि काल ।।
गिरधारयौ तारयौ वृन्द ।। हत्यौ कंश नंदलाल ।।२४।।
रूपमजरी हो अली ।। मोतें अधिक न और ।।
सर्व कामना छाडि कें ।। मोतन आयौ भौर ।।२५।।
ल गुलाब कर सुदरी ।। मो मो क्यौ इठिलाय ।।
पानीहि की आगि धौ ।। पान शौ न मिराय ।।२६।।

अंत--सीस मुकुट कटि काछनी । पहरैं पीत दुकूल ।।
वनि मन तें आवत लला । कर वरना कौ फूल ।।२८।।
कंधा कामरि कर लुकट । चलत अटपटी चाल ।।
कारामत बारौ गरे । वोम्मरी की माल ।।२९।।
पाउर कौ वन देषि यह । फूहि रही फुलवार ।।
छिनक यहाँ वैट्यो भटु । अब आवैं सुषकारि ।।३०।।
वाऊदी फूली विमल । अलि मिलि लेत सुवास ।।
पीय प्यारी मिलि आज हो । हिलि मिलि करौ विलास ।।३१।।
षड् वेद वसु चंदु ये । वसत कुम्हेर सुगाम ।।
केसव सुत मोहन रची । फूल मंजरी नाम ।।३२।।

येती श्री फुल मंजरी संपुरन ।। प्रति प्रमान ।।

विषय--दोहों मे कृष्ण की प्रेमकथा और चीरहरण लीला का वर्णन है ।

संख्या ३१०ख. रंगमंजरी, रचयिता--मोहनलाल, निवासस्थान--गढ कुम्हेर (भरतपुर), पत्र--८, आकार--७$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--८६, पूर्ण रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--संवत् १८३७, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--अथ रंग मंजरी लिष्यते ।।

सीस कीट सारंग धरैं मृगमद केसरि भाल ।
षेलत ख्याल वसंत कौ मंडि मोहन सुरवाल ।। १ ।।
गो गोपी सबही सषा नंद नंदन जसुधा जु ।
बृंद बृंद आवत सबैं करि केसरिया साज ।। २ ।।
सारी सोहै सोसनी वनी वाल सुभ रंग ।
झूलत रंग हिंडोरना मानौ चढ्यौ अनंग ।। ३ ।।
बोढ कसूमल चंदरी षेलन चाली तीज ।
संग सषी नवजौवना भिर सोहति रति भीज ।। ४ ।।
वनी वाल ठाढी अटा घटा रही घहराइ ।
गुड़ी उडावत कर गहै सिपताल रंग लाइ ।। ५ ।।

मध्य——अंग अंग अति जगमगै ससि दुति सरि होति होति ।
नीले झीने चीर मैं जगमगाति मुख जोति ।।२६।।
जूथ जूथ आवत सबै बरसाने की गोप ।
जंगाली पहरं चुरी अति छवि छाजत वोप ।।३०।।
मुकट जटत हाटक मनी बधि मुत गुर उरमाल ।
सजैं जु मरन दी तन वसन आवत मोहन लाल ।।३१।।
ठारं सं संतीस का गढ कुम्हेर सुभ गांम ।
केसव सुत मोहन रची रंग मंजरी नाम ।।३२।।

इति मोहन लाल कृतौ रंग मजरी संपूर्ण ।। १ ।। शुभं ।।

विषय——शृंगार विषयक कविता कर उसमे रगो के नामो का उल्लेख किया गया है। रगो के नाम नीचे दिए जाते है :——

वसंती१	केसरिया२	कसूमल४	हवप्सी८	जामनी१६
सोसनी	सोसनी	सिपतालू	पचरग	बदामी
सिपतालू	नारगी	नारगी	लहरिया	पिस्ती
गुलाबी	गुलाबी	गुलाबी	ऊदौ	किरमिची
पचरग	लहरिया	असमानी	असमानी	प्याजी
ऊदौ	उदौ	कोच	कोच	स्याम
कोच	सिदूरौ	सिदूरौ	सिंदूरौ	सेत
कासनी	कासनी	कासनी	कासनी	तूसी
बदामी	पिस्ती	प्याजी	लाषी	लाषी
किरमिची	किरमिची	स्याम	हरचौ	हरचौ
स्याम	सेत	सेत	अमौवा	अमौवा
तूसी	तूसी	तूसी	मूंगिया	मूंगिया
हरचौ	अमौसा	मांसी	मासी	मासी
मूंगिया	मूंगिया	लीलों	लीलो	लीलो
लीलो	जगाली	जंगाली	जंगाली	जंगाली
जुमरी	जुमरदी	जुमदी	जुमदी	जुमदी

रचनाकाल

ठारं सं संतीस का गढ कुम्हेर सुभ गांम ।
केसव सुत मोहन रची रंग मंजरी नाम ।।३२।।

संख्या ३११. भास्वति भाषा टीका (ज्योतिष), रचयिता——यशोधर (?), कागज——देशी, पत्र——७, आकार——१०¼ × ४¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१०, परिमाण (अनुष्टुप्)——१५४०, खंडित, रूप——प्राचीन, गद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——पं० महादेव मिश्र, ग्राम–बटसरा, पोस्ट–कसिया, जिला–गोरखपुर।

आदि——. . . . .

जोख शे शात से ७ भागव जे शेष रहे से सूर्य्यादि सम्वतार पालक होइ। शेष जे अंक रहे से आठ शय ८०० माह घटाई

वेद तेकर नामा शुद्धि होइ शे शुद्धि अठोत्तर सये १०८ भागिए तौ अंशा पाइअ सेष अंक जे रहे से साटी ६० गुणव अठोत्तर १०८ सये से भागव से चाला होइ तेकर नाम रवि ध्रुवा होइहि।

ग्रथव वृंद धरव सहस्र १००० गुणव तेहिमह दस घटाई देव पुनः जे अंक रहे से दुइ ठहर धरव हेठ के अंक दुइ सय चारि २४० से भागव जे भाग पाइ से उपर के अंक पर धइले ग्राइव त ग्रोहि अंक मे घटाइ देव फेरी हेठे के अंक के भाग से जे सेष र से से साठी ६० से गुणव दुइ सय चालीस से भागव जे भाग पाइसे चाला होइ ।।

:o: :o: :o:

ग्रंत--चंद्र स्फुट मह सूर्य्या स्फुट घटाइव पुनि पयतालीस ४५ घटाइव घटाइ देइ जे सेष रहे से पयतालिस ४५ से भागव जे भाग पाइ से सात घटाइव.............

--ग्रपूर्ण

विषय--ज्योतिषशास्त्र विषय का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडितावस्था मे है। ग्रादि, ग्रंत ग्रौर बीच के पत्रे नष्ट हो गए है।

संख्या ३१२. द्रोपदी स्वयंवर, रचयिता--रघुनंदन, पृष्ठ--४२, ग्राकार--८$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)--७५६, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १६८०, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ५६, पु० सं० ५।

ग्रादि--श्री द्रोपदी स्वयंवर लिख्यते। राग धनाश्री ।। टेक ।।

सतीवती नंदन चरण वंदन करि सुषपाई ।
बहुरो गणपति गवरि पति कर जोरी सिरु नाई ।।
ग्रादि पर्व भारथ कथा द्रुपद सुता को ब्याह ।
ताहि जथामति वचन रचि भाषा को नुवाहु ।।

मध्य--पृ० २३ टीका। चोपाई।

नव ग्रध्याइ कथा यह जानौ। द्रुपद सुता को ब्याहु बखानौ। १।
करिहें जज्ञसैनि विनती ग्रति। पानिग्रहन कीजे ग्रर्जुन प्रति।
तव राजा कहै तिहि काला। हम सब वीर वरे सो वाला।
सुनि नृप द्रुपद ग्ररुचि ग्रति ह्वैहै। तब मुनि व्यास ग्राइ समुझैहै।

ग्रंत--इति श्री भाषा ग्रर्थे ग्रादि पर्व रघुनंदन दास विरंचिते द्रोपदी स्वयंवरे इंद्रप्रस्थ ग्रागमनो नाम एकादशो ग्रध्याय ।।११।। सोरठा ।।

करे चोपही छंद विदिसत घटि षट चारि पुनि ।
पढत सुनत ग्रानंद द्रुपदसुता मंगल महा ।।

।। सोरठ ।।

कथा जथामति सारु पूरण कं दसमी विजय ।
शुकल पछि सुभ कुवार सोरह सै ग्रसी हुते ।।ध्याइ प्रमानं

विषय--द्रोपदी के स्वयंवर का वर्णन।

संख्या ३१३. रसिक मोहन, रचयिता--रघुनाथ वंदीजन (काशी), कागज--देशी, पत्र--५८, ग्राकार--६$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)--२३८०, ग्रपूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७९६ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० देवीदयाल पांडेय, ग्राम-सोहवल, पोस्ट-ताड़ीघाट, जिला-गाजीपुर।

आदि—...................... ।

नव सकरता सरूपवान तेजवान ग्यानवान भाग्यवान गथ के ।।
वेद विधि विहित सुकवि रघुनाथ कहै प्रतिपाल करता सकल पुन्य पथ के ।।
सबसों अजीत आपु सबको जितैश्रा आपु आपु सरबग्य आपु जनैश्रा अकथ के ।।
अंसे मंसाराम के महीप वरिवंड जैसे काम पुरुषोत्तम के राम दसरथ के ।। १ ।।

।। दोहा ।।

उन मोपै करि कै क्रिया दीन्हे चौरा गांउँ ।
जाको जंबू दीप मे जगमगात है नाउं ।। ८ ।।

:o: :o: :o:

कोऊ कथा सुनै कोऊ सुनावत भारथ आदि पुरान है जोऊ ।।
वेद पढ़ै कोऊ व्याकरनै कोऊ जोतिष वैदिक साहित कोऊ ।।
पूजत है कोउ श्री रघुनार्थाह पूजत कोउ सिवा सिव दोऊ ।।
मैं मन बीच विचारि लिष्यो है बनारस में न बिना रस कोऊ ।।

:o: :o: :o:

संवत् सत्रह सै अधिक बरिस छानवे पाइ ।
माघ सुकुल श्री पंचमी प्रगट भयो सुखदाइ ।।११।।
वरने उपमा आदि हे अलंकार गहि रीति ।
अहो रसिक लषि रीझियो करि पढ़बे सो प्रीति ।।१२।।

अंत—।। ३२१ ।। हेत अलंकार लछनं ।।

हेत सहित जहं वरनिश्रै हेतवान गहि रीति ।
हेत अलंकृत सुकवि सब तहां कहै गहि प्रीति ।।

:o: :o: :o:

।। ३२२ ।। अपरं ।।

परम असंक लंकपति मेरी विनै सुनौ पूर पारावार को पहारनि भरो भयो ।।
आवत बसंत ज्यो ज्यों वन उपवन सब रघुनाथ हरो भयो फूलि कै फरो भयो ।।
करिबे जो है सो अब कीजै मंत्र मत्रिन सों नगर बसैयन के वास को टरो भयो ।।
तीछन विर्पात के हरैया राम ताके आगे डबराये ईछन भभीछन षरो भयो ।।३२३।।

इति श्री कवि रघुनाथ वंदीजन कासीवासी विरचितं काव्य रसिकमोहने उपमादि अलंकार वर्ननं संपूरनं सभ मसु.........।। अपूर्ण ।।

:o: :o: :o:

विषय—अलंकारों का वर्णन ।

रचनाकाल

१७ ९६
संवत् सत्रह सै अधिक वरिस छानवे पाइ ।।
माघु सुकुल श्री पंचमी प्रगट भयो सुखदाइ ।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । समस्त छप्पन पत्रे उपलब्ध है । देखने मे ग्रंथ प्राचीन प्रतीत होता है ।

रचनाकाल संवत् १७९६ वि० है । लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या ३१४. रसमंजरी, रचयिता---रघुनाथ कवि, पृष्ठ---७४ (३५ से १०८ तक), आकार--१३ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३००, अपूर्ण, रूप---साधारण, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ६१, पु० सं० ५।

आदि---पृ० ३५ अथ मध्याधीरा ॥ १२ ॥

कमनीय कपोलनि जोवन जेब अनूपम रूपकि रास खरे ॥
बहुनाइक नागरि नामहि सों सबसों सबही विधि हो सुधरे ॥
कहियो गहि दीरघ सास घरी कति या तन भेद कहै न परे ।
निरखे हरजू नखतें सिखलो दरके नयना नयनंबु भरे ॥१३॥

मध्य---पृ० ४७ अन्य संभोग दुःखिता ॥
रमि रात रहै कितहु उभकें अरुणोदय आन अचानक ह्वै ॥
लखि जावक लीक ललाट लगी नख रेख कपोलनि रंजित ह्वै ॥
तिय लोहित लोचन कोंननि तें छलकी छवि यो युग ओंननि ह्वै ॥
इम तीय तरोननि के मुकता रहै दारिमवीज दल द्युति ह्वै ॥३७॥

अंत---
अभिलाषा प्रथम दुतीय चित चिंता करै तीसरी को सुमिरनु चौथे गुन गान है ।
पंचमी को उदवेग छठी को प्रलापु करै सातई अकेले उनमाद की को ठाम है ।
आठई को व्याधि अति नतुमि को है जड़मति दसमि निधन तहां प्रान को पयान है ।
दसो ए अवस्य रघुनाथ विप्रलंभ ही की लछन उदाहरन बरनो विधान है ॥१२१॥

विषय---नायिका भेद और रसों का वर्णन। मूल ग्रंथ संस्कृत श्लोकों में है।

संख्या ३१५. ज्ञान ककहरा, रचयिता---रघुनाथ दास, 'रामसनेही', कागज---देशी, पत्र--१६, आकार---७ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---६, परिमाण (अनुष्टुप्)---१६१, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १६२० वि०, प्राप्तिस्थान---श्री पं० अमरनाथ मिश्र, ग्राम-अगबरनपुर, पोस्ट-ओड़ना, जिला-जौनपुर।

आदि---श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री रघुनाथदाश रामसनेही कृत ग्यान ककहरा लिख्यते ॥ कुण्डल्या ॥

श्री गुरु देवा दाश के चरण कमल धरि माथ ॥
ग्यान ककहरा ग्यानप्रद वरणत जन "रघुनाथ" ॥
वरणत जन रघुनाथ हाथ अपने नहि भाई ॥
राजनीति की रीति प्रीति प्रभु पद अधिकाई ॥
अधिकाई तव होइ न्द्रवं गव हरि ॥
गुरु संता वड़भागी नर सोई हो इंद्रपन्हु वुधिवंता ॥
वुधिवंता विन वेद पढे नहि लहै भेद फुर ॥
मुकुर करै का तासु जासु नाहि नयन सुश्रीगुर ॥ १ ॥
ॐ नामा सीध गहै गावत वेद विसूरि ॥
नाम विना कोई कहै ताके मुख मे धूरि ॥
ताके मुख में धूरि भूरि भागी विन मूठा ॥
सियाराम पद प्रेम नेम कह पावं मूठा ॥
सियाराम पद प्रेम मूल परमारथ को है ॥
खग मृग व्याध निषाद त्वस्यौ अव्यौ पद जो है ॥

जो है जन रघुनाथ कहै पुर श्रवध के वासी ॥
कौन कुण्डल्या श्रधिक चरण विन ऊँ ना मासी ॥ २ ॥
क का कमल केर बितु सरिता पति गार्ल सुधा ससि भाई ॥
मित्र भानु ब्रह्मा तनै विश्व भरा जेहि माई ॥

:o: :o: :o:

षषा खल के संग में भला भी मारा जाय ॥
जीभ उश्चचरै कटुक वचन सीस सो पनही षाय ॥
सीस सो पनही षाइ जाइ घुन जव के साथे ॥
जल धोरिया लेत देत धरि पाल के माथे ॥
माथे परी जो मदन के धृष्ट वृद्धि कृत पाप ॥
मरे श्रसुर रघुनाथ सव रावन के परताप ॥

रावन के परताप सेत सागर में रखा ॥ तजि कुसंग भजु राम नही तौ होइ षखा ॥
गगागर भन कीजिए......... ।

श्रंत—निंदक निंदै साधु का साधू सुनि हरषाइ ॥
जिमि गारी ससुरारि की सवकी सवै सोहाइ ॥
सवकी सवै सोहाइ जेठर कुल सासुर शासू ॥
वालक सारी सार तरुण वड ठानत हासु ॥
दीन्हिनि सुव्रत सुता तीन तेहि हरि श्रघ विंदक ॥
कहत संत रघुनाथ नाथ नीके है निंदक ॥

इति श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत ज्ञान-ककहरा समाप्तम् संवत् १६२० वि०... ।
विषय—संतमतानुसार ज्ञानोपदेश श्रौर भक्ति वर्णन ।

संख्या ३१६क. ग्वाल पहेली, रचयिता—रघुबर, पत्र—११, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६०, प्राप्तिस्थान—लाला जगन्नाथ प्रसाद खजानची, तहसील—राजनगर, राज्य—छतरपुर, जिला—झांसी ।

श्रादि—॥ १ ॥

सिधि श्री महागनपत्येन्मः श्री सरस्वतीःमः ॥
लिष्यते ग्वाल पहेली । चौपही ॥
जै जै जै श्री नर्क निवारन । जै जै जै दानव संघारन ॥
जै जै जै जै जै श्री श्रधम उधारन ॥ जै जै जै प्रहलाद उवारन ॥

मध्य—॥ ११ ॥
यौ ॥ श्रव हौं सरन तिहारी श्रायौ ॥
जैसे राषौ तैसे रैहौ ॥ राम कस्न की जूठन पैहौ ॥
रजनी समै पायन पर रैहौ ॥ गैया प्रात चरावन जैहौ ।

श्रंत—॥ २१ ॥
मघेव है ॥ यह लीला मं श्रेसो वन है ॥
कलपद्रम कौ कलपद्रम है ॥ ....
....
....
....

लीला गाइ इहै वस दीजै ॥ चरन कौ मधकुर कीजै ॥ इति श्री ग्वाल पहेली संपूर्ण समाप्त सुभं भवत् । माह सुदि श्रष्टमी ८ संवतु १८६० मु: कदौहां श्री श्री श्री......श्री श्री श्री

विषय--श्रीकृष्ण एक दिन ग्वाल बालों सहित वन में बलराम जी के साथ खेल रहे थे। उन्होंने एक पहेली बनाकर ग्वाल बालों से पूछी। एक ग्वाल ने पहेली का उत्तर कृष्ण जी से ही पूछा। कृष्ण ने इस शर्त पर उत्तर बताया कि वह किसी से न कहे। थोड़ी देर में श्रीकृष्ण गाय इकट्ठी करने के लिये चले गए। तब सब ग्वाल बालों ने उस ग्वाल से पहेली का उत्तर पूछ लिया। कृष्ण के आने पर उत्तर कह सुनाया। कृष्ण ने दो चपतें उस ग्वाल को लगा दीं। वह अपने माता पिता के पास रोता हुआ गया और समस्त कहानी कह सुनाई। माता यह सुनकर उस पर क्रोधित हुई और मारने दौड़ी। वह ग्वाल यशोदा के पास गया। यशोदा ने उसको मनाया और भोजन करा दिया। इसी बीच श्रीकृष्ण आ गए। माता क्रोधित हुई, पर कृष्ण ने उस ग्वाल को समझा बुझाकर फिर अपना मित्र बना लिया।

संख्या ३१६ख. द्रौपदी की स्तुति, रचयिता--श्री रघुवीर, पृष्ठ--७, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--१००, पूर्ण, रूप--नया, पद्य, लिपिकाल--संवत् १८९०, प्राप्तिस्थान--लाला जगन्नाथ प्रसाद, खजानची, तहसील--रामनगर, राज्य--छतरपुर।

आदि--श्री गनेसाय नमः श्री सरस्वती नमः लिष्यते अस्तुत श्री द्रौपदी जू की।

दत कपट नृपद्वार धर्मसुत सौं छल कीन्हो॥
निस वादो गौ हार रा सर्वस हर लिन्हौ॥ प्रथमहि

मध्य--इन भसमासुर मारो॥ नहि विलंब नहि कीन हीन ध्रुव को यह भारो॥ तहि विलंब नहि कीन हीन जदिन वंदा व्रत टारौ॥

तहि विलंब नहि कीन तुम नरकासुर कुडल दहन।
गहत चीर दुसासनासु अब विलंब कारन कवन॥५॥

अंत--तब कमला कौं संग वेग आये आरत हर। अमर लग अमारतह सकल सभा लज्जन ववन। जै जैत श्री रघुवर भने सुर मत जैन वर्षह सुमन॥१८॥ सं० १८९० चैत्र वदि १४ कौलिषी पोथी महाराज कोमार श्री लल्ला कयोद सिंघ जू लिष्यते श्री दरजो टूडे॥

विषय--चीरहरण के अवसर पर द्रौपदी द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करना।

संख्या ३१७. कवित्त, रचयिता--रज्जब जी, कागज--देशी, पत्र--४४, आकार--$3\frac{1}{2}\times2\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--४४०, पूर्ण, रूप--नया, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि--अथ रजबजी के किवत लिषंतं।

बैराग रमै बिभौ अष्टं कुलय रस धरियं॥ कलप बृक्ष बराइ॥ फूल फल अमर सुभर यहि॥ सपत ममवहु सुधा सो ईसलता सुतलावहु॥ पीवन कौ सु पीयूष कही मारग गुरु आवहु। नव पुरी वैकुंठ विधि चिंतामणि पर दर चिठो रजब गुरु पुजा सजीव। नांव सरभर नागिणो॥१॥ गुर कौं दीजै कहा परम निधि जिनतें पाई॥ भाव भगति मल भोष गिरा गोरख जी गाई॥ सांऊंच सील संतोष दिष्टदत दीरघ दीनां। जीव जड़धा जग मांहि कोटिक्रम मुकंता कीनां॥ सकल अग मांईमह तको न मौज असी करं॥ दादू दीन दयाल विन॥ रजब रीता को मरं॥२॥ गुरू हंस मधु रिष पुनह चंबक ज्यूं सारा। तन मन काटं सोधि कि रंचकं ज्यूं पारा॥ करै सुदाई क्रम नितह न्यारे जम धोवहि॥ रज लागी पट प्राण रजक जिम कुसमल बोवहि। गुरू बैद रोगह हीरं मरजीवं ल्यावं सुधन॥ जनरजब बल बंलि सदां भ्रिंगी ज्यूं पलटै सुतन॥३॥

मध्य--पारिषे को अंग॥ गहणत बेद बैदंग रोग॥ नीरत सिरहारे॥ सूधं तध नध मगरधात॥ षर्बरि अह निस षनिवारं॥ स्वान बरत अज कूपं। पन्यंग परमल गति जानं॥

निस बाइस दिन स्याल ॥ बोल सोई विघन वषांनं ॥ सहदेवन सम कोग बाल गमि ॥ सुत संकट माता थनहु । रजब सोऊन सौण लग । रोआगम जाणं घुणहु ॥१॥ रैण दिवस नहि बुरहि । बुरनह चंद प्रकाशा ॥ दामनि दमकन बुरह गोपि नहि उर की आसा ॥ छिपं भुंइ भवं चोल । गहन गति सव कोई जांणं । इंद्र गाज बड़नालि । बोल छूट नहि छांनं ॥ जग जाणं जमण मरण उगं बीज जो बोई से । सूंरज बमन मांहिली । कहौं कौन विधि गोईये ॥२॥

अंत——ब्रह्मा बाहन हंस ॥ बिसन के बाहन षगपति ।
संकर बाहन बैल । मूस पर चढ़ैं सुं गणपति ॥
कलस्यांम मोर सकति कै स्यंघ बिराजै ॥
है सूरज ठौ इंद्र ॥ ससि रथ सारंग छाजै ॥
सुरस बहन प्यारे पुहन ॥ तिनके काज न बीगरै ॥
आप चढ़ि असवार जो ॥ रजब ते डलैवं मुष पड़ै ॥२॥
इति श्री रजब जी के किवत संपूरण ॥६०॥
विषय——वैराग्य का उपदेश किया गया है।

संख्या ३१८. पिंगलनामार्णव, रचयिता——राजा रणधीर सिंह, (सगरामऊ देशाधिपति), कागज——आधुनिक, पत्र——७०, आकार——$६\frac{२}{१६}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२३, परिमाण (अनुष्टुप्)——६०६, पूर्ण, रूप——प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——सं० १८६४ वि०, मुद्रणकाल——सवत् १६२० वि०, प्राप्तिस्थान——श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम——मीरजहाँपुर, पोस्ट——मिडाग, जिला——इलाहाबाद।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पिंगल नामार्णव ॥

॥ छप्पै ॥

सुमुष एक रद कपिल चारु गज... प्रकासित ।
लम्बोदर अरु विकट विघ्ननासन सुविकासित ।
लसित विनायक धूम्रकेतु तिमि गणाध्यक्ष गनि ।
भालचंद्र गजवदन द्विदस इमि नाम सुभद भनि ।
कृत प्रथम अस्मरन स्रवन जो आरंभे विद्या रने ।
जु विवाद प्रवेशे निर्गमे संकट विघ्नघनक घने ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

४ ६ ८ १
शम्वत श्रुति निधि वसु शशि अंक रीति सनिवार ।
मार्गशीर्ष मुनि तिथि असित भयो ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

जाहि संस्कृत ज्ञान नहि थयौ करि जानै नाम ।
ता हित भाषा मैं करी "जुद्धधीर" अभिराम ॥

अंत——॥ माला नाम रूपमाला छंद ॥
राजितोस्रक गुनवती इमि कोस रीति प्रकास ।
दाम स्रज तिमि धीमतामपि पेषि करत प्रकास ॥
त्यागि जग आसार सार प्रकार आला ध्याऊ ।
चितानन्द निरीह नित्यारूप माला ठाऊ ॥२१६॥

इति श्री श्री मन्महाराजी श्री शिरमौर बंसावतंस श्री मद्रणधीर सिंह विरचिते नामार्णव समाप्तम् ।

विषय—पिंगल विषय का वर्णन । ग्रंथ चार 'तरंगों' में लिखा गया है ।

रचनाकाल

४ ६ ८ १
शम्वत श्रुति निधि वसु शशि श्रंक रीति सनिवार ।
मार्गशीर्ष मुनि तिथि असित भयो ग्रंथ श्रवतार ।। ४ ।।

संख्या ३१९. नामकेतोपाख्यान, रचयिता—रनजीत, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—७ × ४$\frac{१}{६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दौलतराम पांडेय, स्थान व पोस्ट—शाहजादपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—. . . . . .लागा तप ध्यानं ।
परम पुरुष का धावनां हिरदे मांही थानं ।।
।। चौपई ।।
नारी का मन आसा रहै । काहू से मन की नहीं कहै ।।
रात दिनां चिंता मन मांही । छिन इक तिरिया भूलत नाहीं ।।
सब तन काम जगा दुषदाई । जैसे सूता सिंघ जगाई ।।
उमा बासना बीज सि साही । होनहार की यही दिसाही ।।
वही बीरज कर माही लीन्हां । कवल फूल मांही धर दीहा ।।

अंत—श्रौर रिषीस्वर वहु सतबादी ।
धर्मराय ढिग जिनकी गादी ।।
बारह सूरज की सम रूपा ।
बस्तर पहरें रतन अनूपा ।।
चतुर बेद के पढनें वारे ।
अरु मिहमां साव जानन हारे ।।
बहुत. . . . .
—अपूर्ण

विषय—नासिकेत ऋषि का उपाख्यान वर्णन ।

संख्या ३२०. गंगाष्टक (गंगा जी का भूलना), रचयिता—रमताराम, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—३$\frac{३}{४}$ × ५$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—**श्री गणेशाय नमः ।। अथ श्री गंगा जी के झूलना ।।**
जे गंगा जें सरस्वती जे से मंदाकिनि माहि ।
जे जें तूं अविनासिनी सुरनदी जे जे सुख दीप ।। १ ।।
दर्शन करेते जना से बडो दुख गावत गुन गीत अधना रहंगे ।।
न्हांतं सवल व्याध जातंछिनंवी ज च कुष्टी कलंकी हो जात चंगे ।।
तोरंरि खर्द भलभांति तारे कीने सब दुष्ट है मानभंगे ।।
यही बात लिख कर कहैं दास रमताराम विज मात जे मात जे मात गंगे ।। २ ।।
मध्य—**महाघोर सब्दं भृ. . .भीत भमरं अथाहं न थाहं पारावार संगे ।।**
अप आरं प्रवाहं जलं बेसुमारं तरं तार तारं करत पाप पंगे ।।

सकल कष्ट नाषं विकट व्याधिकाटं मह दुष्ट जन के हृद फाट अंगे ॥
यही बात लि: ॥ ५ ॥

अंत——गंगा जु अष्टक पवंतं सुनंतं कटत पतिकं होत पावन सुअंगे ॥
न्हातं प्रभातं जपतं जितेंद्र जिनदेत राज अटल हाक संगे ॥
घोरांधकार-नसतीभ डाकं धजा धर्म की सुफहरा तिरंगे ॥ ८ ॥
यही वात लिखकर कहे दास रमताराम जे मात जे मात मातगंगे ॥

इति श्री गंगा अष्टक सम्पूर्ण सम्पातं ॥

विषय——गगा जी की स्तुति की गई है ।

संख्या ३२१. बाराखडी, रचयिता——रमयोज, कागज——देशी, पत्र——४, आकार——८ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१०, परिमाण (अनुष्टुप्)——४५, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि——श्रीरगनेसय नमः

क क किमन गुपल को सुमरनी करी दीन राना ।
टेरी टेरी नो सौ कह्यः पवैगो सुष चैन ॥ १ ॥
षषा पेलन छडिये सुरवीर को कंम ।
सायर सु सनमुष रहै पती रषै भगवान ॥
गगा गुर की सीष सुनी छडि सकल जंजाल ।
वहो सागर गुर कै कहै उतरि जाहगे पार ॥
घघा घारिस भरियो सीर पै संघौ कल ।
जासौ भाजी भगवंत को पानि पहुली बंधौ पाली ॥

अंत——षषा षेत न छडीय सुरवीर कौ काम ।
सायर के सनमुष रहै पती रषेंगे राम ॥
स सा सव मैं राम है जलथल जीय जोन ।
राचन वर रची गय मेह न वरो कोन ।
ह ह हरिके नम पै हाथ उठाय कछ देहु ।
मये य संसार मैं जनम सुफल कर लेहु ॥

इति श्री रमयोज की वरषरी संपनु ॥

विषय——'क' से 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर ज्ञानोपदेश किया गया है ।

संख्या ३२२. बलदेवपट्क, रचयिता——रसनिधि, पत्र——१ (पृष्ठ १९ से २०), आकार——७। × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——३८, परिमाण (अनुष्टुप्)——२७, पूर्ण, रूप——साधारण, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० ब० सं० ६४, पु० सं० ९१२ ।

आदि——श्री बलदेव जी को षटक् रसनिधि कृत

॥ दोहा ॥

श्री गणपति को धाय के करो षटक बलदेव ।
रिद्धि सिद्धि वायक सकल विद्या उदर भरेव ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

काम क्रोध लोभ मद मछरता मोह हूं सों जगत में छाय रह्यो अधिक अंधेरौ है ।
जप तप जग्य याग मंत्र जंत्र तंत्रन को कलिने मिटाइ दियौ सरस वखेरो हैं ।
स्वारथ के साथी सुत सुजन सुबंधी रहे रसनिधि कोऊ काहू को न कहूं हेरो है ।
तासो बलदाऊ जो के चरन सरोरुह कौ गहि रे भरोसो होत कारिज सबेरो है ॥११६॥

मध्य--

जेहरि जराऊ पग नेवर टराऊ नख भूषन धराउ चंद छटा छछराऊ कौं ।
सूथन कुमाऊ अंग कंचुक घुमाऊ कटि पटु कालु माऊ जरी तोर सरसाऊ को ।
मोर के पखाऊ आछी कुलहे सजाऊ रसनिधि सुखदाऊ नखसिख लों सुहाऊ को ।
वारिज सराऊ भक्ति भाव के भराउ एसे भजि मन भाऊ धजबंध बलदाऊ को ॥११८॥

अंत--कोऊ कवि अष्टक करे कोऊ सतक अनेक ।
रसनिधि कीनो खटक यह अपनी बुद्धि विवेक ॥
छमा करो बलदेव प्रभु अब धारो सुषटक्क ।
भक्ति रावरे चरण की दीजे मोहि झजक्क ॥१२१॥

विषय--श्री बलदेव जी की महिमा वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य--इस पुस्तक मे पृष्ठ १८ तक फुटकर कवित्त है । बाद मे 'बलदेव षट्क, और 'यमुना नवरत्न' लिखे है । कवित्त स० ११८ से १२१ तक है ।

संख्या ३२३. रसिक पच्चीसी (रसरासि पच्चीसी), रचयिता--रसरासि, कागज--बाँसी, पत्र--६, आकार--८½ × ७¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१७१ पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

॥ कवित्त ॥

परम पवित्र तुम मित्र हो हमारे ऊधो
अंतर विथा की कथा मेरी सुन लीजिए ॥
वृज की वे बाला जपैं मेरी जपमाला, बढ़ी
विरह की व्यथा तामैं तन मन छीजियै ॥
मेरौ विसवास मेरी आस रसरासि मेरे
मिलिबे की प्यास जानि समाधान कीजियै ॥
प्रीति सौं प्रतीति सौं लिखी है रसरीति सौं
पत्रिका हमारी प्रान प्यारिन कौं दीजियै ॥ १ ॥

मध्य--

उधो कहि को है जदुनाथ द्वारिका कौ नाथ
कौन वसुदेव कौन पूत सुखदाई है ।
कौन है निरंजन अखिल अविनासी कौन
ब्रह्म हू कहावै कौन जाकी जोति छाई है ॥
इनसों हमारी कहौ कासों पहचानि जानि
याते रसरासि वातें मन में न भाई है ।
प्रीतम हमारौ मोर मुकुट लकुट वारौ
नंद कौ दुलारौ स्याम सुंदर कन्हाई है ॥१४॥

अंत--

राधे जू रसिक महारसिक गुव्यंद जू के,
रस के संदसन मे भरी रसिकाई है ।
रस ही के ऊतर रसीले ब्रजवासीन के
सुनि सुनि ऊधौ हू रसिकताई छाई है ।
रसिक सुजांन महांजान श्री प्रताप भूप
तिन की कृपा तें यह बात बनि आई है ।
रसिक सभा में रस रंग वरसायबे कौ
रसिक पचीसी रसरासिहू बनाई है ॥२६॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज राज राजेंद्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देवाज्ञप्त रसरासि-विरचितायां रसिक पचीसी संपूर्ण ॥

विषय--उद्धव-गोपी-सवाद-वर्णन ।

संख्या ३२४. तुलसी भूपण, रचयिता--रसरूप, कागज--देशी, पत्र--७६, आकार--७ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६५५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८११ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--श्री गणेशयानम्ह ॥ श्री रामाय नमः ॥ अथ तुलसी भूषन लीष्यते ।

॥ दोहरा ॥ छंद ॥

गुर गणेश गिरिधर सुमिरि गिरा गौरि गौरीस ।
मति मांगत "रसरूप काव" राषि चरन पर सीस ॥ १ ॥
श्री तुलसी निज भनित मे भूषन धरे दुराय ।
ताहि प्रकासन की भई मेरे चित में चाय ॥ २ ॥
सो कविता सब गुन सहित है जग विदित सुभाय ।
दीपक लै रस रूप ज्यों दिनकर दियो देषाय ॥ ३ ॥
रामायेन मे जो धरे अलंकार के भेद ।
ताहि जथामति बूझि कै रच्यौ प्रबंध अषेद ॥ ४ ॥
औरनि लक्षन के लिए रामायेन के लक्ष ।
तुलसी भूषण ग्रंथ को या विधि कियो प्रतक्ष ॥ ५ ॥
अलंकार द्वै भांति के सब्द अर्थ द्वै नाम ।
तिनके लक्षन लक्ष जुत बरनत मति अभिराम ॥ ६ ॥

मध्य--असंभवालंकार लंछनं

॥ दोहा ॥

कहै असंभव होत जहं विनु संभावन काजु ।
गिरि कर धरिहै गोपसुत को जानत हो आजु ॥६८॥

जथा--घोर निसाचर विकट भट समर गनहि नहि काहु ।
मारे सहित सहाय किमि बल मारीच सुबाहु ॥६६॥

पुनः चौपाई

रावन नगर अल्प कपि दहई । सुनि यह वचन सत्य को कहई ॥१००॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

सम्मत काव्यप्रकास को और कुवलयानंद ।
चंद्रालोक लताकलप चंद्रोदय सुभ कंद ॥
एकादस अरु एक सत मुख्य अलंकृत रूप ।
विविध भेद इनके धरे तुलसीदास अनूप ॥
दस वसु सत संवत हुतो अधिक और दस एक ।
कियो सुकवि रस रूप यह पूरण सहित विवेक ॥

इति श्री तुलसी भूषन ग्रंथे समस्ताभूषण भूषिते रसरूप कृतौ संपूर्ण समाप्तं सुभमस्तु श्रीरस्तु ॥

विषय—तुलसी कृत ग्रंथों से उदाहरण देकर शब्दालंकार, अर्थालंकार और चित्रालंकार का वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

दस वसु सत संवत हुतो अधिक और दस एक ।
कियो सुकवि रसरूप यह पूरण सहित विवेक ॥

संख्या ३२५. षट्ऋतु मार्त्तंड, रचयिता—रससिंध (श्री कृष्णलाल जी), स्थान—काशी, पत्र—६१, आकार—८½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरौली, हि० बं० ८८, पु० सं० ८ ।

आदि—॥श्री द्वारिकेशो जयति ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ षट् ऋतु मार्तंडाख्य ग्रंथो विरच्यते ॥ अथ मंगलाचरण ॥ नम. ॥

श्री कृष्ण पादाब्जतल कुंज कुमथ्य वाया. कृष्ण पदरज शरणमामकं हृदयाम्बुजम् ॥१॥

य. स्वीयानुगान साधनान् निगमयन् नाना परानिधान्
परोन्यके नव कृपा सुधा जलधरा सारस यत्सिचति ।

स्याम त्व निज सोभग पर वपुर्या नेन यद्गोरताति रायोतर शब्द सुधृत निजं श्रीमन्मुकुंदं भजे ॥

मध्य—पृ० ३९ ॥ कवित्त ॥

साजे लाल मंदिर को चोक वो तिबारा सब लला बिछवाई जु मखमल सुरंग हे ।
कहे "रससिंधु" लाल गादी यो तकीया यहं लाल हीं सीघासन सुखड वीसु रंग हे ।
पाट जाके आगे छोर छिछोटी चोकी लालहि हे वस्तु धरे पाग जो सुरंग हे ।
लाल हें सीगार भारी कीये जो गोपाल लाल लाल जीहि आरती को वारत सुरंग हे ॥ ४ ॥

ता समे यह कीरतन भयो । लाल ही वागो लाल ही सुथन लाल ही पाग बनी गिरधारी ॥ ता पीछे दोऊ जगे नित्य कीरति पोढे इति हेमन्त ऋतु ॥ वार्ता अष्टम ॥ ८ ॥ मिती चैत्र सुद १ भयो संवत् १९२९ के वा दिन लाल छाया के सिंगासदा । जेसी पिछवाई लाल छापा की नई जाल वाडी । वा दीन सदा गुलाब की फूल मंडली होय हे सो दोनो ठिकाने भई ।

अंत— ॥ दोहा ॥

समे भई तब भोग की फिर मंदिर पधराय ।
पुन वारत हे आरती देखत मन न अघाय ॥१४९॥
येहे ग्रंथ वाचे सुने बढ़े जो वाके भाग ।
श्री प्रभुन के चरन में रहे सदा अनुराग ॥१५०॥
संमत सुभ उन्नीस सय साल वीस में कीन ।
मिती पूस वदि तीज को ग्रंथ जु यहे रच दीन ॥१५१॥

लिखतं दास वृष्णनः भोजी सुत लो जांन।
मुथरा नाम कहे सबी गुरू चरण धर ध्यान॥

मिती फागुन वुद १० लीख तुक्यो ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री देवदमन जी श्री द्वारावती: नरेशः ॥ स्यामाप्यारी जी ॥ श्री प्यारी जी ॥

विषय--प्रस्तुत ग्रंथ में काशीस्थ गोपाल मंदिर के ठाकुर जी श्री गोपाल लाल जी तथा मुकुंद राय जी के उत्सवों में जो षड्ऋतु संबंधी मनोरथ (उत्सव) हुए, उनका कवि ने वर्णन किया है।

संख्या ३२६क. रासपंचाध्यायी, रचयिता--रसानंद, कागज--देशी, पत्र--१६, आकार--९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३८०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचना काल--संवत् १८८६ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि--श्री राधा रस मूर्ये नमः ॥ अथ रास पंचाध्यायी लिष्यते ॥

॥ छप्प ॥

ललित मकुट सिर ठलक अलक मुकलित लघुराकृत ॥
वंक भृकुटि दृग अरुण करण कुंडल मकराकृत ॥
मुष मृदु हास बिकास विकास वेनुधुनि दल्यत सकोचन ॥
वृंदारन्य विहार व्रज वधू विरह विमोचन ॥
लीला प्रवित्त लालित्य तन र नीरद वदन ॥
वंकट सहाइ संकट हरन नमो देव गिरिवरधरन ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

मंत्र द्वादशाक्षिर गुरूप रस मोद के,
अनूप द्वादस अरवध कीने छंद संस्कृते ॥
नासक अबोध अग्यान अंधकार,
वे प्रकाशक सुबोध ज्ञान अमल अहस्कृते ॥
कलिकाल तद्धिक विषै लगति भक्षिक ते,
रक्षिक सदैव वचनामृतमदभुते सुजसस्कृते ॥
करी छिति पाराइनि परी छिति ताराइनि
नाराइन रूप वादराइनि नमस्कृते ॥ २ ॥

मध्य--

नासावदन शुक भाइ ॥ फल अधराई तल ललचाइ ॥
गुदनां चिवुक छवि देत ॥ ससि में सिंगार निकेत ॥२७॥
छवि सीव ग्रीव सुढार ॥ तहाँ हार माल विहार ॥
भुज कर कंज की भुज नाल ॥ आंगुरी नष ससि जाल ॥ २८ ॥
जुग उरज कि टुक रूप ॥ तहाँ रोम जमुन अनूप ॥
त्रवली तरंग सरूप ॥ उरधर उदार अनूप ॥२९॥
कटिन सों सुष देन ॥ मनों अंग अनंग दुंदुभि नितंब सुरंग ॥
जुग जंग उर धरंभ ॥ जनु यमल कंचन षंभ ॥३०॥

अंत--

॥ कवित्त ॥

गाई चतुरानन बताई रिषी नारद को,
नारद ते व्यास जू की जरनि सिराई है ॥

ब्यास जू सों सो मुनी सुक मुनि,
शुकमनि जू ने रिसिक परी कों कृपा करि सुनाई है ।।
रसिक मुकुट मणि स्वामी श्री विठ्ठलेस,
तिनके चरन सेइ यहै निधि पाई है ।।
पंच प्रान रूपी पंच रशिकन के काजै रस
आनंद बनाई यह पंच अध्याई है ।।५९।।

।। दोहा ।।

श्री वल्लभ पद रज सुमिरि निज लघु मति अनुसार ।
पंच अध्याई कथा रचि कियौ प्रेम विस्तार ।।६०।।
संवत् अष्टादश शतक बहुरि नवासी आनि ।
दीप मालिका कातिकी पूरन कथा प्रमान ।।६१।।

इति पंच अध्याई वर्नन पचमोध्यायः ।।१५।। सपूर्णं ।। मिती कातिक वदी १५ संवत् १८८६ ।।

विषय—इसमें गोपियों और कृष्ण की शृंगारपूर्ण रासलीलाओं का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का अंतिम मध्यवाला पत्र अर्द्धखंडित है । प्रस्तुत हस्तलेख रचयिता का ही लिखा हुआ विदित होता है, क्योंकि इसमें लिपिकार के नाम का उल्लेख नहीं है ।

संख्या ३२६ख. बारहमासी, रचयिता—रसानंद, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१०¾ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ बारहमासी रस आनंद की ।।

।। दोहा ।।

चतुर चोप चित चौगुनो चैत मास उपजंत ।
रति बसत मधि एकलो चले छाडि कै कंत ।। १ ।।

।। कवित्त ।।

चैत मै चतुर चित चोट दै अकेली छोडी बिथा के बिछे हे आनि अगिनित जाल से ।
भोजन भुलांनी देह जाति पिघलांनी यादि आवै दिलजानी करै बिरहा बिहाल से ।
फूल लागै सूल से दूकूल हू दवागिनी से भाल सो रसाल और भौर लागै काल से ।
धीर कौ न अंत बीर पीर मैमंत हाय ऐसे ए बसंत चले कंथ नंदलाल से ।।१।।

मध्य— ।। कवित्त ।।

खेलन कौं होरी सजी सावी सहजादी राधा बनी गूंथि अंजन दै मंजन सुहायौ है ।
सारी स्वेत ऊपर किनारी छद चंद कौ सौ चोली मै चतुर चुनि अतर मलायौ है ।
अंकन भरत रीझै भीझै नवरंग लाल आनंद गुलाल रतिवाल घमड़ायौ है ।
फूली अनुरागनि सौं पाए पीव या गुन सौं फागुन सुहागिनिनि भागिनि सौं आयो है ।।१२।।

।। दोहा ।।

मति अनुसार विचारि मित कियौ प्रेम विसतारु ।
खुभै छुटीले जननि कै चित्त चौगुनौ चारु ।। १ ।।
सब सुघरन सौ बीनती जौपै चूक लखाइ ।
मो अधीन पर करि कृपा दीजौ तहां बनाइ ।। २ ।।

इति श्री रस आनंद की बारहमासी संपूर्णम् ।। १ ।।

विषय––श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियों का विरह-वर्णन।

संख्या ३२७. दानलीला, रचयिता––रसिक, कागज––देशी, पत्र––६, आकार––५½ × ३¾ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––६, परिमाण (अनुष्टुप्)––४४, पूर्ण, रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल––स० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान––आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि––दान लीला लिखते ॥

॥ राग विलावल ॥

तुम नंद महिर के लाल मोहन जान दे।
श्री गोवर्द्धन गिरि सिखरि तें हो मोहन दीनी टेर।
अंतरंग सों कहेत हे सब ग्वालिन राखो घेरी।
मोहन जान दे॥
तुंम नंद महेरी के लाल रांनी जसुमती प्राण आधार।
मोहन जान दे॥ १॥
ग्वालिनी रोकी ना रहे हो ग्वालन रह पची हारी।
अहो गिरिधारी दोरी यों यह कह्यो न मांनें ग्वारि॥
नागर दांन दे वृषभांन नृपती की बाल॥ २॥

मध्य––ऐसे में कोऊ आय हे देखें अद्भुत रीत।
आजु सबे नंदलाल जू प्रगट जनावति प्रीति॥
मोहन जांन दे॥३३॥
ब्रज वृंदावन गिरि नदी पशु पंछि जे संग।
इनसों कहा दुराव हें श्रीराधा मेरो अंग॥
नागरि दान दे॥३४॥
अंस भुजा धरि ले चले प्यारी चरन नीहोरी।
निरखत लीला रसिक जू सो जहाँ दांन की ठोर॥
मोहन जांन दे॥३५॥

इति श्री दांनलीला संपूर्ण॥ समाप्त॥ हरि॥

विषय––दानलीला का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य––रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल स० १८८८ है जो गुटके के अंत में 'मानमाधुरी' के आधार पर है। ये दोनो ग्रंथ एक ही गुटके में है। इसमे अन्य ग्रंथ भी हैं जिनके लिए कृपया देखिये चतुतभुज दास कृत 'मृग कपोत की लीला' का विवरण पत्र।

रचयिता का नाम ग्रथात मे 'रसिक' दिया है। 'रसिक' नाम से कई कवि पहले मिल चुके हैं, पता नही प्रस्तुत 'रसिक' उनमे से कोई एक है या नही। मथुरा के प्रसिद्ध साहित्यिक श्रीजवाहरलाल जी चतुर्वेदी लिखते है कि ये प्रसिद्ध श्री हरिराय है जो अपनी छाप 'रसिक', 'रसिकराय' लिखा करते थे। उनकी ही यह दानलीला है।

संख्या ३२८क. कीर्त्तन संग्रह, रचयिता––मट्ठू जी महाराज, उपनाम 'गोपिकालंकार', 'रसिकदास जी', (स्थान––गिरिराज), पत्र––३१ आकार––७। × ८।।। इच पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)––३०, परिमाण (अनुष्टुप्)––६१५, पूर्ण, रूप––साधारण, पद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ४५, पु० सं० ८।

आदि--श्री कृष्णाय नमः । श्री गोपीजन बल्लभाय नमः । अथ कीर्तन लिख्यते ।

॥ राग भैरव ॥

धन्य धन्य सूर महा भक्तराई ।
तिहारी महिमा अपार वरनो नही जाई ॥ १ ॥
हों तो अति बुद्धिहीन तुम हो मरसाई ।
रसिक दास नमन करत सीस चरण नाई ॥ २ ॥

मध्य--पृ० ३० ॥ सारंग ॥

जेमन हे बलि मोहन दोऊ मखन सहित नानाविधि छाक ।
मखरी ओदनादि बहु विजन अनसखडी कीनो घृतपाक ॥ १ ॥
ओटचो दूध और छे मेवा खरबूजा को मीठो साक ।
रसिकदास प्रभु कोर उछारत मागत हे ग्वालन कों ताक ॥ २ ॥

अंत--(२३० कीर्तन लिखने के बाद)

॥ दोहा ॥

सूर सूर बिन हीन गति होत दिवसचर जानि ।
ताते तुव प्रकास विन क्यों उघरे गुण गान ॥ १ ॥

इति श्री षट्माह्निकः ॥ लिखितं गिरधर ब्राह्मणेन श्री गोकुल जी मध्ये श्री यमुना जी तटे लिखितं पुस्तकं ॥

विषय--पुष्टिमार्गीय मंदिरों मे गाये जाने वाले कीर्तनों का संग्रह ।

संख्या ३२८ख. कीर्तन संग्रह, रचयिता--रसिकदास (गोपिकालंकार जी उपनाम भट्ट जी महाराज), स्थान--श्री गिरिराज, पत्र--४२, आकार--६ × ७॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ--२४, परिमाण (अनुष्टुप)--१००८, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९१५, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० स० ३८, पु० स० ८ ।

आदि--॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री मद्गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ श्री रसिक रायाणां कीर्त्तन समूह लिख्यते ॥

॥ राग भैरव ॥

धन्य धन्य सूर महा भक्त राई ।
तिहारी महिमा अपार वरनी नहि जाई ॥ १ ॥
हो तो अति बुधिहीन तुम हो रमराई ।
रसिक दास नमन करत सीम चरन नाई ॥ २ ॥ १ ॥

मध्य--पृ० ३८ ॥ राग सारंग ॥

सुंदर छैया सघन नव वट की बेठे मंडल कर व्रजनाथ ॥
मध्य विराजत हे बल मोहन आस पास व्रज बालक साथ ॥ १ ॥
केउक ग्वाल परोसन लागे अरु बाढ़त ले अपने हाथ ॥
रसिकदास प्रभु की ले आज्ञा जेवन लागे नाथ साथ ॥ २ ॥१२॥६३॥

अंत-- ॥ दोहा ॥

सूर सूर बिन हीन गति होत दिवसचर जान ।
ताते तुव परकास विन क्यो उघरे गुणगान ॥ १ ॥

इति श्रीमद् गोस्वामिवर्य श्री द्वारकेशात्मज श्री मद्गोपिकालंकाराणां विरचितं षष्ठ-मान्हिक समाप्ति मगमत् लिखित मिदं दधीच व्याम भागीरथात्मजेन रामकृष्णेन श्री सिहाड़मध्ये मोदी की खिडक मे वाचे सीखे सुने सुनावे तिनकू असकृत दंडवत् भगवत्स्मरणम् श्रीरस्तु कल्याण-मस्तु संवत् १६१५ के चैत्र शुक्ल १ शुभ वासरे ।।

विषय—समयानुसार कीर्तन योग्य पदों का सग्रह ।

संख्या ३२६. कलि चरित्र, रचयिता—रसिकराय जी, कागज—देशी, पृष्ठ—३ (२३ से २५), आकार—८ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग कांकरोली, हि० ब० ६२, पु० स० ६।२ ।

आदि—**।।श्री: ।। अ. कलि चरित्र लिख्यते ।।**

सेवत चरन कमल तेरे सब किन्नर नर मुनि ज्ञानी ।
वेद पुरान भद्धि करुनानिधि तूही परम बखान ।। १ ।।
तेरी कृपा सकल प्राणिनि के कलमख कुर्लाह कृपानी ।
कलि चरित्र करिबे अब दीजे मोहि दया करि बानी ।। १ ।।

मध्य—**पृ० २४ अ-राज चरित्र ।।**

पहिले नृपति मनोरथ करि करि दान विप्र कुल दीने ।
सेवन करि करि विप्र चरन को जनम सफल करि लीने ।
अबके नृप आगें ही अपने विप्रन गरे कटावे ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपे कही न आवें ।। १ ।।
जिहीं वंस पहिलें नृप दुज जन दान अनेकन दीने ।
भूमिदान गज दान दान हय अन्नदान सुभ कीने ।
तिहीं वंस अब नृपति विप्र कुल मारि मारि बितलावें ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपें कही न आवें ।। १ ।।

अंत—**करिये नाहि भरोसो छिन् भरि जे कदीम अपने हैं ।**
दूरि राखिये तिनसों बाते नाहि होत सपने हैं ।
अनजाने अनपूछे निधरक नृपहि खवावै प्यावें ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपे कही न आवें ।।२०।।

इति राज चरित्र ।।

विषय—ब्राह्मण क्षत्रिय पहले किस प्रकार रहते थे और अब कलियुग में किस तरह रहते हैं, यह वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख में पहले "कृष्ण वृत्त चंद्रावली" ग्रंथ लिखा और बाद मे यह ग्रंथ ।

संख्या ३३०. भाषा करुणानद, रचयिता—रसिक लाल या रसिक सुजान (वृंदावन), कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२४, लिपिकाल—सं० १८१७, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), १२।५५ बस्ता, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--।। श्री हरि ।। श्री राधावल्लभो जयति ।।

।। दोहा ।।

श्रीकृष्ण चंद्र आनंद निधि पंडित जग सिरमोर ।
करुणानंद शुभ ग्रंथ रचि विशद कियौ सब ठौर ।। १ ।।
ताकी भाषा करन कौं कीनौ हे मन मोद ।
मैं तो अपनें सीस कौं रसिकनि की धरि गोद ।। २ ।।
यह प्रबंध अति गूढ़ है दुर्ल्लभ जाकौ भाव ।
हौ तो लघुमति सो अहौ कैसं वने वनाव ।। ३ ।।
श्री गुरु पद के ध्यान तें उपजी हे चित चाह ।
तातें विनती करत हौं जो कछु होय निवाह ।। ४ ।।

।। छप्पै ।।

दामोदर वर चरन हरन चित तिमर दया कर ।
दुर्घट भवनिधि तरन सरन जाचत सुरेस नर ।
विमल कमल के वरन सकल सुष संपति दाइक ।
रसिक शीस आभरण धरन शुचर दुति लाइक ।
तिनकौ नित चित ध्यान धरि करुणानंद भाषा करन ।
जैसे वुधि उनमान मिति ताही विध्य कछु अनुसरत ।। १ ।।

अंत--अर्थ चंद्रिका नाम सरस टीका सौ सोभित ।
यह कर्णानंद ग्रंथ भयो रसरासि सुषद नित ।
राधा वल्लभ चरन कमल तट वृंदावन जहँ ।
सदा स्याम रस त्रषित करचौ हित कृष्ण दास तहँ ।
व्योम जुगल इषु चंद १५२० जब संख्या गई वितीति ।
कृष्ण जन्म अष्टमी सुदिन भयौ ग्रंथ शुभ रीति ।।

।। दोहा ।।

करणानंद पूरण भयौ श्री कृष्ण दास कृत चारु ।
अद्भुत अमल प्रवंध मह रसिकनि कौ आधारु ।। १ ।।

।। छप्पै ।।

कर्णानंद दुर्वोध मह अति कठिन संस्कृत ।
पंडित जग सिरमुकट प्रगट हित कृष्णचंद्र कृत ।
ताकी भाषा होइ कौन पै को ऐसो नर ।
विनु उनके अनुग्रहहि सकै नहि करि प्रथवी पर ।।
जैसौ मो मति हैं कछू ताही के उनमान ।
भाषा करणानंद की कीनी "रसिक" सुजान ।। १ ।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

भाषा कर्णानंद की पूरन भई रसाल ।
हरिरस पुहुप सुगंध जुत रसिकन की उरमाल ।।
४ २ ७ १
निगम नेत्र सागर ससी १७२४ बीते वर्ष संकेत ।
पूरन तिथ गुरवार शुभ कातग पछ जु श्वेत ।। २ ।।

ता दिन भाषा भई यह वृंदावन के मांझ ।
पढ़हु रसिकवर विमल मन नित्य प्रात अरु सांझ ।। ३ ।।
:o: :o: :o:
चंदु गंध भये सोरठा ८१ सबै तत्व द्रिग बानि ।
अंकनि उलटी रीति सौं गनियौ रसिक सुजानि ।। ६ ।।

इति श्री रसिक लाल कृत भाषा करुणानंद समाप्त ।। शुभमस्तु ।। कल्याणमस्तु ।। श्रीरस्तु लिखतं इदं पुस्तकं संवत् १८१७ वर्षे पौष मासे कृष्ण पक्षे स्तिथ्यौ अष्टम्यायां चंद्रदिने श्री गुरु प्रसादात् डूंगरसिंः ।। १ ।।

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति-वर्णन ।

रचनाकाल

४ २ ७ १
निगम नेत्र सागर ससी १७२४ वीते वर्ष संकेत ।
पूरन तिथ गुरवार शुभ कातिग पछ जु श्वेत ।। २ ।।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख का मध्य अंश खंडित है। ३८ से लेकर ५२ संख्या तक के पत्ते नहीं है। रचनाकाल संवत् १७२४ है और लिपिकाल संवत् १८१७।

संख्या ३३१क. कार्तिक माहात्म्य, रचयिता—राघोदास या राघवदास, (नवाब गंज, सोराव, इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—१२$\frac{६}{१०}$ × ५$\frac{७}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४८ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० महेशप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—लेदहाबग, पोस्ट—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।।
वंदो अलष अनादि अज अविगत विगत विकार ।
भक्त हेतु धरि विविध तन करितव चरित अपार ।।
नारायण मम प्रणति प्रभु श्रीनर उत्तम नाम ।
मम हिय कंज भृंग इव बसहु सदा घनस्याम ।।
।। दोहा ।।

१ ८ ४८
वर्ष हजार आठ सो अठतालिश व्रतमान ।
कीन्ह कथा आरंभ को "राघोदास" प्रमान ।।
हिमरितु एगहन मास पुनीता । शुकुल पक्ष तिथि गउरि अभीता ।।
सोमवारि शुभयुत अनुराधा । कथा अरंभन स्वइ दिन साधा ।।
निश्चित पद्मपुरान पुनीता । महिमा कार्तिक वेद विनीता ।।

अंत— ।। छंद ।।
समरथ भगवाना सब जग जाना अलष अगोचर स्वामी ।
त्रैलोक्य सवारन विपति विदारन समरथ अंतरजामी ।
अति भ्रम अंध्यारी एह संसारी प्रभु सुमिरत छविमाली ।
जेहि कृपा विराजी तेहि भ्रम भाजी कतहु न देषहि खाली ।।
लीला तनु धारी जन हितकारी अंत न जानै कोई ।
गुण अगम अपारा कृत विस्तारा सागर थाह न होई ।

प्रभुगर्व प्रहारी भक्ति·· शेस सारदा गावै ।
नित निगम बखाने करि गुणगाने सो उपमा नहि पावै ।।
मम भगति उपाई सोहु महाइ जो मोहि प्रिय प्रभु मानी ।
कहि दीनदयाला अतिभल वाला "राघोदास" बखानी ।।

।। सोरठा ।।

लछमी संग प्रभु जाय समाधान करि जलधिजा ।
बोले प्रभु मुसकाइ चर दल वसहु पयोधिजा ।।

इति श्री पद्मपुराणे राघोदास कृते भाषा प्रबंध कार्तिक माहात्म्य संपूर्ण ।। बतिसमोऽध्याय ।

विषय––कार्तिक माहात्म्य वर्णन ।

रचनाकाल

वर्ष हजार आठ सो अठतालिश व्रतमान ।
कीन्ह कथा आरंभ का राघादास प्रमान ।।

संख्या ३३१ख. नागलीला, रचयिता––राघवदास, स्थान––नवाबगंज (सोराव तहसील, इलाहाबाद), कागज––देशी, पत्र––१, आकार––८ ३/१० × ३ १/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––१२, परिमाण (अनुष्टुप्)––२६, पूर्ण रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल––सं० १८५३ वि०, प्राप्तिस्थान––प० महेशप्रसाद जी मिश्र, ग्राम––लेदहवरा, पोस्ट–अटरामपुर, जिला–इलाहाबाद ।

आदि––अथ नागलीला ।। :०: ।।

कहि गयो नारद हमहि तब अब हिये मे सुधि आइगै ।
सुनु कंश जो देवकी के नंदन हो तही समुझाइगै ।। १ ।।
वसुदेव ताहि चोराइ राषा नन्द गोकुल गाँउ में ।
मारंगे तोहि प्रचारि नरहरि करु को धर हरि धाउ मे ।। २ ।।
ताते कहो परचारिका अब धाउ गोकुल मे सही ।
अब आनु नन्दहि वेगि मम यह सुनत भल सबही कहो ।। ३ ।।
सुनि नंद सुरभी छीर मषन लादि शकटनि भोग ए ।
लै छीर माषण कंश भाषण नंद सो बोलत भए ।। ४ ।।
अब जाहु वेगि पताल नंदल फूल को देरी नही ।
नहि बाधि गोपकुमार गोकुल देउ वेरी मे सही ।। ५ ।।
कहि भलो नाथ रजाइ शीश नवाइ गोकुल आइकै ।
सुनि कान कंश राजाइ कर मे चले गेंदा लाइकै ।। ६ ।।
अब सुनहु हेतु विचारि जब कान वनमाली भये ।
एहि भांति वाल विनोद सहित समाज यमुना तट गए ।। ७ ।।
अब नाग लीला गाइहो हरि चरित सुनि सुख पाइहो ।
बहु ब्रह्मबृंद गोपाल लीला करत इत उत धाइहो ।। ८ ।।
एक वार नंदकुमार सहित विहार जमुना मे गए ।
सुनि चरित वाल गोपाल गोकुल विकल गृह गृह मे भए ।। ९ ।।
जह नाग नागिनि करति सेवा कृष्ण तेहि अवसर गए ।
कह अरे वार कुमार काकर कहां ते आवत भए ।।१०।।

कहू कोन मथुरा कंश नागर जूत सोहारत भए ।
विन द्रव्यं सर्व उपाइ नागिनि भाग जमुना मे गए ॥११॥
कहू भागु भागु कुमार हार हमार ले नागिन भवे ।
नत नाग जाग धाइ लाग फिरि तो भागं ना वनैं ॥१२॥
वहू कांन नागिनि सुनु सोहागिनि नाग तो नाथैं वनें ।
शिर हारि कंश जोहारि गोकुल अवतो भाग ना वनैं ॥१३॥
होनिहार जो करतार का रषवार जो राष सही ।
कहू जागु जागु कुमार शत्रु तुम्हार सोमाने नहा ॥१४॥
नागिनि जगाए नागराज उदार सो जागत भए ।
फुफुकार छाडु गोपाल तेहि छन कृष्ण सांवर ह्वइ गए ॥१५॥
विष चंद्रिका ते कृष्णु छूटो गरुड को सुमिरत भये ।
सुनि गरुड जहू यस्वदा क नदन मर्दि तेहि अवशर गये ॥१६॥
विनतेय रोष कृशान गुण सम नाग तेहि अवसर भये ।
तब कूदि कं जस्वुदा क नदन नागफण ऊपर गये ॥१७॥
नृत्ये गो फणपर दधि नागिनि जोरि कर विनवे सही ।
विनती सुनो जरवुदा के नदन विरद वदन हे रही ॥१८॥
चीर पंचि उवारि ध्रुव प्रहलाद षभा में वहीं ।
अंम्बरीष नृप प्रण राषि मम अहिवात अब राखो सही ॥१९॥
सुनि विनैं नागिनि नाग दर्दी छोर गोकुल आवहीं ।
कहू "दास राघव" नागलीला गाइ हरिपद पावहीं ॥२०॥

इति श्री राघोदासोपाध्यायेन कृतं नाग लीला समाप्तम्मस्तु शुभं १९५६ ॥

—संपूर्ण प्रतिलिपि

विषय—कृष्ण की नागलीला का वर्णन ।

संख्या ३३१ग. रुक्मिणी मंगल, रचयिता—रामदास, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—$8\frac{3}{10} \times 3\frac{6}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१९, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० महेशप्रसाद मिश्र, ग्राम—लेदहावरा, पो०—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥
लक्ष्मीपति पद कमल हिये हठि ध्याइये । सीताराम उदार चरण मन लाइए ॥
प्रथमि लीजे नाम परम सुधि पाइये । गणपति चरण मनाइ सुमंगल गाइये ॥
लै शारद कर नाम सो विधिहि मनाइये । शुर नर मुनि गण देव तौ जस जग पाइये ॥
भूपति भीषमराज सो कुंडिनपुर बसैं । तनया तासु कुमारि तौ मोहहि त्रियदसैं ॥
रुकुमिनि नाम उदार सुधा छबि सागरि । कीरति परम उदार महागुण आगरी ॥
राज सभा एक वासर सो चलि आइअ । वैठे भीषम राय गोद वैठाइअ ॥
ताहि समैं एक विप्र तहा चलि आएउ । राजहि दीन असीस देषि सुष पायउ ॥

॥ राजोवाच ॥

कुत ते आएहु विप्र कहहु कुत जावेहु । राजहि दीन असीस देषि सुष पाएऊ ॥
भूप वचन सुनि विप्र वदन वर भाषेहु । पुरी द्वारका नाम वेद जस गावैं ॥
जा दरसन करि जीव वहुरि नहि आवैं ॥

:o: :o: :o:

अंत--तव हरि अरुन पराग मांग भरि दीन्हेऊ ।
सुरमुनि 'राघोदास'' सुजं जं कीन्हेऊ ॥
नंद यशोमति दान पाइ द्विज हरषेऊ ।
मंगल मोद सराहि सुमन सुर बरषेऊ ॥
जो यह मंगल गावें गाइ सुनावें ।
ब्याह दान कल्यान परम फल पावें ॥
रुकुमिनि रतन सुनें सुनि अरथ विचारें ।
आपु तर भवसागर कुल निस्तारें ॥

॥ छंद ॥

तरें संतत निरषि राघोदास हिय धरि रुभई ।
दुख रोग शोग अनेक संकट निमिषि मह सब हंभई ॥
यह कथा परम अपार पुन्या सुन जो मन लाइ कें ।
सो जायकें बकुंठ लीज विविध सुख जग पाइ कें ।
सवत् गए दस अष्ट सद गुरवार सावन पंचमी ।
कीन्ही कथा आरंभ राघोदास हिय धरि लइ इमि ॥
ऊँचास संवत् मास पावन नाप सुनि सब पाप को ।
बरना जो मंगलधाम पूरन काम रुकुमिनिनाह को ॥

इति श्री राघोदासोपाध्याय विरचिते रुकुमिनि मंगल संपूरणम् ॥

विषय--रुक्मिणी विवाह की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत् गए दस अष्ट सद गुरवार सावन पचमी ।
कीन्ही कथा आरंभ "राघोदास" हिय धरि लइ इमि ॥
ऊंचास सवत् मास पावन नास सुनि सब पाप को ।
बरना जो मंगल धाम पूरन काम रुकुमिनिनाह को ॥

संख्या २३२. ग्रंथ रामायण, रचयिता--गजपति (?), कागज--आधुनिक नीला, पत्र--८, आकार--६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१०४, अपूर्ण (बीच प्रथम पत्र नहीं है), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सन् १२५६ साल (? फसली), प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता--पं० स्वामीनाथ जी दुबे, ग्राम--दुबौली, पोस्ट--खुखुन्दू, जिला--देवरिया) ।

आदि--:o: :o: :o:

देषी लोचन जल मोचीत ।
पंछी सो मन मह शभी त देषती उर शोचीत ।
दुष्ट दमन करुनायेतन राषी लेहु सरनापना ।
कीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २ ॥
उठे ततछन मेघ ब्रीश्टी जल अनल बतानो ।
नीकसे भुअंगम डशेउ शुधी व्याधा वीकलानो ।
नीकसेउ करते तीर जाये शचानही मारी ।
अस्तुती करत कपोत नाथ प्रनतारत हारी ।
शो प्रभु वेगी दआल होए जीमी कपोत रीपुदापना ।
कीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक शंतापना ॥ ३ ॥

जै जै मीन वराह कमठ नरहरि श्री बावन ।
प्रशराम श्रीराम क्रीस्न जनहीत षलदावन ।
जग्रनाथ कलंकी नमामी दशवीध बहु धारंग ।
ग्रमीत रूप ग्रगनीत चरीत्र क्रीत नाम उदारंग ।
शुर रंजन शजन शुषत शीयानाथ ग्ररी चापना ।
क्रीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ।। ४ ।।

ग्रंत––छुटेव वंदी शभ वीवुध कोटी तेतीश हरषीके ।
ग्रस्तुति करत वनाए पुहुप जै माला ग्रषीके ।
शेभु ग्राए क्रीत वीवीधी भानी ग्ररतुति श्री रामा ।
पाए रजाए शो चले देव शव नीज नीज धामा ।
वीदा कीए शबही प्रभु देव जैती करु जापना ।
क्रीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ।।३०।।
रामचरीत्र ग्रवगाह शेधु कोइ पार न पावै ।
शेष सारदा नीगम नेती कही नीज मुष गावै ।
शेभु उमा सन भारद्वाज शे जागवलीक मुनी ।
काक भशुंडी शो गरुड मानसीक कही तुलशी गुनी ।
कहै शुनै रती राम पद ऐक "राजमती" ग्रापना ।
क्रीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक शंतापना ।।३१।।

इति श्री पोथी छपै रामयेन संपुरन शमापत जों प्रती देषा शो लीषा मम दोष न दीग्रतेः मी० ग्रगहन शुदी ११ रोज वहिफे शन १२५६ शाके ।

विषय––सक्षेप मे रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य––ग्रंथ मे केवल प्रथम पत्र नही है । समस्त रचना मे ३१ छप्पै है ।

संख्या ३३३. बाहु विलास, रचयिता––महाराज राज सिंह, कागज––देशी, पत्र––६, ग्राकार––१०$\frac{3}{4}$ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––३८, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)––३६७, पूर्ण, रूप––साधारण, पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––सं० १७८० (के पूर्व ग्रनुमान), लिपिकाल––सं० १८२७, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० ब० सं० ५१, पु० सं० ५ ।

ग्रादि––।। श्री गणाधिपतये नमः ।। ग्रथ बाहु विलास लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

श्री गोपाल सहाय ह्वै राधाबर रस पुंज ।
केलि कुतूहल रास रस कीनौं कुंज निकुंज ।। १ ।।
ब्रह्मादिक सुरगन तिते तिहिं नहिं पावत पार ।
सो या इन गाइन संगै व्रज मै करत बिहार ।। २ ।।

मध्य––पृ० ११ ।। दोहा ।।
मारि बांन मुरछित कियौ लै भाज्यौ रथ सूत ।
जरासंधि विठ्ठल भयौ जदुकल गरिज सपूत ।।१४६।।
तिहिं समये हरि तब तहां धरी सेन पर बग्ग ।
कसि कसि बान कमांन के चक्र गदा कर षग्ग ।।१४७।।

अंत-- ॥ दोहा ॥

रन विलास व्रजराज के को कहिबे सामथ ।
मति परमान चाहत कह्यो छंद भाय रस ग्रथ ॥ १ ॥
पोथी बाहु विलास की संपूरन सुभ जानि ।
लैहो सुकवि सुधारि कं महाचित्त हित मांनि ॥ २ ॥

इति श्री बाहुविलास म्हाराजा धिराज श्री राजसिंघ जी कृत संपूर्णं । मिती मागशिर शुक्ल १४ संवत् १८२७ बांचै पढ़ै गुनै ताही कौ परसराम कौ नमस्कार परसरामेण लिखितं । श्रीकृष्ण गढ मध्ये । लिखायितं मोदी जो श्री महाराम जी श्री गुमांई जी श्री निवेदनार्थं ॥

तैला द्रक्षे उजलाद्रक्षे द्रक्षे तिसथिल वंधनात् । मूर्खहस्ते न दातव्यं एवं बदति पुस्तकं ॥

विषय--यादवों मे साथ जरासंध के युद्ध का वर्णन ।

संख्या ३३४. बल्लभकुल विस्तार कल्पवृक्ष (बल्लभीय वंश वृक्ष), रचयिता--गंगाराम सुत राजाराम, निवास स्थान--राजनगर (अहमदाबाद), कागज--देशी, पृष्ठ--१, आकार--१८ × २० इंच, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य--पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७७६, लिपिकाल--सं० १७७६ प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६०, पु० सं० ७ ।

आदि--श्री हरिः ॥ भावै रंकरितं मह मॅग दशा माकलि मासं चितं प्रेम्णा कंदलितं मनोरथमयैः । शाखा शतै संभृता । लोल्यैः पल्लवितं मुदा कुसुमितं प्रत्या--या पुष्पितं लीलाभिः फलितं भजे व्रजवनी शृंगार कल्पद्रुमं ॥ १ ॥ श्री ॥ संवत् १७७६ कार्तिक शुदि १ तांई श्रीमद् बल्लभ कुल विस्तार कल्पवृक्ष लिख्यो है ।

मध्य--नोट :--पुस्तक के मध्य भाग में वृक्ष की शाखा प्रशाखा बनाकर उनमें श्री बल्लभाचार्य जी के वंशजो के नाम लिखे गये हैं ।

अंत--श्री हरिः ॥

श्री मद् बल्लभ बंस वर कल्पवृक्ष बिस्तार ।
जे कुसुमित पुष्पित फलित पुरुषोत्तमहि विचार ॥ १ ॥
श्री बल्लभ प्रागट्य ते बल्लभ कुल अनुमान ।
दो मह गठ तानी वपु पुष्टि प्रकाश भान ॥ २ ॥
तामें अब आरोग्य हे सुभग भीन वह रूप ।
जिनको जस विख्यात जग जिनके कृत्य अनूप ॥ ३ ॥
श्री गिरिधर के बस में वपु तत्तर आरोग्य ।
लाल कृष्ण जी के कुलहिं तो स्वरूप स्तुति योग्य ॥ ४ ॥
श्री रघुनाथ जी दोय वपु श्री यदुनाथ जी सात ।
श्री घनश्याम जी . .यरा बल्लभ कुल विख्यात ॥ ५ ॥
संवत सत्रह सो बरष अठहतर लों लेख ।
अब दिन दिन दूनो बढो बल्लभ बंस विशेष ॥ ६ ॥
रहो सदा प्रफुलित यहे कल्प वृक्ष जग मांहि ।
भगवदीयन सिर झुकि रहो यही वृक्ष की छांह ॥ ७ ॥
यह कुल को अोतार भय जगत उधारन काज ।
जिनके सरनहि तें बढ़े व्रजपति भक्ति समाज ॥ ८ ॥
श्रीमद् बल्लभ कुल सदा पद पंकज विसराम ।
गुज्जर गंगादास सुत सेवक राजाराम ॥ ६ ॥

राजनगर शुभ देश मध्य सारंग पुर निज वास ।
प्रेम भक्ति सों खोजि करि कीनों बुद्धि विकास ।।१०।।
बल्लभ कुल परताप बल रहे सदा यह आ... ।
...मन के चरन रति तिनसों द्रढ़ विश्वास ।।११।।
श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

विषय--प्रस्तुत वंश वृक्ष में श्री वल्लभाचार्य से लेकर सं० १७७६ तक की उनकी वंश-परंपरा का वर्णन किया गया है।

संख्या ३३५. राग रत्नाकर रचयिता--राधाकृष्ण या कृष्ण कवि, कागज--देशी, पत्र--१८ आकार--१० × ८¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२४, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। अथ राग रत्नाकर लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

करि प्रनाम शारद सुमिरि जाकी जोति अनूप ।
हंस चढ़ी बंना वजैं सातौं स्वर शुध रूप ।। १ ।।
देस सुनागर चाल मैं गढ़ उनियारौ नाम ।।
राजत राव नरेश जंहि भीमस्यंघ गुनधाम ।। २ ।।

।। छप्पय ।।

कूरम कुल अति प्रवल पहुमि कीरति विस्तारिय ।।
तरूवंस अवतंस धर्म पालक जस धारिय ।।
दांन मांन सन्मान भानसुत जिमि जग रंजन ।।
समर मगा कर खग्ग दुग्ग दुर्जन दल भंजन ।।
दिन रैनि भक्ति ब्रजराज की भीम स्यंघ मन मानियं ।।
इहि हेतु कह्यौ कवि कृष्न सौं रस संगीत वषानियं ।। ३ ।।

।। दोहा ।।

श्री ब्रजपति सुरराय के चरन कवल सिर नाय ।।
कहौं रीति संगीत तैं राग रूप दरसाय ।। ४ ।।
राग प्रेम की खानि है राग रंग कौ मूल ।।
राग रंग तें होत है सकल देव अनुकूल ।। ५ ।।

मध्य--।। अथ देसाष लक्षन ।।

।। दोहा ।।

दिन वसंत पहले पहर सपूर्न देसाषि ।।
रिषभ हीन गंधार गृह कोऊ कवि यौं भाषि ।।७७।।

।। सवईया ।।

कुंदन ते कमनीय कलेवर केशरि चंदन पंक सुहावें ।।
वादन तैं मन जोर भरयौ कर नादन तैं तन रोम उचावें ।।
धीर महा रस वीर छकयौ भुवदंड प्रचंड अखंड बजावें ।।
राग देसाष अरूप वन्यौं यह मस्त शरूप सबै मन भावें ।।७६।।

अंत--।। अथ तुरक टोडी लक्षन ।।

।। दोहा ।।

मधि म ग्रह मपधनि सरिग संपूर्न सुरतांन ।
दिवस दूसरे पहर मै तुरक टोडिका गान ।।

।। सवैया ।।

तन भूखन राजे जराय जरे मुख चंद की ज्योति अमंद बनी ।।
पट केसरियां पिस वाज हरी पग लाल इजार सुगंध सनी ।।
धन जोवन जोर मरोर छकी मदिरा रस पीवत मत्त घनी ।।
यह टोड़ी तुरक्कन की तिय कौं सब साजन सौं कविराज भनी ।।१३

।। अथ पंचम राग लक्षन ।।

।। दोहा ।।

षट सुर पंच महीन है षिजि ग्रह अभिराम ।
प्रात समय गावत शुनी पंचम याकौ नाम ।।१३६।।

।। सवैया ।।

उमगे तन जोवन जोति जगे मुख चंदहु की दुति मंद करै ।।
अति सोहत वागौ गुलाल सु मोतिन माल विसाल गरे ।।
सब साज सिंगार विराज रह्यो बवि सौ कर कंज कौ फूल धरै ।।
यह पंचम अंग अनंग वक्यौ लषि कै तरुनी मन मोद भरै ।।१

विषय--राग रागिनियो का वर्णन किया गया है ।

संख्या ३३६. औषधी संग्रह कल्पवल्ली, रचयिता--राधाकृष्ण द्विवेदी, कागज--
पत्र--४०, आकार--१० × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्
१२३५, रूप--प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आशुतोष पुस्तकालय (
पक, पं० वृंदावन द्विवेदी), ग्राम--चाँदोपाग, पो०--जलालपुर, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। अथ नाड़ी परीक्षा ।।

।। दोहा ।।

भूखे प्यासे सैनयुत तेल लगावै कोइ ।
जवै न्हावै तुरत ही नाडी ज्ञान न होइ ।।
हाथ अगूठा निकटही नाडी जीवन मूल ।
तातै पंडित जीव को जानै सुष दुष सूल ।।
नर को कर पद दाहिनो तिय को कर पद वाम ।
तहां वैद्य जन निरषि कै नारी को परमान ।।
आदि अंत अरु मध्य ते वात पित्त कफ जान ।
क्रम ते नाडी तीनि विधि एह नाडी को ज्ञान ।।
सांप जोक गति सम चलै नाडी वात्त वखान ।
चपल काग मेडुक लवा गत तव पित्त वखान ।।
मोर कबूतर पडुकुली राजहंस तमचूर ।
एन्ह की गति नाडी निरखि कफ जानौ यह मूर ।।

अंत---अथ गोस्तव सीतला विधिः ॥

गौ के स्तन मे एक तरह का छाला होता है वोही छाले का पानी नस्तर के नोक पर धं के आदमी के बांह पर चमडे के भीतर पहुचावै तौ एक फफेदरी में परत है दिन तीनि के बादि शरानीक होत है फेरि वोही मनुष्य के कबहू सीतला नही निकरती है उमरि भरि निभय रहै ।

:o: :o: :o:

मुनीश्वरैश्चर्क पुरस्सरैः कृतादनेक शास्त्राद्बहुमुज्ञ सम्मतात् ।
महौषधी नाहि मया समधृता विराजते संग्रह कल्पवल्लरी ॥ २ ॥

इति श्री मद्वि (? वे) दं वशाद्भूव राधेकृष्ण पंडित विरचिता औषधि संग्रह कल्प वल्ली समाप्रिय फाणीदियम् संवत् १८६० असाढ़ सुक्ल द्वितीयां गुरुवासरे ॥

विषय---वैद्यक विषय का वर्णन ।

संख्या ३३७क. पिंगल, रचयिता--रामकवि, कागज---देशी, पत्र---८, आकार---८¾ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---२०, परिमाण (अनुष्टुप्)---१६०, अपूर्ण, रूप---नया, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि---. . . . . कीजै ॥
साज सवै भूषन सिष नख लौ चूंदर ओढि चलहु रस पीजै ॥
पीतम के लागहु उर हसि कै मानहि रानि सकल तज दीजै ॥
बीतत पौ जोवन छिन २ ही ज्यो ससि ज्योति असिन पष छीजै ॥

॥ दुमिला ॥

सगनं रचि आठहि आठ कवीस फणीस कहै चहुं पाद धरौ ॥
वरणा चतुविस लहो तुकरा कवि राम सु द्वादश तेर ढरौ ॥
वन मै अरु च्यार मिलावहु अक निसंक सवं वृत माहि भरौ ॥
दुजराम भनै सुखधाम सदां अमला दुमला हम छंद करौ ॥
यथा । करिकै अति क्रोध सुरेस जवै घन सौ वृज मंडल छाय लयौ ॥
तड़िता तड़िड़ाल लयै उतपात चलै वहु वात सु सोर भयौ ॥
नर नार गऊ सव व्याकुल देखि तवै इक स्याम उपाय ठयौ ॥
चट सौ कसिकै कटि पै पट कौ चट दै गिरिराज उठाय लयौ ॥

मध्य---
मराल । मुदित अचंभे में भरे वृज के गोपी ग्वाल ।
चूर करचो पग सौ जवै सकटासुर नंदलाल ॥ ६ ॥
मदकल । गुण सागर नागर सवां आगर गुण गंभीर ।
वेद उजागर वाहु वल राजै श्री रघुवीर ॥१०॥
पयोध । षोलत छवि बृज मै फिरै बोलत वैन रसाल ।
लोलत संग सखान के डोलत मदन गुपाल ॥११॥
चल । बाल लाल तन लखि कह्यो टपकै श्रम कौ वारि ।
नव सनेह के लेहु किन मोती फरत अपार ॥१२॥

अंत--- ॥ डंडक छंद ॥
षट अक्षर कलि मैं रच्यो अंत जगण गण आन ॥
चतुर करचो मधुभार ए छंद कवीस्वर जान ॥ ।ऽ ॥

पंच नगण रगणा ऋषी चंड वृष्टि यह छंद ॥
मत इकतालीसं वर्ण चतुर मनावत नंद ॥ ।।। ।।। SIS
SI SS । SS । SS । SS । SS । S ॥४१॥

२६ शांतुर छंद

वो गुरू नगण अष्ट तै उगण एक सांलूर ॥
गुण तीस अंक इक अधिक मत चतुरा जपौ हजूर ॥
SS ।।। ।।। ।।। ।।। ।।। ।।। ।।। ।।। ।ऽ

विषय—इस ग्रंथ में पिंगल विषय वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के आदि और अंत के पत्ते नष्ट हो गए हैं।

संख्या ३३७ख. मंगल शाखोच्चार, रचयिता—रामकवि (द्विजराम), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—अथ साखाचार कथनं ॥

॥ दोहा ॥

एक रवन (सिंधुर) वदन गर गुलाब की माल ।
सो श्री गणपति वुद्धि दै मोकों करौ निहाल ॥ १ ॥
श्री गुरु चरण प्रणाम करि सारद दुति उर धार ।
निज मति सम पुनराम कहि मंगल साखोचार ॥ २ ॥
हर्ष हिमाचल सुदिन इक मुनवर लिए बुलाय ।
शिवा लगन लिखवाय कै शिव को दई पठाय ॥ ३ ॥
कमलासन कर कमल मैं सप्त ऋषिन दइ जाय ।
इंद्रादिक सुर वृंद मै वाचौ सो हर्षाय ॥ ४ ॥
ताकौ सुन जोरन लगं प्रमुदित विवुध जनेत ।
कर शृंगार ता मधि वने दूल्है श्री व्रषकेत ॥ ५ ॥

मध्य—पुन गिरपति गृह जाय कै रोप्यो विमल वितान ।
ता तर मण्डफ की प्रभा को कवि करहि वखान ॥१३॥
कंचन के कलशान ते चौरी चारु वनाय ।
चहुं दिशि शालन ते रुचिर आछादन करवाय ॥१४॥
अरुण पीत सित हरित रंग वहु पुस्पन की माल ।
लटकाई चहुं दिश ललित गुच्छ स्वच्छ शुभ जाल ॥१५॥
गज मोतिन के चौक जहां रंभा तर दुति सार ।
मणि माणिक गुह तिन विषं वांधो वंदनवार ॥१६॥

अंत—यों सुनकै श्री शंभु नै कियौ ससुर परतोष ।
तुम प्रतिपालक धर्म के रहित दोष गुण कोष ॥३४॥
फेर उमा तन पुलक कै भर लोचन बहु वारि ।
पिता मात परवार सो मिली धाय गहि वांह ॥३५॥
वहुर शंभु गिरिजा हरष मंगलनिधि-सुखरास ।
कंचन के रथ वैठ कै आये गिरि कैलास ॥३६॥

राम विप्र उरधाम बस तेई शंभु भवानि।
वर कन्या यजमान को सदा करो कल्यान ॥३७॥

इति श्री दुजराम कृत मंगल साखोचार संपूर्णम् ॥

विषय—इसमें शिव पार्वती विवाह का दोहों मे वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएं संकलित है :—

१. पातरि (रामचद्र जी के विवाह का)—राम कवि
२. मगल साखोच्चार।
३. सस्कृतरचना।

संख्या ३३८. ग्वारनी झगडा (दान लीला), रचयिता—राम कृष्ण, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७½ × ५½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—६० श्री गणेशाय नमः ॥

अजव महवूव गोकल में ॥ किया घर नंद का रोशन ॥
धरे सिर मुकुट कंचन का ॥ जड़ाऊ रतन मन कुदन ॥
रचा सुव केर परितंवर ॥ सुभेदमं सुद विद्रावन ॥
अजायव नोजवां सुदर ॥ खिलायं जुल्फ वरि आनन ॥
सकेरं गोप के लरका ॥ लई सव धंन आगे धर ॥
अनूपम वांस की मुरली ॥ वजावत हो मधुर तानन ॥
फिरत हो कुंज कुंजन मे ॥ पहर गल माल फूलन की ॥
धरं सिर मोर के पखवा ॥ चरावो वाछरू गायंन ॥
गये जव साकरी खोरन ॥ करत गुल गरत हर वन की ॥
लखी जव ग्वारनी सगरी ॥ करत पग नेवर झनांझन ॥
सहेली सहस के झुंवर ॥ लखी जव राधका हरनै ॥
डगर को घेर हस वोले ॥ चुकावो दान दध भामिन ॥
गई हो वेच दध सव दीन ॥ दगा दे दे पीयारी तुम ॥
अगर तुम आज पाइ हो ॥ न जैहो वीवीयें दानंन ॥

:o: :o: :o:

अंत—सुनौ री रूप गरवीली छवीनी ग्वारनी सुंदर ॥
करत हो स्याम रंग निदा सराहत रंग हो जरदन ॥
अगर जो केस तुम कारे न होवें को थुमें वमान ॥
अग जो मोल कौड़ी तुम विन पुतलिया न तुम सोहन ॥
विना कारे तिल न लोइत तनक नैनन दियें कजरा ॥
रही हो मोही सव ज्वानंन न सोहै खौर केसर की विना दिये मरक के वेदा ॥
न पावें वीजली सोभा विना घन स्याम घन दामिन ॥

:o: :o: :o:

भरी जव नैन सें थैली परा धकरी नगव वरसन की।
करी जव ग्वारनी दगसव चले जव संग पहुंचावन ॥

कहत जब दान दधिलीला मगन होय रामकृष्णजी ॥
फरजा रोज का मतिलौ बसैं वृज नंद का मोहन ॥ १ ॥

इती ग्वारनी झगड़ा समाप्त शुभमस्तु ।

विषय--कृष्ण की दधि लीला का वर्णन ।

संख्या ३३९. विनै पचीसी, रचयिता--रामकृष्ण, कागज--आधुनिक, पत्र--६, आकार--६½ × ८½ पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१५, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९३८ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० जगदीश प्रसाद जी शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट--फूलपुर, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--कवित्त वीन पचीसा लिषते द्रोपती सुता को है ॥ श्री गणेसाएनम्ह ॥ श्री सरस्वति जी सहाई श्री राम ॥
द्रोपती सुता का गहा ल्यावो सभके बीच नीच रंगी सुसासन कुमति मन मैं भरी ।
भिषम करन द्रोन मान गहि रहे देषत पचन वनन लाज काहु न उर धरी ।
दीनन के नाथ व्रजनाथ द्वारिका के नाथ अमर बढ़वो पुकारी जब हे हरी ।
नंद के दुलारे "रामकृस्न" दृग तारे सुनु पीत पटवारे देर मेरी वेर क्या करी ॥ १ ॥

अंत--
राषी है प्रतिज्ञा रदास कविरहु की नामदेव काज छान छाई दुध पिहरी ।
रूपसो सनातन रसोले काज हुंडी पट सुरानंद जीव जब देव वानी उच्चरी ।
रसिक मुरारी मस्त हाथी को कायो हे सिष्य कीस्न दास लीला टारी जोगी टारी न टरी ।
नंद के दुलारे "रामकीस्न" द्रीग तारे सुनु पीत पटवारे देर मेरी वेर क्यों करी ॥२५॥

॥ दोहा ॥

वीनये पचीसी प्रेम सो पढ़ै सुनै नीसी भोर ।
राम कीस्न तिन्ह पर कृपा करहिं जुगल किसोर ॥२६॥

इती श्री राम कीस्न कीत वीनये पचीसो समापत लीषते रमेस्वर सुनार...लाये भगराज सको फुलवारी ।

विषय--द्रौपदी का चीरहरण वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । प्रस्तुत रचना गंगादास के "शब्दों" के साथ एक हस्तलेख में है । दोनों की नकल किसी रमेश्वर सुनार ने की है, अतः शब्दों के लिपिकाल के आधार पर इसका भी लिपिकाल सं० १९८३ माना जाना उचित है ।

संख्या ३४०. लक्ष्मी चरित्र, रचयिता--रामकृष्ण (संभवतः), कागज--देशी, पत्र--८, आकार--७ × ५¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--७२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य--लिपि नागरी--लिपिकाल--सन् १२६५ साल, प्राप्तिस्थान--पं० वासुदेव तिवारी, ग्राम--भीरा, पो०--मुहम्मदाबाद गोहना, जिला--आजमगढ़ (ग्रंथ का० ना० प्र० सभा के लिये प्राप्त हो गया है) ।

आदि--श्री गणेससाय नमः लीषते लछीमी चरीत्र ॥
कहै नराएन बाल कन्हाइ । सुनु लछीमी मोही कहो बुझाई ॥
तुम्ह सो मैं कछु पुछो बीधाना । आपन अंत कहो परमाना ॥
कहा रहेहु तुम्ह केही बीधी मांहा । कैसे नीस्तार करो नर नाहा ॥

सत्य बात आपन तुम्हं कहहु । केही के ग्रीह केही बीधी तुम्हं रहहु ।।
सुनी कै लछिमी चीत बीहसांनी । कहा वचंन सुंनु सारंगपानी ।।
जुग जुग तुंम्र चरनन्ही की दासा । करहु दग्रा चीत पुरवहु ग्रासा ।।
लछ करन मोही भाषेहु नाउ । सेवा कर उर हो तुम्र ठांउ ।।
मैं भीग्रा तुम्रा पती हौ प्रभु मोरा । चरन कंवल सेवो कर जोरा ।।
सुंनु त्रीग्रा जो तुम्हं को भावै । तुंह ग्रस गुंनवंती जो पावैं ।।
मथेंउ समुद्र रतन सब षांनी । तौ तु भी ग्रा मीली मनमानी ।।

ग्रंत-- ।। दोहा ।।

सांमी ग्रग्या न मानैं बैठा ग्रालस माही ।
सो नर सुनहु नराएन सदा नरक मो जांही ।।

ग्रव ते लप्पै ग्रौ सुमीरैं नीता । जा पर कीरीपा वडी सो सीता ।।
ता घर लषीए पुरुष मनीग्रारा । तासो हेतु सुंनु जगत पीग्रारा ।।
लषी ग्रस पुरुष सदा मंन लावैं । देस देस कै सव कोइ ग्रावैं ।।
ता घर ग्रानद जांहा लषी माता । होए नेक वुधी रूप वीधाता ।।
नीच ग्रधर्म जांहा कोइ ग्रावैं । देषी देराए वीत नाही पावैं ।।

।। दोहा ।।

जानी वुझी संग्रह करैं गुंन ग्रौ दोष बीचारी ।
जौ पालैं एह वरत सुभ ता घर वास हमारी ।।

इति श्री लछीमी चरीत्र संपुरंन ।। मीः ग्रगहन वदी ग्रमावस्या १४ संन १२६५ साल ।।
।। जै श्री लक्ष्मी जी की ।।

विषय--लक्ष्मीचरित्र वर्णन ।

संख्या ३४१. कवित्त, रचयिता--रामगरीब चौबे, कागज--ग्राधुनिक सफेद, पत्र--२, ग्राकार--८$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)--२२, पूर्ण रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९१७ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० चंद्रभाल ग्रोझा, एम० ए०, एल० टी०, प्रधानाध्यापक, ब्राह्मण हाई स्कूल, गोरखपुर ।

ग्रादि--कवित्त कृत राम गरीब चौबे ।।
कारन कला के कामना के करुणा के धाम पूरण प्रभा के वो दया के वो मया के है ।
हाके हरिनाके ग्रवलाके मैंन काके रूप भूप सुषमा के वो उमा के चारुता के है ।
छाके सुरमा के झूमि झाँके ते झमाके सोह जाके ग्रोर ताके परे डाके सेल डाके है ।
छाके जसुदा के छोहरा के बालला के प्रेम चंचल चलाके नैन बाँके राधिका के है । १ ।।
कंजके कलाके हरिनाके है हलाके दृग टेवत टोनाके विषमाके गुन जाके है ।
सोधे है सुधा के ताके मोह मदिरा के छाके षंजन चलाके उपमाके यह डाके है ।
गगा जनय्या के है कृपाके ए दिमाके दोउ मानो मनसा के मीन राचे विधिना के है ।
कामके कजाके छोरि लेत है हया के मेरे जान है दयाके नैन वारे राधिका के है ।। २ ।।
ग्रंत--मसाला सबैं बहु भांति लगाय वो पंक कराय सुपात्र षराये ।
जेहि हेतु सो राजत साधुन मध्य तहांते उत्तर बोलि पठाए ।
जन्म वृथा जग बीतत है ग्रव राम के नाम मो चीत्त लगाए ।
सत संगति सो सुभ ग्यान भयो हम वैष्णव होत कबाब के षाये ।। ५ ।।

**मिश्वै वररंध्र मो मिलायो ग्यान थंम हूको भंड कर्म धारा पाछे परम अपारा है ।
कलिवार फारा को पनारा को विचार भयो गहि गिरि सिधु जुनि घीचत न हारा है ।
"गरीबजू" निहारा रेनु भुर को कूर निहारा संकर को दारा सोतो अधम उधारा है ।
लहरि निकारा वंत वाहू को किनारा करि गंगाजी को धारा पाप काटवे को आरा है ।।६।।
राम ।।। राम ।। राम ।।**

विषय--भक्ति, शृगार और सामाजिक विषयक कवित्तो का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल का कोई पता नही चलता । लिपिकाल सं० १६१७ **और** स० १६१६ के बीच है । ग्रथ मे महाराज जसवत सिह कृत भाषा भूषण और ईश्वर कवि कृत एक अलकार ग्रथ भी लिपिबद्ध है, जिनमे लिपिकाल क्रमश स०१६१७ और स० १६१६ दिए है । अत इन्ही के आधार पर प्रस्तुत ग्रथ के लिपिकाल का उपर्युक्त सवत् दिया है । रचयिता का नाम रामगरीब चौबे है । उपनाम "गरीबजन" है । अन्य विवरण नही मिलता । प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएं और है--१ रसनिरूपण--अधूरा, रचयिता--अज्ञात । २. अनेकार्थ मजरी--नददास कृत, ३ भाषा भूषण--महाराज जसवत सिह, ४. अलकार ग्रथ--ईश्वर कवि ।

संख्या ३४२. राम नेतीसी, रचयिता--रामगुलाम, कागज---देशी, पत्र—४, आकार --६ १/२ × ४ ४/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६. परिमाण (अनुष्टुप्)---६, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल--स० १८८३, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि--श्री गनेसाए नमः ।।

।। दोहा ।।

**कका कमल जोनि विनती करी सुनि कमलापति कान ।
कोसलेस ग्रहि प्रगट भए कौसलेआ भगवान ।। १ ।।
षषा षेद षीन गा पं आ लषी षवरी षलन की पाइ ।
सानुज सेन सुवाहु वधी मष राषी रघुराइ ।। २ ।।
ग गा गौतम घरनी आव गती गुर रष पाइ श्रीपाल ।
वई सुगती पद रज परसी प्रभु नतपाल दयाल ।। ३ ।।
घ घा घर घर सोचत नारि नर जानी भीम धनु घोर ।
जनक नगर पहुचत भए दसरथ राज किसोर ।। ४ ।।
न ना नरपति नाना नमीत मुष रंगभूमि गत धीर ।
वलो पीनाक श्रीगुपती गरव व्याही सीय रघुवीर ।। ५ ।।
च चा चरचा चहुदीसी चली रही अवधपुरी प्रतीधाम ।
करं राम को तीलक नृप पुरही सब मन काम ।। ६ ।।
छ छा छलो गयो नृप नारी मीस देव रहीआ पछतात ।
भरत तलक प्रभु बन गवन पुरष भार सुनी वात ।। ७ ।।
ज जा जनक सुता सौमीत्री युत गे बन रथ चढ़ी राम ।
बीनवत प्रीआ परीवार पुर जानी बीधाता वाम ।। ८ ।।
झझा झरना झरत सुवारी वन श्रीग विहंग सुष वेत ।
मुनी आएसु प्रभु गीरी वसे सीता लषन समेत ।। ६ ।।
टटा टटकीली लै तुलसी कासी आवन माल वनाइ ।
पहीरावती रघुतीलक कह देषी आपु वलि जाइ ।।१०।।
ठ ठा ठगे वीहंग श्रीग राम छवी पलक न प्रेरत नैन ।
वार वार हेरत प्रभुही मानत तनु घर मंन ।।११।।**

डडा डरत न लषी धनुबान कर जदपि धरे रघुनंद ।
अंग अंग वधु वीलोकी गती पावत प्रभु आनंद ॥१२॥
ढ ढा ढोटा दसरथ भूप के जोटा जुगल विलोकि ।
तन धन मन कर वारने को न रहै पल रोकि ॥१३॥
तनक सोच नृप तन तज्यो अकनि मातु करतूति ।
पीतु क्रित करि सानुज भरत गे वन त्यागि बिभूति ॥१४॥
यथा थिरता लहत न भरत मन कैसेहु लषि रघुनाथ ।
दई पावरी दआनीधी फिरे नाइ पद माथ ॥१५॥
ददा दीन प्रती पूजत पादुकनी भरत करत व्रतनेम ।
पालत पुर परिवार सब बढत राम पद प्रेम ॥१६॥
धधा धनुधर सर धरतुन धरवधी वीर धरनधीर ।
दंडक वन अघ हरी वसे पंचवटी रघुबीर ॥१७॥
पपा पावन वन पावनी सरि पावन भूमी बीभाग ।
पावन दरसन राम के पावत मुनी वड़ भाग ॥१८॥
फफा फीरत वीपीन आवत भइ सुपनषा सरि तीर ।
मोही जुगल कुमार लषी स्यामल गौर सरीर ॥१९॥
बबा बाम बाम मन जानि तेहि करी कुरूप अीपाल ।
वधे चतुरदस सहस षल वरषि समर सर जाल ॥२०॥
भभा भगीनी मुष सुनी राम गुन अरु षर दूषन घात ।
मारीचही मीली लंकपती हरी सीआ पछीतात ॥२१॥
ममा माआ अंग हती प्रभु फीरे थल न वीलोकी सीअ ।
सानुज सोचत सोचवस कहत कहा वीधी कीअ ॥२२॥
यया यह मही यह गीरी यहु सरीत यह कानन कमनीअ ।
यह वसंत यह मरुत मम सकल दुषद वीनु सीअ ॥२३॥
ररा राघव बिकल बिहग लषी घाएल परेउ अचेत ।
रावनकर सीअ हरन कही गएउ वीर हरी केत ॥२४॥
लला लषन राम ढुढत सीअही वधी कबंध दोउ वीर ।
करी सवरी गती मारुतिहि मीले हरन भव भीर ॥२५॥
ववा वाही कौन चीतवै सरुष जेही गती सारंग पानी ।
दइ राज सुग्रीव कह वाली महावल भानी ॥२६॥
ससा साषाअंग सीअ सोध हीत वीदा कीए सुग्रीव ।
हरी मुदरी हनुमंत लै तरेउ सिंधु वलसीव ॥२७॥
हहा हनी पवनसुत सीघिका करी सुरसा परीतोष ।
दली लंकीनी वीलोकी गढ सीआ मीले संतोष ॥२८॥
अआ आएउ रावन वाग कपी षाएउ फल झट मारि ।
लंक जारि वहुरे वहुरी मुदीत षरारी नीहारि ॥२९॥
ईई इहा सींधु करी सेतु प्रभु उतरी घेरी गढ़लंक ।
ससुत सबंधु ससेन रीपू वली सीअ लाई अंक ॥३०॥
उऊ उहाँ भरत जननी वीकल तपत राम वीरहागी ।
चढ़ी वीमान प्रभु सषन जुत पहुचे वार न लागी ॥३१॥
एए एई भरत सीर पर धरैं मम पावरी सप्रीती ।
राम देषावत कपीन्ह कहँ नीज मुष गावत गीती ॥३२॥

श्री श्री श्रीसमेत सींघासनासीन भए श्रीराम ।
मुदित देव नर नाग मुनी बरनत राम गुलाम ।।३३।।

इति श्री राम तेंतीसी दोहा संपुरन ।। संवत् १८८३ अषाढ बदी ।। ६ ।। ब्रहस्पती के लीषा दसषत लछीमन दास का ।

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—"क" से लेकर "ह" तक एवं "अ" से लेकर "ऐ" तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर संक्षेप में रामचरित्र वर्णन किया गया है ।

संख्या ३४३. कवित्त, रचयिता—रामचंद्र, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१० ३/१६ × ४ १/१६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, अपूर्ण (संभवतः), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—डेरातर के महाराज, स्थान व पोस्ट—मांडा, जि०—इलाहाबाद ।

आदि—श्री रामाय नमः ।।
कबहू मनिमानिक कनिक दुकूल वर कवहू येकांत वास वसि घांम सहीये ।
कबहू तुरंगन चढि किंकरन संग लीये कबहू पयादे पाय सीस बोझ वहीये ।
कबहू अनेक विधि भोजन स्वछंद कीजे कवहू विमन मुठी येक चने हू न लहीये ।
साहिबी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ।। १ ।।
देष निज नयन पांडुस्वता और अंधस्वता अध ज्यौ निसक और अंध कौन कहीये ।
देष दसकंध लघु बंधु भेल बिभीषन जाकों जस गांयें भव सिधु पार लहीये ।
देष वली बालि एक बानही ते प्रान तजे देष भानुनंद स्वग्रीवहि धीर गहीये ।
साहिबी सरस पार पायीये न रामचंद्र जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ।। २ ।।
राति द्योवस विषय पतित अजामेल अंत जम किंकरन घेरि निज पद गहीये ।
ग्राह गहत गजराज लाज तजि टेरयो स्वनि षगपति त्यागि धायो चक्र गहीये ।
बीच प्रभु देय कें ठगन कूर कर्म कीनों करुना स्वनत कांन प्रान जाके दहीये ।
साहिबी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ।। ३ ।।
देष मात ध्रुव की स्वनीति सतवंती रानी रानिन में मुषीय जाकौ जस कहा कहीये ।
देष सौति स्वरुचि अजस अधिकारनि कौ पुत्र के विछोहैं वनत न दव महीये ।
देष प्रथु नृपति प्रकास जाकौ जगमांझ देष वेण चकवे ऋषिन श्राप सहीयें ।
साहिबी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताही विधि रहिये ।। ४ ।।
अंत—निबल कों सबल सबल कों निबल करें हरे रोग व्याधि जोपे नाम नेम गहिये ।
मेर कों उथप्प के करत राइ मेर सम सुरन को राषि असुरन प्रान दहिये ।
एक ही कटाक्ष में उतपति क्षय चौदः लोक वोक काकी तकि सुष संपति कों चहिये ।
साहिबी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ।। १ ।।
द्रोण के तनय कों बिसाल वी प्रति तेज गभ में न आंन हीनों परीछत रषहीये ।
तात की तरास तें प्रगट प्रहलाद राष्यो होलिका जराय दे कें जगि जै जै कहियें ।
दूसासन चीर ऐंचि हारि परघो सभा मांझ द्रोपता मुदित भई नाम टेर गहिये ।
साहिबी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताहि विधि रहीये ।। ६ ।।
कर्त्ता न कोऊ कर्त्ता हें एक जगदीस ईसन के ईस सीस राषि राह वहिये ।
तुछ आन देव जाकी करीये न आसा कोय कोय न सहाय जब जम कंठ गहिये ।
कोंन केती आव छिन भंगर सरीर तामें कांम क्रोध धारि किम मर्षता सहिये ।
साहिबी सरस पार पायीये न "रामचंद्र" जाहि विधि राषे राम ताहि विधि रहिये ।। ७ ।।

भारथ के मध्य वड़ पारथ से बलवांन जू जुद्ध को करत जहाँ कुंजर से दहिये ।
औरें भट अमित गरद होत षग्गन ते श्रोणि की सरिता मानां रग रासि वहिये ।
ऐसे धर धौंकल में राषे टोटहो के अंड ऐसौ अरु कौन जाकी सरनाई गहीये ।
साहिबी सरस पार पाइये न "रामचंद्र" जाही विधि राषे राम ताहि विधि रहिये ।। ८ ।।

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—राम का विरद वर्णन किया गया है ।

संख्या ३४४क. सभाजीत, रचयिता—रामदया (सभवत.), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६ × ४¼ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार झा भा, व्याकरणाचार्य, (मत्री धर्म सघ सभा प्रचारक), ग्राम—अंभौली, पो०—बरहल गज बाजार, जि०—गोरखपुर ।

।। दोहा ।।

एकदंत सुत कंत हर हरा हरन वुष सोर(? ग) ।
मोरि बुद्धि अज्ञान सिसु वृद्ध करन तिहि योग ।। १ ।।
"रामदआ" जाचत तिन्हें चरन कमल करि नेहु ।
कोविद के मन सघन को बाक अर्थ पृअ देहु ।। २ ।।
सकल ग्रंथ को अर्थ लै मह बुद्धि का धाम ।
"रामदआ" संग्रह कियो सभाजीत धरि नाम ।। ३ ।।
सभाजीत जाते कियो "रामदआ" चित लाई ।
मूरुष पंडित होइ जेहि कीन्हे कंठ सुभाइ ।। ४ ।।

अंत—छुधा सक्ति भोजन समै काम सक्ति लहि वाम ।
वडे पुन्य के जानि फल दानसक्ति जव दाम ।। ६ ।।
श्रुति फल मष सम सस्त्र वल पुत्र ससफल ललिवाम ।
मनसा वाचा कर्मना दान भोग............

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—ज्ञान, उपदेश, राजनीति, धर्म, दर्शन काव्य आदि अनेक विषयों का वर्णन कर मनुष्य को सभायोग्य वाक्पटु बनाने का प्रयत्न किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ का क्रम पत्र सख्या ११ के पश्चात् टूट गया है ।

संख्या ३४४ख. सभाजीत, रचयिता—रामदया, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ × ४¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—साहीपुर (नौलखा), पो०—हडिया खास, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।।

यक दंत सुत कंत हर विहरा हरन वुष सोग ।
मोरि बुधि अज्ञात सिसु वृद्ध करन तिहि योग ।।
"रामदया" जाचत तिन्है चरन कमल करि नेह ।
कोविद के मनसवन को बाक अर्थ प्रिय देहु ।। २ ।।
सकल ग्रंथ को अर्थ लै महा बुद्धि को धाम ।
"रामदया" संग्रह कियो सभाजीत धरि नाम ।।

सभाजीत जाते कियो "रामदया" चित लाइ ।
मूरख पंडित होइ जे कीन्हे कंठ सुभाइ ॥
सभाजीत एहि ग्रंथ को नाम धरो यहि रीति ।
समं समं के अर्थ कहि लेइ सभा सभ जीति ॥ ५ ॥
मथि कै नाना ग्रंथ को लही जहां जो उक्ति ।
सो मम भाषा मे धरी कही अनुक्ता जुक्ति ॥
बुद्धि ग्यान चेतावनी धीरज धर्म सुदेस ।
नीति अनीति सवै कही भूपनि को उपदेश ॥ ७ ॥

अंत--संत एक हरिचंद नृप राषो श्रुतिपर सेत ।
सुरपुर गे नर नारिहि सुकर स्वान समेत ॥

इति श्री सभाजीत सपुरनं सुभमस्तु मंगलमस्तु समं नाम भादों कृस्न पछे अंमवस्य मंगल बासरे समत १८८५ पोथी लीष जंगसीघ गहरवार जो प्रति देषा सो लीष मम दोष न दीअते ।

विषय--ज्ञानोपदेश, राजनीति, धर्म, दर्शन, काव्य आदि अनेक विषयों का वर्णन कर मनुष्य को वाक्पटु बनाने का प्रयत्न किया गया है ।

संख्या ३४४ग. वेदसामुद्रिक, रचयिता--रामदया, कागज--देशी, पत्र--४४, आकार--७$\frac{६}{१०}$ × ८$\frac{५}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२०, खंडित (केवल प्रथम पत्र खंडित है), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० महावीर प्रसाद मिश्र, ग्राम व पोस्ट--इस्माइल गंज, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--. . . . . .करि नेह ॥ १ ॥
लक्षण जेते असुभ सुभ सामुद्रिक के गूढ ।
रामदया कीन्हे प्रगट पहीचाने सठ मूढ ॥ २ ॥
"रामदया" भाषा कीयो सामुद्रक ए जानि ।
बुरे भले नर नारि के लियो अंग पहिचानि ॥ ३ ॥

॥ अथ पूर्व लक्षण ॥

बावन अंगुल मनुज वपु नृपति पुत्र जो होइ ।
आवर जग दिन दिन बढै भिछुता जाइ न सोइ ॥ १ ॥
अष्ट बहाई अंगुल नापि लेहु नर देह ।
कूर कुटिल कपटी महा भूलि न कीजै नेह ॥ २ ॥
नवे अंगुला अधम नर मधिमा सो लगो लेषि ।
होइ एक सय आठ को उत्तम मनुज विसेषि ॥ ३ ॥

अंत--नैन झपकी नीद की अलशाने सब अंग ।
रोम भरो तरुनी रहै सकल अलक्षण संग ॥ २ ॥

इति समजीता राम दया कृत वेद समुद्रीका समाप्त सुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥. . . . . .

विषय--सामुद्रिक शास्त्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--पुस्तक का प्रथम पत्र लुप्त है ।

संख्या ३४५. रुक्मिणी व्याह, रचयिता--रामदास, कागज--देशी, पृष्ठ--१५, आकार--४$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२०२, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ४२, पु० स० १५ ।

आदि——राग सामेरी ॥

श्री विट्ठल पद कमल बल अबल सबल बल होत ।
प्रबल तेल तामस हरन सरन करन उद्योत ॥ १ ॥
दिशि दछन वछन सदा लछन सबें प्रमान ।
विदर्भ देस सुदेस रुचि सुचि रुचिर रवनदिवि जान ॥ २ ॥

मध्य——सैंधवी रागे ॥

कृष्ण चले कंचन पुरी प्रति आतुर ऐठाई ।
मांनहु किरी पर केशरी घरघो धामते धाई ॥ ३ ॥
सेना सब आइ तहां जहां बलराम सधीर ।
हरि हरनाक्षिहि न गए मिलीं नृपति बहुभीर ॥ ४ ॥

अंत——ध्यान धरे जो होई जो होई चतुर्भुज रूप ।
कलिमल प्रबल न परसिहे दरसिहे जुगल स्वरूप ॥ ६ ॥
श्री गिरिधर लाल प्रताप ते मुक्त भए जु त्रिपाल :
राम मंदमति सुमति भई गावत गीत रसाल ॥

गाउ श्री द्वारि ॥ इति रामदास कृत श्री रुक्मणी ब्याह सपूर्णः ॥

विषय——रुक्मिणी जी के विवाह सबधी पद्य लिखे है ।

संख्या ३४६. गगा जी का ब्यावला, रचयिता——रामदास, कागज——देशी, पृष्ठ——१६, आकार——५$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१८, परिमाण (अनुष्टुप्)——१२८, पूर्ण, रूप——जीर्ण, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ४३, पु० स० ६ ।

आदि——श्री गंगा जी को ब्यावलो लिख्यते ॥

कंठ सरस्वती सुमरि प्रेम आनंद मनाऊ ।
मात पिता डंडोत सीस सीव कुंधनाऊ ।
आन बुधि परगट रूइ गुरु गनेस मनाय ।
गंगा ब्याह सुनो रे साधो सुनत पाप कटि जाय ॥ १ ॥
सुमरि भगीरथी, वनते जंबु चल्यो निकट गंगा के आयो ।

मध्य——इंद्र करे छिरकाव पवन जहां देत बुहारी ।
जुर तेंतीसो कोटि आनि पंगति बेठारी ।
छतीस भोजन दत्तीस व्यंजन देवन पति आनंद ।
आप परोसे श्री रघुनंदन ले ले आवत गंग ॥३५॥
सुमरि भगीरथी० ।

अंत——सुमरि भागीरथी ॥

डोला ते ऊतरी पार जबे महलन में आई,

श्री रामचंद्र जी के चरन कमल पे सबही तिरे बेकुंठ ॥५६॥

सुमरि भागीरथी ॥

अथ श्री गंगा जी माहा पटरानी जी को ब्याहलो संपूर्ण ॥

विषय——गंगा जी की महिमा और ब्याहुला वर्णन ।

संख्या ३४७क. गोवर्धन लीला, रचयिता--रामदास बरसानिया, कागज--देशी, पत्र--७ (पृष्ठ ६० से ७८ तक), आकार--४॥। × ५॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८२, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकार--सं० १८२७, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० बं० ३२, पु० सं० १७१३ ।

आदि--॥ श्री हरिः ॥ श्री गोवर्धन लीला लिख्यते ॥

बलि देते सुरराज को पूजा करते गोप ॥ सुत सुलखिनो नंद को तबतें घोषे ओप ॥ १ ॥
सात बरस को सांवरो खेलत बाबा नंन कोद ॥ रतो महोछे को करघोसो गोपन के मन मोद ॥२॥
हरि बोलें तुतराय के बूझे बाबा नंद ॥ घर घर गोरस सितिये कछू गोपन बहुत अनंद ॥३

मध्य--पृ० ६८

कोउ सकुचे कोउ हसे कोउ रहे मुख मोरि ।
नंद मनसुखा सो कह्यो सब ग्वालनि लावो घेरि ॥ ५ ॥
यहे मतो मैया सुन्यो मन में रही सु सकाय ।
जाय कहूं व्रज राज सूं सब ग्वालन देहि मुकराइ ॥ ६ ॥
ग्वार दिए मुकराय के कहा छोड कहा लेहि ।
तरहन के उपर दिये उपर के तरहन देहि ॥ ७ ॥

अंत--दीन जानि दया करि हरि कर्सो ठोकि पीठि । राजु करो सुरलोक को व्रज पर अमृत दीठि ॥ इद्र चल्यो अमरावती अमृत को मुख छाडि । नंद नंदिनी सुर कुं चलें इद्र करयो रथ जोरि ॥ नंदी सुर सुख होत हे बरसानो सुख रासि. रामदास बरसांनियां बसो राधा मोहन कें पास ॥५३॥ इति श्री गोवर्द्धन लीला संपूर्णम् सं० १८२७ आ० व० १० ।

विषय--श्री कृष्ण के गोवर्द्धन पर्वत धारण करने का वर्णन ।

संख्या ३४७ख. गोवर्द्धन लीला, रचयिता--रामदास बरसानिया (बरसाना, मथुरा), कागज--देशी, पत्र--३८, आकार--६¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५७, अपूर्ण (दो पत्रे खंडित), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः अथ गोरधन लीला लिष्यते ॥

बलि देते सुरराज को पूजा करते गोप ।
सुत सुलक्षनो नंद कौ तातै गोपन ओप ॥ १ ॥
मतौ महोछे कौ कियौ सब गोपन कै मनमोद ।
सात बरस कौ सांमरौ षेलत बाबा नंद की गोद ॥ २ ॥
हरि बोले तुतलाइ कै बूझै बाबा नंद ।
घर घर गोरस संचियै हो गोपन कै आनंद ॥ ३ ॥
नंद कह्यौ पुचकारि कै सुनि दामोदर सोइ ।
हम सुरपति की पूजा करैं ह्यां महामहोछौ होइ ॥ ४ ॥
बाबा जी गोपन की यह रीति है मेरै है यह टेक ।
इंद्र न पूजा पूजियें गो ब्राह्म गिरवर सेव ॥ ५ ॥

अंत--सनमुष सुरपति स्यांम कै धाइ धरे है पाइ ।
कार्वारि बाबा नंद की नित पानी होऊ आइ ॥६२॥
आन्यौ दीन दया करी कर सौ ठोकी पीठि ।
राज करौ सुरलोक कौ वृज पै अंमृत डीठि ॥६३॥

इंद्र चले इंद्रावती गोपन की यह रीति ।
लोक लोक जसु गाइयै गोपालन की जीति ॥६४॥
अमर चले अमरावती अमृत को मुष छोरि ।
नंद नदीसुर कौ चले इंद्र चल्यौ रथ जोरि ॥६५॥
नंदी सुर सुष पाइयै बरसानै सुषरास ।
रामदास बरसानिया बसि राधामोहन पास ॥६६॥

इति श्री सात भोग की गोरधन लीला संपूर्ण ॥ १ ॥

विषय--श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ मे दो पत्रे, सख्या ६ और १० नही है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ३४७ग. गोवर्द्धन लीला, रचयिता--रामदास बरसानिया, निवासस्थान--बरसाना (जिला--मथुरा), कागज--देशी, पत्र--८, आकार--५ १/२ × ३ ५/१६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--७०, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि.............................

ज राज के जसुमति पहिरायो हारु ॥ ४ ॥
कीरति कें पालागि करि श्री वृषभान के लागु पाय ।
श्री राधा के पालागि करि पायो भगति पदारथ आय ॥१०४॥
काहू बागे भावंते काहू दीजें वानि । रामदास कूं पामरी स्यावांगे दीनी आनी॥१०६॥
गाय षिलावै सांवरो ले पीतांवर हाथ ।
और ध्योरी को जेंगरा श्री दामा कें साथ ॥
गाय षिलावत सांवरो षेलनी गंगाऊ । गोधनु वढै चवगुनों वसे नंदी सुर गाऊं ॥१०८॥
खिरक खिरक गाय सिंगारिये नेवर वांधे जहि पाइ ।
बालराम कह्यो गोपालसु वृषभान की षाय षिलाय ॥१०९॥
ढिग ठाढे वृषभान कें धाय धरे हे पाउ ।
कीरति साज्यो अरितौ गोपाल हमारे आऊं ॥११०॥

अंत--सुरपति सन्मुष स्याम कें धाई धरे हे पाइ ।
कावरि बाबा नंद कें नित पांशी दो आइ ॥१६१॥
दीन जानि दया करी कर सु ठोकी पीठि ।
राज करो सुरलोक को या वृज पर अमृत डीठि ॥१६२॥
इंद्र चलो इंद्रा वती गोपनि की यह रीति ।
लोक लोक जसु गायीये गोपालनु की जीति ॥१६३॥
अमर चले अमरावती अमृत को सुष छोरि ।
त्यों नंद नंदीसुर को चले ज्यों नंद चले रथ जोरि ॥
नंदी सर सुष पाइये वर्सानें सुषरासि ।
रादमास बरसानियां वसि राधा मोहन पासि ॥१६५॥

॥ इति श्री गोवर्द्धन लीला संपूर्ण ॥

विषय--गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ मे प्रथम पत्र नही है। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं ।

संख्या ३४७ख. राधाविलास, रचयिता--रामदास बरसानिया, स्थान--बरसाना (जिला--मथुरा), कागज--देशी, पत्र--१३, आकार--८$\frac{१}{४}$ × ४$\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८२, पूर्ण, रूप--नया, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः श्री राधाविलास लिख्यते ।।

सोई राधे जिनि हरि आराधे सोई राधे वृंदावन साधे ।। १ ।।
सोई राधा वेदन गाई सोई राधा वृषभान कै आई ।। २ ।।
सोई राधा हरि वसि कीयौ सोई राधा अधरामृत पीयो ।। ३ ।।
सोई राधा जाहि नारद गावं नित वृंदावन देखन आवै ।। ४ ।।
प्रथम समागम की कहूं वतीयां ताहि सुनत सीतल होइं छतीयां ।। ५ ।।
भक्ति अनन्य रसिक जो पाऊं तौ श्री कुंज विहारी कौ जस गाऊं ।। ६ ।।
एक दिवस व्रखभान लाडिली वैठी नंद कुमार चाडिली ।। ७ ।।
ठाढा ग्रोर अटा को गाहै नित उठ नंद भवन तन चाहै ।। ८ ।।
अति आतुर दरसन की ठानी मनमोहन तब हिय की जानी ।। ९ ।।
वछरा वृंदावन को धार्यो पीतांबर फरत इत आयौ ।।१०।।
आनि ग्रोर अटा तन चाहै मानो मनमथ कोटिक गाहै ।।११।।

मध्य--कांटो काढि चुकटीयां लीजं फोरं पीसि औषधी दीजं ।।
मनहो मन उसास लेइ अंतर नारी देखि कहा कहै धनंतर ।। २ ।।
रोग होइ तौ वैद वुलाऊं महगे मोल के मूलि मंगाऊं ।। ३ ।।
प्रेम विरह बिख घोरयो माई मै घूंट चारि आंखि पी आई ।। ४ ।।
खरकं करक करेजे मांहि ठ्यावरि पीर कहा जानें बाहि ।। ५ ।।
आदि अंत की सब कोऊ कहे प्रेम की बात हीये मैं रहै ।। ६ ।।
हेत जानि मै तोहि सुनाई बरसाने लीला यह गाई ।। ७ ।।

अंत --कहत विरंचि सृष्टि हम कीनी बांटि बांटि गोपनि को दीनी ।।१९३।।
धृग जीवन धृग जन्म हमारो हमनं एक काज राधिका को न सवारौ ।।१९४।।
सृष्टि माहि सनकादिक आये तिन अपने गोविंद गुन गाये ।।१९५।।
शंकर पार्बती सब आई व्रज गोपीन की लीला गाई ।।१९६।।
रामदास कौ हीयौ सुख पावं बसि बरसाने लीला गावं ।।१९७।।

इति श्री राधा विलास संपूर्ण शुभम् श्री कृष्णाय नमः ।। ६ ।। ६ ।।

विषय--इसमें श्रीकृष्ण और राधा की लीलाएँ वर्णित है ।

संख्या ३४८. रामहोरी रहस्य, रचयिता--रामनाथ 'प्रधान', निवासस्थान--प्रयाग, कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--८, आकार--१०$\frac{४}{१०}$ × ६$\frac{६}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२७, परिमाण (अनुष्टुप्)--२००, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--संवत् १९१२, मुद्रणकाल--संवत् १९१६ वि०, प्राप्तिस्थान--पंडित महावीरप्रसाद मिश्र, ग्राम व पोस्ट--इस्माइल गंज, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः अथ राम होरी रहस्य ग्रंथ लिख्यते

।। छंद चौपाया ।।

जय गणेश गिरजा महेश जय जय भारथी भवानी ।
जय सियराम भरत रिपुसूदन लखन लाल सुखदानी ।। १ ।।

श्री गुरदेव केसरी नंदन जग वंदन सब जानै ।
मैं प्रनऊँ तिनके पद पंकज जे प्रधान के प्रानै ।। २ ।।
जेसर नाम महीप सुता सव परम सुंदरी वामा ।
सीय स्वयंवर मँह् सब आईं बसी जनक के धामा ।। ३ ।।
अनुज सहित जव राजमहल को गमने अवधविहारी ।
चौथी चार करन हित सिगरी जुरि आईं सुकुमारी ।। ४ ।।
देषि देषि दूलह् की सुखमा मुखमा अंचल धारी ।
चकित छकित रहिँ गईं रंगीली यक टक नैन निहारी ।। ५ ।।

:o: :o: :o:

जस जिय जाकी मति मनसा की तस ताकी मति पाकी ।
नृपनि सुता की मोज मजाकी रही न अव कछु बाकी ।। ६ ।।

।। दोहा ।।

लखन लाल सबको लखें अनुजन सखन समाज ।
रघुनंदन को नहि लखें जें रघुकुल सिरताज ।। ४ ।।

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचितं राम होरी रहस्य ग्रंथ चतुर्थोऽध्यायः ।। ४ ।।

कहत सुनत हरिजस जिनके द्रिग आँसुन की झर लागी ।
बीसबिसे तिनके तुम जानौ येइ राम अनुरागी ।।३६।।
वोनइस सैं द्वादस संवत में प्राग त्रिवेनी पाहीं ।
साधु रजायसु पाय नाय सिर रच्यौ ग्रंथ मन मांही ।।३७।।
माघ अमावस महँ अरंभ करि राम जनम तिथि कांही ।
मिथिला होरी रहस राम को पूरन भो मुद माही ।।३८।।

।। दोहा ।।

बय मैं छपन बरस की भोगत विषय सिरान ।
वरन्यौ होरी रहस यह रामनाथ परधान ।। ६ ।।

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते रामहोरी रहस्य ग्रंथ षष्टमोध्यायः ६ ।। इति श्री रामहोरी रहस्य संपूरणम् यः पोथी सहर बनारस दिवाकर छापाखाना मे शिवचरन के इहाँ रामहोरी रहस्य ग्रंथ छपा साकीन मोहल्ले भदैनी कालीमहल के पास बकलम खगेशदास कृष्ण भक्त औ छापने वाले माता दयाल कारीगर यः पोथी जिसको लेना हो सो चाँदनी चौक कुंज गली के पछिम फाटक के सामने रामचरन के दुकान पर मिलैगी सो जानब संमत १६१६ मिती फागुन वदी ४ वार सुक्रवार के समाप्तम् शुभम् ।।

विषय—मिथिला में श्री रामचंद्र जी का होरी उत्सव मनाने का वर्णन ।

रचनाकाल

वोनइस सैं द्वादस संवत् में 'प्राग त्रिवेनी' मांही ।
साधु रजायसु पाय नाय सिर रच्यौ ग्रंथ मनमांही ।।३७।।
माघ अमावस महँ अरंभ करि राम जनम तिथि कांही ।
मिथिला होरी रहस राम को पूरन भो मुद माही ।।३८।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १६१२ और छापे का संवत् १६१६ है। ग्रंथ शिवचरन के यहाँ भदैनी, काली महल, बनारस के पास दिवाकर छापाखाने में छपा। छापखाने में लिखने वाले कृष्ण भक्त खगेश दास थे और छापने वाले थे माता दयाल कारीगर। पुस्तक विक्रेता रामचरन थे जिनकी दुकान चांदनी चौक में कुंजगली के पच्छिम फाटक के पास थी।

संख्या ३४६क. काशी वर्णन (?), रचयिता--राम प्रगास गिरि, निवासस्थान--हुरहुरी (जौनपुर), कागज--देशी, पत्र--२, आकार--६ × ३$\frac{२}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--५७, अपूर्ण (खंडित), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री रामनरेश गिरि, ग्राम--हुरहुरी, पो०--केराकत, जिला--जौनपुर ।

आदि--श्री कृष्ण:

जं जं जय जयति शिभु गौरि सुषदाइ री ।

असो वर्नयोर्मध्य पंचकोश वेद कहत ता मध्य विश्वनाथ सुंदरि मठ क्षाइरी
कंचन की भुम्य सोह निरषत शब देव मोह करत कल्लोल देव पुरिमध्य आइरी
राजत विराजित तह देव शकल शेव करत पूजत हरगौरि पद सुरसरि अन्हाइरी
पुरी मध्य दंडपाणि वाम लीन्ह योग षानि करत है प्रकाश योग संतन्ह सुषदाइरी
ताहि प्राचि दिशा वाश भैरो अलवेला लियो करत न कोतवाली शिभु आयसु वरपाइरी
जाको जस नित्य अनित्यता कह तस वेत देउ करत है सुनेति निम मारग कलाइ री
पुरी मध्य वाश लीन्ह मातु अन्नपूर्णजि पुरी पंचकोश तहां रीद्धि शीधि क्षाइ री
"राम प्रगाश गीर" चरण कमल करत आश देहु कृपा भरती संत सतत सुषदाइरी ।८।

अंत--वेद शून्य करके अंतर शप्त लिंग अवर
आप वसे काशि मध्य येह वेद सत्य गायो है
पुन: रत्न रूप शिभु कीन्ह विमल वेद भनत
वास काशी आप लीन्ह मनु जी कहायो है
ताके अनंत एकविम रूप लिंग लीयो
वसे है प्रतंत्त जुक्त पंचम को समझायो है
ताके अनंत सत सतगुनी सतगुन ताहि के
गुने दस सहस कहायो है
तेहिते सुवेद अधिके सहसदश गुनि पुनि
दस संख्या लिंग वेद वुध गायो है
ताहि गुनि गुन वहरि दशगुन करी
लक्षिते करोरि सतलिंग कासी आयो है
पुनी ताहि राम गुनी गुन वस चेत होइ
ये नो उद्वष्ट कोठी लिंग कासी छायो है
"रामहू प्रगाशगीर" आस हरि चरनन
अंजनी सुअन पद पंकज सो भायो है ॥ ८ ॥

विषय--काशी के बाबा विश्वनाथ एवं शिव लिंग का माहात्म्य वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है । केवल दो ही पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ३४६ख नामकेत पुराण, रचयिता--रामप्रगाश गिरि, स्थान--हुरहुरी (केराकत, जौनपुर), कागज--देशी, पत्र--६२, आकार--८$\frac{२}{१०}$ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्--२७७८, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--१८८३ वि०, लिपिकार--१८८३ वि० (?), प्राप्तिस्थान--श्री रामनरेश गोसाईं, हुरहुरी, केराकत, जौनपुर ।

आदि--श्री गणेशाय नम: श्री हनुमताय नम: ॥ शोरठा ॥
मन्त गान पद कंज ॥ वदो धरनी सीश धरि
करण शकल अघगंज ॥ वुध्य वेन सुंदर विशद: ॥ शोरठा ॥

विघी पद शुभ जलजात ।। वंदौ हृदय प्रेम जुत ।।
मिटै सब उतपात ।। अघ अघ गुन शब दूरी करि

:o: :o: :o:

।। चौपाई ।।

शंत चरण वंदौ धरि शिशा ।। जाके कृपा होंहि अघ षीशा ।।
सो प्रभु होहु सहाय दयाला ।। जावे उर हरि भक्ति विशाला ।।

:o: :o: :o:

अक्षर युक्त मंत्र मोही देहू ।। शब मिली नाथ विनय सुनि लेहू ।।
जेहिते नाथ कहो एह हेतु ।। शुनत नशाहि महा अघ जेतु ।।
कहिहो शोइ इतिहाश वखाना ।। जा सूत सौनक सो भुवु वानो ।।
कहेउ सुनाय रिषिन्ह के पासा ।। सोइ मंत्र जीव विदुर प्रकाशा ।।
जो शुकदेव कृपा करि वरना ।। राज परिक्षीत को अघहरना ।।
सो इतिहाश कहब मैं भाइ ।। जौ तुम्ह कृपा करहु सुरशाइ ।।
भाषा कृत परबंध बनावो ।। जेही ते सुमुक्षी जाये सुख पावो ।।
एक इतिहाश सुभग अती पावन ।। नाशकेतु कर चरित शोहावन ।।

।। दोहा ।।

सो इतिहास कहौ शुभग पावन परम पुनीत ।
"रामप्रगाशगीर" अशपद रामचरण नवनीद ।।

।। चौपाई ।।

शंबत अठारह सय तीरासी ।। भाद्रमास सुभ सुषद शुरासी ।।
शूक्ल तीज तिथि तेहि दीन भाई ।। रिक्ष त्रयोदश श्रुति जस गाइ ।।
ता दीन चन्द्र सुभग शुचीवारा ।। हरिहर जश तेही दीन अनुशारा ।।
द्वापर अंत जनमेजय राजा ।। गंग नीकट गये सहित समाजा ।।

:o: :o: :o:

एक समय......नृपाला ।। भय उदाल तपतेज विशाला ।।
ब्रह्म सुवन उद्यालक नामा ।। भयेउ महा तेज तप धामा ।।

अंत—— ।। शोरठा ।।

पंथ कथा इतिहास सुनत न पथ दुख व्यापही ।।
हरिहर गुरुपद आश रामप्रगाशगीर प्रेम जुत ।।

।। चौपाई ।।

धर्म सुपथ पथ मारग पावा ।। तस मुनि कहौ देषि जस आवा ।।
निरमलि कोमलि सो पथि भाइ ।। अति रमनीय वेद जश गाई ।।
धर्म पथि तहवां चलि जाई ।। मह वृक्षघन तेहि पथमाही ।।
पुष्प गंध वासित सुखकारी ।। त्रिविध भाँति तह बहत बयारी ।।
वापी कूप तड़ाग सोहावन ।। तेहि मह शीतल बारि सुपावन ।।
दधि अरु क्षीर नहीं तहं भाई ।। भक्ष्य भोज्य फल सो वहु पाई ।।
अति विशाल रथपावहि शोई ।। चढ़ि नर नारि विसर वर होइ ।।
धर्म मइ कह येहपथ ताता ।। देषेउ दीर्घ सुखद तेहि जाता ।।

।। दोहा ।।

वित्त अनुसार दान देहि हरष शहित येहि लोक ।
पावही श्वर्ग बीहार वर रहीत शकल भ्रम शोक ।। चौ० ।।

.... अपूर्ण ।

विषय—नासिकेत पुराण की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । अंत के कुछ पत्रे लुप्त हैं । समस्त बासठ पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल सं० १८८३ वि० है ।

संख्या ३४६ग. पदावली, रचयिता—"राम प्रगाश गिरि", निवासस्थान—जौनपुर, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८½ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश गिरि, हुरहुरी, पो०—केराकत, जिला-जौनपुर ।

आदि—कृष्ण ॥

सतगुर वारि विआहल अमर सेंदुर पावल हो
बरह बरिस सेवन कइलीं तव जोती लषावल हो
जोती लषत परकाश होये भरि छावल हो
इगला पिंगला सोहागिना डहर देषावल हो
सो शंष ढोलना चढ़ाइ शषान्ह बैठावल हो
तुरीआ तत्व विवेक कहार लगावल हो
सूरति पथपर चढ़त गगन सुद्धि पावल हो
सतगुरु कृपा विलोचन त्रिकुटी नहिं पावल हो
तोह मह करीला नहान सकल अघ दावन हो
अघ जरि गयेउ संमह तन सकल पावन हो
नयन निमल सुष पाइ निरषि पथ छावन हो
तेहि आगे महल सोहावन परम हंस पावल हो
बरस करत अघतन तुल सलभ जरावल हो
तेहो आगे शब्द वीवेक उर्द्धगती पावल हो
तंह मदील परम सोभाय कोटि रवि क्षावल हो
तेहि आगे मयदान धेनु दरशावल हो
तेन्ह दीयो अमृत पान अमर पद पावल हो
तेहि आगे पथ रूप झलामति पावल हो
गोफा लहर अनुपम मन ठहराव हो
तव सतगुर की सूरति शब्द जोहरावल हो
तव निर्मल भौन एन द्वार क्षवि पावल हो
झुलमुल लहरत अनूप देषि क्षवि पावल हो
तह करी सूरति सोहाग भीतर दरशवलो हो
निरष में आपद सेज हरष उर छावल हो
येहि बिधि अमर सोहाग पीया पद पावल हो
मिल लीउ पीया पद रूप नैहर विसरावल हो
छूटल नैहर नात बहुरि नहीं आवन हो
मोहि लगि शब्द सुहोश सैंआ मनभावन हो
येह मंगल परम अनूप जव नर कोइ गावल हो
सोइ नर नारी सुधन्य ब्रह्म पद पावल हो
"रामप्रगाश" गिरास सतगुर पद भावल हो
अक्षय अव्यक्त अनूप ब्रह्म पद पावल हो
१६ श्री कृष्णाय ।

समस्त उद्धृत :o: :o: :o: :o:

विषय—ज्ञानोपदेश और ईश्वर भक्ति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण और खंडित है । केवल एक ही पत्र उपलब्ध है ।

संख्या ३५०. अर्जुन गीता, रचयिता—राम प्रसाद (लछना पुरी, लखनऊ), कागज—पत्र—२८, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—फारसी, रचनाकाल—सं० १९१२ वि०, लिपिकाल—१९१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपालचंद्र सिंह जी, एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ सोरठा ॥

प्रथमहिं करहूँ प्रनाम गनपति पद गौरी सुवन
शुमिरो सोइ नित नाम मंगलायतन गुन सदन
नील नयन तन स्याम राम रसिक राधा रदन
प्रनवों पद सुखधाम आसु चरित अमृत श्रवन
पुन विनवो बलराम करयो सबल सर वर नवो
जपूँ सो जग अभिराम नाम सकल संससी हवन
सुमिरो सारद नाम जाते चेतन तिरभुवन

:o: :o: :o:

राधा कृष्ण कमल पद नाऊँ आरत हरन सरन सिर नाऊँ
मगन ध्यान सुर मुनिवर जाकी प्रफुलित गात सदा छवि जाकी
प्रभु सुखधाम स्याम तन सोभा निरखि नयन त्रिभुवन मन लोभा
सादर सोइ सरूप सुखरासी जसुमति नंद सकल ब्रजवासी
दरस परम आसा सब पूरी सोजत लाई लहूँ सुख बहोरी

:o: :o: :o:

जगत विदित सो अरजुन गीता जामें प्रगट सुत्रित सोनीता
संसकिरत मह बरनेव सोई . . . .
बरनों सोइ सुंदर इतिहासा भाखा मांह राख हरि आसा
उनइस से द्वादस सुभ संवत कहू जथामत सो रख संमत
लछना पुरी रुचिर अति विमला प्रगट प्रभाव जहाँ पर कमला
तहाँ सुखद यह सुरस प्रकासा "रामप्रसाद" दास हर दासा
सो जयमार ग्राम लो लावा भावा तंह निज धाम सोहावा
अरजुन प्रश्न करी जंह भानते सत बुझाइ कृष्ण केव सानते

अंत—संपूरन संवाद यह अर्जुन कृष्ण मुरार
वेदवत इनको दमत समझो हिरदे विचार
चली सो मारग चेत अभिमत फल ताकह सुगम
निज परिवार समेत दोहो जगमुद मंगल लही
दिवस वरख गनि लेहु सब मास वरख कर इन
चौपाई तेती सबइ समझ न एखो ऊन
मास वरख चौगुनी कर तेती दोहा लेख
पंच अधिक तंह सोरठा धरम भाल को रेख

इति श्री अर्जुन गीता भाखा कृत राम प्रसाद संपूरनक सुममस्त मिती पंचमी वदी जेठ १९१३ समापत बखत बीर लता बंदा रामप्रसाद ।

विषय—कृष्णार्जुन सवाद वर्णन ।

संख्या ३५१. तत्र सामुद्रिक, रचयिता—रामफल, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—४८, आकार—९½ × ६⅒ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—स० १९१७ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रघु उपाध्याय, ग्राम—विवंया, पोस्ट—फूलपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री शास्त्री यदुनाथे जयति ग्रंथ सामुद्रिक ॥

इस ग्रंथ को देखने सो सपूर्ण जन्म का हवाल मालूम होगा आयु ज्ञान होगा जितना वर्ष जीवन होगा सो ज्ञान होवेगा जितना इसका पुत्र होगा किवा नपुंसक होगा वंध्या होगा सो सभ हाल लिखा ज्ञान होगा जीतने स्त्री सो भोग है सो हाल मालुम होगा राजा होने का चिह्न प्रजा होने का चिह्न धनी होने का चिह्न पंडित होने का चिह्न मूर्ख होने का चिह्न साधु होने का चिह्न चोर होने का चिह्न लक्षण शुखी पापी पुन्य मन हीने का सभे हाल मालूभ होने के वास्ते नाना प्रकार के संपूर्ण चिह्न का हवाल लिखा जा है सो जानने के वास्ते वडा परिश्रम करके यह ग्रंथ संग्रह हो गयो है इह ग्रंथ बडा दुर्लभ है सो संपूर्ण प्राणियो के ज्ञान होने के वास्ते प्रगट हुआ है ।

अंत— ॥ श्लोक ॥

इदं सामुद्रिकं शास्त्रं विष्णुना परिभाषितं ।
श्रुत्वा धृत्वा च शोकान् जहति पंडिता ॥११३॥

अर्थ श्री महादेव जी श्री पार्वती जी सो कहे है कि गिरिजानंदिनी प्रिये यह सामुद्रिक शास्त्र तो श्री विष्णु भगवान जू श्री ब्रह्मा जी सो कहे हे यह सामुद्रिक शास्त्र को यदि कोइ प्राणी श्रवण करे याके अर्थ को धारण करे याको पढे पढ़ावे तो यह सामुद्रिक शास्त्र के जानने सो वा प्राणी बुद्धिमान पंडित हे कि संपूर्ण संसार के मध्य नाना प्रकार का चिता को त्याग करके शुखी होगा संपूर्ण कामना को पावेगा ।

इति श्री तंत्र सामुद्रे हरगौरी संवादे संपूर्ण स्त्री पुरुष लक्षण शुभाशुभ कथनम् ।

शहर बनारस केदार प्रभाकर तंत्र सामुद्रिक की पोथी छपी गोपाल चौवे के छापखाने में छपी साकीन मोहले सोनारपुरा बाकलम हरनाम सिंह छापने वाले रामफल जिसको यह पोथी लेना होय सो चांदनी चौक मे वोहारी चौवे के दुकान से मिलेगी संवत् १९१७ मो: वैशाख वदी ५ वार मंगर के समाप्त ॥

विषय—सामुद्रिकशास्त्र का वर्णन ।

संख्या ३५२. पद्मपुराण (रामचंद्र अश्वमेध), रचयिता—रामबकस, कागज—देशी, पत्र—३२७, आकार—१०½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामरुचि पांडेय, ग्राम—बोदरी, पो०—लेवरुआ, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुर चरण कमलेभ्यो नमः

॥ सोरठा ॥

बुध्य विहारी चारी भुज गननायक गजवर बदन ॥
सौभ्य कारी भै हारी वंदौ सीव सुत विघ्नहर ॥
वंदौ साधु सुर मुनि सुजस वीग सीत कमल समान ॥
"अस्वमेध" की सुभकथा सादर करौ बषान ॥
ब्यास कहा मुनि राज सो सुनिए निर्मल बुधी ॥
बत्सायन अहिनाथ को सुभ संवाव प्रवुधी ॥

॥ वत्सायनो वाच ॥

सेषा सेष कथा विधी नाना ॥ जक्त सर्ग सो विविधी विधाना ॥
भुगतीष गती प्रकास विवेका ॥ महतत्वकृत स्टष्टी अनेका ॥
नाना राज विचित्र कहानी ॥ सुर्यवंस भव नृप गुनषानी ॥
तहा राम गुन ग्राम अपारा ॥ सुनौ सकल तौमुष विस्तारा ॥
नाथ तवानन ससी स्रवत अमीय राम गुन भुरी ॥
सुनत सकल कल्यानमय करत दुरीत कह दुरी ॥ दोहा ॥
लोकांतर हरी कथा सुनाई ॥ हरषित ह्रीदए कहौ अहीराई ॥
गदगद स्वर हर्षित भौ गाता ॥ कहन लगे पुनि राम सुवाता ॥
पवनतनै गुन धाम उरधरी मम बानी विमल ॥
विदित सो नंदिग्राम भरत वास सुंदर सुषद ॥

इति श्री पद्मपुराने पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे श्री मद्राम वकस कृते नंदिग्राम अगमनो नाम प्रथमो अध्याय ॥ १ ॥

नंदिग्राम जाइ कपि राजा ॥ देष्यतु भरत समेत समाजा ॥
कृसतन गत बीरह बस देषी ॥ मारुत सुत भौ दिन विसेषी ॥
प्रभु आगमन सनेस अमिय सोच निजतन विमल ॥
बोले भरतनरेस कपीतन सरीस न मोहि प्रीय ॥

अत--सीया राम है मेध्य कृत कथा सुने नर नारी ॥
विभो विलास धनेस सम लहि लहि है फलचारी ॥
फल चारी लहिहै नारी नर सीय राम कृत गुन गाइकै ॥
तिहु काल कुसल विलास जस लहि जस रहै छमा पर छाइ कै ॥
कहिहै जो एह रघुवर कथा सुनिहै जो कोइ मन लाइकै ॥
भव विभो भोग विलास करि वसीहै ते हरीपुर जाइकै ॥

इति श्री पद्मपुराणे पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे श्री मद्रामवकसक्रीते रामचंद्र अस्वमेध संपुरन सुभ मस्तु समत १६३२ मीती अगहन मासे सुक्ल पछे संपुरन ॥

विषय--रामचरित्र वर्णन । ग्रथ ६६ अध्यायों मे है । यथा : नदिग्राम अगमनो नाम, पुरी दर्शन, शेष वात्सायन सवाद । रावनो प्रतिनाम, रावनोत्पत्ति, रघुवर जन्म विवाह, सर्वधर्मीर रूपोनाम, शत्रुघ्न शिक्षा नाम, है मोचन, कामाक्षोख्यान शत्रुघ्न छत्रपुरी प्रवेश, यात्रा निवेदन, चेमन आश्रम है गमन, ब्राह्मण समागम, रत्नग्रीव स्वतीर्थपयान, गडकी महात्मानाम सन्यासी दर्शन, नीलगिरि वर्णन, राजपुत्र विजय, पुष्कल विजय, गदायुद्ध, चित्रागद वध, शत्रुघ्न विजय, सत्रुघ्न सुवाहु भूप परस्पर जोगी नाम, सत्य वादाख्यान, सत्यवत्सा समागम, वीर प्रतिज्ञा कथन, अरन्य को पारद, राम चरीत्र कथनो नाम, जलमधे तव वारि, शकर विजय, देव युद्ध, रामागमन, हय प्रस्थान, मुक्ति वर्णन, अगद सदूतवाक्य, सुरथ विजय, रघुनाथ समागम, चार निरीक्षण, भरतवाक्य रजकप्रान कथन, गंगादरसन, कुशलव उत्पत्ति, शत्रुघ्न कालजीति सेनानी मरन, हनुमतनो नाम, लव मूर्छा, शत्रुघ्न मूर्छा, सैन्य जीवन, लक्ष्मण कुशलव गमन ।

सख्या ३५३. भागवत भाषा (दशम स्कंध), रचयिता--रामबछ या कविबछ, कागज--देशी, पत्र--१४०, आकार--१४ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३३२५, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सवत् १८६१-७० तक, लिपिकाल--संवत् १८६१-७० तक, प्राप्तिस्थान--पं० तामेश्वर मिश्र, ग्राम-डाँगीपार, पोस्ट; भैंसा बाजार, जिला-गोरखपुर ।

आदि--....................

दुपहर कर बाल गोविंद नेवाज बुढहट गैलहि बढाव मोके दसखत सें पत्र होय गैलली अनुपादि जस पत्र कर रीति है ० हम सिहबलो ग्राम पाछिम तट अगोरल तवन पूर्ब कथा मह रामबेलावन कर नर्व वार्ता जे जयावत्त अकुलाय गैलहि मगत दिपवत वि १०० वा० २०० वा ३०० वा लाख अनेक जाल विश्रांता पछि सवित रुक्का चमार झोरीन देनामीरअेऐले वलिखत सुगंध मूब्रा बाबू मगावल १०) भगवान भारती धर्मपुर मेजल शत्रु वर्ग करमना करे वालन्ह कर रास मैल मन आनंद भैल त्रिपाराम के जरिके सिद्ध अनुप राम कर लडिके नीक आगे गुप्त मे रामबेलावन तमसुक ८४ कर निकासि दिहल मुप्ता १४) मारफति भवनराम के तेसे भवनराम के परंपरा कासी सुद्ध मन जानि मन मानल जे भवन उमराव कर संकोच छाडि पत्र लिखावल नीक नीक कहत करतमूल वात भारय पाठ करना मी० जे० सु ३ करन एतना वृतांत राधारमण १८७० ।।

चरण धरहु मुनि श्रवण मुरारी । सत्य वचन सम जगत न भारी ।। १ ।।
जे जथ मोहि शरण जग आवा । भजौ ताहि तस विधिहि सुनावा ।।
धृष्ट वचन नहि एह सति वानी । तजहु पितहि मातहि सुखदानी ।।
सरवस तजि हम मव पद सेवा । वचन सत्य हित आनद भेवा ।।

अंत--

लखि मुख विश्व कंपत न जानी । हरिनिज मायहि निज उर आनी ।।
पुनि जसुदा निज नैन निहारा । किलकत हसत गोद सुकुमारा ।।३७।।

।। दोहा ।।

"रामवछ" हरि सिसु चरित जो जग नर तन पाय ।
सुनै गुनै मानै मनै तेहि पर स्याम सहाय ।।
सो नंद भवन नंद नंदन पर ब्रह्म राजतु पृथुक ।
लीला आनंद कंद करत स्याम जीवन जनन्ह ।।

इति श्री भागवते महापुराणे दश स्कंधे भाषा रामवछ कृते अनभंजन तृणावर्त वधे किंचिद्विश्व दर्शने परम कल्यान दायके सप्तमोध्याय: गोपीजन वलभाय कृष्णाय नम: १८६१ ।।

वसुमय उदक अवनि कर जोई । मृदुल तजत पटि गृह जनछिति कोई ।।

।। दोहा ।।

वश्चिक धनु झष कुंभ भनु मीन सुअज वृषु जोरि ।
१ २ ३ ४ ५
कातिक गुण प्रथमहि लखो आठ मास श्रुति भोरि ।।

:o: :o: :o:

---अपूर्ण

विषय--भागवत दशम स्कंध का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडित और जीर्ण अवस्था मे है। आदि अंत के पत्रो के अतिरिक्त मध्य से भी कितने ही पत्रे लुप्त हो गए है ।

संख्या ३५४क. हनुमान जयति, रचयिता--रामरतन लघुदास, कागज--देशी, पत्र--५, आकार--६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--७२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ हनूमान जयति लिख्यते ।

॥ दोहा ॥

जयति अमंगल नासिनी मंगल दायक सोय ।
मंज्जन करि याकौ पढ़ै कष्ट कदौ ना होय ॥ १ ॥
सेवक रक्षा करन कै लिये गदा निज हाथ ।
संकट सोक निवारि कौ देत अभै कपिनाथ ॥ २ ॥
मारुतनंदन बीर कौं श्री रघुबीर उपास ।
या विचारि सरनै भयौ "रामरतन लघुदास" ॥ ३ ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य बल धीर दयानिधि सोय ।
जासु कृपा तैं जीव कौ राम चरण रति होय ॥ ४ ॥

अंत—

पाप त्रय ताप ग्रह दूरि होय वृश्चिकी प्रेत पिसाच नहि निकट आवै ।
भूत हरि डंकिनी नाटकी चेटकी कष्टि अरु मुष्टि छिनमैं नसावै ॥
करैं अस्नान अरुनोदय प्रातही सीस दे तिलक या जयति ध्यावै ।
कष्ट संकट हरैं सुष संपति करैं सिध्य सकाज लघुदास गावै ॥२७॥

॥ दोहा ॥

मंगल हनुमत पूजियैं नित उठि जयति पढाय ।
रामरतन लघुदाश कहि मन वांछित फल पाय ॥२८॥
सब देवन के मध्य मैं दीरघ पवनकिशोर ।
ताहि भजौ चिंता तजौ सदा सहायक तोर ॥२९॥
रहत सदा निज दास पर पवनपुत्र अनुकूल ।
प्रणतपाल खल दल दलन जै जै मंगल मूल ॥३०॥
हरियाणौ एक देश है गाव विधासौ नाम ।
गौड विप्र राजत तहाँ अतिपावन सौ ठाम ॥३१॥
भरद्वाज कुल गौड द्विज मनी राम बुध तात ।
श्रीध्याँ नाव गुरू मिलै मयाराम विख्यात ॥३२॥
मया राम महाराज कौ रामरतन लघुदास ।
जश गावत हनुमत कौ मंगल करन प्रकाश ॥३३॥

इति श्री रामरतन लघुदाश कृत हनूमान जयति सपूर्णम् शुभंभवतु ।

विषय—हनूमान् जी की विरदावली का वर्णन ।

संख्या ३५४ख. कृष्णध्यानाष्टक, रचयिता—रामरतन लघुदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—७ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह) काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री राम जी ॥

श्री राधा श्री कृष्ण कौ श्री बिहार श्री नाम ।
श्री दायक श्री कांतकर श्री समूह श्री धाम ॥ १ ॥
श्री वनिता श्री लाल कौ श्री भूषण यह राय ।
श्री लषि श्री गावन लगी श्री द्रुम कुंजन छाय ॥ २ ॥

॥ पद ॥

देखि सखी छवि नंद नंदन की ।
मृदुल मनोहर स्याम विलोकत मंद भई दुति चंद्र मदन की ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अलक विराजत षौरि बदन की ॥
भृकुटी वक्र कुरंग विलोचन सुक नासा अंभोज वदन की ॥
लटकन लटकी रह्यो अधरन पर क्रांति लसति है मुक्त रदन की ॥
अमल कपोल चिबुक अति सुदर श्री बसंषवत रूप सदन की ॥
विविधि माल श्रीवत्स भृगुपद भुज प्रलंब त्रय ताप कदन की ॥
बाजू कंकरण बांक मुद्रिका कवल हस्त नष ज्योति हदन की ॥
लकुटी लाल बासुरी भ्राजत त्रिवली रुचिर वनी सुषदन की ॥
कटि किंकरणी पीत पट छाजत चमकत तडित जथा जलदन की ॥ जुगल जंघ २० ॥
रामरतन तजि लाज भटू मै होन चहौं रज कंज पदन की ॥ ३ ॥

मध्य--- ॥ पद ॥

देखो री या कुँवर कन्हैया ।
मनमथ कोटि मनोहर मूरति याहि न लोचति को जग मैया ।
नील जलद सम स्याम सुभग तन द्रग मुष कर पद कंज लजैया ॥
दमकि रही नष पांति रमाघर मरिण भूषरण प्रति श्रंग सुहैया ॥
केसरि तिलक मुकट अलकावलि झूमक नांक वुलाक हलैया ॥
भृकुटी चाप कुरंग विलोचन हमि हेरत मन मोल करैया ॥
कंध दुसाल पीत पट काछें कर मुरली वर तान गवैया ॥
रामरतन पग धरत धरणि पर ताल सहत संगति नचैया ॥१०॥

॥ दोहा ॥

श्रीन सहित श्रीवन विर्षे गोपी गन माहि ॥
श्री हरि की छवि श्री प्रिया श्री मुष गान कराहि ॥११॥

अंत--- ॥ दोहा ॥

श्री निवास अष्टक पढ़ै श्री अनुराग समेत ।
श्री वाणी कीरति लहै श्री घनस्याम समेत ॥२१॥
जुगल उपासिक नारि नर जे न लहै रस आन ॥
जिनको सरबस ध्यान यह विमुष सुनै नहि कान ॥२२॥
श्री स्वामी सर्वज्ञ श्री मयाराम महाराज ।
श्री गुर करण तै कह्यौ श्रीपति सभा समाज ॥२३॥

इति श्रीकृष्ण ध्यानाष्टक संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥

विषय---पद और दोहों मे राधाकृष्ण की युगल उपासना का वर्णन ।

संख्या ३५५. भागवत (एकादश स्कंध) रचयिता---रामरसिक, कागज---देशी, पत्र---८८, आकार---$६\frac{३}{१०} \times ५\frac{१}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१३, परिमाण (अनुष्टुप्)---२२२८, खंडित, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १८४० वि०, प्राप्ति-स्थान---पं० रामरक्षा त्रिपाठी "निर्भीक", अध्यापक, फार्ब्स हाईस्कूल, फैजाबाद ।

आदि---. . . . . तजानी ॥
बल निधान यह निज उर आनी ॥
यदु कुल दुसह भूमि बताई ॥ गयो भार नग यो तव ताई ॥

मम आश्रित इन कहं जगमांही ।। औरन ते रंजक भय नाहीं ।।
ताते वेणु अनल सम भारी ।। कलह अग्नि यदुकुल मंह डारी ।
संहरि ताहि शांति कहँ पावै ।। ता पाछे निजधाम सिधावै ।।
सत्य संध यह निज उर धरिकै ।। विप्र श्राप कंह कारणु करिकै ।।
सो यदुवंश प्रबल अति भारो ।। निज कुल कृष्ण सकल संहारो ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

तरन हेत तम नरन कँह महि विस्तरि गुण ग्राम ।।
चलत भए निज धाम तव करुणाकर घनस्याम ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

"रामरसिक" प्रभु सर्ववित मेटि सकत मुनि शापु ।।
विप्र वचन मेटे नहीं मानी लीयो सोइ आपु ।।

इति श्री भागवते महापुराणे मौशलोपाख्यानो नाम प्रथमोध्यायः ।। श्री शुक उवाच ।।

अंत--अर्जुन निज प्रिय हरि सखा तासु विरह अति दीन
कृष्ण यदुक्ति सुगीत करि स...सु शांत प्रवीन
मरे जे बंक गोत्र निज केरे । रहो न कर्म क्रिया तिन केरे ।
या विधि वेद मुनीशन गाए । क्रम हीते अर्जन करवाए ।
श्री हरि तजी द्वारिका जबही । कीन्ही मग्न पयोनिधि तबहीं ।
छोड़ि एक श्री कृष्ण निधाना । तहा सन्निहित श्री भगवाना ।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

सकलाश्रय मम जे सुनै गावै सुमिरै कोइ ।
लहे भक्ति भगवंत की परमहंस गति होइ ।
श्री शुक नृप संवाद वर दायक सब कल्यान ।
"रामरसिक" भाषा कियो बाल वुद्धि अनुमान ।

इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे मौशल युद्ध वर्णनं नाम एक त्रिशोध्याय ।।३१।। संपूर्णम् भूटेकादश स्कंधोयं ।। सं० १८४० ।।

विषय---भागवत एकादश स्कध का भाषानुवाद ।

संख्या ३५६. परख विलास, रचयिता---रामरहस्य दास, कागज---देशी, पत्र---६६, आकार---६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१३, परिमाण (अनुष्टुप्)---१६६२, पूर्ण रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १८७८, प्राप्तिस्थान, बाबा रामसनेही दास, कुटी--सेमरवर (खानपुर बोहना), पोस्ट--जहानागंज, जिला--आजमगढ़ (यह कुटी भुरकुड़ा से सबधित है) ।

आदि---गुरवे नमः ।। दया गुर की वचन ग्रंथ लीषते ।। सत्त सब्द टकसार परख विलास आदि अंत ।।

॥ गुर अस्तुती मुषबंद प्रथम ॥

॥ साषी ॥

साहेब दीन दयाल गुर सो पर और न कोए ।
सरन आए जम सो बचे आवागवन न होए ॥ १ ॥
दया करन ऐगुन हरन तारन तरन उदार ।
असरन सरन बंदो चरन तुम बिनु नहि निरतार ॥ २ ॥
देषि अधमता आपनी परवस जम के हाथ ।
त्रसित कहेउ साहेब सरन भो भए हारि सनाथ ॥ ३ ॥
प्रभु सब लाएक पारषी हौं भ्रमिक अज्ञान ।
लोहा कनक पारस करे साहेब सरन समान ॥ ४ ॥
बंदो चरन सब दुखहरन प्रभु प्रसाद सुख भूरि ।
दया करी दुष सभ हरी सन्चित सुलझो दूरि ॥ ५ ॥
बहे बहाए जात थे भौसागर के मांह ।
दया करी परषाय सभ सरनाए गहि बांह ॥ ६ ॥

अंत---सत्त सब्द टकसार

॥ साषी ॥

मानुष जन्म नल (? नर) पायके चुके अबकी घात ।
जाए परो तो चक्र में सहे घनेरी लात ॥ १ ॥
जिन्ह चेता तिन्ह चेता मानुष केरी दांव ।
नहि तौ दुरमत फेर में सहे घनेरी घाव ॥ २ ॥

॥ छंद ॥

जेहि हेत सुर नर मुनि जना वहु जोग जग रट लावहीं ।
नहि वोर छोर वेकार पावहि अगम कहि कहि गावहीं ।
सो आद अंत जे सुजन जन पारष करहि परषावहीं ।
सभगा फांस मिटाए अभय असक सोई पद पावही ॥ १ ॥

एती आद अंत परष विलास वरनन ग्रंथ राम रहस्य दास कृत संपुरन ॥ दसषत रांमवरस के प्रति देषा सो लिषा मम दोस न दिएले ॥ पढ़ै गुनै जो सुजन जन साहेब विनती मोरि ॥ अछर बेंबी कांम मांतरा ॥ लीजे बुध्यते जोरि ॥ संमत १८७८ के साल ॥ सुभ अस्थान भाग नगर ॥ मीती सावन बदी ॥ ५ ॥ पंचमी ॥ वार मंगलवार ॥ संपुरन ॥ विवेकसार हौ ॥ परष विचार है ॥ मुक्ति का द्वार है ॥ चरन गुरदेव का ॥

विषय---सत मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल संवत् १८७८ है।

प्रस्तुत रचना निम्नलिखित रचनाओं के साथ एक ही हस्तलेख में है :---

१. अब दाल मता साखी चौरासी अंग की---पत्र खंडित हो गए हैं।
२. वचन बीजक---कबीर---पत्र खंडित हो गए हैं।
३. रेखता---कबीर
४. ज्ञान कहानी---कबीर
५. परख विलास---राम रहस्य दास
६. समस्त सार मानुष विचार---
७. पंचकोश---
८. फुटकर सवैया

९. ग्रह बैराग बोध
१०. भैचेतावनी—लालदास
११. ज्ञान उपदेश चेतावनी अष्टक—खेमदास
१२. ब्रह्म निरूपन—कबीर
१३. परमहस सध्या विधि—
१४. मगल सत महिमा—
१५. सब्द की रमैनी—कबीर
१६. वस व्याख्यान—
१७ सुमिरन भेष क—कबीर
१८. येकोत्तरी चौका की—
१९ जपमाली सुमिरन—
२०. फुटकर सुमिरन कहे—
२१ वदगी को अग—सुदर दास कृत—आदि ।

हस्तलेख के आदि के पत्ते नष्ट हो गए है । मध्य और अत के भी कितने ही पत्ते नहीं है । इसमें सस्कृत की भी रचनाए लिपिबद्ध है ।

सख्या ३५७. जुगल विलास, रचयिता—राजाराम सिह, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—१४ × ११ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १८३९ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री वाल कृष्णो जयति श्री गणेशाय नमः अथ जुगल विलास लिप्यते राजाराम सिह कृत कवित्तन में ॥

॥ गगगौरी ॥

सोहत मुकुट सीस कुंडल श्रवन सोहै मुरली अधर धुनि मोहै त्रभुवन कौ ॥
लोचन रसाल बंक भृकुटी विसाल सोहै सोहै वनमाल गरं मोहे लेत मन कौ ॥
रूप मन मोहन न चित मै बिसारौ वारौ सुदर बदन पर कोटिक मदन कौ ॥
जगत निवास कीजं सुमति प्रकाश मेरे उर मे हुलास है बिलास बरनन कौ ॥ १ ॥

॥ राग कान्हरौ ॥

नागरि नवेली अलबेली अलवेली भांति संग सषियान लियं डोलं ही लतान मैं ॥
निकसे तहा ह्वै आनि जवं मन मोहन जो परम प्रवीन वस कोबे की कलानि मै ॥
मुरली बजे कं चले गए नेह बीज बं कं हितं कं चितं कं चितं मोहि मुसक्यानि मै ॥
निरखं छवीली व्रज छैल की छबीली छवि ह्वै गई छकी सौं छवि छाई अषियान मै ॥ २ ॥

मध्य—

सषी कौ वचन सषी सौ सरद रितु बिहार ॥ पंचम मिलाप ॥ फिर अंतरध्यांन ॥ राग हमीर ॥
सुनी दीन वानी प्रेम सानी उर दया आनो स्यामा को रमावत हितं कं नंदलाल है ॥
बन उपवन में जमुना के पुलिन में राधा मन मोहन चलत गज चाल है ॥
चल्यौ नहि जात मोपं जानौ जहां लेकं चलौ तियके न वेन लगे पियकों रसाल है ।
कह्यौ तव कान्ह चढ़ि चलौ मेरे कंध पर यौ कहि अदेष हीय गये हरि हाल है ॥५२॥

अंत— **॥ राग सोरठ ॥**

नरवर नाथ छत्रसिह सुत राम सिंह रुचिर बनायो ग्रंथ रस को निवास है ॥
गावं जो गवावं सुनं प्रेम में मगन होय ताके उर राधा मनमोहन को वास है ॥

संवत् अठारह सै वरस छतीस पुनि सुदि तिथी पाचें गुरुवार माघ मास है ॥
रसिक हुलास कर सुमति प्रकाश कर नवल प्रगट कियो जुगल विलास है ॥१०१॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महीपति जग इंद्र बहादुर महाराजा रामसिंह जी कृत जुगल विलास संपूर्णम् ॥ अथ रागन की गिनती के कवित्त ॥

गौरी मांझ दोइ कन्हरी में तीन ईमन में सात है सरस कान्हरे मे दो लषाने है ॥
साहने में एक प्यारी सोरठ मे तेरह भपाल मांझ एक पूरवी में पाँच जाने हैं ॥
व बावनी सारंग में एक पुनि सारंग में चौदह कहे है जंगला में तीनि आने हैं ॥
सोरठ मलार चारि सुद्धहि मलार एक असे ही मलार मांझ तीनि दरसाने है ॥ १ ॥
वागेसरी कान्हरे मे दोइ स्याम मांझ दोइ टोडी हूँ मे दोय भैरो मांझ दो सुहाने है ॥
बरवा केदारौ जैजवंती जेते गूजरी बिलावल धनासिरी में एक एक ठाने हैं ॥
याही रीति हंम किकिनी मे गोर सारग मै ललित विभास हू मै एक एक ल्याने है ॥
परज में तीनि और हमीरहू मैं तीनि और अड़ाने मांझ तीनि नीकी भांति पहिचाने हैं ॥ २ ॥
रामकली मांम चारि गाएं है सुहाई भांति गौडहि मलार दोय सुष सरसाने है ॥
कहे है षमायच में सात सो सुहानै हिए दिये रहे कान ते तरंग में लुभाने है ॥
राधेकृष्ण नाम के उपासी सुषरासी सदा गावें औ गवावें सदा प्रेम रस माने है ॥
जुगल विलाम मे कवित्त मत एक एक पाँच तीस राग में बनाइ के बषाने हैं ॥ ३ ॥

इति रागन की गिनती संपूर्णम् ॥

विषय––इसमे राधा कृष्ण की लीला विभिन्न रागो मे वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित ग्रथ सकलित है ––

१ पद (नित्य पद), २ कृष्णाश्रय की भाषा टीका, ३ नवरत्न की भाषा टीका, ४ पद (होली तथा ख्याल), ५ जुगल विलास––रामराम सिंह कृत ।

संख्या ३५८क. गनक आह्लादिका, रचयिता––रामहित "जन", कागज––देशी, पत्र––४, आकार––$11\frac{3}{4} \times 5\frac{1}{4}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––१२, परिमाण (अनुष्टुप्)––६६, अपूर्ण, रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––काशी नागरीप्रचारिणी सभा, बाराणसी (ग्रथदाता––प० शिवमोहन तिवारी, ग्रा व पोस्ट–बरहद, थाना–जिला–आजमगढ)।

आदि––श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पोथी ज्योतिष गनक ॥ आह्लादिका जनरामहित कृतम् लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

ज्योतिष पति कुल कमल पद बंदि सुमिरि द्विजराज ।
रचत गनक आह्लादिका बाल बुद्धि के काज ॥ १ ॥

॥ अथ प्रथम नक्षत्र नामानि ॥

अश्वनि ॥ भरणी ॥ कृतिका ॥ रोहिणी ॥ मृगीसीरा ॥ आद्रा ॥ पुनरबसु ॥ पुष्य ॥ श्लेषा ॥ मघा ॥ पूर्वा ॥ उत्रा ॥ हस्त ॥ चित्रा ॥ स्वाति ॥ विशाखा ॥ अनुराधा ॥ ज्येष्ठा ॥ मूल ॥ पूर्वाषाढ़ ॥ उत्राषाढ़ ॥ अभजित ॥ श्रवण ॥ धनिष्ठा ॥ सतभिखा ॥ पूर भाद्रपद ॥ उत्रभाद्रपद ॥ रेवती ॥ इति ॥२८॥

:o: :o: :o:

अंत–– ॥ अथ नाडी फलम् ॥

घडी पहली मै परं पुरुष न तजौ आप ।
तौ पति के कहु श्रेष्ठ है दूजो लषहु सुभाय ॥३०॥

दूजी माडी मे परै कन्या नषत प्रवीन ।
तौ कन्या कहु श्रेष्ट है नेकु न जानहु हीन ॥३१॥
कन्या वर की नषत जौ तीजी नाडी पाव ।
तौ दुनो ते प्रीति अति सुजसभलो गोहराव ॥३२॥

॥ इति नाडी फलम् ॥

॥ अथ त्रिकोन लीन अली विचार ॥

वर कन्या माता पिता मरो जानिये जासु ।
नौवें वरते कन्या का सुभदायक लखु आसु ॥३३॥
जौ कन्याते पांचये वर होये सुभ एहु ।
है अलीन सो लीन................

:o: :o: :o:

——अपूर्ण

विषय——फलित ज्योतिष का वर्णन ।

संख्या ३५८ख. गनक अह्लादिका, रचयिता——रामहित "जन", कागज——देशी, पत्र——७८, आकार——८$\frac{९}{१०}$ × ६$\frac{१}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२०, परिमाण (अनुष्टुप्)——१७५५, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——सं० १८८४ वि०, लिपिकाल——सं० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान——ठाकुर रामकरन सिंह, ग्राम–सुदनापुर, पोस्ट–गौरा, जिला–सुलतानपुर ।

आदि——श्री गणेशाय नमः अथ पोथी जोतिष गनक अह्लादिका जनराम हित कृतम् लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

ज्योतिष पति कुल कमलपद बंदि सुमरि द्विज राज ।
रचत गनक अह्लादिका बाल बुद्धि के काज ॥ १ ॥

॥ अथ प्रथम नक्षत्र नामानि ॥

अस्वनी १, भरणी २, कीत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगसिरा ५, आर्द्रा ६, पुनर्वसु ७, पुष्य ८, श्लेषा ९, मघा १०, पूर्वा ११, उत्रा १२, हस्त २१३, चित्रा १४, स्वाती १५, विसाषा १६, अनुराधा १७, ज्येष्ठा १८, मूल १९, पूर्वाषाढ़ २०, उत्राषाढ २१, अभजित २२, श्रवण २३, धनिष्ठा २४, सतभिषा २५, पूर्वभाद्रपद २६, उत्रभाद्रपद २७, रेवती २८ इति नक्षत्र नामानि ।

अंत——अथ गंडा धरिबे को विचार

सूर्य ऋक्ष तें षट भलें अनभल षट शुभ चारि ।
आठ अशुभ शुभ चारि है कंडा धरिहु विचारि ॥३५॥

इति कंडा धरिबे को विचार

१ ८ ८ ३४
एक आठ पुनि आठ दे तापर चारि धरेहु ।
संवत शुभ पहिचानिये ग्रंथ पूर कृत येहु ॥१३६॥
मार्गशीर्ष शुक्ल ३ सुतिथि बुधवासर सुखरूप ।
ग्रंथगणक अह्लादिका कीनों मति अनुरूप ॥१३७॥

इति श्री जनरामहित विरचितायां गणक अह्लादिकायां समान विशेष सौचाचारत् विचार नक्षत्र रूपादि पंचषा पंच दे चंद्रमा सूरज उपरनो नाम नवमो विश्रामः ॥ ० ॥ शुभं भूयात मांगल्यंव ॥

विषय—फलित ज्योतिष का वर्णन ।

ग्रंथ नौ अध्यायो (विश्रामों) मे लिखा गया है ।

रचनाकाल

एक आठ पुनि आठ दे तापर चारि धरेहु ।
संवत् शुभ पहिचानिए ग्रंथ पूर कृत येहु ।।१३६।।
मार्गशीर्ष शुक्ल ३ सुतिथि बुधवासर सुखरूप ।
ग्रंथ गणक अह्लादिका कीनो मति अनुरूप ।।१३७।।

संख्या ३५८ग. चानक, रचयिता—रामहित सिह सिहेल, निवासस्थान—चितविसाँव (आजमगढ), कागज—देशी, पत्र—९, आकार—१३½ × ५¼ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—स० १९३६, प्राप्तिस्थान—प० रामनद जी द्विवेदी, ग्राम—पीडरी, पोस्ट—काभा, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ पोथी चानक लिख्यते ।।

अथ लक्षण संत को छंद मत्तगयंद

चित उदार सदा नहि त्रास न आस जहा न महान सदा है ।
लोभ न छोभ न राग न द्रोह अजाच असंग छमा सु गहा है ।
काठहु की परनारि छुवै नहि रामहितीस सनेह लहा है ।
भाव अभाव समान निरंतर कोमल चित्त न लाज वहा है ।। १ ।।
गावत राम चरित्र सदा द्रिग नेह सुनीर विराजत जाके ।
कंठ सुमाल लसै तुलसी हरिवेष लिये श्रुति को मत ताके ।
भोजन शुद्ध विचार समेत समर्पण कै हरि के निति वाके ।
"रामहितीस" सु जूठन खात सुलक्षण संत कहैं गुण याके ।। २ ।।

अंत—

कादर लक्षण

बहु आयुध धरि चले विदित नट को सिंगार करि ।
निरषि निरषि रिपुसेन हृदय हहरे विखाद भरि ।।
धकधकानि बंदूक तीर जब सरसरान सुनि ।
चमचमानि करवाल निरषि तब धुसन लाग गुनि ।।
कह आयुध छुड गयो तन तुरित डारि हथियार सब ।
इति बदत रामहित पहुंचि घर निज सूरता बखान तब ।।३४।।

अ चानक ग्रंथ लिखित्वा नंदन सिंह वसित्वा फतेपुर समत १९१६ मिति कातिक बदी ९ ।।

विषय—निम्नलिखित लोगो के लक्षण वर्णन किए गए है :—

१ सत, २. पडित ३. जोगी, ४ मूर्ख, ५ पाखडी, ६. ज्ञानी, ७. रामदास, ८. उत्तम गृहस्थ, ९ नीच गृहस्थ, १० चतुर, ११ लोभी, १२. अधर्मी, १३. पचसद, १४. निरचै त्याग, १५ उपदेश मत, १६ अधर्मी गृहस्थ, १७. शूर वीर, १८. कादर ।

संख्या ३५८घ. भागवत विलासिका, रचयिता—रामहित सिंह, स्थान—चित विसाँव, कागज—देशी, पत्र—६३, आकार—१३ × ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८१ वि०, लिपिकाल—स० १८८३ प्राप्तिस्थान—पं० रामानंद जी द्विवेदी, ग्राम—पीडरी, पोस्ट—कांभा, जिला—आजमगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भागवत विलासिका लिख्यते ॥

॥ सोरठा ॥

मंगलमय गणनाथ बानी मंगलमय सदा ।
नाय जुगल पद माथ करत मंगलाचरण हौं ॥ १ ॥
मंगल विधि गुरुदेव मंगलमय गिरिजा रमन ।
चरण कमल रज सेव अरे रामहित सुमति लगि ॥ २ ॥
फागुन सुदि गुरवार सप्तमी तिथि दुपहर पर ।
कलि जब चारि हजार बरष नवसत पचीस टर ॥
बरष जानि परमान ग्रंथ प्रारंभ कियो तब ॥
सहस येक सत आठ एकासी संवत् रह जब ॥
निमिच नाम स्थान शुभ देस सुमालव विदित वर ।
श्री भागवत बिलासिका ग्रंथ सुभग प्रारंभ कर ॥ ११ ॥

अंत—

॥ चौपाई ॥

चंद्रपुरीते इंद्रपुरी गनि । बोतनोही प्रमान कविवर भनि ॥
जाविधि सूरज गति हौ गाई । चंद्रादिक ग्रह इमि भगुताई ॥४६८॥
ज्योतिष चक्र साथ सब उगही । भ्रमत साथ ताही संग छिपही ॥
रवि रथ जुगल दंड के माही । चँवतीस लाष आठ सब जाही ॥
जोजन विदित जानि एह लीजै । अपर कथा पर नृप चित दीजै ॥

॥ छंद छप्पै ॥

पावन भरत सुखंड छेत्र अर्य्यावर्त्तहि दिय ।
इत काशी उत अवध मध्य दिय जन्म कृपा किय ।
इत सुरसरि सुपुनीत अति त।मज्जन जलपान कर वहु अघी लहे गति ॥
ग्राम सुचित विश्रांम दिय छात्र वंश सिहेल पद ।
अरे "रामहित" पाय यह सिद्धि राम को जस न वद ।
पिता राम गति कियो पुत्र हित विविधि जपन जिन्ह ।
मातु इंद्रजानी सु विप्र सुर पितर पूजि तिन्ह ।
जच्यौ तेरो जना राम करि कृपा तोहि दिय ।
ता बंधन निरमुक्त हेतु नहि कछु उपाय किय ।
अरे मंद पछितायगो जात सुभग अवसर टरो ।
मातु पिता उद्धार हित राम सुजस नहि हिय धरो ॥८२६॥

॥ दोहा ॥

कह्यौ रामहित मतिमरिस लीला श्री भगवान ।
कलि में विदित विशेष जो करणीहार कल्यान ॥८२७॥

इति श्री जनरामहित विरचितायां ॥ नाना शुभविवेक उत्पकारिनी ॥ भागवत विलाशिकायां नाना संवाद परिपूरण समाप्त ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ संवत् १८८३ ॥ मिति जेठ सुदी ऐकादस्यां ॥ वेहस्पति वासरे ॥ लिषित्वा शिवनंनसिंह मोकाम फतेपुर ॥ श्री भागवत ॥......

विषय—भागवत के अंतर्गत खगोल विषय का वर्णन ।

संवत्

फागुन सुदि गुरवार सप्तमी तिथि दुपहर पर ।
कलि जब चारि हजार बरष नव सत पचीस टर ॥

बरव आनि परमान ग्रंथ प्रारंभ कियो तब ।
सहस येक सत आठ एकासी संवत् रह जब ।।
निमिच नाम अस्थान शुभ देस सुमालव विदित वर ।
श्री भागवत विलासिका ग्रंथ सुभग प्रारंभ कर ।।११।।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल संवत् १८८१ तथा लिपिकाल संवत् १८८३ है ।

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना निमिच स्थान (मालवा ग्वालियर) में हुई । रचयिता ने बहुत से ग्रंथों की रचनाएँ की जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार है --

१. नामकेत
२ चानक
३ भक्तमाल
४. भक्त नदिका
५. रत्नद्योत
६ माठिका
७. सामुद्रिक

संख्या ३५६. भगवत गीता, रचयिता--रामानजदास, कागज--देशी, पत्र--४५, आकार--१३$\frac{1}{8}$ × ७$\frac{1}{3}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६५४, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १६३४ वि० प्राप्तिस्थान--पं० अंबिका प्रसाद दूबे स्थान व पोस्ट--कड़ा, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्रीमते रामानुजाय नमः ।।

तत्पादांभोरुहं वंदे येन सर्वमिदं ततं ।
ब्रह्मादिस्तंभपर्यंतं यत्कृपा परिपालितं ।। १ ।।

।। चौपाई ।।

गुण अनंत कल्यान कहाई । सब विभूति निरवधिक सदाई ।।
सब सुख पूर्ण निरंतर योई । दिव्य रूप नित यौवन सोई ।।

।। धृतराष्ट्र उवाच ।।

निज सुत सैन्य अपूर्ण विचारी । पांडु सैन्य पूर्ण मन धारी ।।
संजय मम सुत पांडव योई । धर्मभूमि कुरुक्षेत्र मे सोई ।।
मम सुत पांडव करत यो आही । मोसन कहो भेद सब ताही ।।

अंत--योगेश्वर श्रीकृष्ण यह पार्थ धनुद्धर योइ ।
तहा विभूति विजै सदा निश्चै जानहु सोइ ।।७८।।

इति श्री रामानुज भाष्यानुसार जयराम ।। रामानुजदास विरचित दोहा गीतार्थ अष्टादशोध्यायः ।।१८।। इति श्री भगवद्गीता संपूर्ण ।। सुभमस्तु ।।

विषय--भगवद् गीता का अनुवाद ।

संख्या ३६०. संत विलास रचयिता--रामावतार दास निवासस्थान--दोस्तपुर (अयोध्या) पत्र--७०, आकार--१०$\frac{1}{10}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५४०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६२५ वि०, लिपिकाल--सं० १६२८ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री रामचरण शुक्ल गवर्नमेंट माडल नार्मल स्कूल, इलाहाबाद ।

आदि--श्री परमेस्वराय नमः ।। अथ संत विलास मंगल नमस्कारात्मक वर्ननम् ।।

॥ कवित्त घनाक्षरी ॥

जल थल अनल अकास औ अनिल केते केते सूर चंद कंद तडित अकार है॥
केते सुर असुर नभग जलचर केते केते थलचर चर अचर उधार है॥
पल मे पसारै पल बीच में समटे चहै जैसे नट नागर देख वै खेल प्यार है॥
ऐसे ब्रह्म अलख अखंड चंड मंडल को वदत विचारि दास राम अवतार है॥ १॥

॥ अथअस्थान वर्ननन् ॥

अवध पुरी ते दिसि अगिनि सु बीस कोस दोस्तपुर नाम नीको प्रगट नगर को॥
तहां बंस बंस में सुअंस राम अवतार सत भए प्रगट अनंत के डगर को॥
सम्वत प्रमान बान ५ विति ग्रह चद्रमा मे १६२५ पच सत कवित किहो है मुक्ति घर को॥
छमिते सकल चूक मूक को कवित नाथ जानि जानि नाना भांति गाथ के झगर को॥

इति श्री सत विलास आनंद नेवास राम अवतार दास विरचिते प्रार्थना वर्ननन् नाम प्रथमो प्रकास समाप्त अथ द्वितीय प्रकास सीछा वर्ननन् ॥

अंत--

कटु वाक्य को तेज न ताहि दहै जेनको उर वारि छेमा बरसै॥
नहा लोभ की फास लगै तेनकी जिनके उर तोष अदोष लसै॥
अवतार अनित्त लखै जग जे तेनके उर मे नहि गर्व धसै॥
सवरी तन भीत गइ तिनकी जेनके मन राम अकाम बसै॥१५०॥

इति श्री सत विलास आनंद नेवास राम अवतार दास विरचिते सांति वर्ननम् नाम चतुर्थ प्रकास समाप्त ॥

॥ दोहा ॥

वसु विवि ग्रह ससि को अवद १६१८ सुक्ल प्रतिपदा माघ॥
लिखो ग्रंथ सुष पंथ को तजि दुष दुसह निदाघ॥

विषय--प्रार्थना, शिक्षा, नीति और शांतिरस आदि वर्णन।

रचनाकाल

५ २ ६ १
संवत प्रमान बान विवि ग्रह चंद्र मासे पंचसत कवित किहोहै मुक्ति थर को॥
छमिवो सकल चूक मूक को कवित्त नाथ जानि जानि नाना भांति गाथ के झगर को॥

संख्या ३६१. सुसिद्धान्तोत्तम रामखंड (किष्किंधा, उत्तरकाण्ड), रचयिता--महाराज रुद्रप्रताप सिंह, स्थान--मांडा, कागज--आधुनिक, पत्र--८४१, आकार--१४ × १०$\frac{1}{6}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२३१२७, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--ढेरातर के महाराज, स्थान व पोस्ट--मांडा, जिला--इलाहाबाद।

आदि--श्री गणेशाय नमः॥ श्री महाराज रुद्रप्रताप सिंह--विरचिते--सुसिद्धान्तोत्तम राम खण्डे॥

॥ उत्तर काण्ड ॥

॥ तत्रादौ राज पथ नाम सप्तमोपाख्यानम्॥

॥ छप्पय ॥

स्री गुरु चरन सरोज बरन पल्लवसम रागे।
करन सकल सुख सरन भएउ जनमन अनुरागे॥

धनगन वंपति लोक भूरि संपति रस बागं ।
पुत्र प्रपौत्र प्रसूति भूति गज स्यंदन लागं ॥
दातारं अरथादिफल करतारं गुन पुंजवइ ।
हरतारं सरबापदं भरतारं हरिकुंजवइ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गननायक वारन बदन कारन मुद संसार ।
प्रनमउं संकरनंदनहिं जड नर्दिन सुकुमार ॥ १ ॥

॥ चोपई ॥

रजे प्रजा रघुपति पति पाई । रमा बसी ग्रिह् किनहि बोलाई ॥
बीज एक लव ता बहु बारा । कर छडास तेगहु न भुमारा ॥
प्रजा प्रसन्न परम पति पाई । घन लखि जिमि बरहा समुदाई ॥

अंत--

॥ दोहा ॥

कंपित जत फल भूरि द्रुम जनु प्रचंड लहि बात ।
कोउ उत्पाटित निर्पति काउ तजत सिखरि को नात ॥२८८४॥

:o: :o: :o:

सुमिरि ह्रिदय रघुनाथ हनूमान अजनि तनय ।
जात भए मन माथ लका राच्छस घानि किल ॥३५१॥
राम मांद्र घनस्याम तनमिय सउदामिनि जानि ।
चातक रुद्र प्रताप इव चाहत प्रेम सुपानि ॥२८८५॥

इति श्री सुमिद्धान्तोत्तमे राम खडे श्री महाराज रुद्रप्रताप सिंह विरचिते किष्किधा पथे मनसा हनूमल्लंका गमनं नामाष्टादशाधिक शततमो विश्रामः समाप्तः ॥११८॥

॥ इति किष्किधा पथः समाप्तः ॥

॥ इति किष्किधा कांडः ॥

विषय--श्री रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत रचना विशाल है । इसकी प्रति खडित है । केवल किष्किधा कांड और उत्तर काड के अंश बचे हैं । विषय अनुक्रमणिका की सूची से पता चलता है कि बालकाड से उत्तर काड तक के सात काड समग्र थे । प्रत्येक काड मे निम्नलिखित प्रकार से पृष्ठ थे :--

१. बालकाड (मिथिलापथ)--४५६ पृष्ठ
२. अयोध्याकाड (कोशलपथ)--३६३ पृष्ठ
३. अरण्यकाड (अटवीपथ)--२३२ पृष्ठ
४. किष्किधाकाड (किष्किधापथ)--१३१६ पृष्ठ
५ सुदरकाड (दूतपथ)--३०८ पृष्ठ
६. लकाकाड (युद्ध पथ)--५३२ पृष्ठ
७. उत्तरकाड (राजपथ)--४६३ पृष्ठ

संख्या ३६२. ज्ञानोपदेश (?), रचयिता--रूप कागज--देशी, पत्र--६, आकार--$६\frac{३}{४} \times ४\frac{२}{४}$ इच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--८८, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--श्री महंत ईश्वरशरण भारती, ग्राम--बाँसी, पोस्ट--भाटपार, जिला--गोरखपुर) ।

आदि—................कहो मन में।
करम धरम काल सबै लगं "रूप" वाकों कहाँ कहाँ कहा कहत कहत बीते जनमें।
कहा बूझं कौन गुर ज्ञान परयो कान नाहि एक सबही मे सब एक तेरे तन मे।
किशन कहो किशन कहो एरे मन किशन राम काहू ते न काम हरषत कहा धन में।। ६।।

।। दोहा ।।
षोजि षोजि सबही थक्यो षबरि न पायो पीव।
षर षालो ते हूदै के मृथा जगत मे जीव।। ७।।

।। सोरठा ।।
षालीक तेरा षूब षबरि लेत सब षलक की।
षलक पार जल डूब षोग्रत षाली जन्म निज।। ८।।

।। अरील ।।
षिरफति षात षुआर न गुरकों जानते।
षुलो न हूदं कपाट न वेदहि मानते।
षट चक्रहि नहि षोजि आपु तन देषते।
परीहा षटक अटक नहि जातन कुल तेहि लेषते।। ६।।

:o: :o: :o:

अंत—

।। कवित्त ।।
झांकन झरोखें नैन हिय में विचारो कौन रसना स्रवन नाक रसन गहत को।
झांइ दरपन "रूप" सांइ सब घट माहि झमकत झलक जगजाग्रत दहत को।
झींक सम झोरि झारि झिकी सब डारि देहै ताको जग काल ऐसो दुषको सहत को।
झारि रज राज सविचारी कौन झिलिमिली सों झूठो सांचो दुषदत दोनों को सहत को।।३४।।

।। दोहा ।।
टेर टार हरि भजन मे करो न अपनी दाव।
टेढो चाल चले सुनो होत अंत पछताव।।

।। सोरठा ।।
टूटै भौ को फांस राम राम सुमिरन करत।
टहल करो गत आस अनुगत चारे फल सदा।।

।। अरिल ।।
टेरि टेरि बहुबार कहा नहि मानसि।
टोम टाम जग देषि टेढ पगु डारसि।।

।। परिहा ।।
टनक बात परिहरहु साधु गुर देषते।।
टोक टाक नहि करिय पंथ बहु पेषते।।

।। कवि ।।
टूक टूक हूजे जब राम के भजन बीच टूटे भौ फांस अनाग्रास तेरे तन को।
टेगी टेक टंड सनहरि के भजन..............................

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रथम पत्र और ७वी संख्या के पश्चात् के पत्रे खडित हैं।

संख्या २६३. रूपमंजरी, रचयिता--रूप, कागज--देशी, पृष्ठ--१२३, आकार--६ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--७६१, पूर्ण, रूप--श्रेष्ठ, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--१६०८, लिपिकाल--संवत् १६२८, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभा, कांकरोली, हि० बं० सं० २६, पु० सं० ३ ।

आदि--।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ रूपमंजरी ग्रंथ लिख्यते "राग भैरू' 'गणपति मोपं कृपाकरी ।। बुधिदाता लंबोदर ।।

कहिये सुरनर मुनिहिँ ध्यान धरी ।।
गज आनन जनम मुददाता रिद्धि सिद्धि निधि द्वार खरी ।
रूप निरखि गौरी नंदन को होत सदा आनंद घरी ।। १ ।।

मध्य--मन हरि लीनौ नंद किशोर ।
चितवन की नित चाह चखन कूँ जैसे चंद चकोर ।।
नटवर वेष विशेष छबीलौ सीस मुकट वर जोर ।
रूप अनूप पियारे ऊपर वारो काम किरोर ।।१६१।।

अंत-- ।। दोहा ।।
रूप मंजरी नाम यह रच्यौ ग्रंथ रस रीति ।
श्री राधा गोविंद पद दायक मंजुल प्रीति ।।३२६।।
संवत विक्रम नृपति कौ वसु व्योमाकजु रूप ।
पौस मास सितपक्ष तिथि षटी सूर अनूप ।।३३०।।

इति श्री रूप मंजरी संपूर्णम् ।

विषय--भक्ति-विषयक पद संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य--सुंदर लिपि है । राग के नाम लाल स्याही से लिखे हैं तथा चारों तरफ हाशिया लाल, पीली और काली स्याही से खिंचे हुए हैं ।

संख्या ३६४. गिरवरसमौ, रचयिता--रूपराम, कागज--देशी, पत्र--६, आकार--७½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--६० पूर्ण, रूप--सुंदर, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः । अथ गिरवर समौ लिख्यते ।

बरस सात कै स्याम सिरोमनि ।। षेलत घर घर डोलैं ।।
माथे मुकट पीत पट कटि मैं ।। पाय पैंजनी बोलैं ।।
लोचन नील कमल से सोहैं मोहे अलि अवली सी ।।
जो बृज बधू निहारत तिनकूँ सो रहि जात छली सी ।।
कानन लसत भूमिका प्रभु कै नाक बुलाक सुमोती ।।
मनो सुधानिधि बदन जात प्रभु राछोक राख्यौ गोती ।।
चारि कपोल गोल गुदकारे और सुंदर सी ठोड़ी ।।
परत धाय कै होड़ा होड़ी सबको दिठि निगोड़ी ।।

मध्य--कृष्ण जाय बैठे गिरि ऊपर नंद संग बृजबासी ।।
पूजन लगे मेरु संग स्यामहै गंध फूल सुषरासी ।।
जब मोहन जू सगरे बृज कौ धृतपक भोग लगायौ ।।
आनि और ज्यौं बृजरानी कौ अपनौ वचन सुनायौ ।।
सब बृजवासी रहे चकृत ह्वै बड़ौ अचंबो मान्यो ।।

अंत---रूप राम आया मलारकौगीर वरस मौ सुनायौ ।।
झूठन ही यह साषि भागवत हौ आप व्यास मुष गायौ ।।
ताकुल मै वदनेस नंद है तुम. सुरपति पद पायौ ।।
कलि के मध्य स्याम जू मै फिरि वही बनाव बनायौ ।।

ईतौ श्री गिरवरसमौ संपूर्ण ।। मीती ववार सुदी ४ ।। श्री विहारी जी संवत् १८१७ ।।

विषय---इसमे श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला वर्णित है ।

संख्या ३६५. विदग्धमाधव, रचयिता---रूपसनातन, स्थान---वृंदावन, कागज---देशी, पृष्ठ---१५, आकार---६।। × १०।। इन्च, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---५६, परिमाण (अनुष्टुप्)---५७७, अपूर्ण, रूप---साधारण, गद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० ८७, पु० स० १ ।

आदि---।। श्री गणेशाय नमः ।। ग्रंथ विदग्ध माधव रूप सनातन कृत ।। श्री वृंदावन नित्य विहार जानि कें उजेनि नगरी को बास छाडि करि संदीपन रिषीश्वर की माता ताको नाम पूर्णमासी कहावें ।। १ ।। तिन इहां आइ वृंदावन बास कीयो ।

अरु पोतो एक संगले आई ता पोता को नाम मधु मंगल कहावें । सो मधुमंगल ग्वालन में गाइ चरावें ।। २ ।। श्री कृष्ण को बार बार हँसावें विनोद करे तातें अति प्रिय लागें । अरु नंद जसोदा जी मधु मंगल सों अति मोह करें ।।३।।

मध्य---पृ० ६

इति श्री प्रथम बिहार बसंत नाम संपूर्ण समाप्तं ।। १ ।। अथ प्रकार श्री राधामाधव अंकित कुंज मंदिर में नित्य विहार करत हें । जब सुरत स्नेह समाप्त भयो तब श्री राधा जू श्री कृष्ण जू सों शृंगार करण कहन लागी । अहो तुमरेरो शृंगार दूरि कीयो है । मेरी सखीनि को कियो सो महवर पाइन कौं आंखिनि को काजर केश नवफूल बनावहु मेरी सखी देखेंगीतो हसेंगी यह जब कही तब हरि श्रीकृष्ण राते फूलन को रंग निचोय हाथ मे ले करि श्री राधाजू के पाइन महावर देन लागें । इतने उपर राति दोन्यौ सखी आइ गई ।

अंत---इतनी बात सुनी तब श्री राधाजू लज्जा जुक्त ह्वै अन्तः करण कौं आनंद दुराइबे कौं ललिता सौं रिसाइ करि कहन लागी री ललिता तू देखति है ये हठीले नंद लाल मोसों कहा हठ लाग्यो है । मोकों जहां पावे तहाँ रोकि आगे ठाढे रहै अरु देखि सबतु छांडि मोसौं आंनि अरें तुम इनहि समुझावहु ज्यौं मोहि छाडि न्यारो होहि तब ललिता जी श्रीकृष्ण जी........ ।

विषय---गौडीय सप्रदाय के सिद्धांतानुसार राधा कृष्ण की केलि, शृंगार आदि का वर्णन ।

संख्या ३६६. कबीर रैदास सवाद, रचयिता---रैदास (?), कागज---देशी, पत्र---६, आकार---६१/१० × ४१/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१०, परिमाण (अनुष्टुप्)---५६, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---प० महादेव प्रसाद चतुर्वेदी, ग्राम--महेगवा, पो०--मरदह, जिला--गाजीपुर ।

आदि---श्री रामाय नमः ।।

कुबधि तणा दल बादल छुट्या, सबद तणा प्रकासा ।
ज्ञान ध्यान हिरदे करि देषो सत भाषै रैदासा ।
कविर कहरे ब्रह्म ज्ञान सुन ब्रह्म तंत सुन हिरदा सुध नहि होई ।
एक ब्रह्म सकल घट व्यापिक अवर दुजा नहि कोई ।

रैदास कहरे ब्रह्मं ब्रह्म कहत हो स्वामी बुजि प्रकत कहाँ जाई ।
बुजि प्रकत्य के तिन गुनह साधन दियो बताई ।
कबिर कहो जिनकुं साध कहत हो स्वामी सोई काल बस भूल्या ।
ब्रह्म ज्ञान ध्यान विना त्रिगुण नदि में बुड्या ।
रैदास कह त्रिगुण विना कछु भेद क्यु पायिये जो कोपी गुन कुंधाव ।
सहज सुभाव वंकुंठ कितरनी भक्त बीज पद पाव ।

अंत--गुर भुल तो सिष समझान सिष भुल गुर तारें ।
कह रैदास सुनो गुर भायी एक एक के सारे ।
ब्रह्म छाड़ियो कर्म छाड़ियो छाडियो चतुरा बानी ।
आत्म राम करो पंचाना कहत कबिर विचारी ।
निर्गुणह सो पिता हमारा सरगुण हम हितारी ।
काकूं नदुं क्यकुं बदुं दोउ पला भारी ।
धन्य कबिर धन्य रैदासा गाव से सोयी ।
गरुड़ चढि गोपाल पधारे सुध भक्त मेरे दोऊ ।

।। येता कबिर रैदास क संवादा संपुर्ण समस्त ।।

विषय--कबीर रैदास सवाद । निर्गुण और सगुण रूप पर वाद विवाद ।

संख्या ३६७. पद गुटका, सग्रहकर्ता--लक्ष्मीदास, कागज--देशी, पत्र--१२, आकार--५ × ३ $\frac{१}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--७६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १६०५ वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि--

पोथी तूं बोलि पांडे साजन हमारा कित है ।। टे० ।।
कोई सही संदेशा ल्यावं मोहि मीठी बात सुनावं ।
मेरा साजन कब घरि उनही सों मेरा चित है ।। १ ।।
सुनि सुनि सजन की बतियां मेरे परी कलेजे घतियां ।
मोहि नींद न आवं सारी रतियां मेरी यही निगोड़ी गति है ।। २ ।।
दादर मोर कोकलं बोलं चपला चहुंदिशि डोलं ।
"बषना" कौं दर्शन दीजं मेरा येहि संदेशा नित्य है ।। ३ ।। १ ।।

अंत--लक्ष्मीदास गुरुदेव सौ सुखी भये सब कोइ ।
बंध्या के बधन कटं मुक्ति सहज ही होइ ।। १ ।।
गुटका पढ़ जो चित्त दे ताकं सब सुख होइ ।
लक्ष्मीदास हरिकौ मिलं जामे मरे न कोइ ।। २ ।।
जे आया जगत मैं करि अपना कल्यान ।
संत समागम कीजिए नित्य प्रति भजि भगवान ।। ३ ।।
संतन की सेवा करं हरि सुमर चित लाइ ।
"लक्ष्मीनाथ" ताकौ मिलं बंकुंठा को जाइ ।। ४ ।।

।। श्री रामचंद्राय नमः श्री ।।

विषय--भक्ति विषयक पदों का सग्रह । संग्रह में निम्नलिखित संतों के पद है :--
१. बखना जी, २. दादू जी, ३. सुंदरदास, ४. सूरदास और ५ लक्ष्मीदास ।
प्रस्तुत पद गुटका 'रामरक्षा कवच' के साथ एक हस्तलेख मे है ।

संख्या ३६८. बारहमासा, रचयिता—लखनसेनि, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७ ६/१० × ४ १/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, अपूर्ण, खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६५ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामरुचि पांडेय, बोदरी, पो०—लेवरुआ, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गनेशायनमह

।। कथा बरहमाश कै ।।

चढ़े अशाढ शुखी के माशा जेहि बीधी देइ शो करै बीलाशा
दुखी सुखी ग्रीह आप न आउ गऐ परदेश अभागन छाउ
आएन्ह मदिल औगुनकारी रचि रचि छाऐ नवरह कुआरी
चीरई चुनु चुन खोता लावा मुर्ख कंत अजहू नहि आवा
का उशरखेत बीज छितराऐ का निर्धन घर पांहुन आऐ
काक पूज के गऐ विदेशा कानहि राशे कहब शदेशा
करहि कोलाहल चकई हेशा ...भवरा करहि बेलाशा
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

चीत्र बीचीत्र झरोखा तांहा तहां बहै बताश :
कान्ह भवर भै बेलशहु : चंद्र बदन के पाश :
भादौ चढे मांश अवनाहा बीरह शमुद्र बुड़त हौं नाहा
गरले बीरह शमुद्र भा मोही बूड़ि मरौ पीय पातख तोही
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

आपन जाहु कान्ह घर लेहुन जीयरा राखी :
त्रीया न जीअै पुरुख बीना होहु बीधाता शाखि :
:o: :o: :o:

अंत—फागुन शुन शखी दुरजन माशा
मैं दगधी जग करै बेलाशा
परके पुरुख पुरुख नहि होइ
जब लगी पुरुख शग नही तोही
नीरवै जगति जो कान्ह अहीरा
ढरै नऐन भीजै मोरि चीरा
गोपिन शो तब कहा बुझाई
शुख शनेह रैनी रीतु आई
शोरह शहश गोपी करै अनंदा
शभै शखी मह पूरन चंदा
दिन दिन चांह छीन मै रहिआ
घीर बीवोग केतिक दुख शहिआ

।। दोहा ।।

लछन केरि शकती है रामकेर गुनवान
हनीवंत केरी शजीवनी होहु शघाती कान्ह

॥ चौपाई ॥

चैतिमाशा निकशे नौ लाशा
पुहु वावले वहै वताशा . . .
:o: :o: :o:

विषय——वियोगिनी नायिका का बारहमासा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ अपूर्ण है । केवल चार पत्ते उपलब्ध है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल स० १८६५ वि० है ।

संख्या ३६६क. लक्ष्मी चरित, रचयिता——लखनसेनि (?), कागज——देशी, पत्र——१४, आकार——७ × ६$\frac{६}{१\text{६}}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——११, परिमाण (अनुष्टुप्)——१२५, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सं० १६३४, प्राप्तिस्थान——काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता——पं० स्वामीनाथ दुबे, ग्राम–डुबौली, पोस्ट–खुखुंद, जिला–गोरखपुर ।)

आदि——श्री कृशनाए नमः ॥ श्री गोपाल चरित्र ॥

ईस पुराण मे लछमी वीष्ण का सवाद नेती अनेती का प्रमाण वीचार लीखा है :

वंदौ आदी जोती मै तोही । सुमीरत ग्यान बुद्धी दे मोही ॥
व्यासदेव सुखदेव को वीने करो कर जोरी ।
ग्यान देव प्रवीन हो तासे वीनती मोर ॥

श्री गणेशाय नमः श्री पोथी लक्षीमी चरीत्र

॥ चौपाई ॥

कहै नारायण बाल कन्हाई । सुनु लक्षमी मै कहो बुझाई ॥
मै तुमसो कछू पुछो आना । आपन अर्थ कहो परीमाना ॥
काहा रहो तुम केहीन पाहां । कस वीस्तार करो जग माहा ॥
सत्त बात आपन सभ कहहु । केही के गृह तुम अति सूख लहहु ॥
सुनी लक्षीमी त्व मन वीहमानी । कहो वात तोही सार्ग पानी ॥
जो मोही पूर्व तपेस्या साधी । ताके गृह मै रहौ अवाधी ॥
जुग जुग मोही आन त्व वासा । तुम दयाल चीत पुरवहू आसा ॥
तुम नाराएन सामी गोसाई । सभे ततु जानो रघुराई ॥

अंत——मुल मंत्र सभ जो वीधी हीना । सो उचारी नाम तुम्ह लीन्हा ॥
रा कृश्न कह लक्षीमी वानी । सुमीरो दीन प्रीती सारंग पानी ॥

॥ दोहा ॥

लक्षीमी चरीत्र नरायण जो सो को मेटेपार ।
कबीता सभ जग कीन्हा लखन सेनी प्रीतीहार ॥
लछीमी कह नेरायण सुनो जगत बेवहार ।
तेही कारन नर दुष सुष भुंजत हे संसार ॥
कर्म भोग के कारण होए दलीद्र रूप ।
धरम कर्म से जो रहे सो धनवंत भुप ॥

इति श्री लछीमी चरित्र कथा संपूर्ण सुभ सम्त १६३४ समे नाम कुआर मासे सुकल पक्षे सतमी ॥ ४ ॥ दः लाल जीव लाल, ग्राम राउतपार खास "पंडीत जनसो वीनती मोर टुटल अक्षर पढव जोरी ॥

विषय--श्रीलक्ष्मी जी का चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत हस्तलेख मे दो ग्रंथ लिपिवद्ध है । एक तो यही लक्ष्मी चरित्र और दूसरा 'गोपाल चरित्र' या 'विष्णु पुराण' ।

संख्या ३६९ख. लक्ष्मी चरित्र, रचयिता--लखनसेनि, कागज--आधुनिक, पत्र--१०, आकार--७ $\frac{1}{1}\frac{3}{6}$ × ६ $\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--८७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--कैथी, लिपिकाल--सं० १९३५ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० छाटकधर जी द्विवेदी, ग्राम--अढनी, पोस्ट--सरायममरेज, जिला--इलाहाबाद ।

आदि-- ॥ चौपाई ॥

कहे नराएन बाल कन्हाई । सुनी लछमी मे कहों बुझाई ॥
मे तोही सो कछु पूछो ग्याना । अपनों अंत कहो परवाना ॥
कहां रहो तुम इह वाधी माहा । ...तार करो नरनाहा ॥
सत वचन आपन सव कहहू । केहां के ओही तुम परीहरहु ॥
सुनी लक्ष्मी चीत मो वीहमानी । कहा वचन सुनु सारंगपानी ॥
जो मै पुरवील तपेसा साधी । तौ मैं आए चरन तुव आधी ॥
जुग जुग मोही चरन तुम्र आसा । तोहरे दम्रा चीत पुरवो आसा ॥
लछ करनी प्रभु राखेउ नाऊं । सेवा करों रहो तुम्र ठाऊं ॥
मैं कोपीन तुम ठाकुर मोरी । चरन कमल सेवो कर जोरी ॥

अंत--**लछमी नराएन सुमीरो नीती । मनसा वाच मन के थीती ॥**
मुल जामी जहां वीचो दीन्हा । सो उच्चार नाम तुम लीन्हा ॥
श्री कृस्न लक्ष्मी कहे वानी । सो हीरदे अवीलाष हो जानी ॥

॥ दोहा ॥

लछमी नराएन के चरीत्र सो को मेटे पार ।
कवीता सव जग कीन्हा लषन सेन प्रतीपार ॥

इती श्री श्री पोथी लछमी चरीत्र समापत पत्री मो देषा सो लोषा म्म दोष न दीम्रते ॥ पंडीत जन सो वीनती मोरी टुटल अछर लेव सव जोरी ॥ दसषत पैरु रामखानी तइआर हुआ ता०: १५ आसीन रोज गुरुवार १२८५ साल समत १९३५ माह बदी ।

विषय--लक्ष्मी चरित्र वर्णन किया गया है ।

संख्या ३७०. हरिचरित्र (विराटपर्व), रचयिता--लखनसेनि, कागज--देशी, पत्र--६४, आकार--६ $\frac{1}{4}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१७, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३६८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--१४८१ वि०, लिपिकाल--सं० १८७, वि०, प्राप्तिस्थान--ठाकुर शिवबरन सिंह रघुनाथ सिंह, ग्राम--समोगरा, पोस्ट--नैनी, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--**राधा क्रिश्न श्री गनेसाय नमः श्री दुर्गायानमः श्री वैराठ पर्व भाष कवि लषनसेन ॥**

॥ दोहा ॥

जै जै संकर नंदन गउरी गनपतिराइ ।
वीविधी भाती सब अछर मोके देहु बताइ ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

बावसाही जे "बीराहिमसाही" । राज करहि महिमंडल माही ॥
आपुन महाबली पुहमी धावै । जउनपुर मह छत्र चलावै ॥
संवत चौवह सइ एकासी । लषनसेनी कवि कथा प्रगासी ॥
गुनी जन सब अपीर भेउ । बंजलवास राइ पह गएउ ॥

॥ दोहा ॥

बंजलवास मन हरषीत ताही मरावै जीव ।
लषनसेनी कवि भाषा कथा वैरठ जे कीव ॥ २ ॥

लषन सेनी कवि कथा प्रगासी । मग्रामोह त्रीभुवन वासी ॥
लषनसेनी कवि विश्न औ राधा । मग्रा मोह त्रीभुग्रन बांधा ॥
सब जीवन्ह मह तोहार निवास । जैसे रहै फल मह वास ॥
उतपति प्रलै जाहि के हाथा । दुष सुष लीषा सबन के माथा ॥
एक तंतु होइ सबै सीधावै । धारि हीं रिवनी वास सुष पावै ॥

॥ दोहा ॥

जौ परमेसरहि धावै प्रम समती नर पाउ ।
बनोवास पडवन कर तुव प्रसाद गुन गाउ ॥ ३ ॥

जैसे मेरवउ अछर कै पाती । सरवार राजा कइ जाती ॥
हंसन पति होइ छन छन वाका । मह वेलाभ भए नीह लंका ॥
अछर सुनत सुन्य सुधी काढा । अर्ग्रीत बोल बचन सो वाढा ॥

॥ दोहा ॥

मर्गहि थहि नगसरी पंडीत रहै सीरधुनी ।
छलै वंल सब होवै लषनसेनी कवि गुनी ॥ ४ ॥

डोलेस्वर अनुकाराम । तेजरासी कुल राजा धंम ॥
तासु तनै जे लषन कुमार । दुरजन द्रवन सीघ करीवार ॥

॥ दोहा ॥

कंठै बसै सुरसती हीरबै बसहि गनेस ।
लषन सेनी तहवे वसे धन्य धन्य सो देस ॥ ५ ॥

लषनसेनी कवि जनमे आइ । बड़ बड़ कविता गए लजाइ ॥
गए धर्म औ सतजुग राजा । देवीपुर गए बली के काजा ॥
गए कीती धनसेनी नरेसा । भोजपुर गए देव गनेसा ॥
जैदेव चल सर्ग की वाटा । औ गए घघ सुरपति भाटा ॥
नगर नरिंद्र जो गए उनारी । वीद्यापति कइ गइ लचारी ॥
ग्रंवित कुंड नग्र जे थहाइ । ग्रीधिनी कुंड नग्र अब गहइ ॥
तेन्ह पापीन्ह कह षोज उठाऊ । जे नहि लीन जन्म भरि नाऊ ॥

॥ दोहा ॥

तेहि पापी तह राषीए जेइ हरिनाम न लीन ।
अछर तीनीसा जीव करि भ्रम होइ दीन दीन्ह ॥

जन परिजन छडि सो देसा । जहव उपमवन बसै नरेसा ॥
भोजु अहंथ जे लागे काना । काज छाडि जे अकार्थ जाना ॥

कपटी लोग सब मे धरमाधी । खोट बहुत नहि चीन्हे बीयाधी ॥
कुंजल बांधे भुषन भरई । ग्रादर सो घर सेइ चराइ ॥
चंदन काटि करील जे लावा । ग्रांब काटि कइ बबुर बोवावा ॥
कोकिल हंस मंजारही मारी । बहुती जतन कागहि प्रतिपारी ॥

॥ दोहा ॥

सारीव पष उपरिव पालै तमचुर जगसंसार ।
लषनसेनी ताहने इसे काढो जो षाही उधारि ॥

॥ चौपाई ॥

चौसा नगर जगत परमोधा । रामराज तह गोरष सीधा ॥
जं जं कहि जवा बाग्रह चढाइ । कांपै सेज धरनी लरषरइ ॥
प्रोथीमी बड नंदन नरनाहा । दुसर रघुपति उपजे ताहा ॥
चारी षानी चौरासी भीरा । मारेउ सबै गंगा के तीरा ॥
जेकर पुत्र जे पुरनमाला । ग्ररिके हीरदै महाबल साला ॥

॥ दोहा ॥

साठी गाइ बांधी चरु पुरनमल के टाट ।
कौतुक कोन सुरम कवी बीबीधी कथा वेराट ॥

मध्य--- ॥ चौपाई ॥

भीषम पीता चढे गंगेऊ । तेन्ह सौ जुधी न जीतइ कोऊ ॥
चौसठि कोटि रथ जोती सवारा । सब रथ बांधे सेत चवारा ॥
टाटर पाषर सेत सनाहा । सेत तुरगम जोतेउ ताहा ॥
सेत चवर बांधे सव छत्रन्ह ग्राइ । छीर समुद्र जनु लहरी धधाइ ॥

॥ दोहा ॥

भीषम मनसा ग्रस भाष त्रीनी की बताइ ग्रागी ।
ग्रति बड कटक बटोरेन्हीं पाचौ पंडव लागी ॥

:o: :o: :o:

ग्रंत--- ॥ चौपाइ ॥

बामन भाट जो केही ग्रसीसा । तोह के कोपा कौन जगदीसा ॥
जं जं सबद भए सब ठाउ । कुंतहि मिलेउ दुदिरठील राउ ॥
पुत्रन पुनी पुनी मीली कुंती मा । भीमहि द्रोपदिह सराहति ध्रमा ॥

॥ दोहा ॥

लषनसेनि कवि भाषा पछीली कथा सिरानी ।
कहत सुनत सुष पावै पावहि पद न्रीवानी ॥
जो बैराठ पर्ब कह सुनहि कहै सामानी ।
सब परम मुकुती भलता कह प्रसनी होहि भगवान ॥

इति श्री हरि चरित्रे कथा बैराठ पर्व बरननोनाम संपुरन ॥ १ ॥ लीषा बैराट पर्व समपुरन जो प्राती देषा सो लीषा मम दोस न देइते । पंडीत जन के बीनती मोरी ग्राषर मात्रा टुट बांधे हा जोरी ॥ लेषक कै तकसीर माफ करब मीती फलगुन सुदी ५ संवत १८७७ कै साल मा लीषा ॥

विषय—महाभारत के विराट् पर्व की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत चौवह सइ एकासी । लषनसेनी कवि कथा प्रगसी ॥

संख्या ३७१. श्रीकृष्ण चरित्र, रचयिता—लछिमन दास, कागज—देशी, पत्र—१६८, आकार—६५/६ × ४१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६५ वि०, लिपिकाल—सं० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शरस्वती जू नमः ॥ श्री परम गुरभे नमः ॥ अथ श्री हीरा के जन लछिमन दास कृत श्री कृश्न चरित्र ॥ छंद ॥ १

वंदना कर जोर गनपति करत हौ तुम्हरी सही ।
बुध्धि के अधिकार अति मरजादना वेदन कही ॥ १ ॥
सुरसुती को सुमिर कै फिरि मागवे जाई चही ।
कठ बैठी आनि कै कछू कृश्न गुण चाहत कही ॥ २ ॥
पर्म पूरे भागतै गुर मिलै "हीरालाल" जू ।
"लछन" चहौ परताप उनके जनम लीला गाइ जू ॥ ३ ॥
नंद जू कै भयो बालक जान अवगति ना लषी ।
जबहित उर परम आनद सुनो सो तुम सब सषी ॥ ४ ॥
येक दिन ग्रह आपनै मे सहजही पलका परी ।
आनि कै जह जानि कोनै सांवरी मूरति धरी ॥ ५ ॥
मुकट मोरन पंष को अति सीस पै सुकुमार री ।
तिलक केसर चारु सोभा दियै देषौ भाल री ॥ ६ ॥
होति भृकुटी कुटिल जबही मुरकि कै हसि जात है ।
धरी अधरन मोहि दीसे बीन बेरिन ब्राजि है ॥ ७ ॥
अजौ अंजन द्रगन मै भरि सैन नैननि की चलै ।
कहौ कहां सो मन सषी सुन श्रवन मे मुक्ती हलै ॥ ८ ॥

अंत—सुनै जो मनु लाइ चितु दै कथा कृश्न चरित्र की ।
पायहै पद अभय निर्मल हांनि है सब की ॥५२॥
हीरालाल प्रताप ही तै जथामति लछमन कही ।
सोध सुर्जन लीजियौ तुम दोष ना दीजौ सही ॥
आठद समद (? सवत्) बीतै बरष पैसठ के विषै ।
मास सावनि सुदी चउदस वार तौ सुक्रै लिषै ॥ ५ ३ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण चरित्र लीला कथा पांचर अध्याउ ।
"लछनदास" प्रगटी जगत तिनिके नाम बताउ ॥५४॥
जनम बाल वृध्धै कहौ लछन दास संबोध ।
षलमोचन भ्रमहरन पंडौ मिलनौ सोध ॥५५॥
कृश्न चरित्र की कथा यह समुझौ येक विचार ।
लछन पपीलका सिंध की किहि विधि पावै पार ॥५६॥

इति श्री हीरालाल के जन लछमन दास विरंचितं भाषा कृश्न चरित्र बर्नमो नाम मिलाप लीला बर्नन नवमो अध्याउ ॥ ९ ॥ संपूरन सुभंमस्तु समाप्तम् ॥ जथा प्रति लिषी मम दोसु न दीयते ॥ संवत् १८७९ अघन मासे कृस्न पछे तिथौ ॥ ६ ॥ बुध वासरे को प्रति उतरी ॥ लिषतं लाला चिंता काइस्थ मु० हीरापुर पोथी लाला किसोरचंद के निमित्त लिषी कसबा जालौन के बासिंदा साधन के सेवक ॥

निसि दिन हिरदै में बसै राम राम गुर मंत्र ।
रघुनाथ दास गरीब की तोहि लाज भगवंत ॥ १ ॥
लछंन दास विनती दोऊ कर जोर ।
अछिर घटै सम्हारिबी आप उक्त तै जोर ॥ २ ॥
रघुनाथ परधांन है जिनिकै हरिनाम ।
जो कोऊ बांचै सुनै ताको है परनाम ॥ ३ ॥
लछन दास विनती करौ रघुनाथ दास अब आइ ।
हमको अपनौ जन जानि कै लीजौ बात समाइ ॥ ४ ॥

श्री राधाकृश्न सदा सहाइ साधन परः ।

विषय--श्री कृष्ण चरित्र वर्णन ।

१. पहला अध्याय	जन्म लीला वर्णन	पत्र १ से २७ पत्र ।
२. दूसरा अध्याय	बाललीला वर्णन	पत्र २८ से ८६ पत्र ।
४. तीसरा अध्याय	युद्ध लीला	पत्र ८६ से १२० पत्र ।
४. चौथा अध्याय	सबोधन लीला	पत्र १०९ से १२३ पत्र ।
५. पाँचवाँ अध्याय	खलमोचन लीला	पत्र १२३ से १३३ पत्र ।
६. छठा अध्याय	प्रणलीला (रुक्मिणी व्याह)	पत्र १३३ से १४७ पत्र ।
७. सातवाँ अध्याय	भ्रमहरन लीला	पत्र १४७ से १६३ पत्र ।
८. आठवाँ अध्याय	पांडव लीला	पत्र १६४ से १८० पत्र ।
९. नवाँ अध्याय	मिलाप लीला (सुदामा चरित्र)	पत्र १८० से १९९ पत्र ।

रचनाकाल

आठव समद बीते बरष पैंसठ के विषै ।
मास सांवनि सुदी चउदस वार तौ सुक्रै लिषै ॥५३॥

संख्या ३७२. राजपोरिया लीला, रचयिता--ललित किशोरी, कागज--देशी, पृष्ठ--१, आकार--८५ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१५०, परिमाण (अनुष्टुप्)--७५, अपूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ७४, पु० सं० १३ ।

आदि--॥ श्री राधा रमण जी ॥ राज पौरीया लीला ॥

स० फूले अलि अरविंदरी आली, लज्जित वधू कुमोदिन निरषि प्राचि दिशि लाली । वलि वलि वेगि बिसाहि लीजिये टुक पधारि राधा बनमाली । ललित किशोरी गगन जौहरी लायो थक माणिक मणि थाली ॥ १ ॥

मध्य--प्रि० आज मोरी कुलकानि गई, हाय री हाय उपाय न कोऊ कौन सी करनी उदै भई । का मुख लै घर जाऊँ ग्राम की का कहि हैं मुहिं देखि दई, ललित किशोरी प्राण संघातिन सबहिन मिलि मुहिं दगा दई ॥२४॥

॥ भैरवी बड़ी ॥

प्रि० भयो न मेरो आज लौ सपनिहु कहू चबाय ।
व्रजनारी बुलियान अवर्कसिक कहिहो हाय ॥२६॥
जग जीवन को काम का खोय धोय कुल कान ।
धिक धिक ऐसे जन्म जो होय सभा अपिमान ॥२७॥

अंत--राग षट् "आरती"

समा० अद्भुत कौतुक आज भयो री ।
विलसत मेलि कपोल मुदित मन सेजसिंधु महं चंद चकोरी ।
मृदु मुसक्यान पान अधरामृत छलकत छबी साँवरी गोरी ।
ललित किशोरी उदं अनूपम कुंज गगन रवि शसि की जोरी ॥५३॥

विषय--कृष्ण की राजपौरिया लीला का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य--इसमें अलग अलग कागज चिपका कर एक लंबा पत्र बना दिया है जिसके एक ही ओर लिखा गया है ।

संख्या ३७३क. अंगद पैज, रचयिता--कवि लाल, कागज--देशी, पत्र--३, आकार--९ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--५४, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--पं० सिद्ध नारायण जी, ग्राम-इट्री, पोस्ट-सिरसा, जिला-इलाहाबाद) ।

आदि--........................

...ऐसो बालि तौ न मारो गाल काहे के लबार जतौ करत लबारी है ।
जतीन......सकल वोहौ मेरे ढिग आइकै करत विष्टारी है ।
जानि कै कुपंथी इन्है पितै......उदाश संग बंधुवर नारी है ।
जातधान सारी सभा बाजत है तारी एकता रुक......बड़े धनुधारी है ।

:o: :o: :o:

॥ छंद ॥

बोले विहंसि जुवराजै । सुनु जातुधान समाजै ।
हम सभां मधि पन कोपै । प्रन करत निज पद रोपै ॥
मम चरन जौ सठ टारै । फिरै राम हम सिय हारै ॥
सुनि लंकईश उमंडै । फरके सकल भुजदंडै ॥

॥ दंडक ॥

सुमिरि अंगद रामचंद पद वंदन करि वीर श्री उदंड शो सभा मे पद रोपे है ।
मंडि महि मंडल अखं (?ड) ल अखंड सोर महावीर बंड बीर धीर सब कोपे है ।
एहो कवि लाल बोले रावन बचं न वीर प्रबल प्रचंड भुज दंड धीर थोपे हैं ।
काल ते करालै धाय सुभट विशालै धरै आयुध करालै तेहि कालै सब तोपे हैं ॥

अंत-- ॥ सोरठा ॥

लाजवंत फिरा वीर सुनि कपि वचन ।
जिमि दिनकर रंकेस सींधु सुता छवि देषि हत ।

॥ छपै ॥

चक्रत चवढि चकपकेव जबकि जकजकेव वीर सब ।
भग्गि भीर तजि डगत लंक डगमगत नग्र सब ।

गगन सींधु संकुलित सब सुर दुंदुभी सब्द करि।
धरत धरनि धरि धीर कोल गुजरनि अरूड अरि ।
कवि लाल वीर बल वालिसुत सभामध्य बल भाषि कै ।
मरदि मान लंकेस को चल्यौ राम उर राषि कै ।।३२।।

।। दोहा ।।

पवरि पवरि गढ लंक की जहां जात जुवराज ।
तहाँ त्रास बसि देखि सब भभरि भागु तजि काजु ।।

।। छंद ।।

कपि आइ उतरे द्वारे । जहाँ महाँ भट बल भारे ।।
सब जानि दुर घट बीरें । आयौ महा रन धीरें ।।
रघुवीर के पद बंदे । कपि भालु सकल अनंदे ।।
प्रभु कुशल बुझन लागे । कवि लाल पद अनुरागे ।।

।। दोहा ।।

सकल कथा गढ़ लंक की अंगद दिहेव सुनाय ।
रामचंद सुनि हरषे धन्य धन्य तु भाय ।।

।। इति श्री पोथी अंगद पैंज स्मपुरणं ।।

विषय——लका मे जाकर अंगद के दौत्य कार्यों का वर्णन । रचना वीर रस की है ।

संख्या ३७३ख. हनुमत् पंज——रचयिता——कवि लाल, कागज——आधुनिक सफेद, पत्र——११, आकार——८$\frac{३}{१६}$ × ६$\frac{११}{१६}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१२, परिमाण (अनुष्टुप्)——१८१, खडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्ति स्थान——कुंवर व्रजराज सिह जी, स्थान–साहीपुर, पोस्ट–हंडिया, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—— ।। दोहा ।।

प्रथम भाल "कविलाल" धरि गुरु पद पंकज पंक ।
वरणौ हनुमत पैंज वर जात वीर गढ़ लंक ।।

।। छप्पै ।।

चरण चंद उद्दित उदंड खल खंड खंड करि ।
अति प्रचंड भुज दंड चंड आखंड डंड धरि ।।
सुंड मुंड वंदन भुसुंड छज्जै लम्बोदर ।
एकदंत सुर संत. कंत आनंद संत कर ।।
सेवत तोहि "कविलाल" भनि अष्टसिद्धि वरदायकं ।
हनुमत पैंज वरना चहौं कि देहु बुद्धि गणनायकं ।।

।। दोहा ।।

फटिक शिला सुंदर सुभग छाय रहे भगवान ।
सिया शोच मोचन चहौं बोले कृपा निधान ।। २ ।।

।। दंडक ।।

बीते घन मासै जात निर्मल अकासै जातु धान कुल नाशै हेतु शरद सुहायो है ।
जानकी की सोचै विकल शोच मोचै एक पोचै मेरी शोचना भुलायो है ।

सारंग चढ़ाइबे मारिबे को धायो जल जानि राख्यो भाख्यो "कविलाल" फणिपति को पठायो है ।
पाए परी राजं चूक परी महाराजं संग सहित समाजै रामचंद्र पैंह आयो हैं ॥

अंत-- ॥ दोहा ॥

कठिन लंक गढ़ लंकपति कठिन निशाचर बीर ।
केहि प्रकार जारेउ नगर कहहु तात रनधीर ॥७९॥

॥ दंडक ॥

बोले कर जोरि परे पायन बहोरि नाथ लाघे हम लंक राम नाम की दपट सों ।
बागन उजारघो रक्षकन कंहू मारघो अक्षकुमार को संहारघो मातु सीय की तप तेज सों ॥

विषय--हनुमान का लंका जाना, लंका दहन करना और सीता की सुधि लेकर वापस आना आदि वर्णन ।

संख्या ३७४. मानबत्तीसी, रचयिता--लाल कवि, पत्र--५, आकार--१० × ४॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० ब०७२, पु० स० १२ ।

आदि--॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ मानबत्तीसी ॥ दोहरा ॥

एक समे रति कुंज में बैठे नंदकिसोर ।
प्यारी बिरह बिथा बिकल कहत और की ओर ॥ १ ॥
तिहि औसर ललिता तबे पठइ सिय समुझाइ ।
प्यारी कों ले आउ अब वा बिनु कछु न सुहाइ ॥ २ ॥

॥ कवित्त ॥

प्रिय के बचन ललिता जी सो ।
जाचे सुरराजहिं न जाचत अनंत जाइ यहे टक टेक पैन छाडत तमीहरा ॥
राखे परवाहि एक नीरद के नीरही की स्वाति बूंद हे तत रसत ज्यों टटीहरा ॥
छोस निसि सुरति सँभारें रहे कवि लाल गाजें जब मीत तबहीं पुकार ही हरा ॥
औरो तो अनेकन बिबेक में प्रबीन लीन मेरे जांन रच्यो एक पंछी में पपीहरा ॥ १ ॥

मध्य--पृ० ५-६

प्रीया जू के बचन प्रिय सों ।

तुम तो बनहीं बन डोलत हो मनु खोलत हो जित हीं तितहीं ।
हम तो यह भे उन आगें सख्यो करती नहिं प्रीति हित हीं ।
जिनके चित लोभ लगेई फिरें अधरासव हेत झखें नित हीं ।
तिनसों निज नेहु कहां निबहे सुकरोरि करोर सुहे मितहीं ॥१६॥

प्रिय के बचन प्रिया जी सों ।

हम तो तुम छाडिन जांतन और कहूं निरखे अपने चख सों ।
बिचकी सब ग्वारि गंवारिनि की सुनि कें चित नां धरिबो बिख सों ।
जियें जांनति एन बढे दुहूं नेह चढे रसु तो हमहीं रुख सों ।
परि प्रीति में प्यारो प्रतीति नहीं निज छांह हूंते उपजे दुख सों ॥१७॥

अंत--ललिता जू को बिनय दंपति सों ।

भौंहें मियसेनी सुख नेह सरसांनी मन मोज उलहांनी उर आए प्रान अबहीं ।

दंपति मिले जु ललचाइ के बढ़ाइ मनु एती चतुराई जिय जानी नहीं . . . हीं ।।
रावरे गुननि की न कांठि छूटे काहू पास द्योस निस पास हम रह्यो करें जबहीं ।
सीखे उपचार गति मति निके पाए पार प्यारे के मनाएं मनी भाई यहे सबहीं ।।३२।।

।। दोहा ।।

इहिं विधि मानु मनाइ के दंपति रति रसलीन ।
करत केलि कुंजनि ललित कलित कांम परबीन ।। १ ।।

इति श्री कवि लाल कृता मानबत्तीसी समाप्ता ।।

विषय—राधा के मान का वर्णन है ।

संख्या ३७५. सौंदर्य लहरी (टीका), रचयिता—द्विज लाल (?), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—५¾ × ३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० अनिरुद्ध नारायण तिवारी, ग्राम—सकरापार, पोस्ट—रामपुर कारखाना, जिला—गोरखपुर ।

आदि— . . . . तः कतिचिदरुणामेव भवतीम् ।
विरंचि प्रेयस्यास्तरल तर शृंगार लहरी ।
गभीराभिर्वाग्भि विदधति सतां रंजनममी ।।१६।।

।। दोहा ।।

अरुण रूप कविजन भजे बानी सरस सिँगार ।
कवि हृदि पद्म प्रकाश कौ तरुन सूर अवतार ।।१७।।

।। सवैया ।।

कविता हृदि पद्म प्रकाशन कौ रविभोरन के सम रूप भये ।
जन वंदन सो तुम ध्यान धरे प्रति द्योस अलौकिक रूप नये ।
जलजातन के सुत की तनया तनरंजन काज सिँगार दये ।
तिनसों युत भारती हे जिनके मुख साधुन के मन रंज लये ।।

अंत— ।। दोहा ।।

महामाये परब्रह्म प्रिय पंडित कम सोम ।
विधि घरुनी बानी येही तेहि कहत हें सोय ।।१००।।
पुन आगम विद कहत हरि घरुनी रमा बनाय ।
वहोर कहत हर कीनो त्रीया पारवती मन भाय ।।१००।।
श्रम सौं पाइए पार कूं महिमा पार न पाय ।
एसे तुम सर्वोपरि स्त्री वे विश्व भ्रमाय ।।१००।।

।। कवित्त ।।

परब्रह्म की पटराणी पंडित कहत तुम विधि की घरुनी वानी एसों ही कहत हे ।
बहोरो बुध हरि की घरुनी येही रमारांनी सोही तुमरें भी दिन के हेते ही रहत हे ।

विषय—भगवती की स्तुति की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के अब केवल ७ पत्रे ही रह गए है । जिनकी सख्या १७, २३, २७, ७६, ८४, १०२ और १०४ है ।

संख्या ३७६. पद्मिनी चरित्र (गोरा बादल रणजय), रचयिता—लालचंद (लब्धोदय), स्थान—वर्धनपुर (? वर्दवान), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१३½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०७ वि०, लिपिकाल—संवत् १७५७ वि० (संभवत.), प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री शांतिनाथ जी ॥ गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

॥ दुहा ॥

श्री आदीश्वर प्रथम जिन ॥ जगपति ज्योति स्वरूप ॥
निरभय पद वासी नमुं ॥ अकल अनत अनुप ॥ १ ॥
चरण कमल चितस्युं नमुं ॥ चोवीसमे जिण चंद ॥
सुखदाईक सेवक भणी ॥ साचो सुरतरु चंद ॥ २ ॥
श्रु प्रसन सारद सांमिणी ॥ होज्यो मात हजूरि ॥
बुध दीज्यो मुजन बहोत ॥ प्रगट बचन पडूर ॥ ३ ॥
गोरा बादल अति गुणी ॥ शूर सुभट सिरताज ॥
तास प्रसाद थकी कऊ ॥ सती चरित सिरताज ॥ ४ ॥
ज्ञाता दाता ज्ञानधन ॥ ज्ञानराज गुरराज ॥
गुर गुण गोतम सारिषा ॥ चरित रचुं सिरताज ॥ ५ ॥
गोरा बादल अतिगुणी ॥ शूर सुभट सिरताज ॥
चित्रकूट कीधो चरित ॥ सांमि धर्म साधार ॥ ६ ॥
सरस कथान वरस सहित ॥ वीर श्रृंगार विसेषि ॥
कहिसिउं कवित कलोल सुं ॥ पूरब कथा सपेषि ॥ ७ ॥
पदमणि पाल्यो सीलव्रत ॥ बादल गोरा बीर ॥
सील बीर गावत सदा ॥ षाद मिले घृत षीर ॥ ८ ॥

मध्य—

॥ दुहा ॥

जिउं जिउं दासी नवनवी । सजि आई श्रृंगार ॥
देषि देषि चित चमकीयो । आलम भोजन वार ॥२३॥
रूप अनोपम रंभ सम । उवा पदमणि कै माह ॥
वार बार विह्वल थको । इम जपै आलम सारु ॥२४॥
एक नहि हम धरिइसि । कैसी हम पति साह ॥
याकै एती पदमनी । सौ देषत उपजै दाह ॥२५॥
वार वार भवको किसुं । राघव बोलै एम ॥
ए दासी पदमणि तणी । आप पधारै केम ॥२६॥
चुप हुं के देषौ चरित । विचली मकरो वात ॥
सहिस दोई सहेलियाँ । रहै संगि दिनराति ॥२७॥

अंत—तसु श्रुत आग्रह करि सवत सतरै सतोतरे चैत्री पूनिमशनि वारि ॥ नवरस सहित सरस सबंध नवो रच्यो रे निज बुधि ने अनुसारि ॥१४॥ श्री जिनमाणि कसूरि प्रगटा वाचक विनय समुद्र तासु सीस वर वष तीजगमै जाणीयरे श्री हर्ष सील उदुइ ॥१५॥

तासु विनय चवद विद्या सागसरे वानी

सरस विलास श्री जगनामो पाठक श्री ग्यान समुद्र जी रे प्ररगचतेग प्रकाश ॥१६॥ साधु सिरोमणि सकल विद्या गुण शोभतारे वाचक श्री ग्यानदास तास प्रसादै सील तणा गुण संथुण्यारे लब्धोदय हित काज ॥१७॥ सामि धरम ने सीलतणां गुण सांभल्यारे पुगै मन की आस ॥ उछो अधिको कहिउ कवि चातुरी रे। मिछा दुकव तास ॥१८॥

इति श्री पद्मनि चरित्र ढालभाष कथे श्री गोरा बादल रिएं जय प्राबरणो नांम तुतीय षड समाप्तो समाप्तामिदं ।। नवधिने बलि भ्रष्ट महासिधि संप जैरं ।। दुर्रमिटं दुषदंब ।। लर्वधि-- उर्द कहै पुत्र कलत्र सुष संपदारे ।। सील सफल शुषकंद ।।१६।। दुहा सोरठा--सोल अधिक सै आठ ।। कबित दुहा गाथा मिल्यां । सुणो सगुर मुष पाठ । ढाल सरस गुरणपाल ।।२०।।

सुणो सगुर मुष पाठ । ढाल सरस गुरणपाल ।।२०।। संवत १७५७ । वरषे मीती आसोज वदि ७ ।। सोमे लषीलतं । वर्धन पुर नगरे । वरार गढ़े । मुरुदसे: ।। श्री पुज्य श्री कल्याण सागर सुरिजी तत् शिष्य श्री ऋषि श्री शिवचंद जी तत् शिष्य ऋषि श्री छीतरजी तत् शिष्य ऋषि षडगा वांचनास्य ।। श्री पुज्य श्री भीमसागर सुरि राचां रंचुवता ।। अग्नि पुर्टी कटि ग्रीवा । उर्धविष्टिरधोमुषं । कटि न लषते शारव्रं ।। जतनेन दरि पालयती ।।१।। शुभं भूयात ।। कल्याणमस्तु ।। श्री रस्तु ।। ठावकुर जसैघ जी राजे ।।

विषय--इस ग्रंथ में पद्मिनी की कथा का वर्णन है । जायसी कृत 'पद्मावत' तथा जटमल कृत "गोरा बादल री बात" में भी पद्मिनी की कथा वर्णित है ।

१ जायसी कृत पद्मावत में रत्नसेन हीरामन द्वारा पद्मिनी का रूपलावण्य सुनकर मोहित होता है और जटमल भाटों द्वारा पद्मिनी का रूप लावण्य सुनाकर रत्नसेन को मोहित करता है । परंतु प्रस्तुत ग्रंथ में इसका तीसरा ही कारण बतलाया गया है । रत्नसेन अपनी अनेक रानियों में से पटरानी परभावती पर विशेष प्रेम रखता था । एक दिन उस रानी ने भोजन बनाया जो राजा को अप्रिय लगा, इसी पर उसने ताना दिया कि यदि मेरा बनाया भोजन अस्वादु होता है तो आप नयी पद्मिनी क्यों नहीं लाते । इसी पर राजा क्रोधित होकर उठ गया और पद्मिनी की खोज में समुद्र किनारे गया । वहाँ एक औघड मिला जिसने उसे सिंघल द्वीप पहुँचा दिया । जटमल ने यही कथा दूसरे प्रकार से कही है । उसमें योगी चित्तौर में ही मिलता है जो अपने योग बल से राजा को सिंघल द्वीप पहुँचा देता है । इसी प्रकार अन्य घटनाओं में भी अंतर है ।

संख्या ३७७क. भागवत, रचयिता--जनलालच, कागज--देशी, पत्र--२५६, आकार --८ ५/१० × ५ ६/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१०५०१, अपूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--कैथी, प्राप्तिस्थान--श्री मुंशी रघुबीरकार, ग्राम-पाली, पो०--बहादुर गंज, जिला--गाजीपुर ।

आदि--...............

भाजी पाय आथर हो जा ।।

राजा बैशे के दीन्हे खाश छोड़ी अभीमान ।। कही शुखदेव भावशे भागवत कथा पुरान ।।

पलटी राजा कीन्ह तब शेवा चरन गहे शामी सुखदेवा

बोलै रीखं भए सब काजा शमाधान भए बैशा राजा

मैं हरी कथा शुनावौ तोही जेही शुनत पाप खंडन होही

जीन्ह हरी कवरो दल संघारा पंडव दलकर भए कडहारा

जननी गर्भ हम होते जहीग्रा जीन्ह हरी जन्म उधारीन्ही तहीग्रा

तेही गोपाल के कथा शुनावो बंदौ चरन वार जनी लावो

आदी अंत तुह जानहु कीश्नु चरन कर भेव

"जान लालच" ग्रीपग्रा...गावही रीखी शुखदेव

अंत--जो मैं कहेउ शो करहु उपाई वचन हमारी सुनहु मन लाई

...रूप अवतेजेउ गोपाला बोध रूप अब जन्म हमारा

...अपने जनी लावहु धोखा दउरा एक उठावहु चोखा

भीतर काठ लै धरहु भुआरा तहवा लावहु बर्ज केवारा

छव माश मती खोले कोई वीम्नु चरीत देखहु कश होई
भगती भाव करहु मन लाई तुम कह परशन होव सब ठाई
अपने मन मह करहु हुलाशा हम नीज आही परशोतीम बाशा
कलजुग केर भइल पंशारा बौध रूप अब जन्म हमारा
—अपूर्ण

विषय—भागवत पुराण के दशम स्कंध का पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । प्रथम चार पत्रे लुप्त हैं । शेष तीन सौ उनसठ पत्रे उपलब्ध हैं । ग्रंथ के आदि और अंत के अंश नष्ट हो गए हैं ।

संख्या ३७७ख. भागवत, रचयिता—जनलालच, कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—६.२ × ६.३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६४, खंडित रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—संवत् १८८४ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० शिवपूजन द्विवेदी, ग्राम—मक्कापुर, पो०—मरहद, जिला—गाजीपुर) ।

आदि—श्री गनेश जी सहाइ श्री शिरोशती जी सहाइ श्री हनोमान जी सहाइ श्री सकल देवतासहाइ श्री पोथी भागवत ।

॥ चौपाई ॥

प्रथम पीतामह स्रीस्टी उपजाई । तुह परसाद गननाथ गोसाइ ।
शंकर सुमीरी दडवत कीन्हा । भसम चढ़ाए चीतवनी कीन्हा ।
जटा मकुट सीव सदा अवीनासी । तुम्ह परसाद पाएउ अवीनासी ।
उतपती प्रले तुम्है ते होइ । गढ़े सवारे हरीहर सोइ ।

॥ दोहा ॥

तीहु लोक कै ठाकुर जेही बीधी गोकुल आव ।
चरन सरन जन लालच गुन गोवींद कै गाव ।

॥ दोहा ॥

अंबीत कथा भागवत जीन्ह प्रगटी संसार ।
चरन सरन जन लालच कइसै भौ बीसतार ।

॥ चौपाइ ॥

सतजुग त्राता दवापर गएऊ । कलीजुग कै प्रवेस कछु भएऊ ।
तेही की आवी पराछीत राऊ । प्रीथीमी पावन देखी डेराऊ ।
तीन्ह कली बहुत धरम उपराजा । कबही के गए अखेटक राजा ।
त्रीखा लागु तह अंबु न पावा । रीखी अंगीरा के आसरम जावा ।

अंत—

॥ दोहा ॥

इहै कथा जन लालच कहै रीखै समुझाए ।
कोटी जनम कै हत्या कहत सुनत छै जाए ।

इती श्री हरी चरीत्रे दशम कंधे श्री भागवते महा पुराने जमलए आरजनु विमोछमो नाम दशमो अध्याय १० जो देखा सो लीखा मम दोस न दीयते संमत १८८४ मीती माघ सुदी १० रोज शनीचर . . . ।

विषय—भागवत पुराण दशम स्कंध का पद्यानुवाद ।

संख्या ३७८. देवकी चरित्र, रचयिता--बाबा लालसा राम (संभवतः), **स्थान**--**हंडैला** (जिला--गोरखपुर), कागज--देशी, पत्र--४, आकार--१०१/६ × ४१/६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--७४, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी' प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता--श्री पुजारी गोरख नाथ बाबा, दृगपुरा कुटी, जिला--गोरखपुर) ।

आदि--श्री गणेशाय नम ।।। श्री देवकी चरित्र ।।

देवकी हुती देवक के बारी । अति सुबुधि सुंदरी कुमारी ।।
प्रभु कर गुन निसुवासर गावही । सति सुलछनी मातहि भावहि ।।
जब सो भई सो जोग सम्रानी । राजा पास गई चली रानी ।
करि विचार आपुस मह दोउ । बोली कै लोग कुटुब सभ कोउ ।।
वसुदेव से करि दीन बीम्राहा । भयो मंगलचार उछाहा ।।
कंस असुर देवकी कर भाई । जेई पीतही वेरी पहिराई ।।
तेई जब नभवानी सुनी पावा । तब देवकी कै मारै धावा ।।

।। दोहा ।।

भीम्रा जनि कै वसुदेव कहो ताहि समुझाइ ।
लघु भगीनी जो मारीऐ ताकर पाप न जाइ ।।१८१।।

:o: :o: :o:

अंत--लाए पुत्रीहि के बुत जाई । देषी कंस नृप रहो ठकाई ।।
होतेउ लीषा वार...रा । जो बालक होत शत्रु हमारा ।।
कह कारन यह जनमी बारी । सो मै पूछब......री ।।
अरती धोबी वेगि बोलाई । पाटा पर पटका वहु जाई ।।
पुनी पाछै मै करब वीचारा । जेहि बिधि जाइहि वैरी मारा ।।
बुतन्ह धोबी वेगी बोलावा । पाटा पर पुत्रीहि पटकावा ।।
तसेही बीजुरी होइ सो बारी । चमकि धोबी कै बांह उपारी ।।

।। दोहा ।।

ठनकि कहेसी परचारी कै अरे मूढ ते कंस ।
अरि तो रहै गोकुल मह जे तोर करी बीधंस ।।

एह कहिके पुनी सरग सीधारी । कंस के जीव उपजा दुख भारी ।।
जेहि कारन मै मनेन्ह मारा । सो तौ वाचे दुस्ट हमारा ।।
नारद मुनि कंस वेगि बोलावा । ताकंह सब ब्रीतंत सुनावा ।।
तीन्ह तब बात कही परचारी । केहि कारन तुम पुत्री मारी ।।
वैरी तोरे है गोकुल माही । जेही से तुम्ह वाचवहु नाही ।।
सुनी के कंस वहुत डर षाई । पहिले पूतना नारी पठाई ।।
तेइ पापीनी कुच मह वीषि लायो । नंद भवन गइ हरिषि... ।।

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--भगवान् श्रीकृष्ण की माता देवकी के चरित्र का वर्णन किया गया है । इस चरित्र की एक विशेषता यह है कि जब श्रीकृष्ण (आठवाँ गर्भ) गर्भ में थे तो एक दिन देवकी जमुना स्नान करने गई । कंस द्वारा सात पुत्रों के नष्ट हो जाने के कारण और आठवें गर्भ के भी नष्ट होने की आशंका से वह रोने लगी । जमुना के उस पार यशोदा भी उसी समय स्नान कर रही थी । देवकी का विलाप सुनकर वह उसके पास चली आई और रोने का कारण पूछा । देवकी ने अपना सारा

वृत्तांत उसमे कह दिया । यशोदा के भी गर्भ था । दोनों ने यह अनुमान लगा लिया कि उनके प्रसव एक ही साथ होंगे । अत यशोदा ने अपने शिशु देवकी को देने और देवकी के शिशु को स्वयं लेने का वचन दिया जिससे देवकी के शिशु की प्राण रक्षा हो जाय । यशोदा को इसमे जो बलिदान करना पड़ा उसका कोई उदाहरण नही ।

अत मे यही तय हुआ । आगे की कथा भागवत के ही अनुसार है ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रंथ अपूर्ण है । अत के पत्रे नही है । केवल ४ पत्रे उपलब्ध हुए हैं । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ३७६. कवित्त सवैया संग्रह, रचयिता---लाल भट्ट, उपनाम "प्रवीन", (स्थान---कांकरोली), पत्र---१८, आकार---६ × ५। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---३२, परिमाण (अनुष्टुप्)---३३६, पूर्ण, रूप---साधारण, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ७७, पु० सं० ४ ।

आदि-- ।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।।

।। कवित्त ।।

चंद्रिका की लटक चटक लाल चीरा की सुछाजत छबीलो छोगा आछी छबि छाई है ।
नैंना की नचनि हाइ भाइ की रचनि तऊ मानतें बचनि एसी अति चतुराई है ।
हरें मन हरें बागें भूखन जराइन के लाल गिरिधारी जू की ललित लुनाई है ।
सरस सुहाई मन भाई है 'प्रवीन' नोखी आजु की निकाई पें निकाईओ बिकाई है ।। १ ।।

मध्य---पृ० १६

आयो घनघोर मोर सोर कुंज कुंजनि में बिलसें विविध पोंन गति तिहिं बार की ।
ललित लतानि लपटाँने हें प्रवीन अलि भूमि भई भोग जोग बिपिन बिहार की ।।
रंगरस बाढे दोऊ कोतिग करत ठाढे गरें धरि बाँह छाँह कदंब के डार की ।
मोहि रह्यो मेह नेह बूंदनि बिराजे ज्यों ज्यों मुरली में बाजे धुनि मधुर मलार की ।।५६।।

अंत-- ।। चरन गुप्त बंध ।।

आजु बने सिरपर धरें सुभग सोसनी पाग ।
बागो मनु नतन सुघन भेंटत हृदय सराग ।
कुमुद मुदित रिझवार दृग चित चकोर आनंद ।
देखन चलि चंचल नयनि गिरिधर आनन चंद ।।२५।।

विषय---श्रीकृष्ण भक्ति और वल्लभाचार्य तथा दैन्य विषयक कवित्त सवैयो का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य---इस पुस्तक के मध्य के (पृ० सं० ६-१०-११) तीन पत्रे खाली है । पृ० स० १२ नही है । स० ३१ से ४० तक के कवित्त भी नही है । पृष्ठ २७ पर चरण गुप्त बंध, कामधेनु सवैया और कमलबंध आदि चित्रकाव्य भी दिया गया है ।

संख्या ३८०. बहुला कथा, रचयिता---लोना (?), कागज---देशी, पत्र---१०, आकार---६$\frac{3}{10}$ × ३$\frac{9}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---११, परिमाण (अनुष्टुप्)---१२४, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---संवत १७०३ वि०, प्राप्तिस्थान---पं० बटेश्वर तिवारी, ग्राम-बसुका, पो०-नवली, जिला-गाजीपुर ।

आदि---**श्री गणेशाय नमः**

सरसे ज्यागते भिष्म वृद्ध कुरू पितामह भयज्ञा राज युधिष्ठिल पुछें
लजज्ञा कहुदेव वाहुला क समादः ।।
जहि सुन ले सब हरइ विख्यावा ।।

॥ भिषम उवाच ॥

एकचित औ पुछेसि मोहि । धर्मवंत कहौ मइ तोहि ।
जेकर परसे होइ के दारा । बहुरा सुनले सेइ भुग्ररा ।
जे फल गंगा कैले ग्रसनान । कपिला दिहे विप्र के दान ।
तवहुन बहुला होइ समना । सव वन इतिहास पुरान ।
मथुरा नगर सोहावन नदी जमुना के त्तरा ।
वर्न ग्रठारह रहा वसा चद्रउ जवर वीए ।
कुरी छतीसउ करइ नेवासा । वासि वर्ण करइ सुख वासा ।
वनिग्र लोग नग समाइ । चरि लाख एक वस्तु विकाइ ।

ग्रंत-- ॥ व्याघ्रउवाच ॥

धन माता धन पि(ता ?) तोहारा । धन सदंवस जोहि लिहेहु ग्रवतारा ।
धन से भुमि जाहि कर वासा । धन से राजा जहु करहु नेवासा ।
गइहु एक ग्राइहु भै दुना । गयउ पाप मोर तोहरे पुना ।
तवहि मुकत माघ देउ भएउ । चढिय वेवान सर्ग पुर गउ ।
वहुना पलटि वछरुग्रा संग ग्राइ । सगरे नग्र जे करे वधाइ ।
वहुला सत्य सुनेइ जे ताकर पातक जाइ ।
नारी पीव ग्रछ सदा होइ । जौ व्रत कर मन लोइ ।

इति श्री वहुला कथा समाप्त । सुभ मस्तु सवत् १७०३ ॥ समए भाद्र पदे दसम्यां तिथौ शनिवासरे ॥

विषय--व्याघ्र बहुला कथा का पद्यात्मक वर्णन ।

सख्या ३८१. ग्रठारह नाते को चोढाल्यो रचयिता--लोहट (जैन), कागज--देशी, पत्र--७, ग्राकार--५$\frac{1}{2}$ × ४ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)--६५, पूर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--ग्रार्यभाषा पुस्तकालय. नागरीप्रचारिणी सभा, (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

ग्रादि--ताकौ चोढाल्लौ लिख्यते ॥

॥ राग सोरठ ॥

मान वल वपाया जी ॥ ऊचै कुलि ग्रयाा जी ॥
गुरु ग्यान लह्यां विनु संजम को लहै जी ॥
ते नाता लागा जी ग्रदूषण लागा जी ॥
सो नाता ग्रवारा व्योरौ वरणऊं जी ॥ १ ॥
मुथरा पुर वासी जी वेस्यां दुषरासी जी ॥
तिहि कै गर्ल वासी विलासी हुं लया जी ॥
जुग जोड़ जाया जी ॥ जल माझ वहाया जी ॥
ग्राया सूरीपुर पाया सेठ नै जी ॥ २ ॥

मध्य--

काम महा ॥ कामा करी पार्ड परचौ जी ॥ रावण राज विणास ॥
हरिहर इव बिटंबिया जी ॥ कीचक हूवौ वैनास ॥ २ ॥
कामण ॥ सेव सुवरण सिव गयो जी ॥ सील तणं परसादि ॥
षोडश सुंदरि उद्धरी जी ॥ नारद पाई छै दावि ॥ ३ ॥

कामण ।। इणि विधि नरनारी घणां जी ।। जिनकौ अंत न पार ।।
सीलवंत जे उद्धरया जी ।। आन कल्या ससार ।। ४ ।।

अंत--

रेशणी० ।। घोर बीतप आधरयौ जी ।। षट रितु बारामास ।।
सहै परीस्या बीस द्वै जी ।। परिगह रहत उदास ।। ८ ।।
रेशणी० ।। थूलतद्र कै सगतिस्वा जी ।। लीयौ संजम लार ।।
तिम ए तीनौ उद्धरया जी ।। कीनौ पाप प्रहार ।। ९ ।।
रेशणी० ।। किमे कलव पूरण किया जी ।। पायो मोक्ष सुथांन ।।
चौढाल्यौ नात तणौ जी ।। "लोहट" किथौ वषान ।।१०।।

रेशणी ।। १ ।। इति श्री अठारानाता कौ चौढाल्यौ संपूर्ण ।।

विषय---जैन धर्म विषयक ग्रथ ।

सख्या ३८२. दानलीला, रचयिता---वंशीधर, कागज---देशी, पत्र---७, आकार---७¼ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१०, परिमाण (अनुष्टुप्)---१०५, पूर्ण, रूप---नया, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ।। अथ दान लीला लिष्यते ।।

द्वारकेसपद कपिल "वंशीधर" धरि ध्यान ।।
श्री वल्लभ जिह हेत तै करै भक्ति कौ दान ।। १ ।।
श्री गोवर्द्धन सिषर पर श्री वृजराज कुमार ।।
वृज जन संग अनंद सौ लीला करत अपार ।। २ ।।
तामै कीरति नंदिनी तासौ परम सनेह ।।
सदा वसत वृंदा विपिन एक प्राण द्वै देह ।। ३ ।।
करी दान लीला विविध वृज भक्तन के हेत ।।
वंसी जन स गाइकै जन्म सुफल कर लेत ।। ४ ।।

श्री ठाकुर जी के वचन सषा सौं ।।

अहो सुबल सीदाम सबै सषा सुनौ एक बात ।।
नित नित वृज की ग्वालिनी दान चुरायौ जात ।। ५ ।।
सावधान रहियौ सबै रोकि बैठियौ गैल ।।
अबै कहा है जायगी ग्वाल छबीली छैल ।। ६ ।।
।। भक्त वाचा भक्त सौ दोहा ।।
बरसाने ते ग्वालिनी चली सकल उहि गैल ।।
जहा साकरी षोरि मै बैठे गिरधर छैल ।। ७ ।।

मध्य---श्री ठाकुर जी कौ वचन ग्वालिनी सौं

।। दोहा ।।

घूघट मुष तै डारि कै हसि हसि बोलत बोल ।।
अधर सदर बरसाय कै मोको लीजै मोल ।।१५।।

।। सवैया ।।

कंचन केसरि षौरि करौ पर तो तन की समता नहिं पावै ।।
तेरी य चाल समान है गजराज मराल तौ हासी आवै ।।

तेरेई लोचन हैं दुष मोचन षंजन कंजन कौ चित लावै ।।
तो मुष चंद निहारि कै प्यारी चंद लजाय कै गात छिपावै ।।१६।।

अंत—— ।। सवैया ।।

या गोरस कौ रस लीजै अबै गिरधारी जू छाड़िये दान कौ दायौ ।।
आगे निज कुंज मै धारियै जहाँ सब बातन कौ सुष पाओ ।।
लोक की रीति है और कछू तिनतै यह प्रीति की रीति छिपाओ ।।
यौ मिस दान कै याही समै नित कुंज मै आय कै ताप मिटाओ ।।३२।।

।। दोहा ।।

प्यारी गोरस दान दै भेंटे गिरधर पीय ।।
यह लीला नित प्रीति सौं वंशीधर कौ जीय ।।३३।।

इति श्री दान लीला संपूर्ण ।।

विषय——इसमे कृष्ण का गोपियों से गोरस दान माँगने का वर्णन है ।

सख्या ३८३. अशौच विचार भापा तथा मुडन नखच्छेद निर्णय, रचयिता——वत्साभट, कागज——देशी, पृष्ठ——१५, आकार——८ × ४$\frac{३}{४}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२०, परिमाण (अनुष्टुप्)——१८३, पूर्ण, रूप——साधारण, गद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——स० १८७०, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० व० ६६, पु० स० ६।१ ।

आदि——।।श्री कृष्णाय नमः ।। अशौच विचार तांहां तीन महीना तांई गर्भ उदर में ते निकसे जो गर्भपात कहावे । चोथे महीना ते छठे मास ताई ताप कहावे । सातवें मास ते प्रसव कहावे । पहेले तीन महीना पात भए सात पीढी भीतर गोत्रीन को स्नान ते शुद्धि ।। माता को तीन दिन सूतक ।।

मध्य——पृ० ८

नाल छेद पाछे जो मरे तो संपूर्ण वृद्ध सूतक होइ । दश दिन ते पाछें नामकरण ते पहले बालक मरे तो भूमि मध्ये खनि गाडे । अग्न न देई । ज्ञाति सब स्नान ते शुद्ध नामकरण ते पाछे दंत जन्म ते पहले बालक मरे तो दाह अथवा खनन करे । जो दाह करे तो ज्ञान को एक रात्रि सूतक जो खनन करे तो स्नाम ते शुद्धि । सूतक नही । स्मशान गमन करे न करे इछा दंत जनन ते पाछे तीनि वर्ष पर्यंत जो मुंडन कीयो होइ तो दाह करे वा खनन करे, खनन करे तो एक दिन दाह करे तो तीनि दिन सूतक होइ ।

अंत——आत्मनो मुंडन चैव वर्षे वर्षार्धमेव चेति वचनात् । और व्यर्थ केश छेदन न करे वृथा छिन्नतियः केशान् तथाहु ब्रह्म घातिन मिति माहाभारते दान धर्मे वचनात् । काम्य विषय मिद मिति निर्णय सि० मुंडनं पिंडदानंच प्रेत कर्मंच सर्वशः । न जीवत्पितृकः कुर्यात् गुर्विणी पति रेव च । यह दक्ष को वचन है । इति वयन निर्णय । इति (त्रिगृह) तिघरा गोवर्द्धन भट्टात्मज वत्साभट कृतो निर्णयः । सूतक विद्रीय मुंडन वद्धिम ।। शुभ भवतु ।।

विषय——धर्मशास्त्रानुसार सूतक, पिड, मुडन और नखच्छेद आदि का निर्णय । इस निर्णय का मूल आधार निर्भयराम भट्ट कृत 'अशौच निर्णय' ग्रथ है जो सस्कृत मे है ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रथ मे आगे व्रजराय जी और गगा बेटी जी के भ.गडे के धौल लिखे है ।

सख्या ३८४. विरह अग, रचयिता——वाजिद, कागज——देशी, पत्र——६, आकार——५$\frac{३}{४}$ × ४ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)——३७, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सं० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान——आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—अथ वाजीद कृत विरह अंग वर्णन ॥

॥ अरिल्ल ॥

सूर कमल वाजीदनु सुपनें में लहैं ।
जरैं ओस अरु रैन कराही ते लहै ।
अपनौ ही सब षोट दोस कहा रांमु है ।
हरिहो नांच उच सौ बध्यो कहौं किहि कांमु है ॥ १ ॥
वाजीव विरह वेहद्द कहों कहा तुझ सौ ।
सर कमांन की प्रीति करी पिय मुझसौ ॥
पहलें अपनी ओर तीर लौ तांनई ।
हरिहां पाछैं डारत दूरि दुनी सब जानई ॥ २ ॥

अंत—पथर प की रेष रैनि दन धोवरे ।
तेरे हाथो छालें परे कै सीस गिहि रोवरे ।
जाको जोन सुभाव क जाईगा जीवसौ ।
हरिहां वाजीव नीम न मीठौ होइ क सोधि गुर घीव सौ॥१७॥
दो फल अजब अनूप क लाडू जहर के ।
ये ते नर वींधे स्वारथ कहि कहर के ।
अम्रत फल रढैगा वाजीद राढ कौ ॥
हरिहां कुत्ते का वही सुभाव गहैगा हाड कौ॥१८॥

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में समस्त १८ अरिल्ल छंद हैं । समाप्ति की पुष्पिका नहीं दी गई है । रचनाकाल ज्ञात नहीं । लिपिकाल महाराज जसवंत सिंह के "भाषा भूषण" के आधार पर सं० १८५६ है । दोनों ग्रंथ एक ही हस्तलेख में हैं ।

संख्या ३८५. कवितावली भक्त विलास, रचयिता—वासदेव शुक्ल, स्थान—मिठनेपुर (सुलतानपुर, अवध), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६५२ वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर दीननारायण सिंह, ग्राम—महमूदपुर, पो०—सेमरी महमूदपुर, जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अस्तुति गणेश जी की लिष्यते

बुद्धि के सदन गज बदन रदन एक भाल में विभूति उर मोतिन को माल हैं ॥
जग को कृपाल बाल गौरी को गणेश सम जाहि जन जांचैं ताहि देत करि ख्याल हैं ॥
दीन पै दयाल देव होत हैं तो बार बार कलि को कराल दुष काटिवे को काल हैं ॥
ऐसे जाल माल तास तन को तयार राख्यो कहै "वासदेव" मेरो याही तो सवाल है ॥ १ ॥

॥ अस्तुति शिवजी की ॥

मुंडन को माल चंद्रभाल वो कपाल कर पेन्हे गजखाल अरु व्याल लसै अंग जू ॥
गरमें गरल तन शोभित विभूति भूरि करैं दुष दूरि जाहि जटा बसै गंग जू ॥
भूतप्रेत जोगनी जमात मुख जोवैं जाको कहै "वासुदेव" द्विज काली अरधङ्ग जू ॥
घाउर चबात दांत बेल के दवाये पात खात हैं धतूर घोंटि घोंटि पियें भङ्ग जू ॥ २ ॥

अंत—अथ पावस ऋतु वर्णन

॥ कवित्त ॥

. . . .

धुरवान धारे घहरात घन घोरि आयो दामिनि दमकि नभ चटकि चटा रहे हैं ॥
तारे तर कारे कारे कैलकं उछाँह कीनो भारे भारे बुंद लै कपोलन पं डारे है ॥
छहर छहर छटकि वारि परत उरोजन पं "बासदेव" आये वैरी पावस हमारे है ॥
मोरन सम्हारं शोर अधिक उचारं चहु झिल्ली झनकारं निसि दादुर पुकारे है ॥७१॥
चौप है बलाती धरि पापी को फसाती कोऊ शोर को मचाती यह मोरी मोर घाती है ॥
सुनिकं सकाती सूनी सेज न सोहाती सखि भागि जाती आगन नभ दामिनि दमकाती है ॥
धमकाती घनघोर चात्रिक बकाती चहुँ बासदेव कुहुकहर कोकिला सुनाती है ॥
गिरि जाती छाती कचि जाती यह पावस में दावम दरेरे दोऊ मैन मदमाती है ॥७२॥

इति

अथ कवितावली भक्त विलास सम्पूर्णम शुभम्

हस्ताक्षर बाऊ रजवन वार ग्राम सरैया तारीख ३१ अक्टूबर स० १८६५

विषय—देवताओं की स्तुति की गई है ।

संख्या ३८६. युगल सुधा या कृष्ण सुधा, रचयिता—विद्यारण्य तीर्थ, "देव", निवास-स्थान—काशी (संभवत), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१८५, आकार—८¾ × १०¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८८ वि०, लिपिकाल—स० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० तामेश्वर प्रसाद मिश्र, ग्राम—डोंगीपार, पो०—भैंसा बाजार, जिला—गोरखपुर ।

आदि— . . . .

. . . . .कहि गिरिहि पुजायो ॥ २ ॥
धूप दीप नैवेद्य विविध विधि मंगल ध्वज फहरायो ।
गिरि सरूप आपुह बनि बैठो संग मृदंग बजायो ॥ ३ ॥
इंद्र कोपि मेघन से बोले बोरहु दार ढिठायो ।
"देव" देवकी आयो सुनि कै मेघन हू सिर नायो ॥४३१॥

घन गरजि गरजि बरसत है । मनहु व्रजहि गरसत है ॥
चहुँ दिसि चपला चम चम चमकहि । मूसरधार परत महि धमकहि ॥
भइ अंधियारी अपने हाथ पसारे नहि दरसत हैं ॥ १ ॥
बछरू माय गोप सब काँपहि । एक एक तन को ढापहिं ।
त्राहि त्राहि कहि हरिमुष देषहिं छाया को तरसत हैं ॥ २ ॥
प्रबल इंद्र कोदंड विसारा । तब प्रभु नष पर गिरिवर धारा ॥
छप्पन पहर बरिसी घन भागे इंद्र नाक घरसत हैं ॥ ३ ॥
प्रभु त्रिभुवन पति मैं हौं जडमति । सब अपराध छमहु मेरे प्रति ॥
"देव" देव हँसि संकट काटे इंद्रहु पद परसत ॥ ४ ॥ ३२ ॥

अंत— ॥ रेखता ॥

दिल सो गई न सेवी तौ मूँड क्या मुड़ाया ।
हैवानहीं बना है इनसान क्या कहाया ॥ १ ॥
कंठी गले मो बाँधी छापा तिलक लगाया ।
यह तो सभी नकल है इनका असल न पाया ॥ २ ॥

सोहबत मिली न उसको जिसने असल कमाया ।
सोहबत मिली बटोरी अथवा रतन गँवाया ।। ३ ।।
तूं सोच बात ऐसी को तूं कहाँ सो आया ।
क्यों कर जहाँ अजूबा किस देव ने बनाया ।।३००।।

।। बसंत ।।

मंगल नाम रूप जग मंगल गुनगान मंगल धाम ।
मंगल चरित साधु जन मंगल जगहित कारक पूरन काम ।।
मंगल श्री वसुदेव देवकी नंद जसोदा गोकुल ग्राम ।
मंगल जमुना मंगल हू के मंगल सुंदर स्यामा स्याम ।।३०१।।

।। होरी ।।

जा दिन बजत बधाई । (श्री राम जनम की ।)
ता दिन कृष्ण सुधा पूरन भइ संतन की प्रभुताई ।। १ ।।
८ ९ ८१
संवत आठ अंक अष्टादश ।।१८९८।। वार परो बुध आई ।
राम स्याम में भेद नहीं कछु असमति गुरुन्ह सिषाई ।। १ ।।
श्री मत् काशिराज क प्यारे मान वृद्धि अति पाई ।
बाबू राम प्रसन्न सिह के यह रुचि हेतु बनाई ।। ३ ।।
जो रस कहत शेष श्रुति सारद बडदे बहु सकुचाई ।
सो रस ढीठ होइ कै कहनो यह केवल बन राई ।। ४ ।। ३०२ ।।

इति विद्यारण्य तीर्थं कृता युगल सुध ।। छ ।। इदं पुस्तकं लिखितं हनुमत्पुत्रेण बनवारि त्रिपाठिना रामनगरे सम्वत् ।।१८९८।। माघ धवल पौर्णमास्याम् ।।

विषय—राधा कृष्ण की लीलाओं का वर्णन ।

रचनाकाल

जा दिन बजत बधाइ (श्री राम जनम की) ।।
ता दिन "कृष्ण सुधा" पूरन भइ संतन की प्रभुताई ।। १ ।।
८ ९ ८१
संवत आठ अंक अष्टादश ।।१८९८।। वार परो बुध आई ।
राम स्याम में भेद नहीं कछू असमति गुरुन्ह सिषाई ।। २ ।।

विशेष ज्ञातव्य—आरंभ के २० पत्रे नष्ट हो गए हैं। रचनाकाल और लिपिकाल एक ही संवत् १८९८ है ।

संख्या ३८७. भाषा भक्त चंद्रिका, रचयिता—विश्वनाथ सिंह, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—९३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९४ वि०, लिपिकाल—सं० १९०५ वि०, प्राप्तिस्थान—ददन सदन, पोस्ट—अमेठी (ई० आई० आर), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि;—..................अब औरन है ।
नितभेवत अवर्पतरित है यक ग्रास गहे तन प्रान रहै ।
करमासम नैनमि नीर बहै ।।९४।।

बहु सोच बढ़ै तब जाहि चली । बनमाझ विलोकहिं कुंजगली ।
फिर हर्ष विषाद दोऊ उपजै । सब पीछिल ध्यालहि को जु भजै ॥६५॥

॥ कुंडलिया ॥

फागुन मास लगै जबै हरि बिनु कछु न सुहाइ ।
काँम मनो धनुबाँन गहि बधत विरहिनी आइ ।
बधत विरहिनी आइ और जग सुष उपराजन ।
हँसि हँसि दै दै गारि नारि नर जोरि समाजन ॥
करत गाँन सविधाँन आँन वरनै बहु फागुन ।
हमहि छोंडि सब लोग सुषी दरसै सुभ फागुन ॥६६॥

॥ त्रिभंगी ॥

लागत मधुमासं काँम जु प्रासं रहत उदासं सब गोपी ।
तिय पतिहि निहारं करत सिंगारं माग सवारं वुति वोपी ।
फूली बन वेली सुभग चमेली लषि अलबेली सुष सरसैं ।
हरि हैं न सहायक इत रति नायक बहु दुषदायक सर बरसैं ॥६७॥

अंत--

॥ सुवरन ॥

उन कीन्हो तपं बहु जन्मं वही । समता कौ लहै मुनि देवो नहीं ।
मन मेरे बसं नहि नेको जुदाँ । वृजवासी सबं प्रिय मोको सदाँ ॥२६॥

॥ दोहा ॥

उद्धव सुनि प्रभु मुष वचन परे प्रेम के पंथ ।
कृष्ण कृपाते ह्वै गयो भक्त चंद्रिका ग्रंथ ॥२७॥
वेद ४ अंक ६ वसु ८ इंदु १ के कीलक अब्द विचार ।
धन के रवि सित पक्ष मैं काँम तिथी ससिवार ॥२८॥

॥ रूपमाला ॥

यहि ग्रंथ को जग मै कोऊ जु पढ़ै गुनै मन लाइ ।
प्रभु भक्ति प्रेम बढ़ै नितै सुष देहिं श्री जदुराइ ॥
हरि चरित्र...। नहिं सुनत है नर मूढ़ जे मतिमंद ।
परिनाम मै पछितात है अरु परत है भव फंद ॥६२२॥

इति श्री विस्वनाथ सिंघ कृत भाषा भक्त चंद्रिकाया ऊधो गोपी सवांद वर्ननो नाम च-तुर्दसमोप्रकासः ॥१४॥ संवत् १६०५ लिष्यितं मथुरा ॥

विषय—गोपी उद्धव संवाद वर्णन। रचना मे चौदह अध्याय (प्रकाश) हैं।

रचनाकाल

वेद अंक वसु इंदु के कीलक अब्द विचार ।
धन के रबि सितपक्ष मैं काम तिथी ससिवार ॥२८॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। संख्या १ से ६५ तक के पत्ने नहीं हैं। रचनाकाल संवत् १८९४ वि० है और लिपिकाल संवत् १९०५ वि०।

संख्या ३८८. महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व), रचयिता—विष्णु कवि, कागज—
पत्र—१६, आकार—५३⁄४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—
खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी. प्राप्तिस्थान—काशी ना
प्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० राम शिरोमन उप० 'दादू'), ग्राम—बहादु
पो०—पच्छिम सरीरा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.....................

सुनत बात रही यौ बिलखाइ । पद्मा मोटे कंठ लगाई ॥
बिछुरत बहुतु मित तनु कीयो । बुध को पथु हिये गहबरयो ॥७०॥
बुधु करिपथ हियौ भरि लीयो । राउ बिसूरि कारनु कीयौ ॥
कहै कन्हु सुनि पंथा (? पंडु) कुमूर (कुमारू) । और अपूर्व कलि ब्यौहर (? ब्यौहारू) ॥७
गंगनी पुतछु जलु जाइ । माझ धार सों धूरि उड़ाइ ॥
अतह प्रानी प्यास मराइ । चलत पंथ पंथी चली जाइ ॥७२॥
कलि मह गंग छोड़े धारा । गहिरै ठौर उठैगी छारा ॥
ए पचे कहिये जगदीस । पहिले बंभनु देइ असीस ॥७३॥

मध्य— ॥ अस्लोकु ॥

धानी जनम मूम स्याछ ॥। जहानंवी जरणार्वण (? जनार्दन) ।
धन मधेसँ वारतव्य जकारा पंच दुलभं ॥
जननि माइ सो ज लिजि चलै । गंग अन्हाइ बरतर लै चलै ।
जौ धन परिधनु तिजौ न जाइ । पडं चले तिनहि छुटकाइ ॥१०२॥
मनधरि रुउ चले जगदीस । आगौ बभन दंहि असीस ॥
कर जोरौ बिनवहि अरु सेवा । हम को पेटू मारहिगे देवा ॥

॥ वस्तु बंधु ॥

गौ रुदंती आरन्य व्रनु दंतन धराइ ।
रुदती म्रिग जुथानं अहो राजा वधपालक: ॥१०६॥
रोवहि गौवन षडहि घसू । रोवहि पषी म्रिग निरजासू ॥
रोवहि रोझ थवाघ झषार । काहे छाडि चले भोवला ॥१०७॥

अंत—

आनंदु जस्टल भयौ । हरि हरि करत पापु सब गयौ ॥३०४॥
आए तहा जुधिस्टलु राइ । कंचनपुरी जु उत्तम ठाऊँ ॥
सुर्गारोहिनि मनु दौ सुनौ । नासं पापु "बिश्नु कबि" भनौ ॥३०५॥
बरसु द्योसु हरि वसु सुनाइ । दंहि कोरि बिप्रन्ह कह गाइ ॥
सो फलु होइ "बिश्न कवि" भनै । पडं चरितु मनु दै सुनै ॥
जो फलु होइ गये हरिद्वार । जो फलु होइ परसै के तार ॥
गया खेत जौ पिंड भराइ । सुजं पर्वु कुरखेतह जाइ ॥३०६॥
सो फलु होइ "बिश्न कवि" भनै । पडं चारितु मनु दै सुनै ॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत स्वर्गारोहण पर्व का हिंदी मे पद्यबद्ध अनुवाद ।

संख्या ३८९. भाषा महावाक्य विवरण, रचयिता—विष्णुदत्त, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—$८\frac{७}{१६} \times ४\frac{१}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुंवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—साहीपुर (नौलखा), पो०—हंडिया खास, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

वैदो पुरुष पुरान अज अषंड अद्वैत जेहि।
गावत वेद पुरान परम धाम व्यापक अचल ॥ १ ॥
बंदो सतगुर पाइ आठो जाम प्रकाश मय।
जाको दरशन पाइ मिटत अविद्या बंध सब ॥ २ ॥
बंदो श्री शंकर चरन जो शंकर अवतार।
प्रगट कियो वेदांत मत सकल वेद को सार ॥ ३ ॥
जाहिर तीन्यौ लोक मैं चित्रगुप्त को वंश।
ताहू मैं अंविष्ट को वुध जन करत प्रसंश ॥ ४ ॥
दाता सुमति सुशील तह प्रगट्यौ मोहन लाल।
धर्म पंथ मे प्री पद यह श्रुति को मतसार ॥
ताते द्वादश वाक्य को संतत करै विचार ॥

अंत—सबते पर परमातमा व्यापक ब्रह्म अपार।
सोहं पद जाने बिना भ्रमत फिरै संसार ॥

॥ चौपाई ॥

अगुन सगुन द्वै ब्रह्म बषाना। सोहं जोति रूप भगवाना...

:o: :oo: :o: **—अपूर्ण**

विषेय—तत्त्वमसि आदि द्वादश महावाक्यों पर भाष्य।

संख्या ३९०. दुर्गाशतक, रचयिता—विष्णुदत्त महापात्र, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—$७ \times ४\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९१७ वि० (संभवत), लिपिकाल—सं० १९१७ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० जयगोपाल सिंह ताल्लुकदार—रामपुर, तहसील—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दुर्गाशतक लिख्यते ॥

हीरन के वामा जगिमगि रहे मंदिर मैं धूप दीप वास आस पास बगरे रहै।
मोतिन की झालरैं जडाउ झपकि रही चहूँ वोर तासबादलन के वितान पसरे रहै।
सेवैं देवमंडल मुनीस शीश पानि जोरे विद्रुम परजंक से रतन जडे रहै।
बैठी तहाँ देवी विन्ध्यबासिनी सरोज चरन आगे मुकुट दिगीसन के लटके परे रहै ॥ १ ॥
कनकौ के मंदिर सिंहासन रुचिरता मैं बैठी जगदम्बा गान किन्नर करे रहै।
नाचै देवतानि की वधूटी भूरि भाव भरि बाजत मृदंग ताल नौबति झरै रहै।
शंकर रमेस बेस चवर डोलावैं दोऊ छत्र लीन्हे कर मैं निशाकर षडे रहै।
सासन को जोवै पाकसासन हमेसै जासु आसन के नीचे पंकजासन परे रहै ॥ २ ॥

॥ अथ ध्यान महाकाली को ॥

मुंड की माल बलाक लसे असि बिज्जुछटा चमकै कर फेरी।
चाप मनो पुरहूत की चांप संताप हरै सिगरे जन केरी।

पूरी दया रस के बरषै हरषै सितिकंठ हिये बिच हेरी ।
गाज्जि के बैरिन को तरजै वह कालो घटा सुखदाइनि मेरी ।। ३ ।।

।। अथ महालक्ष्मी को ध्यान ।।

अम्बर अनूप अंग सोहै अंगरागन सों पंकज अभीति कर पंकज धरे रहै ।
शीश मैं किरीट भाल बेंदी लाल हीरा जड़ी माल मकुतान के विराजत गरे रहै ।
नूपुर पगन जगमगित जवाहिर सौ नाना अभरन के प्रकास पसरे रहै ।
चारों फलदानी महारानी महालक्ष्मी जू आठौ जाम धार्मिनि के संपति भरे रहै ।। ४ ।।

अंत--
सुरथ महीप को मनोरथ सकल पूज्यो आरत समाधि सो विमल ज्ञान पाई है ।
देवन के काज रक्तबीज को निपात कीन्हो दीन्हो सुरराज को अचल प्रभुताई है ।
जद्यपि चराचर को पालन करत तुही जद्यपि सकल शिष्टि तेरोई बनाई है ।
मेरो बुष वारुण मिटायो जगदम्ब ताते रावरे प्रभाव की प्रतीत मोहि आई है ।

इति श्री मदुर्गा शतके पुन्य स्तोत्रे महापात्र विष्णदत्त कृतौ बागादि बर्नन नाम दशम दशकं ।।१०।। सम्वत् १६१७ चैत्र शुक्ल पंचम्यां भौम वासरान्वितायां शायंकाले समाप्तम् ।।

विषय--दुर्गा की स्तुति और माहात्म्य का वर्णन । ग्रंथ दश अध्यायों मे है जिनको "दशक" कहा गया है । प्रत्येक 'दशक' मे दस कबित्त सवैये है ।

संख्या ३६१. नव नागरी के पद, रचयिता--विष्णुदास, कागज--माधोपुरी, पत्र--३, आकार--६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३२, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--स० भ० विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० बं० १२, पु० सं० ५ ।

आदि--श्री कृष्णाय नमः ।। राग बिलावल ।।

श्री नव नागरी प्यारी तूं वृंदावन की रानी ।।
श्री राधा लाडिली प्यारी तेरी कीरति जति बखानी ।। टेक ।।
जगत में जगमग रह्यो जसु बिनु कृपा क्यों बूझिये ।।
अभिमान अंधालोक कलमठ तिन तहां नही सूझिये ।।
करि कृपा परम उदार यह मोहि बारबार सुनाईये ।।
बलि जांऊं श्री व्रखभान नंदनी सुजसु तुम्हारो गाइये ।। १ ।।

मध्य--श्री नव नागरी प्यारी तेरें पग नूपुर झनकार ।
तेसीय माधुरी चरन विहार ।। टेक ।।
माधुरी चरन विहार यह गति राजहंसहिं अरपीये ।।
जघन सघन उरोज भारी वेख कटि डरपीये ।।
प्रथमनि किंकिनी धुनि व्रतनि प्रतिनीमी बनी ।।

अंत--एहो मिलि करि विविधि विहार भामिनि एतो गहव न कीजिये ।।
बलि विष्णदास विचित्र भाँमिनि लोचननि सुखु दीजिये ।। ६ ।।

इति नव नागरी संपूर्णं ।। शुभं ।।

विषय--इसमे राधा जी का वर्णन किया गया है । नवरात्र मे ये पद गाए जाते है ।

संख्या ३६२. भक्ति प्रकाशिका टीका, मू० रचयिता--विष्णु पुरी, कागज--देशी, पत्र--७७, आकार--११$\frac{३}{८}$ × ५$\frac{१}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--२३१०, अपूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री मते रामानुजो जयति ।।

।। सोरठा ।।

बंदौं मन बच काय श्रीरघुवर पद कंजबर ।
संतत जन सुषदाय षल षंडन मंडन अवनि ।। १ ।।
श्री रघुबंस कुमार तेहि सम को करुणायतन ।
जासु कृपा अनुसार भवबिरंचि पावहि सुमति ।। २ ।।
वंदौ युगपद रेनु जनकसुता जगजननि के ।
जिमि सुषप्रद सुरधेनु तिमि संतन कंह देत सुष ।

।। दोहा ।।

श्रीपति राज सुजान प्रभु करुणाकर गुण वृंद ।
वंदौ पद रज धिसद तेहि मिटइ मोह भवफद ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

प्रथमहु तो कपटी मतिमंदा । परसत पद मिटिगो दुष वंदा ।।
तासु अनुग्रह धरि निज सीसा । वुधि अनुमान मोहि जस दीसा ।।
भाषा रचऊ सुजन हित लागी । ज कोऊ हरिगुण रस अनुरागी ।।
विष्णुपुरी संग्रह भल कीन्हा । नाम भक्ति रत्नावली दीन्हा ।।
तासु अरथ कछु वुधि अनुसारा । रचउ सुभाषा करि विस्तारा ।।
समुझत सुनत सुलभ सब काहू । रुचि विनु श्रवण सुनं सुषताहू ।।
भनित भदेस बस्तु भलि बरनी । कृष्ण भक्ति महिमा भवहरनी ।।
ताहि हेतु करि संत सुजाना । सुनिहं सतत करि सनमाना ।।

:o: :o: :o:

विष्णुपुरी के मित्र वर माधवदास प्रवीन ।
तिनभांगी मनिमुक्ति की माला रतन नवीन ।। ७ ।।
तब श्री भगवत भक्ति की रतनावली बनाइ ।
श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र मँहु उनको दई पठाइ ।। ८ ।।

:o: :o: :o:

अति उत्तम मम लोक सो लहै सु विनहि प्रयास ।
परमषेम कल्यानमय सदा सुषद सुभबास ।।११६।।

इति श्री भक्ति रत्नावल्यां भाषानिबद्धे भक्ति प्रकासिका नाम टीका प्रथम विरचनं ।।१।।

अंत—......त सेवा नहिकरहि सोइ अनरथ कर मूल ।
बरणत सो विधि वचन करि भगत मिटै सब सूल ।।

।। चौपाई ।।

...तव पद पंकज रूरा । अखिल लोक सुषप्रद गुण पूरा ।।
जौलौं तेहि आश्रित नहि होई । तौलौं...है भय सोई ।।

:o: :o: :o

...रति ज्ञान युत भक्ति अनूपा । योगीजन जेहिम......

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—संस्कृत ग्रथ भक्ति रत्नावली की टीका ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । अत मे सख्या ७७ के पश्चात् के पत्रे नही है । रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं ।

संख्या ३६३. बृज की बाल लीला, रचयिता—वीर भगत, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८३/४ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बृज को बाललीला लिखते ॥

अति सुंदर बृजराज कुंवार। मात तात के प्रान आधार।
आनंद मगन सकल परवार। ब्रज भक्तन की प्रीत अपार॥
लीला ललित विनोद विशाल। गावे सुने भाग तिहि भाल॥
अद्भुत बालखेल नंदलाल। नवल कीसोर जसे रीत रसाल॥
जो जन या रस को अनुरागी। परम धन्य तेही बड़भागी॥
बृज हुलास कहिवे के लागी। यह लीला अति मधुर सुभासी॥
कहत सुनत उपजत सुखहासी। . . . .

अंत—कीयो परस्पर रासविलास। पायो सुख मन भयो हुलास॥
रसमें भीजे न्यारी जाम। भोर भए आये घनश्याम॥
तो बुढिया सुन पुत विललाइ। उठिके आइ उघारें द्वार॥
मात पुत मिलि करे लराइ। हरि की बात भले वनि आइ॥
यो हरि बृज में घर घर षेले। भुजा कंठ गोपिन के मेले॥
हरि की बात सबै उनि जानी। रहे मुड मारि वेही अभिमानी॥
कहत सुनत सब सुखदाइ। वीर भगति यह लीला गाइ॥

इति श्री बाल लीला संपूर्ण लिखत गंगा विशण भरतपुर मध्ये मीती कार्तिक वदि ११ रवि सं० १८८८ ॥

विषय—श्री कृष्ण की बाललीला का वर्णन।

संख्या ३६४क. ब्रजविलास, रचयिता—वीरभद्र, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—७१/२ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—अथ ब्रज विलास लिष्यते।

अति सुंदर ब्रज राजकुमारा॥ तात मात के प्रान अधारा॥
आनंद मगन सकल परिवारा॥ ब्रज वासीन सु प्रीति अपारा॥
लीला ललित विनोद विसाला॥ गामै सुनं भागि जे नाला॥
अद्भुति बाल करी नंद लाला॥ नव किसोर रस रीति रसाला॥
जो जन या रस के अनुरागी॥ पर्म धन्य तेई बड़ भागी॥
मो मति महा मोह ते जागी॥ ब्रज विलास कहैवे कु लागी॥
यह लीला अति प्रेम विलासी॥ कहैत सुनत उपजति हासी॥
लाड़ लड़ैतो कुमर कन्हैया॥ षेलत आगन देषति मैया॥
बदन चंद चंचल अति नैना॥ अलष लडै मधुरे मे वैना॥
नासा के मोती अति सोहै॥ कानन कुंडिल अति मन मोहै॥
लटकि रही लट घुंघरिवारी॥ चपल भौह विच विंदुका न्यारी॥
कर पौहौची जगमग जड़ाऊ॥ देषि सराहत हैं बलवाऊ॥

मध्य—चौहौरि कही मा बोलि किवारी ।। मै तौ भीजतु ठाड़ो द्वारी ।।
खिजि बोली घर जाउ नंद के ।। जानतिहु गुन बंद छंद के ।।
याते सुन मै तु कौन कहावै ।। चल्यौ हमारे द्वारे ग्रावै ।।
कहा भयो री जननी तोकु ।। क्यों पैहैचानति ना है मोकु ।।
वह मेरे घर काहे कु ग्रावै ।। मोते बुरचो बूरिही धावै ।।
ये रे लंगर ढीट कन्हाही ।। तै सब व्रज की लाज गमाई ।।

ग्रंत—जानौ गोप स्या(म) ग्रब ग्रायो ।। ग्ररबराय गहैबं कु धायो ।।
कठिनी कपाट सु लोहू जड़ायो ।। पचि हारचौ परि नैक न डिगायौ ।।
माय माय कहि पुत्र पुकारै ।। कौन सुनै कोहि बार उघारै ।।
यह विधि बीते चारो याम ।। भोर भयें घर ग्राये स्याम ।।
बुढ़िया सुनै पुत्र बिललाय ।। उठि किवार उघारचौ जाय ।।
मारचौ मूड़ मारि ग्रभिमानी ।। हरि की बात भली करि जानी ।।
रस मैं लीन कीये व्रजबासी ।। यह लीला ग्रति प्रैम विलासी ।।
बीरभद्र मनमोद प्रकासी ।। गावै सुनै मुक्ति है जासी ।।

।। दोहा ।।

व्रज विलास बलभद्र कृति ।। सदा रहौ व्रजमाहि ।।
गामत सुनत सुष ऊपजै ।। लाल हसै मनमाहि ।।

इति श्री व्रज विलास संपूरणं शुभम् ।

विषय—इसमें कृष्ण चंद्र की लीलाओं का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएँ संगृहीत है :—

१. जोग लीला—उदयकृत
२. व्रजविलास—वीरभद्रकृत
३. बासुरी—सूरदास जी कृत
४. व्रजलीला—हरिदास
५. सनेह लीला—रसिकराय
६. परतीत परीक्षा—बालकृष्ण

संख्या ३६४ख. व्रजविहार (व्रजविलास), रचयिता—वीरभद्र, कागज—देशी, पत्र—३ (पुस्तक के मध्य मे), ग्राकार—४। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–४६, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—१२०, रूप—सधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान–श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ७, पु० सं० ३ ।

ग्रादि—

ग्रति सुंदर व्रजराज कुमार, तात मात के प्रान ग्राधार ।। १ ।।
ग्रानंद मगन सकल परिवार, व्रज भगतनि कें प्रीति ग्रपार ।। २ ।।
लीला ललित बिनोद विसाल, गावें सुनें भाग जिहि भाल ।। ३ ।।

मध्य—

माइ कहे सुनि पूत प्यारे । तें तो सांचे बचन उचारे ।।८४।।
कीनो मेरो रूप कन्हाई । इहां जिनि ग्रावन दीजो माई ।।८५।।
यों कहि सोयो जाय ग्रटारी । मोकों कान्ह दीयो दुख भारी ।।८६।।
घर में ग्रावन कों ग्रकुलायो । मे तो ईंटनि मारि भजायो ।।८७।।

अंत—
मात पूत मिलि करे लराई । हरि की बात भली बनाई ।।४३।।
यों हरि गोपिन के सुखदाई । ब्रज में करत बिहार सदाई ।।४४।।
नव किसोर सुंदर सुखरासी । रस में लीन कीये ब्रजबासी ।।४५।।
यह लीला अति प्रेम बिलासी ।। बीरभद्र मन मोद प्रकासी ।।४६।।

विषय—श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन ।

संख्या ३६४ग. चंद्रावली लीला (ब्रज विलास), रचयिता—वीरभद्र (श्री गोकुल नाथ जी के शिष्य), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—५।। × ८।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३१, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० सं० २६, पु० सं० ५।३ ।

आदि—लीला चंद्रावली की लिखते ।।
अति सुंदर ब्रजराज कुंवार ।। तात मात के प्रान अधार ।। १ ।।
आनंद मगन सकल परिवार ।। ब्रज लोगनि कै प्रीति अपार ।। २ ।।
लीला ललित विनोद बिसाल ।। गावैं सुनैं भाग तिहि भाल ।। ३ ।।
जो जन या रस के अनुरागी ।। परमधनि तेइ बड भागी ।। ४ ।।
मो मति महा मोहतैं जागी ।। बाल केलि कहिबे को लागी ।। ५ ।।

मध्य—
बहुरि कह्यो मा खोलि किवार ।। हुं भीजत हुं ठाढो द्वार ।।६१।।
बहुरि कहै घर जाहु नंदके ।। जाने तुव गुन छंद बंद के ।।६२।।
कहा भयो री माता तोकुं ।। क्यों पहिचानति नांही मोकुं ।।६३।।
इहां नंद सुत कबहु नावै ।। मोतैं डरपि दुरि ही धावै ।।६४।।
रे रे लंगर ढीठ कन्हाई ।। तैं ब्रज की सब लाज गमाई ।। ६५।।

अंत—
नवलकिसोर सुंदर सुख रासी ।। रस में भीजि रहे ब्रजवासी ।।१४४।।
यह लीला अति प्रेम प्रकासी ।। वीरभद्र जन जांनि प्रकासी ।।१४५।।
इति श्री चंद्रावती जु की लीला संपूरन समापता ।

विषय—श्रीकृष्ण की चंद्रावली लीला का वर्णन ।

संख्या ३६६. अश्वमेध, रचयिता—वीरभान चौहान, कागज—देशी, पत्र—२३२, आकार—५ ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२२६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री लाल बहादुर सिंह, शिवपुर, पो०—जफराबाद (जौनपुर) ।

आदि—................ ।
एहि बिधी दीज अधिकारी शोध न लिन्ह दीजन्ह कर नाही
जो कोई न्रीप न्रीप मद पावैं तोहि न्रीप कि वशव वस्तु कहावैं
न्रीपदि द्वदि रिठल लागे ध्याश रिखै कहिए हम आगे
बिज की शंख्या कहो बुझाई केतिक दान बुझो रीषी राई
एहि बिधी अस्व कहै रीषी ग्यानी शो हम सब तुम्ह कहहु बखानी

॥ दोहा ॥

पंडित और कुलिन तन रिषे कहै रीषी पाही
लख सहस्त्र दीज चाहीऐ जग्य अरंभन माहीं

:o: :o: :o:

अस्व रतन न्रीप राखही वे न्रीप कीरती शमान
सक्ती होई तो आनिऐ कहु "वीरमान चौहान"

इती श्री हरी चरित्रे दशम शकंधे अस्वमेध के जैमुनी भारथे भाषा क्रीत नाम प्रथमो अध्याऐ ॥

:o: :o: :o:

जैमुनी कथा चलाई आगे तब कछु भीम कहन कहें लागे
मै आनब बल जोरी तुरंगा करीहों जुध्ध ताही न्रीप संगा

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

वीरभान चौहान कही हम आवहि न्रीप काम
जौ तुम्हते रथ लिजिऐ तौ नाहि संग्राम

. . . भाषाक्रीत चतुर्थो अध्याऐ जैमुनी बीरंचीते ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

वीरभान चौहान कही कीजै उठा पयान
भीम सवेग दुहु जना मुर्छीत जेहि मैदान

:o: :o: :o:

अंत——. . . . . ।

॥ दोहा ॥

अचल रूप ऐही भाती है चलत चिन्है जौ कोई
भौसागर उतरन चहै सीला पुजै जौ सोई

॥ चौपाइ ॥

शीला काध कै चलै जौ कोई
त्रीभुवन भार लीन्ह जनु सोई
शालिग्राम देहि दिज दाना
दीन्हो सात दीप परिवाना
पूजा ध्यान सिला जो करै
अरु जौ अस्तुति चितम्ह धरै
गंगा सागर ध्यावै सोई
तुरित उधार ताहिकर होई

:o: :o: :o:

नाराऐन सम बंधु नही क्रीस्न कथा सम आन
तुलसीस.र समान नही कहि "विरभान चौहान"
तहा वसत है आप प्रभु तुलसि मंजुर माहि
है तीन्हकी महीमा अधीक पत्रते सुजत ताही
नारद पारथ कह समुझावै हरिकि भगती कैर गुन गावै
औस्टवुधी चंदनपुर माहा लव कुलिद कह वधै मनमाहा
प्रजा पौली जेतने वादे सही शवकर डंड की वो पर वेसही ।

:o: :o: :o:

. . . . ।

विषय—श्री कृष्ण चरित्र और पांडवों के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन किया गया है।

चद्रहास राज मदन मत्री शालिग्राम माहात्म्य	(५८) अध्याय
बालक वधनो नाम	(५०) अध्याय
सीता वन गमन	(२७) अध्याय
रामचद्र का भ्रातृ मिलन	(२६) अध्याय
लोहरी राक्षम वधनो नाम	(३०) अध्याय
विषमाली वर्णन	(५२) अध्याय
अयोध्या वर्णन	(२५) अध्याय
प्रद्युम्न मनीपुर पति युद्धवर्णन	(२४) अध्याय
राक्षम म्त्री वर्णन	(२२) अध्याय
त्रिया राज्य अश्व गमन	(२१) अध्याय
अर्जन ताम्रकेतु मग्राम	(४३) अध्याय
हरी चतुर्गगा युद्ध	(३०) अध्याय
लोकुश रामचद्र युद्ध	

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। ममस्त दो सौ बत्तीम पत्रे उपलब्ध हैं। रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या ३६६. यमकालकार सतसैया या वृंद विनोद, रचयिता—वृंदकवि, स्थान—मेडता (राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—६$\frac{१}{१०}$ × ५$\frac{२}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपाल चद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (स्थायी पता—मोहल्ला नजीराबाद, कोठी न० ११७, लखनऊ)।

आदि—**श्री गणाधिपतये नमः ॥ अथ यमकालकार लिख्यते ॥**

॥ दोहा ॥

श्री सरस्वति कौं नमत नर सरस्वत कोमल कैन ।
गनपति कृपा कटाक्षतें गनपति सुभफल दैन ॥ १ ॥
केशव कवि वरने यमक अव्ययेत सव्ययेत ।
सुषकर दुष्कर भेद सब वरने बृंद सहेत ॥ २ ॥
विन्न अंतर इकसे सबद अव्ययेत सो जांनि ।
अंतर यौं इकसे सबद सव्ययेत पहिचानि ॥ ३ ॥

॥ अथ अव्ययेत यमक ॥

॥ अथ आदि यमक ॥

संकर संकर सत कौ मन वंछित कौं देत ।
मन क्रम वच करि कीजियै ताही सौं हिय हेत ॥ ४ ॥
नरहरि नरहरि और की करत आस बेकाज ।
संत सुदामा रंक तें राव कियौ महाराज ॥ ५ ॥

॥ अथ सव्ययेत यमक ॥

॥ प्रथमपदयः ॥

सुरभित वन कीनौ सुरभि कोमल मलय समीर ।
तहां सुरत सुष लेत हैं नित राधाबलबीर ॥२७॥

।। अथ २ ।। धः यः ।।

कुंजन कूजत कोकिला अलि गुंजत अलिमाल ।
चलि बलि हिलिमिलि लेहु सुष तहां रसिक नंदलाल ।।२८।।

अंत—हरि चरित्र समझै भलै पावै नांही षेद ।
सोई जमक दोहांन कौ नीकै जानै भेद ।।१३।।
गुंन रस सुष अमृत वरस बरससुकुल नभमास ।
दूज सुकवि कवि वृंद ए दोहा किए प्रकास ।।१४।।
आगरनगर नरन कौ नगर मेरते बास ।
:o: :o. :o:
जमक सतसयाकौ धरयौ नांम सुवृंद विनोद ।।१६।।

इति श्री षोडस ज्ञातीय पुष्करना कवि वृंदावन विरचितायां यमकालंकार सतसया संपूर्ण ।। लिखितं जोसी सूरतराम ऊदैरांमेरण वाचनार्थ राजे श्री अमृतराव० ।।

विषय—यमकालकार के अव्यपेत और व्यपेत नामक दो भेदों और उनके भिन्न भिन्न प्रयोगों का वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

गुन रस सुष अमृत वरस वरस सुकुल नभ मास ।
दूज सुकवि कवि वृंद ए दोहा किए प्रकास ।।१४।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल का उल्लेख है, पर ठीक ठीक समझ में नहीं आता। लिपिकाल भी नहीं दिया है। जिस हस्तलेख में प्रस्तुत रचना है उसमें अन्य दो रचनाएँ 'नखशिख' बलभद्रमिश्र कृत और 'मानमजरी' नददास कृत भी हैं। मानमजरी अपूर्ण है।

संख्या ३६७. सरसरस, रचयिता—बृजनाथ त्रिविक्रम सुत, स्थान—भरोच, पत्र—१२, आकार—६।। × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ६२, पु० स० ६।

आदि—।। श्री गणेशायनमः ।। अथ सरस रस लिख्यते ।।

गुर गनपति गोपाल के चरन कमल चितु लाइ ।
भाषत हो अब सरसरस रसिकन कों सुखदाइ ।। १ ।।
राजत है दिल्ली तखत नो रस साहि नरेस ।
लियो निराजी जोर तै राजी करि सब देस ।। २ ।।

मध्य—पृ० १२

मुग्धा ।। चलन चलन सब कहत है लखत नऊढा बाम ।।
पूछति अपनी सखिनि सों कित जैहै घनस्याम ।।७६।।
मध्या ।। भोर पयानो कीजियें बात कही पिय राति ।।
रैनि घटत तन घटत है प्रात होत पियराति ।।७७।।

अंत—मूर्छा ।

बिरह बहै अति दुखित है बोलति नांहिन बैन ।
देकै बरसु जिवाइ लै अधजल डारं नैन ।।५०।।
दसम भेद जो बिरह को सो मति काहू होइ ।
नाइक के अरि को वहै तिय की सोतिन सोइ ।।३५१।।

विषय--नायिका भेद वर्णन ।

संख्या ३६८. १. विचित्रालंकार (द्व्यर्थक कवित्त), २ चतुर्विध पत्री, रचयिता--बेणीमाधव भट्ट "प्रवीन" कवि, पत्र--१०, आकार--६$\frac{३}{८}$ × ६$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७५० (लगभग), लिपिकाल--सं० १७६८, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० २३५, पु० सं० ६ ।

आदि--।। श्री गणेशाय नमः ।। छपै ।।

सिद्धि बुद्धि जुग जुवति परम सुंदर अनूप अति ।।
रिद्धि बृद्धि संग लिये सुखद सहचरी सुगति मति ।।
लःछ लाभ सुत प्रगट मिष्ट मोदक भर निसदिन ।
सेवत सुर तेतीस रहत आनंदित छिन छिन ।
फल देत सकल मन कामना कल्प वृक्ष राजै सुघर ।
सब सुख "प्रवीन" मंगल करन सुलंबोदर उर ध्यान धर ।। १ ।।

मध्य--पृ० ६

घूंघट के कोट कोर राजत कगूरे तहां भोर पबरे तन की भीर अधिकारी हे ।
अलकें निसान भोहें करारी कमान सांधें नेनन के बानन की अनी अनियारी हे ।
नृपति मवासी रूप राजत प्रवीन तहां खोलत न क्यों हूं मुख मोन की किवारी हे ।
नेकु न लगाव अब कीजिये जतन कौन प्यारी तेरे मान को ये विकट गढ भारी हे ।।१३।।

अथ पत्री लिख्यते ।।

बरनों प्रेम प्रवास को सुनि उपजे सुख अंग ।
होत उछाह सनेह को मिलने की जु उमंग ।। १ ।।
पत्री चार प्रकार की रची सुघर के हेत ।।
प्रीति रीति जांनी परे बाँचत ही सुख देत ।। २ ।।
पिता गुरू भ्राता नृपति श्रेष्ठ परम पहिचानि ।।
लिखि पत्री इहि भांति सों प्रीति रीति उर आंनि ।। ३ ।।
सिद्धि श्री सर्वोपमा लाइक परम निधान ।।
गुन गंभीर उदार मति तुमसे ओर न आन ।। ४ ।।
उपमा जेती जगत में लिखिये कहा बखान ।।
कृपा द्रष्टि जेसी सदा करियो सेवक जान ।। ५ ।।
इहां कुशल हे रावरी सदां कुशल की चाह ।।
समाचार के सुनत ही जिय में होइ उछाह ।। ६ ।।

अंत--प्रीतम तुम जियकी सबे जानत हो निज रीति ।।
पत्री मे लिखीये कहा सबे आपुकी प्रीति ।। ७ ।।
प्रीतम प्रान सुजान तुम बिनु कछु न सुहात ।
हे दीजे दरसन आनि लिखत न बनत न और कछू ।। ८ ।।

भट्टवेणीमाधव विरचितायां चतुर्विधि पत्री चित्रालंकार द्विर्थ कबित्त संपूर्न शुभं भवतु सं० १७६८ पौष सुदि १५ शनौ लिखतं उदेपुर मध्ये भट्ट बृजभूषन जी पठनार्थं ।। श्रीरस्तु ।।

विषय--प्रथम १३ कवित्त प्रीति विषयक हैं । बाद में पत्र लेखन शैली चार प्रकार से वर्णन की गई है :--

१. गुरु पिता प्रभृतिन को--
२. मित्र को--
३. नायिका की नायिका के प्रति--
ङ. नायिका की पत्नी नायक के प्रति--

संख्या ३६६. पदावली (? रावण विषयक कथा), रचयिता--जन वैकुंठ, कागज--[illegible]शी, पत्र--५, आकार--८३/४ × ३३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--[illegible]०, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता--पं० वासुदेव तिवारी, ग्राम--भोरा, पोस्ट--मुहम्मदाबाद, जिला--आजमगढ़)।

आदि-- :o: :o: :o: :o:

"जन वैकुंठ उपेंद्र सामी सुनो कुंभकरन सो समतले ४१७
राग सारंग ताल ३
कुंभ करन न्रिप कह सिर नाइ।
मम निद्रा बाधत है पुरजन निर्जन ठाम सदन द्यो बनाई॥ ध्रु॥
सुनि दसकंधर विसकर्मा ते कह आलय बहु भांति बनाइ।
कैलास अकार· उतंग व्याम बांस्तिर्न कीन्ह जोजन समताइ॥ १॥
फटिक थंभ कंचन वैदुर्ज रतन मनि पचित गेह ललिताई।
मेरु गुहा सम कुंभकरन तह निद्रा बसि संतत सुषसाई (? सुषदाई)॥ २॥
रिषि मुनि देव दइत अहिगन गंधर्व जक्ष दसमौलि सताइ।
"जन वैकुंठ उपेंद्र सामि" सुनो गुनि तव दूत कुबेरु पठाई॥ ३॥१८॥

अंत-- ॥ राग बिलावल ताल ३॥
हिमवत विपिन दसानन जाई।
परम सरूप सकल विधि कन्या करत महातप ध्यान लगाई॥ ध्रु०॥
रावन विहसि कही केहि कारन तप करो नाम कहा केहि जाइ।
विहस्पति तनय कुसध्वज कन्या वेदवती मम नाम सुनाइ॥ १॥
मम कारन पितु ढिग आलय सुर असुर जछ वर भट समुदाइ।
विस्नु हेतु दुहिता सुनि निसि संबेस तात कह सुंभ रिसाई॥ २॥
तात मनोरथ विस्नु जानि तप करति सुने रावन विहसाइ।
विमान ते उतरि जाइ ढिग ह्वै कह प्रीश्र होहि मम बहु सुषदाइ॥ ३॥
काम बान पीडित रावन परसत कर वीश्र नहि दीन्ह छुश्राइ।
कुपित तापसी तृश्र घर्षन कर फल पैहो जो पाप चित आई॥ ४॥
गहत सरूप बलात निरषि कह मम सक नहिन हतो दनुराइ।
तुश्र बध निविति अवनि अवतरिहो कहि वेदवती अनल समाई॥ ५॥
कृत जुग वेदवती तप वरते महि उत्पती............
:o: :o: :o:
.... ललसाई॥ ६॥ २६॥
॥ राग सारंग ताल १॥
रावन दल सोर घोर पवन प्रलय ताइ।
सुनि धुनि अर्जुन अमात्य हय गरय वहु पयदाति समर विधि सनधभये विहसत दनुराइ॥ ध्रु॥
आर्जुन सनु जुधि हमारि कहु सुधि नृप धनुकधारी लरत उभय कटक तहा सुनि सोनि परिसाइ।
कीडा तजि गवागहे दानव सठओर्तु लहे हनत धाइ हाक त्रास दनुज बहु पराइ॥ १॥
--अपूर्ण

विषय—रावण संबंधी कथाओं का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। आरंभ के १६ पत्रे नहीं है । १७वें पत्रे के पश्चात् के दो पत्रे और २१वे पत्रे के आगे के ३ पत्रे भी लुप्त हो गए है ।

रचना साहित्यिक है । परन्तु खंडित होने के कारण विषय ठीक ठीक ज्ञात नहीं होता । जितने पद वर्तमान है उनमें रावण की तपस्या का वर्णन, उसके द्वारा कुबेर का पराभव, पुष्पक यान का छीना जाना, कुंभकरण के सोने के लिये विशाल भवन का निर्माण कराया जाना, कुसध्वज राजा की पुत्री वेदवती के साथ उसके तपस्या करते रावण का बलात्कार करना और वेदवती का रावण को शाप देकर अग्नि मे प्रविष्ट होना आदि कथाओं का वर्णन है ।

संख्या ४००. वृंदावन वर्णन, रचयिता—व्यास जी, पत्र—४, (पृ० ८६ से ९३ तक), आकार—७ x ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८१, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८३, पु० सं० ९।२५ ।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति ।। अथ व्यास जू के पद लिख्यते ।। वृंदावन वर्नन ।।

।। राग सारंग ।।

होहि मन वृंदावन को स्वान ।
जो गति ताको देहें ऐसी सो गति लहै न आन ।
वेगि बिसरि है कामिनि कूकरि सुनत स्याम गुनगान ।
व्रजवासिनि की जूठनि जेंवत वेगि मिले भगवान ।
जहाँ कलपतरु कामधेनु की वृंद बिराजत जान ।
बाजत जहाँ स्याम स्यामा को सुरत समर निसान ।
सदा सनातन राधा वन को प्रलै षसत नहि पांन ।
तीरथ और सकल तबहीं लगि जो ससि अरु भान ।

मध्य—मोहि वृंदावन राजा सो काजु ।
माला मुद्रा स्याम बंदनी तिलक हमारें साजु ।
जमुना जल पावन सु हमारें भोजन व्रज को नाजु ।
कुंज केलि कौतिक नेननि सुख राधाधव को राजु ।
निसि दिनु दहदिसि सेवा मेवा ताल पखावज बाजु ।
नृत्तत नट नागर भावत अति व्यासहि साधु समाजु ।।३१।।

अंत—धनि कलपतरु बंसीवट धनि वर विहारु रह्यौ छाई ।
धनि जमुना जाकौ जल अचवत होति सदा अघवाई ।
धनि रास की धरनि जिहि तूँ रुचि के सदा नचाई ।
धनि सखी ललितादिक निसिदिनु निरखत केलि सुहाई ।
धनि अननि व्यास की रसना जिहि रस कीच मचाई ।।३६।।

विषय—भगवद्भक्ति की महिमा का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—पृष्ठ ८६ से १५१ तक प्रस्तुत ग्रंथ लिखा है । इसके साथ निम्नलिखित ग्रंथ भी हैं :—

१. बधाई जन्म समय की
२. साधुनि के स्तुति के पद
३. असाधुनिकौ सरूप बर्नन

४. साधारन पद
५. किशोर जू सिंगार पद
६. रास पचाध्यायी
७. साखी

अंत मे "मिती सं० १७८१ पोस बदि ८ बृंदावन" लिखा है।

संख्या ४०१क. विनय (करुणा) के पद, रचयिता--ब्रजदूलह, कागज--देशी, पत्र--१२, आकार--१२ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५०, खंडित रूप--पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ अथ करुना के पद लिख्यते ॥
अधम अगाधि अधिक अपराधी अघजनमंधि विशालं ॥
क्रियाहीन गुणहीन दीन जन करत सकल प्रतिपालं ॥
जप तप ध्यान ज्ञान व्रत संजम जानत नहि निकालं ॥
व्रज दूलहै करुणाकर केशव भेदत भव भ्रम जालं ॥ १ ॥
पद ईमन ॥ मै तुम्हरो दृढ़ भक्त कहाऊँ ॥
फलदाता इष्टदेव असांबत तुम सम मन मै येक न लाऊं ॥
दृढ़ विश्वास आस एक तुम्हरी राति दिवस तुम्हरे गुन गाऊं ॥
तुम्हरे द्वार परयो श्री माधव द्वार द्वार क्यो लोग हसाऊं ॥
तुमसे स्वामी पाय कृपानिधि कौन देव को नाम को नाम धराऊं ॥
मेरे एक टेक करुणानिधि तुम तजि और देव नहि ध्याऊं ॥
जो कछु देहु लेहु मन राजी नाहि देहु तोहू सुख पाऊं ॥
तुम्हरो होय सुनो व्रज दूलहै जग पतितन क्यो सीस नवाऊं ॥ २ ॥

मध्य--॥ (राग) सोरठ ॥
कृष्ण भक्ति भव सिंधु तिरावे ॥
भक्ति प्रबल अघ ताप मिटावै बिना कष्ट वैकुंठ पठावै ॥
शम दम जप तप सकल तिरावें ज्यो ज्यों तिरे महा दुष पावै ॥
श्रम विन हरि पद भक्ति मिलावें शिव विरंच जो पद नित धावै ॥
पूजो क्यों न देव जो भावै कृष्ण भक्ति विन पुनि भव आवै ॥
जो नर उर हरि भक्ति बसावे ताकूं तजि हरि अंत न जावै ॥
भक्ति विराग ज्ञान उपजावे वेद पुरान शास्त्र सब गावै ॥
व्रज दूलहै प्रभु भक्ति सुहावे भक्ति हाथ हरि आप बिकावे ॥३१॥

अंत--रुण झुण डोलत तुतले बोलत मृदु मुसकनि मै रोना ॥
देषि देषि सुर नर मुनि जन सब तम मन सुरति भुलौना ॥
जो निरषें हित चित करि नित नित फिर फिर जनम न होंना ॥
कृपा करो व्रज दूलहै ऊपर श्री जसुमति के (छौना) ॥ ३ ॥
पद................(आगे पत्र खंडित है)

विषय--कृष्ण भक्ति विषयक पद रचना।

संख्या ४०१ख. बारहखडी (भक्तपत्रिका), रचयिता--ब्रजदूलह, कागज--देशी, पत्र--७; आकार--६¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३८ खंडित (केवल पत्र संख्या २ नहीं है), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९२६, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री भक्तपत्रिका लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

मैं बरनत बाराषरी कृष्ण कृपा के हेत ।
"व्रजदूलहैं" कीजै कृपा प्रभुपद भक्ति समत ।। १ ।।
कका कमलापति करुणानिधे केशव कृष्ण कृपाल ।
करो कृपा मो कुटिल प जानि कठिन कलिकाल ।। २ ।।
षषा षबर लेहु अब दास की परयो प्रबल भवबीच ।
काम क्रोध ग्रास कुमति म परयो कर्म कृत कीच ।। ३ ।।
गगा गर्व हरयो गिरधर धरयो गज की सुनी पुकार ।
अहो नाथ अति दुषित मैं करो प्रबल भवपार ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत—ज्ञज्ञा ज्ञानदहु निज चरन की शरन परे की लाज ।
त्यारो मुहि भवसिंधु ते व्रजदूलहैं महाराज ।।३७।।
यह बरनी बाराषरी प्रेम भक्ति की षानि ।
जो गावै सीषै सुनैं मिलै कृष्ण पद ज्ञान ।।३८।।

इति श्री भक्त पत्रिकायां व्रजदूलह कृत संपूर्णम् ।।

विषय—'क' से लेकर 'ज्ञ' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर कृष्ण भक्ति वर्णन की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में केवल पत्र संख्या २ नहीं है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल दूसरे ग्रंथ, 'सुदामा की बारहखड़ी' के आधार पर संवत् १९२६ है । दोनों ग्रंथ एक ही हस्तलेख में है ।

संख्या ४०२क. दानलीला, रचयिता—गो० श्री व्रजभूषण जी "दास", स्थान—कांकरोली, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ३।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६५ से १८३३ के बीच, लिपिकाल—सं० १८४८, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली. हि० ब० ३१, पु० सं० ६ ।

आदि—।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। राग गौरी अथवा बिलावल ।। दान ।
अहो प्यारी मनिन जटित की एंडुरी और रतन जटित को माट ।।
दधि ले चली चंद्रावली अहो मोहन रोक्यो घाट हो ।। १ ।।
व्रखभान लडेती दान दे ।। १ ।।
अहो प्यारे सबै सयाने साथ के और तुमही सयाने कान्ह ।।
लिख्यो दिखाओ रावरो तुम किहि पुर लीनो दान हो ।।नंदराय लला घर जान दे ।।२।।
मध्य—अहो प्यारे गुजराती डाकोतीया लेत गहन में दान हो ।
जो उनमें हो लाडिले व्रखभान बबा राखे मान हो । नंदराय० ।। १२ ।।
अहो प्यारी जनम जनम की हों कहों तुम सुनहु सभग सब साथ ।
असुभ लगन ते सुभ करो जोपै नेकु दिखावहु हाथ हो ।।१३।। व्रख भान ।।१३।।
अंत—अहो प्यारी को लकुटी आडो करे और कोन सके कहि बात ।
रस ही रस बस ह्वै गए मेरे सुफल भए सब गात हो ।।२३।। व्रखभान ।।
अहो प्यारे जगत अनेक सुहावनी और बतरस बढ्यो ब्योहार ।।
चतुरन मन दोऊ बने 'दास' बलि बलि जाय हो ।।२४।।
नंदराय लला घर जान दे ।।२४।।

दान लीला संपूर्ण ।। सं० १८४८ मि० आश्विन कृष्ण १४ लि० जीवन भट्ट स्पहाड मध्ये ।।

विषय---दधि बेचने जाती हुई गोपियों को रास्ते मे रोककर श्रीकृष्ण द्वारा उनसे दधि दान माँगने का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत ग्रंथ में पहले 'सांझी के पद' और बाद में यह 'दान लीला' लिखी हुई है ।

संख्या ४०२ख. सांझी कीर्तन, रचयिता---गो० श्री व्रजभूषण जी, स्थान---कांकरोली, कागज---देशी, पत्र---२, आकार---१०। × ५।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---४०, परिमाण (अनुष्टुप्)---८०, पूर्ण, रूप---साधारण, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---सं० १७६५ से १८३३ के बीच, लिपिकाल---सं० १९६०, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० २५, पु० सं० १ ।

आदि---।। श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ।। अथ सांझी लिखियतु हैं ।।

सुनहु कुंवर वृखभान की हम सब आई ब्रज नारि हो ।।
तुम नित जात फूल बीनन को पूजन सांझी हेत ।।
आज सबै ब्रज बनिता तुम संग चलिहैं कहों संकेत हो ।। १ ।।
सुनत बिहंसि उठी कुंवरि राधिका गई कीरति के पास ।।
आज सबे ब्रज नारि हमारें संग चलत इहि आस हो ।। २ ।।

मध्य---पाई सुधि नंदनंदन गई ब्रज बनिता बीनन फूल ।।
आतुर ह्वे अकुलाय चले हरि कालिंदी के कूल हो ।।३०।।
दूरि देखत लतान की रंध्रन अपनो बदन दुराय ।।
निरखि रूप वृषभान कुवरि को मन में अति सुख पाय हो ।।३१।।
पूरन हिमकर सम मुख प्यारी को देखत मन गयो भूलि ।।
त्रिया रूप धरि कर डलियां ले आपुन बीनत फूल हो ।।३२।।

अंत---ललिता निरखि परम सुख पायो उर आनंद न समाई ।।
देत असीस सदा यह जोरी सुख विलसो मन भाई हो ।।५३।।
लीला ललित स्याम स्यामा की बरनत बरनी न जाई ।।
श्री बल्लभ पद रज प्रताप तें व्रजभूषन कछु गाई हो ।।५४।।
इति सांझी संपूर्ण ।।

विषय---राधाकृष्ण की साझी लीला का वर्णन ।

नीति विनोद भाषा, रचयिता---गो० श्री व्रजभूषण जी महाराज, निवास स्थान---काँकरोली, कागज---देशी, पृष्ठ---३, आकार---१०½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---४४, परिमाण (अनुष्टुप्)---६६, पूर्ण, रूप---साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल---सं० १७६५ से १८३३ के बीच, प्राप्तिस्थान---श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या-विभाग, काँकरोली, हि० बं० सं०--३६, पु० सं० १४।१० ।

आदि---।। श्री द्वारकेशो जयति ।। अथ श्री व्रजभूषण जी महाराज बडे तातजी कृत नीति विनोद भाषा में लिख्यते ।।

प्रथम तो वैष्णव होय सो अन्याश्रय न करें ।
धर्म करनो सो मन प्रसन्न सों करनो ।। २ ।। खांविंद को प्रसन्न राखे सो चाकर ।। ३ ।।

समय में बुरि चले तो दुख लग.य के कहे सों साबधर्मो ॥ ४ ॥ खाविंद प्रसन्न होय तब अरज करे तो लगे ॥ ५ ॥ सारा उठे पीछे तुरत अरज न करे ॥ ६ ॥ स्वाधिन खाविंद सबको भलो चाहे ॥ ७ ॥

मध्य--सांच कुं आंच नहीं ॥८०॥ स्त्री स्नेह तो ओर भयते बस रहे ॥८१॥ अश प्रिय नहीं सो काहु काम को नहीं ॥८२॥ अपने नाम तें प्रसिद्ध सो उत्तमोत्तम ॥८३॥ पिता के नाम सुं प्रसिद्ध सोहु उत्तम ॥८४॥ माता के नाम सुं प्रसिद्ध सो मध्यम ॥८५॥ स्त्रि सुसर के नाम सें निकष्ट ॥८६॥ बड़ी मजलस को बेठन वारो दगा न खाय ॥८७॥ पतीव्रता सो अभागे पती को बेठें ॥८८॥

अंत--दुर्जन सनेह फुटे पीछे संधे नहीं ॥१४५॥ लोभ हे वहां ओर औगुन को काहा काम हैं ॥१४६॥ सत्य हे तो तपस्या को काहा काम हे ॥१४७॥ मन पवित्र न होय तो सर्व धर्म वृथा ॥१४८॥ सौजन्य सो अपनो होय ॥१४९॥ महिमा हे तो गेंना को काहा काम हे ॥१५०॥ उत्तम विद्या हे तो धन को काहा काम हे ॥१०१॥ अपजस हे सोई मृत्यु हे ॥१५२॥

विषय--नीति के १५२ वाक्य लिखे है ।

विशेष ज्ञातव्य--यह "धौल" की पुस्तक है । इसमें करीब ११-१२ पुस्तकें लिखी हुई है । १ से ३१ तक पृष्ठ सख्याएं लगी है । बाद में पृष्ठ सख्या नही लगी है । पुस्तक जीर्ण और सिली हुई है ।

संख्या ४०३क. प्रभुपूर्ण पुरुषोत्तम को रूप तथा गुण नाम वर्णन, रचयिता--गो० श्री व्रजभूषण जी दीक्षित, पत्र--२७, आकार--३। x ५॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--२१८, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८३०, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ४२, पु० सं० ७।

आदि--श्री वल्लभाधीश चरण कमलेभ्यो नमः ॥ अथ पुष्टि मार्ग स्थित प्रभु पूर्ण पुरुषोत्तम कोरूप तथा गुण तथा नाव वर्णन करत हें गोस्वामि श्री व्रजा भर्ण दीक्षिते ख्या स्यानं ॥ रागुसारंग जे वसुदेव कीए पूरण तप वि तेईफल फलित श्री बल्लभ देव ॥१॥ पुष्टिमार्गीय भक्तन कों प्रगट कीए भूमि विषे । फल मुख्य प्राप्त के निमित्त जे कृष्ण भगवान् पूर्ण पर ब्रह्म श्री वसुदेव जी को तपपूर्ण कीए ॥

मध्य--पृ० २७ राग हमीर ।

प्रगटित सकल सृष्टि आधार ।
श्रीमद बल्लभ राजकुमार ॥ १ ॥
ध्येयं सदा पद अंबुज सार ॥
अगनित गुन मह मांजु अपार ॥ २ ॥
श्रीकृष्ण प्रथम श्री वसुदेव जू को वरदानार्थ प्रगट भए ।
तेई संपूर्ण सृष्टि के आधार ।
उत्पत्ति स्थिति प्रलय के कर्ता कृष्ण सदानंद फलरूप तेई अब प्रगट भए सो कहत हैं ।

अंत--प्यारी जू को बदनु पान पन्यों जों अद्भुत नेंन को इह आहार ॥
सकल पाक पीय प्यारी सिखए अमगन को परसार ॥ २ ॥ ३३ ॥
श्री ॥

इति कीर्तन अर्थ तथा पद संपूर्ण संवत् १८३० के पौस वदि २ बुधे प्रातः लिखितं विट्ठल नाथजी श्रीरस्तु ॥

विषय—श्रीकृष्ण के चरित्र और गुण वर्णित हैं।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक मे प्रथम 'नवरात्र के कीर्त्तन' और बाद में ये कीर्त्तन लिखे गए है।

संख्या ४०३ख. बल्लभाख्यान सटीक, टीकाकार—व्रजाभरण जी दीक्षित, कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—७ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६२, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० ब० ४५६, पु० स० ११।

आदि—**॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री वल्लभाचार्य चरण कमलेभ्यो नमः ॥ श्री गोविंद देव कृपया श्री विट्ठल नाथ जी चरण कमलेभ्यो नमः। श्री गोविंद देव कृपया श्री व्रजाभरण दीक्षितेन व्याख्या क्रियते ॥ तत्र एक समें श्री गुसाईं जी श्री गोकुलतें राजनगर पधारें। तासमें असारुआमें भाइला कोठारी के घर पधारे। तहां भाइला कोठारी ने अपने जवांई गोपालदास रूप पुराके बासिकों प्रसाद लेवेको बुलाये। तहां श्री गुसांई जी के दर्शन कीये। तब श्री गुसांई जी पूछे। यह कोन हे। तब भाईला कोठारी ने कह्यो जो गोमती को बर हे।**

मध्य—**पृ० ४६ राग सामोरी। श्री विट्ठल सुख कारि नामे निःपाप थाय नर नारि। दुर्गति सकल निवारी प्रगटचा व्रजपतिराज बिहारी ॥१॥ मायिक मत जेणें खंडयो, भक्तिमारग बहुपेरे मंडयो। उत्पथ जन सर्व दंडयो, मुरख हेतु कुशब्द वितंडयो ॥२॥**

टीका—**श्री हरिः ॥ श्री लक्ष्मी सहित विट्ठल नाथ जी सुख कर्ता भक्तन कों निज के नामोच्चारण तें निःपाप नर नारि होत हे। दुर्गति सकल निवारण करे। व्रजपति रास विहार कर्त्ता प्रगट भये सो कोंन तहां कहत हे ॥१॥ मायिकमत जिन खंड कीयो। भक्ति मार्ग जिन बहुत प्रकार सों मंडन भूषन रूप स्थापित कीयो। उत्पथ कहतें पाखंडी जनकों दंड दीये। मूर्खन के हेतु कहे निमित्त कुशब्दनकों वितंडा कहे। व्यवस्था रहित कहे ॥२॥**

अंत—**पुत्र पौत्र सुख केम कहू जो तू मुख मांए करे। श्री विट्ठल कल्पद्रुम फल्यो शाखा प्रसरी अनेक रे रसना ॥१४॥ इति श्री गोपालदास कृते बल्लभाख्याने कडुवा नवः समाप्ताः।**

टीका—**पुत्र पौत्रादि सुख में कहा कहूं मुख में एक ओर श्री विठलनाथ कल्पद्रुम फल्यो ताकों शाखा अनेक बहुत प्रसरी, फेली यातें आगे वाणीहूं को गम्य नही कृपा करे तो भक्त होई ॥१४॥ इति श्री व्रजाभरण दीक्षित कृते वल्लभाख्याने वल्लभायां कडुवां नवमः ॥**

विषय—श्री आचार्य जी महाप्रभू जी और श्री गुसाई जी के चरित्र का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—मूल ग्रंथ गुजराती भाषा का है जिसकी प्रस्तुत टीका व्रज भाषा मे है।

संख्या ४०४. नित्य सेवा विधि (आह्निक), रचयिता—गो० श्री व्रजराय जी, निवासस्थान—अहमदाबाद, कागज—देशी, पृष्ठ—३७, आकार—५¾ × ७¼ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६६६, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० ब० ६१, पु० स० ५।

आदि—**॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ नित्य सेवा विधि लिख्यते ॥ नत्वा श्री वल्लभाचार्यान् पुष्टिमार्ग प्रवर्त्तकान्। तदंगीकृत भक्ताना माह्निकं सु विचार्यते ॥१॥ श्री विट्ठलेश पादाब्ज परागान् भावयाम्यहम्। पुष्टिमार्ग प्रवृत्तानां भक्तानां बोध सिद्धये ॥२॥ अथ सूर्योदय तें पहिलें रात्रि घडी ६ अथवा ४ रहे तासमें सोवत ते उठि भगवन्नाम शरण मंत्रादि लेत रात्रि**

को वस्त्र बदलि हाथ पाउ धोय कुल्ली ३ करि उत्तर मुख बेठि । नाम श्री आचार्य जी महाप्रभु की ले विज्ञप्ति सों दंडवत करिये ।

मध्य--पृ० १८

गुंजा माला हार के नीचे धराये । ततश्चन्द्रिकार्पणम् ।। मिलिनान्यो न्यांग कांति चारु चिवय समं विभो । अंगी कुरुध्वोत्तमांगे केकि पिच्छमति प्रियं ।।१।। चंद्रिका दाहिनी दिसि धरिये । ततो अंजन कुर्यात् । गोपस्त्री दृक्स्मितं श्रीमत् भृंगारात्ममंजनं । शोभार्थ मात्म वदन मंगी कुरु व्रजाधिप: ।।६३।। श्याम स्वरूप होय तो मीना के अलङ्कार धरिये । गौर स्वरूप होय तो काजर को अंजन करि भ्रुव पर बिंदुका करिये । तत: वेणु धारण ।

अंत--अरु एतन्मार्गीय के मुख सों श्रीमद्भागवत कथा ग्रंथादि श्रवण करिये । उपरांत अलौकिक तथा लौकिक कार्य होय तो करिये । पाछे इछा होय तो स्वस्त्री समाधान करिये । परंतु विषयासक्ति विशेष न राखिये । उक्तं सन्यास निर्णये । विषयाक्रांत देहानां नावेशः सर्वदा हरेः । किंच । पाछें स्वच्छ होय चरणामृत ले निरोध लक्षण को पाठ करि सोइये । श्री मदाचार्य जी को श्री गुसाईं जी को स्मरण करि अंतःकरण भगवद् लीला विखें राखिये । निद्रा भावार्थ ततु सुखार्थं करिये । अरु चतुःषष्टि अपराध तें सावधान रहिये । या भांति सर्वदा रहे । कृतार्थ होइ । किमधिकम् । श्री वल्लभाचार्य मते फलं तत् प्राकट्य मंत्रा व्यभिचार हेतुः । यमेव तस्मिन्नवधोक्त भक्ति स्तत्रोपयोगो खिल साधनानां ।।२०४।। इति पुष्टिमार्गीयाह्निकम् । गोस्वामि श्री व्रजराज जी कृत संपूर्णम् ।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।

विषय--पुष्टिमार्गीय वैष्णवों को प्रात काल से लेकर शयन पर्यंत किस प्रकार आह्निक कर्म और भगवत् सेवा करनी चाहिए प्रस्तुत पुस्तक मे उन सब बातो का वर्णन है ।

संख्या ४०५. भाषा ज्योतिष, रचयिता--"राव शकर दास, कागज--देशी, पत्र--३३, आकार--८१/२० × ५१/२० इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--८६५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सवत् १८६० वि०, प्राप्तिस्थान--प० शिवकुमार पाडेय, ग्राम--धाता, पो०--धाता, जिला फतेहपुर ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। श्री रामानुजाय नमः ।। अथ भाषा जोतसलिख्यते ।।

।। दोहा ।।

समुझ परत नहिं संस्कृत जाकी जग मैं साष ।
ताते जोतिक भेद कछु बरनत भाषा भाष ।

।। अथ दशकर्म निरूपते ।।

।। कवित्त ।।

रेवती और उतरा रोहिनी म्रगासे सिर मूल अनुराधा हस्त सुभ स्वाती उर आनिअैं ।
तुला वृष कन्या मिथुन गुन लग्न चारु सोमे बुध सुक्र गुरुवार सदा जानियैं ।
मार्ग आषाढ़ माह फालगुन बैसाष जेठ परमाश्री तृतीया तीज पांचैं ठीक ठानियैं ।
छठ औ सातैं आठै ग्यारा औ त्रोदस जान परम समेत बिधि ब्याहु की वषानियैं ।

अंत-- ।। वय भाव ।।

नैन बहन बहु पीर होइ । राज समीपी तुल्य होइ ।
रिपु नास सुचित्त मन तै न होइ । गुदा अंग अति पीड होइ ।
पशुवंत बहु विध वषान । वय भाव के तव हपर लिए जान ।।

इति श्री भाषा जोतिक । श्री रावसंकर दास कृतौ लग्न प्रकास द्वादस भाद । संपूर्ण । संवत् । १८६० पौष वदी १२ शुक्रे सपूर्ण समाप्त लिख्यते । लाला दलगंजन । मुमांग । मन मौज की गढ धुरिया गंज । श्री ।।

विषय—फलित ज्योतिष विषय वर्णित ।

संख्या ४०६. जोगरतन, रचयिता—शंकरद्विज, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—११¼ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०१ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० सीताराम जी मिश्र, ग्राम-अहरौली, पोस्ट-सलेमपुर, जिला-गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री शिद्धेश्वरय्यैं नमः ।।

गौरिगणेश सारदा शंभु श्वरीश्वति ।
सा ब्रह्मा कमलापति सहित वन्दो गुरु पद कंज ।।
करहु कृपा मम उर वसि वुद्धि करहु प्रगास ।
"शंकर द्विज" निज जानिके हृदय करहु नेवास ।।
वार वार शुमिरन करो कर जोरि करो प्रनाम ।
करहु कृपा मम नाथ तुम दुष्ट वुद्धि पुनि जाए ।।
वैठे रहो निज भवनते चिहुकि उठे जीव माह ।
अस मन भै पुनि मन मे किछु भेषज करो उचार ।।
औषधि इ सभ लिषौ विचारी............
वत्सर इंदु शून नंद महि कन्या कृष्ण दि(व)स निज जान ।
अर्कवार वि उदयेते घटी नेत्र सूभ जान ।।
अस दिन शुभ शुदीन जानि के किन्हो ग्रथ प्रगास ।
"शंकर" अस पुनि क(ह)तु है "गोगरतन" है नाम ।
तुह प्रताप गुण गाइहो वेद ग्रंथ गुन पाइ ।
ओषधनाथ विचारिहौ सरस पुट पुनि हिम
कलक फाट अवलेह पुनि क्वाथ चूर्ण वटि....

:o: :o: :o:

अंत— ।। अथ नाडी लछन ।।

स्त्रि वाम पुरुष कर दक्षिण अगुठा मुल नाडि कर जान ।
अति चंच नाडि पुनि चले । ताके पित वहुत वल करे ।।

:o: :o: :o

अथवा

लवातिति अवर वटेर । धमनि चलै पित्त कर फेर ।।
गवरा मेढुक अवरी कुलेर । इन्ह कहव वाए कर फेर ।।
हंस कपोत चले पुनि जैसे । ताके कफ कहब पुनि तैसे ।।
सर्पाकार गमन करेव धमनि वाय पित्त कहत पुनि तैसे ।।
नाडि हंस पित्त चले पवना ववुल चाल वाए करे गमना ।।
तिनि अ..............................

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—आयुर्वेद विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आरभ के केवल दो पत्रे मिले हैं । रचनाकाल संवत् १६०१ वि० है । लिपिकाल का पता नहीं ।

संख्या ४०७क. तत्वविवेक, रचयिता---शकराचार्य, कागज---देशी, पत्र---५, आकार ---११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---८, परिमाण (अनुष्टुप्)---८०, पूर्ण, रूप---प्राचीन, गद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि---श्री गणेशाय नमः ।। अथ तत्व विवेक लिख्यते संकराचार्य कृति श्री परमात्मने नमः ।।

ओ ब्रह्म एक शुध चैतन्य दुसरि माया, ब्रह्म माया कौ जोगः ।।
जैसे ब्रछ को छाया ब्रछ छायासित नहीं ।।
ब्रह्म वीन छाया नहीं ब्रह्म माया अैसो जोग :: ।।

माया जड़ ब्रह्म चैतन्य ।। माया उपर ब्रह्म ।। ब्रह्म उपर कोइ नाही ।। **एकारो करियते ब्रह्म ।। तव माया इच्छाधरी ब्रह्म को सक्ति तीन ।।** इछ्या क्रिया ज्ञान ।। **माया की सक्ति तीन ।।**

संसय ।। मिथा ।। विर्प्राय ।। माया का नाम पच ।। माया कहीये ।। **आकास कहिये ।। सुनि कहिये ।। प्रकृति** कहिए ।। सक्ति कहिए ।।

मध्य---

मन वुधि चित्त अहंकार ।। चित्त अगिन को सरूप ।।
अहकार वाय को सरूप ।। मन तोय कौ सरूप ।।
वुधि पृथी कौ सरूप ।। इति चतुष्ट अंतस्करन ।।
सबद आकास कौ सरूप ।। सपरस वायु कौ सरूप ।।
रूप अगिन कौ सरूप रस पानी को सरूप ।। गंध प्रथी कौ सरूप ।।

इति पंच तनमात्रा कहिए ।।

अंत---पंच तत्व को विनस ।। नव तत्व को अवतरे ।। दोइ सरीर कौ विधंस कीजे ।। **तव पद** पाप्ति होय ।। उर मिषहु सीत उस्न ।। सुष दुष ।। मान ।। अपमान ।। ऐहु गयं **स्वछंद मुकभा ।।** वाचा च्यारि ।। परा ।। पसार्ता ।। मधिमा ।। वेषरी ।। गंगाघोष ।। प्रति **वसते** ।। कहन हारा झूटा ।। गंगा तीरे घोष ।। प्रतिबसते ।। कहन हारा साचा ।। लोह चुंबक न्याय ।। अरहट ।। घटक न्याय ।। अैसो ब्रह्म जज्ञास कथं ।। सन्यास च्यारि ।। बोध ।। कुटी-**चर ।।** हंस परमहंस ।। परमहंस सन्यासी ।।

इति श्री संकराचार्य बिरंचिते ब्रह्म जज्ञास उपनिषद् वेदांत संपूर्ण ।। तत्व विवेक ग्रंथ ।।

विषय---ब्रह्मज्ञान का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएं सकलित है :---

१. तत्व विवेक---शकराचार्य	पत्र सख्या ६--१० तक।
२. गोरख गणेश सवाद	पत्र सख्या १०--१३ तक।
३. पच सस्कार	पत्र सख्या १३--१४ तक।
४. प्रश्नोत्तरी	पत्र सख्या १४--२१ तक।

संख्या ४०७ख. गगा पुष्पाजलि, रचयिता---"शकराचार्य" (?), कागज---देशी, पत्र---३, आकार---१०½ × ६¾ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---८, परिमाण (अनुष्टुप्)---२८, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री प० अमरनाथ मिश्र, असवरनपुर, पो०---ओइना, जिला---जौनपुर।

आदि---श्री गणेशाय नमः ।।

सगरज तारिणि विश्व विलासिनि भाविनि देव सुरेंद्रनते ।
जल भवजन्म मुरारि हरा चितपाद सरोरुह हंसगते ।।

कलि कृत कल्मष नाशिनि तारिणि भक्त जनेष्टद भावरते ।
जय जय हे हर मौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हंसगते ॥ १ ॥
हिम गिरि नंदनि नेत्र कटाक्ष दभंग सुलक्षित रोष परे ।
जलमद रूप विलासिनि नीरज वीचि कराकर वल उपरे ॥
क्षिति तल भूषणि सागर चारणि कारिणि वारि सुधामधुरे ॥
जय जय हे हरमौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हंसगते ॥ २ ॥

अंत--तव तट वासि विलासित धामन योगि जनार्पित तीर वरे ।
सुरवर कामिनि कुंकुम चंदन पुष्प फलार्चित नीर धरे ॥
कलि भवनाशिनि सवक पोषणि दुष्ट जनेपि च मुक्त करे ॥
जय जय हे हरमौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हंसगते ॥ ६ ॥

:o: :o: :o:

भवे मोहावर्त्ते विषम विषय: पवग गण: प्रकीर्ण: तापानां तृतीय जल धौमानि पतितं ॥ महामोहाधांक्षं विगत गमने पाप जटित महामाये गंगे चरण कमले देहि शरणम् ॥१०॥ श्रुती श्रध्धा वद्धा गुरु वचन वाचामृत रस मुहु: पीत्वा गंगे परमपदया नाभिलषित: ॥ शुचि: प्रात. सायं यदि पठति नित्यं तव तटे सपुष्पैरंकार्यं: स्तवन विधि यंजोति नियम् ॥११॥

इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं गंगापुष्पांजलि स्तोत्र समाप्तम् ॥

विषय--गंगा माहात्म्य वर्णन ।

संख्या ४०८. बैताल पच्चीसी, रचयिता--शभु, कागज--देशी, पित्र--१०४, आकार--६ २/१० × ६ ५/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३५२, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--संवत् १८०६ वि०, प्राप्तिस्थान--श्रीयुत गोपालचंद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (स्थायी पता--मोहल्ला-नजीराबाद, कोठी नं० ११७, लखनऊ) ।

आदि--श्री गणेशाय नम: ॥

॥ दोहा ॥

छबि कदंब लषि अंब के उमडतु मोद अषंड ।
कलरव करि करिवर बदन फेरत सुंडादंड ॥

॥ कवित्त ॥

एक समै गिरिराज की नंदिनी आई अन्हॉन कहूँ सरसी तें ।
भासुर भाल दियें दल कौंल को आनन सों छबि की छबि जीतें ।
सो हठि लीबे कों सुंडि पसारी तहाँ गनना क आइ अभीतें ।
चीन्हि कै चोप सों दौरि मनौ हरि लेत सुधा अहिराज ससी तें ॥ २ ॥

॥ छंद हरिगीतिका ॥

धुव धरन बलदल मलन जिन अ.चरन कृत जुग के किए ।
सनमान दान विधान जज्ञ विधॉन कै जग जस लिये ॥
सुरराज कुल बल कुमुद को मुद दॉनि पूरन इंदु भो ।
निज बंस बारिज को दिनेस तिलोक चंद नरिंद भो ॥
पुनि भयो आनद कंद पृथ्वीचंद नृप ताको तनै ।
भुज जोर सों जुरि जंग में जमराज हू नहि जो गनै ॥
पुनि भयो ताको अजयचंद अरिंद कुल बल जिन हने ।

अंगमगन जाको जस अजों सुर मुनि असुर जन गन भनै ॥ ४ ॥
तिनके भयो पुनि देवराउ प्रचंड रैया राउ है।
रनरंग निरखत बढ़त जाकें चौगुनो चित चाउ है॥
पुनि भयो भैरव से उदंड-प्रचंड भैरव वासु है।
हरि साहिबी अरिवरन की गिदरोन दीनो बासु है॥ ५ ॥
तिनके धराध्रुव धरन कों नृप भयो ताराचंदु है।
जिन करि अकंटक भुव हरचो सब प्रजनि को दुष दंदु है॥
संग्राम राउ भयो बलो संग्राम दूलहु ताहि के।
अति धवल कवल समान जगजगि मगि रह्यो जसु जाहिके॥ ६ ॥
पुनि कनकसिंह नरिंद ग्रीषम भानु सो जिनके भयो।
जिनको समर भट भीर सो छन भरि न तन अंगयो गयो॥
पुनि भयो पृथ्वीराज पृथ्वीराज पृथु कैसो कियो।
जस जूह जिन जग में लियो वनवास वैरिन कों दियो॥ ७ ॥
तिनके पुरंदर सो प्रबल प्रगटचो पुरवरराउ है।
जिनकी महाभय मानि कैं नृप किहि न परस्यो पाउ है॥
करवाल जब कर लेहि तब रिपु काल कहि कहि कवि भनै।
रन होइ सन्मुष सुभट को जमराजहू नहिँ जो गनै॥ ८ ॥
पुनि भयो अरि मदकदन मरदन सिंह रैया राउ है।
जिन पाइ पति वसुमति हिएँ दिन दिन बढ्यो चित चाउ है॥
कलिजुगन को पितु ह्वै रह्यो तिहि ग्रोम तें डरि डरन सों।
तजि त्रासु वृष मन मुदित ह्वै फूल्यो फिरै चहुँ चरन सों॥ ९ ॥
जगबंद आंन(?द) कंद चद्र कुटुंब को कैरव भयो।
रणधीर वीर गभीर निरमल सुजस जिन जग में लयो॥
जरिजात तासु प्रताप पावक तें घनी अरिवर अनी।
तिनके भयो सुरनाथ सो रघुनाथ नृप वगिसर धनी॥

॥ दोहा ॥

सभा मध्य बैठे हुते एक समै रघुनाथ।
वीर धीर उदभट सुभट सुजन बंधु लिये साथ॥११॥
कह्यो कृपा करि "संभु" सों जिय मे मानि सनेहु।
यह बेताल कथा हमैं भाषा में करि देहु॥१२॥
नंद व्योम धृतिजांनि कै संवतसर "कविसंभु"।
माघ अँध्यारी दुंज कों कीन्हो तब आरंभु॥१३॥
प्रथम वंस वर वंस के वरनि कहे सब भूप।
ओज पुंज गुनगनंनि सी सहास सील अनूप॥१४॥
पंचविंस वेताल में कहत कथन को सारु।
जाहि सुने तें चित्त में होति चतुरता चारु॥१५॥

अंत—सुन्यो नियाउ भूप सों जवै। सरक्यो मृतकु कांध ते तबै॥
चलत पंथ में लगी न बार। लग्यो दौरि कै वाहीं डार॥

:o: :o: :o:

असन वसन दै रुचिर करि दैडारत कै षीस।
पूजत औरहि छोंडि मनु देह गेह को ईस॥
थिर संपति नहिँ गेह की गुसे रहत तम मौत।
जो न अबैं सुष कीजिए मुएँ कौन को होत॥

पूजत लोग प्रेम सों गाई । वाके पूतहि देत बराई ।।
हरमाड़ी कों ग्रंखत जौन । जग में पौरुष करत न कौन ।।
:o: :o: :o:

——अपूर्ण

विषय——संस्कृत ग्रंथ बैताल पच्चीसी का हिंदी पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

नंद व्योम धृति जांनिकै संवत्सर कवि संभु ।
माघ अँध्यारी द्वैज कों कीन्हो तव आरंभु ।।१३।।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ अंत से खंडित है । कुल १०४ पत्रे उपलब्ध है जो आरंभ से क्रमपूर्वक है ।

संख्या ४०९. शिवस्तोत्र, रचयिता——शंभूनाथ. कागज——आधुनिक, पत्र——४३, आकार——७$\frac{9}{11}$ × ६$\frac{2}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१४, परिमाण (अनुष्टुप्)——४५१, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सं० १९२६ वि०, शकाब्द १७९१, प्राप्तिस्थान——ददन सदन, पो०—अमेठी (इ० आइ० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि——शिवः श्री गणेशायनमः ।।
शिव केहि शरण गए नहि पाला ।
गने न शरणागत कर ऐगुन सङ्कर दीनदयाला ।
परपुरुष संग रमित रैन दिन विन्दुग द्विज की बाला ।।
ताकँह सिव निज गनमह गनिकै सुनते राग रसाला ।
छिव छिव कहि प्रदोष व्रत धोषेहु रहि श्रीधर गोपाला ।।
गोपराज सिव कौन ताहि के पौत्र भए नंदलाला ।
जल बिलपत्र रिसाइ वहाई सोमनितिथ सिव भाला ।।
देवो रूप बनाइ संभु तेहि दै निज पद अहिमाला ।
"महारानी किसुनाथ" कुअरिको सुत दै करहु निहाला ।।
सरणागति जानि "सभुनाथ" को दीजै सुर रूप विसाला ।। १ ।।

अंत——प्रत्यगिरे ममगिर परिपालयै नोमनासि नाशय विभाशवचाशुकीर्तिम् ।
शीघ्रविधेहि किशुनाथ कुअर्य्यभोष्ट देहि स्वमाधव प्रतापनृपाय पुत्रम् ।। ५ ।।
श्री संवत् १९२६ शाके १७९१ सन् १२७७ श्री रामः ।

विषय——शिव स्तुति की गई है ।

संख्या ४१०. संगीत दीपिका, रचयिता——शाशगधर (? शार्ङ्गधर), कागज——देशी, पत्र——७, आकार——९ × ४$\frac{3}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१३, परिमाण (अनुष्टुप्)——१४८, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह जी, ग्राम—साहीपुर नौलखा, पो०—हंडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि——. . . . .

।। कवित्त ।।

जटाधर गंगाधर सीस शशिकला सोहै नीलकंठ त्रिणयन कीन्हे वर वेश को ।
कर्पूर गौर तन सेवै नंदी आदिगण मुँडमालाधरे अरु हार धरे शेश को ।

डमरू त्रिशूल कर शारंग को देत वर ओढे जग त्वचा ताकी कैसे अस्तुति के सको ।
भसम लगाये हरि ध्यान धरो सुभ करो "भैरव" सुरागी सुष देत देश देश को ॥ ५ ॥

॥ इति भैरव स्वरूपम् ॥

सुवरणगोरि सुंभ कुकुम लगाये अगप सग परिरभ सोभा अधिकानी है ।
कमल लुभाय जाके कमल से हाथ पाय चद्रमुखी कमल नैनी जो मनोजराणी है ।
चिवुक उठाय पिय चुबत है वार वार नारी नील शारी वोढि पहिचानि है ।
"भैरवी" प्रथम तिय षोडश शीगार किये पैसी मध्यमादि "द्विज सारंग" वषानि है ॥ ६ ॥

॥ इति मध्यमादिस्वरूपम् ॥

:o: :o: :o:

अत-- ॥ अथ चतुर्विधी ग्राहः ॥

ताल धरनु कहु ग्रह कही चारि भांति अहि जानु ।
सम अतीत सु अनागतौ विषम वउन्थोमानु ॥
ताल वरन एक संग जह कही समग्रहि सोइ ।
प्रथम ताल पुनि वरण सह सो अतीत ग्रह सोइ ॥
प्रथम वरन पुनि ताल जह सो अनगत ग्रह जानि ।
विषमग्रह कह ताल कछु वरणी "शारंगपानि" ॥२०॥

॥ अथ शितुषोत्पन्नास्ताला ॥

द्वै गुरु लघु प्लुत को मिले चचलपुट को ताल ।
इति पच पुटोष्टमा ।SS।
त्रिक भगन जुउय मिलि वाव पुट शुने प्रवीन भुआला ॥S॥S
॥ इति षरामातिक स्त्राचपुटः ॥
प्लुत लघु द्वै गुरु लघु जहा पुनि पुजित अत जो होइ ।
नाम . . . .

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

विधि हरि हर सरस्वती भरतादिक रिषि मानि ।
गीत दीपिका ग्रंथ एह कीन्हो "सारँग पाणि" ॥५१॥

विषय--राग रागिनी स्वरूप, सगीत के पाँच लक्षण और पचीस दोष तथा ताल आदि का वर्णन ।

ग्रंथ प्रकाशों (अध्यायों) मे लिखा गया है । खडित होने के कारण प्राप्तांश मे दो ही अध्यायो की पुष्पिकाएँ रह गई है । पहले मे राग रागिनियो का स्वरूप और दूसरे मे सगीत के पाँच लक्षणो और पचास दोषो का वर्णन है । तीसरा अध्याय सभवत: ताल विषय पर था जो अपूर्ण रह गया है । इस रचना मे विधि, हर, हरि, सरस्वती और भरत ऋषि के मतो को आधार माना है ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खडित है । संख्या ४, ५, ७, ८, ९, १० और ११ के पत्रे उपलब्ध है ।

रचयिता का नाम अध्यायो की पुष्पिका के अनुसार सारंगधर विदित हुआ है । भैरवी के स्वरूप वाले कवित्त मे नाम के साथ "द्विज" भी प्रयुक्त हुआ है, अत: ये ब्राह्मण थे । पुष्पिका अश इस प्रकार है :--

"इति श्री सारंगधर विरचितायां सगीत दीपिकायां रागाध्याय शारोद्धारे रागं राग-रागिनी स्वरूप वर्णन द्वितीय. प्रकाश: ॥"

एक स्थान पर 'सारंगपानि' नाम भी मिलता है :--

दोहा

बिधि हरि हर सरस्वती भरतादिक रिषि मानि।
गीत दीपिका गंथ एह कीन्हो 'सारंग पाणि' ॥५१॥

संख्या ४११. भावशतक, रचयिता---शारगधर, कागज---कालपी का हाथ का बना, पत्र---८, आकार---१२३/४ × ८१/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१७, परिमाण (अनुष्टुप्)---२०४, पूर्ण, रूप---नवीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १९९९ वि० (सं० १६७२ की लिखी प्रति की नकल), प्राप्तिस्थान---हिंदी साहित्य सम्मेमलन, प्रयाग।

आदि---सारंगधर रचित भाव शतक

॥६०॥ श्री गणपतये नमः ॥ भावशतक दूहा लिख्यते ॥

प्रश्न :---नायक आतुर कामवस बसन उघारत वाम।
मुग्धा मुख नम्रित कियो कहि सुजाण किहि काम ॥ १ ॥
अर्थ :---सुरत समर कारण इहां आयो आतुर कंत।
मनु मुग्धा बूझत कुचनि जद्धह काज बलवंत ॥ २ ॥
प्रश्न :---विरह निसास उसास अति विमुख चइन नहिं धाम।
चातक मनि आनंद तब कहि सुजाण किहि काम ॥ ३ ॥
अर्थ :---उरध अधिक उसास चढि भई धूम आकार।
चातक जिय जान्यो सजल आए जलद अपार ॥ ४ ॥
प्रश्न :---शिशि किसोर समरहि कहां कहां तरुण तन ऐंन।
यह बूझौं सोचहु कहा वेगि कहउ किनि बैंन ॥ ५ ॥
अर्थ :---शिशि किसोर पायन समर तरुण भये तन ऐन।
यहे परख्या जानिये तहाँ तहाँ चल ऐन ॥ ६ ॥

मध्य---

प्रश्न :---जुग उरोज उन्नत भए मदनराई के राज।
नैणनि लीनो वक्रता कहि सुजान किहि काज ॥९६॥
अर्थ :---उच्च भए कुच जुग जबे भए वक्र स्यों नेंन।
मन मेले काजर भरे तेन सहे पर वेन ॥९७॥
प्रश्न :---वामे कर कोवंण गहि दछिन सर संधान।
वाण श्रवण रेकत भए कारण कौन सुजान ॥९८॥
अर्थ :---कानहि छूडत वाण रावण के दस सीह सहै।
दीजइ सीख सुजान एकहि हनो कि दस हनो ॥९९॥

:o: :o: :o:

अंत---

प्रश्न :---तब समीपि रसनायकर नित प्रति पिय सुख पाइ।
पुलकति वढ़त उरोज अति कहि सुजान किहि भाइ ॥२२॥
अर्थ :---पिय तियके हियरे विषै ज्यों ज्यों कीयो प्रवेश।
आसन तजि वाहिरि भए निरखि नेंन वरवेस ॥२३॥
प्रश्न :---होइ अजान सुजान सुनि रीझै राज समाज।
सारंगधर सुनिभावशत भनहि खिलावत काज ॥२४॥
अर्थ :---जाकउ मनरथ तें विरस सरस करण की आस।
सारंगधर ता तोष कौ विरचित विविध विलास ॥२५॥
दुख गंजन रंजन हृदय भंजन नित चित ताप।
सारंगधर सुनि भावशत विधि विचारनु आप ॥२६॥

इति भाव सतक दूहा समाप्त। सवत् १६७२ श्रावण वदि १ पं० मोहनेनले।

विषय--प्रश्नोत्तर के रूप मे शृंगार भावात्मक दोहों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं हैं । प्रस्तुत प्रति संवत् १६७२ में लिखी प्रति से श्री अगरचंद नाहटा द्वारा की गई नकल है । इसलिये इसका लिपिकाल वर्तमान काल ही समझना चाहिए । प्रेमविलास--प्रेमलता कथा के आधार पर यह संवत् १६६६ के इधर उधर नकल हुई है ।

संख्या ४१२. उरवसी नाममाला या उर्वशी माला, रचयिता--शिरोमणि, कागज--देशी, पत्र--१५, आकार--७.६/१० × ४.६/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१७, परिमाण (अनुष्टुप्)--२५५, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८४६, प्राप्तिस्थान--रामनिधि शुक्ल, ग्राम--लोहरपछिम, पोस्ट--बंधुवा कलाँ, जिला--सुलतानपुर (अवध) ।

आदि--. . . . .

॥ कवित्त ॥

नैननि में खंजन की देखियें चपलता सी भौंहनि में धनुष डिढाई सी वसति है ।
दंतनि में हीरनि की सेतता सी सेतता है अधरनि विद्रुम ललाई सी लसति है ।
कंचन सौ सोहनो सरीर बलबीर वाको बेनी वाको नागिनी सी लोगनि डसति है ।
सूरत निहारि चलि देखियें मुरारि जाके देखे और देखन की भावना नसति है ॥ ७ ॥

॥ अथ लुप्तोपमा ॥

उपमेय उपमाधरम वाचक है जहाँ पाठ ।
इक बिन द्वै बिनु त्रिबिनु सौ लुप्तोपम विधि आठ ॥ ८ ॥

॥ अथ लुप्तोपमा उदाहरण ॥

चख झख रमि विधि रूप बदन धुनि सिततौर दृग कीर ।
अरुन बिंब सित कुंद से डसत सि जुत लषि मोरु ॥ ६ ॥

:o: :o: :o:

॥ अन्योक्ति ॥

अन्योकति अरु काक है अरु प्रति जु है सजाति ।
अबतें तुहि नहि लाइयें मुहि सखि कहि मुसिकाति ॥ ३ ॥

॥ वार्ता ॥

अप्रस्तुत प्रसंसा अरु अन्योक्ति ग्रंथनि के मत एक ही है तहां इतनौ भेद विजातीय प्रति कहें तहां अप्रस्तुत प्रसंसा को जानियें जैसे धन्य विहंगनिमें सतमि इंद्र न जाचत अन्य और जैसें कवि प्रसंसा में रहि कीर करोर कहाक ॥

:o: :o: :o:

॥ बीतरीतालंकार ॥

साधन बाधक सिध कौति विवरीत सरसाँहि ।
पठई में पर दूतियह चूक सु बारीमाँही ॥२०६॥

॥ सुसिद्धांत लंकार ॥

सुसिधसाध. . . . .

अंत-- ॥ नाममाला ॥

. . . . . .दीश ॥ विधु 'उपेंद्र' पुरुषोत्तम' सु "हृषिकेश" अरु शीश ॥१०२॥
नारायण केशव पदमनाभ शौरि गोविंद ।
स्वभू अधोक्षज चतुर्भुज असुरशत्रु व्रजचंद ॥१०३॥

सासुदेव अरु देवकी नंदन माधव नाम ।
कंस निषूदन गरुणध्वज पीतांबर जगधाम ।।१४।।
:o: :o: :o:

।। कल्याण नाम ।।

मंगल कुशल कल्याण शुभ भद्र श्रेय शिव छेम ।
श्वस्तेयस भावुक भविक भव्य जहाँ जगपेम ।।२५०।।
वक्ता सुरगुरु सौ हुतो श्रोता हो सुरराज ।
तऊ शब्द पार न लह्यौ कहा और को काज ।।२५१।।

इति श्री शिरोमणि विरचिता उरबसी नाममाला संपूर्ण शुभ ।। लिपिकृतं मासानंद कान्यकुब्जेन अर्गलपुरे जंजनीस्थाने स० १८४६ माघ शुदि १ ।

विषय---अलकार और कोश विषयो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---हस्तलेख खडित है । केवल १५ पत्ते उपलब्ध है । इसमे दो रचनाएँ, हैं 'अलंकार' और 'कोश' । कोश के अत मे रचयिता का नाम शिरोमणि दिया है और कोश का नाम 'उरवसी नाममाला' । जिन पत्तो मे अलकारो का वर्णन है उनके कोनो मे "उ० ना०" लिखा है और जिनमे कोश का विषय है उनमे "ना० मा०" लिखा है । अतः पता चलता है कि दोनो रचनाएँ एक ही रचयिता की है ।

सख्या ४१३. राधाकृष्ण, रचयिता---ठाकुर शिवटहल सिह, कागज---देशी, पत्र---७७, आकार---७ × ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२०, परिमाण (अनुष्टुप्)---२०२१, अपूर्ण रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---ठाकुर देवी चरन सिह, ग्राम--बहरीपुर, पो० जफराबाद (जौनपुर) ।

आदि---........................... ।

मन मन भयो हर्ष अति भारी तोहि मुक्ता वहु देहि मुरारि ।।
निजकर त्वहि भूषण सजवइहै हम सब दर्शन करि सुख पइहै ।
किंतु सखी यक अचरज भारी मोहि लखि दृग फेरे वनवारी ।।
हरि को नहि देख्यो सोभावा मोतन लखि पुनि नयन फिरावा ।।
पीछे समाचार सब पायो सुबलहि हरि तब निकट पठायो ।।
मोती एक चरचौ तब ठाई तुम नहीन मोती तेहि राई ।।
अरु तेहि को उपहाँस कराई करि निराश तेहि हीन फिराई ।।
तेहि अभिमान श्याम मन कीन्हा जशुमति पह मोती यक लीन्हा ।।
जमुना तीर किये तेहि रोपण तुरत भयो तेहि मुक्त लतावन ।।
जमुना तीर किये तेहि रोपण तुरत भयो तेहि मुक्त लतावन ।।
अतहि फूल फल लाग्यो ताही कोटिन झरत परत महि माहीं ।
तेहि लै गौवन साज करायो सुनि प्यारी मन विस्मय पायो ।।

।। दोहा ।।

ह्वै अवाक मुख वचन नहि मनही मन पछिताय ।।
कहत सखी अब मोहिं पर निष्ठुर भयो कन्हाय ।।

।। सोरठा ।।

हाय बुद्धि भ्रम मोर सुबलहि मैं वैमुख कियो ।।
प्रीति वियो हरि तोरि ताते नहि कछु त्वहि कह्यौ ।।

अंत—— ॥ चौपाई ॥

गर्ग बंश बिख्यात जहाना जेहि जन्म्यो सुमंत मतिमाना ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

राज सिंहासन पर जबहि बैठेव श्रीरघुनाथ ।
तासु तनय मंत्री कियो धरि सुमन्त को हाथ ॥

॥ सोरठा ॥

तेहि वंशज म्वहि जानि नाम शिवटहल सिंह मम ।
हरि यश कह्यों बखानि वुधजन के आनंद हित ॥
आजु कालि सब लोग साधू सिंह कहै मोहि ।
विष्णु प्रमाद सिंह शुचि साधू भागीरथ सिंह बुद्धि अगाधू ॥
हरि के परम भक्त दोऊ जन ।
ब्रह्मचर्य व्रत रत अति सज्जन ॥
हमरे परम सखा हितकारी । हरिगाथा दुहुँ अधिक पियारी ॥
मुक्तलता वलिवंग भाष्यमहँ देखि उभय दिखरायो हम कहँ ॥

:o: :o: :o:

यहि विधि सब देवन शिरनाई वंग भाष्य निज भाष्य बनाई

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

अब यह पूर्ण कथा भई यथा बुद्धि अनुसार ॥
पंडित जन वुध जनन सो करत यही मनुहार ॥ १ ॥

विषय——राधाकृष्ण चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ अपूर्ण है । केवल सतहत्तर पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं ।

संख्या ४१४. दशकुमार चरित, रचयिता——शिवदत्त त्रिपाठी, कागज——देशी, पत्र——१७, आकार——११ १५/१६ × ५ ६/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१०, परिमाण (अनुष्टुप्)——४२, अपूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम–साहिपुर (नौलखा), पो०हडिया खास, जिला–इलाहाबाद ।

आदि——श्री गणेशाय नम: ॥

॥ सवैया ॥

सुद्ध बयाकर के छवि देह सुपुस्तक कौन विराजत पानी ।
बाहन हंस लसे अवतंस सुपावन कीरति वेद वखानी ।
सेत सरोज के आसन पै बसि लोक के सोक सरोज हिमानी ।
सानि सनेह हिये "सिवदत्त" के वानी जु आइ बसै व्रिढ वानी ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

धरनी चक्र समस्त में बनवधदेस अनूप ।
नीति रीति जुत भीतिविनु विविध बसै तह भूप ॥
बनवधहू मैं अति सुभग सोभित वेलषर देस ।
बसत लोक विनुसोक तंह धनते तुलित धनेस ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

तासपति सुरपति के सरिस अद्भुत बीर चरित्र ।
मित्रजीत भूपति भये निजकुल सरसिज मित्र ।।
जगत प्रसंसा होत जेहि वंस विदित चौहान ।
बछ गोती बिख्यात महि उद्भट उदित कृपान ।।
धीर सिंह ताके तनै भये प्रबल रणधीर ।
को नर सकै सराहि तेहि जैसी मति गंभीर ।।

:o: :o: :o:

नीतिरीति बस करि सबै उद्यत धीर नरेस ।
पटीपुर नृपपुर कियो मध्य सकल निजदेस ।।१०।।

:o: :o: :o:

धीरसिंह के सुत भये समरसिंह छितिपाल ।
नृपगुण रंचि बिरंचि वहु लिखे भाग्य जेहि भाल ।।

:o: :o: :o:

श्री समरेस नरेस के दो सुत भे अभिराम ।
अमरसिंह जबरेस यौं धरे जथारथनाम ।।१७।।
सो "जबरेस" महीपमनि मंगलमय सबकाल ।
राजत राजसमाज में भूरिभाग्य भरिभाल ।।

:o: :o: :o:

वार वार "सिवदत्त द्विज" इमि करि वुद्धि विचार ।
तेहि विनोद कारन रच्यौ भाषा दसो कुमार ।। ३ ।।

अंत-- ।। दोहा ।।

सोमदत्त प्रिय दास लहि परिहरि चिंतासाप ।
करमुकलित करि कहत निज सविनय वित्त कलाप ।
इति सिवदत्त त्रिपाठी कृते दसकुमार चरिते द्विजोपकारको नाम द्वितीय उछ्वासः ।।

:o: :o: :o:

रच्छत इन्हे अनेक उपाई । अटत भूमि देसहि यह आई ।।
इन्है भीष भोजननि........................

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--संस्कृत ग्रंथ दशकुमार चरित का हिंदी अनुवाद ।

संख्या ४१५. देवी चरित्र (अनुमानतः), रचयिता--शिवदास, (स्थान--राजपूताना), कागज--देशी, पत्र--१६, आकार--६१/४ × ५१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५४, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथ दाता--कृष्णसेवक मिश्र, ग्राम--सहनुडीह, पो०--बरदह, जिला--आजमगढ़) ।

आदि--........................

बली दैत्य बहू धर्म्यः अवतार धरता ।।३६।।
तेवसर्व कहूं कथा मांडी बात । "शिवदास" ने सदाः सुख आयो मात ।।३७।।
।। कडवा ।। ७ ।। पद ।। १६४ ।।
।। राग पूर्व छाह्या ।।

कश्यप कुलावली ऊपनाः दैत्य अवीतीने पेख ।।
शुंभ निशुंभ व्येहू अवतरया प्राक्रमे पूरानेत्य ।। १ ।।

तेरणें तपकरी ब्रह्मा वश्य करचा विषम प्रह्म वरवानं ।
सुर नर कीधी नव्य मरू निरभें हूं राजान ।। २ ।।
एह धों बर आयो ब्रह्मा गया: पाया बल वाध्यूं धंर्ण ।
श्री रांम जन शिवदास केहें कहूं प्राक्रंम येते हतर्ण ।। ३ ।।

अंत—— ।। राग धवल धंन्याशी ।।
मारकंडे रुष्य वांणी ऐम बोल्या: । शांभल्य जंमुन्य वात जी ।
शुंभराय एह वूं शांभलतां क्रोध्ये चढ्यो उतपात जी ।। १ ।।
त्यारे रक्तबीज ने आयी आज्ञा: सैन्य चढो अब आज जी ।
कोंरण शक्ति रंडाए आवा: । युध करवानि काज जी ।। २ ।।
पछें छासट्य कोटि राक्षस मोटा येतरणो नहीं पार जी ।
गज रथ अश्य सकल साध्ये राय चढ्यो तेरणी वार जी ।। ३ ।।
:o: :o: :o:
फोकट प्रारण तजो कां पापी: के हे ज्यो आंरणी गर्व जी ।
वचन न मांने जो प्रभुता हारूं तो पछें मारू सर्व जी ।।१०।।
एह वूं शांभली रुद्र जी गयारे:

विषय——देवी चरित्र वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य——हस्तलेख अपूर्ण है । आरंभ मे पत्र संख्या ३० और अंत मे पत्र संख्या ५२ है । इनके नीचे के संख्या ३७।३८।४४।४५ के पत्रे नहीं है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ४१६. दिग्विजै चंपू, रचयिता——शिवदास गदाधर, स्थान——ग्राम–समोगरा, बलरामपुर रियासत, अवध, कागज——देशी, पत्र——८२, आकार——९¼ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——११, परिमाण (अनुष्टुप्)——१३४८, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——सं० १९१० वि०, सन् १२६१ फसली, लिपिकाल——सन् १२६३ फसली, प्राप्तिस्थान——पं० लक्ष्मीदेव जी द्विवेदी, मोहल्ला–अलीनगर, गोरखपुर, जिला–गोरखपुर ।

आदि——श्री गरणेशाये नम: ।। अथ सूची पत्र दिगविजं चंपू शिवदास गदाधर कृत लिष्यते ।।

।। दोहा ।।
वक्र तुंड गरणनाथ के मंगल चरन बषांनि ।
कारन ग्रंथारंभ को तव वरने सुष षानि ।। १ ।।
बुल वुलिने जो वचन कहि तासु वेवरा बात ।
उत्तर ताको तासु सों पुनि उत्तर सुषदात ।। २ ।।
करता ग्रंथ को आगमन भूप दिगविजै पास ।
बिजलेस्वरि रोगावती वरने तेज प्रकास ।। ३ ।।
:o: :o: :o:

श्री गरणेशाये नम: ।। श्री गुर चरन कमलयेभ्यो नम: ।। श्री सरस्वत्ये नम: ।। अथ दिगविजै चम्पू लिष्यते ।।

गजमुष मुष तें कहत ही दुष रिपु मुष मुरि जात ।
सकल सुष्य मंगल महा देत गौरिसुत तात ।।१४१।।
भक्ति भाव चित सुध्य तें निस दिन रटें गनेस ।
वाक्य बावनो ताही को छरण मंह करत सुरेस ।।१४२।।

उमा उमापति हूं सदा रहू तापें अनुकूल ।
विद्याधन निरमल सुजस देत नित्य सुषमूल ॥१४३॥

:o: :o: :o:

निरषि वाटिका अजर सुभ चावुक सब्द चकोर ।
लग्यौ तरारे फिरि भरन अस्व लेषनी मोर ॥१४६॥
कली तुल्य मुष बंद है सिसिरक देषो तात ।
यह बसत सुभ समै लषि बिगसत कली प्रभात ॥
मंद गंध मकरंद जुत चलत पौन सुभ भोर ।
चहचहात चात्रिक विपुल हरषित रहत चकोर ॥१४८॥
गुंजत मधुकर मद भरे गान करत सारंग ।
महकत लहकत द्रुमलता त्रिगसित सुमन सुरंग ॥१४६॥
हरित वसंती वसन को पहिरो बिर्छनि अंग ।
पुष्प हसत लषि डार छवि मुरछित होत अनंग ॥१५०॥

॥ दोहा ॥

चल्यो वाटिका त्यागि कै भूपनगर बिलगान ।
विमल देस रचना विविधि कह लौ कहैं वषान ॥१७१॥
नग्र निकट पूरब दिसा येक कोस प्रधान ।
परम स्वातिकी अम्यका राजत अति अभिराम ॥१७२॥

॥ छंद ॥

सुभ ज्वलित ललित ललाम । विजलेस्वरी जा नाम ।
त्रिकोंड मै है कुंड । पूजत असुर सुर झुंड ॥
नित देत है वरदान । वरदेव वाको बांन ॥
अति सुंदरी मुसकात । है स्वछ निरमल गात ॥
तन वसन सत सोहाय । गलमाल मणि छवि छाय ॥

:o: :o: :o:

भूपप्रश्ण

॥ दोहा ॥

कोहै तू केहि देस को का जांचत का काम ।
मांगि लेहु जोहोय रुचि अरु कहु अपनो नाम ॥२४६॥

:o: :o: :o:

॥ अथ ग्रंथ करता को उत्तर ॥

॥ सोरठा ॥

सुधामई सुनि बैन भरि आये जल नैन सें ।
कहैं बिना नहिं चैन दोहुं दिस को विरतांत सब ॥२४८॥

॥ दोहा ॥

पावागढ़ गुजरात सें आयो नृप जनवार ।
सुभट वीर वरिबंड वहु संघ में सैन अपार ॥
सूबा अवध को जेर करि छीनि मुल्क सब लीन ।
तामहं यह बलिरामपुर सुघग थली निजु कीन ॥

:o: :o: :o:

तातें अब संछेप करि कहत हौं सुन्यिये राज ।
नौ पीढी के वादि भे नेवलसिंह महराज ।।
:o: :o: :o

ता नृप के जुग तनै भै सिंह बहादुर बीर ।
अर्जुन सिंघ भे सिंह सम धीर वीर गम्भीर ।।२५७।।
ता अर्जुन भूपाल के भये उग्र द्वै बंस ।
जै नारायन प्रथम भे हंस बंस अवतंस ।।२५८।।
दूजो सुत है आप प्रभु विदित तेज गुणधाम ।
पसु पछी सुर असुर नर गावत जाको नाम ।।

।। चौपाई ।।

नेवलसिंह परमपिता तुम्हारे । ता समीप पितु आय हमारे ।।
दीन कुलीन जानि विद्वाना । रामदीन अस नाम बषाना ।।
:o: :o: :o:
रामदीन को निज जन जानी । सौंपे पुनहु सकल रजधानी ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

धर्मपुत्र महाराज को ताको सुत मैं तात ।
नाम गदाधर दास शिव प्रगट जगत विष्यात ।।२७६।।
:o: :o: :o:

अंत—ग्रंथ के पूर्णता की तिथि

० १ ६ १
नभ इंदु ग्रह चंद है सम्वत सुभ व्रतमान ।
५ ७ ७ १
बान दीप रिषि ब्रह्म मो साका सुभग सुजान ।।१६६६।।
कार्तिक सुदि दसमी तिथी पूर्व भाद्र गुरवार ।
१ ६ २ १
इंदु रस पछ चंद सन जोग है हरषण सार ।।१६६७।।
महा जोति शिवलिंग जहं नाम समग्र नाथ ।
गाम समोगरा मे भयो पूर्ण ग्रंथ सुभगाथ ।।

।। छंद ।।

नाम है यहि ग्रथ को दिगविजै चंपू सुध्ध ।
भोग जोग समाधि को है षानि उत्तम वुध्ध ।।
जो वांचि कै अभ्यास विध सों करैगो नर कोय ।
सो मनुस तन मा भोग बहु करि अंत मैं सुर होय ।।

।। दोहा ।।

गणपति कृपा तें ग्रथ यह भन्यो गदाधर दास ।
चंपू नृप दिगविजै को पूरन भो सुषरास ।।

इतिश्री मन्महाराजाधिराज दिगविजै सिंह सरदार पति बिरचितायां पूर्णाभिसेसी गदाधर शिवदास कृते कलि संसर्ग दोषादि प्राश्चित सामान्य नित पूजा महिषमर्दनी तंत्रे अष्टमो-षंड समाप्तोयंग्रंथः ।। मंगलंददातु ।। सम्वत् १६१० साके १७७५ ।। कार्तिक सुक्ल पक्ष दसम्यां

लिखौ ।।१०।। दुर वासर पूर्व भाद्र नछत्रे हरषण जोगे ।। सन १२६१ ।। साल [illegible] मुकाम समोगरा ।। दसखत बैजनाथ कायस्थ कै बाँसिंदे प्रगने ।।

।। दोहा ।।

रामपुरा बलिरामपुर तालुक बधिनी धाम ।
ठौर समोगरा में लिख्यौ बैजनाथ आ नाम ।। १ ।।

मिति माघ वदि ९ सन १२६३ सार फ० ।।

कथा का सारांश इसप्रकार है :---

पावागढ़, गुजरात से नृप जनवार ने अवध प्रांत में आकर बलरामपुर रियासत पर अधिकार किया। उनके नौ पीढ़ी पश्चात् नवल सिंह राजा हुए जिनके बहादुर सिंह और अर्जुन सिंह दो पुत्र थे। अर्जुन सिंह के भी दो संतानें थीं जिनके नाम क्रमशः जै नारायन और दिग्विजय सिंह थे। बहादुर सिंह के पश्चात् अर्जुन सिंह राजा हुआ और उनके परलोकगत होने पर जै नारायन गद्दी पर बैठे। ये राजा राजनीति पटु न थे; अतः थोड़े ही दिनों में राज्य पर शत्रुओं का अधिकार हो गया। जै नारायन की मृत्यु हो गई और दिग्विजय सिंह जो बहुत ही छोटा था उत्तराधिकारी के रूप में रह गया। रामदीन नाम के एक विद्वान् नवल सिंह महाराज के मंत्री थे। जैनारायन के राज्यकाल मे वे भिनगा नरेश (विसेन वंशी) के यहाँ चले गए। उनके पुत्र गदाधर शिवदास थे जो उन्ही के सदृश बड़े विद्वान् और सहृदय राजनीतिज्ञ थे। अबोध बालक राजकुमार दिग्विजय सिंह ने इन्ही से सहायता माँगी। इन्होंने अपनी राजनीति प्रतिभा का ऐसा चमत्कार दिखाया कि थोड़े ही समय में शत्रुओं को परास्त कर राजकुमार को राजसिंहासनारूढ़ कर दिया। यद्यपि दिग्विजय सिंह निष्कंटक राज्य करने लगे, पर कुचत्रियों ने गदाधर शिवदास का पिंड नहीं छोड़ा। अवध के नवाब का प्रभुत्व था; अतः वहाँ उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचे गए। नैपाल की ओर भी सीमा पर इन्हें लोहा लेना पड़ा। इन सबका फल यह हुआ कि दो वर्ष तो इन्हें बंधन में रहना पड़ा और उसके बाद बहुत वर्षों तक बलरामपुर से बाहर ही बिताना पड़ा। इस बीच इनकी बुद्धिमत्ता का सर्वोत्तम परिचय इस प्रकार मिलता है कि इन्होने गोंडा के राजा और वहीं के रामदत्त नामक ब्राह्मण विद्वान् के बीच की शत्रुता मिटाकर उनमें मैत्री करा दी। राजा उक्त ब्राह्मण के रक्त का प्यासा हो गया था। यह घटना अत्यंत करुणोत्पादक है। अंत में इनकी प्रेरणा से ब्राह्मण को स्वतंत्र राज्य मिला जो अभी तक चल रहा है। पश्चात् बलरामपुर वापस जाने की घटना काव्योपयुक्त ढंग से वर्णन की गई है। वह अत्यंत सरस, रोचक और मनोरंजक है।

एक दिन वाटिका में बैठे बैठे वसंत निरीक्षण करते हुए एक बुलबुल (पक्षी) द्वारा उन्हें कल्पित प्रेरणा मिली कि वे बलरामपुर के महाराज दिग्विजय सिंह के पास जायँ। फिर क्या था, वे बलरामपुर की ओर चल पड़े। बिना पूछे ही दरबार में जा पहुँचे। दुर्भाग्यवश राजा इन्हें भूल चुके थे, अतः इन्हें अपना फिर से परिचय देना पड़ा। परंतु राजा को पूर्ण संतोष नहीं हुआ। इस पर इन्हें बड़ा खेद हुआ और राजा की ओर से विरक्ति उत्पन्न हुई। इनके मुँह से कुछ मार्मिक

अव्य निकल पड़े और हताश होकर घर जाने के लिये राजा से विदा माँगने लगे। यह देखकर राजा से न रहा गया और उन्होने क्षमा माँगकर अपने पुराने मित्र का समाधान किया। इसी सुअवसर पर राजा ने इनसे ऐसा ग्रंथ रचने को कहा जो उनके यश को ससार में युग युग तक स्थिर रख सके। अतः इसी अभिप्राय से प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हुई। उपर्युक्त वर्णन के पश्चात् ग्रंथ मे देव्यागमों के आधार पर उपदेश, दीक्षा, निर्णय, योग, ध्यान, आसन, जप-तप नियम, उपनियम, माला, नाम-स्मरण, पूजादि फल और कलि संसर्ग दोषों का वर्णन किया गया है। पुष्टि और प्रमाणो के लिये शैवागमों तथा वैदिक ग्रंथो से उद्धरण भी दिए गए हैं।

रचनाकाल

० १ ६ १
नभ इंदु ग्रह चंदु है संम्वत सुभ व्रतमान।
५ ७ ७ १
बान दीप रिषि ब्रह्म भो साका सुभग सुजान॥
कातिक सुदि दसमी तिथी पूर्वभाव गुरवार।
१ ६ २ १
इंदु रस पछ चंद सन जोग है हरचरण सार॥१६७६॥

संख्या ४१७क. कुंडलिया, रचयिता—शिवबक्स सिंह (स्थान—समोगरा, पो०—नैनी, जिला—इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—७०, आकार—१० × ६$\frac{3}{4}$ इच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३५, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०३, प्राप्ति स्थान—ठा० रघुनाथ सिह अतुर ठा० जंगबहादुर सिह, ग्राम—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—॥ कुंडलिया ॥

राधा राधारमन के सुखदायक संवाद।
बीच जानि अनुराग के ऊधो हरत बिषाद।
ऊधो हरत विषाद जाइ इत उत समुझावत।
तजि अनभाव की रीति बिनै करि प्रीति बढावत।
बिछुरत दुख सुख मिलत सुनत छूटत भव बाधा।
नरधर श्रमते जानु जाहि प्रिय हरि राधा॥ १॥

आवत कुंजन ते चले हरि राधा एक साथ।
घन दामिनि जनु तन परे गहैं हाथ ते हाथ।
गहैं हाथ तें हाथ चलत ठमकत हरषाहि।
को उपमा कहि सकै सेस सारद सकुचाई।
कर मुरली उर माल मुकुट कुंडल छवि छावत।
ते समान को आन ध्यान जेहि के उर आवत॥ २॥

जाके नाम अधार विधि प्रगट कीन संसार।
जासु नाम वर नाव चढ़ि नर पावहि भवपार॥
नर पावहि भवपार जाहि बल महि सहसानन।
धरे सीस पर भार सहित गिरि सागर कानन॥
सो गोकुल अवतरे भेद को जानत ताके।
नमो नमो ते वेद चरित गावत श्रुति जाके॥ ३॥

अंत—

छूटत बाचन मूढ़ता उर आनत हरि ध्यान ।
कुमति मिटै जागै सुमति प्रगट होत परग्यान ।।
प्रगट होत परग्यान नेति रसमारग सूझै ।
पर......पदेस लह आलोगति बूझै ।
......नर कहत सुनत किलबिष.....
मन अस्थिर होइ जाइ प्रबल...धन छूटत ।।२५२।।

इति कुंडलिया छंद सिवबकस सिंघ सोम बंसी बिरचिते सर्वसुख मंगल उपदेसवामेक ।।...

:o: :o: :o:

पंडित जन सो बिनती मोरि टूट अछर लेव सब जोरि ।
सवत १६०३ के साल मीती माघ सुदि ७ रोज सनीचर लीषा जुड़ावन काएस्थ ।

विषय—शृंगार, उपदेश, भक्ति, नीति आदि विषयों पर कुंडलियाँ रची गई हैं।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि, मध्य और अंत के कितने ही पत्रे नष्ट हो गए है। रचनाकाल का पता नहीं, लिपिकाल संवत् १६०३ है।

रचयिता का नाम शिवबक्स सिंह है। ये ग्रंथस्वामियों के पुरखे थे, देखिए "राधे हरी मिलन सतसई' का विवरण पत्र।

संख्या ४१७ख. राधे हरिमिलन सतसई, रचयिता—शिवबक्स सिंह सोमवंसी, (स्थान—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—८३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १८८०, लिपिकाल—संवत् १८८०, प्राप्ति-स्थान—ठा० रघुनाथ सिंह और ठा० जगबहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेसयानम्हः ।।

।। दोहा ।।

एक रदन कुंजर बदन जेहि सुमिरे सीधि होइ ।
बूधि जलाधिप सुभ भवन करहु अनुग्रह सोइ ।। १ ।।
बदौं गुरपद कमल रज धरि सीर बारहि बार ।
जेहि सुमिरत भय सींधु ते बीनु स्रम होइ उबार ।। २ ।।
सो रज द्रीग अंजन कीए सूझि परै सब कोइ ।
कीए तीलक सी रेनुका गुन समूह वसि होइ ।। ३ ।।
मोह तमा कँह अछै रवि भवसागर जलजान ।
हरन मदादि बेकार सब दाएक पद नीर्बान ।। ४ ।।
बीमल बीलोचन हिदैं कै उघरत जागै ग्यान ।
बडी भाग ते उर बसहि सो रज अमी समान ।। ५ ।।

अंत— राधेबाचाः

नेति धामं गुनग्यान गत छुए न लाज सकोच ।
लंपट करतब देषी कै सषि मेरे मन सोच ।।६३।।

।। अथ बेसा बाचाः ।।

सोचन जोग न कीन्ह जी सुनु राधे गुन धाम ।
सोचीय जेते नरन को ताको सुनु अब नाम ।।६४।।

सोची भूसुर ग्यान गल नीगम कार्य ते हीन ।
जो नीज धार्म ही छाडि कैं होत वीर्य तव लीन ॥६५॥
नेति हीन नर ईसहु प्रजा प्रन सम नाहि ।
पति वंचक आंगना तेहि सोची मन माहि ॥६६॥

:o: :o: :o:

हरि राधिका प्रसाद जुत ग्रंथन के मत आँनि ।
फल के दायक सतसइ कहु "सिवबकस" बषानि ॥१८२॥
चारिहुँ विसि फल चारि है सबको प्रगट देषात ।
बिनु प्रयास नर पाँईहो जो कहि सुनि हरषात ॥१८३॥
कहैं सुनै सादर सदा ते न परै भवजाल ।
रहै ताहि पर बहिनो राधे सहित गोपाल ॥१८४॥
सन अठारह सं असी भादौं सुक्ल बषानि ।
नंवा तिथि भ्रिगु नंदने भें पोस्तक सुखषानि ॥१८५॥

इति श्री राधे हरि मिलन बानंनो सतसइ उत्तर प्राकानं संपूरनं सीउवकस सोमवंसी बिरंचितयं सुभ मस्तु सिधि रस्तु संवत् १७८८० भादौं सुदि १ सुक्रवार ।

विषय—श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने और फिर वापस न आने पर राधा को बड़ा दुख होता है। वह श्रीकृष्ण को धूर्त, लंपट और पाखंडी समझती है। सखियाँ राधा को सान्त्वना देती है और श्रीकृष्ण को निर्दोष बतलाती है। अंत मे राधा कृष्ण का मिलन होता है।

रचनाकाल

सन अठारह सं असी भादौ सुक्ल बषानि ।
नंवा तिथि भ्रिगु नंदने भें पोस्तक सुखषानि ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। संख्या ५, ७, १८, २२ और २३ के पन्ने नहीं है। रचनाकाल संवत् १८८० है। दोहे में सन् है, पर पुष्पिका मे संवत् लिखा है।

संख्या ४१८. भक्ति जयमाल, रचयिता—शिवराम कायस्थ, निवासस्थान—कारों (बलिया), कागज—देशी, पत्र—२४३, आकार—१२½ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०३३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८७, मुंशी हरप्रसाद लाल, ग्राम व पोस्ट—कारो, जिला—बलिया।

आदि—**पोथी भक्ति जैमाल गोसाईं सीवाराम कृत लीखते ।**

श्री गणेशाय नमः ॥ श्लोक—पाथोज नील छवि शुभ्र प्रभा सरीरं वर्केंदुपूर्ण भ्रोकुटी धनुकाम भांती ॥

अथौखोहनी गयानी सरासनाए तूनीरललित इछ करणे राम ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गनपति गौरी शारदा राधा रमा समेत ।
शीव विधि हरि रवि नाम जुत शीवा चरन रज लेत ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

शीवबखाल बाधा करयो भएउ बुधि परगाश ।
तिनि बरन प्र जन्म भौ हरिजन शीबावास ॥
गुरु उत्तम दीक्ष साधु शुचि लीन्ह हरिनाम सुनाउ ॥
शाधु शंग परताप ते राम प्रेम उर छाउ ॥

॥ चौपाई ॥

शारद कीन्ह कीपा जब जेही ॥ तब हरी जन भाखा जन तेहीं ॥
सम्वत सत्रह सै सत्तासी ॥ माघ मासि तेरसि शुभ राशी ॥
कोश्न पच्छ शुभ वासर चंदा ॥ सीधि जोग वृष लग्न ग्रनंदा ॥
तेही दिन कथा जन्म कथि कीन्हा ॥ मास पच्छ तिथि दिन कही दीन्हा ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

हरि चरित्र जस भाखा कलिमह मुक्ति नाव ।
बिनु प्रयास भव निधि तरैं सुजन जन पाव ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

पांच कोटी दानव बली परम भुग्रावन भेख ।
कलकी ठाकुर करीहै ताही मारी ग्रवशेष ॥

॥ चौपाई ॥

एही बीधी हरी चरीत्र ग्रवगाहा ॥ श्रुती सारद नहीं पावहीं थाहा ॥
शवतक परम भक्ति तव देखी ॥ कहेउ कथा उपदेश विशेखी ॥

॥ दोहा ॥

एह प्रभु चरित सप्रेम कही हैं सुनि हैं संत जन ।
मुक्ती संप्रदा छेम पैहै शीवा सज्जन सहित ॥
:o: :o: :o:

हरदृग व्योम ग्रस्ट शशि सम्वत संख्या कीन्ह ॥
ग्राशिन शुक्ला सप्तमी कथा समाप्त कीन्ह ॥

विषय—श्री रामचंद्र जी ग्रौर ग्रन्य ग्रवतारों (२४ ग्रवतारों) तथा भक्तों का वर्णन । विशेषतया राम-कृष्ण चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

१७ ८७
सम्वत सत्रह सै सत्तासी माघ मासि तेरसि शुभराशी ॥
कोश्न पच्छ शुभवासर चंदा सीधि जोग वृष लग्न ग्रनंदा ॥
३ ० ८ १
हरदृग व्योम ग्रष्ट शशि संवत संख्या कीन्ह ॥
ग्राशिन शुक्ला सप्तमी कथा समाप्त कीन्ह ॥

संख्या ४१९. रामायण माहात्म्य, रचयिता—शीतलदास, कागज—ग्राधुनिक पीला, पत्र—१८, ग्राकार—८ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—३०६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२९ वि०, लिपिकाल—सं० १९३६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः ॥ ग्रथ रामायण माहात्म्य लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

ॐ वंदे रामायणं श्रीमत्तुलसी कृत मानस ।
राम रूप प्रवातारं धर्म कामार्थ सिद्धिदम् ॥ १ ॥
:o: :o: :o:

॥ सोरठ ॥

ॐ ॐ श्री गणनाथ विघ्न हरण गजबदन प्रभु ।
तव पद नावउं माथउ सुफल मनोरथ होंहि मम ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

मम अभिलाष भयो जिय जानी । बरनौं कछु हरिजस सुभखानी ॥
ताही समैं चित चढ़ि आई । तुलसी कृत को महातम गाई ॥
कीन अरम्भ सुमिरि भगवाना । जस कछु सुनेंउ सो करहु बखाना ॥
सम्वत बनइस सं बनतीसा । मार्गशीर्ष एकादशि दीसा ॥
शुक्ल पक्ष मंगल सुभ वारा । रचौं महातम पर्म उदारा ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सब विचारि मन ठीक दै देखि सकल परकास ।
संतन मुख माहात्म सुनि बरनत "सीतल दास" ॥

मध्य— ॥ चौपाई ॥

यह अरंभ महात्म कर लीन्हा । रामायण अरंभ जो कीन्हा ॥
प्रथम श्लोक पचीस बनावा । सातहु कांडन मां बरतावा ॥
ताको भाव संस्कृत बानी । ग्रंथ आदि दिए मंगल जानी ॥
पुनि सत्तासी सोरठ भाषा । सातहु कांडन मह धरि राषा ॥
छंद एक सौ और अठारह । सात कांड बिच है सब सारह ॥
ग्यारह सै पचहत्तरि दोहा । सप्त कांड बिच ते सब सोहा ॥
नौ हजार यक सै चौपाई । अठसठि अधिक सो सकल बनाई ॥
ताकर फोर जानि अब लेहू । सात कांड मा हय जित एहू ॥
सप्त श्लोक बाल मह आवी । पैंतिस सोरठ हय अति गावी ॥
यकसठि अधिक तीन सै दोहा । बंतालिस छंदहु सुठि सोहा ॥
दुइ श्लोक औ यकतिस दोहा । सोरठ तीनि छंद दुइ सोहा ॥
तीनि सै दुइ चौपाई राषा । किसकिंधा विवेक मैं भाषा ॥
तीनि श्लोक औ बासठि दोहा । तीनि छंद दुइ सोरठ सोहा ॥
चौपाई सै पांच बनाई । यक्यासी पुनि और मिलाई ॥
संदर कांड मांहि यह सामा । सरनागत जानव अभिरामा ॥
तीनि श्लोक छंद संतीसा । दोहा डेढसइक तह दीसा ॥
ग्यारह सय अरु बीस चौपाई । नौ सोरठ लंका मह गाई ॥
उत्तरमह श्लोक है पांचा । सोरठ सत्रह जान्येहु सांचा ॥
छाहै अधिक औ दुइ सै दोहा । चौदह छंद काम जिमि सोहा ॥
हैं पचाशदश सै चौपाई । रामायण ऐती सब गाई ॥
ऐ सब रामरूप करि गावा । पढ़ै सुनै सो हरि पुर पावा ॥

॥ दोहा ॥

यह सब विरचि सुधारि कै काशिहि दियो पठाइ ।
जासै प्रगटै जक्त में पढ़ै सुनै मन लाइ ॥

:o: :o: :o:

यह बरन्यो मैं यथामति सुन्यहु ज्यु संतन पास ।
पढ़ै सुनै जन प्रीति करि सेवक "सीतलदास" ॥ १ ॥

अवध पुरी की नैरतिषट जोजन परमान ।
"अम सीतल" द्विज वसत तहँ प्रभुदाया अरथान ।।
:o: :o: :o:
रामायण माहात्म्य रचि जग में कीन प्रकाश ।
जगन्नाथ जे नर पढ़ैं श्रीपति पुरवें आस ।।
श्री वर सीतलदास कृत बनो महातम ज्ञान ।
जगन्नाथ रघुनाथ यश परमतत्व करि जान ।
फाल्गुन कृष्णा पंचिमी चंद्रवार करि गान ।
६ ३ ९ १
रसरु राम नव शशि निरखि सम्वत् करो प्रमान ।।
ममस्थान मसौली साधु द्विजन कर दास ।
नित प्रति गावत रामयश कुम्हरावाँ में वास ।।
नहि कविता नहि साधुता लाम नाम जपि जोग ।
घाटि वाढ़ि अक्षर परें क्षमा करो सब लोग ।।

इति श्री मंगलवायने सकल कलि कलुष विध्वंसिने श्री तुलसी कृत मानस माहात्म शीतलदास कृत सम्पूर्ण शुभमस्तु श्री संवत् १९३६ शाके १८०१ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ पंचम्यां चंद्रवासरे ।। राम राम राम

विषय—तुलसी कृत रामायण का माहात्म्य वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

१९ २९
सम्वत वनइस सै वनतीसा । मार्गशीर्ष एकादशि दीसा ।।
शुक्ल पक्ष मंगल सुभवारा । रचौं महातम परम उदारा ।।

।। दोहा ।।

फाल्गुन कृष्णा पंचिमी चंद्रवार करि गान ।
६ ३ ९ १
रसरु राम नव शशि निरखि सम्वत करौ प्रमान ।।

संख्या ४२०. पद, रचयिता—शीतलदीन, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—$८\frac{३}{१०} \times ५\frac{६}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत हरिनारायण जी मिश्र, स्थान व डाकघर–सिकंदरा, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—

हमारे घर में कालि नागिनि वशी ।
...तू मेरी गोतिन कवन सगुन करि हसि ।। १ ।।
आइ परो एह अन्ध भवन में दीपक बिनु अभिलसी ।। २ ।।
दीपक लैकर ढूढ़न निकरी कालिनि को दरवसी ।। ३ ।।
"शीतल दीन" मलीन बिना प्रभु कर मीजत घरवसी ।। ४ ।।
मेरे मनमोहन से केह कोल डोरी ।
सुभग सुहृद सुन्दर सुरतिवर कौन कि हो रगरी ।। १ ।।
काल कराल तुमें नियरानो आयो बिपति घरी ।। २ ।।

नगर निकारि करी अण भीतर त्वरित...बखरी ॥ ३ ॥
"शीतल दीन" देखि गोपिन की नन्द ने की पकरी ॥ ४ ॥

राजित राधा सहित प्रभु ब्रज में रास रचाई ।
धाकिट धाकिट धाकिट धाकिट धुधुकिट द्वौ ताल बजाई ॥
मुख मुरली मन मोहन केरी सखि मन लेत बोराई ॥ १ ॥
पग घूघँरू की छनाछन सोभित मोहित सकल सुष पाई ।
मुकुट धरे सिरहु पर...हसन नाचत प्रेम बितलाइ ॥ २ ॥
सखिक...मोहन ध्यति भावं हृदय हृदय लगाई ।
लाडिली वृषभान की मनमान . छोडाई ॥ ३ ॥
"शीतलदीन"......सुन्दर देखि लाल सखि चपलाई ।
इत गोपाल की शोभा देखि भ्रमरगण आई ॥ ४ ॥

विषय—श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पदों का केवल एक पत्र मिला है जिसके एक ही ओर तीन पद लिखे हैं। ये तीनों पद विवरण पत्र मे उद्धृत कर दिए गए है ।

संख्या ४२१. १. वियोग सागर, २. मोहनी, रचयिता—शेख अहमद, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८$\frac{1}{4}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद ।

आदि—ग्रंथ वियोगसागर सेष अहमद का कीया ॥

॥ दोहा ॥

विधना गति विधहीं लही और न विधि को जान ।
जो विधि विधिना तुम सिरी ते विधि त्रिविधि समान ॥ १ ॥
नबी नबी अहमद कहै जे जग विय विय होय ।
गगन उदधि धरनी सकल औ रसु विय नहीं कोइ ॥ २ ॥
साहि मुहदी औलिया सब कुतबनि सुलितान ।
तिन सुत पीर जलाल मुहिदी विद्या गुन ग्यान ॥ ३ ॥
भोर बयार सुसरभ हितु सीतल बही सुवास ।
लालन विनु लजि मंजरी होत उदास ॥ ४ ॥
अमी किरन निसचढ की विष ससि बिनु मुष पीय ।
फूलत बोल कमोवनी केक कुहक दुष दीय ॥ ५ ॥
संदन परिमल सीर ससि तन लाये बिनु लाल ।
बिरहु अगिन उर मैं जरी बोल परी कंठमाल ॥ ६ ॥
तन तरफनि मीनहिं लई मन फुनिगा गति लीय ।
मेघ मद्या नैननि हरी जिय चातिग पीय पीय ॥

मध्य—

दुष विरहा बह दिस भयो कनहु दिसा न आहि ।
प्रान दुरावन लाल बिनु "अहमद" जिहि दिस हाहि ॥

:o: :o: :o:

मधुर बैन छबि नैन मय मधुर जु सबै सरीर ।
अरु लालन के गुन मधुर गरई बिरह न पीर ॥५८॥

नैन नैन ते बैन कहि रसना कहे न जाहि ।
दुरि मुसकानि हुलास छबि पल पल पेम लहांहि ॥५६॥
रोम रोम जिय जिय मिले लह्यौ जु पेम पियार ।
कहै सु बिहुरन की बिथा करहि वियोग पुकारि पुकारि ॥६०॥

इति वियोग सागर ग्रहमद का संपूरन ॥

मोहनी सैष ग्रहमद की करी ॥

॥ दोहा ॥

मंग गंग जल मोहनी हनत जु काम तरंग ।
रीझि रह्यो मन मीन ज्यौं देषत पानिप ग्रंग ॥ १ ॥
दिया जोति निस स्याम की वोप पटी मिलि सोहि ।
चिहुर लाल मगस्याम भय देषि रहे चषि मोहि ॥ २ ॥
सार किनारी सीस पर मनहु धनुष घनस्याम ।
कै किरनावल सूर की मंग रंग बिसराम ॥ ३ ॥
भौरन ते ग्रति स्याम ग्रलि बिसहर तें विष केस ।
उसहिन मंत्र मानहीं गाररी होहु किस सेस ॥ ४ ॥
इ लांबे ग्ररु घूँघरे नष सिष लौं लहरांहि ।
मनहु उड़निया नाग ज्यौं देषत ही डंस जाहि ॥ ५ ॥

:o: :o: :o:

ग्रंत—नैन भौंह नहीं चंद के ग्ररु लवे सिरि बार ।
"कहि ग्रहमद" रे गुनि जंनहु बदन जोति ससि हार ॥३८॥
कुंभ तार कंचन कुलस स्रीफल बेल कहंत ।
उठत पियोहर नारगी सो सोभा न लहंत ॥७१॥
लाली सेंदुर रत्त दे कुंदन कुंद भाइ ।
काम जरचौ ह्वै मोहनी सो कज्जल सिर पाइ ॥७२॥
तिहु तिलोक सजि मोहनी रचि कच कांम सुजान ।
सुर नर मुनिवर तपनि पौ देषत रहे सयान ॥

इति मोहनी सैष ग्रहमद की बांधी संपूरन भई १७७८ ग्रासाढ सुदी ३ सुकरवार ॥

विषय—वियोग सागर मे वियोग श्रृंगार का वर्णन किया गया है ग्रौर मोहनी में मोहनी के सिखनख का वर्णन है ।

संख्या ४२२. यूसुफ जुलेखा, रचयिता—शेख निसार, कागज—देशी, पत्र—१२५, ग्राकार—९¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—२९२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—फारसी, रचनाकाल—सं० १८४७ वि०, लिपिकाल—सं० १९५९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत गोपालचंद्र सिंह एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (ग्रवध) ।

ग्रादि—बिसमिल्ला ग्रल रहमान ग्रलरहीम
सुमिरों प्रथम सरूप सुहावा वो पेम बनिज तिन उपजावा
प्रेम ग्रगिन उतपत उपजावा बहुरि पवन जल उपवन छारा
ग्रगिन तें पवन पवन तें पानी पुनि पानी तें किय ग्रबडानी
इन चारों तें सब बिस्तारा धरती सरग सूर ससि तारा

चारि तत्त तें सभ कुछ साजा पवर्षा सुन प्रकास बिराजा
पुनि रिखि गन्धर्ब इत बनाई जंगम अस्थावर उपजाई
मम (प्रेम) अगिन तह काहु न सम्हारा रचान कह बहुविध बिस्तारा
तह सुन पावह पेम का थाती दीपक मांह धरा जस बाती
यह बातीमंह आप समाये हुये परछन पुनि देह जराये
प्रभुताई की तीजत कौतक कीन्ह निसार
कहां सो उत्तम अंास वह कीन्ह मुक्ति यह चार
:o: :o: :o:
आब जोत जाके रची तहं हैं सभ कुछ कीन्ह
मोकह मुक्त कत पावई जो नाम "मुहम्मद" लीन्ह
:o: :o: :o:
आलम शाह हिन्द सुलताना तहं के राज यह कथा बखाना
देहली राज करी अब नीता अपर वहीं तेह कीन्ह अनीता
नादिर खां सो अधम रुहेला सवापराध कीन्ह बड़ पेला
पातसाह कंह अंध जो कीन्हा सुत और नार सभै दुख दीन्हा
कीन्ह अपत तंमूर घराना राजप्रताप अधम तंह माना
:o: :o: :o:
शेख हबीबुल्ला सोहाये शेखपुर जिन्ह आन बसाए
पातसाह अकबर सुलताना तंह के राज कर जगत बखाना
औ वह देस सूबा होई आई तीस बरस की रही सोहाई
तंह के शेख मुहम्मद बारा रूपवन्त भू के अवतारा
शेख गुलाम मुहम्मद नाऊं सो मम पिता औ ताकर गाऊं
:o: :o: :o:
बंस मोलवी रोम की जंह कर प्रेम गरन्थ हुई
सिद्ध पढ़ मसनवी पावे पेम की पन्थ
सात गरन्थ अनूप बनाई हिन्दी और पारसी सोहाई
संसकिरत तुरकी मनभाई सभे प्रेम रस भरी सोहाई
म्हरनकार के कह्यो कहानी रस मनोज रस कबित बखानी
बार बीस मंह कथा बनाई म्हरनकार अनूप सोहाई
रस मनोज रस कबित सोहावा सभे नायिका भेद बतावा
यह सत जोहर पेम कहानी कहा मसनवी अनरत सानी
झूठ जान सभते मन भागा अब यह सांच कथा चित लागा
हिजरी सन बारह से पांचा बरन्यो पेम कथा यह सांचा
अठारह से संयतालीसा संवत बिक्रम सेन नरेसा
सतरह सै बारह जुत साका पौष मास पून्यौ बस राका
सतावन बरख बीते आव तब उपज्यो यह कथा के चाव
सात दिवसमंह समापत बुरमत नाम लह्यों यह संवत

अंत—देख जगत कर कोक तखवाला हुई सदामन दुखित बेहाला
जान न परी बहुरि वह काहा जग मानिक उपज्यो तेह काहा
देहु दयाल मुक्त कत मोकहु हरहु मोर सब पातक दोखहु
पढ़ प्रेम के अछर कोई देई असीस मुक्ति जिन होई
हम न रहब अछर रह जायह जो कोउ पढ़ भेद नर पायह
अवगुन हो इतो लेहु छिपाई हम न रहब जो देब बताई

रहें वो भगत पेम प्रवज्ञाना धरम नीत सुभ कथा बखानी
सात दिवस मह कथा सुहाई करि के दया समायल पाई
धर्म कर्म एको नहीं अधरम भरा जहाज
जनम दई के लाजकर राख दयो जगलाज
.........कि किहाव यूसुफ जुलेखा
बजबान भाषा.........सन् १३१६ हिजरी

विषय—यूसुफ और जुलेखा की प्रेमकथा का वर्णन ।

रचनाकाल

अठारह से संयतालीसा ।
संवत विक्रम सेन नरेसा ।

संख्या ४२३. भक्ति विधान, रचयिता—शोभाचंद (जयसिंह का सेवक ब्रह्म भाट राय ताराचंद सुत शोभा चंद है), कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—७।। x ४।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४३, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८१ आषाढ सु० ५ गुरौ (ग्रंथ के आधार पर), लिपिकाल—सं० १७४८ भाद्र कृ० ३ शुक्र (ग्रंथ के आधार पर), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० बं० सं० ७१ ,पु० सं० ४ ।

आदि—अथ श्री भक्तिविधान ग्रन्थ लिख्यते ।। श्री कृष्णाय नमः ।।

वंदू श्री बल्लभ चरन श्री विट्ठलेस रघुनाथ ।
अरु श्री देवकी नंद जी सीसु पंकति साथ ।। १ ।।
अरु वंदू श्री बल्लभ कुल चरन अरु बल्लभ कुल दास ।
अरु बंदू तिही भोमि कूं जहां बल्लभ कुलवास ।। २ ।।
बंदू श्री शुक परीक्षित ब्रह्मा नारद व्यास ।
दुष्ट काल कलियुग विषे कीयो भागवत प्रकास ।।

मध्य—पृ० ३२

लछमी नरसिंह को जनम चौदस कृष्ण कुंआर ।
श्री बालकृष्ण के बालकनि को कहुं जन्म प्रकार ।।४७६।।
द्वारकेस ब्रजनाथ जू ब्रजभूषन को जन्म ।
माधव कातिक चेत सुदि पांचे नवमी नवम ।।४८०।।
पीतांबर जी चेत बदि परिवा प्रगटे आय ।
पुरुषोत्तम आसुज सुदि चोथि भए सुखदाय ।।४८१।।

अंत—अरु जो वे यह ग्रंथ को सदा पढे चित लाय ।

ताहू को दीजें भगति भक्त बछलता पाय ।।६२६।।
मन वच क्रम तातें सदा पढीयो भक्ति विधान ।
बिना भजन गोपाल सों सों उपजें प्रेम प्रमान ।।६३०।।
१ ८ ६ १
संवतु शशि बसु रितु अलख सुकल पछ सुचिमास ।।.
गुरु पांचे यह ग्रंथ हुअ भक्तहेत परकास ।।६३१।।

इति श्री देवकी कुमार चरणं शरण सोभा चंदकृत भक्ति विधान संपूर्ण ।। संवत् १६८१ आषाढ सुदि ५ गुरौ ग्रंथोत्पत्ति । स० १७४८ वर्षे भाद्रपद मास बदि ३ शुक्र वारे लिखितं बल्लभदास सुत ।

विषय—प्रश्नोत्तर रूप में पुष्टिमार्गीय संप्रदाय के मंदिरों में सिद्धांत और सेवा सामग्री उत्सव प्रकार का वर्णन किया गया है। ग्रंथ में पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के अर्थ नित्य नियम (आह्निक) भगवत्सेवा की आवश्यकता एवं उसकी विधि, उत्सवों का वर्णन, गोस्वामी बालकों का संक्षिप्त परिचय, भक्ति, सत्संग, अनन्याश्रय, भाव भावना आदि सिद्धांतों का विशद विवेचन किया गया है। यह ग्रंथ श्री आचार्य वल्लभाचार्य के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथ जी रचित 'साधन दीपिका' के आधार पर तैयार किया गया है।

संख्या ४२४. गणित बोधनी (प्रथम भाग), रचयिता—शोभाराय (महाराज), कागज—देशी, पत्र—१३, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५, पूर्ण, प्राचीन, गद्य तथा पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ अथ गणित बोधनी प्रथम भाग महाराज शोभाराम कृत लिख्यते ॥ प्रथम गणेश जी की वंदना ॥

॥ दोहा ॥

गिरिपति तनयापति तनय सिद्ध करो शुभ काम।
गणित बोधनी रचत हो सोभाराम मम नाम ॥ १ ॥
श्री व्रजेंद्र जसवंत को राज भरतपुर जान।
तासु परगनो कामवन सकल गुणन खान ॥ २ ॥
तहाँ जुरे हेड़ा बसत है अति सुखमों को धाम।
पुस्तक आनंद लाल हित कथहे शोभाराम ॥ ३ ॥ श्री श्री ॥

॥ सवैया ॥

साथी तीन व्योपार कियो मिल रुपिया सातसे बीस लगाये ॥
पृथम से दोयम भागत्रितिय गुण या प्रकार तुनको समझाये ॥
साथी दोनों को युक्ति कियो धन तासु समान त्रितिय ले आये ॥
सोभा कहत आनंद सुनो कह पृथक पृथक हमको जतलाये ॥ ४ ॥
उत्तर पहले का ९०) दूसरे का २७०। तीसरे का ३६०) ॥

मध्य—

येक प्रश्न सभा में कहू सुनो दिलदारे। इस सवाल का तू दे जवाब घर जा रे ॥ टेक ॥
येक मछली का जिकर करूँ सुन प्यारे। उसके धड़ से सर उसका दूना था रे ॥
उसके धड़ से थी आधी पूंछ जतला रे। कितने मन की वह भी न सही जतला रे ॥
प्यारे २ कहू दैना दंया वारे ॥ १ ॥

दरया मे किस्ती चार बही जाती थी।
था साहूकार का माल भरे लाती थी ॥
थी बोझल किस्ती येक वह दहलाती थी।
मल्हाने किस्ती को देखा डिगमिगाती थी।
मल्हा किस्ती को थाम जबी ललकारे ॥ २ ॥
मल्हा मल्हों से कहे सुनो मेरी अरजी।
मेरी डूबी जाय जहाज कहो कहा करजी।
लेओ माल जितना किस्तियाँ तुम्हारी भरजी।
बच जायगा मेरा जहाज यहै है मरजी।
डोंगा उसका बच गया माल दे डारे ॥ ३ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

येक मकां के घेर का करता है बयांन ।
लड़के तीन षेलन लगे सौच कर दीने आन ॥

॥ झूलना ॥

चकर दीने आन तीन का करता हु बंईयान ॥
तुम तौ सची करं के जांन येक तौ आथ चक्र फीर आया है ।
दुजा लड़का प्यारा जानं दस चकर पग धारा है
उतौ करं के सहैजई सारा उसने सहैज में सुष पाया है ।
तीजा उठार्रा साकें : जीसने बार है दांले आके मेता कहूं तुजं जतलाके ।
ईसका फेरना बतलाया है । येक मुकामे बतानां ।
केते मे हो गये सुजाना ईहां तो उत्तर को हो सफानां
लाला क्या दील मे घबड़ाया है ॥ १ ॥ उत्तर :
ईसका लघुतन समप्रवर्त्त : ३५।१२।१० ।

विषय—इसमें गणित पर खूब प्रकाश डाला है ।

संख्या ४२५. द्वादशराशि-विचार, रचयिता—"श्यामराम", कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६½ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश गिरि, ग्राम—हुरहुरी, पा०—केराकत, जिला—जौनपुर ।

आदि—

जो इन कष्टन तें जीवैं लोइ विष्णु कृपा ते जीवैं सोइ
सौ १०० वर्ष आयुर्बल ताको होइ ।
सावन मास शुक्ल पक्ष मो मरै भरनी एकादसि ना टरै
रवि दिन दुपर मरै नर सोइ ।
इति सिंघ रासि फले ॥

॥ अथ कन्या रासि ॥

कन्या रासि जा बालक होइ । उत्तमा नछत्र का जन्म जो होइ ॥
सो नर निश्चय धनवंता होइ । सौभाग्यवंत जानौ पुनि सोई ॥
मिष्टान्न भोग्य कौ भोग्या होई । चतुर विवेकी कहै सब कोई ॥
कष्ट दुष वर्ष पाच ५ मे होई ।

:o: :o: :o:

अंत— ॥ अथ मीन रासि फलम् ॥

मीन रासि जो बालक होई पूर्व भाद्र पद का जन्म जो होइ ॥
देव गुरु पूजि सभागा होइ जंत्र मंत्र वहु जानै सोइ ॥

:o: :o: :o:

माघ मास सुक्ल पछ मे मरै रोहिन नछत्र अष्टमी न टरै ॥
गुरुवासर संध्या काल मै तजै सो प्रानी प्राण ॥
जगत काल के बसि सबै सुनियो चतुर सुजान ॥
जातक को मत जानिकै "स्याम राम" धरु कीन ॥
सोभा पावै सभा मै पढ़ै चतुर प्रबीन ॥

इति श्री द्वादस रासि विचार जन्म पत्रि कपावली समाप्त ।। शंवत् १८६३ समै कुआ बदी सतमी ७ सनीचर ।

विषय—द्वादस राशि विचार एवं फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खंडित है । आरभ के दो पत्ते लुप्त हैं, केवल तीन पत्ते रह गए हैं ।

सख्या ४२६. कुड निर्माण वार्तिक, रचयिता—श्री कृष्ण गंगाधर, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८$\frac{५}{१६}$ × ४$\frac{५}{१६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ,—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७१६ वि०, लिपिकाल—सं० १७१६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० छोटे लाल जी मिश्र, ग्राम—हसराजपुर, पो०—होलागढ़, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—. . . . .

चतुरस्त्र जे मध्य सूत्र तेहनो चोवीसमो भा. . . . .

:o: :o: :o:

पूर्व आग्ने कुंड त्रगरे उतराग्र योनि चोजे । योनि दक्षिराया साहेये रहे ।।

बाको कुंड पांच ते पूर्वाग्र योनि कोजे ।। पश्चिमे योनि रहै ।। नवमु कुंड ईशान पूर्व बवे तेहने योनि दक्षिणे रहे । उतराग्र कीजे ।।४७।।

क्षेत्रनो जे व्यास तेने जे अर्द्ध तेनो जे चार सो अंश भाग १ अंगुल एक १ ए वा ६ न० भाग तेनो विसमो अंश व वत्र राय ३ यु का ४ चार छाया लाप्र ६ त्रराय ३ एणे युक्त एवा अंगुल त्रराय ३।४।६।३ पूर्वनी पासा वधारीये येणे व्यासार्द्ध वृत्त कीजे तिव्यास संपूर्ण अंगुल त्रीश ३० सात एक न चार ए व्यास ना भाग ५ पाच अंगुल ६ यव १ युका ३ लिक्षा ४ वालाग्र १ ए वा वीभणे भागे अंगुल १२।२।७।०।२ ए व्यास ३०७ माघ तावी यै सेष अंगुल १८।४।२।४।४ ये प्रमाणें मंडल ने सूत्र पाच दीजे त्य वारे पचासी थाये । इनै भाग छठे शर अंगुष्ट ३०।०।५।६।० चोइय त्यवारे पंच"नो थाये ।।५८।। भूतनाशन कामनाये पंचास्त्रि कंड कयुछे ।।

अत—

रत्नपुरनाराज्य अध्य रामचद्र नामे ।। भरद्वाज मुनि कुल आसमुद्र चंमा ऋग्वेद पाठी मालवी ब्राह्मण चतुर्वेदी नौदिकरो श्रीम ज्यराम दास चतुर्वेदी रत्नपुर थी आव्यौ नैमिषारण्य ने वीषमालये ।। भाइ ने षरणावाणे ।। आव्यो ते प्रेरो रामचद्र नैमिष कुडनु निर्माण जाणवाने अर्थे ।।७२।।

अथ कीधानो प्रसग:

विक्रमादित्य ने वर्षे रस ६ गगन शून्य ० तिथि १५ पंदरा ए वर्षे ग्रथ थ्योछे । इश्वर न समर्पित कीधो छे । यज्ञ की धानु जे फल ते पाम वाने ।। षोडषें महादान वापी कूप तडाग यज्ञ एहनु अंग छे ।। संवत् १७१६ कार्तिक वदि ७ सप्त गुरु वासरे पुष्यर्क्ष भुक्तयोगे व बकरणे अस्मिन दिने श्री मद्नपुर दोक्षितुभया वों को रणेद पुस्तक लिखितं त्रीपाठी श्रीकृष्ण गंगाधर कृतायां वार्तिक पद्धतिः संपूर्ण मस्तु रामभाजपेय वार्तिक पद्धतिः ।। श्री रस्तु ।। श्री कृष्णार्पणमस्तु ।।

विषय—यज्ञ कुड विधान वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । आरंभ के १५ पत्ते नही है ।

संख्या ४२७. दुर्गा भक्ति तरंगिणी, रचयिता—श्री कृष्ण भट्ट, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री महागणपतए नमः ।। ॐ नमश्चंडिकायै ।।

।। छंद चौपई ।।

सप्तसती पाठहिं पहिचांनों । रिषि सु मारकंडेय बखांनों ।।
गायत्रीउ बिन कछ अनुष्टुप । छंद प्रचार करौ चुपही चुप ।। १ ।।
महा कालि महलछिय आनों । महासरसुती दैवत मांनों ।।
चामुंडा सक्ति सुतिहि जोग । भुक्तिमुक्ति सिधि जप बिनियोग ।। २ ।।
प्रथम चरित्रहि बृह्मा है रिषि । गयत्री छंद सुहिय लै लिखि ।।
माहाकालि तिंहिं दैवत जांनी । और नंद जा सक्ति बखांनी ।। ३ ।।
रक्तदंत का बीज बतायौ । अग्नत्वे ताकौ मन भायौ ।।
:०: :०: :०:

अंत—उपसर्ग समित सुठि होइ जात । ग्रह पीडा दारुन पुनि मिटात ।।
दुस्वप्नन न रनि देष्यो जु होइ । सुस्वप्न होत ततकाल सोइ ।।१६।।
जे बाल बाल ग्रह पराभूत । तिन यहै सांति कारन अभूत ।।
संघात भेद पुनि नरनि सोइ । अति उत्तम सौ........
:०: :०: :०:

विषय—देवी माहात्म्य का भाषानुवाद। ग्रंथ तरंगों मे है। प्राप्त अंश में ग्यारह तरंगें हैं।

संख्या ४२८. सद्गुरु महिमा, रचयिता—श्री निवास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९१/६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० विश्वनाथ त्रिपाठी, ग्राम—नंदना, पोस्ट—बरहज बाजार, जिला—गोरखपुर।

आदि—श्री जानकी वल्लभाय नमः ।। श्री प्रशावाय नमः ।। अथ श्रीसद्गुरु महिमा लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

श्री गुरु चरन प्रनाम करि धरौ ध्यान उर मांहि ।
मति मलीन निरमल करों उवें भानु तम जांहि ।। १ ।।
गुरु अंघ्री गुन आयतन प्रनमों मन तजि मान ।
श्री निवास सिकता सुमति क्रिपया मेरु समान ।। २ ।।
गुरु सम दानी कौन जग दीन्हो अवचल दान ।
घटै लुटै छीजै नही दिन दिन दूनो जानि ।। ३ ।।

।। चौपाई ।।

गुरु मुष गुरु को शब्द विचारै । त्यागि असार सार कों धारै ।।
सतगुरु चरन मनावो भाई । जासौं दुवध्या दुरमति जाई ।। ४ ।।
दुरमति को मैं करूं विचारा । दुरमति कहिये कौन प्रकारा ।।
दुरमति कहिये तीन प्रकारा । इक झूठी द्वै साची सारा ।। ५ ।।
झूठी दुर्मति या सौं कहिये । माया मेरो प्रण लै वहिये ।।
या दुरमति सो हरि न मिलाई । सो गुरु चरन परस कौं जाई ।। ६ ।।

साखी दुरमति गुरु समुझावै । जन निवास गुरु कृपा सु पावै ॥

अंत—या मारग को करै विचारा । ते प्रानी पावै रस सारा ॥
ग्यानी ध्यानी चतुर कहावै । या महिमा बिन रस नहि पावै ॥१६०॥
सदगुर महिमा कहि न सुनही । मूरष नर कहैं गुरु मुष हमही ॥
सकल कविन को बंदनि करिहौं । छिमा चूक मैं पायन परिहौं ॥१६१॥
मैं सठ कवि रस गम मो नाई । गुरु मुष सुनि कै लेहि बनाई ॥
श्रीनिवास गुरु महिमा सो भनी । बरनि मिल्यो सिय बर सो धनी ॥१६२॥

॥ दोहा ॥

या महिमा समझै सुनै गावै प्रीत लगाय ।
श्री निवास हरि रस मिलै भर्म कर्म दुष जाय ॥१६३॥
मैं अभिमानी नीच मति कछू न जानौ भेव ।
श्रीनिवास सदगुर दया हरिगुर ये कहि सेव ॥१६४॥
भौसागर मे बूडतं सदगुरु पकरी बांहि ।
श्रीनिवास विश्राम लै सदगुरु चरनन माहि ॥१६५॥
ना सुष सुरपति नगर मैं ना सुष सुष धन धाम ।
श्री निवास सुष पाइयो सदगुर सरनि सुनाम ॥१६६॥

इति श्री सदगुरु महिमा श्री श्री निवास जी कृत प्रथमो रहस्य संपूर्ण ॥ श्री मव अवंतिका पूरी मधे लिपि कृतं वैष्णव षेमदास ॥ श्री ॥ रस्तु ॥

विषय—गुरु के माहात्म्य का वर्णन किया गया है ।

संख्या ४२९. हनूमान पच्चीसी, रचयिता—श्री निवास, कागज—देशी, पत्र—२ (खर्रीकार), आकार—२ फी० ३¼ × ५¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हनूमान पचीसी के कवित्त लिष्यते ॥
काहू कै तात अरु मात सुत भ्रात जात पांति काहू क पाती परी गोरव सरीर कौ ।
काहू कै संपति सुष सज्जन सनेही जा काहू कै कनिक कोस भरयो मनिहीर कौ ।
काहू कै धरनीधर धर्मध्वजा दसौ दिसा काहू कै नृपति नर नारिन के सीर कौ ।
कृपा "श्री निवास" कहै आस करौ जो करौ सुमिरै तै भरौसौ जामि हनूमान बीर कौ ॥ १ ॥

अंत—
अतुलत बलधाम काम करी श्री राम को साहस सरूप काल छाप चरधारा कौ ।
मंगल सुष वारिध विसारद सारद सौ भंजन जौ दारिद यौ सज्जन संभार कौ ।
भारी दै निवास भक्त भीर परै आसपास सीतापति दास षास गुप्त सो विहार कौ ।
गावै श्रुति बार बार पावै नही पार तऊ उज्वल अपार जस पवनकुमार कौ ॥ ८ ॥

इती श्री हनूमान पचीसी के कवित्त समाप्तं २५ ॥

विषय—हनुमान् जी का यश वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खर्रीकार रूप में है । रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त हैं ।

संख्या ४३०क. महाभारत (कर्ण पर्व), रचयिता—श्रीपति, निवासस्थान—मऊ, कहार देश (रीवां, बघेलखंड), कागज—देशी, पत्र—११३, आकार—९½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत्—१७१९ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० शिवबरन सिंह, ठा० जंगबहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाये नम्ह पोथी लीख महाभारथ कार्न पार्वकवी श्रीपती ॥

कवि कह प्रथमहि ताही मनावौ । जाहि जपे नीर्मलि गति पावौ ॥
जगत वंद जो कर्मक सीज्या । वारिज बंधु दीन कर रंज्या ॥
राती देवस जुग जेहि ते होई । जेकरे तेजहि ल्यान कोई ॥
जेकरे उवए आस्त के जामा । सीस नाइकै कीन्ह प्रनामा ॥
:o: :o: :o:
कवि कर पिता धार्म कर धामा । धार्मदास अस ताकर नामा ॥
चारि पुत्र तेन्ह के भए तैसे । नाम बिसेष कहत हौ जैसे ॥
भे कवि गंग प्रथम गुन आगर । षर्ग सेनि पुनि सुमति के सागर ॥
तासु अनुज दलपति अभिरामा । चौथे श्रीपति मोरइ नामा ॥
पंच अनुज अवहीतें भाषो नाम अनंत ।
पांचवान सम सुंदर जेन्ह के गुन क न अंत ॥
सभा पर्व उतजोग सोहाई । भीष्म द्रोन भरि पितै बनाई ॥
विधि वस आगे वरनि कै राषा । सो सुनवे के मन अभिलाषा ॥
तेन्ह कर तंत्य जानि मनमाही । कार्न पार्व मै रचेउ नीवाही ॥
ब्यास महामुनि वरनि जो राषा । तेहिते मै वोन्ह वाढ़ी न भाषा ॥
कवि जन मानेहु मोर निहोरा । मैन करौ कवि आउक तोरा ॥
अंछर उपमा हीन जो होई । औ विहीन तुक वाढक सोइ ॥
करि आदर एह लीन्हेहु कैसे । भ्रमर अमी उपरागक जैसे ॥
वांस वंस औ वृत जो आही । ताते प्रथमहि कहेउ निवाही ॥
तेहिते वहुरी इहा नहि भाषा । छंछेपहिं वीस्तर वदि राषा ॥
संवत संत्रह सै वोनईसा । माघ मास दिन गयउ पचीसा ॥
कथा प्रकास कीन्ह तब सिध्य जोग अनुमानी ।
पढ़ि को कविआ करन कवि सास्तहि मति जानी ॥

अंत—

एहि भातीन्ह नृप आस्तुती कीन्हा । रथ चढ़ि चलेउ रनाजित लीन्हा ॥
वात चीत चालत गए ताहा । जूझे कार्न षेत मह जाहा ॥
देषी सराचीत सकल सरीरा । सहित पुत्र रविनंदन बीरा ॥
परी रना नीर देह सोहाइ । पुरुषसींघ रनसींघ की नाइ ॥
त्रास छूट हीअ हर्ष जनावा । अव मै श्रीस्न राज पद पावा ॥
सबीता अथए नीसि नीअरानी । चली सीवर अव सारग पानी ॥
वहुरे वेषी वुदीस्तील कार्नही छाडी मसान ।
नीज नेवास मह वैसे गार्जत हनत नीसान ॥
ऐसन कार्न केर संग्रामा । जे जन सुनिहही करि मन कामा ॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत कर्ण पर्व का भाषानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १७१६ है। लिपिकाल ग्रंथ के अंत का पत्र लुप्त हो जाने के कारण अज्ञात है, पर ग्रंथ धर्मदास कृत महाभारत के साथ एक जिल्द में है और उसका लिपिकाल सं० १८८४–८८ है। अत. इसका भी इसी के लगभग माना जाना उचित है।

संख्या ४३०ख. कर्णपर्व, रचयिता—श्रीपति, रचनाकाल—सं० १७१६ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्रीयुत जनार्दन प्रसाद जी एम० ए०, एल० टी०, ग्राम—कठौली, पो०—मैंजारोड, जिला—इलाहाबाद।

आदि—

कविवर पिता धर्म करनामा धर्मदास अस ताकर नामा।
चारि पुत्र तेनके भै तैसे नाम विसेष कहत हौ जैसे।
भै कवि गंग प्रथम गुन आगर वर्ग सेनि पुनि सुमति के सागर।
तासु अनुज दलपति अभिरामा चौथे श्रीपति मोरे नामा।

॥ दोहा ॥

पाँच अनुज अबहो ते भाषौ नाम अनंत
पाँचवान सम सुन्दर जेन्ह के गुन कर अंत
सभा पर्व उतजोग सुहाई भीषम द्रोण भरि पितै वनाई
बिधि बस आगे वनिक राषा सो सुनबे को मन अभिलाषा
तेन्हकर अंत जानि मन मांही कर्ण पर्व मैं रचो निवाही
ब्यास महामुनि वरनि जें राषा तेहि ते मै थोन्ह बाढि न भाषा
कवि जन मानेहु मोर निहोरा मै न करौ कवि आउक तोरा
अछर उपमा हीन जे होई औ विहीन तुवक सब सोई
कै आदर एह लीन्हे कैसे अमर अमीउ पराग क जैसे
वास वंस औ वृत जो आही ताते प्रथमहि कहा निवाही
तेहिते वहुरि इहा नहि भाषा छंछेपहि विस्तार बवि राषा
संबत् सत्रह सौ वोनईसा माघ मास दिन गये पचीसा॥

॥ दोहा ॥

कथा प्रकास कीन्ह तब सिध्य जोग अनुमानि
पढ़ि कै को कवि व्याकरण कवि सास्त्रहि मति जानि

अंत—अंसन कर्ण केर संग्रामा जे जन सुनिहै कै मन कामा
जेन्ह पुनि गया पिंड जनु दीन्है तेन्ह भगवत भजन जनु कीन्हें
जग्य दान तप जप सब जेते ते जनु जन कै बैठे लेते
तेन्ह तीरथ जनु सबै नहाये भारथ कथा वीत जेन्ह लाए
जीवनि मुक्ति रहे होइ अैसे ते निर्वान पाइ पद वैसे
आन के कानै वाचै जोई दसौ अंस फल पावै सोई
अपने हेतु जेहि अधीर भाउ वाचै सो समग्र फल पाऊ

॥ दोहा ॥

जो अभिलाष जानि जिय सुनै सो पूजै आस
कर्ण पर्व एहि भांतिन वरनौ श्रीपति दास

इति श्री महाभारथे कर्ण पर्व कर्ण वधनोनाम अढ़ाइमो अध्याय॥

संवत १६५० मिती फागुन बदी ६ वार मंगलवार सन १३०१ फसली वो सन १८६४ ईसवी हस्ताक्षर बृजमंगल सिंह ।।

विषय—महाभारत कर्णपर्व का भाषानुवाद ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सौ वोनईसा । माघ मास दिन गये पचीसा ।।

विशेष ज्ञातव्य—आरंभ के दो पृष्ठ फट गए हैं ।

संख्या ४३१. श्रीपति के कवित्त, रचयिता—श्रीपति, निवासस्थान—काशी, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—१०$\frac{3}{8}$ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।।

गंग के कूल की गैल गहीं जिनि आगे बि(रंच) की गैल कढ़ैगी ।।
नीर समीर लगैगों कहू तन आनन एक ते चंच गढ़ैगी ।।
श्रीपति पाठ पढ़ै विधि सू जहू दूसरो और न पाठ पढ़ैगी ।।
भाल मैं बाल तमीस लगाइ कै ईस बनाय कै सीस चढ़ैगी ।। १ ।।
जा जमुना में अन्हात जो प्रात ही विप्र बनाय बनी बिगरैगी ।।
श्रीपति......मरि दै है उड़कै पामरी चारु हिये की हरैगी ।।
माखन चोरि कै......र कौं चोरि कै गोपी किशोर पुकार परैगी ।।
काछनी लाल (के) गुंज की माल दै हाल दै तोहि गुपाल करैगी ।। २ ।।

।। कवित्त ।।

घन सी दीपक सी खासी चपला सी चास चंपकलता सी व्रखभान की विभासी हैं ।
नैननि चकोरनि कों सीचत सुधासी कलाधार की कला सी मुख सुखमा प्रकासी है ।
लखि ललचानों रूप करत का वखान जन्यो श्रीपति सुजान कासी नगर निवासी हैं ।।
हेम कंज नलिका सी जोति ज्वालिका सी बाल लाल मालिका सी हरतालिका की उपासी हैं ।। ३ ।।

मध्य—

फूले आस पास कास अमल प्रकास भयौ,
रही न निसानी कहूँ महि मैं गरद की ।।
राजत कमल दल ऊपर मधुप नैन,
छाप सी दिखाई व्रज विरह फरद की ।।
श्रीपति सुजान कहै आली बनमाली बिना,
कछु न सुहाय मेरे मन के दरद की ।।
हरद समान तन भयो है जरद अब,
करद सी लागै यह चांदनी सरद की ।।२२।।
खंजन खरे खिजात मीन मन मुरकात,
लखि कै लजात लोने लाज भरे भौंर के ।।
कारे कारे वारे अनियारे उजियारे रूप,
कारे हैं छुवन वारे कानन के छोर के ।।
पानिप पखारे सखि लोचन तिहारे कहैं,
श्रीपति पुकारे प्यारे जसुदा किशोर के ।।

रति के सहायक हैं महा सुखदायक हैं,
मेन के मुसाव हैं साहब हैं चकोर को ॥२३॥

अंत—कीरति तिहारी वरनत रघुबीर धीर,
श्रीपति फणिद की सुमति हहरति है॥
छित पर हिमगिरि हिम हिरि (गिरि) पर गंगा
गंगा पर सरद घटा सी ठहरति है॥
सरद घटा पैं सुरपति के अटा सी,
सुरपति के अटा पे चंद निजु छटा छहरति है॥
चंद की छटा पे ध्रुव धाम सी धवल वल
ध्रुव धाम पर धरम धुजा सी फहरति है॥५६॥
बिना कारे काजर सिंगार तिय को फीको लागे
बिना कारे केश वेश लागत न प्यारे हैं॥
कारे रंग अनेम बद सुरभि सरस तामें
अगर के कारे धूप देवता सुखारे हैं॥
कारे रंग सुरमाते अंखिनु की जोति जागे
श्रीपति बखान नेनन मे रंग कारे है॥
कोरे रंग माहतार कारे के निहायत कारे
रंग वारे देव साहिब हमारे है॥६०॥

कवित्त कान्ह के लिखे श्रीपति जी के साठि।

विषय—विभिन्न विषयों के साठ कवित्त सवैयों का संग्रह।

संख्या ४३२क. भाषा चंद्रोदय (व्याकरण), रचयिता—पं० श्रीलाल, कागज—आधुनिक, पत्र—१००, आकार—६$\frac{६}{१३}$ × ५$\frac{७}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १८६५ के लगभग, मुद्रण काल—सन् १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजहाँपुर, पो०—मिडारा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—भाषा चंद्रोदय अर्थात हिन्दी भाषा का व्याकरण॥

१ पाठ

व्याकरण विद्या से लोगों को शुद्ध और अशुद्ध शब्दों की विवेचना और उनकी योजना का ज्ञान होता है।

शब्द मात्र वर्णों से बनते है इसलिये पहिले शब्दों के मूल वर्णों का लिखना उचित है वर्ण अर्थात् अक्षर बुद्धिमानों के बनाये हुए संकेत हैं। वे देश भेद से नाना प्रकार के हैं उनमें से देवनागरी की वर्णमाला लिखते है।

अंत—भाषा चंद्रोदय भयो जग के बीच अनूप।
ता प्रकाश सूझें परे छोटे मोटे रूप॥
:o: :o: :o:
तनके सबहीं काम को धरु विद्या में ध्यान।
विद्या तें नर जग लहें विशद कीर्ति धन धाम॥

इति भाषा चंद्रोदय।

विषय—व्याकरण विषय का वर्णन।

संख्या ४३२ख. विद्याङ्कुर, रचयिता—पं० श्रीलाल, कागज—देशी, पत्र—७८, आकार—८$\frac{3}{16}$ × ५$\frac{3}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १८६० ई० के लगभग, मुद्रण-काल—सन् १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजहाँपुर, पोस्ट—मिडारा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—विद्याङ्कुर पहिला भाग

१ पाठ

सृष्टि के विषय में

किसी समय एक पंडित अपनी शाला में बैठा हुआ विद्यार्थियों को पढ़ा रहा था उसी समय कोई मनुष्य एक जंगली गैंडा लिये उसी शाला के पास होकर निकला तो उस गैंडे को देखकर लड़कों ने अपने मन में बड़ा आश्चर्य करके गुरु से पूछा कि महाराज यह क्या है हमने ऐसा ज व कभी पहिले कोई नहीं देखा ।।

।। गुरु ।।

यह ईश्वर की अनंत सृष्टि है इसमें अनेक आश्चर्य के पदार्थ है उनका जानना विद्या के बल और खोजने से होता है । तुम भी श्रम कर विद्या सीखोगे तो ईश्वर की रचना का भेद जानोगे ।।

अंत— **६ पाठ**

प्रकाश के विषय में

शिष्य

आपने प्रकाश की शीघ्रगति के कारण गर्जना सुनने के पहिले बिजली का देखना वर्णन किया परंतु अब मै यह जानना चाहता हूँ कि प्रकाश की कितने काल में कितनी गति है ।।

विषय—सृष्टि और पशु, पक्षी, मनुष्य, कीट, पतंग, पेड़, पौधे आदि विषयों का वर्णन ।

संख्या ४३३. अवधूत गीता भाषा टीका, रचयिता—सज्यानाथ (? सज्ञानाथ), कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—६$\frac{1}{4}$ × ४$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) १०।५३ बस्ता), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरुभ्यो नमः ।। श्री सरस्वत्यै नमः ।। प्रथम अवधूत गीता लिषते ।।

कृपा करै ईस्वर सदा देवपुरिष सो जानि ।
मोमैं जाकी वासना ईछया करै होत मानि ।। १ ।।
आत्मा मैं परमात्मा सबमैं पूरन सोइ ।
निराकार सो देषियै सबते न्यारो जोइ ।। २ ।।
पंचभूत या देह मैं जगत आत्मा जानि ।
अंतर है परमात्मा कमलपत्र जल मानि ।। ३ ।।
नवत कहोहो कोन कु सबमैं बूझहि जोहि ।
पूरन जो परमात्मा मेरै अंतर सोइ ।। ३ ।।
आत्मा केवल सर्व है भेद कछू नहि मानि ।
आस निरासी बात है बिसमय कछु न जानि ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत—अष्ट प्रकर्ण गीता जुही दत्त गुरु की भास ।
सो "श्री सज्यानाथ" नै भाषा करी प्रकास ॥
संहैस ऋत्य वर्त पठै तिनकौ हरि सु नेत ।
जाते यह भाषा करी कलिके जीवन हेत ॥२८॥
:o: :o: :o:
जग की चिंता छांडिदै अपनी चिंता देषि ।
जो तेरी रछ्या करे ताही नित्त पेषि ॥२७॥

इति श्री दत्तात्रेय विरचितं अवधूत गीता स्वात्मार्उपदेस अष्टम पूर्ण ॥ ८ ॥ मंबारमाला कुलिताल कायकपाल माला कितसेमराय ।

विव्यं अंबरायंचदिगं वरायन्म सिवायंचन्मसिवाय ॥ १ ॥ एवं सुधं असुधं वा मम दोषो न विद्यते ॥ इति श्री संवत् १८५६ का साके १७२० मासानां मासोतममांसे पौषमांसे सुभेकृष्ण पक्षे तिथौ सप्तमी ७ गुर वासरे घटि १५ पुस्तिग लिष्यतं सुरोठ मध्ये मिसुर नथोलालिषायतं वैष्णव षुस्यालदास सुभं मस्तु कल्यानमस्तु ॥ १ ॥

दत्तात्रेय की रची 'अवधूत गीता' की भाषा टीका ।

संख्या ४३४. साखी, रचयिता—संतदास, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—३१/४ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—अथ स्वामी जी संतदास जी की साष गुरदेव कौ अंग की ॥
सतगुर बरु परमारथी अैसा देइ बरगाइ ॥
धरी पाम्रलक छू दाइ करा ॥ अधर मलक ले जाइ ॥१॥
चौरास धरीया मुलक ॥ तामैं सुरनर रहे समाइ ॥
अधर मुलक है रामनांम ॥ गाँहां जन पहुच्या जाइ ॥ २ ॥
सतगुर मिलीया संतदास ॥ कटी भरम की पासि ॥
जमकर भागा जीव का ॥ बसा राम कै बासि ॥ ३ ॥
भौ भागा जमत्रास का ॥ लागा सतगुर बाँण ॥
चौरासी का संतदास ॥ मिटि गया आवण जाँण ॥ ४ ॥
गोला चलाया सबद का ॥ सतगुर ने जरचा जौहि ॥
.... ॥

मध्य—रामगरीब नवाज कूं कोई रटै गरीबी साहि ॥ तो काम हटै कुलषन मिटै ॥ बाद विषमता जाइ ॥ बाव विषमता जाइ ॥ सुरति समता सुष पावै ॥ तिसरा ताप सिराइ ॥ पाप फल निकटि न आवै ॥ तातै भजीए भावसूं ॥ विढ़ि प्रतीति स सोबारै पगट दरसि हैं ॥ जे रता सुमरण मांहि ॥ जे रता सुमिरण मांहि आंर आरंभ छ......... ॥

अंत—राजतेजधन जौवना मति बदी सम्हावो कोइ ॥ रावण बदी सम्हाइ करि ॥ जो गयो समूलो सोइ ॥ जो गयौ समूलो सोइ ॥ बदी को गुन्हो न छूटै ॥ अजहू न कल बणाइ-ताहि बररयौ घा कूटै ॥ लंक भभीषण कूं मिली ॥ रोने की फल होइ ॥ राज तेज धन जोबना मति बदी सम्हावो कोइ ॥२५॥

॥ साषी ॥

प्रहलाद प्रति लड़का कह्यौ ॥ जाकी सषि भागवत मांहि ॥
मिल कपट प्रतिसैं बुरो ॥ कबहूं कीजै मांहि ॥२६॥

विषय—साखियों और कुंडलियों में रचनाकर धार्मिक उपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ जीर्णावस्था मे है। आदि का एक पत्र है और बीच के ८ पत्रे लुप्त हैं। दसवें पत्र से ३१ पत्रों तक सख्याएँ पड़ी हुई है। बाद के २२ पत्रे बिना संख्या के हैं।

संख्या ४३५. भवरगीत, रचयिता—सतदास या सतरसिक, कागज—देशी, पत्र—५७, आकार—६३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजहाँपुर, पो०–मिंडारा, जिला–इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥

॥ रागजयत श्री ॥

गनपति गजमुष सुखसार ॥ १ ॥
आनंद कारन जग विघन हरन प्रन रिधि सिधि वुध दातार ॥ २ ॥
अहिपुर नरपुर सुरपुर अजहरि हरपुर सुभ करतार ॥ ३ ॥
कलि जुग कवि जन कलपलता "कविसंत" विनायक चार ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

॥ राग श्री ॥

इत हरि उत व्रषभानजा जुगपद सिर नाइ॥
ध्यान आन मन भावते जुग आयसु पाई ॥ ३ ॥
भवरगीत जुग प्रीत हित रुचि गीत वनाई।
"संत रसिक" वरनै विमल संतन समुझाई ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ राग विलावल ॥

येक दिना प्रभु वैठि सुषासन गोपिन की सुधि आंन कही है।
है अग कया प्रभुता सिगरी जौलौ व्रज की सुधि नाहि लही है ॥ १ ॥
ऊधौ वेगि हकार कही व्रजराव सषा मम काज सही नहै।
गोपिन गोपन के धन जीवन प्रान अधार रहे हमही है ॥ २ ॥
जा दिन हौं व्रज त्यागि कियौ उन घेर लियो मग रोकि रही है।
ता दिन ते सुधि लीनी न हौं उनके अव प्रेम वढौ अत ही है ॥ ३ ॥
नंद समेत सवे व्रज लोग त्रिया विरहानल ताप दही है।
ज्ञान विहीन दुषी "कवि संत" स्व ईस्वर मं पहिचान नही है ॥ ४ ॥

अंत—

॥ राग पूलू ॥

मित्र वचन सुनि हरषे कृपा निधान।
मम प्रसंन्न ह्वै दीन्हौ सो वरदान ॥ १ ॥
मागी विदा चरन गहि हिय हरषान।
भवन गये हलधर के उद्धव सुजान ॥ २ ॥
चरन परत जन देख्यौ भेटयौ राम।
पूछी कुसल कही सव गवने धाम ॥ ३ ॥
भ्रमरगीत इति गायौ "संत"।
अनिन जुगल चरन रति चाहहि सदा अछिन्न ॥ ४ ॥
नाथ कृपा कर दीजै लीजै जस भरि।
"संत" समीपी कीजै नित रहहि हजूर ॥ ५ ॥१५६॥

इति श्री भ्रमरगीत संत रसिक विरचितायां उद्ध (व) गृह प्रवेसो भाग समस्त ॥ संपूरनं ॥ मार्ग कृष्ण ॥ १०॥ रवौ ॥ संवत ॥ १६२३ ॥

विषय—उद्धव का गोपियों को ज्ञानोपदेश करना।

संख्या ४३६. विचारमाला की टीका, रचयिता—सदानंद, कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—७$\frac{8}{10}$ × ५$\frac{4}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपालचंद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (अवध)।

आदि—**उँ श्री गणेशाय नमः ॥**

॥ दोहरा ॥

नमो तत्य सरवातमा टीका माल बीचार।
अष्टारारथ पूरण करों विघन दूर करमार॥ १॥
अथ विचार माला की टीका अष्यरारथ लिष्यते॥ दो ॥
नमो नमो श्रीराम जू सत चित आनंद रूप।
जिह जाने जग सुपनवत नासे भ्रम तम कूप॥ १॥ टीका॥

नमसकार है नमसकार है श्री राम जी कौं ॥ श्री जु है लष्यमी ज्ञान अर सकत रूप सो तिसकर कै संजुगत जो है राम कही रो रम्या हू वास रव बिषै जीव रूप करकै ॥ सो सत चैतन अनंद है ॥ जिसके जाने ते जगत जोहै सुपने की बतकही रो न्याई सो नास हो जाता है तम कहीरो अंधेरा कूप ॥ १ ॥ मूल ॥

राम मया सत गुर दया साध संग जब होइ।
तब प्राणी जाणै कछू रह्यौ बिषै रस भोइ॥ २॥ टीका॥

सो अैसे श्रीराम की मया कही रो दयातें अर सतगुरों की दया तें संतों का संग जब होता है ॥ तब प्राणी जानता है कछू इक जो रह्या हो मैं बिषै रसों के भोगणे बिषै ॥

अंत— **॥ मूल ॥ सोरठा ॥**

सत्रह सै छबीस संमत माधव मास सुभ।
मो मति जित कहूँ तीस तेतक बरन प्रगट करी॥४२॥

॥ टीका ॥

सतारह सै छबीस संमत अर माघ के महीने सुभ बिषै मेरी मति जेती कछ थी सो तेही इक बरनी है प्रगटि करिकै ॥४२॥ मूल ॥

गीता भारथ को मतो ऐकादस की गत ॥ अष्टावकर वसिष्ट पुनि कछक आपनी उकति ॥४३॥ टीका ॥ भगवत गीता अर महा भारथ का ऐकादस सिकंद की जुगति ॥ तैसेही अष्टवक्र अर वसिष्ट जी के मत कों ले करिकै फेरि कछक आपणी उकत भी कही है ॥४३॥

इति श्री विचार माला सटीक आतमवान की स्थित व अष्टमो विश्राम ॥ ८ ॥

॥ दोहरा ॥

टीका माल विचार की अषरारथ रची सुषदांनि।
सदानंद गुर क्रिपा तें हेत सुहारघो ज्ञान॥ १॥

इति टीका समापतं ॥

विषय—अनाथ दास कृत विचारमाला की टीका।

संख्या ४३७. अखंड प्रकाश, रचयिता—सदाराम, कागज—देशी, पत्र—११७, आकार—६¾ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९३०, प्राप्तिस्थान—पं० रघुराज वैद्य त्रिपाठी, स्थान व पोस्ट—सुहौली, जिला—आजमगढ़।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

एक रदन करि बदन जन बिघ्नहरण गणराय ।
शिवा शून सदगुण सदन वंदौ पद सिर नाय ॥ १ ॥
हरिगुर गणपति सारदा वंदौ पद सब केर ।
करुणा करि उरय हरौ हरहु विघन घनेर ॥ २ ॥
मंगल कीरति राम की मूरति मंगल धाम ।
सर्व क्रिया मंगल मयी मंगल राम सुनाम ॥ ३ ॥
चित्रकूट चित मह वसौ लक्षिमन दिढ निर्वेद ।
आत्म विद्या जानकी रामातम विन........द ॥ ४ ॥
सर्व शक्ति सर्वात्मा सर्वेश्वर सुखधाम ।
सदा राम हृदि वास करु रामचंद्र अभिराम ॥ ५ ॥

अंत—द्वैत हनै दोहरा सोई राखै अद्वैत अनंत ।
ता अद्वैत अनंत मैं सदाराम विहरंत ॥२८॥
द्वैत हरै सो दोहरा राखै एक प्रकाश ।
सदा राम ता एक मैं विद्वत जन कर वास ॥२९॥
अष्टोत्तर दोहा अष्टशत करि कियो अखंड प्रकाश ।
ता अखंड प्रकाश मैं सदा राम राम को वास ॥३०॥

॥ छंद ॥

सवैया सोरठा दोहा सहितहि जानि ।
सह असंख्या सकल मिलि भए लेहु पहिचानि ॥३१॥

इति श्री सदा रामेण विरचित अखंड शिष्य वर्णनं नाम सप्तम खंड संपुर्णम् श्री गुरु चरणे कमलेभ्यो नमः । श्री सं० १९३० भाद्र शु० ॥ ५ ॥ दस्तखत ॥ सिवदास पांडे ॥ शुभ स्थाने ग्राम वास हरदीपुर ॥ जादसी पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशी लिखितं मया पुस्तक वावा मंत्रादास महंथ का स्थान सहीपुर ॥

विषय—आत्म ज्ञान विषय वर्णन ।

संख्या ४३८. बरवै षट्ऋतु, रचयिता—सबलस्याम, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६¼ × ३¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

तपन तपै रितु ग्रीषम तीषन घाम ।
ताकि तरुनि तन सीतल सोवै काम ॥ १ ॥
छांह सघन तरु भावै बालम साथ ।
की प्रिय परम सरोवर सीतल पाथ ॥ २ ॥

बहै प्रबल अति दारुन असहन बात ।
सांझ समै मन भावै सर जलजात ॥ ३ ॥
पिय सँग सेज सोहावनि भवन उसीर ।
भावै अंग बिलेपन सुरभि समीर ॥ ४ ॥
जेठ मास सषि सीतल बर कै छांह ।
करुई नींद सिरहनवां पियकै बांह ॥ ५ ॥
पिय कर परस सरस अति. चंदन पंक ।
भावनि रजनि सुहावनि दरस मयंक ॥ ६ ॥
पिय सँग सीतल हीतल जौ विधि देइ ।
बउरिन क......छोह पान बहु लेइ ॥ ७ ॥
पुनि मोर मुषं जोवै पून तर भेक ।
सिंह सटा......सोवै मृग बस एक ॥ ८ ॥
पाटल बास पटल बन भावै ताहि ।
भूलेउ नाह......र घर आवै ताहि ॥ ९ ॥
"सबलस्याम" विनु ग्रीषम उपवन बाग ।
तब सीतल अब हीतल जनु दव लाग ॥१०॥
:o: :o: :o:

अंत—कुंज कुंज वन उपवन सरित समाज ।
तनु मनु देषि दहतहै बिनु ब्रजराज ॥४७॥
भूलेउ भवर न एहि वन आवन कीन्ह ।
कुसुमित बेलि कवनि सषि मन हरि लीन्ह ॥४८॥
"सबलस्याम" सँग एहि ब्रज सब सुष रास ।
क्वार कुअर विनु नहि सुष कातिक मास ॥४९॥
मधुकर तुमहि दोष नहि स्यामहि लाग ।
एहि ब्रज विरह विथा कर समय विभाग ॥५०॥
पहिरायउ मन मोहन नंद कुमार ।
अब सषि हरत हेरि हिय मालति माल ॥५१॥
हरत हेरि मन मधुकर सरद निहारि ।
षेलेउ स्याम सषा संग एहि रितु सारि ॥५२॥
बैरिनि सवति कवनि असि जेहि पिय लीन्ह ।
मनमोहन मनु मोहेउ का पढि दीन्ह ॥५३॥
गरिन जाउ सषि उपवन सवति अंकूर ।
जौ विधि करै न भावै बालम पूर ॥५४॥

इति सरद

—अपूर्ण

विषय—गोपियों का विरह वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना अपूर्ण है । ग्रीष्म, वर्षा और शरद का ही वर्णन है, अन्य ऋतुओं का वर्णन नहीं मिलता । हस्तलेख के प्रत्येक पत्र के एक ही ओर लिखा गया है । रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं ।

संख्या ४३६. महिम्न स्तोत्र भाषा, रचयिता—महाराज समरसिंह, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—११½ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि, , नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० वि०, प्राप्ति स्थान—कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—साहीपुर (नौलखा), पो०—हंडिया खास, जिला—इलाहाबाद।

आदि—. . . . . हाय जगत ॥ ५ ॥

इहा धौं को है कायधौं कैसो उपाय कहा कैसो बैठकु पावै ।
कौन धौं सामा है जाहि लवै विधि कौनइ धौं विधि विश्व बनावै ।
यो विधि को जो अनेक विवेक विहीननि को बरजोर बकावै ।
तेरी अतर्क्य है सो प्रभुता में कुतर्क्य कहा थिति पावै ॥ ५ ॥ ० ॥

अंत—

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्र मेतत्पठति परम भक्त्या शुद्ध चित्तः पुमान्यः ।
स भवति मति पूर्णो रुद्र तुल्यः परात्मा प्रचुरतर धनायुः धनवांन् पुत्रवांश्च ॥३७॥

जे दिन ही दिन "श्री समरेस" के कांन कवित्त निचित्त धरै जू ।
आनंद संज्जत ते शिवलोक मे ह्वै शिवरूप सदा विहरै जू ।
या जग मे धन पुत्रनि मंडित ह्वै चिरजीवित कीर्त्ती भरै जू ।
सुद्ध हिये दृढ भाव लिये पुनि जे जग में जन पाठ करै जू ॥३७॥

:o: :o: :o:

जप तीरथ व्रतदान जो जाग जोग जग माह ।
तेसन यानुति की गने एक कला सम नाहि ॥४०॥

इति श्री मन्महाराज समरसिंह विरचितं महिम्न संस्कृत व भाषा संपूर्ण शुभमस्तु ॥ कल्याणं करोतु मंगलं ददातु संवत् १८४० ॥ पौष शुक्लः १ ।

विषय—शिव स्तुति की गई है ।

संख्या ४४०क. ल० (लक्ष्मण शतक), रचयिता—समाधान, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१०½ × ५$\frac{9}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी (दाता—श्रीयुत कन्हैयालाल केशरवानी, स्थान व पोस्ट—भारतगंज, जिला—इलाहाबाद)।

आदि— :o: :o: :o:

बीर विधिनिको ग्यात अनरू को जत त्राता राम भ्राता महारन मैं ॥ ५ ॥
ठाढो युद्ध भूमि मैं त्रिसुद्ध राम बंधु विजय हीलैं कीलैं लेत कोटि रुद्र के अतंक को ।
क्रुद्ध दृग दाहक वृअन दल दाहैं लेत ढाहै लेत मानो त्रिकूट गिरि बंक को ।
भनै "समाधान" दसउ मुषन मरोरैं लेत छोरैं लेत बंदी सुर सिद्ध मुनि रंक को ।
रन की झकोरैं लेत सुभट लटोरैं लेत सुजस बटोरे लेत टोरे लंत लंक को ॥ ६ ॥
आयो इंद्रजीत दसकंध को निबंध बंध बोल्यौ राम बंधु सों प्रबंध किरवान को ।
कोहै अंसुमालि कोहै काल विकराल मेरे समुहैं भये न रहै सान महेसान को ।
तूं तो सुकुमार यार लछन कुमार मेरी माखे सम्हार को सहैया घमसान को ।
बीरन चितैया रन मंडल रितैया काल कहर वितैया हों जितैया मघवान को ॥ ७ ॥
इतै रमानंद उतै रावन को नंद बडी मार मौ विलंद ज्यौं धनंजय निषाद की ।
दोहूँ रनधीर दोहूँ धनुष धुरीन कान कुंडल कोदंड चंड मंडली विषाद की ।
भूप रन भूपर बिसान विदिसान पर छाये सुरषंड घोर मंडित निनाद की ।
जाना बैलिं व्योम गिर बाना बलीं थकीं देषि बानावली लछन कुमार मेघनाद की ॥ ८ ॥

:o: :o: :o:

मध्य---

कहूँ हथ्थिन पै हथ्थि कहूँ रथ्थिन पै रथ्थि कहूँ वथ्थिन पै वथ्थि कपि कौनप मिलान ।
कहूँ मुंडन पै मुंड कहूँ रुंडन पै रुंड कहू तुंडन पै तुंड परे लोटत धरान ।
मच्यौ घोर सफर अंग टुट्ट फुट्ट तन भंग छिन्न भिन्न अंग अंग भगे राछस अमान ।
तहाँ तेज के निधान करि कोप "समाधान" वीर लछन सुजान झुक झारै किरवान ॥
रनजीत करै कूह रिछ साखामृग जूह खगवधर समुह लखि वीर खिसियान ।
महाबली मेघनाद गल गज्ज सिंघनाद देखि जुझे मनुजाद कियो माया को विधान ।
बन्यौ रात को प्रकार बसौ दिसा अंधकार नहीं सूझै निजकार कपि लागे अकुलान ।
तहाँ तेज के निधान करि कोप "समाधान" ॥ ० ॥
उठे वारिद उमंड घोर घटन घमंड झंझा झूकन झुमंड धूर धुंधर उडान ।
भई बंद कपि दृष्ट लागी होन श्रोन वृष्ट मल भूल रवै सृस्ट हाड दंत केस कान ।
उठी डाकिनि अपार सिर छूरिन उदार भरै लोहू सो कपार करै काट कतलान ।
तँहा तेज के निधान ॥१३॥
बढ्यो जोर पारावार चहूँ ओर धारापार नहि जासु वारापार ग्रह ग्रह उछलान ।
करै असुर अतंक मिलै नभ मैं निसंक अनदेखे हंक हंक अव घालत अमान ।
फिरै भूत प्रेत धार मुष बोलै मार मार कपि सीस असरार सार झार झहरान ।
तँहाँ तेज के निधान ॥२४॥

अंत---इत वीर लछ्छन पिल्यौ तछ्छन की सलछ्छन गज्जियं ।
रनसील अंगद नील नल केसरी तज्जन तज्जियं ।
बडे जामवंत दुरंत दल हनुमंत आदिक हुंकरे ।
गिरि विटप ले भट प्रलय लखि जनु फनी फनधर फुंकरे ॥६६॥

॥ छंद दोहा ॥

समर दछ्छ लछ्छन पिल्यौ उत रछ्छस बलवान ।
उद्भट कौनप कपिन को मच्यौ घोर घमसान ॥ ७ ॥

॥ छंद त्रि ॥

इत लछमन वीरं पिलि रनधीरं कुप्प गहीरं जुद्ध रच्यौ ।
उत दसमुष नंदन सुभट विलंदन उमर अमंदन समर सच्यौ ।
दोहू दल भट कोपै रन रस रोपै चित चट चोपे उमग जगे ।
जनु प्रलय अलोपे जम जग लोपे बढ रन गोपे लडन लगे ॥६७॥
भट मर्कट धावैं गिरिन चलावैं अरिन............

:o :o: :o:

---अपूर्ण

विषय---लक्ष्मण और मेघनाद की लडाई का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है । सख्या १।२।१४।१५।१६।१७।१६।२० के पत्ते नहीं हैं और स० २३ के पश्चात् के पत्ते भी लुप्त हो गए । यह कितना बड़ा था कुछ पता नहीं ।

संख्या ४४०ख. लक्ष्मण शतक, रचयिता---समाधान ।

आदि---लक्ष्मणशतक---समाधान कृत

राम रमा रामानुजहि प्रनवौं पवनकुमार ।
श्रीगुरु गणपति चरण भजि श्रीमत शंभु उदार ॥ १ ॥

श्री वागेस्वर पद पदुम प्रणवों परम पवित्र ।
मेघनाद के जुद्ध में बरणों लखन चरित्र ।। २ ।।
श्री रामानुज मनुज नहो धरणी धारण धीर ।
वंदौं जन मन अछमन लक्ष लक्ष्मण वीर ।। ३ ।।

।। कवित्त ।।

प्यारौ सीताराम को उजारौ रघुवंस को अन्यारो जन पैंज वारौ न्यारो करो रन को ।
रवि कुल मंडन प्रचंड वरिवंड भुज दंडन उदंडन सो षंडन षलन को ।
समाधान रक्षक अपक्ष पक्ष लक्षमन अक्षमन लक्षमन ऋक्ष दीन जन को ।
सींघन को सर्व गर्भबंतन को गर्भगंज अर्भ अवधेश को सगर्भ सत्रुहन को ।। १ ।।
भूप दसरथ को नवेलो अलवेलो रंगरेलो रोष झेलो दल निश्चर निकर को ।
समाधान कीरति उमंडो वलबंडो चंडीपति सो घमंडो कुलमंडो दिनकर को ।
इंद्रमद गंजन को भंजन प्रभंजन तनय को मंनरंजन निरंजन उभर को ।
राम गुन ज्ञाता मन वांछित को दाता हरि भक्तन को त्राता धन्य भ्राता रघुवर को ।। २ ।।

मध्य--

महावाहु भूप दसरथ के कुमार मारहु ते सुकुमार जैतवार समरन को ।
असरन सरन अमंगल हरन भार धरनी धरन मजवूत महामन को ।
नंदन सुमित्रा को निकंदन अमित्रन को ध्यान जग बंद बड़ो बंधु सत्रुहन को ।
कंता उर्मिला को औ निहंता दुष्ट जीवन को हंता इद्रजीत को निहंता षलगन को ।।
ठाढो जुद्ध भूमि में त्रिसुद्ध राम बंधु विजय हांले कीले लेत कोटि रुद्र के झटंका को ।
क्रुद्ध दलदाहक द्रुवलदल ढाहे लेत अढाये लेत मनहु त्रिकूट गिरि बंका को ।
रन को झकोरे लेत सुभद्र लटोरें लेत सुजस बटोरें लेत टोरे लेत लंका को ।
इतहू प्रचंड छोर दंडन कठोर घोर धनुष टंकोर छोर छोनि सुगगन में ।
भनै समाधान अंगदादिक समेत ओज उमंग झपत को सवांधे छनपन में ।
काल ज्यों कराल कोप जलै ज्वाल माल मानों होत है अकाल प्रलय काल त्रिभुवन में ।
समर संघाता वीर विजित दिखाता अनरू को जगत्राता रामभ्राता महारन में ।
उड़ाय मेघमाल को उताल रच्छपाल वाल पौन यान अत्र घाल कीस जाल दंडियं ।
यो. न होत होयगो न ज्यों अमान इद्रजीत रामचंद्र बंधु सों कराल जुद्ध मंडियं ।।११८।।
दंडत मर्कटावलो विचाल मरुतावली सरावली चलाय रच्छसावली संघारियं ।
निशंक लंकनाथ नंद इंद्रवान पूरि भूरि अद्रि पूरि चूरि कै गरूर गाज डारियं ।।
परंत वज्र देखि राम बंधु व्रह्म अत्र मोष रच्छ ओघ अंडकोप चंड घोष धारियं ।
जरंत जातुधान जान राघवाधिपत्ति अत्ति पार पत्ति हित पासु पत्ति अत्र पारियं ।।११९।
घलंत रुद्र वान कोटि रुद्र कुप्य मानवे दिसान मै दिसान मै कृषानुधार लग्गियं ।
रमेश बंधु क्रुद्ध ह्वै रमेसवान चोट घल्ल कोटि काल रुद्र मंग लीन कै उमग्गियं ।।
महा प्रलै कराल काल ज्वाल जाल झोक कै विलोकि थोक थोक मै त्रिलोक लोक डग्गियं ।
विपच्छ पच्छ मच्छ भच्छ रच्छ कच्छ धच्छ रच्छ रच्छनंद को सो वच्छ फोर २ जग्गियं ।।१२०।।
करोर रच्छ रोर वच्छ वच्छ फोर वाहु तोर घोर घोर कै मरोर भूपताल आसमान भो ।
जहान में अकंपमान कंपमान कंपमान कै दिसान वे दिसान सुप्रकासमान भो ।।
अखंड चंड मारतंड मंडलै उमंडि कै उदंड ज्वालमाल मंड जात यों प्रमान भो ।
प्रमान रामबान कोटि भानु को प्रमान कोटि कल्पक कृसानु ता समान भासमान भो ।।१२०।।
मची सुलंक हाय हाय जोर ज्वाल छाय छाय राम वान धाय धाय रच्छ वर्ज भज्जियो ।
उड़ाय कुंभ मस्त को प्रहस्त कों निरस्त कें समस्त जोर जस्त जेर जस्त कै विसर्ज्जियो ।

अकंपनादि वृंद मीस वीसबांहु गर्भ पीस कहि मेघनाद सीस पास आई अजियो ।
अजीत बंधु राम को सुजीत इंद्रजीत को अजीत इंद्रजीत जीत नाम पाय गज्जियो ॥१२२॥
इंद्रजीत मुंड काटि रच्छ मारि मुंड पाटि लंक के कपाट फाटि डाटि जुत्थपावली ।
सुरांतकै पछारि कै नरांतकै संघारि कै निकुंभ कुंभ मारिकै विडारि रच्छसा वली ॥
बंत मान जुद्ध जीति लछन लसंत गर्भ गर्भ बंत गजि कै गजंत मर्कटावली ।
बजंत ब्योम दुंदुभी जजंत पुष्प वृष्टि सों जंभृत दिव्य अस्तुती समस्त देवतावली ॥१३३॥

॥ छंद कमला ॥

गत्थन अकत्थ समरत्थ सुत हत्थन समत्थ दसमत्थ सुत मत्थ रन ।
सद्द घननद्द हन नद्द अनहद्द वल सद्दल विरद्द अनवद्द जस गद्द गन ॥
मद्द लन नद्द नम नत्र नग रद्द कर रद्द दर हद्द दल वद्दल मरुद्दलन ।
धान समरच्छ जन कच्छ जन अच्छ मन दच्छ जय लच्छमन लच्छ जय लच्छमन ॥१२४॥

॥ छंद अमृत ध्वनि ॥

जय जय लक्षित लच्छमन लच्छन रच्छ सुखंड ।
जीत्यो सुरपतिजीत कहँ मंडित प्रधनु प्रचंड ॥
मंडित प्रधनु प्रचंडित प्रति भट दंडित दुवन उदंडित प्रति भय ।
दंडद्दुत भुज दंड द्वय वल डंडक्कर वल वंडक्कर छय ॥
दंडत सर लखि गंडग्गजि गिरि चंडक्कुनप विहंडग्गा तर्रय ।
इंडित त्रिदस उदंडित प्रगट अखंड ध्वनि ब्रहमंड ज्जय जय ॥१२५॥

॥ दोहा ॥

जै जै धुनि छावहि गगन गावहिँ मंगल गान ।
बरसावहिं सुर मुनि सुमन वर पावहिं समधान ॥१२६॥

॥ छप्पय ॥

जै जै सुर उच्चरहिं वृष्टि कुसुमावलि सज्जहिं ।
जामवंत हनुमंत अंगदादिक भट गज्जहिं ।
इद्रजीत कहँ जीत चल्यो सौमित्री हितकरि ।
कहि सीस दससीस नंद को ईस अग्र धरि ॥
जुग जोरि पानि समधान कह सीस आनि पद पंक अहँ ।
करि जस गहीर रनधीर वर मिल्यो आनि रनधीर कहँ ॥१२७॥
जय लछिमन रनधीर वीर वीराधि वीर वर ।
जय उदंड भुज दंड चंड कोदंड दंडधर ॥

विषय—लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध का वर्णन ।

संख्या ४४१क. तर्कप्रकाश भाषा, रचयिता—सरदार कवि, कागज—आधुनिक नीला, पत्र—१७३, आकार—७ ८/१० × ६ ७/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२७१, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०९, वि०, प्राप्तिस्थान—ददन सदन, पोस्ट–अमेठी (इ० आइ० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—. . . . .
. . . . **हृदमया भाव** ॥

॥ सोरठा ॥

ओ जह सिद्धी नाहि है सिवाई धिषानही ।
तहा विशेष्यन छाह गयो ·विसेषन याही ते ॥ ७ ॥

॥ वार्ता ॥

ओ जहा सिद्धि नही है ओसिषाधि ईषा को भी अभाव है तहां विसेष्य विशिष्ट अभाव के अभावते विशेषण को भी अभाव जानिये ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जह सिषाधि इषा रहै तहां सिद्धि श्रीराम ।
रहै कि अथवा ना रहै होत पक्षता श्याम ॥ ९ ॥

जहा सिसाध ईषा रहै तहा सिद्धी रहै । एथि वो नारहे पक्षितामो होय है ॥ सिद्धी रहै तो विशेषन निष्ट विशेष्याभाव ओ न रहे । तो विशेषन विसेष्याभाव ओ जहा सिद्धि रहै सिसाध-ईषा मरहै तहा पक्षता नाही ॥ काहे की सिसाधईषा विरह विशिष्ट सिद्धि रहै ।

अंत—

सगुन निधान हनुमान ऐसो नाम वृद्धि वुद्धि सुद्धि धाम कारतरु सो जुदानसूत ।
तेज मार्तण्ड ते अखंड दोइ दंड भुज रजतमहारी भारी दल वल वाद वूत ।
कवि सरदार ते अनाथन को नाथ गाथ श्रुति सुचिधारी करी करमकलाअकूत ।
पंजन सो गंजन गनीमन के गंजहू जो राममनरंजन प्रभंजन तिहारो पूत ।

॥ दोहा ॥

ग्रह रचि गगन वहोर ग्रह गनपतिदसन सुपास ।
कृष्ण जन्म तिथि को भयो पूरन तर्क प्रकास ॥१३॥
ईश्वर भूपति की भली कृपा कौर सुचि पाय ।
भाषा किय सरदार कवि तर्क प्रकास उपाय ॥१३॥

इति श्री सरदास कवि विरचितायां तर्कप्रकाश भाषा संपूर्णमस्तु ॥

विषय—न्यायशास्त्र का वर्णन । ग्रंथ में सात अध्याय हैं ।

रचना काल

९ ० ९ १

ग्रह रचि गगन वहोर ग्रह गनपति वसन सुपास ।
कृष्ण जन्म तिथि को भयो पूरन तर्क प्रकास ॥१२॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आरंभ के १६१ पत्रे लुप्त हो गए है । रचनाकाल संवत् १९०९ वि० है । लिपिकाल का उल्लेख नहीं है ।

संख्या ४४१ख. राम कथा कल्पद्रुम, रचयिता—सरदार कवि, निवासस्थान—ललितपुर (झांसी), कागज—आधुनिक, पत्र—५७, आकार—८½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन् १८६२ ई०, प्राप्ति स्थान—ददन सदन, पो०—अमेठी, (इ० आई० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कवि निबद्ध रामकथा कल्पद्रुम लिख्यते ॥

॥ सोरठा ॥

कासी कासीनाथ कासीवासी जन विमल ।
वृत्ति प्रकासी साथ जे कासी कासी जपत ॥ १ ॥

तिनपद पावन साथ माथ हाथ "सरदार" करि ।
करत राम गुन गाथ कवि निवद्ध कलि कलुष हरि ।। २ ।।
बंदौ कासीराज श्री ईस्वरी प्रसाद बर ।
गौतम कुल सिरताज उदितेस सुत कलि करन ।। ३ ।।

।। चौपाई ।।

प्राग परमहित पर उपकारी । परम पुरान प्रगट गुन भारी ।।
राम सदृस राघन जन जानें । विवरन नाम मनोहर ठानें ।।
सुमन सुमन दै अरचन कीनें । करत असोक चतुरमुष चीनें ।।
तीरथ इंद्रजीव वस कारी । मंजु घोष रुचि सरस सिहारी ।।
तिन हित चित्त न वृत्त पसारी । मकरपाय अति कुमति पियारी ।।

अंत--
राम रस रसिक रसीले राघो दास नंद भाव सिंह जंग भूप अति चित चाई के ।
तासु पुत्र प्रगट भवानी भूर भाव जानो ताके जयसिंह अंग अमल उपाई के ।
तासु सुत भाखें हरिजन हरीजन भये ताके सरदार भूर भाजन भलाई के ।
काशी के विलाशी भये अब सुख राशी पाछे वासी ललितापुर प्रकाशी कविताई के ।।

इति श्री महाराजधिराज काशीराज श्रीमद् ईश्वरी प्रसाद नारायणस्याभ्याभिगामी ललितपुर निवासी हरिजन कवीश्वरात्मजेन सरदाराख्य कवीश्वरेण विरचिते श्री रामकथा-कलपद्रुमे प्रथम अस्कंद समाप्तम् ।। १ ।। शुभमस्तु ।।

विषय--रामकथा का वर्णन ।

संख्या ४४२. सुर तरंग (संगीत), रचयिता--राजा सरदार सिंह (सुलतान सिंह सुत), कागज--देशी, पृष्ठ--३६, आकार--६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--४५०, अपूर्ण, रूप--जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८, पु० सं० ४ ।

आदि--पृ० १६ ।। ताल चौतालौ
मंजन सुगंध करि उजल बनायो वेष उजल सुमन माल पहरी अनंदिनी ।।
घसि घनसार रस चंदन लगायो गात मुदित प्रभातहीं ते आजु जग बंदनी ।।
कहे सिरदार हार मणतिन के आभूषन भूषे व्रजभूषन को बिरह निकंदनी ।।
उजल पहरि चिर हंसन रमावत सी सारदास रूप बनी वृषभान नंदनी ।।६१।।

मध्य--पृ० ३८ ।। अथ रागिनी ललित सरूप कथनं

।। कवित्त ।।

चंपक वरन गोरे तन गरे फूलमाल भूषन विसाल तन द्वावश अमोल की ।।
सोगुनी सुघातें जाकी बातें सुख दैनी तैसी कंठ मै विषत लोक लीलत तमोल की ।।
कहे सिरदार घनी सरिगम सुचाल वाल ओडो जात धैवत सदन सुनि बोल की ।।
गावत वसंत प्रात गुनी अववात ह रागिनी ललित प्यारी ललित हिंडोल की ।।

अंत--प्राप्त नहीं है ।

विषय--राग रागिनियों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--यह पुस्तक अपूर्ण है । आदि के पृष्ठ संख्या २ से ५ तक चूहे के कतरे हुए हैं । बाद मे पृ० १६ से ५० तक ठीक है ।

संख्या ४४३. बैत सरमद, रचयिता--सरमद, कागज--देशी, पत्र--४, आकार--६ × ४$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--पं० हनुमानप्रसाद मिश्र, ग्राम-सोनई बड़ी, पो०-करछना, जिला-इलाहाबाद)।

आदि--दया गुरु की ।। लिष्यते ।। बैत सरमद की ।। दया गुरु ।।
नागाह मबकी गंज से इरफान का सोहरा हुआ ।
याने जिमी पैदा हुई और आसमा बरपा हुआ ।
हम भी अदम से चौंक उठे हसती का जब गौगा हुआ ।
किसमत का दफतर वा हुआ कोई गदा कोई साह हुआ ।।
गर वो हुआ तौ क्या हुआ गर वो हुआ तौ क्या हुआ ।। १ ।।
कोई ईसवी कोई मूसवी कोई चिस्ती के है दीन मे ।
कोई राफजी कोई यार जी कोई कुफ्र बे आईन मे ।
हादी ने हमसे कहि दिआ पहिले यह सब तलकीन मे ।
नौरंग का जलवा है सब इस आलमे रंगीन मे ।
गर यो हुआ तौ क्या हुआ गर वो हुआ तो क्या हुआ ।।

अंत--इस आलमे रंगीं सेती आजावगी उमेद कर ।
मुलहद मवाअज हो अगर उसकी तू मत तकलीद कर ।
तू इस फलक की सैर मे फिर खाक की उम्मेद कर ।
आजादगी मंजूर है कम कर तमासा दीद कर ।
गर यो हुआ ।। ७ ।।

अब झाड़ दामन चल निकल उलझावे से फिर काम क्या ।
फिराऊँन औ रहामूँ हुआ इस काम मे आराम क्या ।
मन से दुई जब दूर की फिर कुफ्र और इसलाम क्या ।
जब हक उजागर हो गया अल्लाह और फिर राम क्या ।।
गर यो हुआ तौ क्या हुआ गर वो हुआ तौ क्या हूआ ।। ६ ।।

।। संमपूरन ।।

दया गुरु की

विषय--संसार के सब धर्मों की एकता का वर्णन ।

संख्या ४४४क. नई काव्य कथा (नैकाव्य कथा), रचयिता--सरबेस्वर दास (कुरथा), कागज--देशी, पत्र--११, आकार--८ × ३$\frac{१}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--६६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--कैथी, रचनाकाल--सवत् १८८७ वि०, लिपिकाल--सं० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान--प० भागवत तिवारी, ग्राम-कुरथा, पो०-पीरनगर (गोराबाजार), जिला-गाजीपुर ।

आदि--राम श्री गनेस आए नम्ह श्री स्रोस्ते नम्ह श्री सुभ देवता नम्ह हनम्तह

।। दोहा ।।

करता राम करै सो होइ ।। जुग जुग दुजा अवरन कोइ ।।
घर एक जो श्रीजनीहारा ।। वतरे हरी जनी सो वनीजारा ।।

:o: :o: :o:

तब उंकार सब्द धुनी बाजै ।। नादं बींद बुइ भाती बीराजै ।।
नाद घंट जीमी बेनु मुरचंगा ।। भृकुटी पर होइ तान तरंगा ।।
गंग जमुन दोउ गोरा समाइ ।। चंद सुर्ज दोउ मेरी जाइ ।।
आपुहि आपु परम परकासा ।। रूप न रेख जीमी सुन्य अकासा ।।
चेतन्य आनंद होइ तन कोइ ।। सोहं सोहं सोर ताहां होइ ।।
एही विधी जोग करं जन जबही ।। माआ फंद छुटै जग तबही ।।
अंत—सपत वीचार पढ़ै जन जोइ ।। सर्व कामना पावै सोइ ।।
साल अठारह सै सतासी ।। चइत मास ऐ ग्रंथ परगासी ।।
जन सरबेस्वर कहै बखानी ।। जन मन को सुप्रेम पहिचानी ।।

।। दोहा ।।

राम नाम संत सार है झूठो सभ बेवहार ।
जन "सरबेस्वर" मुक्ति कै उतरी गए भव पार ।। चौपाई ।।

इती श्री सम्वत १६०७ समैनाम मिती चइत सुदी पुरन वांसी कै नैकाव्य कथा संपुरन सुभ मस्तु आगे जो प्रती देखा सो लीखा मम दोस न दीअते आगे कीत सरबस्वरदास गोसांइ कै सतनाय दसखत चेत मनी भरत साकीन गड़ बड पुरति काम है ।

विषय—निर्गुण मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

साल अठारह सै सतासी ।। चइत मास ऐ ग्रंथ परगासी ।।

संख्या ४४४ख. नैकाव्य कथा, रचयिता—सरबेस्वर दास, स्थान—कुरथा, (गाजीपुर), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६.७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १६१० वि०, प्राप्ति-स्थान—प० भागवत तिवारी, ग्राम—कुरथा, पो०—पीरनगर (गोरा बाजार), जिला—गाजीपुर।

आदि—

।। दोहा ।।

विघन हरन गनपती चरन करन सुमंगल मुल ।
वरनो वार वार प्रभु मोपर होहु अनकुल ।।
गुर पद पदम पराग सिर सखीन्ही दै धरि ध्यान ।
कहो सपत दीन की जथा ग्यान वीचार वखान ।।

।। चौपाई ।।

गुरु वार के कीन्ह वीचारा ।। गुर के सरन होहु भव पारा ।।
पहिले रहे एक करतारा ।। रूप न रेख नहीं आकारा ।।
इच्छा रूपी प्रगटी नारी ।। अस्ट भुजा आउध कर धारी ।।
प्रणव सवद जव बोलत भएउ ।। तीनउ गुन कर तव उतपति लएउ ।।
रज अज सत हरी तमो महेसा ।। तीनों गुन धारेव त्रैभेसा ।।
नीरंकार तव अंग्या दीन्हा ।। तीनो देव श्रीस्टी तव कीन्हा ।।
पाच तत्व करि सभ सँवसारा ।। जीव चराचर वीवीधी परकारा ।।
पाचव मेटै मैठै गुन तीनी ।। इच्छा नारी ब्रह्म होई लीनी ।।
तव रहै केवल आपुहि आपा ।। जाहि भजत मेटत संतापा ।।
"सरबेस्वरदास" कहै समुझाई ।। राम भजन वीनु जरनी न जाइ ।।

अंत—कहे सरबेस्वरदास आस तजी जगत की गंगा तट कीतवास गाजीपुर कुरथा निकट ।।

।। दोहा ।।

राम नाम सभ सार है झूठो सभ बेवहार ।
जन "सरबेस्वर" समुझी कै उतरी गए भव पार ।।

इति श्री संवत् १६० वि० दस मैंना ममी पुस सुदी ११ के नइ काव्य कथा संपूरन सुभ मस्तु कंल्यान मस्तु आगे जो प्रति देखा सो लाखा मम दास न दीअते आगे पुस्तक ले मालीकार बाबा ब्रह्मचारी गोसाईं साकिन कुरथा परगने हवेली इलाके गाजीपुर आगे दसखत चेतमनी भगत सकीन कुरन पर के पुरा पर मोकाम राम राम ॥

विषय—निर्गुण मतानुसार ज्ञानोपदेश और भक्ति वर्णन।

संख्या ४४५. ज्योतिष, रचयिता—सहदेव, कागज—बाँसी, पत्र—१०, आकार—९,७० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० भोलानाथ (भोरेलाल) ज्योतिषी, ग्राम—धाता, पो०—धाता, जिला—फतेहपुर।

आदि—अथ विवाह गणिता

॥ दोहा ॥

माँश तीनि बैसाषते आगहन फागुण माँह।
शौर मास मे जानिऐ इनमे उचित है ब्याह॥
बुद्ध ज्येष्ठ अरु ज्येष्ठ में शुभ दाएक नहिं ब्याह।
ज्येष्ठ मंगल ज्येष्ठ में होत न शुख निरबाह॥

॥ चौपाई ॥

पहिले वार चार करावै फिर पंडित से भेद गनावै।
बरग बरन औ नाड़ी जोंन राशि मिलाइ पूत सो लीन।

॥ अथ बरग जानब ॥

आ इ उ ए गरुड़ विचार का खा ग घा है मंजार।
चा छा जा झा जाने सिंह टा ठा डा ढा कूकुर चीन्ह।
ता था दा धा सर्फ विचार पा फा बा भा मूख सयार।
या रा ला वा मृग है सही सा षा स हा मै ठां का ही।

:o: :o: :o:

॥ अथ गन जानब ॥

अस्वनि पुष्य पुनर्वस रेवा मृग अनुराधा स्वाती भाव।
श्रवन हस्त जो जन्मे कोई देवता गन ताकर जो होई।
तीनि उत्तरा पूर्वा तीनी भरनी रोहनि आद्रा चीनी।
ऐ नक्षत्र मानुष गन जानै "सहदेव पुछै नारद भानै"।
मघा क्रितिका चीत्र मूल अश्लेषा सतभीषो......।
संक्र धनिष्ट विसाष जान एते राक्षस गन पहिचान।

:o: :o: :o:

अंत— ॥ अथ पाट चक्र ॥

पंद्रह कार कोटा नव होई। रवि नक्षत्र ते धरिए सोई।
गिन तीन मासै ते गुनै। राजा पूछे सहदेव भानै।
लग्न नषत जो मासै परै। वेगि नास दुनौ कुल करै।
पुरुब जानैउ सुख कै खान। धन धान्या होइ कल्यान।
अग्नि कोन में होत अभाग। दक्षिन परै तो भीक्षा माग।
ति धुव सुख सौभाग॥ पश्चिम बिधवा होइ प्रमाग।

विषय—लग्न, मुहूर्त, शुभाशुभ विचार, वर्ग, वर्ण, गण, नाडी और दोषादि ज्योतिष-विषयक विचारों का वर्णन ।

संख्या ४४६. शालिहोत्री (घोरान की वैदगई), रचयिता—सादिक, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह) काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ घोरान की वैदगई सालोत्तरी लिष्यते ।। बीमती करिकै बोहौत तलास करि कै एक पोथी बनाएऊ ।। साहिब की किरपा ते ।। सादक सौदागर नै घोरन के अैब सवाब को ।। सुभलछन की बदलछन की ।। चाबक असावार की सवही भाँति की पोथी कराय दीनी सो सही है ।। बड़े बड़े सालोतरी से सही कराय लीनी है या पोथी सुघोरान के लछन मालूम पड़ै ।। अथ घोरान को रंग पांह बालबो ।। एक लाल रंग को घोरा ।। च्यारो पाव सुपेद ।। माथी टोका होय ।। वाकूं पचकल्यान कहियै ।। हाथ पाव कारो होय तौ बहौत कलेस करै ।। नाम घोरा के ।। जम धांक कहियै ।। गधा को रंग घोरा होय तौ ।। पीरो छीटा होय तौ असुभ है ।। घोर सुपेद रंग को होय तौ ।। दाग नहीं होय तो सुभ है ।। नाम जाको नुकरा ।।

मध्य—।। अथ परस की दवा ।।

सरसौ की वरीया छह सेर ।। पंदरे सेर गोरस ले ।। धरती मैं दोनों कूं गाडि दै ।। तीन रोज पाछे निकासै ।। पुरष की मूत्र पांच सेर ।। मूत्र कू मिलाय कै तीन रोज फेरि गाडै ।। ता पाछे निकासि कै सौधौ नोन दोय पस भरि मिलावै पहल कै रोज सेर भरि प्यावै ।। जा उपरंत पाव सेर रोज बढ़ावै ।। परस जाय ।। घोरा मोटो होय ।।

अंत—।। अथ बंध होय तौ षुलि जाय ।।

इसगंध नागौरी सोवा के बीज ।। साजी हरदी आध पा आध पाले गूगर पईसा चारि भरयौ ।। माल कांगनी ।। वायविरंग अजमायन आध पा ले चूरन करिकै सांझि सकारै चारि चारि पईसा भरि दे ।। इति श्री घोरान की अवस्था सुभ असुभ जानिबे कौ ताकी पोथी सालोत्री औषधी की चिकित्सा संपूर्णम् ।। संवत १८६६ श्रावण कृष्ण तिथौ ६ बुधवासरे संपूरणम् ।। शुभम् ।। श्री रस्तु ।। शुभम् भवत् ।।

विषय—इसमें घोड़ों के लक्षणों, नामों और उनकी चिकित्सा के संबंध में लिखा है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के ३ और १३ संख्या के पन्ने लुप्त हैं । ग्रंथ के रचयिता घोड़ों के व्यापारी थे । इनका अन्य वृत्त अज्ञात है ।

संख्या ४४७. ध्रुवचरित्र, रचयिता—साधुजन, पत्र—१ (अंतिम पत्र है), आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ८२, पु० सं० १० ।

आदि—तप जब करो तब ही राजा पै आयो । अब हम कहूं न जाहिंगे करो जतन जब कोट । आसा करो न और की तजो न प्रभु की ओट । श्री० ।। तब मंत्री उठि आये ध्रुव कछु बात न मानी । महा कठिन तप करो कहत राजा सुत बानी । राज काज माने नहीं कीयो जगति का त्याग । अति उदास बन में बसाइ उपज्या मन वैराग ।। श्री० ।। कीनो राज विवेक रची इह बात विधाता ।। मेटन कों कोऊ नाह कहा बपुडे पित माता । जो कछु करे सो हरि करे हमरे कछू न हाथ । अंत सोई कछु होइगा जो भावी व्रजनाथ । श्री० । कंद मूल आहार प्रथमे ध्रुव यह व्रत कीनो । बहुडो पवन आहार भक्त व्रत ऐसो लीनो । पांच वर्ष को बालका गृह तज भयो

उदास करि पछम पवन रोकियो तीन भवन को स्वास । थो० । तबही त्रिभुवनराय आय ठाढे तिह आमे । तउ भी अंतर ध्यान भक्त तप को नहीं त्यागे । ध्यान छाड दर्शन करो आज्ञा दई दियाल । जो मांगो सो देत हों टुक नैन उघारि निहाल ॥ थो० ॥ तब ध्रुव छाडयो ध्यान स्याम के दरसन लागे । पायो परम अनंद भरम के बंधन भागे । बार बार बिनती करों प्रगट मिले गोपाल । जो मांगो सो देत हो, बर दीजे गोविंद जो दीनदयाल कृपाल ॥ थो० ॥ रामगरीब निवाज सुनो इक बिनती मेरी राखु बिदर की लाज सरन आयो जनु तेरी । साधू की संगत बसों पांवी पद परवान । पार ब्रह्म पूरन पुरष तुम देहु दया कर दान । थो० । इति श्री साधूजन विरचितं ध्रुव चरित्र संपूर्णं ॥

विषय—ध्रुव चरित्र का वर्णन ।

संख्या ४४८. दिन मनि वंशावली गुण कथन, रचयिता—रिधु कवि "उपनाम "आनंद", कागज—देशी, आकार—६॥। × ४। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ८२, पु० सं० २ ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री एकलिंगाय नमः ॥ प्रथम सुमिरि गिरधरन प्रबल भव भार दुःख हर । फेरि ध्याइ जगमगाइ पाइ गुन गाइ सुखकर । गननायक मन आनि जानि रिद्धि सिद्धि निहर । डोर देव ब्रजदेवि सेवि करि मांगि बुद्धि वर ॥ दिनमनि बंसहि कहि कछु आनंद भाषा रिधु कवि । बाढति सुमति नासति कुभाव ज्यों तम नासत देखि रवि ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ६-७

जस गावत जित तित सदा दसों देस के ईस ।
अमर सिंह मम अमर के कहें आपु जगदीश ॥३७॥

जग में अमर सिंह अमर समान हे ।
नित प्रति दरस कों सरस जु होत मन आनंद सों जहांगीर चाहे सनमान हे ।
करत अराधना को दयों हूं नहि देखे फल कियो हे विरोध समुझाइ हूं न मान हे ।
केऊ लाख फोज जोरि जाइके पकरि आनों मेरो कह्यो मानों यह बात परमान हे ।
प्रताप सिंह तने तो नर के न बस होइ ॥२५॥

हरपति नरपति भूपतिन साहि समान जू कीन्ह ।
राना करन खुमान जू सभे अभे पद दीन्ह ॥३८॥

अंत—गज वर्णन ॥

राजत हें हार राजसमांन लसे गजराज पहार के दांई ।
राखत हे सुरराज छिपाइ के दे जिनि डारे यहे जिय ठांई ।
कर्ण खुमान को श्री जगतसजिंघो प्रभु आनंद मे महि तांई ।
ले ले गुनी घर जाहि दुनीनि के देत करी बकरीहि के नांई ॥५३॥

इति दिनमनि वंशावली गुन कथनम् ॥ श्री रस्तु ॥

विषय—उदयपुर के सूर्य वंशज महाराणाओं की वंशावली, बापा रावल से जगत सिंह जी तक की वर्णित है । उनके गुण भी वर्णित है । इतिहास और वंश चरित्र की दृष्टि से ग्रंथ उपादेय है ।

संख्या ४४९. बाज नामा, रचयिता—सिकंदर फिरंगी, कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२० वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--॥६०॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बाजनामा लीषते ॥ आलम गीर नें हकीम सिकंदर फिरंगी सें लिखाय अपनें दसष नों स्याह जावे आजम स्याह कौं भेजो हो ॥ राह षोलनें की और तारीफ न लांवो भुष जोस देना लीषा अफादार होय जौ बहोत इस कहौं सनाथ कूं जुदा न करें पास ही राषे सर्दा और इस किताब पें अमल करें जिन दिनों जरदालूं फूलें है तिन दिनों बाज पकरायें है जब यह अंडा देय तब चलें है आंधी तब बाज डर के वां ते उड़ जाय है तब फिर विस जगें नही जा है के तो मरें या जाल मे आप फसें यह दस्तूर है जिस मीर सिकार ते डरें फिर पास नहीं आवें या बहुमत सें भार्जे है या जाल मै परें चोट षाय हे इस तरें करिकें विसें आजार उठें कें तो बम उठें कें वेही काहिली रहे ॥

मध्य--और इस तरें देय तो आछी मीरच पीपर ईन दोनोंनें कूं घीउ मैं षूब जलाय कें यह घीउ महीनें लों तांबें सें लगाय कें षलावें आछो नीकलें और जौ कुरीज मे कही आछें कही बुरे पर लावें तो विन पर कूं तेल में तर राषे यही फायदा घीउ में है ।

अंत--और नौरमा बुलबुल का कपूर दोनो बीर बहोट्टी मुसक मिमांइ लौंग जायफल एलुआ जावत्री ईलायचों छोटी गुड़ माफक डालें मिलाय कें राष छोड़ें उरद मांफक फजर ही गोली देय कें मुट्ठी में राष जौनों कफ होय और ईनकें कनकें दीये बेहोस ह्वै जाय तो तनक माषन देय पीछें कें व्योर माफक पानी गरम देय और रस देय मुबों हुवें लरावें ॥ तमाम हुवो यह बाजनामां संपूर्ण ॥ आलमगीर नें हकीम सिकंदर फिरंगी सें लिषाय अपनें दसषतों स्याहजावे आजम स्याह कौं भेजो हो मीयाँ अबदुल रमान बलोचवेटा निजामति षां कौ जिमीदार साहपुर कौं परतां भिड़की ॥:०:॥ लिषतं मिस्र सहजराम जी स्वयं पठनार्थं लाला लछीराम जी पुत्र रामसेवग फौजदार की वरि मध्ये सवत् १८२० शांके १६८५ मार्गसिर मांसे शुभे शुक्लपक्षे पुन्य तीथौ ५ भृगुवासरे शुभं भवतु श्री रामाय नमः ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय--इस ग्रंथ मे शिकारी पक्षियों की पहचान, उनके रोग और चिकित्सा वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य--इस ग्रंथ की भाषा खड़ी बोली है जिसमें निम्नलिखित जैसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं :--

१. तिन = उन, २. विस = उस, ३ जग = जगह । ग्रंथ का लिपिकाल सं० १९२० है । प्रस्तुत हस्तलिखित ग्रंथ में निम्नलिखित दो ग्रंथ हैं --

१ बाजनामा--सिकंदर फिरंगी

२. दस्तूर शिकार का--हसन अली खाँ

संख्या ४५०. वैराग्य सदीपनी टीका, रचयिता--सियाराम (अनुमानतः), कागज--देशी, पत्र--२८, आकार--१२ १३/१६ × ६ १/२ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--६६०, पूर्ण रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--पं० महंत पांडे, ग्राम--चमुखा, पोस्ट--पिंडी, जिला--गोरखपुर) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

सिद्धि जलज जलभाग्य रवि गणपति चरण दयाल ।
भाग्य कृपा जाके तेहि वंदो हत जगजाल ॥ १ ॥
श्री रघुवर जस गुप्तपद नाम योग्य निज बाच ।
जिन्ह दीन्हा तेहि पद जुगल उर धरि मन चित साच ॥ २ ॥
:o: :o: o
करि प्रणाम बानी चरण हरण कुबुद्धि समाज ।
"सीयाराम" कुछु कहत पुनि साधु चारित सुखसाज ॥
:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

संत चरित रघुपति जस एका । कहत वेद कवि सहित विवेका ॥
मिश्रित कहहु यथामति मोरि । जासु चरित तेहि करउ निहोरी ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

धन्य धन्य माता पिता धन्य पुत्र वर सोय ।
तुलसी जो रामहि भजै जैसहु कैसेहु होय ॥ ३ ॥

श्री गोसांई जू कहत हैं कि जो रामहि भजै तेकर माता धन्य है और पीता धन्य है औ माता पीता के पुत्र धन्य हैं वर नाम श्रेष्ट है जैसहु कैसहु होय दुख सुख कैसहु रहै राम को भजन करे वोही श्रेष्ट है प्र० कुलंपवीत्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या । स्वर्गेस्थिता जे पितरश्च धन्या यस्मिन कुले वैष्णव नामधेयम् ॥

अवतो धन्य धन्य माता पीता माता तो प्रह्लाद की धन्य है जो कलेसहु मे नारद जू को उपदेश धारण कीयो है मानो प्रह्लाद जू सुख को स्थान ही से प्रगट भए है धन्य धन्य पीता अंगद को है मरण अवस्था के विषं राम जू को सौंपि दिये धन्य पुत्र दशरथ जू को है वर श्रेष्ट भरत जू भए जिन्हके भक्तन के वीचे निज मुख ते श्रीराम जू सराहना कीये है जैसे वोह वोयस राम विषै लीन भये कैसहु होए नरक स्वर्ग सुख दुख इन्ह मो कैसहु नाम कोइ प्रकार ते राम को भजै सो धन्य है वर श्रेष्ट है जाति विजाति कैसहु होए जो रामहि भजे तो जैसो राम है जैसोई होइ जाय राम वो साधु ते भेद नही है ऐसो जानि राम को भजै ॥ ३ सीताराम

विषय—वैराग्य संदीपनी पर गद्य टीका ।

संख्या ४५१क. सुंदर प्रबोध, रचयिता—सुंदर, कागज—देशी, आकार—८॥। × ५। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ७८, पु० सं० २१२ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सवैया लिख्यते ॥ प्रथम गुरुदेव को अंग इदव छंद ॥

मौज करी गुरुदेव मयाकरि सब्द सुनाय कह्यो हरि नेरौ ।
ज्यौं रवि कें प्रगटचो निशि जाति सुदूरि कीयो भ्रम भांति अंधेरो ।
काइक वाइक मानसहूं करि हे गुरुदेव ही वंदन मेरौ ।
सुंदरदास कहे कर जोरि जु दादू दयाल को हूं नित चेरौ ॥ १ ॥
पूरन ब्रह्म विचार निरंतर काम न क्रोध न लोभ न मोहें ।
श्रोत्र त्वचा रसना अर घ्राण सु देखि कछु कहुं नेंनन मोहें ।
ज्ञान सरूप अनूप निरूपम जासु गिरा सुनि मोहन मोहें ।
सुंदरदास कहे कर जोरि जु दादू दयालहि मोहन मोहें ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ४८

आठों जाम जम नेम आठों जाम रहे पेम आठों जाम जोग जग्य कीयो बहु दान जू ।
आठों जाम जप तप आठों जाम लीयें व्रत आठों जाम तीरथ में करत सनान जू ।
आठों जाम पूजा विधि आठों जाम आरतिहूं आठों जाम दंडवत समरत ध्यान जू ।
सुंदर कहत तिन कीयो सब आठों जाम सोई साधु जाकें उर ऐक भगवान जू ॥१७॥

साधु ही के संग तें सरूप ग्यान होत है ।
जैसे आरसीको मैल काट कृत सिकलोघर मुख में न फेर कोऊ ऊहै वाको पोत है ।
जैसें वैद नैन में सलाका मेलिह शुद्ध करे पलट गये तें जहां त्यों की त्यों ही जोत है ।
जैसें वाय बादर बिखेरकें उडाय देत रवि तो प्रकास मांहि सदा ही उदोत है ।
सुंदर कहत भ्रम छिन में बिलाइ जाइ साधु ही के संग तें सरूप ग्यान होत है ।।१८।।

अंत--
जोगी थकें कहि जैन थकें कहि तापस थाकि रहै फल खातें ।
न्यासी थकें बनवासी थकें जु उदासी थकें बहु फेर फिरातें ।
शेख मुलायक और ऊ लायक थाकि रहै मन में मुसक्यातें ।
सुंदर मौन गही सिध साधक कोन कहै उनकी मुख बाते ।।१५।।३४।।५६०।।

इति श्री सुंदरदास कथितः सुंदर प्रबोध नाम संपूर्णम् । संवत् १८८३ वर्ष मिति आसोज सुदि १३ भृगुवासरे लिखतं गरजी राजसींघ । महीदोज हरजी जी तत् पुत्र कुंवर किशन दास बंचनार्थ श्री द्वारिका पुरी कांकरोली मध्ये । लेखक पाठक चिरंजीव शुभं भूयात् ।।

विषय--ज्ञान वैराग्य विषय वर्णित है ।

संख्या ४५१ख. अद्भुत ग्रंथ, रचयिता--सुंदर दास, स्थान--द्यौसा (जयपुर राज्य), कागज--देशी, पत्र--८, आकार--७६/१० × ५४/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--६३, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्रीयुत गोपालचंद सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि--श्री गणेशाइ नमः ।। अथ अद्भुत ग्रंथ सुंदर दास क्रित लिष्यते
।। दोहरा ।।
सतिगुर पांइन परत हों ।। मोहि दिषायो पंथ ।।
ताते सुंदर कहित हों ।। रचकर अदिभुत ग्रंथ ।। १ ।।
परमात्म सुत आत्मां ।। ताको सुत मन पूत ।।
मन को सुतरो पांचहैं ।। पांचो भए कपूत ।। २ ।।
खस मान परमात्मां ।। दरपन बुधै जानं ।।
तामै प्रतिबिंबत भयो ।। जीवात्म पहिचांन ।। ३ ।।
दरपन को अभास जो ।। कंस पात्र में होइ ।।
त्यूं आतम प्रकास मन ।। देह मध है सोइ ।। ४ ।।
कंस पात्र को होइ पुन ।। सदन मधि अभास ।।
त्यूं मन ते इंद्री सकल ।। बहु विध करह परकास ।। ५ ।।
परमातम साषी रहै ।। व्यापक सम घट मांहि ।।
सदा अंषमित एकरस ।। लिपे छिपे कछ नांहि ।। ६ ।।
तारयौं भूले आतमां ।। मनसुत त्यूं हित दीन ।।
ताके सुष सुष पावहीं ।। ताके दुष दुष कीन ।। ७ ।।

अंत--तब पांचो मनस्यूं मिले ।। मन आतमस्यूं जाइ ।।
आतम परिमाता मिले ।। ज्यूं जल जले समाइ ।।५२।।
अपने अपने तातस्यूं बिछरत होइ गए और ।।
सतगुर आप दया करी ले पहुचाए ठौर ।।५३।।

पसरेहू ऐसैंकल मे ।। संकोचैं शिव होइ ।।
सतगुर यहि उपदेसकार ।। कीऐं वस तमं सोइ ।।५४।।
जैसे ही उपजत भए ।। तैसे ही लंलीन ।।
सुंदर जब सतगुर मिले ।। जो होते सो कीन ।।५५।।
वांके सुनते परम सुष ।। दुष न रहै लवलेस ।।
सुंदर कह्यौ विचार चर ।। अदभुत ग्रंथ उपदेस ।।५६।।

विषय—संत मतानुसार ज्ञानोपदेश ।

संख्या ४५२. बारहमासी, रचयिता—सुंदर कवि, पत्र—३ (१५ से १८ तक), आकार—८। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ५२, पु० सं० ११३ ।

आदि—बारहमासी ।। गजल की चाल ।। राग सोरठ ।।
पीया वीन जाता हे जोवनां, सखि अब किस तरे रहना ।।
चहुंदिस से घटा घनघोर, दादुर सब मोर कर रहे सोर ।।
आगम आषाढ का आया, विरह तन में जु सरसाया ।। १ ।।
सखी सावन में आवन का, इरादा था जो साजन का ।।
भला फिर क्यों नही आए, किसी के साथ विलमाए ।। २ ।।

मध्य—आहवो कातिक लगा यार जान जाती हे मेरी ।
आसना में आसना जावे वफा देखा तुझे हम ।।
जानी तेरी तसवीर मेरे चस्मों में फीरती खडी यार ।
इश्क का ले तीर मारा आहें भरते हे खडे हम ।। ५ ।।

अंत—देख तपता जेठ आसीक को छीरका गुराब ।
मासुक को गले लगा कहने लगा सदके तेरे हम ।
मुख पर दीये रूमाल तीरछी नीगा से करती राज नाज ।
सुंदर कहे सुन ऐ परीवे अब कांहा छोडे तुजे हम ।।१२।।

विषय—शृंगार रस पूर्ण बारह मासा का वर्णन ।

संख्या ४५३. रामरहस्य, रचयिता—सुंदर कुँअरि, कागज—बाँसी, पत्र—७६, आकार—५½ × ९ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५३, अपूर्ण, रूप—भव्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ।। अथ राम रहसि ग्रंथ लिष्यते ।।
प्ररथम कवि उत्क अस्तुत दोहा ।।
श्री रघुपति सिय चरन कौं कवि निज मन मैं धारि ।।
मति सँम जस बरनन करत जो दायक फल चार ।। १ ।।

।। सवैया ।।

स्यांम स्वरूप अनूँपम अंग अनंगहू तौ संम नाहि लषायौ ।।
सोहत हैं कच कुंचित औ द्रग पंकज से धनुं भोहैं लजायौ ।।

जा कुंम नांम औ ध्यांन करें नर सोई धरा महि धन्य कहायौ ।।
जीवन ताको वृथा जग मैं जा हिया महि नांहि सियावर आयौ ।। २ ।।
सो दशरथ्य नरेस के धाम प्रभु प्रगटे निज वार धरें तन ।।
कौसिक कै मष रक्षिक ह्वै मिथुला वर सीता रच्यौ जनकें पन ।।
तात के सासन तें सिया साथ लें लछम्न औ पुन रांम बसे बन ।।
बांधिकें सिंधु हत्यौ दशकंध कौ आए धरें संग रीछ कपीगन ।। ३ ।।

।। दोहा ।।

पाय राम के दरस कौं बाढ्यौ सबहिं उछाह ।
करी तयारी तिलक की नौंते सहु नरनाह ।। ४ ।।

।। चौपाई ।।

देस देस के भूपति आये ।। राम प्रेम गुंन रूप लुभाये ।।
स्याम सरूप विसाल विलोचन ।। देखैं छवि सु काम मद मोचन ।। ५ ।।

मध्य—

।। दोहा ।।

बधून बैन सुनि मात जू सुता लई उर लाय ।
लषि कं टाटन गन तहां लाउ कुंवर कौं गाव ।।९८।।

कवित्त—गावें लाउ ढाढनिलडांवनि लडेंती तहां
मजलिस छावें रंग प्रेम की उमंग सौं ।।
रीझ रीझ वारी परवारिनि प्रवीनी सबै
कुंवरि निहारि वारि भूषन दें अंग सौं ।।
मावज सिहावें औ गनावें फुरमाय पुनि
सरस सुहाग इन नामें पिय संग सौं ।।
गुरजन मांहि दृग मीजें सकुचाहीं सिय
झुकि मुष मोरें चित चोरें मुंह मंग सौं ।।९९।।

।। दोहा ।।

चित चुरान सिय पैं भई सबै दृगन की भीर ।
दिष्ट लगन भय मांन तब बोली मात अधीर ।।३००।।

अंत—बहुरि बुलांवन वेग कहि बहुरे अति हित लीन ।
आप जुहारे नृपत सौं समाचार सब दीन ।।६२।।
इत रघुवर स्वारी सबै डेरन उतरे आंन ।
सामग्री सब भोग की लहि विलसे सुष सान ।।६३।।
दुतिय दिवस ते पुनि चले मजल सुहावन चाल ।।
बिच बिच बाग तड़ाग जिन सोभा लषत रसाल ।।६४।।
स्वारी तहां उतारिकें सिय रघुवर विलसंत ।।
तातें मजल मुकमा कौ भेद न लहत अनंत ।।६५।।
केते भूप वि.......................

विषय—श्री रामचंद्र जी के जनकपुर विहार का वर्णन है ।

संख्या ४५४. गुरु महिमा, रचयिता—सुखदेव (?), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—अथ श्री गुर म्हैमा लीषते ॥

अलष नीरंजन नीराकार जिन ष्याल बनाया ।
अगम पंथ का राह बताया ॥
गुर समान दाता नही कोई । राम नाव जीन दीये सुनाई ॥
आवंकारा सब सनकादिक कीया बीचारा । गुर की म्हैमा अपरमपारा ॥
गुर बीसंभर गुर परम नीधान । गुर बीनी कबे न होय कल्यान ॥
गुर म्हाराजा गुर देवन के देवा । गुर कांमधेन गुर कलप बछी गुरवी ॥
:o: :o: :o:
गुर सेव हरी आपही कीनी । यही सीष सुषदेव कुं दीनी ॥
रीषी नारद मुन ऐसी कीनी । जाइ दीछा धीमर सूँ लीनी ॥

अंत—
गुर की म्हैमा पढ़ै अर गावा । जौनी संकट कबे न आवा ॥
गुर की म्हैमा वरनी न जाइ । श्रीरी सुषदेव अपन मुष गाई ॥
इती गुर म्हैमा संपूरन समापीता ॥ श्रीराम............

विषय—गुरु महिमा का वर्णन ।

संख्या ४५५. पशुमर्दन भाषा, रचयिता—सुखानंद नाथ, पत्र—२३, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ तत् सत् ॥ परमदेवतायै ॥

हे कुल साधक सब लोगो तुमको परम कारुणिक सदाशिव ने प्रत्यक्ष अपना स्वरूप कर्के कहा है तुम सभो के माहात्म्य को पृथिवी में कोई जानने की सामर्थ नही है और तुम्हारे कर्ने से पशु पाशबद्ध जो सब जीव वे मुक्त हाते है कुलार्णवे-कुलाचार प्रसक्तानां साधूनां सुकृतात्मनाम् साक्षात् शिव स्वरूपपाणाम् प्रभावो वेत्ति को भुवि ॥ दृष्ट्वातु भैरवी चक्रं मम रूपांश्वसाधकान् मुच्यन्ते पशु पाशेभ्यः कलि कल्मष दूषिताः ॥ कुलावतो तन्त्रे कौलिकोहि गुरुः साक्षात् कौलिकः शिव एव सः इत्यादि ॥

और जीवो के निस्तार कर्ने के कारण तथा उन्होकी कर्त्तव्याकर्त्तव्य रूप उपदेश देने के अर्थ कौलिको का पृथिवी मण्डल में विहार है ।

मध्य—और इच्छापूर्वक पशु के देखने से और उसके साथ वार्त्तालाप वा उसकी स्पर्श करने से तुमको प्रायश्चित कर्ने पड़ता है और पशु का संसर्ग कर्ने से वीर भी पशु होता है ।

पशोर्दर्शन मात्रेण कर्त्तव्यं सूर्यदर्शनम् आलापात्तस्य संसर्गात् लक्षं श्री पादुकांजपेत् ॥ कुब्जिका तन्त्रे पशुनासह संसर्गात् पशुरेव न संशयः २३ ज्ञान पूर्वक जो साधक एक बार भी पशु का अन्न भोजन करै सो नराधम है सहस्र मन्वन्तर व्यतीत होने से भी उसकी निष्कृति अर्थात् उसका उद्धार नहि होता और लोभ वस से या मोह से वा भय से कदाचित् पशु का अन्न भोजन कर्ने में आवै तब लक्ष श्री पादुकामंत्र का जप और पुनर्वार अभिषेक और श्री चक्र पूजन कर्ने से पाप से मुक्त होय नही तो निस्तार होता नहि ।

अंत—शैव धर्माश्रिताः कौलास्तीर्थ रूपाः शिवात्मकाः ।
स्नेहेन श्रद्धया प्रेम्णा पूज्या मान्या परम्परम् ॥
यथा सम्यातुर्यत्किंचित् यो दधात् कुल योगिने ।
विशेष तिथिषु प्रीत्या तस्य पुण्यं न वर्णने ॥

कुल निष्ठान् परित्यज्य पच्चान्यस्मै प्रदीयते ।
निष्फलं तत् भवेद्देवि दाता च नरकं व्रजेत् ॥
यथा ब्रह्मोपदेशेन विमुक्तः सर्वपातकैः ।
गच्छन्ति ब्रह्म सायुज्यं तथैव तव साधनात् ॥
शोधनेहंसः शुचि षदित्यादि एकमेवापरंब्रह्मेत्यादि सर्वं ब्रह्ममयं भावयेत् ॥४२॥

इति श्री कुलावधूत श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री हरिहरानंदनाथ भारती कृतःपशुमर्दनाख्यः संग्रहः समाप्तः ॥ ॐ ॥ सवत् १८८७ पौष शुक्ल तृतीयायां लेखः ॥ तत् सत् ॥

विषय—यह ग्रंथ हरिहरानंद भारती कृत पशुमर्दनाख्य का भाषानुवाद है। इसमें पशुओं के साथ किए गए व्यवहार का फलाफल और उनके स्वभाव आदि का वर्णन है।

संख्या ४५६. पचासिका, रचयिता—सुवंस कवि, पत्र—२५, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, अपूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णवल्लभ राजनगर तहसील, राज्य—छतरपुर।

आदि—श्री गनेसजु श्री सरसुती जु ॥
अथा नरसिंह पचासया लिषते ॥
श्री रामदास गुर चरन कौ ध्यान धरौ उर आन ॥
पुनि नरसिघ पचासका...कहौ बखान ॥ १ ॥
संवत सत्रासे दस भादौं विदि गुरवार ।
सातं का पूरन कियौ पचास का अवतार ॥ २ ॥
मध्य—पृ० सं० २५

......षलकंत्र लोचंनं जगत परजा गहू ॥
ध्यावें नर सुर पुन श्रवन सुन सुन भगत वछल भगतंन प्रतपालहू ॥
पतितनि पावन तरे पतित अजामेर से गंनका कौ सुष दैकै अनुरागहू ॥
भयौ है अनाथ कुल काहिय सुवंसराय वेग नरसिघ जू पुकार औ न लागहू ॥३९॥
अंत—पृ० सं० ४६

......पठत होय दुष दूर महाही ॥
यह नरसिंघ जस पठत ग्याना उपजै मन माहि ॥
यह नरसिंघ जस पढ़त सुष उपजै मन माही ॥
यह नरसिघ पचासका पढ़ै कटै संकट सकल ॥
करिये नरसिघ संका न कछु कहे सुवंस नरसिंघ बल ॥

विषय—नरसिंह भगवान् का गुणगान विविध छंदों में किया गया है।

संख्या ४५७. कवित्त, रचयिता—सुवरण (सुवर्ण), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८३/४ × ३३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जगेसर दुबे, ग्राम-मदरिया, पोस्ट-तरकुलवा, जिला-गोरखपुर।

आदि—
कबै पायचारी गज पालकी सवारी कबै कबै पाद पंकज महीप परसत हैं।
कबें लाषन को षोज कबें षोजि षात रोज कबें तंबू सरपोस कबै नग्रहि फिरत है।
कबें लाषन्ह को मान कबें आपुहि वेमान कबें ज्ञानी विद्वान कबै दोष करसत हैं।
जब को बनाव जस तब को तरह तस "सुवरण" न कस विधि ईश्वर करत हैं। १।

तारो गज ग्राह गीध गणिका अजामिल को विपति विदारो जिन्ह ब्राह्मण सुदामा को ।
द्रौपदी को लाज काज राखो जिन्ह सभा माझ राखो जिन्ह टेक वलि हरिचंद नामा को ।
गौतम की नारि पद रेनु ते विमान दीन्हो धायो जिन्ह जूठो फल भिलनी सीवामा को ।
अतनी सिषाई एह करो कवि "सुवरण" की वास है रहो तुम न राधेपति स्यामा को ॥ २ ॥
बोलति झिझकि झारि झीनो नील अंबर मुख मानो नीलघटा मध्य तडपि जाति दामिनी ।
थाकी वहु जतन सिखाये वहु भातिन्ह से मानति न नेको छिछि वीति गई जामिनी ।
आली को न दोस सिमिरोस सरपोस राधे पाछ के परेहू विन होयगी न गामिनी ।
"सुवरण" सनेसो आगे कहिए नंद नंद यू (जू) ते मान के महल चढि बैसी आज कामिनी ॥ ३ ॥
लहाछेह चातुरी विलाश रास वृंदावन दुहुंदिशि स्यामता के अंतराल कामिनी ।
मकराकृति कुण्डल गर माल वैजयंती ओढे पीत अंबर दसन द्युति दामिनी ।
छूटेव लाज काज गृह गुरजन की डरताई मोहनहि लाई दिन वितो जात जामिनी ।
करें रिति प्रीति विपरिति रति "सुवरण जू" वलिहारी वलिहारी मोहन नचाविनी ॥ ४ ॥

अंत--

जयतिपरासर सूनुः सत्यवती हृदय नन्दनो व्यासः ।
यस्यास्य कमल गलितं वाङ्मयममृतं जगत्पिबति ।
द्वैपायनौष्ठपुटनिःसृतमप्रमेयं पुण्यं पवित्रमथ पापहरं शिवंच ।
यो भारतं समधिगच्छति वाच्यमानं किं तस्य पुष्कर जलैरभिषेचनेन ॥ २ ॥

चंद्र के चाव चकोर मरें निसू दीपकि ज्योति जरंबो पतंगी ।
घन घोर के सोर के मोर मरें अरु मीन मरै बिछुरें जल संगी ।
स्वाति के बुंद के चातक चाहत केतकि फूल के भों भृअंगी ।
ए सभ चाहत औ नही चाहत जारो में प्रीति कि रीति एकंगी ॥ १ ॥

तब तो हमारो चित हित दे चोराइ लीन्हो अब क्यों न प्यारे डोठ ऊठऊ न लाइए ।
मिनती हमारिए विसारिए न प्यारे हमें सालति विसारो तते हारि बात हारिए ।
यौ वनि आवे तो लगाय लिजै अंक अंक नातो नानो नैनन्ह किन्हे तो निवाहिए ।
गाढो है गरज अरज अरज अलि मोहन पियो रस पियो त दरश दियो चाहिए ॥

विषय--वियोग शृंगार वर्णन ।

संख्या ४५८. रामरहारी (लवकुश कांड), रचयिता--सूरज दास, पत्र--६६ आकार--८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--८६७, अपूर्ण (केवल पृष्ठ सख्या २ नही), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--१८१६, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता--पं० स्वामीनाथ दुबे, ग्राम- दुबौली, पोस्त--खुखुंदू, जिला--गोरखपुर) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ श्री पोथी रामरहारी कृत सुरजदास ॥

॥ स्लोक ॥

जत्रैव गंगा जमुना त्रीवेनी गोदावरी सिंधु सरस्वती च ।
सर्वानि तीर्थानि वसंति तत्र जत्रो च तोद्धार कथा प्रसंगः ॥ १ ॥

प्रनवो गनपति मन चित लाई । जेहि सुमिरे में गति मति पाई ॥
प्रनवो मातु पिता गुर पाऊ । जीन्ह मोहि निर्मल ग्यान सिषाऊ ॥
सारद को मैं चरन मनावो । जेहि प्रसाद अछर सुधि पावो ॥

:o: :o: :o:

राम नाम सभ करहि पुकारा । मानहु बुजीक बाद नीहारा ।।
राम बिमान गगन लहि धावा । जनु तारागन सर्ग सोहावा ।।
राम बिमान उतरि पुनि तहां । सभ कुटुंब मीली आए जहाँ ।।
उतरे राम सीआ औ लछुमन । उतरे बानर भालु सब संगन ।।
हनीवंत बीर अगंद कुमारा । दइत बिभीषन लंक भुआरा ।।
उतरे आन सकल बलवीरा । जामवंत उतरे रनधीरा ।।
उतरे सेना सभ समुदाई । तीन्ह को नाम कहै को गाई ।।
देषि कुटुंबन्ह गहवर रामहि रहा न जाइ ।
गुर बसीष्ठ. . . .नन्ह पहले लागवे धाइ ।।

अंत--

।। दोहा ।।

सगरी कटक जीआए सभ कोउ भा हरषंत ।
सीता लेन पठाए लछुमन औ हनिवंत ।।

।। चौपाई ।।

लछुमन कहा चढहु रथ आइ । रामचंद्र तोहि बोलि पठाइ ।।
सीअ कहा सुनु लछुमन राई । दीन्ह बहुत दुष तोहरे भाई ।।
धरती मंह जो देवर होई । जाउ रसातल लषै न कोई ।।
लषन कहा तब राम गोसांइ । अब दोइ से दुइ बालक आई ।।
बांह पकरि तब रथहि चढावा । हांकि रथहि लै अवधहि आवा ।।
पाछे पलटि जग्य पुनि कीन्हा । कोटि गाय बिप्रन्ह कों दीन्हा ।।
हेम रतन औ सहन भंडारा । सो सभ दीन्हा लागु न बारा ।।
लव कुस चरित सुनै मन लाई । ताकर पाप तुरित छै जाई ।।
जाके सुनत पाप सब नासा । होए मोछ वैकुंठ नेवासा ।।
जाहि सुने सुष पावै रोधी । जंत पत्र फल पावै सीधी ।।

।। दो० ।।

सीता सती सुतन्ह संग भजन लागी राज ।
कहत सुनत जे प्रानी होई महासीध काज ।।

इति श्री रामरहारी संपूरन सुभ संवत १८१९ फागुन सुक्ल दसम्यां सोमार गीरधारीदास भइल ।।

विषय--सीता का वनवास और रामाश्वमेध का वर्णन ।

संख्या ४५९. नखशिख, रचयिता--सूरत मिश्र (स्थान--आगरा), कागज--देशी कालपी का, पत्र--८, आकार--११$\frac{६}{१६}$ × ८$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२९०, पूर्ण, रूप--नया, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग ।

आदि--सूरत मिश्र रचित नखशिख ।।

ॐ ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ नखशिख वर्णनम् ।।

चरन चतुर्भुज के चिह्न द्वै करत सेवा रमाके । सुखद ग्रह रूप सात हैं ।
आसन द्वै विधिहू रिझायौ पै न बनौ विधि "सूरत" सुकवि वातें जग मैं विख्यात हैं ।
सुनिये हो लाल उहिवाल पग सम ताकै कीनौ बहुतेरौ पैन भए वारिजात हैं ।
ऐसौ कौन जाके हिय धीरज धीराइ वाके पाइ देखें काहू के न पाइ ठहरात हैं ।। १ ।।
पद नख चंद अनुहारि छीनी रवि की अरुनताई जीतें जोतिवंत स्वच्छ रूप बिलसत हैं ।
जेती जगनारि ते निहारि बारि मोची करें सबही के प्रतिबिंब तिन में लसत हैं ।

"सूरत" श्री वृंदावन धनी कौं चरन संग पाइवे को जिन आसावंत वरसत हैं ।
सांची कहनावति इहां ई देखी लाल सबै जगत के रूप जाके नख में बसत हैं ।। ३ ।।

।। एडी वर्णनं ।।

कोमल अमल रुचि राजति रजति रूप अति ही अरुन होति भूमि के परस तें ।
मानो बरसत गति गजराज कुंज ते कुसंम जल मेलिभरें बंदन सरातें (?सरसतें) ।
जिनकी उपमा कौ सूरति बखांनी जाति कहा कहौं आली कहि आवतु तरसतें ।
ऐसो कौन चलि सके डगु भरि मगु पगु बेड़ी सी परति तेरी एड़ी के बरस तें ।। ४ ।।

मध्य—— ।। बरुनी ।।

किधौं दृग सरोवर आस पास स्यामताई ताही के ए अंकुर उलहि दुति बाढे कहैं (? बाढ़े हैं) ।
किधो प्रेम प्रेम क्यारी जुग ताके चहुघां रची है नील मनि सरनि कि बाज कुरन डाढे हैं ।
सूरत सुकवि तरुनी की बरुनी न होहि मेरे मन आए यो विचार चित गाढे हैं ।
जेइ जे निहारे मन तिनके पकरिवे कौ देखौ इन नैननि हजार हाथ काढे हैं ।।३४।।

।। बेनीवर्णनम् ।।

त्रिभुवन पति के हरति दुख दूखतहि सहज सुवास सोमरस है ।
नैस सैं जुत्त पर संमहाई सुख सरसै वे तीनहू वरन की प्रकट सुबरस है ।
सब दिन एक सो महातम है सूरत यों नागर सकल सुख सागर परस है ।
ऐरी मृग नैंनी पिक वैनी सुख देनी अति तेरी यह वेनी तिरवेनी तें सरस है ।।

।। इति सूरत कृत नख शिख वर्णनम् ।।

विषय—नायिका का नखशिख वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—१. प्रति परिचय—हमारे उभय जैन ग्रथागार मे इस ग्रंथ की ५ पत्र की प्रति है जिसके प्रत्येक पृष्ठ मे १३ से १७ पक्तियाँ एव प्रत्येक पक्ति मे ३५ से ४० अक्षर हैं । प्रति अठारहवीं शताब्दी की लिखित प्रतीत होती है ।

२. कवि परिचय—कवि सूरत मिश्र कनौजिये ब्राह्मण थे और आगरे में निवास करते थे । इन्होने हिंदी भाषा की बड़ी भारी सेवा की है । ये रसज्ञ कवि एवं सफल टीकाकार थे । इनके रचित अन्य ग्रंथ ये हैं :—

१. अलंकार माला सं० १७६६ श्रावण शुक्ल ११ गु०
२. रसरत्न सं० १७६८ माधव २ (१७५२ नायिका भेद)
३. भक्ति विनोद
४. काव्य सिद्धांत सं० १७७८ का० सु० ३ गा १५०
५. छंदसार सं० १७६८ से पूर्व रचित
६. श्रृंगार सार सं० १७८५ आषाढ शुक्ला १५ गु०
७. सरस रस सं० १७९१ (१७९४ ?)
८. विहारी सतसई टीका सं० १७९४ (अमर चंद्रिका)
९. रसिक प्रिया सं० १८०० फा० सु० ७ गु० वीकानेर (जोरावर भक्त)
१०. कविप्रिया टीका
११. बैताल पच्चीसी वार्ता
१२. प्रबोध चंद्रोदय
१३. राम चरित्र
१४. कृष्ण चरित्र
१५. भक्तमाल

१६. कामधेनु
१७. कवि सिद्धांत
१८. रसरत्न टीका सं० १८०० श्रावण
१६. श्री नाथ विलास (अप्राप्य)
२०. नखशिख

विषय—नायिका का नखशिख वर्णन ।

संख्या ४६०. कवित्त, रचयिता:—सूरदया, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—५¾ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—. . . . . विलासी ।।३१।।
टालत है नर लेषटल नहि यान कि नाथ वियोग दयो है ।
विक्रम वायस मांस भख्यो पुनि हीनमतो हरचंद भयो है ।
कीचक को धन कंद माहा दल लंकपति रिद्धि छाडि गयो है ।
"सूरिदया" नल नारि तजि हनुमान पसाव वल गोटलयो है ।। ३ ।।

ठोर उठोर लिषत शदाशिव रायत है शिर उपरि गंगा । गौर सूम्फुझिकरै । लघु सो कडि सोच परद्यो गलि राषि भुयंगा । चंद अलभ रहिउ चिहरा विचि चूसि चूसि हरूसाडि करै अति अंगा ।। "सूरिदया" कहै रुद्र सुचित समानि वहोय न चित चितन अंगा ।।३३।।

अंत—काव्य कवित्त है गीत कलावर वैद्यक योतिष चित्र करेहैं ।
यंत्रक मंत्रक स्तंभन मोहन नाटिक नृत्त अभ्यास करेहैं ।
गावत गीत पठंत दिव्य धन और अनेक कला जु वरे हैं ।
द्रव्य कला सवते "दयासूरि" कहै धनवंत शिरै है ।।
कमलनाल आइयो सजन प्रीत रह लिपटाय षंड षंड करि डारियो ।।

विषय—शिव, धर्म आदि विषयों पर कवित्त रचे गए हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि और मध्य के कई पत्ते नहीं हैं । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ४६१क. सूरसाठि, रचयिता—सूरदास जी, स्थान—गिरिराज (मथुरा), पृष्ठ—५ (३१ से ३५), आकार—५।। × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—श्रेष्ठ, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ४२, पु० सं० १४ ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। अथ सूर साठि लिख्यते ।। श्री ।। राग बेलावल ।।
कृष्ण सुमरन तन पावन किजे ।
जव लग जग सुपनो सो जिजे ।। १ ।।
अवध उसास गनत सब तेरे ।
सो वितित भये आवत नेरे ।। २ ।।

मध्य—मनुष देह धरि अधम कमायो ।
ते तरछे दुख दारुन आयो ।।५८।।
जेतन काज जिव वध किने ।
रसना रस अमिरत रस पीने ।।२६।।

सीतन छुटत प्रेम करि हारयो ।
प्रेत प्रेत कर नगर निकारयो ॥३०॥

अंत—श्री भगवान परम हेत कारी ॥
द्वारे रटत हरिके सुर भिखारी ॥५६॥
परम पतित शरण येह लिजे ।
वि रज वान अभेता दिजे ॥६०॥

ईति श्री सुर साठि सुरदास कृत संपुर्न ॥

विषय—भक्ति और ज्ञान विषयक ६० पद्य है ।

संख्या ४६१ख. सूर रामायण रचयिता—सूरदास, कागज—आधुनिक देशी, पत्र—३६, आकार—१० × ७¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—. . . . .

. . .पूत बल बंड वज्र वपु काके हिये समाइ ॥ ५ ॥
लयो बोलाइ मुदित चित ह्वै करि वछत मोर जो लेहु ।
ल्यावहु जाइ जनक तनया सुधि रघुपति कहँ सुख देहु ॥ ६ ॥
पौरि पौरि प्रति फिरेहु विलोकत गिरिकंदर गिरिगेहु ।
समय विचारि मुंद्रिका वीजे सुनहु मंत्र सुत एहु ॥ ७ ॥
लै तमोर माथे धरयो हनुमत कियो चतुर्गुन गात ।
चढि नग सिखर शब्द एक उचरेव गगन उठ्यो आघात ॥ ८ ॥
कंपित कमठ शेष बसुधानम रश्वि रथभौ उनपात ।
मानहु मेरू पांख ह्वै लागे उड़ेउ अकाशहि जात ॥ ६ ॥
घहरत सकल अचल सरिता वन जब कीन्हो किलकार ।
तहाँ एक अद्भुत जो निशिचरि अति मुख नख विस्तार ॥१०॥
पवनपूत उर पैठि पधारे तहँ न लगी छिन बार ।
सूरदास स्वामी प्रताप बल उतरे जलनिधि पार ॥११॥

अंत— ॥ राग मारू ॥

कहत हनुमान सों रघुराइ ।
द्रोन गिरि पर जरी सजीवनी साषामृग तू ल्याइ ॥ १ ॥
वेगि जाउ लै आउ उहाँते विलम न करु अब भाय ।
जब लगि भानु उदै नहि होवै तब लगि लों फिरि आय ॥ २ ॥
लछिमन विथा जानि उर ताते कहत अकुलाइ ।
सूरदास प्रभु वचन सुनत ही हनू चल्यो उतलाइ ॥ ३ ॥६५॥
द्रौन गिरि हनुमान सिधायो ।
सजिवन को कछु भेद न पायो तब सब सैल उठायो ॥ १ ॥
चितै रहे तेहि भरत देखिकै अवध निकट जब आयो ।
मन मे जानि उपद्रव भारी बान अकाश चलायो ॥ २ ॥
राम राम यह कहत पवनसुत भरत निकट जब आयो ।
पूछेव सूर कवन है कहि तू हनुमत नाम सुनायो ॥ ३ ॥६६॥

विषय—हनुमान् द्वारा लंका जलाने से लेकर लक्ष्मण को जीवित करने के लिये संजीवनी औषधि लाने तक की रामकथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि और अंत के अंश खंडित हैं। रचनाकाल और लिपिकाल दोनों अज्ञात हैं।

संख्या ४६१ग. सूरसारावली रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१३२, आकार—१०¾ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०८, खंडित, रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता–पं० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट–बरहद, जिला–आजमगढ़)।

आदि—

जा दिन कौसल्या अपने गृह वधू वधू करि मोहि बोलैहै।
जा दिन राम रावनहि मारिहै कोप सहित दससीस नसैहै।
तबही मोक्ष होत सूरज प्रभु मो दासी की विपति छडैहै ॥९०॥

:o: :o: :o:

इति श्री सूरदास महाकवि विरचितायां सूरसारावल्यां श्री राम चरित वर्णनं नाम प्रथम पवसर्ग ॥ १ ॥

अहो पति सो उपाव कछु कीजै।
जेहि उपाव अपनोइ यह बालक राखि कंस ते लीजै ॥
मनसा वाचा कहत कर्मना नृपति हियै न पतिजै।
बुधि बल छल करि जतन युगुति वरु काढि अनतहि दीजै ॥
नाहिन हतोभाग जोहि इह सुष मीलि लोचन पुट पीजै।
सूरदास ऐसे सुत के गुन सुमीर सुमीर सुष जीजै ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ राग गौरी ॥

येहि अंतर हरि आय गये।
मोर मुकुट पीतांबर काछे अतिकोमल छवि अंग भए।
जननि बोलाय बाहरहि लीन्ही देषहु री मदमाती।
इनहि को अपराध लगावति कहा फिरति इतराति।
सुनिहै लोग मष्ट अवहु करौ तुमहि कहां की लाज।
सूर स्याम मेरो माषन भोगी तुम आवति वेकाज ॥१५४॥

॥ राग गंगाधर ॥

अवही देषो नंद केसोर।
घर आवत ही तनक भये है............

—अपूर्ण

विषय—श्रीकृष्ण की ब्रजलीलाओं का वर्णन।

संख्या ४६१घ. सूर गूढार्थ पद संग्रह और अर्थ, रचयिता—सूरदास जी, टीकाकार—बालकृष्ण (भावनगर), कागज—माधोपुरी, पत्र—५३, आकार—६। × ७॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८९, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ५, पु० सं० २।

आदि—।। श्री कृष्णाय नमः ।। श्री गोपी जन बल्लभाय नमः ।। अथ सूरदास कों कीर्तन को संग्रह करिवें कों प्रथम मंगलाचरण कहेत हों ।।

।। दोहा ।।

श्री गोवर्द्धन धरन जय करत सरन जन मोद ।
वंदारक वंदित सकल वंदा विपुन विनोद ।। १ ।।
श्री बल्लभ विट्ठल पदलवंदि विसद विचार ।।
वहत सुविद्या बुद्धि बल विनसत विकट विकार ।। २ ।।

मध्य—पृष्ठ ५२

याको अर्थ—श्री कृष्णचंद्र नंदराय जी के ग्रह प्रगट होय के सबन को आनंद कों अनुभव करायें ।। ताको बरनन वृक्षरूप करिके नंदराय जी गान करत हैं ।। दधिसुत जो समुद्र ताको सुत जहाँ सो उत्पन्न भयो ।। सो मुक्ताफल सो जन्म्यों ।। जेसी बीज मेंते वृक्ष होय के फल ताई को अनुभव होत हैं । तैसे जन्म्यो इहां एसों प्रश्न आयो । जो वृक्षरूप करिकें बरनन करनो हतो । सो तो साक्षात् दधिसुत जो कल्प वृक्ष उचित समान धर्म ताको छोडिके मुक्ताफल जो वृक्ष अंस भता कों कीयों ।।

अंत—पष्ठ १०६

पीन सानु जो ऊंचो परत तद्वत् हे कुच जिनके तापर अहरीजों का चली ।। सो कंचूकी राजत हे ।। विहार करत ताकी तनी टूट रही हे ऐसे सूरदास प्रभु निरखि हरखि आनंद भयो अत्यंत प्रीति वढी ।। ४ ।।

इति श्री सूरदास जी के गूढार्थपद संपूर्णम् ।। ० ।।

विषय—सूरदास के भक्ति विषयक गूढपद अर्थ सहित लिखे गए है ।

संख्या ४६१ङ. सेवाफल, रचयिता—सूरदास जी, स्थान—गिरिराज (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—२ (१० से १२ पृष्ठ तक), आकार—५। × ४।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१५५५ से १६४० के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० ब० सं० २३, पु० सं० ७।

आदि—।। श्री कृष्णाय नमः ।। श्री ।। अथ सेवा फल लिख्यते ।।

भजो गोपाल भुलि जन जाय ।। मनुषा जन्म को येहि हेलाहो ।।
कृपा भई जब मन में आई ।। याहि देह सों समरो देवा ।। २ ।।
सुनो संत सेवा की रीत ।। करो कृपा राखो मन प्रीत ।। ३ ।।
प्रात उठि श्री कृष्ण कों धावे ।। जो फल मांगे सो फल पावे ।। ४ ।।
हरि मंदिर में करे बुहारि ।। कबहुं न झांखे जम की द्वारी ।। ५ ।।

मध्य—जो ठाकुर कों भोग धरावें ।। ताको फल तुरतहि पावे ।।२२।।
जेसी पदवी जसोदा मात ।। ता सुख की कछु कहिय न जात ।।२३।।
ग्वाल मंडली सों गोपाल जिमावें ।। सो ठाकुर को सखा कहावे ।।२४।।
जहां वैष्णव की मंडली होवे ।। ताकी संगति नित्य प्रति जोवे ।।२५।।
सेवा में जो आलश करे ।। कुकुर होए कें फिरि फिरि मरे ।।२६।।
मनसा सूं जो सेवा आचरे ।। तबहि सेवा पुरी परे ।।२७।।

अंत—सेवा को फल कह्यो न जाय ।।
सुखे संमरो श्री बल्लभराय ।।४२।।

सेवा को फल सेवा पावे ।।
सूरदास के हृदे समावे ।।४३।।

इति श्री सेवाफल संपूर्ण ।।

विषय—भगवत् सेवा का फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना चरण चिह्न के साथ एक हस्तलेख मे है ।

संख्या ४६१च. सेवाफल, रचयिता—सूरदास जी, स्थान—गिरराज (मथुरा), पत्र—१, आकार—१०।।। × १०। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५६६ से १६४० के बीच मे, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० १४, पु० सं० १।

आदि—सेवानी बांधी फल ।। राग भैरव ।।

भजो गोपाल भूल मति जाऊ ।। मनुशा जन्म को एही लाऊ ।।
गुरु सेवा करि भक्ति कमाई ।। कृपा भई तब मन में आई ।।

मध्य—

जो ठाकुर कों लगावे भोग ।। ताको परमानंद निजोग ।।
पावे पदवी जसोदामात ।। ते सुख की कछु कही न जात ।।१२।।
ग्वाल मंडली गोपाल जिमावे ।। सो ठाकुर को सखाज् कहावे ।।
जो ठाकुर को स्वाद करावे ।। सो ताको फल तबही पावे ।।१३।।

अंत—

सेवा कीहे अद्भुत रीती ।। श्री विट्ठलनाथ सों राखे प्रीती ।।
श्री आचार जी ने प्रगट बताई ।। कृपा भई तीनके मन भाई ।।२३।।
सेवा को फल कह्यो न जाई ।। सुख सुमरो श्री बलभराई ।।
सेवा को फल सेवा पावे ।। सूरदास प्रभु हृदे समावे ।।२४।।

।। इति सेवा फलः ।।

विषय—श्री ठाकुर जी की सेवा किस तरह करनी चाहिए और उसका क्या फल होता है, यह वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—दोनो तरफ लाल स्याही से हाशिया छोड़े जाकर काली स्याही से पद लिखे गए है ।

ग्रथ के साथ निम्नलिखित रचनाएँ भी है :—

१. श्री गुसाई जी के सात पुत्र के प्रागट्य को विचार लिख्यो है—यह भावना का ग्रंथ गद्य मे है । कर्ता का नाम नही है ।

२. "द्विदलात्मक स्वरूप को विचार"—अपूर्ण गद्य मे है ।

३. "हरिराय जी कृत शिक्षा" अपूर्ण ।

४. बाद मे—"निज वार्ता" के कुछ पत्र तथा फुटकर कीर्तन के पत्र है जिनपर पृष्ठ संख्याएँ नही लगी है ।

संख्या ४६१छ. दानलीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१९, आकार—९$\frac{७}{१०}$ × ६$\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० वि० (?), प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर फतेह बहादुर सिंह, क्षत्रिय पुर, पो०—मझगवाँ (जौनपुर) ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः अथ दान लीलसमय वर्नन ॥
॥ राग बिलावल ॥

भक्तान के सुखदायक स्याम ॥ जुवती पुरुष नहिं कछु नाम ॥
संकट मैं जन जहां पुकारे ॥ तहां प्रगटि तिनिका उद्धारे ॥
जिय भीतर जिन सुमिरन कीनो ॥ तिनको दरस तहां हरि दीनो ॥
दुख सुख मैं जे हरि को ध्यावे ॥ तिनि कों नेक न हरि बिसरावें ॥
चित दै भजै कौनहूं भाइ ॥ ताकों तैसेइ त्रिभुवनराइ ॥
कामातुर गोपी हरि ध्यावो ॥ मन वच क्रम हरि सों चित लायो ॥

:o: :o: :o:

चंद्रवदन तन अति सुकुमारी ॥
अपने मन सब कृष्णहिं प्यारी ॥
देषि सबनि रीझे वनवारी ॥
तब मन मैं इक बुधि विचारी ॥
अब दधिदान रचों इक लीला ॥
जुवतिनि संग करों रस क्रीला ॥
"सूरस्याम" संग सषा बुलाए ॥
यह लीला कहि सुष उपजाए ॥

अंत—....................

यह सुनि नंद कुमार सषा दे सैन बुलाए ॥
मना मनसुषा सबल सैन महराज जगाए ॥
नैन सेन दै सांवरे राषे द्रुमनि चढाइ ॥
और गोप सब संग लै रोकि रहे मग जाइ ॥

॥ कहत नंद लाडलो ॥

एक सयानी सषी घेरि सब सषी बुलाई ॥
या वन मैं इक बार लूटि हम लई नंदधाई ॥
तनक केरि फिरि जाइयें अपने दुख अभिलास ॥
यह झगरो सुनि होयगो गोकुल मैं उपहास ॥

॥ कहति व्रज नागरी ॥ ३ ॥

लटि चलौं सब ग्वारि कहीं कोउ जान न पावें ॥
रोकि रहे मग ग्वाल आप बातनि बिरमावें ॥
सषा सुवल दों बोल यो तूं नागरि हरि जोग ॥
काहे बात बढ़ावई जाहि हँसैं व्रज लोग ॥

विषय—श्रीकृष्ण का गोपियों से दान लेने का वर्णन । समस्त ५३ पद है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । समस्त उन्नीस पत्रे उपलब्ध हैं । रचयिता "सूरदास" हैं ।

संख्या ४६१ज. दानलीला, रचयिता—सूरदास जी, स्थान—गिरिराज (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—७॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५५५ से १६४० के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, द्वि० ब० ३३, पु० सं० ४।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ।। दान लीला लिखते ।।
सुन तमचुर को सोर घोख की बाग री ।।
नवसत साज सिंगार चली नव नागरी ।।
नवसत साज सिंगार हार पाटंबर सोहें ।
एक तें एक विचत्र देखि त्रिभुवन मन मोहे ।।
ईंदा ब्रिंदा राधिका स्यामा कामा नारि ।।

मध्य—असी बातें कान्ह कहत हमसों काहे तें ।
चोरी खाते छाछि नेन भरि लेत गहेतें ।
देत उराहनों रावरे बछ दांवरी जोरि ।।
जब जसूधां ऊखल सों बांधे तब में दीने छोरि ।।२०।।

अंत—अभरन दऐ मगाय कीयो गोपिन मन भायो ।।
हिल मिल बछरो आनंदु माट हसि आप उठायौ ।।
जुगल किसोर के वारने गई सकल वृजबाल ।।
कूज केल मन में बसी गाई सूर बिसाल ।।४५।।

विषय—दान लीला ।

संख्या ४६१क. पचाध्यायी रास लीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६.१० × ६.१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर फतेह निबहादुर सिंह, क्षत्रियपुर, पो०—मसगांव, जिला—जौनपुर ।

आदि—. ।
नि कुंडल धनि मृगमद चंदन ।।
धनि राधिका धनि सुंदरता धनि मोहन की जोरी ।।
ज्यो घन मध्य दामिनी की दुति यह उपमा कछु थोरी ।।
धनि मंडली जुरी गोपिनि की ता विच नंदकुमार ।।
राधा सम सब गोप कुमारी क्रीडत रास विहार ।।
षट दस सहस घोष सुकुमारी षट दस सहस गुपाल ।।
काहू सो कहूं अंतर नाही करत परस्पर ख्याल ।।
धनि ब्रजवास आस सब पूर्न कैसें होत हमारी ।।
सूर अमर ललना गुन गावत थकित रही निज लोक बिसारी ।।५३।।
।। धनाश्री ।। रास मंडल स्याम राधा ।।

अंत—सर्व शास्त्र को सार सार इतहास सर्व जो ।।
सब पुरान को सार सार जो सर्व श्रुतिनु को ।।
वेदनि विधि सों यो कह्यो दियो विधि रिषिनि बनाइ ।।
व्यास कह्यो बामन पुरान में सोई सूर कह्यो गाइ ।।१४८।।

इति श्री दशस्कंधे त्रय त्रिशत्तमोध्यायः ।।३३।। इति पंचाध्यायी रास लीला सूरदास कृत संपूर्ण ।। सवत् १८४० मिती कुआर वदि त्रियोदशी ।।१३।। समाप्त ।।

:o: :o: :o:

अथ विद्याधर श्राप मोचनः ।।

नंद सब गोपीग्वाल समेत ।। गयौ सरसुती के तट इक दिन शिवा अंबका पूजा हेत ।।

विषय—श्री कृष्ण की रासलीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । समस्त पंद्रह पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सं० १८४० वि० है ।

संख्या ४६१ङ. बंसी लीला, रचयिता—सूरदास (गिरिराज, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१० × ५।।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४० के पूर्व, प्राप्ति-स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ३६, पु० सं० ७ ।

आदि—**अथ बंसी लीखी हें ।**

राधे जू बंसी दीजिये व्रज नारि ।।

कालिह कुंज में ठोर बांसुरी भूलि बिसारी ले जु गई व्रज नारि सुनी हम बात तिहारी।। तिहारे काज न आवही बंसी हमारी देहु । हम आतुरह्वे मांगहों तुम नाहि न नाहि कहो ।। १ ।।

बंसी दीजिये हो ।।

मध्य—**वारी लाला हम सों कहत गवारि आपुनी करत बडाई मारो गुलचा गाल तो बाबा की जाई ।। वे दिन क्यों तुम भूलि गए घर घर मांगत छाछि । फाटी कमरिया कांधे पर अब कहा कहत हो साछि ।। ४ ।। बंसी केसी हो व्रजनाथ ।।**

राधे जू या बंसी को मरम कहा तुम ग्वालिन जानो ।
है त्रिभुवन प्रतिपाल ताहि मेरो मन मान्यो ।।
यह बंसी खोजत फिरे शिव विरंची मुनी सात ।
से दधि मटुकी सीस पें अब कहा नचावत हाथ ।। ५ ।।

अंत—**प्राप्त नहीं ।**

विषय—राधा ने श्रीकृष्ण की वंशी छिपा दी और श्रीकृष्ण का राधा से वंशी वापस करने के लिये अनुनय विनय करना ।

संख्या ४६१ट. गोवर्धन लीला, रचयिता—सूरदास (गिरिराज, मथुरा), कागज—माधोपुरी, पत्र—१६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५६६ से १६४० के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ६, पु० सं० १ ।

आदि—**।। श्री कृष्णाय नमः ।। राज बीलावल ।।**

नंद ही कहत जसोधारानी ।। सुरपती पुजा तुमे भुलानी
अह नही भली तुमारी बांनी ।। लोभ ही लोभ रहे हो सांनी ।।
देव कारज की सुध बीसरानी ।। महर कहत पुनी पुनी अह बांनी ।।
पूजा को दिन पहुचो आंनी ।। सुरदास जसुमती की बांनी ।।
नंदही खीज खीज पछतांनी ।। १

मध्य—**पृष्ठ १७**

मोको नंदो परबत ही बंदत ।। वारा कपट छंपी ज्यो फंदत ।।
मरन काल एसी बुध होई ।। कछु कछु करत कछु वह जोई ।।
खेलत खात रहे बीज भीतर ।। नाहांने लोग तनक धन ईतर ।।
समे समे बरषो प्रतीपालो ।। ईनकी बुध ईनको अब घालो ।।

मेरे मारत कोन राखे है ॥ अहीरन के मन अहकाव है ॥
जो मन जाकु ताई पालने ॥ दांनी बल गाम्रे अांब कोउ पावे ॥

विषय—श्रीकृष्ण भगवान् के गोवर्द्धन पर्वत धारण करने की लीला का वर्णन ।

संख्या ४६२. बारहखड़ी, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—७½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥

लीषते पहलाद की बाराषरी ॥
क के वहु पहलाद किन्ही वहकाये ॥
हमरे वैरी कंठ लगाये ।
छाड़ो हर मुख भजो ना रामा ॥
इतनी कही हमारी माना ॥
षषे षलक उपाइ किराको ॥
हिरदै भगत करूँ मैं उसको ॥
रा रा मंमा पठ विचारा ॥
हर विन कौन उतारै पारा ॥
गगे गुरु हम कुँ वहकावै ॥
हीरनाकुस का नाम लीवावै ॥
हीरनांकुस का नाम न प्यारा ॥
मारो संठी घोह पिटारा ॥

:o: :o: :o:

अंत—पहलाद उतर गये पारा ॥
वहोर न आवै यह संसारा ॥
राडे राड मीरी वहुतै सुष पावा ॥
विप्र सुदामा हर गुन गावा ॥
बान्ह षरी पढ़ै चित लाई ॥
कहै सूर बैकुंठै जाई ॥ श्री शुभमस्तु ॥

इती बाराषरी पहलाद की संपूरणं ॥ श्री राम जी सहाय ॥ लीषतं पुस्तगः सरब सुष सुकल की : संवत १८३६ ॥ श्री शाके १७०१ सहस बासीपुर सुथान ॥ श्री ॥ भवानी ज सहाय ॥

विषय—प्रह्लाद की भक्ति का वर्णन ।

संख्या ४६३. गोपाल गारी, रचयिता—सूरदास, कागज—आधुनिक, पत्र—४, आकार—७ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—**श्री सीताराम जी सहाए । श्री कालो जी सहाए । श्री दुरगा जी सहाए । श्री महादेव जी सहाए । श्री जोपाल गारी लीष्यते ॥**

:o: :o: :o:

सोने का चरीका लगाइ जी ।।
सोने की गंडवा गंगाजल पानी ।
व्रषभानही चरन पषारी जी ।।
चरन पषारी चरनोदक लीन्हां ।
एती बड़ी भागी हमारी जी ।।
सभ सषीग्रन मीली देषन ग्राए ।
कइसे लालन बनी ग्राए जी ।।
सांवर रूप कोमल दल लोचन ।
ग्रांषी बनी रतनारी जी ।।
ग्रस सुंकुग्रार देवकी के नंदन ।
रुकुमनी चंवर डुलावे जी ।।
जेवन बइसे कीसुन कंधेया ।
देही सषी सभ गारी जी ।।

ग्रंत—एक राती पुत्ता गइल ससुरारी ।
सासुक कइल बड़ाइ जी ।
तुमरी दोहाइ माता नंदववा की ।
ग्रव न जाइबी ससुरारी जी ।।
हमके तोहके नंदववा जी के ।
देही सषी सभ गारी जी ।।
गारी के ग्रनमष जनी करी पुत्ता ।
गारी प्रेम पीग्रारी जी ।।
जुगु जुगु जीग्र पुत्ता ग्रमर होइके ।
नीती उठी जा ससुरारी जी ।।
नेगचार सभ ग्रापन करही ।
कीएन के होए चौठारी जी ।।
कंगन छोड़ी के मंगल करही ।
दीन दीन करही ग्रनंदा जी ।।
सुरदास प्रभु तुमरे दरस के ।
जीन्ह एह गारी गाए जी ।।

इती श्री पोथी गोपाल गारी कथा समापत संपुरन भइल जो देषा सो लीषा हमके दोस मती दीजिएगा सो जानोगे ।।

विषय—श्रीकृष्ण के ससुराल जाने पर स्त्रियों का गाली देना ।

संख्या ४६४क. बारहमासी, रचयिता—सूरश्याम (सूरदास), कागज—देशी, पृष्ठ—३ (२२ से २४ तक), आकार—६। × ४। इंच, पंक्ति (समस्त)—३४, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—२४, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ७०, पृ० सं० २१६ ।

ग्रादि—बारेमासी ।
कार्ति कीलौल करे सब सखियां राधा विचार करे मन मेरे ।
माधो प्रिया को ग्रान मीलाग्रो नही तर प्रांन तजुगी छीनु मे रे ।
हमको छांड चले रे बेनीमाधो राधा विचार करे मन मे रे ।। १ ।।

मध्य—

लाग्यो असाढ़ घुमड़ आये बदरा बीजली चमके कारे बादर मे रे ।
चमक चमक चहूं ओर निहारी जेसें सीप रहे जल मे रे ।
हमको छांड चले रे बेनी माधो राधा विचार करे मन मे रे ।

अंत—

क्वार मास निरमल भये चंदा गोरी सोवे अपने आंगन मे रे ।
सूर स्याम प्रभु आन मीलाये राधा खुसीय भई मन मे रे ।
हमको छांड चले बेनीमाधो० ।।

विषय—श्रीकृष्ण के वियोग मे राधा के बारह मास के विरह का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रंथ कत्थे की स्याही से लिखा है । इसमे कुल १३ ग्रंथ लिखे है :—

१. बारहमासा कृष्ण का—ब्रजजीवन कृत, २. बारहमासा कृष्ण का—अज्ञात, ३. बारहमासा राम का—तुलसीदास जी कृत, ४. बारहमासा मारवाड़ी—तुलसीदास जी कृत, ५. बारहमासा—बनारसी कृत, ६. चौमासे के चार महिना—सुरतगिरि कृत, ७. बारहमासा गज़ल, ८. बारहमासी—सूरश्याम कृत, ९. बारहमासी—सूरश्याम कृत (दोनो पृथक् पृथक् हैं), १०. गजल फुटकर—, ११. बारहमासा—, १२. पहेलियाँ—, १३. चित्रबंध काव्य भाषा ।

संख्या ४६४ख. बेनी माधौ जी के बारहमासा, रचयिता—सूरदास, कागज—आधुनिक पत्र—६, आकार—७$\frac{8}{10}$ × ६$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीमती चौरासा देवी, धर्मपत्नी—स्व० रामशंकर पांडे, ग्राम—चौंडीहार (सुरसुतीपुर), पो०—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गनेस जी सहाए ।। श्री सीताराम जी सहाए ।। श्री काली जी सहाए ।। श्री दुरगा जी सहाए ।। श्री पोथी बेनी माधव जी कै बारहमासा ।।

।। कातीक ।।

कातीक कौल करे सव सखीआ राधा बीचार करे मन मे रे ।।
माधो पीआ को आनी मीलाबो नाहीत प्रान तजो छन मे रे ।।
हमको छाडी चले वेनीमाधो राधा सोच करे मन मे रे ।।

।। अगहन ।।

अगहन गेंद वनाए सामरे जाए खेले टट जमुन कीनारे ।
खेलत गेंद गीरे जमुना मे कालीनाग नथे छन मे रे ।।
हमको छोडी चले बेनी माधौ राधा सोच करे मन में रे ।।

।। पुस ।।

पुसमास हमसों छल कीनो आपु चले सइया मधुवन केरे ।
तुम नंदलाल जनम के कपटी हम से कपट करे मन मे रे ।।

।। माघ ।।

माघ मास सइया जाडा परतु है नींद न आवें मेरे नेंनन मे रे ।
हंमको बैरागीनी करी बेनी माधो घर घर अलख जगावन कोरे ।।
हमको छाडी चले बेनीमाधो राधा सोच करे मन मे रे ।।

अंत-- ॥ कुआर ॥

बारहमास नीरमल भै चंदा गौरी तौ सोयै अपनो आंगन मे रे ।
"सुरदास सामी" आनी मीलावो राधा सुखी होए मन मे रे ॥
हमको छाडी चले वेनीमाधो राधा सोच करे मन मे रे ॥

॥ दोहा ॥

लीषा काएथ को मेटी सके वीधना लीषा न जाए ।
जैसे कोहार के आया करीआ लाल वनी जाए ॥

॥ संपुरन ॥

श्री सीताराम जी के पत्र जो देषा सो लीषा ॥

विषय--श्रीकृष्ण के वियोग मे राधा और गोपियो का विरह वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल संवत् १९४१ वि० दिया है । विशेष के लिये देखिए, 'भरथरी की कथा' का विवरण पत्र ।

संख्या ४६५. कुंवर सदैवच्छ सावलिंग्यारी की वार्त्ता, रचयिता--सूरसैन, कागज--देशी, पत्र--५३, आकार--१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२४, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२७२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), वाराणसी ।

आदि--श्री रामाय नमः ॥ अथ कवर सदै व्रिछ सवलिग्यारी वारता लिषिते ॥ राजा साल वांहण अटक सैहैर कौ राजा हुऔ ॥ नीलापुर नदी जी ठै राजा राज पकरै ॥ जी राजा कै कुवर सात हुआ ॥ ज्यामैं कुंवर सदै व्रिछ दोय सु छोटौ ॥ चयारि सु वढौ ॥ कुवरि जी की उमरि वरस ॥२१॥ की छै ॥ कुवर जी की सुरति सुरज की सी किरणि दियै छै ॥ कुवर जी सुरवीर छै ॥ जीकनै सात अरवीस ऊमरावा का वेटा चौकी रहै ॥ आयण सवारै की चौकी चौकी करै छै ॥ ज्याकी ऊमरि वरस ॥२५॥ के तलै अरु वीस के ऊपर ॥ और सावत सुरवीर छवी कनै रहै छै ॥ ऐक दिन भादवा कौ मनौ छौ ॥ दिन की अगेली कवर जी गोषै विराज्या छा ॥ अर मेह की वुद पडै छी ॥ अर कवर जी दोहौ कह्यौ ॥ दोहा--

भादवा मास सुहावणौ ॥ वरषत मधुरी वुद ॥
षेलण दिन सिकार रौ ॥ देषण वाग सुगंध ॥ १ ॥

मध्य-- ॥ दोहा ॥

फासा तोय मनायस्या म्हारौ चाह्यौ आऊ ॥
जौ जीतुहु पीवसु तौ परिज्यौ पंत्रापाव ॥ ४ ॥
जदि पंत्राही पडयौ जदि सावलिग्या मन मै राजी हुई
जदि भुपाल दोह्यौ कह्यौ ॥

॥ दोहा ॥

फासा हाथी वात का ॥ पडिज्यौ पुरावस ॥
वाजी साह कवार की ॥ सुनै आवै जस ॥ ५ ॥

जदि वसकोई पडयौ नही ॥ छै तीन कानौ पडया ॥ जदि भुपाल कही वाजी तौ म्हाकै कोई आवै नहीं ॥ जदिसुजाणी फासौ हाथ मै फेर दोहौ कह्यौ ॥

॥ दोहा ॥

नारि जसोल्हावाक हाथ छौ चतुर सुजाण ॥
जो जीतं सा इक वारिया तौ पड़िज्यौ संवादाव ॥ ६ ॥

अंत--

राजा सांहि सब बेठिकर ॥ जुग मैं करी जगीस ॥
म्हाकौ थाकौ वस नही ॥ लिखी दीनौ जगदीस ॥७६॥
परसपरा कवि सो कही ॥ कविन विचारि विचारि ॥
घाटि बाढि समझु नही ॥ लीजौ सुधारि सुधारि ॥७७॥
रस की बात सुप्यारक ॥ रीझै चतुरही ॥
संजन पावे सुषक ॥ कंपे सबही ॥ सुरां हुषीवात क सुघड़ जीय भावही ॥
परिहांमिभि बेठे सब पासक ॥ रस ऊपजावही ॥७८॥

॥ चंद्रायण ॥

पेहला गुण सीखै सुणै ॥ साई नर चतुर सुजाण ॥
सुरसंण गुण परघट कीयौ ॥ पायौ दान सनमान ॥७९॥

॥ दोहा ॥

वालिक अजाण ॥ क्षुद्र मुष कै न दीजे हाथ ॥ चेत के राखौ वीर ॥ कागद को काम है ॥ जल तेल दीपक तें ॥ कसारी को राषौ उर ॥ रेनि छोसि हियें माहि ॥ अंकुस आठौ जाम है समझि साथि पढिवे कौ ॥ रच्यौ है सिगाररस ॥ हासी कौन काम ॥ ईह लागे ग्रंथ बाम है ॥ बाचिवे उतारिवे की ॥ कीजिये न नाही ॥ आंट मन मारी पे विचारि लेहू ॥ जाने सीताराम है ॥

ईती श्री सवंविछ सावलिग्या की वर्त्ता संपुरण शुभमस्तु समत १८२६ मिती श्रावण ववी ५१ सनिवासरे लिखितं लाला सिरवार सिंध पठनार्थं शुभसमस ॥

विषय--इसमें कुंवर सदैवच्छ और सावलिग्यारी की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--इस ग्रंथ के रचयिता का नाम सूरसैन है; पर उन्होने अपना कोई परिचय नही दिया है ।

ग्रंथ बृहद् हस्तलेख मे है जिसमे निम्नलिखित ग्रंथ संकलित है :--

१. रमणसाह शाहजादा व छबीली भठियारी और विचित्र कुँवर का किस्सा ।
२. कुंवर सदैवच्छ सावलिग्यारी वार्त्ता--सूरसैन कृत ।
३. छत्र मुकुट तथा रानी चंद्र किरन की कथा ।
४. चीर चिंतामणि--उदयकृत ।
५. प्रतीत परीक्षा--बालकृष्ण कृत ।
६. विरह मंजरी--नंददास जी कृत ।
७. सनेह लीला--रसिकराय कृत ।
८. दान लीला--रामकृष्ण कृत ।
९. भ्रमरगीत--नददास जी कृत ।

प्रस्तुत ग्रंथ में लिपिकाल सं० १८२६ दिया है, पर अन्य ग्रंथ १९०५--१९०८ तक के लिखे हुए हैं । इस कारण सं० १८२६ सभवत. उस मूल प्रति का समय है, जिसकी यह स्वयं प्रतिलिपि है ।

संख्या ४६६. रामायण, रचयिता—सेवक सुकवि, कागज—देशी, पत्र—७५, आकार—९ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९३ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह ११९।५५ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ रामचंद्र जन्म लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

एक समै दसरथन गुर पुछै ग्रह आई ।
कहि बात गुर सौ यहै वीन संवतीन सुहाई ।।
गुर सनकादिक सौ कह्यौ राज अपुत्रक जाई ।
सनकादिक नै या कही सींगी रीष ग्रह जाई ।।
गुर राजा कौ लै चलै कौसल्या लै साथ ।
सींगी रीषकै ग्रह गये रीष आदर करी तथ ।। ३ ।।

मध्य—यही कथा श्रीकृष्ण सौ कहै नाग करि जोरी ।
यही कथा कहीवो करै सुर तेतीस करोरी ।।१२०।।
यही कथा जसवंत सौ "सेवक सुकवि" वखानी ।
यह संप्रत श्री भागवत यही वेद मै आनी ।।१२१।।

अंत—इहि बीधी आप पधारए दुंदुभी देव बजाई ।
भई लोक उछहै कीयौ सेवक सुजस पढ़ाई ।।
रामकथा बाचैं सुनै हीरदै ध्यान जिय राषि ।
ताकौ मै ऐसै करो जाका ध्रुवसे साषी ।।१८।।
यह रामाईनी के सुनै होत बुधी परकास ।
पल पल मै सेवक सुकबी दुष दालीद्र कौ नास ।।१९।।
च्यारी वेद व्याकरन नव अमर करत प्ररमांन ।
संचती है होंगे धंनी धनी कृपानीधान ।।२१।।

इति श्री रामायण संपूर्ण ।। श्री संवत १८९३ मीती आषाढ़ वदी ३० बुधवासरे लीषतं गोवींदराम आप हेतु शुभंमस्तु कल्यानमस्तु ।

विषय—रामायण की कथा संक्षेप में वर्णन की गई है।

संख्या ४६७. बानी, रचयिता—सेवा (सेवादास संभवतः), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—.............................

जब जानेउ सदगुर की बानी । तब सब सिंधुहि गोपद जानी ।।
सबतें परे भरे सब मांही । जिमि देषिय रवि की परछांहीं ।।
इछया जीव अंस है भाई । आपुहिं आइ सो आपु बधाइ ।।
सब तन धारि मिलेउ मानुष तन । नारि पिआरि सुधारि धाम धन ।।

।। छंद ।।

धन धाम काम सुधारि करते दिवस निसि बहु कल्पहिं ।
भव भ्रम विमोह पषंड व्यापत ताप तापत जल्पहीं ।
कहुं देव पितर यकादसी व्रत धर्म तीरथ मों करें ।
"सेवा" भइ असि हाल जिव की सत्य कारज किमि सरें ।।

:o: :o: :o:

अंत--मैं निज भाव पुकारें कहऊं। जेहि प्रकार तें डोलत रहऊं।
जैसे नीर सहज स्वर धारा। नीर उलटि तहं दीपक वारा॥
तैसें दीव सवै सव सोई। जन सेवा दूजो नहि कोई॥
जिमि कंचन तन वहु बहु नामा। "जन सेवा', प्रभु पूरणरामा॥

॥ दोहा ॥

यह भव चरितहि सुजन जन सुनहु सहित अनुराग।
जेहि विधि जनमेउ जीव जंह तह तस कहउं सोभाग॥
जवतें जनमेउ आइकें तवतें सव गुन सीष।
सेवा अमित भांति जड़ समुझेउ गुनेउ न दीष॥

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--निरगुन सिद्धातानुसार ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण है। केवल तीन पत्रे उपलब्ध है। रचनाकाल और लिपि-काल अज्ञात है।

संख्या ४६८क. रघुनाथ अलकार, रचयिता--सेवादास, कागज--देशी, पत्र--५३, आकार--$७\frac{3}{4} \times ५\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--५६०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८४० वि०, लिपिकाल--सं० १८४५ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह, ६१।५५ बस्ता), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि--

श्री अलबेले लाल जुगल चरननि चितु धरिये।
होतु वुधी प्रकास चरित रघुवर कौ करिये॥
मनुवंछीत फल वेल सकल संतप--
नसवे॥ केवल प्रभु कौ सुनानु किसवरि हैरत।
रछ्या करत सेवदास छवि मधुरि नैननि सौ नाई ने हेरत॥

॥ दोहा ॥

श्री अववेले लाल के जुगल चरन करि पीत।
"सेवदास (? सेवादास)" वरननु करौ अलंकार की रिति॥ २॥
श्री रघुवर को नमयह जनकसुता धरि ध्यान।
अलंकार जानिय सरस होइ ह्रवे मैं ग्यान॥ ३॥
अठारह सै चलिस सो संवत सरस वषान।
पौषामास वदि सप्तमै वार भौम सुभ जान॥ ४॥

:o: :o: :o:

कटि निषंग सुंदर धनष करन मनोहर तिर।
मो मन यौ पुरन करौ रामचंद रघुविर॥

अंत-- ॥ सोरठा ॥

वाय तनय वलिवान संतन की रछ्या करत।
करत निरंतर ध्यान सीतापति श्रीराम कौ॥२००॥

॥ कवित्तु ॥

कंचन सौ गात मानौ उदित प्रभात भान अतिही चपल चाह बुधि के सुधीर है ।
पिंगाहल नैन और लालही मुखारविंद झलकं लांगुट वर उज्जल सो हीर है ।
अतिही प्रचंड वेग ममहु सौ कोटि गुन अंजनी सुमातु सुचि पीतासो समीर है ।
"सेवादास" राम को चरित जहां राजत है रछा ही करत हनुमन बली बीर है ॥
इति श्री रघुनाथ अलंकार संपुरन सुभं ॥

॥ छपय ॥

धनषवान असि चर्म कमल अगुरीन अगुठी ।
सारग सुधौ कठिन कमठ सरव वर ललित अनुठी ।
हरित चत्र अति तेज कुलस असुनहि कंचन रति ।
नवयुग चुंच कपोत धार स्याम ही सुभ सो सुचि ।
षुगगंसग सीपरज हथ बासे केसरनगन ।
रहत सवा रघुबीर कर सेवादास लषि कै मगन ॥
रामदास पोथी लोषि मन मै अति सुषपाय ॥

विषय——अलकारो का वर्णन ।

रचनाकाल

१८ ४०
अठारहसै चालीस सो संवत सरस बषान ।
पौषामास वदि सप्तमै वार भौम सुभ जान ॥

विशेष ज्ञातव्य——रचनाकाल सं० १८४० है । लिपिकाल अन्य ग्रंथ 'रस दर्पण' के आधार पर, जो इस ग्रथ के साथ एक ही हस्तलेख में है, सं० १८४५ है ।

प्रस्तुत ग्रंथ रचयिता के निम्नलिखित अन्य ग्रंथो के साथ एक ही हस्तलेख में है :——

१. गीता माहात्म्य——सेवादास
२. रघुनाथ अलंकार——सेवादास
३. अलवेले लाल जू को नखशिख——सेवादास
४. अलवेले लाल जू की छप्पय——सेवादास
५. बिना नाम का एक ग्रंथ——सेवादास
६. रसदर्पण——सेवादास

हस्तलेख अत्यंत अशुद्ध लिखा है ।

सख्या ४६८ख. अलबेलेलाल जी को नखसिष, रचयिता——सेवादास, कागज——देशी, पत्र——२१, आकार——$7\frac{3}{4} \times 5\frac{3}{8}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१३, परिमाण (अनुष्टुप्)——२२२, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सं० १८४५ वि०, प्राप्तिस्थान——आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह, ६१।५५ बस्ता), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि——श्री रामाय नमः ॥ अथ अलवेले लाल जू कौ नषसिष वर्नंनं ॥

॥ अथ तरवा वरननं ॥

॥ कवित्त ॥

सौनौ सौ प्रकास कैधौ उदित दिवाकर की किरनै उजास तास राजति ने ले के ।
मानिक मयूष कैधौ मंगल सरूप रूप छाजत अनुप कै पलास कुल भेले के ।
तामरस रूप इंद्रवधू के वरन देषौ सेवादास ध्यान धरि सुंदर नबेले के ।
कोमल अमल लाल पल्लव रसाल जाल छविनि के ताल ताल चरन अलबे(ले) के ॥ १ ॥

अंत— ॥ कवित्त और ॥

धरिये गुन सुंदर रूप महा लषियै छवि नैननि कौ भरियै ।
भरिये प्रभनाम सदा मन मै छिन मै भवसागर कौ तरियै ।
तरियै वर पावन प्रेम हिये निसिवासर नेम मुदा करिये ।
करिये सेवावास निरंतर सो अलबेले(को)ध्यान सदा धरिये ॥५२॥

इति श्री अलबेले लाल् जू को नष सष वर्ननं संपुरनं सुभम् ॥३४॥

विषय—अलबेले लाल जू के नखशिख का वर्णन ।

संख्या ४६६. नलपुराण या नल दमयती चरित, रचयिता—सेवाराम, स्थान—बेरी नगर, कागज—देशी, पत्र—५७, आकार—७¾ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१२, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५३ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नल पुराण लिष्यते ॥ श्री कृष्ण उवाच—

॥ चौपाई ॥

हो नृप गणपति पूजन कीजै अरिकौ जीति परम सुष लीजै ।
सुनौ एक अतिहास भुवपाला है वन मै तुमकौ सुष शाला ॥ १ ॥
सतयुग आदि नृपति नल भयौ जानै पौहमी को सुष दयौ ।
सुत समान छिति पालन कीनौं मन वांछित दीनन कौ दीनौं ॥ २ ॥
हंस एक अति चतुर सयांनौ मान सरोवर ते जु उड़ानौं ।
पीत वरन कंचन सौ लसै श्रुति सुम्रति बांनी उर वसै ॥ ३ ॥
छिति धारीनि के दरसन करै निजु आनंद हिये मैं भरै ।
दछिन देस बिचित्रपुर ग्राम सिंध घोष नृप नाम सुनाम ॥ ४ ॥
ता तनया दमयंती जानौं सकल रूप की रास वषांनौ ।
दस सहस्र जुवती संग रहैं मधुरे वचन मनोहर केहैं ॥ ५ ॥
एक जुतिया को कनि जु पटी दिन प्रति सुधि वुद्धि अटि दटी ।
चित्र स्वरूपा नाम है जाको रहै ध्यांन पढिबे में ताको ॥ ६ ॥
राजसुता को प्रान पियारी छिनक एक निजु करै न न्यारी ।
एक समै दमयंती बाला चढ़ी चित्रसारी सुभ काला ॥ ७ ॥

मध्य—

संध्या करि पिय आवत देषे पूरण सिंध सोक मै पेषे ।
निकट आइ रानी सौ कही क्यौं सुंदरि व्याकुल ह्वै गई ॥८०॥
कहि कहि कहा गयो निजु तेरो लषिये व्याकुल ताकौ फेरो ।
अंगुरी नष सों मही बिदारयो काको ध्यान हिये में धारयो ॥८१॥
सब सरीर की सुधि बिसराई रुंधित कंठ वह्यौ जाई ।
छूटे केस अलक मुष झूमै नागिनि सी आंनन पै घूमैं ॥८२॥
सो हम सों निज काह समझाओ क्यौं बन मांझ महा दुष पाओ ।
तुमतौ हौ तिय चतुर सयांनी नल से राजा की निजु रानी ॥८३॥

॥ दमयंती वा० ॥

सुनौ कंथ अब कह्या न जाई छुधा लगी तासौ न बसाई ।
दोनौं भाग उदर धरि लीनें षोटे कर्म जांनि में कीनें ॥८४॥

॥ दोहा ॥

तासों लज्जित हों भई नरवरीस सुनि लेहु ।
हमकों हिये बिचारि कें व्रास जानि कें देहु ॥८५॥

अंत---

ताको ध्यान धरौ तुम राई ऐसे महा परम सुखदाई ।
माघ चतुर्थी संकट हरनी जानि महीपति वेदनि बरनी ॥४१॥
वृन्न कौ तेज होइगौ तन मैं अर्जुन मिलें ग्राइकें बन मैं ।
राज हस्तनापुर कौ जितनौं व्रत परताप पाइहौ तितनौ ॥४२॥
गणपति कथा सुनै सत सोई ताकौ मन वांछित फल होई ।
वृत के दिन मन साधन करै क्रिया सहित निश्चें उर धरै ॥४३॥
ते जन सदां सदां सुष पावें निज गणपति के दास कहावें ।
हंसवृत की काव्य लषि भाई सेवाराम कहै समझाई ॥४४॥
जो जन गुण गणेस के गामैं भवसागर के दुःख नसामैं ।
तिनिकौ उतिम जांनो अंग जो गणपति के सुने प्रसंग ॥४५॥

॥ दोहा ॥

बेरी नगर सुहांमनौ श्रीपति कौ विश्राम ।
सेवाराम रहै जहाँ जपै गजानन नाम ॥ ४६ ॥

इति श्री गणेशषंडे श्री कृष्ण युद्धिष्ठिर संवादे कवि सेवाराम कृते नल दमयंती चरित्रे नांम पंचमोध्याय: ५ श्रीरस्तु कल्यानमस्तु ॥

विषय---इस ग्रंथ मे पाँच अध्याय है जिनमे नल दमयती चरित्र वर्णित है । अध्याय इस प्रकार है :---

प्रथम अध्याय	पत्र १--१०	छंद १२५
द्वितीय अध्याय	,, ११--२०	,, १३३
तृतीय अध्याय	,, २०--४४	,, २४९
चतुर्थ अध्याय	,, ४४--५३	,, १३४
पंचम अध्याय	,, ५३--५७	,, ३६

संख्या ४७०. रससागर, रचयिता---सैदपहार, कागज---देशी, पत्र---३१, आकार---१०११/१६ × ६१/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१६, परिमाण (अनुष्टुप्)---८९९, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १९१२ वि०, प्राप्तिस्थान---श्रीयुत गणेशधर दुबे, ग्राम--वीरपुर, पोस्ट--हंडिया, जिला--इलाहाबाद ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सैदपहार जैसी प्रति देषा तैसी लिखितं सैद अहमद सुत विरचिते ॥

अथ जसद रांगु सोधन विधि

॥ चौपाई ॥

थावर धातु कहौ सुधनी । जैसे कहिगे पहिले गुनी ।
हीरा को मथि काढै माह । फिरि औरे सात दिन माह ॥
वालक पूतनाह औटाये । सात दिवसलौ अग्नि छुरावै ॥
सोनो रूपो तामो लोहा । सोधेन भारी एक विधि होहा ॥

अंत—

अब सुनु देव दोष की वाता। कबहू सुष नही पावै गाता॥

इति श्री सेवपहार सैद ग्रहमद जा सुत विरचिते समाप्तः जैसी प्रति देषा तैसी लिखा मूल बहुत है ग्रंथ मे जिला फतेहपूर प्रगना हस्त ग्राम मौजे कासिमपूर ग्रस्थान कटरा पुस्तक लिखि बचुलाल बनिया जियालाल को वेटा कटरा के इति श्री माघ मासे सुक्ल पक्षे तिथि द्वितिया वार शनिश्चर संवत् १६१२ ॥

विषय—धातु मारने की विधियों का वर्णन।

संख्या ४७१क. शृंगार विलास, रचयिता—सोमनाथ (शशिनाथ), कागज—देशी, पत्र—२२, ग्राकार—८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६५ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥

उदय दिवाकर रग अग आभा वर धारिनि।
त्रिनयनि चंद लिलार ईश ग्ररधंग विहारिनि।
सिंघ बाहनी सिद्धि चारि भुज आयुध मंडिनि।
जुगिनि मंडल संग चंड दानवदल छंडिनि।
बहु बुद्धि वद्धि बरदाइनी मोहनि सुरनर मुनि मननि।
हूजै सहाइ "ससिनाथ" चो' जय जय सिंधुरमुष जननि॥ १॥

॥ दोहा ॥

सुमुष सिद्धिधर बुद्धिवर गुनमंदिर सुषदाइ।
सोमनाथ कों होउ अब सिंधुरवदन सहाइ॥
कबिनि बनाए ग्रंथ बहु रस के सहित हुलास।
छाया बांधि सु हों रचतु यह सिंगार विलास॥ ३॥

रस को मूल भाव पहिचानौ। ताको लछन यह उर आनौ॥
चित्त वृत्ति ही लों ठहराई। भाव वासना रूप बताई॥ ४॥

अंत—अथ मध्यमालछनं

हित ग्रनहित जोकरैं तिय पति की रीति समान।
ताहि मध्यमा नारि कहि बरनत सकल सुजान॥१८॥

॥ यथा ॥

बरसाने गात अंगरात उठि आए प्रात जोति मुष चंद की प्रगट पतरानी री।
बरि..

॥ अन्यच्च ॥

मान करिबे की तुम सीष सिषवति आनि कासों कहें मान कहि मौंन हैरी काको छौंन।
हों तौ ए चवाउ कछू जानति न एको तुम अपनी ढिठाई धरि राषो अपनेई भौंन।
सोमनाथ प्यारे सों वियोग ही की बात कहौ दीसति सयानी क्यों अयानी होति महा मौंन।
छिन बिना देखे हरि हरे सो रहत प्रान भौंहनि मरोरिकै घरी लों ऐंठि बैठें कौंन॥१६॥

इति श्री कवि सोमनाथ विरचिते सिंगार विलासे॥ संजोग सिंगारे मुग्धादि स्वाधीनपतिकादि नाइका वर्ननं नाम षष्ठमोल्लासः॥ ६॥ ६ त्रुटि

विषय—नायिका भेद वर्णन।

ग्रंथ में 'उल्लास' नाम से छह अध्याय हैं :—

१. प्रथमोल्लास—मंगलाचरण, ग्रंथ रचना का कारण, रस, भाव, अनुभाव आदि वर्णन—पत्र १ से ३ तक।

२. द्वितीयोल्लास–रस लक्षण, उनके रंग तथा स्वामी आदि का वर्णन–पत्र ३ से ३ तक।

३. तृतीयोल्लास—श्रृंगाररस वर्णन, उसके अंतर्गत नायिका तथा स्वकीया, परकीया और सामान्या आदि उसके भेदों का वर्णन। स्वकीया के भेदोपभेदों के लक्षण और उदाहरण—पत्र ३ से ६ तक।

४. चतुर्थोल्लास—परकीया तथा सामान्या के भेदोपभेद, लक्षण और उदाहरण—पत्र ६ से ११ तक।

५. पंचमोल्लास—अन्य संभोग दुःखिता, गर्विता और मानवती वर्णन—पत्र ११ से १२ तक।

६. षष्ठोल्लास—स्वाधीन पतिकादि दश नायिका (स्वाधीन पतिका, खंडिता, कलहंतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता, वासकसज्जा, अभिसारिका, प्रोषित पतिका, प्रवत्स्यत्पतिका और आगमिष्यत्पतिका)—वर्णन—१२ से २२ तक।

संख्या ४७१ख. प्रेम पच्चीसी, रचयिता—सोमनाथ "ससिनाथ", कागज—देशी, पत्र—२, आकार—७$\frac{3}{4}$ × १०$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—॥ श्री राम जी ॥

॥ दोहा ॥

मंगलमूरती वीघन हर सुंदर त्रिभूवन पाल।
षेवट प्रेम समुद के जय जय श्री नंदलाल॥ १॥
क्या किति तकसीर तुसांडी नही मुषउ दिषलावे है।
राति दिहां विनु तडी चरचा मुझनु और न भावै है॥
बेदरदी महबुब गीर दे क्यों जरदगी करवा है।
"सोमनाथ" नेही सै कैसा दील अंदरदा परदा है॥ २॥
वे तुझ सै महबूव गोवीदे नैनो साढे उरझे है।
कोन सकै सुरझाय इन्होनु और सै नही सुरझै है॥
बेंदरदी पै है चाव दरदनु भला दीया तै अरदा है।
"सोमनाथ" नेही सै कैसा दील अंदरदा परदा है॥ ३॥

अंत—तीरों से तिषी नैनौनु क्या यह ख्याल सीषाया है।
नही मान दे आन हठीले मैडा चीत चुराया है॥
तुसी दरस के फदा मैनु नाही अमल उतरदा है।
"सोमनाथ" नेही सै कैसा दील अंदरदा परदा है॥
काम नही यह सवदा कोइ लि निरवाहै टाडा है।
साहिब दे दरसन दा दरसन नही हो दा घाटा है॥
कहि "ससिनाथ" सुनो बेंदाए नहचै विलदा साटा है।
नही किसीदा आठा तौभी इसक सेहूदा काटा है॥२६॥
जे षासे महबुब तीन्होंदी गतीयो कदी न सराइ है।
कहै "ससनाथ" मनोघी आवै देवै सहित उछाइ है।

करवै अदा सदा ही अपना दरद प्रकाम नाही है ।
बाहर वे परवाही दील में दीलवर सें गलवाही है ।।२७।।

।। दोहा ।।

पच्चीसा यह प्रेम को सुन सुष पाव मीत्र ।
"सोमनाथ" कवनै रचो नंद कसोर नीमत्त ।।२८।।

इति श्री प्रेम पचीसा संपूर्णः ।। लीषतं लाला सीरदार सी लीषतं बौनाया घीस नै अंबेढ कै................

विषय—श्रीकृष्ण-भक्ति-वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल, कृत अन्य ग्रंथ कुलपति मिश्र कृत 'दुर्गा भक्ति चंद्रिका' के आधार पर संवत् १८४२ है। प्रस्तुत ग्रंथ एक बड़े आकार के हस्तलेख मे है, जिसमें रामचंद्रिका—केशव कृत, विक्रम विलास—गणेश मिश्र कृत, दुर्गाभक्ति चंद्रिका—कुलपति मिश्र कृत है।

संख्या ४७२. रामअक्षरी, रचयिता—स्यामीदास, पत्र—३, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कु० हाकिम सिंह, ग्राम—खजुराहा, तहसील—रामनगर, राज्य—छतरपुर।

आदि—श्री गणेशायन्मः अथ लिष्यते राम अक्षरी ।

।। दोहा ।।

चरन गहौं गननाथ के विनय करौं कर जोर ।
मोसे ते अनाथ कै तुक अछिर देव जोर ।।
श्री श्रीपत तुमरौ तुम्हैं सुमरौ गुरु गनेस ।
राम अछरी उच्चरौं पूजों देव महेस ।।

मध्य—काम परैं बीतैं तवै तव मन में पछताइ ।।
येये येक औंर सुनियत सवेरे रघुपति चरत अपार ।
कलप कलप की है कथा राम नाम निजसार ।।

अंत—................कौ सेना पत रघुवीर ।
हनुमत गये पताल कौ वे ल्याये दोई वीर ।।
....
....
राम अक्षरी इज कही हर भगता स्यामीदास ।
चित्त सुनें इक मुष्य की कष्ट न व्यापत तास ।।

इति श्री राम अक्षरी समाप्त सुभस्तुः मंगल ददात ३५ ।।

विषय—स्वर व्यंजन के क्रमशः प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर रामचरितमानस की संक्षिप्त कथा का वर्णन किया गया है।

संख्या ४७३. राग सकीर्ण रागमाला, रचयिता—स्वामी कार्त्तिक, कागज—देही, पत्र—५३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् पं० लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, मैनेजर, अमेठी राज्य, सुलतानपुर (अवध)।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

धुनि विसेष सुर वरण सों होइ विभूषित देह ।
जनमन को मोहित करै वहै राग रस गेह ॥ १ ॥

॥ कुलपपा छंद ॥

रागांग भाख्यं गती जे कृपांग इनको कहो रूप चौथो उपांग ॥ २ ॥

॥ तस्य लक्षण दोहा ॥

रागछांह को अनुसरं सो कहियत रागांग ।
चित को चोरै सुनत ही है अनंग को आंग ॥ ३ ॥
करुणा औ अत्साह पुनि तातें उपजत आय ।
तासों कहत कृपांग पुनि सब कवि कोविद राय ॥ ४ ॥
कछुवो छाया अनुसरै ताहि उपांग विचारि ।
कहत सबै कांडारणा सो जिय मैं अवधारि ॥ ५ ॥

:o: :o: :o:

॥ राग संख्या दोहा ॥

बीस राग जे मुख्य है तिन गनि ताहू आंनि ॥
पहिले श्री रागहि कहू दूजे नए को मानि ॥१२॥

अंत—— ॥ राग सावंत दोहा ॥

नट केदारो कान्हरो कामोदिनि सुरश्याम ॥
अंस न्यास ग्रह ये सबै उपजै सावंत नाम ॥६१॥

॥ अथ ॥ सोमेस्वर हनुमत भरत इति त्रिविमतं सावंत नाम इति श्री स्वामी कार्तिक विरचितायां राग सकीर्णरागमाला सपूर्णम् शुभ सवत् १६२० राम राम राम ॥

विषय——रागरागिनियों के भेद और उनके उदाहरणों का वर्णन । बंगाली, भूपाली आदि प्रांत विशेष की रागिनियों का भी वर्णन किया गया है ।

संख्या ४७४. पारासरी भाषा (उडदायप्रदीप), रचयिता——हनुमत कवि, कागज——देशी, पत्र——७, आकार——४$\frac{3}{4}$ × ८$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१६, परिमाण (अनुष्टुप्)——६८, पूर्ण, रूप——नया, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——१६३५ वि०, लिपिकाल——संभवतः १६३५ वि०, प्राप्तिस्थान——आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पारासरी भाषा लीख्यते दोहा बंध ॥

॥ दोहा ॥

गुरु गणेश गौरी गिरा गोवर्द्धन गोपाल ॥
सुमर सुकवि हनुमंत पद संकर दीनदयाल ॥ १ ॥
उपनीसद सिद्धांत मैं प्रतिपालक हृद सुद्धि ॥
अधर अरुण वीणा धरै सुमिरूँ दायनि वृद्धि ॥ २ ॥
प्रथम प्रहन कौ कीजियं कारक मारक ज्ञान ॥
कहत सुकवि हनुमंत है पारासरी प्रमाण ॥ ३ ॥
ताको आश्रय लेय के रच्यो ग्रंथ उडदाय ॥
ताकू भाखा मैं कहै कवि हनुमंत बनाय ॥ ४ ॥

तासु जोतसी कविन कूं हर्ष होय मन मांय ॥
कहत सुकवि हनुमंत हृय मोत परिश्रम नाय ॥ ५ ॥
दसा जन्म नक्षत्र तें फल कहवें की रीत ॥
यासु ग्रंथ में कहत है जान लेहु करि प्रीत ॥ ६ ॥
भावन को जु विचार फल ग्रवर सास्त्र तें जान ॥
कहि विसेस संजा सुनो याके मत परवान ॥ ७ ॥

मध्य—जो त्रकोण के नाथ ते दसम भवन को ईस ॥
करकहीं संबंध तो जान जोग ग्रवनीस ॥३८॥
दसम नवम के नाथ में ग्रसंबंध शुभ जेऊ ॥
तिनके ग्रंतर मै करें राज योग कछु तेऊ ॥३९॥
कारक तें संबंध युत पापी ग्रह हू कोय ॥
तामें कारक की दशा सोहू कारक होय ॥४०॥

ग्रंत—ग्रंथ कठन ग्रक्षर ग्ररथ कठन ग्रनेक प्रकार ॥
कहत सुकवि हनुमंत सो लहत कवन विधि पार ॥८२॥
यह विचार कविराज मो क्षमा करो ग्रपराध ॥
परमारथ पथ जानके करहिं प्रसंसा साध ॥८३॥
इती श्री पारासरी मत उड़दाय समग्र ॥
वरना कवि हनुमंत नैं विप्र निवासी नग्र ॥८५॥
संवत सतखर नाम है गुन्नीसें पेंतीस ॥
फागुण सुक्ला तीज रवि वासर कवि को ईस ॥८६॥

इति श्री पारासरी ग्रंथ संपूर्ण ॥

विषय—यह सस्कृत के पारासरी (फलित ज्योतिष) का भाषानुवाद है। इसमें ग्रहदशा ग्रादि का विचार किया गया है।

संख्या ४७५. सनेह लीलामृत पच्चीसी (लावनी), रचयिता—हनमहंत कवि ग्रौर रामनारायण (रामगुसाई, गुसाई राम ग्रौर द्विज राम गुसाई), निवासस्थान—रामनारायण का राधाकुंड (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१५, ग्राकार—१० × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—३१९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ग्रार्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

ग्रादि—ग्रथ सनेह लीलामृत प्रेम पच्चीसी लिख्यते ॥ श्री राम जी ॥
॥ लामनी चाल सूधी ठड्डी रंगत ॥

पद सुमर सारदा शेष महेस मनाऊं। गणनायक भव भय हरण सरण चित लाऊं ॥
श्री गुरु चरण कमल मकरंद सकल ग्रघहारी। है मंजुल मंगल मूल पाप षग तारी ॥
नष मन गण जोति विचित्र विविध हितकारी। उर धरत ध्यान हुय ज्ञान कामना सारी ॥
ताई रज को विसवास धारना ध्याऊं। गण नायक ॥
रिषि नारदादि सुकदेव व्यास सनकादी। कस्यप दुर्वासा गर्ग मरीच ग्रनादी ॥
कवि वालमीक जे ग्रपर ब्रह्म मगवादी। है वर्तमान हो गये होय जे जादी ॥

मध्य—
भनत सुकवि "हनुमंत" सभासद भे प्रसन्न पूरण सुष तें।
राम गुसांई कहैं यह कथा सुनत छूटें दुष तें ॥
भव समुद्र हुय पार विना श्रम यह चरित्र जिननें रागौ।
वृज वनतन को प्रेम वर जान ज्ञान पीको लागो ॥३१॥

बृज बासिन हो सचेत बृजनाथ सखा तें या प्रकार हित बात कई ।
क्रम क्रम मैं गोपिका तासु सिखई देत भई ॥

विषय---उद्धव और गोपियों का संवाद वर्णित है ।

संख्या ४७६क. शिखनख, रचयिता---हनुमान, कागज---देशी, पत्र---१०, आकार---१०¾ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२०, परिमाण (अनुष्टुप्)---२१२, अपूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), नागरीप्रचारियेणी सभा, काशी ।

आदि---अथ कपोल गाड वरणन

॥ कवित्त ॥

लाल दृग मृगन फंसाइबे की ओवी कैधों मान ताल जुगवीर क्रांति मारतंड की ।
हनूमान रति के अजर आलवाल कैधो हेरि हेरि मोहै मति कुसुम कोदंड की ।
नाह मन चंचल अचल करिबे के ऐन दीठि गडी वाला तै शिरोमणि वृह्मंड की ।
मंद मुसक्यात तो लजात प्रात वारिजात शोभा कही जात ना कपोल गोल गंड की ॥ २ ॥

मध्य---अथ बिभौ वरणन कविस

कर जोरे किन्नरी तिलोतमा तबोल लीन्हे और चतुराननी करत छवि छाकी है ।
छैत्र लै नछत्र पतिनींहू नचै रंभा ठाढी मकर पताकी वारी कलपलता की हैं ।
जमलाना राधिका सी कमला है "हनूमान" कौन कहै रसना फनेश हू की थाकी हैं ।
तलातल वितल रसातल महातल की अतल सुतल कीलं पगतल ताकी हैं ॥७१॥

इति हनुमान प्रेम भावे शोभा अंगी अंगराग भूषन वसन कुल बिभौ आदि अष्टांग कृष्ण-प्रिया के मति अनुरूप शिख नख सम्पूरणम् शुभं भूयात् ॥

विषय---राधा जी के शिख नख का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रंथ अपूर्ण है । आरंभ के २३ छद नही है । रचनाकाल और लिपि-काल अज्ञात हैं । ग्रंथ निम्नलिखित कुछ अन्य ग्रंथो के साथ एक हस्तलेख मे है ।

१. शिखनख---हनुमान कृत
२. द्रौपदी अष्टक---हनुमान कृत
३. प्रेम रत्नाकर---देवीदास कृत
४. राजनीति---देवीदास कृत ।

संख्या ४७६ख. द्रोपदी अष्टक, रचयिता---हनुमान, कागज---देशी, पत्र---२, आकार---१०¾ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२०, परिमाण (अनुष्टुप्)---४२, पूर्ण, रूप---पुराना, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ॥ अथ द्रोपदी अष्टक लिख्यते ॥

॥ कवित ॥

मन क्रम वचन कै टेरयो नाथ पंडुवधू अंधसुत लेत लाज भूषन असन की ।
हनूमान ततछन धाइ कै सहाइ कीन्हीं कसि कसि मोटैं लीन्ही सांवरे जसन की ।
भीषम करन द्रोन आदि सभा चकित है चितामन आनि मानि आंगुरी दसन की ।
उतरी उतारे नांहि उतरी दुशासन के पूतरी द्रुपद भई पूतरी बसन की ॥१॥
नगर सुसासन करन कह्यो द्रोपदी को दीन ह्वै पुकारी श्याम सुंदर बिहारी को ।
सारी सारे बिश्व की समानी ताकी सारी मांझ हारो खल खैंचत लजायो सभा सारी को ।

हनूमान सुर सुरपति श्रुति गावो यश धिक छायो अंधसुत बलिहारी को ।
तारी को लगैया त्रिपुरारी ताको ताको तव तारी को दिवैया कौन पंच भरतारी को ॥२॥

मध्य--

द्रव द्रोन त्यागी तौ का कृपा कृष्ण हनूमान वधिरइ करन रनधीर भो ।
सर भरता की तन दीठि भरता की तनु बोलत न जाको तीखे उत समीर भो ।
अबला हौं जानि खैंचि कच ल्यायो सभा मांझ दुसासन चाहे कहा नगन सरीर भो ।
चीर को हरन हार बलवीर राषिहै तौ चीर को हरनहार कौन बलभीर को ॥८॥

द्रौपदी अष्टक संपूर्ण ॥

विषय--द्रौपदी चीरहरण का वर्णन ।

संख्या ४७७. विहारी सतसई (टीका), रचयिता--हरजू (जौनपुर), कागज--देशी, पत्र--८, आकार--१० × ८ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)--८३, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--संवत् १९०३ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--सिंगार ॥ अपने कर मोतिन गुह्यौ भयो हरा हर हार ॥२२॥
सुरंग महावर सौति पग निरषि रही अनषाइ ।
पिय अंगुरिन लाली लषे षरी उठी लगि लाइ ॥२३॥

॥ स्वकीया स्वाधीन पतिका ॥

रही गुही वेनी लषे गुहिबे को त्यौनार ।
लागे नीर चुचान जे नीथि सुषाए बार ॥२४॥

॥ स्वकीया प्रोषित पतिका ॥

रह्यौ ऐंचि अंत न लह्यो अवधि दुसासन वीर ।
आली वाढत विरह ज्यौं पंचाली को चीर ॥२७॥
हिय औरै सी ह्वै गई सुनत अवधि को नाम ।
दूजे कै डारी षरी बौरी बौरे आम ॥२८॥

॥ परकीया प्रोषित पतिका ॥

छतो नेह कागर हिये भई लषाइ न टाँक ।
विरह तचे उघरयौ सु अब सेहुड केसो आँक ॥२९॥

अंत--प्रतिबिंबित जैसाहि दुति दीपति दर्पन धाम ।
सब जग जीतन कों कियो काय वूह मनो काम ॥७१२॥
घर घर तुरुकुनि हिंदुनी देत असीस सराहि ।
पतिनु राषि चादरि चुरी तै राषी जैसाहि ॥७१३॥
सामा सैन समाज की सवै साहि के साथ ।
वाहु वली जैसाहि जू फते तिहारे हाथ ॥७१३॥
हुकुम पाइ जैसाहि को हरि राधिका प्रसाद ।
करी विहारी सतसया भरी अनेक सवाद ॥७१५॥
जद्यपि है सोभा धनी मुकुताहाल मैं देषि ।
गुहे ठौर सी ठौर तें लरि मै होत विसेषि ॥७१६॥
धरो अनुक्रम ग्रंथ को नायकादि अनुसार ।
सहर जौनपुर मैं वसत "हरजू सुकवि" विचार ॥७१७॥

तरजन बुधन ठठि हैं तजि फल फूल सुबास ।
ज्यौं सूकर रसनीय वन चहत मलान कुवास ॥७१८॥

॥ दोहा ॥

सकल वितिक्रमै होइ अर्थ प्रति गौर ।
राम दत्त के हुकुम सौं करौं सरल सब ठौर ॥७१९॥

संवत् १९४३....................... ।

:o: :o: :o:

विषय—विहारी सतसई की टीका ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण और खंडित है । समस्त चार पन्ने उपलब्ध हैं । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सं० २९४३ वि० है ।

संख्या ४७८. भगवत गीता (अनुवाद), रचयिता—हरदेव गिरि, निवासस्थान—दलीपपुर, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{7}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०१ वि०, लिपिकाल—सं० १९०१ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

॥ सोरठा ॥

पांडु पुत्र की सयन देष अचारज भीर अति ।
रची चमू जजयन द्रुपद पुत्र तब सिष्य प्रति ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

पांडव सयन वीर अति भारी । वड़े धनुर्धर वान सें वारी ॥
अरजुन भीम तुल्य वलवाना । समर भयंकर काल समाना ॥
सब कर नाम सुनो रिषिराई । दूनौ दल की अति रुचिराई ॥
युयुधानादिक जेते वीरा । द्रुपट विराट महारथि धीरा ॥
धृष्टकेतु चेकितानिक वीरा । काशीराज परम वर वीरा ॥
पुरुजित कुंत भोज सुनु भाई । शैब्य राज नरपुंग वताई ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

युधामन्यु विक्रांत सो उत्तमोज वलवीर ।
द्रुपदि सुभद्रा तनय जे महारथी वलवीर ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

मम सयना के वीर ताहि जानु द्विजवर प्रवल ।
मम सयनापति धीर ज्ञान अर्थ ताको प्रवल ।

अंत— ॥ दोहा ॥

मम सयनापति धीर ज्ञान अर्थ ताको प्रवल ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

हरि हर गुरु चर अचर जे वंदि चरन सिर नाइ ।
भव दुस्तर हरदेव गिरि तेर कृष्ण मन लाइ ॥

राधाकृष्ण सरोज रज मन मल धोइ बहोरि ।
शास्त्र रचन का बुद्धि मोहि नाथ देहु चित चोरि ।।
पुरबलीप मह वास करि पंक्ति विश्वेश्वर गेह ।
कृष्ण गीत भाषा रची "गिरि हरदेव" करि नेह ।।

इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग सास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे हरदेव गिरि परम हंस कृत गीतार्थ भाषा मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टादशोध्यायः ।।१८।।

।। दोहा ।।

चंद्र नभ नव ब्रह्म मिलि वर्ष मास वैशाष ।
कृष्ण पक्ष एकादशी कृष्ण गीत रचि शाष ।।

।। दोहा ।।

श्री हनुमंत नृपति रच्यो सुरसरि तट पर ग्राम ।
टीका कियो हरदेव गिरि लिषा दास विश्राम ।।

सीताराम सीताराम....................

विषय—गीता का हिंदी मे पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

१ ० ९ १
चंद्र नभ नव ब्रह्म मिलि वर्ष मास वैशाष ।
कृष्ण पक्ष एकादशी कृष्ण गीत रचि शाष ।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । दो से लेकर सात संख्या तक के और पैसठ एवं सरसठ संख्या के कुल आठ पत्रे उपलब्ध है । प्रस्तुत प्रति मूल प्रति जान पड़ती है । रचनाकाल और लिपिकाल दोनों संवत् १९०१ वि० है ।

संख्या ४७९. देवी विलास (दुर्गा संवाद), रचयिता—हरि आनंद, निवासस्थान—डिबाई, कागज—देशी, पत्र—४९, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन ,पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४९ वि०, लिपिकाल—स० १८६२ तथा १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।।

गनपति गवरिपुत्र दुख मोचन ।।
एक रदन गजबदन सुलोचन ।।
विघन विनासन मंगल दाइक ।।
लंबोदर विघनेस विनाइक ।।
असरण सरण हरण दुष दारिद ।।
ज्ञान वृष्टि कारन जिमि बारिद ।।
हरि आनंद की देषि दीनता ।।
गिरिजा सुत करि गिरा पीनता ।।

।। सवैया ।।

तू तिनुका ते बनावत वज्र सौ वज्र लै फेरि करै तू न छोटो ।।
लोह कौ पारस सौ करि देत तू पारस लोह हू तो अति षोटो ।।

सीकर में सत सिंधु विषावं चहै कर सिंधु में सीकर टोटौ ।।
तेरौ करी जग है जगदंबिके जो अनु सौ श्री सुमेरु सौ मोटौ ।।

मध्य— ।। भुजंग प्रयात ।।

नमस्ते महादेवि हे देवि माये, शिवे सारदं ते नमः सिंभु जाये ।।
प्रकृत्ये नमो भद्ररूपे नमस्ते, महारुद्र रूपे नमस्ते नमस्ते ।।
नमो गोरि ब्रह्माणि नित्ये दुरूपे, नमश्चंद्रिके चंडिके यज्ञरूपे ।।
सुखायै नमस्तेस्तु कल्यान देहे, नमः सिद्धिदे बृद्धिदे भक्तिगेहे ।।
नमो भूधराणां प्रभायै निरूत्यै, नमः सर्वजायै नमस्तेस्तु क्षित्यै ।।
नमस्तेस्तु दुर्गे नमो दुर्गपारे, नमः कारणे कार्य्यरूपे सुसारे ।।
नम ख्याति मूर्त्यै तथा कालिकायै, नमो धूम्रकायै जगज्जालिकायै ।।
नमस्तेति सौम्याति रुद्रादि मूर्त्यै, नमस्ते जगत्तुष्टि कल्यानमूर्त्यै ।।

श्रंत— ।। कवित्त ।।

पीकदान नाकी श्री पिनाकी गहै पानदान चरचा पुरान की विरंच करिबो करै ।।
चौरो चार वाहु प सुगंध गहै गंधवाहु जल श्राछी विधि सों जलेस भरिबो करै ।
ससि गहे छत्र कों दिनेश दिति मुधा राषं इतना मघ्रंकच डरिबो करै ।।
श्रंबिका के द्वार पै कुवेर कौ यही है काम जाम जाम दीनन के दुख हरिबो करै ।।

इति श्री देवी विलासे कवि हरि श्रानद कृते सुरथ वंश्ययोर्वर प्रदानं त्रयोदशोध्याय समाप्तोय ग्रथः ।।

२ ६ ८ १
सवत दृग रस वसु ससी मधु तम पाष सुवार ।
कुज हरि श्रानद सुकर यह लिप्यो ग्रंथ करि प्यार ।।

श्रीमान भोपति राउती कौ पठनार्थः ।। इति श्री दुर्गा संवादे संपूरण समाप्तः लिष्यतं भवानी दास कायस्थ कलि श्रिष्ट सादावाद शुभ स्थान १८७७ मिती श्रासोज सुदी पचम्यां ।।५।। गुरवासरे श्री बलदेव जी में पूरण भई ।। श्री बलदेव जी सदा सहाय ।।

विषय—विभिन्न वृत्तों मे जगदबिका का यश वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे कुल ६३ पत्रे है । परतु बीच मे ४६ से लेकर ५६ संख्या तक के पत्रे श्रनुपलब्ध है ।

संख्या ४८०. रस महोदधि, रचयिता—हरिकृष्ण दास या कृष्णदास, कागज—देशी, पत्र—१०६, श्राकार—१२½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (श्रनुष्टुप्)—३७८६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०७ वि०, लिपिकाल—सं० १६४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रार्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

श्रादि—श्री गोपीवल्लभाय नमः श्रीमद्गिरिधरो जयति ।।

।। श्रथ मंगलाचरन ।।

श्री श्री श्री गिरिवर धरन ताहि करो परनाम ।
जे श्री वल्लभ मुकुट मनि जपों निरंतर नाम ।।
श्री माखन प्रिय लाडिले श्री विट्ठल के धाम ।
मथुरापति राजे सदा श्री गिरिधर गुण ग्राम ।।

श्री विट्ठल भुज कटि धरे श्री गोविंद अगार ।
द्वारकेश भुज चार युत बाल कृष्ण अवतार ।।
गोकुलपति राजहीं गिरिवर नख पर धार ।
बल्लभ गोकुल नाथ जू सेवक जन सुखसार ।।
:o: :o: :o:
मोहि सपन मह अस कह्यो श्री मद्गिरिधर लाल ।
मम चरित्र तू लिखि सबै रचि इक ग्रंथ विशाल ।।११।।
विनती करिकै कहेउ अस मैं का जानों नाथ ।
मुख उगार मम मुख दियो मो कहँ कियो सनाथ ।।१२।।
मध्य---श्रीमत गिरिधर लाल जस इहि विधि पूरन हेत ।
जिमि पिपीलका सिंधु में पार भई बिन सेत ।।
माला मनि कालीलया पाछलि भनित सुमेर ।
मंत्र श्री गिरिधर नाम कहि कलिवुष सकल निवेर ।।
जुगल जुगल अरु वेद गुण सब मिलि ग्रंथ प्रमान ।
कहुं हमार कहुँ लिखक की चूक न गर्नाहिं सुजान ।।
:o: :o: :o:
अंत---मम ऐगुना चित धरत श्री गुरु कान विचार ।
पढ़ब गुनब चित लायकै पावन जस विस्तार ।।२१७।।

इति श्रीमद् गिरिधर लालस्य लीला रस महोदधे हरिकृष्ण दास विरचिते सप्तम तरंग समाप्त ।। सुभमस्तु ।। सिद्धरस्तु ।।

।। दोहा ।।

७ ० ९ १
सिंधु व्योम ग्रह इंदु कहि संवत यह निरधार ।
मास असाढ़ सु जानिये ग्रीषम रितु रविवार ।।

।। सोरठा ।।

अति नवीन यह ग्रंथ पढ़त सुगम समुझत कठिन ।
श्री बल्लभ कुल पंथ देखरायो इहि महँ प्रगट ।। २ ।।
श्री मद् गिरिधर जू चरित बरन्यौ कवि कृष्ण दास ।
लिख्यो गोविंद प्रसाद करि गुरु पद पदुम की आस ।।
:o: :o: :o:
ते समे वाला जी नाम नमाह रष थायो वीन पार ।
हरी कृष्ण कीम कहि सके जे ब्रह्मानंद अपार ।। ७ ।।

इति श्रीमत् गीरधराख्यान संपूर्णं ।। शुभम् । शुभमस्तु ।। कल्यणमस्तु ।। हस्ताक्ष नारायण बल्लाल वैद्य लेखक विजे दुर्ग का ।। मिति कार्तिक शुद्ध १रवीवार शके १८०६ तार नाम संवत्सरे संवत् १९४१ ।।

विषय---वल्लभ कुल के गुसांई श्री गिरिधर लाल जी का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

७ ० ९ १
सिंधु व्योम ग्रह इंदु कहि संवत् यह निरधार ।
मास असाढ सु जानिये ग्रीषम रितु रविवार ।।

संख्या ४८१. फागु, रचयिता---द्विज हरिचरन, कागज---देशी, पत्र---१, आकार---१२$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---११, परिमाण (अनुष्टुप्)---११, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि--

पिश्रा दूरि देश मति जाहु बसन्त नियरानेव रे हो ।
खेलति रहीउँ संग लरिकन के शब्द पेर मोरे काने हो ।
पैंश्रा मैं परि पिश्रा के मनावों हो पिश्रा छाड़ि चले परदेश।।बशन्त ।। १ ।।
लब तब प्रीति कीह लरिकंश्रा अब कश चले विदेशो हो ।
फाटीय चोलिश्रा जोबन भव भारी हो पिश्रा यह दुष केशे कहो हो ।।बसन्त।। २ ।।
झमकि झूलनी झरत जरकसी पथजनीश्रा झहराइ हो ।
तकिश्रा तिनि तरफ मखमल कर जहु अतर डली रस बोरि ।।बसन्त।। ३ ।।
उठौ न कागा जाउ उहि देशवा पिश्रा धर्वरि लै आवो हो ।
द्विज हरि चरन शरन शतगुरु के हो मेरो कन्त दुरंत छाए ।।बसन्त।। ४ ।।

।। फागु दुशर ।।

गज कामिनि सेज सवांरि पिश्रा पवढ़ा इव रे हो ।
पिश्रा पलङ्ग पर मलत पयोधर हसि हसि ताहि छोड़ाइ हो ।
लसत लजात पिश्रा संग बिहसत द्वौ नदनो के बान चलाए ।। १ ।।
चीर चौकसि चमकि हिया पर शुचि मसनम लगाइ हो ।
अलबेली अलसात मदन वसि जहा हसि हसि ताहि छोड़ाइ ।।पि।। २ ।।
सुहासारी छुम घाघरा तापर झालरि छाए हो ।
कोण करत द्वौ रङ्ग महल मे हो छवि छके कुरण मुरारे ।।पि।। ३ ।।
निपट नदान वरद न हरि के बसन ओढांए हो ।
द्विज हरिचरन शरन शतगुर के हो । हं जागि के रैन गवाए ।।पि।। ४ ।।
दगा दै के पिश्रा आधिराति विदेश रि धारी वरे हो ।।

--पूर्ण प्रतिलिपि

विषय---वियोग शृंगार विषयक रचना ।

विशेष ज्ञातव्य---भजनो की सख्या दो है और दोनों की नकल कर दी गई है ।.रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या ४८२. व्रजलीला, रचयिता---हरिदास, कागज---देशी, पत्र---८, आकार---७$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१८, परिमाण (अनुष्टुप्)---१४४, पूर्ण, रूप---जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि--

श्री हरी गुर की अग्या पाऊं ।। कुछ कं हहह गोकुल के गाऊं ।।
नंद मंहैरि नंदीसुर राजा ।। जिनके वाजत नाम के वाजा ।।
व्रज मैं धन्य जसोमति रानी ।। सुमिरत वेद पुरान वषांनी ।।
जिनकै आगै त्रभुवन नाथा ।। माषन लीश्रं खेलै साथा ।।
वैकुंठ म बैठकु राय सभरे ।। व्रज वासीन के संग फिरै ।।
चरि परि गाय पसर चरि आमै ।। आन गाम तौ राम सुनामै ।।
बाबा नंद षिरक कुं आमै ।। अब गोपाल पीछे ते धामै ।।

कमल नैन कनीया करि लीयो ।। लाय मैं हैरि गोपन मैं दीयौ ।।
कट चादरि सीस दुमालैं धरी ।। दोऊ कमन अंती परी ।।
धोवैं सोना राजैं घनी ।। सब मुषतन की सोभा बनी ।।

मध्य--

जाहा ते चली वैहै टोकौं घाट ।। नंदगाम की गैहै लई बाट ।।
आडी है सब नागरि आई ।। ये तौ मैया फेरि बुहाई ।।
लटकन गाय बनी लटकौरी ।। धौरी धुमर राति मलारी ।।
रतनारी पानी पीमैं ।। मीछो लेफ लगाय ।।
गाय गाय के घुंगुरा । चलति वजाय वजाय ।।
मरे गळवळी ईकठी भई ।। नरी सैनरी करहुला छई ।।
दरवाजे दोऊ वने ।। गच गिरी के ताल ।।
कुंजन की शोभा घनी ।। देसो मैं है रग काल ।।

अंत--

गाठोली और और वह जपै ।। गिती गिनी न जाय ।।
कपारा घुवाये पुकरी ।। मनहु कनिल फैन ।।
सब व्रजवासी रोकत भये ।। चलौ गिर गोवर्धन की परिकमदैन ।।
व्रज लीला सुनै सीषै ओर गावैं ।। तनकौ पाप रहन नहि पावैं ।।
भक्ति मुक्ति की केतिक आसा ।। सदा रहै हरि तिनके पासा ।।
हरि जी कुंड वड़ी ठकुराई ।। हरिदास ने लीला गाई ।।
हरि जी कुंड वड़ी ठकुराई ।। हरिदास ने लीला गाई ।।

।। दोहा ।।

गाम गाम बिरक बनाय ।। गैईया दीनी बरि ।।
हरीदास की सुनो वीनती ।। राधा वर की गैया लेउ सम्भारि ।।

इती श्री व्रजलीला संपुरणम् सुभमस्तु ।।

विषय--श्रीकृष्ण की व्रज लीलाओं का वर्णन ।

संख्या ४८३क. गोवर्द्धन लीला, रचयिता--हरिदास (हरिराय जी), कागज--, देशी, पत्र--१, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१७०, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--गुजराती, रचनाकाल--सं० १७४७ के पूर्व, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ३६. पु० सं० १७ ।

आदि--श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। श्री द्वारकाधीशाय नमः ।। अथ श्री गोवरधन लीला ।।

।। राग गोरी ।।

सीखवत मोहन नंद कों तुम पूजो श्री गिरिराज हो ।।टेक।।
गोप सबें दीस दाहीनें हो वाम दिश ही व्रज नारी ।।
कोन भांती ठाढे भये सो वरनत बचन उचारी ।। १ ।।हो सीखवत० ।।

मध्य--

स्वेत घेवरन के डला हो ल्यावत करी करी हेत ।।
खन मंडन के डलन की हो पंकती अति सुख देत हो ।।६०।।
उपनंदादिक की घरनी हो सुंदर कीनी पांती ।।
सुठी कपुर नारीन की हो जीनमें लौंग सुहाती ।।६१।।

ता आगें अंबर लाल की हो डला पांती छबी देत ।।
ता ढीग पपची पांती की हो कांती हरें मन लेत ।।६२।।

अंत—

तब प्रसन्न हरी हाइकें इंद्र पठायो ग्रेह ।।
जसुमति धांय उछंग लीयें भुज चांपती करी नेह ।।१३३।।
गोपी यह छबी देखी कें हो प्रेम जु उमग्यो अंग ।।
पुलकीत गदगद होइ कें आलींगत सब अंग ।।१३४।।
गोवरधन लीला सरस हो कहां लगी कहुं बनाई ।।
श्री बल्लभ चरन प्रताप तें मति अनुसार ही गाई ।।१३५।।
श्री बल्लभ कृपा करी हो श्री विट्ठल नीज नाथ ।।
हरी दास कृपाकरी कें राखे चरनन साथ हो ।।१३६।। पूर्ण ।।

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

संख्या ४८३ख. श्री गुसांई जी विट्ठल नाथ जी की वनयात्रा (सं० १६३४ की), रचयिता—हरिदास (हरिराय), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—५ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ३२, पु० सं० १४ ।

आदि—।। श्री मथुरेशो जयति ।।

।। दोहा ।।

श्रीमद् बल्लभ राय के विट्ठल नाथ सुनंद ।।
वन यात्रा कीनी सु इन सुनत मिटे दुख द्वंद ।। १ ।।
श्री बल्लभ सु प्रताप तें होय संपूरन एह ।।
वन यात्रा विट्ठलेश की गाऊं हिये धरि नेह ।। २ ।।

।। राग सोरठि ।।

सोरहसें चोंतीसें संवत जब ।। भादो वदि द्वादसि दिन हो तब ।।
शयनार्त्तो श्री गोकुल तें कीनी ।। विजय कीयो मथुरा सुधि लीनी ।।

।। ढाल ।।

मध्य—राग रायसो ।।

भादों सुदि व्रितीया दिना सुन्हेरा देखे आय ।।
टेर दीए हे श्री जी जहां तहां ह्वे अटोर सुहाय ।। १ ।।
स्नान किये देह कुंड में निरखे श्री बलदेव ।।
राजत हें जहां रेवती सुरनर करें जाकी सेव ।। २ ।।

अंत—

भादों सुदि अष्टमी बधाए । प्रात श्री गोकुल प्रभु आए ।। ८ ।।
बन उपवन भए चोबीस । ईहि विधि कीने व्रजईस ।। ६ ।।
हरीदास सोभा जब देखे । तब जन्म सुफल करि लेखे ।।१०।।

ईति श्री विट्ठल नाथ जी श्री गुसाईं जी या रीति सूं वन यात्रा कीये सो संपूर्ण ।। सुदामापुर मध्ये काहान्ह कुब्ज ज्ञातीय विप्र भट काला सुत प्रेम जीण लीख्यंते श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु शुभं भवतु ।। जे कोय वांचे तेने अवांरो दंडवत वे ।।

विषय—श्री गुसांई विट्ठल नाथ जी ने सं० १६३४ में व्रज चौरासी कोस की जो वनयात्रा की उसका वर्णन।

संख्या ४८४. पद, रचयिता—जन हरिदास, पत्र—७६, आकार—७$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२७, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह) २४६।५३ बस्ता), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—.........जोग उरि धारे।
जन हरिदास निरबासं भरम निरगुण जस विस्तारं॥ ४॥ २६॥
राम रस पी मीठा रं अब पीया ही सुष होइ॥ टेक॥
मीठा ऐसे जांणियं पीवं नारद सेस।
रुचि रुचि पीवं महेस॥ १॥
सींगी रिष बन में पीव हरिरस अमृत सार।
सुकदेव पी निरमं भया ताकूं जाण सब संसार॥ २॥
गोपीचंद निरमल पीवै पीवै हणवंत वीर।
जोगी पींवं भरथरी जाका अणभै भया सरीर॥ ३॥
नांम कबीरा निति पीवै हरिरस वारंवार।
जन हरिदास ज्यां हरि भज्या त्यां भागा भौभार॥२७॥

अंत—
गहर भैभीत त्रिस्त्रां नदी नषिव है अनत आगं बह्मा मित्ति नांही।
साध आकास में अटकि उलटा चढ्या प्राण मन सुरति आकास मांही॥
समव संसार जल सुजल तिरिवो कठिन जन हरिदास निविनेस हरि भजन कीजं।
परम उदार करतार संम्रथ धणी..............................॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आरंभ के १५ पत्ते नही हैं और अत मे वह ६१वें पत्र के पश्चात् खडित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या ४८५क. गुरुसत (गुरुशतक), रचयिता—हरिदेव, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६$\frac{1}{4}$ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८६ वि०, लिपिकाल—सं० १८६० वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ गुरुशत लिख्यते॥

॥ दोहा॥

गुरु पद पंकज मैं बसौ मो मन अलि वसु जाम॥
जा प्रसाद विन विश्व मैं सरं न एकौ काम॥ १॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु हैं शिव समांन गुरु जान॥
गुरुही पूरण ब्रह्म हैं नमौं जोरि जुग पानि॥ २॥
मोहमत्त करि विश्व मैं भ्रमत तोरि शुभ वृछ॥
जौ लगि गुरु शिक्षा वचन अंकुस लगै न स्वछ॥ ३॥

मनुज देह नौका सरिस पाइ भवोदधि पार ॥
जाहु क्यों न रे मन अधम जहँ गुरु केवट सार ॥ ४ ॥
जिमि अनेक साधनहु ते बिन पावक नहि पाक ॥
त्यों गुरु पदरज ध्यान बिन शुचि न होहि मन काक ॥ ५ ॥

मध्य--
ऐसे नित प्रति ही करै गुरु गुरुजन की सेव ॥
शिष्य धर्म साधै अनिश सो जानै गुरु भेव ॥४६॥
उत्तम मध्यम और लघु अधम शिष्य ये च्यारि ॥
यथा नाम लक्षण कहैं श्रुति सिद्धांत विचारि ॥४७॥
उक्त चिह्न जामैं मिलैं सो उत्तम शिष्य जान ॥
भाव भक्ति आगैं करै गुरु कौ राखै मान ॥४८॥
गुरु जन बिन गुरुदेव की अग्या पालै जोइ ॥
मध्य शिष्य तासौं कहैं पुण्य पुरातन लोइ ॥४९॥
जौलौं स्वारथ की लुनै तौ लगि राखै प्रीति ॥
आग्या हू पालत रहैं लघु शिष्यन की रीति ॥५०॥

अंत--ताही कौ अवलंब लै कियौ शतक "हरिदेव" ॥
तजि छल छोह दया करौ हूइ प्रसन्न हरिदेव ॥९७॥
गुरु पद पंकज की कृपा अचल रहौ यह ग्रंथ ॥
पढि सुनि हरि चरणनि रमौ तजौ कुमति कौ पंथ ॥९८॥
अंक नाग वसु चंद्र युत संवत कियौ प्रमान ॥
सुदि षष्टी आसाढ़ कौ रच्यौ ग्रंथ शुभ थान ॥९९॥
राम लछन सीता सहित भरत शत्रुहन भाइ ॥
हनू विभीषण आदि दै कृपा करौ सुष पाइ ॥१००॥

इति हरिदेव मिश्र कृत गुरुशतक संपूर्णम् ॥ मिति जेठ वदि ४ संवत् १८९० ॥

विषय--गुरु के माहात्म्य तथा प्रशंसा मे १०० दोहे कहे गये है।

संख्या ४८५ख. रामायण (राम वैभव), रचयिता--हरिदेव, कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--६¾ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८६४ वि०, लिपिकाल--सं० १८६४, वि० (दो दिन बाद), प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

॥ कवित्त ॥

वे ही ये चरन सीया उर में विराजि रहे वे ही हैं निदांन सुरसरि मकरंद के ॥
वे ही ये चरन तारी नारी रिषिराय जू की वे ही ये चरन हैं हरन गजफंद के ॥
वे ही ये चरन धोइ केवट मुकति लीनी सरजू विहारी तापहारी मुनि वृंद के ॥
चाउ सौं विराजो हरिदेव जू के चित्त माहि वेही चरन महाराज रामचंद के ॥ १ ॥
गाई चतुरानन सुनाई रिषि नारद कौ नारद तें नीकै वालमीकि जी बिचारी हैं ॥
वालमीकि हू तें संत मुनि कैं प्रमोद भरे संख्या सत कोटि जाकी बेद निरधारी है ॥
ऐसै कथा एती सियाराम की को पावै पार तातै हरिदेव हू कछूक उर धारी है ॥
मंगल की मूल अमङ्गलनि को सूल नीकी सुगति की कर्णफूल सुकृत की झारी है ॥ २ ॥

॥ छप्पै ॥

दबी दनुज के भार भूमि भजि गई ब्रह्मपुर ॥
कही बिलखि निज बिपति धारि मन लई जु सुरगुर ॥
छीर सिंधु के तीर जाय बिनती तिहि ठानी ॥
भये काम गये धाम सुनी तंहि अंबर वानी ॥
रविवंस माहि अवतार धरि हूँ नृप लीला अनुसरौं ॥
हरिदेव विप्र के प्रेम तें सकल काम पूरन करौं ॥

मध्य—

मारि बरदूषन उधारि वालि वानर कौं आपही पधारि फल भीलनी के षाये हैं ॥
सीया कौ विरह पाइ विरही लौं करत हाय वायसुत थाम पाय चूड़ामनि लाये हैं ॥
लै कै रघुराय सुष मान्यौ है मिलाप कौ सौ सागर के तीर साषामृग लै सिधाये हैं ॥
देषि कै अपार सोच कीयौ मन माहिं घनौं कैसं कै उपाय पार बूजं तीर आये हैं ॥२२॥
महामदमस्त उनमत्त वलवंड वीर लंक कौ अभंग राज साधत अभीति है ॥
छांडि कै विभीषन विभीषन है भीषन कौं आयौ रघुवीर जू के पास अति प्रीतितें ॥
आवत ही दिये अभै दान एक दान ही मैं देषी है उदारता उदारन की रीति तें ॥
लंकाहू विभीषन को दीनी दसकंधर कौ लंका दसकंध की विभीषन कौ नीति तें ॥२३॥

अंत—तातें भव को हृदय धरि कछुक कह्यो हरिदेव ॥
निज वानी के सोध कौं हरिजन सुध करि लेव ॥३७॥
राम चरित अतिही अगम सौ करोर कहि जाय ॥
वालमीक सनकादि शिव अंत न पावै आय ॥३८॥
पाप पुंज मैं रमि रहे कलि के जीव मलीन ॥
तिनको अवलंबन नहीं रामचरित विन छीन ॥३९॥
वेद अंक वसु चंद्रमा संवत मिती पुनीत ॥
आशिवन शुक्ला सप्तमी वार वरनि बुध मीत ॥४०॥

इति हरिदेव कृत रामायण संपूर्णम् संवत् १८९४ मिति आश्विन शुक्ला १० भृगुतया ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ मे रामचरित्र वर्णित है ।

संख्या ४८६क. मधुराष्टक की टीका, रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—६, आकार—१० × ५½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७१०, के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८५, पु० सं० ११६ ।

आदि—श्री गणेशाय नम: ॥ अथ श्री मधुराष्टक की टीका लिखियत हे । तहाँ प्रथम श्री आचार्य जी सों प्रार्थना करत हें । सो श्लोक ॥ नमामी पित्र पदांभोज रेणभ्यो यं निवेदनात् । अस्मात् कुलं निष्कलंके श्री कृष्णेनात्मसात्कृतम् ॥ १ ॥ याको अर्थ: । अब या ग्रंथ में श्री ठाकुर जी के सर्व अंग रसात्मीक हें । ताको भास होत वर्णन करत हें । तहां प्रथम श्री आचार्य जी को नमस्कार करत हें ताको तात्पर्य काहा सो कहेत हें, जो या ग्रंथ में रसात्मीक भाव को वर्णन करनो हें जामें अत्यंत अगाध रस हें सो श्री नाथ जी को स्वरूप श्रुति कों अगम्य हें ।

मध्य—पृ० २६ अब मधुराष्टक के प्रथम श्लोक ॥ अधरं मधुरं नयनं मधुरं हसितं

मधुरं हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं ।। १ ।। अब याको अर्थः ।। अब प्रथम श्री गोकुल नाथ जी प्रथम अधर को वर्णन करत हे सो अधर केसे अरुण हे सो कहे हें जैसे दुपहरिया को पुष्पि अति आरक्ति होई तथा प्रातःकाल के सूर्य में अरुणमा होत हें बंबा फल हू अत्यंत अरुण हें। सो व्रज भक्तन के मन को हरत हे। और जब श्री नाथ जी भोजन कर बीड़ा आरोगत हें ता समें अधर अत्यंत आरक्त होत हें सो छबि तो देखेंही बने कहे मे नाही आवे। और जब मंद मुसकाई के व्रज जूवतेन की ओर देखत हें तब सबको मन हरि लेत हें अब नैन की माधुर्यता कहेत हें।

अंत—श्लोक—वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरं चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं। मधुराधिपते रखिलमधुरं ।। याको अर्थ—अब कहे वचनं मधुरं श्री ठाकुर जी के वचन केसे हें अति ही मधुर हें अति मीठी बतिया हें जो सुने ताको मन मोहिहे एसे श्री ठाकुर जी के वचन हें, और वचन में बोहोत ही भेद हें। काहे ते श्री जसोदा जी नंद जी के आगे तूतरात बोलत हे सो जसोदा जी कों नंद जो को अत्यंत हृदय कमल प्यारो लागत हें और सखान प्रत्य वचन रसीलो बानी बोल.........

विषय—श्री ठाकुर जी का माधुर्य रस वर्णित है। पुष्टिमार्गीय सिद्धांतानुसार भगवान् श्रीकृष्ण रस स्वरूप है। अतः उनकी लीला और स्थान, स्वरूप, वस्तु एव परिकरादि सभी मधुर हैं।

संख्या ४८६ख. चितन, रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (नाथद्वारा), कागज—देशी, पृष्ठ—७, आकार—८।। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० सं० ५०, पु० स० ५।

आदि—अथ चितन लिखते।

नंदनंद सखि सुंदर वालो चितंनां करिये जी।
त्रिविध ताप वामें संसारिलोक लाजनवधरिये।। १।।
श्री वर्द्धन वृंदावन यमुना पुलिन कुसुम वन फूलां जी।
सुंदर कुंज वहे वन बेली फूल भारे झूक झलां।। २।।

मध्य—पृ० ३२

नेंन कमल तें अतिरस भीनां दीर्घ कमल समाने जी।
अति घुरणित अति लोहित वरणो कि कि करे सनमान।।४१।।
प्रेम समुद्र कृपा रस भीनां सर्वस चंचथाय जी।
सुंदर मोरलि सुधारस पुरे मधुरे मधुरे वजाई।।४२।।
अंग औरमता तुलसी नी माला नीलां कमल फिरावे जी।
सौरभ रमना मोह्या अलिगन अलि गुंजीत लपटावे।।४३।।

अंत—अष्टोत्तर सत नाम भणिते अनुदिन मुख ते फेरो जी।
श्री राधामोहन गोपि संग क्रीडा अनुदिन हेरो।।१०७।।
श्री बल्लभ पद कमल कृपाथी आनंद पुलकित पाय जी।
वास रसिक जाय बल हारि प्रेम हरख सो गाय।।१०८।।

इति श्री हरिराय जी कृत चितन संपूर्ण ।।

विषय—भगवद् भजन संबंधी उपदेश वर्णन। पुष्टिमार्गीय पद्धति के आधार पर भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का प्रातःकाल से लेकर शयन पर्यंत की मानसिक चितना का प्रकार और स्वरूप वर्णन किया गया है।

विषय—गोकुल का माहात्म्य और उसके स्वरूप का वर्णन ।

संख्या ४८६च. षट्षष्टिः अपराधा, रचयिता—श्री हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—५ (३४ से ३६ तक), आकार—६॥। × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ९१, पु० सं० ११२ ।

आदि—अथ श्री हरिराय जी कृत षट्षष्टि अपराध लिख्यते ॥ जो श्री ठाकुर जी समीप क्रोध करे तो तीन जन्म तांई मलेछ जोनी पावे । नभ्रे यह जो । अस्नान करि श्री थाकुर जी आगें घी को दीवो करे तो ताको दोश नप्रे होय ॥ १ ॥ अनमारगी साथे बोले तो सनु पीडा उपजे । जेसो ताकों नप्रे येहे जो श्री ठाकुर जी आगें अस्त्रीजन सों काम दृष्टि देखे तो नीच जोनी पावे । ओर क्लीद्र होय । ओर अस्त्री जन होये निपुंसक होय तीन जन्मतांई । सो ताकों निप्र येहे जो एक मास तांई स्त्री को त्याग करे संग तब ताको दोस निव्रत होए ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० ३६

अवैष्णव के मुख तें वैष्णव भागवत सुने तो काठ को घुंन वे जीव सात जन्म तांई होई । सो श्री भागवत को दान करे तो दोस निव्रत होई ॥१२॥ अवैष्णव को छुओ जल आदि वेके कछु वस्तु मंत्र अपनी सीता भये ता पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा में तथा आपु ले ते जलजंतु के जन्म पावें सो उपवास करे अथवा भागवत श्रवण करे तब दोस निवरत होई ॥१३॥

अंत—श्री ठाकुर जी की सेवा के समे चुके तो तीन जन्म घंघा होय । सो श्री ठाकुर जी को दोये से पैसा भार दूध सो अभिसेख करावनो ॥४१॥ वैतरणी नदी में सो वरस तांई तीन उपवास करे श्री ठाकुर जी को नयो मंदिर करवावे ॥४२॥

विषय—पुष्टिमार्गीय वष्णवों के अपराध और उनके निवृत्त होने के उपाय लिखे है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के कर्ता गो० श्री हरिराय जी है, ऐसा बंध संख्या ९२ मे पुस्तक स० ११३, बत्तीस लक्षण' के पत्रसंख्या १०८ में लिखा है ।

संख्या ४८६छ. नवरात्रि के कीर्त्तन, रचयिता—श्री हरिराय जी, (खमनौर, मेवाड़), कागज—देशी, पृष्ठ—१७, आकार—३ । × ५॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७४७ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० सं० ४२, पु० स० १७ ।

आदि—अथ कीर्त्तन नवरात्रि के लिखत हैं ।

॥ रागु विलावल ॥

आज अधिक आनंद व्रज जनमन पूरन काम भयो सब आजु ।
नवनिसिय वसुदेव बस बहिन के नवविधि भक्त सृजत सब साजु ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ११

चलो बनवन देश सुंदर हार कंचन झगमगे ।
आइ मंदिर पूजे देवी भोग सिखरनि सृग मृगे ॥
ता समें प्रभु जू पधारे कोटिक मनमथ मोहही ।
निरषि सखी जन कमल मुख मानों निरधन पाई सही ॥

श्री रस रास बिलास हुलास ब्रज जुवतिन मिलि कीनों जू ।।
श्री बल्लभ चरन कृपाल कृपानिधि रास रसिकरस पीयो जू ।।६।।६।।१०।।
यह नवरात्रि के संपूर्ण जेसें देख्यो तेसे लिख्यो हे प्रति बडोदरा की संपूर्ण डभोई में ।
०रि० श्री० ह०

विषय—नवरात्र मे गाए जाने वाले कीर्त्तनो का संग्रह ।

सख्या ४८६ज. नवग्रह आकार (नवग्रह पूजन प्रकार), रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—५ (१७ से २२), आकार—५। × ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६१, पु० सं० २१४ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ।। अथ नवग्रहे लखीते । अथ पुष्टीमार्गी वैष्णव की नवग्रह पूजन करवे को प्रकार । भगवदीय को लौकिक नवग्रह कहा करि सके भगवदीय तो ठाकुर जी अस ही । श्री महाप्रभू जी जाके हरदय में बीराजत होय तिनको अनं सबध कछु ना होय । सो अपेक्षा काहु वस्तु की न राखे । सरव श्री महाप्रभुजी देखत हें । ताको नवग्रह कहा करि सके ।

मध्य—पृ० १६

अब मंगल को जप को परकार जब भक्तन को मंगल क्रूर आवे तब तब स्वरूप श्री गोकुल नाथ जी जेनको बल्लभ के हेत हे तिनको जप करे ध्यान करे पुरवक तब मंगल बाध न करे । और बुध को जप करनो होय तो तब अलौकिक बुध को रूप श्री गोविंद राय जी हें तिनको ध्यानपूर्वक जप करे तो बुध बाधक नां करी सके ।

अंत—अब केतु को जप करनो होय तो श्री रघुनाथ जी को जप करे जेसे अयोध्या में केतको अठ काल परो तब अपुने जनक हेत श्री रामचंद्र जी श्री धीरूप आयस रामो लगाय के बलाय यह प्रकार श्री रघुनाथ जी की कृपा ते जगत हरो भयो एसे ही वैष्णव को केतु क्रूरआवे तब श्री रघुनाथ जी को ध्यानपूर्वक जप करे तो ताको केतु बाधक न करी सके । यह जो नवग्रह के जो श्री गोवरधन नाथ जी को श्री बल्लभ श्री गुसांई जी सात बालक या वीनती को दास जो वैष्णव तीनको कलेस कष्ट ये निवारे तो ऐ नव भुसांदा ग्रहे दीक के मंगल कलातीन को जप समरण करे क्लेशहु जाय प्रभु हरदयमें बिराजे ।। श्री

इति श्री हरिराय जी कृत नवग्रह को प्रकार सपूर्णम् ।। लखुछे ।। श्री ।।

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति में नवग्रहों की शाति का जप प्रकार बतलाया गया है।

सख्या ४८६झ. नामरत्न स्तोत्र विवरण भाषा, रचयिता—गो० श्री रघुनाथ जी, अनुवादक—हरिराय जी (गोकुल), कागज—देशी, पृष्ठ—२८, आकार—८।। × ६ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४८, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० से १७४० के भीतर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० १०३, पु० स० ३ ।

आदि—।। श्रीकृष्णाय नमो नमः ।। अथ नाम रत्न टीका लिख्यते ।।
यन्नामार्को अर्थ श्री रघुनाथ जी श्री गुसाई जी के अष्टोत्तर शत नाम कहत हे । ताकी पूर्व पीठिका जिनके नाम रूपी सूर्य ताके उदय ते पाप रूपी जो अंधकार ताको समूह ताको नास होइ । और भक्त के हृदय रूपी जो कमल के समूह फूले ।
मध्य—पृ० १४

महेंद्र जो इंद्र ताके मद कों भेदे एसो जो गोविंद सो हे प्रिय जाकों राजश में श्रीकृष्ण आप सैल रूप होइ के यज्ञ पूजा ग्रहण कीये याही ते ये यज्ञ कृत हें । तातें ये यज्ञ भोक्ता प्रिय हे । कोई कहेगो जो और सुरतानुभव तो बोहत हें । तो ये भगवत्कृति को अनुकरन यज्ञादिक क्यों करत हें तहां कहत हें कृष्ण लीलैक सर्वस्व ।।४२।।

अंत––श्री विट्ठल के पदांभोज को जो मकरंद को सेवन करता जो श्री रघुनाथ जी तिनकी जो यह कृति सो विसेस करके जयको करत हे निरंतर यतुक्तं ने भेदं कृपामा विट्ठल प्रभोतस्तया तस्य सर्व वैफलं रूपं भविष्यति ।।१।। इति श्री रघुनाथो कृत राम नाम रत्न विवरण सपूर्णम् ।।

विषय––गो० श्री रघुनाथ जी (श्री गुसाईं जी के पचम पुत्र) ने अपने पितृचरण, संप्रदाय के महान् प्रवर्तक, गो० श्री विट्ठल नाथ जी की गुण नामावली वर्णित की है । जो संस्कृत में नामरत्न स्तोत्र नाम से प्रसिद्ध है । प्रस्तुत ग्रंथ उसी की टीका है ।

सख्या ४८६७आ. नित्य भावना (सेवा तथा स्वरूप की), रचयिता––हरिराय जी (?), (खमनोर, मेवाड), कागज––देशी, पृष्ठ––२३३, आकार––५।।। × ८।।। इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––३६, परिमाण (अनुष्टुप्)––८१००, पूर्ण, रूप––साधारण, गद्य-पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––स० १६६० से १७४७, लिपिकाल––सं० १८५५ वि० के पूर्व, प्राप्तिस्थान ––श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ६३, पु० स० ५ ।

आदि––।।श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। श्री कृष्णाय नमः ।। अथ नित्य की भावना लिख्यते ।। तब श्री जी कहीं जो मोमें रसलीला मनमथ की ही सो सब एकत्र करिकें तुममें राखी तब के पद यह हे । जो अमृत निचोई कीयो एक ठोर तिहारे वदन सभारि सुठो करत बतें बीधना राखी न और ।१। सुन राधे उपमा कहा दीजे स्याम मनोहर भए चकोर ।

मध्य––पृ० ४६

पीतांबर को अर्थ कहा जो पीति ही को वह भानु वसन हे पीत पात्र है सो श्री जी की प्रीति पात्र श्री स्वामिनी जी हें । और कोऊ नांही और पीतांबर तीन भांति को होत हे पीलो रग हरी कुछ तामें झांई लाल सो मुख नं को श्री अंग त० नारंगी रंग की दरियाई सो श्री चंद्रावली जी को स्वरूप हें त० लाल सो श्रुति रूपा दंड कारण को भाव ए तीन भांति को पीतांबर हे ताके आधार सों श्री जी रहत हें । हरचो धरत हें सो श्री यमुना जी को भाव हें ।

अंत––सोई श्री चंद्रावली जी श्री जी को कहत हें जो हम तीन जणी एक ही फलणी जाग बैठूंगी तुम पधारियो सो वसन में कुच को बतावत हें । पीली पुख्यन के भाव सेत है सो श्री चंद्रावली जी हें सो सब ताकों अंगीकार करवावत हें सो शुद्ध हृदे कृपायुक्त श्याम कंचुक पहिरे हें सो श्री यमुना जी हे । श्री जी को भाव रसुत्कट भयो हें भरी सों भाव अगाद हें सो स्याम दीसे सोइ जमनाष्टक में लिखे हें जो सुरासुर सूपूजिते स्मर पितु श्रियं बिभ्रतीं । एसो श्री जी के भाव सों श्री यमुना जी भरित हें ताही के लीये स्याम हें । द्विविध भाव एहें ताईं श्री कृष्ण......

विषय––पुष्टिमार्गीय सेवा विधि मे भगवत्स्वरूप और उनकी नित्य सेवा का क्रम किसी विशेष सिद्धांत पर आधारित है । उनका रहस्य इस ग्रथ मे बतलाया गया है । जिससे वैष्णव सेवा को केवल क्रिया मात्र न समझकर उसे मानसिक भावना रूप मे करे और केवल भगवान् मे मग्न रहे ।

विशेष ज्ञातव्य––पुस्तक के प्रारभिक पत्र मे "गो० श्री व्रजनाथात्मज गोकुल नाथस्येदं पुस्तकं" लिखा हुआ है । पुस्तक मे पृष्ठ संख्याएँ १ से ७८ और १ से ७३ तक तथा १ से ८२ तक अलग अलग लगी है ।

संख्या ४८६६. पुष्टि दृढ़ाव, रचयिता--हरिराय जी (खमनोर, नाथद्वारा), कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--१०। × ५।।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--४०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३३२, पूर्ण, रूप--नया, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० सं० ६२, पु० स० ११३।

आदि--।।श्री कृष्णाय नमः ।। अथ पुष्टि द्रढाव की बात लिखीयत है। जाकों पुष्टि अंगीकार होइगो सो जानेगो जीव को उद्यम करनो। उत्तम भगवदीय की संगति मिलनो। अरु वाके करे को विश्वास राखनो जब विश्वास उपजे। तब जानिये श्री जीनें कृपा करी।

मध्य--पृ० ६

मन थिर राखे तो श्री जी मनोरथ पूरे। मन तो थिर रहे जो तादृस वैष्णव को संग करे। जो वह अपने उपर रीझ करे तो शिक्षा करी माने। जो मेरे भले को कहेत हे। ताको वैष्णवता दृढ होय ताको दृष्टांत जानीये। जेसे दूध हे सो वैष्णव हे अरु जो मांखन हे सो तादृस वैष्णव हे। सो दोउ एक ठोरे होय तो भीतर ते नवनीत उपजे। नहीं तो दूध बिगडे।

अंत--अब फेरी पात्र को गुण लेनो तहां दृष्टांत जेमे सोने को पात्र है विष भरयो हे सो उत्तम पात्र जानि के लीजीये तो विनास होये। अरु माटी को होई सो उत्तम सामग्री भरी होय सो लीजीये तो परम सुख होइ। ताते भीतर को गुण देखिके संग करनो ।। इति पुष्टि दृढ़ाव संपूर्ण ।। श्रीः ।।

विषय--पुष्टि संप्रदाय के वैष्णवों के लिये उपदेश पूर्ण बातें लिखी है।

संख्या ४८६७. पुष्टिदृढ़ाव की वार्ता, रचयिता--गो० हरिराय जी, (गोकुल), कागज--देशी, पत्र--१६, आकार--६।।। × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--४७, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७८० के लगभग, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६१, पु० सं० ११२।

आदि--।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। अथ पुष्ट द्रढाव की वार्ता लिख्यते जाकों पुष्टि अंगीकार होईगी सोई जानेगो। जीव को उद्यम करनो। उत्तम भगवदीय की संगत मिलनो। अरु वाके कहे को विस्वास राखनो विस्वास उपजे तब जानियें। जो श्री जी नें कृपा करी अपनो कीयो। उत्तम भगवदीय की संगतितें श्री ठाकुर जी प्रसन्न होइ। तब अपनों आनंद देंहि। तब स्वरूप नेष्टा उपजे। तब जानिये जो श्री जी ने अपनो आनंद दीयो। वैष्णव तो तासों कहिये। जीव कों बिवेक विचार मिलनो। जीव चोरासी लक्ष जोनि प्रगटे। तामें मनुष्यदेह उत्तम हें।

मध्य--पृ० ६०

श्री कृष्ण जी सो पुष्टि नाम हे जो श्री कृष्ण कहावत हें। सो तो जुगल रूप हें। ताही तें श्री कहावत हें। ओर कृष्ण तो दोय अक्षर को नाम है। श्री तहां माथें चढाए हें। इतने ही वैष्णव भयो। पाछे श्री वल्लभाचार्य जी ने एक अक्षर आगे कीयो। तब वैष्णव भयो। तातें वैष्णव एसो नाम हें। सो भगवद नाम हें। खरि द्रष्टि सों देखोगे सो समुझेगो। वैष्णव कों वैष्णव परद्रोह न करनो। वैष्णव हे सो तो भगवद स्वरूप हें। जो श्री ठाकुर जी को अपराध कीयो होइ तो कदाचित् छूटिये। परि वैष्णव के अपराध तें क्यों हू न छूटिये।

अंत--भगवदीय सो श्रीनाथ जी को मन पात्र हें अब फेरिकें पात्र कें पात्र को गुण लेनो। तहां द्रष्टांत कहत हें। जेसें सोंने को पात्र हे ओर वामे विष भरयो हें। सो उत्तम पात्र जानिकें लीजिये तो विनाश होइ। ओर जो माटी ही को पात्र होइ। ओर जो उत्तम सामग्री सो भरयों होई सो लीजिये। तो परम सुख होइ। तातें भीतर को गुण देखिकें संगति करनी। यह सिद्धांत संपूर्ण भयो।

इति श्री पुष्टि द्रढाव की वार्ता संपूर्णम् ।।

१०५

विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धांतों के अनुसार वैष्णवों के कर्तव्यों का वर्णन किया गया है। पुष्टि (भगवदानुग्रह) की दृढ़ता किस प्रकार सिद्ध हो, साधक को किन किन उपायों का अवलंबन करना चाहिए और क्या हेयोपादेय है, आदि का वर्णन है।

संख्या ४८६ड. श्री ठाकुर जी के षोडश चिह्न (सचित्र), रचयिता—श्री हरिराय जी (नाथद्वारा, खमनौर), कागज—देशी, पृष्ठ—६, आकार—५।×४।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४७ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० २३, पु० सं० ७।

आदि—।।श्री कृष्णाय नमः।। अथ श्री ठाकुर जी के षोडस चिह्न लिख्यते ।।

।। राग सामेरी ।।

वंदो चरण सरोज मुरारि ।। भक्तन के तन मन धन सुखकारी ।।
सीतल सुभग सुमंगल चारी ।। त्रिविध ताप अघ ओघ दुःखहारी ।। १ ।।
हारी दुख सुखकारी भारी सिव विरंचि मुनि गावहि ।
निगम गुंजारव करे मानों मधप अंबुज धावहि ।। २ ।।

मध्य—

दक्षिण पद के चिह्न सुंदर सकल सुख की रासि हैं।
प्रताप श्री हरिराय जू को गावत बल्लभ दास हैं ।।पद।। ३ ।।

मूल ।। चाल ।।

वाम चरण सिर धारों सप्त चिह्नन के गुनन उचारों।
यह प्रताप जीय हारो, तन मन धन चरननि पर वारों ।। १ ।। ठार ।।
वारो तन मन प्राण जीवन भक्त जन मन लेन हैं ।।
दक्षिण पद कहे यह दसमें जूम छको किह्न हैं ।। ३ ।।

अंत—

षोडश चिह्न को हे महिमा प्रेम धरि श्रवनन सुनें ।।
चार पदारथ पावहि हरि चरन सों रति अति बनें ।। ७ ।।
हीन मति कहा बरनो आवे जानो बुधी अनुसारे गावहि ।।
दास बल्लभ भक्त जन को चिह्न षोडस भावहि ।। ८ ।। पद ।। ५ ।।

इति श्री हरिराय जी कृत चरणचिह्न षोडस संपूर्ण ।।

विषय—श्री भगवान् के चरणों के षोडश चिह्नों का सचित्र वर्णन।

संख्या ४८६ढ. बरस दिन के उत्सव को भाव, रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (गोकुल), पत्र—६२, आकार—१३।×८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००३७; पूर्ण; रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४७ से १७४० पर्यंत, लिपिकाल—सं० १६५६, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ६८, पु० सं० ४१२।

आदि—।। श्री कृष्णाय नमः ।। श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ।। अथ बरस दिना के उत्सवन को भाव लिख्यते ।। भाद्रपद वदी ७। कों पाग पिछोरा कसूमल धरिये । याते जो अनुराग सूचन हैं जन्म के पहले ही तथा सप्तमी कों शृंगार अष्टमी के मंगला तांई रहे सो कसूमल सुभ को सूचन हैं सगरे व्रज भक्तन को अनुराग रूप रोज भोग में कछू सामग्री विशेष काहे ते श्री यसोदा जी की कूखि में प्रभू हैं।

मध्य—पृ० ६२

॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ डोल उत्सव की भावना लिख्यते ॥ सो डोल में दो प्रकार के भाव हैं एक श्री नंदराय जी श्री यसोदा जी अपने वात्सल्य भाव सों अपने पुत्र को डोल झुलावत हैं । और एक कुंज में तहां आदि श्री वृदावन श्री गोवर्द्धन की तरहटी में तहां सदांई वसत रितु होय रही हे । सुंदर झरना गिरिराज तें झरते हैं अमृत हूं ते उत्तम जल सीतल मधुरता करि लता द्रुम बेलों अनेक वन सब हरित पुष्प फल संयुक्त भार करिके धरती सों नई के अपने मत जो भगवान हे । तिनको नमस्कार करत हे यह वृज वृंदावन श्री गोवर्द्धन श्री यमुना जी श्री गोकुल संबंधी जितनी वस्तु हे तिन सबन के भोक्ता तुमहीं हो ॥

अंत—कढी की विधि । १ मिरच की । २ बेसन की । पकोरी की ३ ।...... कचे पान की ५८ । करोंदा की ५६ । फूल की नारंगी की चकोतरा की ६ व । छोहरा की ६३ । दाख की ६४ । सोठ की ६५ । लोंग की ६६ । जायफल की ६७ । गुड की ६८ । आदा की ६६ । तिल की ७० । छोंकर की सेगर की ७१ ॥

इति श्री गोकुल नाथ जी कृत तथा श्री हरिराय जी कृत भाव भावना संपूर्णम् । यह पुस्तक लिखी लिखिया पनालाल सनाढ्य ब्राह्मण वष्णव ने ठिकानों श्री गोकुल जी में अनाज की मंडी में जो कोई वांचे तिनको हमारी जै श्रीकृष्ण वंचना जी ॥ मिति माह वदी ६ श्री संवत् १६५६ श्री वल्लभ कुलकों साष्टांग दंडवत ॥

विषय—भावना और सामग्री की विधि लिखी है । पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति मे कौन से दिन किस प्रकार का शृंगार तथा सामग्री आती है और उसका आंतरिक रहस्य क्या है यह सविस्तर वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ मे पहले गो० श्री गोकुलनाथ जी कृत "नित्यसेवा शृंगार की भावना" और पश्चात् विषय सूची दी गई है ।

संख्या ४८६ए. वसत होरी तथा डोल की भावना, रचयिता—गो० श्री हरिराय जी, (खमनौर, मेवाड़), पत्र—६४, आकार—६ × ४॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०८, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६०, से १७४० तक, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० ब० ६२, पु० स० ३ ।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ अथ वसंत हीरो की भावना लीला लिख्यते ॥ अब प्रथम वसंत पंचमी के दिन काम को जन्म भयो हे । तात वसत रित और कामदेव आपुस में परम मित्र हैं । जहां कामदेव मोहिवे को जात है । तहां प्रथम वसंत रित को प्रकास करत हे । तातें वसत पंचमी तें खेल द्वारा काम को प्रागटय है । ताते होरी में सबकौ ममता होत है । तातें वसंत को खेल दिन वस कौ होत है ।

मध्य—पृ० ६४

तब कीरत जी कौ ललिता ने यसोदा जी को भेष कीयौ, पाछे अपनी सेज हुती तहां पधराये । पाछें सामग्री कीरत जी आरोगे । पाछें सेज ऊपर सेन कीये । सो खेल में श्रम बहुत भयो हुतो सो सोवत ही नींद आई गई । तब ललिता खेल में फिर आई सो यह भेद श्री ठाकुर जी ने पायो । सो श्री नंदराम जी सों कह्यो जो चलौ बाबा तुमकौ एकांत ठौर बताऊँ । तहां तुम निर्भयता सौ वैठौ । तब नंदराइ जी श्री ठाकुर जी सों कह्यो जो बेटा मोकों श्रम बहुत भयो हे । तातें मोकों ले चलि । तब श्री ठाकुर जी श्री नंदराइ जी कों जहाँ ललिता की कुंज हुती तहां ले गए । तहां नाना प्रकार के सघन लता है । फल फूल छाइ रहे हैं । नाना प्रकार के पछी सब्द करत हैं । ताके भीतर निकुंज मंदिर है तहां नंदराइ जी कौ श्री ठाकुर जी लै गए । तहां नाना प्रकार की सामग्री श्री ठाकुर जी श्री नंदराई जी दोई आरोगे । पाछे नंदराइ जी देखें जो सेज ऊपर को सोवत

है। तब श्रीठाकुर जी सों पूछें जो यह को सोवत हैं। तब श्री ठाकुर जी कहे जो मैया कों बहुत श्रम भयो हुतो सो मैया हीं ठौर सामग्री आरोगाइ पाछें सेन करायो है।

अंत--यह लीला अत्यंत गोप्य है। तातें रसिक जन हृदय में विचार विचार कें पान करत हैं। श्री आचार्य जी श्री गुसाईं जी के चरण को दृढ़ विश्वास होइ। दृढ़ आश्रय होइ। तब या लीला को अनुभव होइ। बिना श्री आचार्य जी की श्री गुसांईं जी की कृपा या रस को अनुभव अत्यंत दूर है। तातें हे रसिक हों इनहीं के चरणारविंद कों आश्रय करौ ।।

इति श्री हरिराय जी कृत होरी की भावना संपूर्णम् ।

विषय--पुष्टिमार्ग मे समय समय पर होने वाले उत्सव किसी भाव विशेष को लेकर मनाए जाते है। प्रत्येक उत्सव अपनी अलग अलग भावना रखता है। होरी और दोलोत्सव किस आध्यात्मिक और आधिदैविक भावना को लेकर प्रचलित हुए हैं उसका इस ग्रथ में वर्णन है।

संख्या ४८६त. चतुःश्लोकी टीका, रचयिता--गो० श्री हरिराय जी (गोकुल), पत्र--६, आकार--१० × ५।। इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--४२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८७, अपूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १७१० के लगभग, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ८५, पु० स० ११।

आदि--...............याहीतें श्री भागवत एकदश स्कंध में कहें हें। जो नारद जी वैकुंठ गये, सो देखें तो भगवान् नाहीं हे। काहे तें सो श्री भगवान् श्री द्वारिका में विराजत हुतें। नारद हें सो भगवान् को मन स्वरूप हे। सो मन कहू प्राण को छोडी कें जुदो न रहें। ताहीं तें ओर औतार में श्री नारद जी वैकुंठ छोडि के पृथ्वी पर वारा कीयो नांही हे। सो काहे तें जो पूरण स्वरूप तो वैकुंठ में विराजत रहे हें। ओर पृथ्वी में अंश कला को अवतार रहो हें। सो नारद जी काहे को ये वैकुंठ लोक छोडे।

मध्य--पृ० ६

।। श्लोक ।।

अतः सर्वात्मना शश्वत् गोकुलेश्वर पादयोः ।।
स्मरणं भजनं चापि न त्याज्यमिति मे मतिः ।। ४ ।।

याको अर्थ--अतः अपनी जो आतमा सो श्री ठाकुर जी को समर्पण करिकें श्री गोकुलेश्वर के चरणार्विंद को स्मरण भजन करनो। यह श्री आचार्य जी के मन में सिद्धांत हे ।।

अंत--ओर जो विश्वास हे सो भगवद भाव हे। ओर अपने मन मै श्री आचार्य जी के वचन में दृढ़ विश्वास राखनो यह वैष्णव को धर्म हे। तातें वैष्णव कों विवेक संयुक्त रहनो। पवे वैष्णव यह श्री गुसांई जी आकु सीक्षा दीए तातें वैष्णव को आमें अधिक भाव राखनो।

इति चतुःश्लोकी टीका संपूरण ।

विषय--श्री वल्लभाचार्य कृत मूल सस्कृत 'चतुःश्लोकी' ग्रथ की सस्कृत टीका की जिसके कर्त्ता गो० श्री विट्ठलनाथ जी है। प्रस्तुत हिंदी टीका है।

संख्या ४८६थ. कुभन दास की वार्ता (चौरासी अपराध वर्णन), रचयिता--गो० श्री हरिराय जी (गोकुल),--पत्र--३, आकार--५।× ६।।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--५२, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १७५० के लगभग, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६१, पु० सं० २।१।

आदि--॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ कुंभनदास की वार्ता लिखिते । श्री बल्लभाचार्य जी सों कुंभनदास जी चतुर्भुज दास आदि दे वैष्णव मिलि कें पूछे । अहो महाप्रभु जी हम कछु समजत नांही । तब श्री आचार्य जी कृपा करि कहें । जो तुम पूछो सो कहु । तब वैष्णवन की आग्या लेके कुंभनदास श्री महाप्रभु जी सो पुछे जो हमसों धर्म को स्वरूप को सिधांत कहो । जातें श्री ठाकुर जी निर्विघ्नता सो सेवांये । आचार को या कहो देश-काल कहो लौकिक विहवार कहो । तब श्री आचार्य जी क्रिपा करिकें कहे । सो तुम भली पुछें । परि आगें कलिकाल कठिन हें । तुम पुछोगे सो तुम करोगे । आगे करेगो नांही । अरु पुछेगो नांही । जाको श्री गिरिधारी लाल की कृपा होईगी सो पुछेगो अरु करेगो । कलियुग के जीव कहां तांई पुछेंगे । अरु कहां तांई करेगे । अष्ट उपाध ग्रहस्त जीव हें । प्रातःकाल ते संध्या पर्यंत चोरासी अपराध लगत हें । चोरासी अपराध के लक्षण कहो ।

मध्य--पृ० ३

जब जेसी रितु होइं तब तेसो भोग धरनों ।२०। तथा वस्त्र यथा शक्त करने ।२१। केशर बिनां श्री जी कों तिलक न करनो ।२२। सुंदर भोग धरनो ।२३। तथा आरती करनी ।२४। सेज्या के नीचे नित्य बुहारनो ।२५। लीपनो सेज्या नित्य बिछावनी ।२६। सींघासन नीचे नित्य बुहारनों फेर बिछोना करनों ।२८।

अंत--सेज्या अकेली छोडनी नही ।८१। मंदिर के आगे ताला सांकर मारनी नाही ।८२। अन्य मार्गी वैष्णव सों गोष्ट कीरतन करनो नाही ।८३। ठाकुर पोछे पाछे कीरतन करनो नांही ।८४। ग्रे श्री आचार्य जी कहत हे अरे वैष्णव हो चोरासी अपराध कहे ॥८५॥

विषय--पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति और सिद्धात के अनुसार भगवद्भक्तों के चरित्रो (वार्ताओ) का सकलन श्री हरिराय जी ने किया है । प्रस्तुत वार्ता भी इसी प्रकार की है जिसमे वैष्णव को भगवत्सेवा मे सावधानी रखने और त्रुटियां न होने देने का उल्लेख किया गया है ।

संख्या ४८६द. कीर्तन सग्रह, रचयिता--श्री हरिराय जी, (गोकुल, नाथ द्वारा, खमनोर), कागज--सफेद, पत्र--४४, आकार--६॥ × ७। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१४३०, पूर्ण, रूप--श्रेष्ठ, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १७७७ के पूर्व, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० १७, पु० स० ५ ।

आदि--॥ श्री गोकुलेंदु ॥ राग भैरव ॥
दीनो दरस सुपने मे आय ।
छिनु एक सुख उपज्यो मेरे मन गयो कहों हरि बिरह बढाय ॥ १ ॥
हाहा पाइ परति हों तेरे क्यों हूं करि ह्यां वेन बुलाइ ॥
अब न परत मोपें न रह्यो छिनु बिनु भेटें जिय अति अकुलाइ ॥ २ ॥
यह दुख काहि. कहों सखि तो बिनु मेरें तूंहि एक. सहाइ ॥
कहा विलंबु करति जेबे को तोसों कहि सखि सोंहें खाइ ॥ ३ ॥
वह मूरति गडि रही हिये में निकसत नहीं न ओर उपाइ ॥
उठि ए हे सुनि विनती मेरी जसुमति सुत रसिकन को राइ ॥ ४ ॥
मध्य--

अहो कबहू सुधि मेरी करत ॥
अपनी ही दिसि देखि नंद सुत कछू करुनां मन धरत ॥ १ ॥
दीनी सारि बिसारि स्याम अब हों न काहे तें दुख हरत ॥
बिनु देखे छिनु मूरति मधुरी रह्यो न मों पें पलकों परत ॥ २ ॥

परम चतुर जानत हों चित की प्रकृति परी केसें टारी टरत ॥
रसिक पितम बिन भेटें छतियां बिरह जरी कहों केसे ठरत ॥ ३ ॥

अंत--महारस पूरन प्रगटयो आंनि ।
अति फूली घर घर व्रज नारी राधा प्रगटी जांनि ॥ १ ॥
धांई मंगल साज सबें ले महा महोछो मांनि ।
आंई घर व्रषभान गोप के श्रीफल सोहत पाएप ॥ २ ॥
कीरति सुता बदन बिधु देख्यो सुदर रूप बखांनि ॥
नाचत गावत दे करतारी होत न हरष अघांनि ॥ ३ ॥
देत असीस सीस चरननि धरि सदा रहो सुख दांनि ॥
रस की निधि व्रज रसिक राई सो सकल दुख हांनि ॥ ४ ॥ पद ॥

विषय--पुष्टिमार्गीय मंदिरों में गाए जाने वाले फुटकर विषय के कीर्तनों का संग्रह ।

संख्या ४८७. राधा नाम माधुरी, रचयिता--हरि वल्लभ, कागज--देशी, पत्र--३, आकार--६¾ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८२४ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः राधानाम माधुरी लीषीते ॥
वृंदावन वासन श्री राधा । मोहन मन मानी श्री राधा ॥
जय नीत्य वीहारन श्री राधा । व्रज सुष विसारनि श्रीराधा ॥
किरत की कन्या श्री राधा । सबही वीध धन्या श्री राधा ॥
सुषरास विलासन श्री राधा । निजकुंज वीलासन श्री राधा ॥
गोपी सर्वमानि श्री राधा । श्रीकृस्न उपासिन श्री राधा ॥

मध्य--
गुन रूप साला श्री राधा । श्री दामा अनुजा श्री राधा ॥
दधदिनी तनुजा श्री राधा । रसकर की स्वामिन श्री राधा ॥
करुना निधीना मीन श्री राधा । वंसीवट वासीनि श्री राधा ॥
संगीत प्रकासिनि श्री राधा । रस रूप रहो सुधि श्री राधा ॥
इति श्री राधा नाम माधुरी संपूरण ॥ मीती कुंवार वदी ८ संवत् १८२४ ।

विषय--राधा नाम कथन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल का उल्लेख नहीं है । लिपिकाल संवत् १८२४ है । ग्रंथ दो अन्य ग्रंथों 'श्री राधा परतीत परीक्षा' (बालकृष्ण कृत) और बारह मासी' (वनीमाधव कृत) के साथ एक हस्तलेख में है ।

संख्या ४८८. हरि विलासाख्य, रचयिता--हरिविलास, कागज--देशी, पत्र--७४, आकार--१०$\frac{1}{10}$ × ७$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२४, परिमाण (अनुष्टुप्)--२२२०, खंडित, रूप--पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा (दाता--पं० श्री राम मिश्र एड्वोकेट, फैजाबाद) ।

आदि--

.....................ग कुंचित तेज हुतासन ।
पुंज प्रताप अदेव डरें भृगनाथ धरापति वंस विनासन ॥
जीत गही महीदेव दई मुनि वेश किए सब लोक विलासन ॥

॥ अथ श्री रामचंद्रावतार ॥

॥ दोहा ॥

"हरि विलास" अघ नृपन लषि धरा धेनु वपु धारि ।
विधि शिवादि सुर संग लै हरि ते करी पुकार ॥

॥ छंद सुंदर ॥

करुणाकर देव "विलास हरि" तव कीरति वेद पुरान वषानी ॥
अधमी क्षितिपाल भये सिगरे पर निंदक लंपट औ अभिमानी ॥
कमलेश जगेश कलेश हरौ तिहि औसत मोद भई नभ वानी ॥
अवधेश निकेत स्वरूप धरौ अमरारि सिंहार करौ निज पानी ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

हरि 'विलास'' सुर हेत हरि तजि निज धाम विहार ।
कौशलेश के सदन में लीन्ह आय अवतार ॥

:o: :o: :o:

॥ छप्पै ॥

केवट हिंसक जीव ताहि प्रभु कंठ लगायो । शव पलभोगी सदा गीध वैकुंठ पठायो ॥
शवरी महा अपुत्र तासु फल हरषित षायो । कामी क्रोधी चपल कटक मरकट अपनायो ॥
तिहुँ लोक दुखद निश्चर अमित रण निपाति पुनि गति दई ।
भजु "हरिविलास" रघुनाथ पद को कृपाल करुणामई ॥१४॥

इति श्री हरिविलास विरचिते हरि विलासाख्ये ग्रंथे श्री राम चरित्र संपूर्ण ॥

अंत---॥ अथ श्री कृष्ण चरित्र लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

मंगल मूरति गणपती प्रथमहि ताहि मनाय ।
"हरिविलास" श्रीकृष्ण जस कहत जथामति गाय ॥

:o: :o: :o:

मणि कंचन धाम विचित्र वने रथ नाग तुरंग खरे समुदाई ।
चहुं ओर कुटी द्विज हेरि थक्यो मन जानि परी कुउ भूप बसाई ।
सब भांति गिरापति बाम भयो इत बाम गई उत द्रव्य न पाई ।
गृह जाल द्विजागम नारि लख्यो सविलास चरी निज बोलि पठाई ॥१५॥

:o: :o: :o:

---अपूर्ण

विषय---राम और कृष्ण चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रंथ के आदि के ४ पत्रे और अंत में संख्या ७६ के पश्चात् के पत्रे नहीं हैं । ग्रंथ का नाम भी ठीक ठीक ज्ञात नहीं हुआ । अध्यायों की पुष्पिकाओं के आधार पर "हरि विलासाख्य" लिख दिया है ।

संख्या ४८६. दस्तूर शिकार का, रचयिता---हसन अली खाँ, कागज---देशी, पत्र---४५ आकार---६$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२२, परिमाण (अनुष्टुप्)---१८३८, अपूर्ण, रूप---प्राचीन, गद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १८१६ वि०, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि---न बांधै कि तांव. नीचैं ले ज.वै तौं स्याम तलक हरिगिज हाथ पर न लेवैं जो चिराग रोसन होवैं बाज के टई उपर हाथ के लेवैं तो डेढ पहर राति तक चिरागन दीषलावैं कि बहुत षुब है पिछु डेढ पहर राति के पतबाज पर बांधै पहैर पीछली रहै फिरि बाज ले तई उपर हाथ के लेपं तौ दो तीनी घरी दीन चढते तक रखं कि बाज पर मौंहोर डारि कर साफ होवै सेर चरि करि बिसही स्याईत बेठावैं तौ अढाई पहर होवैं जीस तरं कि जिकरि हुआ है ईसही तरं हमेसां अमल मैं लावैं ।।

मध्य---और षबरदारी करैं कि अंडे सं जादा न होय तौ जानवर बखत डारनै के आजिज न होवै राह देनै पर मौहौंरे की सुनकर कुं और सुनकार चेकुं और चरग चरगे लेकु बखत सुवैछं के आधा तांवा आवदारा देवैं जौं जानवर तहसं षाली होई दोनौं हाथौ सं पकरि करि जैसे स्याक के तई पकरते है पर मौहौंरा अपने मौहौं मै लेकरि तर करि खिच हलक जानवर के डालैं ।।

अंत---सखी मारे हुए कुं तिरिया कारुक तिनि रती देवैं ईलाज बांसी का बार आदमी के सिरके जरा करि राष वीसकी आदीमी के पेसाव मैं मिला करि नास देवैं ईलाज और आजारौं का माफक चितेहि के है देषि करि अमल करै तमाम हुवादस्तुर सोकार का बनाय हुवा हसन अली षां का संवत १८१६ मीती क्वार वदी १५ सुकरवार वार फारसी से हीँदवी कीय ।।

विषय---इस ग्रंथ में शिकारी पक्षियो, उनके रोग और चिकित्सा के संबंध में लिखा है।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत ग्रंथ के आदि के पाँच पत्ते नहीं है।

संख्या ४६०. गंगा प्रबोध गीता, रचयिता---हिम्मति सिह, कागज---देशी, पत्र---१७, आकार---$११\frac{3}{6} \times ५\frac{1}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---११, परिमाण (अनुष्टुप्)---५१४, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---सं० १८२५ वि०, लिपिकाल---सं० १८५८ वि०, प्राप्तिस्थान---कुवर लक्ष्मण प्रताप सिह, ग्राम-माहीपुर (नौलखा), पो० हडिया खास, जिला-इलाहाबाद।

आदि---श्री गणेशाय नमः ।।

गननायक के सुंड अग्र सुर सिंधु कमल छवि ।
हांथ न अंकुस पास अभै वर उदित उवै रवि ।
विपति दयामय सत्य रदन कारन जगपोषन ।
भव भुअंग विषहरन दीन दारिद दल सोषन ।
मनि जुत सेंदूर कुंभनि लसै हिमिकर भाल मयूषन ।
दुष हरन तूरेफ अटव्य जिमि इंदुर वाहन गजवदन ।।

:o: :o: :o:

।। सवैया ।।

उज्जल विमल जन कामद तरंग जाकी दारिद विदारिके को देवतरु साषा सी ।
ताप को तुषार भान देव लोक को वेवान जस कमलासन के विमल पताषा सी ।
मुनिमन मानसर मंडित मराल पांति कीधौ भव भामिनी की रुचि अभिलाषा सी ।
कुंद इंदु मालति कि माल अवदात छवि गंगा जू तिहारवारी वारि भारती की भाषा सी ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत---"हिम्मति" विनवै दीन ह्वै जेहि प्रकार मति मोरि ।
गायो तुअ जस जन्हुजा चरन वंदि कर जोरि ।।२७।।

:o: :o: :o:

५ २ ८ १
बान नयन वसु चंद जुत संवत् मे अवतार।
ग्रंथ भयो आषाढ़ वदि आठे सुभ बुधवार॥२६॥
श्रेय करन संकट हरन सुर नर करन पुनीत।
नाम भयो यह ग्रंथ को "गंगा बोधित गीत"॥

इति श्री हिम्मति सिंह विरचित गंगा प्रबोध गीता समाप्तं॥ शुभमस्तु संवत १८५८॥

विषय—गंगा का माहात्म्य वर्णन।

रचनाकाल

५ २ ८ १
बान नयन वसु चंद जुत संवत् मे अवतार।
ग्रंथ भयो आषाढ़ वदि आठे सुभ बुधवार॥२६॥

संख्या ४६१. वनिक प्रिया, रचयिता—लाला हीरालाल (छत्रपुर), पत्र—२५, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बा० काशीप्रसाद अग्रवाल, हेड क्लर्क, पुलिस आफिस, राज्य छतरपुर।

आदि—सिद्धि श्री गनेसायनम्हां :
श्री सरसुती देवी नम्हां॥ श्री परम गुरभेनम्हां।
अथां॥ श्री वनिक प्रिया। लिषते

॥ चौपही॥
गुर गनेस कहो सुषदेवा॥
सरसुति सकल बतावहि भेवा॥
बनिक प्रिया बनकन सै छियौ॥
दिय उजयार हाथ कै दियौ॥१॥

मध्य—पृ० २३
कछू पांवन॥ वस्त वीध सब जात वस्त उपजै कम सांवन॥२६५॥

॥ दोहा॥
बस्त बेचिये जेठ मै जहाँ जिवारौ होइ॥
लाभ सहित षांचे गुनौ गयौ जांनवा सोइ॥२६६॥

अंत—पृ० ४६

विषय—वस्तुओ के क्रय विक्रय के सवंध मे वर्णन किया गया है। पुस्तक का वाणिज्य से संबंध है।

संख्या ४६२. शालिहोत्र, रचयिता—हुलाश पाठक, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकुमार ओझा, व्याकरणाचार्य (धर्मसंघ सभा प्रचारक, मंत्री), ग्राम—ओझौली, पोस्ट—बरहलगंज बाजार, जिला—गोरखपुर।

आदि— ॥ सोरठ॥
स्यामरंग जो होई औ तासु स्यामे वरण।
तामे अचवन कोई ताको अरि आवै शरण॥

एक अंड जो होइ कं पुनि तीनिउ देषिए ।
ठौ रावं वृष होइ तौन घोर नहि लीजिए ।।
घोरे की ग्रीवा तरे की गरदन पर देषु ।
मस्तक शिर पर हाउ लो लावो दोष विशेषु ।।

इति श्री शालिहोत्र हुलाश पाठक विरचिते भ्रमरी रंग रूप प्रकाशः समाप्तः ।

:o: :o: :o:

अंत--तिरहे काष चौदहे ग्रीव । पन्द्रह रान गाठि की सीव ।।
सत्रहे जीभ अठरहे षुरे । हलक दोउ वीशौ ए चुरे ।।
सेर पाच चहे रानिमो लेई । तेहीमान वाहनि मो छेई ।।
सेर अढाई कटि सो लीजें । सेर एक तालू मो छाजें ।।

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--अश्व के भेद और दोष गुण वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ मे केवल ७ पत्रे, सख्या १० से लेकर १६ तक क्रम से हैं । अतः खंडित है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है ।

सख्या ४६३. गणेश कथा, रचयिता--हुलास दास, कागज--देशी, पत्र--१८, आकार--६ × ६$\frac{७}{१०}$ × ४$\frac{४}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२४, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, सवत् १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० देवनाथ उपाध्याय, स्थान-खेतकुरी, पोस्ट-धम्मौर, जिला-सुलतानपुर (अवध) ।

आदि--।। ६० ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ गणेश जी की कथा लिप्यते ।।
संकट मरदन करौ गौरी सुत गणेश ।
विघ्नहरन अरु सुभकरन काटन सकल कलेश ।।
सुमति देहु दुर्मतिहरन काटन कठिन कलेश ।
सुर नर मुनि सुमिरत रहै प्रथम नाम गणेश ।। १ ।।
सुमिरन करौ गणेश कौ हरि चरनन चित लाई ।
संकट चौथि महिमा सुनौ कथा कहौं समुझाई ।।

:o: :o: :o:

अंत--
सुष सुराज महीपति कीन्हा । मन वांछित फल गणेशहि दीन्हा ।।
रिद्धि सिद्धि धन धेनु अपारा । धरमी धाम सुत संपतिदारा ।।

।। दोहा ।।

गणनायक कथा यह संसेकीत्ती भद्र विलास ।
जथा वुद्धि भाषा रची जड़ मति "दास हुलास" ।।४२।।

इति श्री गणेश जी की कथा संकथ चौथि व्रत सपूर्णः ।। श्री ।। श्रीरस्तु ।। शुभं भवतु ।। संवत् १८८७ ना फागुन सुद ११ भोमे श्रीभुज नगर मध्ये लिख तंत्रवाडी भीमजी ।।

विषय--गणेश कथा का वर्णन ।

संख्या ४९४. गोरा बादल पद्मिनी चौपाई, रचयिता—हेमरतन, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—१२ 𝟏/𝟐 × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४५ वि०, प्राप्ति-स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। दूहा—

सुष संपति दायक सदा । सुधि बुधि सहित गणेश ।।
विघ्न विदारण सुष करण । पहिलो तुझ प्रण मेश ।। १ ।।
ब्रह्मा विस्न सिव संमुषे । नित समरूं जस नाम ।।
ते देवी सरसित तणे । पद युग करूं प्रणाम ।। २ ।।
पदम राज वाचक प्रभृति ।। प्रणमो निज गुरु पाय ।।
केल विसूं सांची कथा कानन आवे दाय ।। ३ ।।

नवरस दाषेन वानवां सयण सभा सिणगार ।।
कवियण मुषि करज्यो कृपा वदतां वचन विचार ।। ४ ।।
वीरा रस सिंगार रस हासा रस हित हेज ।।
साम धरम ते साभलो जिम होवे तन तेज ।। ५ ।।
साच शील इहाँ भाषीइं जसु प्रसाद सुष होइ ।।
पदमणि नारि पालीयो संभलि ज्यो सङ्ग कोइ ।। ६ ।।
साम धरम जिम साचव्यो वीरारस सुष विशेष ।।
सुभटां मां सोभा लहो राषि षत्रवटि रेष ।। ७ ।।

मध्य—

सूर सरणाइ सिधु साद परवत माहि पडे पड़साद ।।
हठीयो आलम शाह अभंग क्रुद्ध जुरचा गरि जाणे जंग ।।३०१।।
रतन सेन पिण रोसे चढयो दाठो आलम आवी परध्यो ।।
शुभट सेन सज कीधा सङ्ग सबल वंत बोले विकसव बङ्ग ।।३०२।।
राणे जी पातिसाह ने दूत साधे कहायो साह भले क्यु आके सही ।।
नासिम जायो षिस जो रही नास तांवे नरने षोद झूठा बोवुं इणही जठोद ।।३०३।।

अंत—

पद सरोज वाचक परधान.............. ।।
..........इमि भणइ हेम रतन मनि हर्ष भणे ।।७००।।
संवत् सोले सोले में पइंता................ ।।
पुहवी पीठे घण परग की सबल पुरी सोहै सादगी ।।७०१।।
..........क प्रताप तस मंत्री सरबुद्धि निधान ।।
कावेड्यां कुल तिलक.................. ।।
...शविद्ध सणराह तस भाइ तांराचंद अतनी जाणि ।।
.......त्र सङ्ग कीधा पाधरा तस आदेश लही सुभ ।
साम धरम अति सोहायणी वीरारस सिण (गार) ।।
शेष र......................... ।।
सुष संपद मिलें भणतां भावठ दूरे टले......... ।।
.... ।।
षटसत षोडस गाथा वंध सुण्यौ तिसौ भाण्यो...... ।।
.... षरो ।। ७ ।।

सांम धरम पालता सदा सगली श्रावै.........॥
...........................वरे॥ ८॥
इति गोरा बादल पदमरणी चौपाई...............॥

विषय—गोरा बादल और पद्मिनी की कथा का वर्णन।

संख्या ४६५. बैन बत्तीसी, रचयिता—हेमराज, (मथेन हेमराज), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—२११/६ × २१/६ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १८१६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० मुन्नूलाल जी शुक्ल, ग्राम व पोस्ट–पच्छिम सरीरा, जिला–इलाहाबाद।

आदि—...........................

पीर पराई न जांन अरी यह वैरन वांसुरी गैल परी है॥ ७॥
ओसर मोसर द्योस करैंनि ववयोई करैं विषनाव भरी है।
श्रोन सुनैं सुर सीस धुनैं मुप मोन कहा थकि गोंन धरी है।
तांननि तांननि वेधत है तन मानन मैं मन लेत हरी है।
पीर पराई न जांनैं अरी यह वैरन वांसुरी गैल परी है॥ ८॥
चैंन न देत ह (?है) रैंन दिना वजि मैंन मई पढि मंत्र पुकारैं।
पीर न जानैं अधोर.....................॥

:०: :०: :०:

(? अथ) रा रसलेत अघात नही निस वासर या रस मैं जुरली।
अब तो चुपचाप रहो व्रज वैरनि रास विलास निसा कुरली।
भली नाच नचाई है गोप वधू लगि मोहन कैं मुष तूं मुरली॥१२॥
चैंन न देत है एक घरी निस वासर सीस पैं गाज तरी।
गुन गोविंद कैं रस राच रही सो दही व्रज वाल निसा सतरी।
यह लाज को दाम रही नहि नेक गु..............॥

:०: :०: :०:

.........स्यांम करी हमकूं जु दुहागनि कैं दुष दीनों।
सर्वस छीन लीयो तेह सारो दीयो नहि नैंक कहा अब कीनों।
कोंनहि जन्म को वैर हुतौ व्रज वालनि तैं ततकाल ही लीनों।
या वरियां महि वैरन वासरी प्रीतम प्रांन कियो जु अधीनो॥
वंस को वंस वधायो अरी तू हरी मष लागि भई जु सयांनी।
चेटक लाय लगाय कै मैंन री नैंनन लाज लगी मन आनी।
वेस विवेस ववीत भई भली नीत मैं आय अनीत ही ठांनी।
पीय कियो वसि प्रीत हसी भई दीनी उघारि धरी हुती छानी॥
कानन मैं किलक्योई करैं निस वासर नींद गई न सरी।
वुष वाइन दे वुष दूर भई हरि प्रीतम प्यारो लियो हसि री।
करी वावरी गोप वधू व्रज मैं तन सर्वस छीन लियो असिरी कसरी॥
जमुना तटि गोधन ग्वालनि संग वसी व्र............

:०: :०: :०:

..................................की॥
भेव निवांनति वेद करैं पर वेदन जांनत वंसी तिया की॥१६॥
भौंन के कौंन मैं कोलौं रहै निस द्योस वहै सुरभेव संतावै।
जागत सोवत रैंन दिनां री विना पिय प्यारे कै नैक न भावै।

बंसी निगोड़ी तू होड़ कै बाजत बाजत बावरी लाज न आवै ।
तोहि सुहागिनि स्याम करो तो इतै पर चाम के दांम चलावै ।।२०।।
औचक आनि परै धुनि कांनरी संग सबै पति कौ तजि भाजै ।
लाड भरी पिय पाय सुहाग पियौ अधरा सबनै........।।

:o: :o: :o:

..............................हो भजी ।
इतनै मधि पूरन प्रेम मैं सौति अचांनक बैरन बंसी बजी।।२४।।
कांनि परी धुनि आंनि जबै घर के अंगनां न सुहावत है ।
अकुलाय हिये मधि हूक उठै सुरतांननि मैं चित जावत है ।
घर काजहि भूलि औ फूलि मनौ रस झूलनि ऊपर भावत है ।
अंगुरी विषै कौ लगि कांन रहै बजि बांसुरी लाज गमावत है।।२५।।
गारी दै हारी सबै इन सौति कौ वंस कौ गोत लजावत है ।
कोउ कोरि कहो किन लाष कहो इनकै जिय एक न...।।

:o: :o: :o:

..............................वीर की।।३४।।

।। दोहा ।।

बैंन बतीसी प्रेम सौं सुनै चतुर चित आहि ।
ताके पद अरबिंद पर भंवर "हेम" बलि जांहि ।।३५।।
अठारा सै उगणीस का संवत जेठ सुमास ।
शुकल पक्ष गुर द्वादसी बैंन बतीस प्रकास।।३६।।

इति श्री मथेन हेमराज कृत बैंन बतीसी संपूर्ण ।। लिषतं मथेन हरिचंद वासी रूप नग्र का।
---पूर्ण प्रतिलिपि

विषय---शृंगार विषय की रचना है जिसमें वंशी के प्रति गोपियों के द्वेष का वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

१८ १९
अठारा सै उगणींस का संवत जेठ सुमास ।
शुकल पक्ष गुर द्वादशी बैंन बतीस प्रकाश।।३६।।

संख्या ४९६. अजामिल कथा, कागज---देशी, पत्र---२५, आकार---११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---९, परिमाण (अनुष्टुप)---६६१, खंडित, रूप---प्राचीन, गद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---पं० छोटकधर द्विवेदी, ग्राम---अठनी, पोस्ट---सराय ममरेज, जिला---इलाहाबाद ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ।।

निगमागम्य रूपं यत् गोकुले वल्लवी सुतं ।। प्रेमगम्यं परब्रह्म बंदे गोपालवेरिणं ।।१।। पुराण रूप बन विषे नरहरि नाम रूप एक सिंह विराजत हैं ।। जाके नाद तें महापापरूप हाथी भजत हे ।। विशेष ते उत्पन्न भये अरु अपनी मर्यादा विषें उनईस अध्याय करि पोषण कहियत हे ।। जिन मर्यादा को उल्लंघन कियो एसे भक्त को रक्षण सो पोषण ।। मनुष्यन विषें महापापी अजामिल की रक्षा करी ।। अरु देवतन विषें विश्वरूप ब्राह्मण को वध कर्ता एसे इंद्र की रक्षा करी ।। अजामिल कों भक्त ता विष्णु दूता कही ।। जिन पुत्र स्नेह करि संकेत ते भगवन्नाम

लीयो ।। अरु इंद्रहू भगवदीय है ।। सख्य भाव करि श्री बावन जू को सेवक है ।। यांते इंद्र कों देव को ऐश्वर्य शत्रुन को जय अरु जीवन श्री भगवान के आधीन है ।। तहां पहिले तीन अध्याय करि अजामिल की कथा कहियत है ।।

अंत––तादिन आरंभिके श्रीकृष्ण कों आश्रित एसे जन प्रति शंकित संतें तिनकों देवतहू डरपत हैं ।।३६।।

कुंभ तें है जन्म जाकों एसे अगस्त्य रिर्षाश्वर मलयाचल पर्वत विषें बेढ़े हरि की पूजा करत संतें यह इतिहास मोसों कहत भये ।।३५।।

।। श्लोक ।।

कारुण्यपात्र कमनीयगात्र रमाकलत्रं शिशुगोपमित्रं ।
दीने कृपालं धृत वन्यमा लं भजंतु विष्णुं व्रज राज बालं ।।
इति श्री अगस्त विदुर मैत्रेय संवादे चतु. . .

विषय––भागवतातर्गत अजामिल की कथा का हिंदी गद्य मे अनुवाद किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य––ग्रंथ के संख्या २ से ५ तक के पत्ते नष्ट हो गए हैं । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या ४६७. अवधूत गीता (अनुमान से)' कागज––देशी, पत्र––१०२, आकार––८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––१०, परिमाण (अनुष्टुप्)––२४२२, खंडित, रूप––प्राचीन (जीर्ण), गद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम–साहीपुर (नीलखा), पो०–हंडिया, जिला–इलाहाबाद ।

आदि––. . . . . .ही ।। जो ध्रूह सर त्याग कर बन को गया है ।। तब्वि राजा अगवानीया को आज्ञा करत भया ।। जो वे महां ध्रूह के निकट जाय कर कहो जो त्रियंस राज का लेहु ।। अरु त्याग का त्याग करु ध्रूह श्रवण करने इस बात के सो अचरज ।। अरु अचरज का देता है ताते राज क्या करना है ।। गोविंद का दरसन करोगा ।। वहुउ राजे कहा अरधराज देता हो तौ भी न माना वहुड कहा जो सारा राज देता हो ।। तौ भी ना माना ।। वहुड जमना के तीर पर आइ कर स्थित करी ।। अरु तपसिया लागा करने ।। अरु इही निसचा कीया जो सकल विसु विषे एक विसन आतम सरूप है ।।

अंत––अरु प्राणहु को कैसे सुध करो ।। तब वाशिष्ट. . .योग विना जोग विषे जुडना कठन है ।। तव अवधूत कहा जोग मेरा सुण तू कहे है आसण कर अरु मै कहो हो लंवाइमान होइ कर सोइ रहु अरु तू कहे है जो प्राणहू कों सेक अरु मैं कहो हो पवन को सुधै नही नीचे कौ छोडौ । हे बृध बुध अलपी ऐसो जोग कर जो सभवही हैं ।। जोग तेरा षंड है जो मन कौ बाहर तैं षेच अरु अंतर लाग अरु जोग मेरा अषंड है जो अंतर वाहर शिव है ।। तद वशिष्ट कहा :०: :०:––अपूर्ण

विषय––योग और ब्रह्म ज्ञान का वर्णन किया गया है ।

संख्या ४६८. आतम प्रआतम, कागज––देशी, पत्र––२०, आकार––७$\frac{3}{4}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––११, परिमाण (अनुष्टुप्)––१३७, पूर्ण, रूप––प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––श्री गुसाईं रामस्वरूपदास जी, कुटी–सठयाँव, डाकखाना–जहाँनागंज रोड, जिला–आजमगढ़ ।

आदि––सत. . आदि अदलो अजर अचंत ।। परुस मनींद्र करुनामं कबीर सुरती जोग सताए न धनी धमदास को बाग्रा से लीषा ते भानी आतम प्रआतम को ।।

॥ चौपाई ॥

इंगला पिंगला सुषमना ऐही वस्तु है नारी तीनी ऐक ठवर त्रीवेनी संगमाही ।
परे आंगतरे मंजन करही तीरथ इंगला पींगला सुषमानी है ।
इंगला अगीनी है । पींगला पानी है ।
सुषमनी पवन है । रही तीनो एक ठवर होत है ॥
देही के बीचार करतु है । एही तीनो एक ठउर रहत है ॥
जाहा रमीता दश्रा त्रिवेनी संग में है । आसन ना प्रान पती होता है ॥

अंत--आतमा वचन

तव आतमा कहै की जब स्त्रीस्टी प्रलै करेगा ।
तव जेते सरीर केते ज प्रलै करेगा ॥

प्र आतमा वचन

तव प्र आतमा कहै की जेते तेजा सरीर के है ।
तेज है पवन पानी अगीनी है ।
सो सभ षंड पींड के व्रंहोमंड बीचै मे ले जात है ।
तव नीर अन जोती में समा जात है ॥
तव व्रंहमंड मेइ जा मीलेगा ।
तव एक नीरंजन पीर कार है ।
सोसभ शीस्टी सम्रथा के पास नीरंजन जाएगा ॥
सकल मे गुरु सात्रथा के गुरू सात्रथा कीन्हा ।
आधीकारा एते वनदनी गुरु आतमा प्रआतमा वनी संघाली ॥

सत गरु कवीर साहेव के नान्हक गुरु स्मपुरन ॥ एते वंदनी गुरु स्मपुरन भुल चुका सधसंत सो बीनती गुरु सो वंदगी वंदन है ॥ डंडावत है आछर मात्र लेव सव जोरी डंडाव वंदन वारंम वार दासषत लीषा है हरीदास हथाकै ॥

विषय--आतमा और परमात्मा के संवाद के रूप मे आध्यात्मिक ज्ञान का वर्णन किया गया है।

संख्या ४६६. उजागर प्रकास, कागज--देशी, पत्र--४, आकार--७$\frac{१२}{१६}$ × ६$\frac{२}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--६४, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--कैथी, लिपिकाल--सं० १६२३ वि०, प्राप्तिस्थान--श्रीयुत भोलानाथ जी उपनाम 'भोरेलाल' ज्योतिषी, ग्राम व पोस्ट--धाता, जिला--फतेहपुर ।

आदि--श्री गनेस जी सहाइ नमः लीषते उजागर प्रगास ॥

धन गुरदत्त धन गुरधना बेमल अनूप ।
उजागर पगास कहेउ वरनो सत सरूप ॥
नमो नमो गुरदेव जी नमो अधी मत अंत ।
तुम ध्यावत सव देवता तुम ध्यावत सव संत ॥
तुमहीअ दानव देव हौ तुमरे सकल पसार ।
तुमहीं सब घर रहत हौ नीरमल रूप अपार ॥

अंत--

भगती कर भगवान की उतर जउभो पर ।
धधकार अस प्रनसी महा कलुष अपार ॥
ओप्रबीद मन तरै गयो सधु मज ।

इती श्री उजागर प्रगास गरंथ समपुरन ।

विषय——ज्ञान और भक्ति वर्णन ।

संख्या ५००. उत्सव मालिका श्री विट्ठलेश्वर राय जी के घर की, पत्र——६, आकार——६ × १०$\frac{3}{8}$ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——३६, परिमाण (अनुष्टुप्)——२६३, पूर्ण, रूप——साधारण, गद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८६, पु० सं० ५ ।

आदि——॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ उत्सव मालिका श्री विट्ठलेश्वरराय जी के घर की० ॥ भाद्रपद कृष्ण पक्षे अष्टमी श्री जन्माष्टमी । प्रातःकाल सप्तमी को वेध पल मात्र होय तो उत्सव नौमी के दिन करनो । प्रहर एक रात्रि पाछिली रहे तब उठनो । प्रभु कों जगाय के मंगल भोग धरनो । मंगला आर्त्ती करी रात्रि को सिंगार होय सो बडो करनो पीरे पाट के धोती उपरना ओढाय कुंकुम को तिलक करि । पाछें पंचामृत स्नान करावनो । श्री स्वामिनी जी को पंचामृत स्नान नांही करावने ।

मध्य——प्रबोधिनी के दिन रात्रि कों भद्रा होइ तो, दिन में उत्सव करनो नांही । रात्रि को उत्सव करनो । ताकी विधि । पहिले मंदिर में सर्वत्र तिबारी, अंगरण में चोक कोठा में नही । पाछें सोरह गंडेरी को मंडप बनाइ बीच सांगा माची धरि आस पास दीवा आठो दिसि धरि दीप प्रगट करि प्रभु कों उहां पधराइ नमस्कार करिये पाछें यह मंत्र पढि तीनि बेर प्रभु की सांगा माची उठाइये मंत्र——उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद त्यज निद्रां जगत्पते ॥ त्वया चोत्थायमानेन उत्थितं भुवनत्रयं ।

अंत——श्रावणी पूर्णिमासी के दिनां अभ्यंग पर्व की सामग्री गोपी वल्लभ में सीखोरी इह सामग्री अरोगे । साडी पिछोडा नए । कसुमल पाग कुलह पहिरावने, भद्रा न होइ ता समय तिलक करि अक्षत लगाइ राखी बांधी, गुल पापडी संधानां भोग समर्पिये ॥ आर्त्ती नही ।

इति श्री उत्सवमालका श्री विट्ठलेश्वर राय जी के घर की संपूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

विषय——पुष्टिमार्गीय पद्धति के अनुसार वर्ष भर के उत्सवों के निर्णय करने का वर्णन । सप्रदाय मे सात घरों की सेवा भावना के अनुसार अलग अलग सेवा उत्सव का प्रकार प्रचलित है ।

संख्या ५०१. ओधवनी अरज, कागज——देशी, पत्र——५, आकार——६ × ५$\frac{7}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२०, परिमाण (अनुष्टुप्)——१००, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ओधवनी अरज लखी छे ।

ओधव अरज अमारी सामलोरे ।
के जोहरीने जई मोहन मुकीमन नो आमलोरे ॥ १ ॥
आवो ने अंजव हीय अमतमसा मुरई नीहा लीएरे ॥ २ ॥
रखे राखो री सवलता वीज उपर मन वालीए रे ॥ ३ ॥
पाये नमावु शीस दीवस घणानी छे ए वातडी रे ॥ ४ ॥
आवी रही छे होठ हई डेरु घण जाए धन रातडीरे ॥ ५ ॥
क्यां जई कीजे गोठ मनमान्या वीनानी मान्य वीरे ॥ ६ ॥
वातकहीन के वाएं पीडन जांयो कोइ तंननीरे ॥ ७ ॥
जीव घणो अकलाए अवगुण अवलाना शावर वाणीयेरे ॥ ८ ॥
जांणिये पोतांनो दास दीघु सुख ते मुख शुं बखाणीजे रे ॥ ९ ॥
जेजां पुरी आस जाजां रमतां अमे शुरंगमारे ॥१०॥

अंत—ओधवधो आशीश गवगद कठ भइने गयाए लीरे ।।६८।।
तमेल जो जगदीस गरमो बीज वधुनो करचो रे ।।६६।।
पद पुरा पचास । वचने वचने रस खांडे भरचोरे ।।१००।।
कहते नेवजवास मन करी वचने गाऐ ने सांभले रे ।।१००१।।
श्रीजनो प्रेम बीजोग श्रीज वहे जनमन मान्यशं भलेरे ।। २ ।।
भोगवतां रसभोग भव ब्रह्माधीक भुल्या भमेरे ।। ३ ।।
श्री पतीगतपती मुड वलब के कर जोडी कर ग्रही रे ।। ४ ।।
जे जन मन सोहाय बोलो जेजे जेमुखडुं भरीरे ।। ५ ।।
श्री गोवरधनराय यथा श्रोधवनी श्ररज संपुरए ।। ६ ।।

विषय—उद्धव गोपियों का सवाद वर्णन ।

सख्या ५०२. ओषधि तथा मत्र और सगुनौती, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६$\frac{1}{1}\frac{1}{6}$ × ४$\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७४१ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। इति मंत्र ।। सगुनौती कौड़ी परं हो तीनि कौडी परं तीनो बेरा जे कौडी. . .त परं से सही तीनीउ बेरा. . . . . .

:o: :o: :o:

१२३ ।। श्रास तीहारी पुजै दुष न करहु ।
१३१ ।। श्रवही नाही सु सुत करहु ।।
२१११ ।। जो माग्य होइ पावहु ।।
२१२ ।। जे चीता कीहेहु शे श्रास पुजै शवथा भरी पुरी ।।
२१३ ।। पुजै. . . . . .सभरी करीकै ।।
२२१ ।। श्रवही नाही सुसुत करहु ।।
२२२ ।। एकौ चींता नाही जे लेहु ।
२२३ ।। श्रास पुजै बडे कसटन्ह ।
२३१ ।। जे काज चेतहु से होइ ही ।
२३२ ।। जे कामना कीहेहु से होइही ।
२३३ ।। जवन कामना करी से पुजै ।
३११ ।। श्रबही नाही बैठा रहहु ।
३१२ ।। कतीकौ करहु श्रवही नाही ।
३१३ ।। काज तुम्हार भरी पुरी होही ।

:o: :o: :o:

अंत—।। वोषद. . . ।।

मगरैला श्रौ सेदुर थै कगरे उ मह फेटी लावै नीक होइ शरबथा ।।

संवत १७४१ माघ शुदी तेरशी वार बुधवार के लीषागा पोथी वोषधी मंत्र हो लीषा पोथी शारी राजपुत कै हो काशीमधे लीषागा संपुरन जथा प्रती तथा लीषीत मम देषो न दीयते ।।

विषय—औषध, मत्र और शकुन विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । केवल दो पत्ते उपलब्ध हैं जिनमे से एक मे ओषधियों का और दूसरे में शकुनो का वर्णन है । लिपिकाल की दृष्टि से ग्रंथ में प्रयुक्त गद्य प्राचीन है । गद्य की भाषा दिल्ली के उत्तर पच्छिम हरियाना क्षेत्र की है ।

ओषधि वाले पत्रे में पुष्पिका का लेख दिया है। इसमें सं० १७४१ लिखा है जो लिपि-काल है। ग्रंथ गद्य में लिखा है जो लिपिकाल को देखते हुए बहुत प्राचीन है। इसके दो स्वरूप पाये जाते है। एक तो विषय वर्णन में और दूसरा पुष्पिका के लेख मे। प्रथम गद्य वह भाषा है जो पजाव के पूर्वी भाग मे दिल्ली एव उसके उत्तर की ओर बोली जाती है।

जिस भाग को हरियाना कहते है। इस भाषा मे लिखे गये ओषधि एवं शकुन पर कितने ही हस्तलिखित रचनाएँ मिली है पर अधिकतर मितिरहित। जिन पर मितियाँ है भी तो बहुत आधुनिक। प्रस्तुत रचना मे मिति बहुत प्राचीन पडी है। अतः इसका गद्य भाषा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पुष्पिका के लेख में प्राचीन खड़ी बोली का पुट है जो महत्वपूर्ण है।

संख्या ५०३. कथा चित्रगुप्त की, कागज--देशी, पत्र--४३, आकार--६½ × ४$\frac{1}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप)--१६३, खंडित, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० महाराज दीन जी, ग्राम-जमुनीपुर, पो०--हनुमानगज, जिला--इलाहाबाद।

आदि--श्री गणेशाये नमः ॥ पोथी कथा चित्रगुप्त कै ॥

पदुम पुराण कहत है काएथ की उत्पत्य।
चतुरानन चींता भए उपजे चीत्रगुप्त ॥
चीत्रगुप्त कै कथा पुनीता। जो नर शुनहि सो परम अजीता ॥
धन्य जनम तेहि नर कै अहई। पुजहि भाव भक्ति सुष लहही ॥
पदुम पुरान अगम वीस्तारा। को षोजेइ को देषै पारा ॥
ताते कथा गुप्त यह रहई। प्रगट न जानै को अस कहई ॥
तव भाषा मह कीन्ह उचारू। गनै सभै सकल संसारू ॥
मो पर कीपा नाथ जब कीन्हा। जगदंबा इंछित फल दीन्हा ॥

॥ दोहा ॥

सुमीरो देवी दुर्गा जै कल्यानी मातु।
लछीमी आदी निरंजनी जै जै बोली आपु ॥
कथा चीत्रगुप्त कै कहत सूनत सुष देन।
ज्ञानी पुरुष वीचारीहै जेहि सू सुष सर्वत्र लेन ॥ २ ॥
चित्रगुप्त कै कथा प्रगासा। मन वच ग्रम संभु कै आसा ॥
दाता भेहै चोविस मांही। आदी निरंजन आपु कहांही ॥

अंत--

धर्म राज सुनी मन के वचना। चीत्रगुप्त सन बोलै वैना ॥
राव रहा सीवदास जो नाउ। ताकर करम सुना कीछु भाउ ॥
सुनो नाथ मै सभ परभाउ। पुजा मोर कीन्ह उन्ह राउ ॥
तुम ....

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--चित्रगुप्त की कथा का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ के बीच और अत के पत्रे खडित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

संख्या ५०४ कवित, कागज--देशी, पत्र--५, आकार--९ × ६⅞ इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२०, खंडित, रूप--पुराना, (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--ठा० रघुनाथ सिंह व ठा० जगबहादुर सिंह, ग्राम--समोगरा, पोस्ट--नैनी, जिला--इलाहाबाद।

आदि--......शयानम्ह ॥ कवीत्त लीषा ॥

क....................................

:o: :o: :o:

नीस्चर नारि पुकारत आरत वात वनी दसकंध बीगार।
दानव बीद सीराए गए जड़ता बस मूढ न मानंत हार॥
पुर्ष पुरान अहै तपसी संग वानर भालु की सैन अपार।
तामहं एक वलो सवते पथ में जेन्ह लंक लंगूर सो जार॥ ४॥
मानत ना बीनती हमरी जमलोकहु नाथ गए पछितैही।
जा भुज जोर सुनावत हौ हरि बान लगे रन जंवुक षैही।
राकस कवन लर रन मो हनींवंत वलो जव आज सुनैही।
जानि परी विधि की रचना जरि मूल सो लंक पताल ही जैही॥ ५॥

अंत--चंद छपे मकरंद छपे अरु सुक्र छपे छपि मंगल जाही।
आनन अंगन की झलकै मुकुताहल बीदु दीए सीर माही।
हंस छपे मृगराज छपे पीक इंदु के वाहन भूरि लजाही।
पाएन घुघुर लंक भली अरु बोलत वैन द्रीगै छलकाही॥५६॥
एक समै व्रीषभान सुता बहु गोपी लीए संग कुंजन माही।
कीन्ह सींगार तीआ सोगरी जनु तारन मध्य कलाधर जाही।
नंद के लाल चरावत धेनु बजावत बीन कदम की छाही।
आइ मिली उपमा को कहै जनु दामिनि छाइ रही घन माही॥५७॥
कानन जाइ वीहार कीए गत वासर भे रजनी अधिआरी।
हाथ ही हाथ ते कंध धरे तेहा औसर वारि झरयौ अधिकारी।
एक ही एक वचावतु है वोए पीत पटा वोए सुंदरी सारी।
भोजत आवत कुंजन ते दसोदा सुत वौ व्रषभान कुमारी॥५८॥
भूषन चारु रचे सव अंगन तापर लाली सुहावन सारी।
वाल नवीनि वनी जलजात सी गार्भ तजे रति रूप नीहारी।
अंवक देषी कलाधर वाहन लाली भे तन सोच वीसारी।
मोरत अंक भरी मकरंद न जात.............

:o: :o: :o:

जात चलन जब जात..................

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--रामकथा और शृंगार विषयक कवित्तो का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य--रामायण नाटक के पश्चात् ये कवित्त लिखे है। इनके कुल पाँच पत्रे, संख्या १२९, १३०, १३१, १३२ और १३४ के उपलब्ध है।

रचनाकाल और लिपिकार अप्राप्त हैं। संभवतः रामायण 'महानाटक' के रचयिता ही इन कवित्तो के रचयिता है।

संख्या ५०५. किसान सिपाही का झगरा, कागज--देशी, पत्र--१ (खर्राकार), **आकार**--१२ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३५, परिमाण (अनुष्टुप्)--२५, पूर्ण, रूप--**प्राचीन**, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--श्री महंत ईश्वरशरण भारती, ग्राम-बांसी, पोस्ट-भाटपार रानी, जिला-गोरखपुर ।'

आदि--श्री सूर्य्याय नमः ।। किसान सिपाही के झगरा ।।

प्रथम आर उठि बोले किसाना । देश विदेश हमही ना जाना ।।
अपने कर उपराजो धाना । भोजन करिले साझ विहाना ।।
आवें साम पखारो चरना । बहुअनि बैठि डोलावे बयना ।।
भादो मेघ घटा घन गरजो । धरती पाव देत त्रिअा वरजो ।।
तबे आर उठि बोले सिपाही ।
देश विदेश की भाषा पढो । लेताजी तुरकी पर चढो ।।
पाव लवग कपूर के बीरा । पहिरो सुदर झझीना चीरा ।।
षाव घीव जोरो ना थाती । तुम पर निति उठि साजो बराती ।।
अयसो गाव जगीरो ना पावो । तेहिये षेरा तिनि वो आवो ।।
तोहरे षेत के उषि तुरावो । ले मुडा तोहरे घर आवो ।।
तोहरे रलिका वोले अछोधाहब । दादा धइले पियादा जाय ।।
भादो राति झिस अह्निआरी । वैलेन कीव भई तइआरी ।।
तसपतंग गेछन के छोट । चारवादार पिछेके षोट ।।
आगे चले फुटे जो मुड । पाछे रहे कहावे कुर ।।
आगे नदी पीछे नारा । कहो विपति कहिआ की वदी ।।
एतना बात किसान निवाही । तबें आर उठि बोले सिपाही ।।

अंत--कातिकमास लगें भुई सरदा । आधा राति चराव वरदा ।।
हर जोते ना होएहै आदर । मेणे वइठि निहारब वादर ।।
भोजन करेके मरम न जान । ना टाटक वासी पहिचान ।।
वही मही के मठा पेराव । तब जिअना के जिअन कहाव ।।
एतना बात सिपाही कही । तब किसान से सहि ना गई ।।
रे मिआ समसेर सिपाही । का ते बोलत बात झुठाही ।।
बीस रुपया के तोर महीना । तेहिम पंद्रह कटे सलोना ।।
पाच मोदी के षरचा दीन्ह । जब मोदी के किआ हिसाब ।।
पिछे वेष डोपटा फारि । सोच करत डेरा पर आए ।।
पीछें वनिआ दवरल आए ।
तुरपट डरपटे अपना । बहुअरि के मुह देषत सपना ।।
षा चाउर चार हाट । कवही न सोअ परिके षाट ।।
छुरी वेचि के षा पिसान । तब सोच वर भला किसान ।।
एतना बात किसान निवाही । तबे आर उठि बोले सिपाही ।।
तुम महतो जोत षेत । तोहरे वहुअरि ढोए षेप ।।
तेहरे षेत मे होए वाना । तोहरे लरिका करे वेसहना ।।
बारह के तेरह धइली । उजुर कर मुह थपरा षाय ।।
एतना वात जो कवितन कही । वनिअइला के दुनो भली ।।

--पूर्ण प्रतिलिपि

विषय--किसान और पुलिस के सिपाही मे अपने अपने व्यवसाय के संबंध में वादविवाद ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये है। परंतु रचना को पढ़ने से पता चलता है कि यह बहुत पुरानी है, क्योंकि अंग्रेजी राज्य में पुलिस के सिपाही को जो वेतन २०) मिलता था उसका इसमें उल्लेख है। पहले सिपाहियों का वेतन कम रहता था। रचना ग्रामीण जान पड़ती है। भाषा भी ठेठ ग्रामीण ही है। अत इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

संख्या ५०६. कोक कलाधर, कागज--देशी, पत्र--८०, आकार--७ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१५, परिमाण (अनुष्टुप्)--१०१२, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० सरजू कुमार ओझा ग्राम व पोस्ट--सिरसा, जिला--इलाहाबाद।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कोकशास्त्र भाषा बचनिका लिप्यते ॥

॥ सोरठा ॥

स जयति कृष्ण कुमार कामदेव कमनीय छवि ।
अति मति रति भरतार रुति वसंत करि मितवर ॥ १ ॥

॥ बचनिका ॥

इहां श्रीकृष्ण जी के महाराज कुमार कामदेव तिनको मंगलाचरन कियो है अब कामनीन को भोग बरनन करत है ॥ यह संसार असार है ॥ यामैं कछू सार नही है ॥ जैसे मुसाफर सराय मै आन बसत है ॥ परभात हो चला जाय है ॥

अंत--और कहत है ये नायका तीन भांति ॥ की सब है स्वकीय ॥ परकीया ॥ सामान्या। स्वकीया आपकी व्याही कहिये ॥ परकीया पर स्त्री कहिये ॥ सामान्य सो जो धन लेकै प्रीति करै बेस्या फेरि ॥ स्वकीया तीन भांति की मुग्धा ॥ मध्या ॥ प्रौढा: ॥ मुग्धा के दो भेद है ॥ ग्यात जोवना ॥ अग्यात जोवना ॥ और परकीया ॥ सामान्या इनके भेद लक्षन है सो सिंगार रस के ग्रंथन मै अनेक भांति है सो रसिक विचार लेत है ॥४॥

इति श्री कोक कलाधर ग्रंथे अस्त्री पुरस नायका कोक विचार षोडश कला ॥१६॥ भेद अस्त्री पुरसन को कोक संपूर्ण ॥१॥ लिखतं बलदेव ब्राहामण लेखक बासी अलवर को लिषायतं षा साब कुतुब अली धर्म मूर्ति धर्मात्मा ॥ मिति पौस शुक्ला ॥६॥ शनिवासरे ॥ संवत् १६०७ का श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय--कामशास्त्र का विषय वर्णन।

संख्या ५०७. गर्भगीता, कागज--देशी, पत्र--३, आकार--८ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--३६, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--पं० स्वामीनाथ दुबे, ग्राम--दुबौली, पोस्ट--खुखुदू, जिला--गोरखपुर।)

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

जय जय उचारो । धनिद्धान धारो ॥
सजो मन्ये कारो । भजो प्रान प्यारो ॥
माहाराज राजा । भगतीभाव साजा ॥
जबै गर्भ वासा । कियो मान पासा ॥
वने माथ हाथा । चर्न पीठिसाथा ॥
लगे पेट ग्रीवा । उलटि साथ सीवा ॥
रकत मासु हड्डि । तचा रोमे गढि ॥
तक्री आतलेजा । फुफुस्सा करेजा ॥

कियो दसो द्वारा । ताहा प्रानप्यारा ॥
मूले मंत्र कारा । श्रोर्गानि श्राच पीरा ॥
बनो श्रष्ट माता । श्रधमुख झुल्लता ॥
भवो कष्ट भारी । कहता पुकारी ॥
नरक ते नीकारो । हो बंदा तिहारो ॥
करो भगता ऐसी । कहे काहु जैसी ॥
चरन चित लावो । न काहु बुषावो ॥
दश्रा कय दश्राला । उहा ते नीकाला ॥
:o: :o: :o:

श्रंत—धरी क वजावे सुमुझी जिव न श्रावे ।
हराधन वीराना दसन लाल गावे ॥
महा मस्त होए रुडमाला कहावे ।
कर ताका नान्दा नगीचे न श्रावे ॥
बालोके सस्यारा मनहीं मन सीसारा ।
जगत जार सारा जो बन्धन हमारा ॥
करते कलादेषी ऐसो बीचारा ।
लगे द्रुत गे विपल गेय न्जारा ॥
कते बएद बेठे कर श्रोषदाइ ।
कते को करे श्रापु संसे श्रोझाइ ॥
कते जत्र तावीज लीषे लीषावे ।
कते सगुन साधे झाराव फुकावे ॥
कहे श्राज ऐसा भीले जो जीवावो ।
बराबर क श्राभारसो नेसो पावे ॥
जबहु गुजुती जगदीस ऐसी बनाई ।
तजहु राम के नाम निश्चेन श्राई ॥
परी बुझी एह दाय सगो न साथी ।
षजाना रुपैया सुनइश्र जाहाही ॥
रही सुंदरी सो जहाही तहाही ।
कमई समुझि श्रन्त श्रावे रोश्राई ॥
गए जन्म ऐसो भक्ति होए न श्राई ।
चलावे चहही जाहा जगदीस रइया ॥
भइश्रा कहहो ताको को रषवइश्रा ।
दइ कोन जाना दिश्रा सो बुताना ।
दगी रीत गीरी श्रौ थाना नीसाना ॥
पजाना पश्राना पुकारत लोगु ।
रो श्रन्ते कवीला परे मुड सोगु ॥
जना चारी श्राए उहाते उठाए ।
श्रग्नी ते जराए नदी मो वहाए ॥
यवं एक कन षोदीषादे गडाए ॥
सो देवाना साहेव सलामती कहाए ॥
प्रबोधो ....
:o: :o: :o:

—श्रपूर्ण

विषय--जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत अज्ञानी मनुष्यों की दशा का वर्णन करके ज्ञानोपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य--रचना के केवल आरंभ के तीन पत्रे उपलब्ध हुए है। रचनाकाल तथा लिपिकाल अप्राप्त है। रचना का नाम पत्रे के कोने पर ग० भ० लिखा है।

संख्या ५०८. गीता भाषा, कागज--देशी, पत्र--६६, आकार--६½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६३८, खंडित, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८४४ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री प० सदाशिव जी, ग्राम व पोस्ट--बदलापुर, जिला--जौनपुर।

आदि--......................... ।

श्री कृष्ण भगवान जी अरर्जन का रथ दोनो सेना के बीच ले षड़ा कीया ।। भीषम अरु दोनचार्ज के सनमुष अरु उनके दाहिने ।। दाहिने डौर डौर भी जोधा थे ।। तव श्री कृष्ण भग वान जी ।। अरर्जन कों बोलत भया ।। हे अरर्जन तेरा रथ मुझ दोनो सेना के मध्य ले षड़ा कीया हैं सो तूं इनको देषं ।। तव अरर्जन कैरों की सेना के जो जोधा देखे ।। कौन कौन देषे ।। पिता देषे अरु दादा देषे ।। अरु आचार्ज देषे ।।

:o: :o: :o:

संजेय उवाच ।। संजेय धृत राष्टर को कह्यो हैं ।। कि हे राजा जी अरर्जन एह वच्च कहकर धनष अर वान हत तें डार दीया ।। साग के समुद्र विषे मगन मुर्छा को पांइ कार गिइया ।।

इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन विषादो नाम प्रथमोध्याय ।।

अंत--......................... ।

अब हे राजा जी मेरी वात निश्चै करे सुन जिस ओर जोगेश्वरों के ईश्वर जो हैं श्री कृष्ण भगवान सच्चिदानंद पुरुष श्री वाजमान हैं अरु जिस ओर गांडीव धनक का धारनहारा जो हैं अरजुन भक्त तिसी ओर लछिमी हों अरु तिसी ओर जैहै मेरी वुद्धि विषं निहचे है यः वात तू भी अपने मन विषे यः वात जान डोडक्यावात जिनके माथे पर श्री कृष्ण भगवान जी पार ब्रह्मजी वाजमान हैं एसे जो हैं वड़भागी पांडव तिनकी जै होवैगी अरु तेरे पुत्र अंधमती हारेंगे इस बात मैं कुछ संदेह नाहीं ? इति श्री भगवद्गीता............अष्टा दशमोध्याय ।। शुभमस्तु सर्व जगत। संवत् १८४४ आषाढ़ शुक्ल १५ शनिवासरे..............

विषय--गीता का भाषानुवाद।

संख्या ५०९. गीतासार, कागज--देशी, पत्र--७६, आकार--४¾ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--३६६, खंडित, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान--प० बेचनराम जी मिश्र, ग्राम--पंडित का पुरा, पोस्ट--जंघई, जिला--जौनपुर।

आदि--.....................**वत पीवतं ।। तिसकी..........**

तिसको गुरु की कृपा दृष्टि भई ।। सुरत रषे का सुरत पसारे का फल होइआ ।। लोकन के उपकार वास्ते गुरु दुर्लभ है ।। त्रैलोकी विषं ऐसे गुरु ।। गुरु बिना ब्रह्मा भी नाही ।। अरु गुरु बिना विष्णु शिव भी नाहीं ।।१६।। बेद शास्त्र पुरान अरु कथा ।। ऐ सभु गुरु के गीत है ।। मन करके जिनोने गुरा का चरनामृत पीआ ते अमर होए ।। बेदशास्त्र इसुको मुक्त नहीं कर सकते ।। मुक्त गुरु करते हैं ।। त्रिलोकी विषे गुरु को का षीजो है। तिनु के जाणन हारे सोई है ।।१२।।

जेते सति करमु है जितनी आ साधना है चोटी अर विहंगमु ते आद लैकर बहुमत जो है ।। सो भी भरमे हैं ।।१८।। जी की भ्रांत जावै । सो सत गुरु विनां जाता नहीं ।। भावे जगु करै भावे दानु करै ।। तप करै वृत करै ।। जपु करै तीरथ करै ।। एह मूड़ा मनुष जो है ।। गुरु तत को नहीं जाणत ।। तब मूँढा एह क्रिया करता है ।।१५।।

अंत--श्री कृष्णमुष वाक है ।। गंगा गीता गायत्री गुरु गोविंद एह पांचो रागु करै । सो पुनर्जन्म को न पावै ।। जे कोई ससार गीता का यथा विध अभ्यास करन आणे सो पाठ मात्र करै ।। सो भी विष्ण के विदमान जाई प्राप्त होव। इस ते बहुता क्या कहो ।।

इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जन संवादे गीतासार संपूरणं ।।

विषय--गीता का संक्षिप्त हिंदी अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण है । प्रारंभ के ७ पत्र नहीं है । आठवाँ पत्र भी फट कर आधा रह गया है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल महिम्न स्तोत्र के आधार पर संवत् १८५६ है । ये दोनों ग्रंथ निम्नलिखित अन्य ग्रंथों के साथ एक हस्तलेख में है --

१ महिम्न स्तोत्र (संस्कृत), २ साबर मंत्र, ३. वेद गोरखनाथ जी का--गोरखनाथ-कृत, ४ गोरख बोध--गोरखनाथ कृत ।

संख्या ५१० गोपीचंद की कथा, कागज--देशी, पत्र--२ (खर्राकार), आकार--१५ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६०, परिमाण (अनुष्टुप्)--७५, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८६४ वि० (संभवत.), प्राप्तिस्थान--पं० सीताराम जी, ग्राम--मानपुर, पोस्ट--बारा, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--ॐ श्री गणेशायनमः ।।
चंदन चौकी सोवनी जल गंग कराया ।
नाय धोय बैठे गोपीचंद राजा ।।
हाथ बीच फउलइ मोतियन माला ।
देष मणावंती मूरती इंद्र राजा नषड़ी लगाई ।
न कोई अवली न कोई बदली बरसत बूंद कहासे आइ ।।
ध्यान धरके देषल्यो भला कलप तेरी मणावंती माई ।।
गौड बंगाला धूम धाम बसया मेरे नगर बीच दुषीया नहीं कोई ।
पाचें तहरे तन के कपड़े चलमलाँ सूरत उठाइ ।
एक क्षण लघिया दोषण लघिया सभ मलम मणावंतिमाइ ।
मन दिया बातां षोल दे क्या मजलस तेरे मन आइ ।
रे बचा ऐसी सूरत तेरी तेरे बाप की ।
गोपीचंद लाल जल बल हो गई भसम की ढेरी ।
गोपीचंद लाल काल जगल मम फिरी गो० ।
मनु नगर न आइ लाल भसम की ढेरी जी गो० ।।

:o: :o: :o:

अंत--

चलो नगर मेरे गोपीचंद लाल राज करो षड़ी बुलावे मणावंती माई ।
राज करेथा जब जाग (? जोग) दिलादिया जोग हरन कु धरणम आइ ।।
कोण सी राणी रे गोपीचंद पोंन करेगी कोंण करेयगी बाता ।
परवा पछवा पौन करेगी रयैन करेगी बातां रि म० ।।

कहां ज मिडत माविये कांहा ज कैये सोला सै रांणि रे गो० ।
रुषां ग्ररषां मंडित माडिये मैला छोडि सोला सैं रांणिरि मे० ॥
कहा ज कैये लाल पलग डिरे (? पलंग) डेरा रे गो० कांह ज कैमेगरम तुलाई रे गो० लाल।
धरतिमाता मेरि लाल पलगडिरि (? पलग डेरा' म० बाषनमाणि गरम तुलाईरेग० मा।
कहां ज कैये रे गोपीचंद सोला सै राणि कहां ज कईये माणावंति माय ।
रुषा ग्रछा सोलसै राणि मरण० मा...............

——ग्रपूर्ण

विषय——राजा गोपीचद की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——रचना दो खर्राकार पत्रो मे लिखी हुई है। दूसरा खर्रा पहले खर्रे से लगभग २॥" छोटा है ग्रौर उसकी दूसरी ग्रोर १२ पक्तियाँ ग्रौर लिखी है। रचनाकाल, लिपिकाल ग्रज्ञात है।

संख्या ५११. चरणचिह्न, कागज——देशी, पृष्ठ——७, ग्राकार——६॥ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२४, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)——८०, पूर्ण, रूप——साधारण, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——स० १८४१ कार्तिक कृष्ण ७ भृगी, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० ब० ७६, पु० स० ११३ ।

ग्रादि——॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ ग्रथ चरण चिन्ह ॥ दोहा ॥
चरण चिन्ह हरि के लिखे उघरन विद्ध प्रकार॥
भक्तन के ग्रंग ग्रंग के लसत सु चिन्ह ग्राकार॥ १ ॥
विरह प्रथम उपजे मनहि जोवन उपजत गात॥
तपति रहे ग्रंग ग्रंग प्रति लजि लज्जा संकात॥ २ ॥
भक्तन के तन विरह लगि उपज्यो जिय के संग ।
सदा सहाय हरि के चरन प्रगट धरत ग्रंग ग्रंग॥ ३ ॥

मध्य——पृ० ५
नेना में की पूतरी चपल मीन के भाय ।
हरि चरनन परसी जबे रही सरोवर जाय॥४०॥
हरि पद में झख यो लसे झख में लसे जु काम ।
ब्रज बाला मन मेन को बन्यो ग्रनूपम धाम॥४१॥
मीन मनोहर देखिये कहूं न छिन ठहराय ।
कबहुक हरि पद में रहे कबहुं तिया द्रग जाय॥४२॥
हरि के चरन हे चपल ग्रति तिय के नेन सुहाय ।
इन उनके द्वे मच्छ मिलि क्रीडत ग्रद्भुत भाय॥४३॥
पिय द्रष्टि चरनन गई बसत मीन ढिग ग्राय ।
त्रिय द्रग रूपी मछ यह विहरन कों रह्यो पाय॥४४॥
भोंह धनुख कों परसि के चरन चपल द्रग होय ।
नृत्य समे इक छंद में भक्त भृकुटि सम होय॥४५॥
भोंह चढ़ाई तीय जब काम केलि समरथ्थ ।
पिय चरनन धरि यों लसी जीति ग्रनंग सुहथ्थ॥४६॥

ग्रंत——चरन चिह्न हरि के लिखें धरे भक्त ग्रंग ग्राय ।
मंडित सुंदर देखिये कुमकुम दियो सुभाय॥५८॥

चिह्न चित्त ए जिन धरे भक्त अंग सम भाय ।
ताकों रछा ही करो हरि पद सदा सहाय ।।५९।।
हरि चरनन भक्त अंग को दुहुं मिलि करत कल्यान ।।
चंदन गोपिन को रच्यो मट्टी भई सुजान ।।६०।।
सरोवर हरि के चरन में तीरथ चहूं समान ।
भक्तहित अंग अंग में गयो जुडर अग्यान ।।६१।।
चरन चिह्न चिंतन करे भक्त अंग के भाव ।
दुख दरिद्र विपरीत ते तरचो प्रेम की नाव ।।६२।।

इति श्री मत्प्रभु चरणारविंद चरण चिह्न भक्त जन अनुराग उदित संपूर्णः ।।
संवत् १८४१ कातिक कृष्ण ७ भृगौ लिखितं मोहन दासेन ।। तापी पुरे ।।

विषय––ग्रंथ में श्री भगवान् के चरण चिह्नों का वर्णन किया है और किस-किस चिह्न के ध्यान करने से भक्तों के क्या मनोरथ सिद्ध होते हैं इसका भी वर्णन है ।

संख्या ५१२. चार कवीश्वरों की वार्ता, कागज––देशी, पृष्ठ––२०, आकार––१० × ८।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––२८, परिमाण (अनुष्टुप्)––२८०, पूर्ण, रूप––पुराना, गद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल––सं० १९०, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ५७, पु० सं० २ ।

आदि––अथ चार कवीश्वर की बात लिख्यते ।। चार कवीश्वर कमाय के घर खेम कुशल सों आए तब अपनी अपनी स्त्री जल की झा(री) लेके घर के चोक में चोकी बिछाय के आपने पति के पाव धोय के घर में ले गइ तब राय का घर में गयो तब वाकी स्त्री चोकी बिछाय आपने पति को पाय एक तो धोयो फेर राय की स्त्री बोली जो दूसरो पाय नीचो धरो तो धोऊं तब राय बोल्यो जो तुम भी इतकुं आय के पाव धोय जाओ, तब राय की स्त्री ने बोल मारचो सो एसो तुमने दीन दिल्ली के पातसाह सो काहा वरसो सन काहा करवाय के लाए हो । सो पीछाडि पुत्र पुत्रादिक कहा खायगे, केसें निर्वाह करेंगे सोमे दूसरो पाप धोउं ।

मध्य––पृ० ६

तब पातसाह ने फेर हुकम कियो जो इनकुं मराए चहिये मुकर चोर हे ये बड़े बड़े भले आसामी की इजत लेते हे । अंदर की बात ज्यों की त्यों कहते हैं मुकर मारे हि चाहिये, ये जने जने का परदा उघाडत हें इनकु मुकर मारोहि चहिये, जब फेर बीरबल बोल्यो जाहापना मुकर चोहे चार दिन ताई आपके पास रहे । अब दो दिन मोकु हजूर बकसिये ।

अंत––फेर चारों जन कमाय के घरकुं आए तब राय की बहु ने दूसरों पांय दूध सों धोय के आपने पति के ऊपर नोछावरि रुपैया ५००) खेरात करके आपने घर में ले जाय आछी भांत भामन भोजन करवाए, फेर रात फुं खुब केलि करके चोपड खेलत भए । पाछे वार्ता संपूरण भई ।। लीखतं श्री गोस्वामि श्री गोकुल नाथात्मज पुरुषोत्तम जी जो वांचे ताकुं जै श्री कृष्ण । संवत्-१९०१ ज्ये० सु० ११ को संपूरन ।

विषय––चार कवीश्वर कमाने के लिये गए तो बीरबल के द्वारा बादशाह के पास पहुँचे । वे सरस्वती के बल से प्रश्नों के उत्तर कवित्तों में बराबर देते थे । बाद में बादशाह ने चारों को चार लाख रुपया और घोड़े, हाथी प्रभृति पारितोषिक देकर विदा किया ।

संख्या ५१३. छंदशास्त्र, कागज––देशी, पत्र––३, आकार––६$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{15}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––८, परिमाण (अनुष्टुप्)––२०, खंडित, रूप––पुराना, पद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—— :o: :o: :o: :o:

......................वर राघव भजिये ।
बलहि कुसंगति तजिये ।
नित सत संगति करिये । भव भय सागर तरिये ।।

इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा उ०

ततज गुरु द्वै अंत में इंद्रवज्र सुछंद ।
जतज अंत में दोय गुरु पेंद्रवज्र सुख कन्द ।।

इन्द्रवज्र उ० ।।

।। छंद ।।

गोवर्धन गोपाल हरे मुरारी । श्री राम ब्रह्मादिक दुःखहारी ।।
भक्तानुकंपान्वित वृत्त धारी । लंकेश नाशाय नमो बलारी ।।

अंत——सुभग छंद ल०

।। मात्रा ४० विश्रामा ४। दस दस के ।।

।। दोहा ।।

सुभगमत्त चालीस दस दस परि बिरति श्रमद ।
कवि कोविद यासो कहत सुभग छंद सुभ कंद ।।

।। छंद ।।

जब चलत दसरत्थ सुत राम समरत्थ युत्थ मिलि हत्थि मद मत्त गरजंत ।
वर सुंडि फुक्कार धुक्कार धौ साहि धुनि धनुष टंकार हुंकार सावंत ।
रथ चक्रधर हरनि धर वधरा हरनि वर बाजि षुर षेह डुडि सूर ढयत ।
सटपटत लंकेश अटपटत दिग्गज रुलैं पटत चपि सेष फन कमठ...

:o: :o: :o:

——अपूर्ण

विषय——छंदशास्त्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ के केवल ३ पत्रे (संख्या ११, १२ और १४) उपलब्ध हुए हैं। रचनाकाल और लिपिकाल ग्रंथ खंडित होने के कारण अज्ञात है ।

संख्या ५१४. छप्पन भोगोत्सव विधि, कागज——देशी, पृष्ठ——५, आकार——११ × ५। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२०, परिमाण (अनुष्टुप्)——१६०, पूर्ण, रूप——साधारण, गद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सं० १९४७ के पूर्व, प्राप्तिस्थान——श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या-विभाग, काँकरोली, हि० ब० १०७, पु० सं० २० ।

आदि——।।श्री मते कृष्णाय द्वारकेशाय नमः ।। अथ छप्पन भोग की विधि लिख्यते ।। प्रथम आछोदिना दिखाया के जा ऋतु में पुष्पफल बहुत होते होय ता ऋतु में यह मनोरथ करनो । अब मुहूर्त निकसे तासूं पहिले दस पन्द्रह दिना आगे का ढाई को मूहूर्त देखके कढ़ाई चढाइये और आछो दिना देखि वस्त्र सिद्ध कराइये । ताकी विधि । श्री नंद राय जी के वस्त्र धोती १ मोंहों रेसमी कोर की सुपेद ।।

मध्य——पृ० ३

ता पाछें समें होय तब भोग सराइये । भोग को समय अढाई घड़ी को करिये ता पाछे सब ठोर आचमन मुख वस्त्र कराइये । बीड़ा बीड़ा दोय सब ठोर धरिये ता पाछे श्री नंदराय जी को फेंटा बांधी राख्यो होय सो या बेर पधराइये और बीडीतो नित्य की श्री ठाकुर जी अरोगें सोही होंय और बीड़ा १० श्री ठाकुर जी के अधिक धरिये ।

अंत——ता पाछें भाव सूं जगमोहन के द्वार तांई सब पोहोंचायवे कूं जाय ता पाछें आय कें क्रम सूं सब ठोर को शृंगार बडो करि आभरण वस्त्र सब ठिकाने धरी ताला मंगल करिकें बाहर आइयें। ता पाछें सेन भोग को महा प्रसाद राब बेटके अवश्य लें ही।

इति छप्पन भोग को उत्सव की विधि संपूर्ण भई ॥

विषय——पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय में अन्नकूट की भांति विशेष आयोजनों पर होने वाले छप्पन भोग का वर्णन किया गया है।

संख्या ५१५क. जग समाधि, कागज——देशी, पत्र——११, आकार——७½ × ६ २/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——११, परिमाण (अनुष्टुप्)——१५०, अपूर्ण, रूप——प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि——कैथी, प्राप्तिस्थान——काशीनागरीप्रचारिणी सभा (ग्रंथदाता——श्री छेदीराम बरनवाल, ग्राम व पोस्ट—सादात, जिला—गाजीपुर।)

आदि——. . . . .

मीन मछी कए करम चडा ॥
मीन मछी कें परसहु पांउ ॥ नरक खानि के जइहहु राउ ॥
मीन खाइकें देइ असीसा ॥ के अघ जन्म भुगुते सोइसा ॥

॥ साखी ॥

छत्री जो दुख देत है ॥ चहु दीस ठाढ़ कवंध ॥
बीना जग ना बाची हो ॥ हत्या करम जवंध ॥

॥ चौपाई ॥

जग बीना नहीं क्रम कटाइ ॥ नीरगन बीना लोक ना जाई ॥
:o: :o: :o:
जग सांग कें मंडप छावो ॥ राए दुदीरटील जग फैलावो ॥
:o: :o: :o:

॥ साखी ॥

एही बीधी जग सुधारहु ॥ मानहु दुदीरटील राए ॥
हत्या करम जब मीटे ॥ जम्हपुर धरो न पांवो ॥
:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

पंडो नंदन सुनो काहा हामारा ॥ सतगुर मेख न आए ज्यैनारा ॥
संत बीना नहीं घंटा बाजा ॥
सत गुर मेख जौ आवएे कोइ ॥ बाजए घंट सांग जग होइ ॥
:o: :o: :o:
संत लोक के सुपच बासी ॥ इन्हके सदा सत परगासा ॥
सुपच संत मुक्ती के मुला ॥ सात कोट इनके नहीं तुला ॥
:o: :o: :o:

अंत——

॥ साखी ॥

जग्य सांग जब हो रहएे ॥ बाजै घंट अकास ॥
गुनी गंध्रप सभ आएे ॥ जै जै होएे परगास ॥

॥ चौपाई ॥

सात वार घंटा धुनी भैउ ॥ काल जंजाल के संसे गएउ ॥
श्री कीस्न दवारीका आएं ॥ राऐ दुधीस्टील मस्तक नाऐ ॥
गुनी गंध्रप मुनी सभै सीधाऐ ॥ सभनि मोली अपने अस्तम आऐ ॥
भगत सुदरसन प्रथम गऐउ ॥ हरख आनंद राजा के भऐउ ॥

इतीश्री जग संनाधी कथा जो पत्री देखा सो लिखा................ ।

विषय—राजा युधिष्ठिर के यज्ञ और सुपच भक्त की कहानी का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । समस्त ग्यारह पत्रे उपलब्ध हैं । अपूर्ण होने के कारण रचयिता, रचनाकाल और लिपिकाल आदि का कुछ पता नहीं चलता ।

संख्या ५१५ब. जगसमाधि, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ १/२ × ५ १/६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत गणेशधर दूबे, ग्राम—धीरपुर, पोस्ट—हंडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—अज अचित पु...कविर ॥ लीं० ॥ अथ जगसमाधि ॥
पाषंड धर्म केर सम साजा । सुमिरत नाम सकल भ्रम भाजा ॥

॥ साखि ॥

मनमम वाचा कर्मना नाम भजे जीअ जानी ।
नाम सुधारस पीये सत सब्द पहिचानि ॥
भयो किआ पंडव जग गाढ़ी ।
सही द्रौपदी...अनऐसी ठाढ़ी ॥
अंत समै भारथ कर भएऊ ।
पंडु नंदन अपने ग्रीही गयेऊ ॥
तहमा कौतुक देषा राजा ।
गए दुदीस्टिल कीस्न के पासा ।
डंडवत प्रनाम कीआ बहूरा ।
बैठे पंडव हीत हरी केरा ॥

॥ दोहरा ॥

दीन देआल दालीद्र दुष हर्न श्री गोवींद ।
राये दुदीस्टील भाषेयेउ वहू वीधी पर्म आनंद ॥

अंत—सुपच भगत अस भाषही श्री कृष्ण सुनी लेहु ।
मुक्ती भेद नहीं तोहरे सो हम भगत सं लेहु ॥

॥ श्री कीस्नौवाच ॥

तुम्हतो निर्गुनि भगत हौ मुक्ती महातम मूल ।
त्रीगुन त्रीगुन रूप हम वर्तही हमरैं संसै सूल ॥

॥ सुपचौवाच ॥

माआ वडी की कुल वडो की वडो ससार :
सभते मेरा साहेब वडा जीन्ह जीउका कीन्ह उधार ॥
येती जज्ञ महातम सपुरनौ जो देषा सा लीषा ममो दोष न दीअते ।
इति श्री दुदिष्टील चिंता जज्ञ समाप्त सम्पूर्ण श्री सम्वत् १९१५ ॥ मिती ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे सप्तमा तिथौ नक्षत्र परीवासरे नाम्ना श्री राम ॥

विषय—भारतांतर्गत सुपच की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल का कोई पता नही । लिपिकाल संवत् १६१५ वि० है ।

संख्या ५१६. ज्ञान स्वरोदय, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८४५ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० ब्रह्मादत्त जी पांडे, ग्राम—कनेरी, पो०—फूलपुर, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

हरता करता जगत के धरता है हर ईस ।
सुरनर मुनि वंदित जिन्है तिन्है नवावत शीश ॥ १ ॥
सब जीवन को जीव है सब प्राणन को प्राण ।
सर्व विधिण को वृध्य दु सब ज्ञानन को ज्ञान ॥ २ ॥
गोपि असुर सुर नाग नर काहू लख्यो न जाय ।
पारवती पति प्रगट जगकरि में दियो चलाय ॥ ३ ॥

॥ सो० ॥

अब हौं भाषा करत हौं सतगुरु के परताप ।
सर्व सिध्य को जो करैं हरैं त्रय गुनि ताप ॥ ४ ॥

अंत—वार नछत्रन जोग तिथि कारन सरे न काज ।
अमृत वेरा सुर उदै सर्व सिद्धि में राज ॥१३१॥
और शास्त्र जो ना पढ़ै एक सुरोदै होइ ।
निभं ताको राजु है विधना करैं शो होइ ॥१३२॥

इति श्री उमा महेश्वर संवादे ज्ञान सुरोदै समाप्तः । वुंदेलखंड मध्ये परनानगर्यां मध्ये युगुल किशोरि समीपे इदं पुस्तक सुषमा राघ्याः लिषितम् समत् १८४५ शाकाब्द १७१० फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे द्वितीयां गुरु वासरे इदं समाप्तः ॥

विषय—स्वरोदयशास्त्र का वर्णन ।

संख्या ५१७. त्रैलोकनाथ श्री लाल लाडिली जू की चोसठ घडी को शृंगार, कागज—देशी, पृष्ठ—५१, आकार—८॥ × ७॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८६, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८२, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० १०६, पु० सं० १० ।

आदि—॥ श्री ठाकुर जी श्री गणेस जी श्री गोपीनाथ जी सत.। अथ श्री त्रैलोक नाथ जी श्रीरी लाल लाडिलो जु की चोसठ घडी की पुजा लिख्यते दो घडी पाछली रात रहे तब श्री लाल लाडिलो जु कु जगावे कु सखी आवैं श्री ललिता वीसाखा श्री चपलता श्री चीत्राजु आदि देके रूप मंजरी श्री लवंग मंजरी श्री रती मंजरी, श्री गुण मंजरी रस मंजरी, श्री आदि दैके सब आएके जगावैं ।

मध्य—पृ० २६–२७

सभी भोजन की सामग्री लावें, कदली फल डाडीम रस अमरस, दाख चारोली और अनेक प्रकार की सब नीको सामग्री श्रीलाल लाडली जु को आरोगावे परम वासीत जल करीकैं आचमन करावैं कपुर आदि दै के सुगंध बीज आरोगावैं ॥

अंत—भाद्र पद मासे इन्द्र पुजा नंदीसर ग्राम आसोज मासे कुंड पुजा पीठर वरे कार्तिके मासे दीप यात्रा श्री गोवर्द्धन मागसीर मासे नृसिंह पुजा नंदसर ग्रामे माघ मासे सीवयाशमीन ग्रामे—फागुन मासे वसंत पुजा श्री वृंदावने इति श्री ठकुरानी जी की सप्त वार द्वादस मास पुजा विधान। संमत १७८२ वृषे मागसर सुदी ६ रवौ श्री उदंपुर ठाकर श्री श्री श्री श्री श्रीलाल विहारी दास जी वाचनार्थ चीरणजीवी श्री श्री कीरपा राम जी रखी पुत्री अमर कुवर बाई वाचनातु लीखतं वसनु पुत्री जगीसा बाई वाचे जणी थी ज श्री सुमरण—

विषय—भक्ति सम्प्रदायांतर्गत श्री हित हरिवंश सम्प्रदाय की सेवा पूजा मे श्री स्वामिनी जी श्री राधिका जी की सेवा का क्रम वर्णित है।

संख्या ५१८. दाता कर्ण, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—७१/१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, खंडित रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि— ....। जेही ते होत वल वुधी अपारा
जेही सुमिरे दुख दुरी पराइ तेही सुमिरो मै मन चीत लाइ
ऐक वात मोरे मन आवा ताते मैं प्रभ पद सीर नावा
नाम अपार मोरी मती थोरी बीनती करो दुनो कर जोरी

॥ दोहा ॥

जासु नाम सुमीरत सुलमान मेठै सकल दुख भार
बरनो "करन" कथा कछु जेही जानत संनसार

॥ चौपाई ॥

करन कथा सुनो मन लाइ जेही ते सभ कसट मीटी जाइ
वीसपाऐन कहै सुनो हो राजा माहाभारथ कथा सुनो रघुराजा
एक दीन हरी चींनता करइ देखौ करन दानी कस अहही
जे जौ मागं करन देइ सोइ करन समान दानी नहीं होइ
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

करन छलन के गऐउ प्रभु मरमो न जानत कोइ
करन नीकट प्रभु पहुँचे वुढ़ा ब्राभन होइ

अंत—फीरी राजा खोजन के गएउ
पुत्र आपन देखत भएउ
वडा हरष होऐ राजा लै आऐउ ब्राभन के प्रनाम कराऐउ
तव ब्राभन दीऐं आसीसा जीअहु सुत तुम लाख वरीसा
जो ऐह कथा सुचीत मन लावै चढ़ी वैवान वैकुंठ सीधावै
जो ऐह कथा के नींदा करीहै तीन्ह के तीनी प्रस नरक में परीहै
अव ऐह कथा संमपुरंन है सुनहु सकल चीत लाए
अपने अपने धाम को वीदा होहु हरखाऐ
अवोर ऐक वीनती सुनौ जो हमरे मन माही
मोरो नाम श्रीपति जीतुराम है सुद्र के कुल माही
धाम अपानो हम लीकते जांनत सकल सनसार
काशी के पुरुव गंजकी के धार गावो के नाम है गन्ह पुनास...।

विषय—राजा कर्ण के दान की परीक्षा का वर्णन ।

एक बार भगवान् ने ब्राह्मण का रूप धर कर्ण के राजद्वार पर जाकर पुकार लगाई । राजा कर्ण स्वयं उपस्थित हुए । ब्राह्मण ने कहा, 'मैंने सुना है, आप याचकों को मुँह माँगा दान देते हैं । मैं भी याचक हूँ । मेरा कल एकादशी व्रत था । कुल धर्मानुसार नर "मास" द्वारा ही मैं पारन कर सकता हूँ । अतः आप अपने पुत्र "वृषकेतु" का मांस पकाकर यदि मुझे दें तो मैं भोजन कर सकता हूँ । मैं क्षुधा से अत्यंत पीड़ित हूँ । न हो सके तो उत्तर दीजिए, मैं लौट जाऊँ ।'

राजा कर्ण भीतर गए । रानी पद्मावती से सब बातें कहीं । प्रथम तो रानी ने पुत्र-वियोग सहन में असमर्थता दिखलायी, परन्तु राजा के समझाने-बुझाने पर तैयार हो गयी । पश्चात् पुत्र वृषकेतु को बुलाकर यह समाचार सुनाया । राजपुत्र भी दानी पिता का पुत्र था । सहर्ष तैयार हो गया । पश्चात् भगवान् प्रकट हुए । राजा कर्ण को वरदान दिया और पुत्र फिर जीवित हुआ ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । प्रथम दो पत्रे लुप्त हैं । समस्त १२ पत्रे हैं ।

संख्या ५१९. द्रव्यशुद्धि भाषा, कागज—देशी, पृष्ठ—२८ (१९ से ४६ तक), आकार—१०। × ५।।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५५, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ६२, पु० सं० १/४ ।

आदि—।। श्री कृष्णाय नमः ।। भगवत्सेवांग भूत जो द्रव्य शुद्धि सो भाषा में लिखियत है । अथ शुद्धः रजस्वलाः चंडालः । महापातकी । सूतकाः शवस्पर्शाः शावा शौचीः । कूकर । चिताधूम्र । चिता काष्ट । देव द्रव्योपजीवी । ग्राम याजकः ।। सोम विक्रयी । मद्य । मद्य भांड । सस्नेह मनुष्यास्थि । इतनेन के छुवेते सचैल स्नान करनो ।

मध्य—पृ० ४१ अब गृह शुद्धि कहत है । गृह कों बुहारिये लीपीये तब शुद्ध होइ यह नित्य की शुद्ध धूम अधकार इनको पूर करे । भीतों को गोबर सों लीपे चूना सों धोले धोवे तो शुद्ध होइ । तब यथा संभव गृहण हू की । जाघर में मनुष्य मर्यो होइ ता घर में मृतिका पात्र रांध्यो अन्न काढि डारिये । गोबर सों लीपिये पीछें बकरा को फिराइये । पीछे वेद पात्र ब्राह्मण वेद मंत्र सो सुवर्ण जल कुशोदक सों प्रोक्षण करे तब शुद्ध ऐसे ही प्रसूति होइ तब जानिये ।

अंत—याते आत्म शोधनार्थ भक्ति प्रभृति सर्वथा कर्तव्या । यह भाषा में शुद्धि विवेक लिख्यो है । जो यामें संशय होइ प्रमाण बुद्धि न उपजे संस्कृत ग्रंथ प्रमाणापुर सर है सो देखनो । श्री कृष्ण शरणं सर्वेषां मम्तु सएव विशेषणाश्रयः स बुद्धिदाता च सर्वस्वश्च ।। इति पूर्ण ।।

विषय—स्पृश्यास्पृश्य विचार ।

संख्या ५२०. धनुर्मास भावना, कागज—देशी, पृष्ठ—६, आकार—१०। × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—११२, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य,—लिपि नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० १०७, पु० सं० २४ ।

आदि—मार्गशीर वदि १ ते धनुर्मास मानत हैं सो दंडकारण्य कात्यायनी व्रत कीयो हे सो यह मर्यादा पुष्टि भगत सों अंगीकार करयौ है सो आगले जनम ए अग्नी कुमार ऋषीश्वर हे सो तपस्या करत है, रामाअवतार में झारखंड में डंडकारण्य श्री राम जी बनवास कीये हैं तहाँ सीता जी अंक में बैठाय के रमण करत हे ।

मध्य—पृ० ३

और श्री राम जू हे सो पुरुषोत्तम है तिनकी भ्रकुटी सों प्रागट भये हैं सो मर्यादा पुरुषोत्तम है केवल विष्णु को स्वरूप है लक्ष्मी नारायण अक्षर ब्रह्म जेहें तातें मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी सो वर दीनो पाछें यह पुरुषेश्वर तपस्या करत अस्त्री रूप की प्रापति मांगत भये जो हमारो शरीर स्त्री रूप होइ सो ये पुरुष अहे इनको स्त्री रूप को हूओ सो कृष्ण भक्त हे शुद्ध वृंदावन रमण तहां जो स्त्री भावना होइ तब प्राप्त भई।

अंत--श्री जीविषे प्राप्त होन के लिये सब डंडकारण्य उछाहपूर्वक सब गावत श्री जमुना जी के उपकंठ विषे जात भई व्रत को आरंभ करचो सो श्री चन्द्रावली जी की कृपा तें श्री जमुना जी प्रसन्न होइगे सो चीनहरण करचो श्री जी रो घाट मर्यादा पुण्य स्थल हे तहां देवी को ठिकानों करकें सो उहां नीत श्रद्धापूर्वक सब एक चित्त सों जाइकें उहां व्रत करत सो पूजा की विध सब नंद गोप कुमार का करे और सब हेते उनके भा०।

विषय--पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय में विशेष अवसरों का सेवा शृंगार और राग भोग आदि विशेष भावनाप्रकार का नेकर किया जाता है। इसी प्रकार धनुर्मास (धनु, सक्रांति मास) में श्री भगवान् की विशेष सेवा प्रकार का वर्णन है।

संख्या ५२१. धनुर्वेद, कागज--देशी, पत्र--१५, आकार--६¼ × ६⅞ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--३१५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि--अथ धनुर्वेदः ईश्वर जो शिव तिन करि कह्यौ व्यास वादरायिणि नें कह्यौ जो और ग्रंथन विषै कह्यो सो सब संक्षेप करि हूँ लिखहुं ॥१॥ विनां शार्ङ्गधर ग्रंथ पढ़चा धनुर्वेद कौ तत्व वेत्ता किस्यो जो वस्त सुप्न में प्राप्त भई प्रभात कार्य समैं काम न आवै सो विचार ॥२॥ याही तें संदेह न मानें मन विषैं या ग्रंथ पढ़ै धनुषधारी चतुर वीर चितामणि सूं लिखे है जतन ॥३॥ जाके अभ्यास के प्रसाद करिकै धनुषधारी होय परसैन्या नैं जीतै ताकौ अभ्यास कहै हैं ॥४॥

मध्य--शर तीन प्रकार का कह्या स्त्री पुरुष नपुंसक आगे कुं भारौ जो होय सो स्त्री पाछैं कुं भारौ होय सो पुरुष ॥६१॥ बरावरि बोझ आगे पाछे होय सो नपुंसक पुरुष शर दृढ़ भेदिवा कै विषै श्रेष्ठ ॥६२॥ इति शर लक्षणानि॥

अंत--संपूर्ण तौ मरण न पावै पहैली सेना का तासूं धैर्य राखि शत्रूं कूं हतिये ॥२६॥ जीतें तौ लक्ष्मी पावै मरण होय तौ स्वर्ग पावे पृथ्वी कौ विस्वैं कीर्त्ति होय तासू धैर्य धारि करि शत्रु की सेना कूँ हनिये ॥२२७॥

इति युद्ध विधिः समाप्तं एते उपाय शिव कृत धनुर्वेद का है और व्यास देव का उपाय है इति शार्ङ्गधर विरचितायां पद्धत्यां वीर चिंतामणि नाम्नो धनुर्वेदस्य परिछेदः॥

विषय--इसमें धनुविद्या का विषय शार्ङ्गधर पद्धति पर वर्णन किया गया है।

संख्या ५२२. धर्म संवाद, कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--६¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१०६, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि--श्री गणेशाय नमः अथ धर्म संवाद लिष्यते।

हथनापुर एक नृपति धर्म को पुत्र कहावें।
इच्छया भोजन देह कनक कै पुत्र जीमावें॥
जिनको जस विहुलोक मै चलै सत्य कराय।
ते ईछा कर आवही जे इच्या करि देह कहत गुन धर्म जी॥ १॥

बंधु जिनके भोम पौरिवेज कहावैं ।
देह अधिक बलि धरैं आन करि सबैं हरावैं ।।
मंदिर जिनके कनक के होत है जै जै कार ।
ते इंछ्या करि आवही जे ईछ्या करि देह ।।

मध्य--

देह पलट कर मिले धन्य तु पुत्र हमारा ।
धन तेरी कौतामाय देह जस करी उधारा ।।
रिषी तपसी बोले सब शंख वाज धुनि होय ।
भोजन पाये कृपा करि जस सुफल फल होय ।।
सुनो गुनधर्म जी ।।४२।।

धर्म चरित्र पढ़ैं सुनैं जम निकट न आवैं ।
जमकौ मिटैं कलेस बास वैकुंठ न (?) पावैं ।।
धर्म समाधि कहै सुनौ सोरे मन को काज ।
जग मैं जाहर होत है जो गावत है दाल ।।४३।।

इति श्री धर्म संवाद संपूर्ण ।।

विषय--धर्म और युधिष्ठिर संवाद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत रचना एक गुटका मे है जिसमें निम्नलिखित ग्रंथ और है :—

१. चीरहरण--उदय कृत, २. बारह खड़ी--दत्तलाल, ३ हरिनाम माला--(संस्कृत), ४. उषा चरित्र--कुंज, ५ एक श्लोकी रामायण और भागवत (संस्कृत), ६. चोबीस अवतारों को यश--गोपाल कृत, ७ हरिगुन नाम चिंतामणि--गोपाल कृत, ८. बारह खड़ी (सुदामा)--गोपाल कृत, ६ श्याम सगाई--नंददास, १०. ग्वालिनी झगरो--माधो दास, ११. दानलीला (रेखना भाषा)--रामकृष्ण, १२. भ्रमर गीत--नंददास, १३. शनिश्चर कथा--अखैराम (सिंहासन बत्तीसी), १४ बारहखड़ी--विष्णुदास ।

संख्या ५२३. नामदेव चरित्र, कागज--देशी, पत्र--८, आकार--६ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८८, खंडित, रूप--पुराना, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० राम अनंद जी त्रिपाठी, ग्राम--दरवेशपुर, पो०--भरवारी, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--नामदेव श्री रामहिं जाना । . . . .

. . . .

पिता क अनुनित पूजा करई । तेह का नेम कबहुं ना टरई ।
करि अस्नान जेवे बह आवैं । बाल भोग नित दूध टढ़ावैं ।
ऐसे करत बहुत दिन वीते । दिन दिन अधिक प्रीति सो जीते ।
एक दिवस कहु गावैं चलऊ । पुत्र बोलाई कहत अस भयऊ ।
पुत्र एक अनु है नित मोरे । गावैं चल्यो भरोसे तोरे ।।
भृजो मैं कहे करउ तुम सोई । एहि सो आन बात ना होई ।
गऊ क दूध औटि जब जाई । एक कटोरा धरेउ जुड़ाई ।
करि अस्नान पटौ हलि पायौ । बैठि एकंत राम को ध्यावौ ।
तेहि पीछे तुम भोजन पायौ । अस कहि पिता गाउ को चलेउ ।

. . . .

दूध घटै न बढ़ै नहिं भाई । रहा नामदेव यक टक लगाई ।
पियहिं राम ना नामा टरई । बोलि बिचारि असंका करई ।
. . . .

॥ दोहा ॥

अंतरजामी आपु हरि मिले आनि जड़ जानि ।
रूप चत्रभुज बेषधरि, दूध पियौ हित मानि ।

अंत--

भय जेवनार सो भोग लगावा ।
नामदेव चरनन चितु लावा ।
भय अधूरात राम पुनि आए ।
गऊ रूप धरि छानी षाए ।

नामा की बसही गरियावैं । नै छानी यह गैया षावैं ।
नामदेव कह रघुवर आही । चुप करि रहौ और कोउ नाहीं ।
ते वे राम पुनि द्वारे अैया । उठे नामदेव हाथे खैया ।
षैचि षैचि घर आगे डारा । रामरूप धरि हाथ पसारा ।
अैचि अैचि घर आगे धरसी । कहु नामा तै या का करसी ।
प्रभु मुष वाइ मसकति कीन्हा । ताते कछुक बोत मैं दीन्हा ।
कहा राम तैं कैसे जाना । चरन कमल मैं हौ लपटाना ।
मागु नामदेव देउ सो तोही । चरन कमल तर राषो मोहीं ।
नित प्रभु मोहि दरसन दीजे । जग ते काढ़ि सो आपनि कीजै ।
फेरि नाम देव पोढे. . . . .

--अपूर्ण ।

विषय--भक्त नामदेव का चरित्र वर्णन ।

संख्या ५२४ निद्रा विलास, कागज--देशी, पत्र--११, आकार--८१/१० × ३४/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६३, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८४५ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० महेश प्रसाद जी मिश्र, ग्राम-लेदहा-बरा, पो०-अटरामपुर, जिला-इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

वंदो गुरु पद रेनु कृपा सिधु जस ज्ञान निधि ।
महा मोह अज्ञान दलन हरन दुष सुष करन ।
वंदो दोउ कर जोरि बालमीक सुक ब्यास मुनि ।
करिय कृपा करि मोहि ज्ञान सिध्य निधि सकल सुष ॥

॥ दोहा ॥

माहषमती बिमल वर देशा । तह बसु प्रेम प्रताप नरेशा ॥
एक समय नृप मंदिर जाई । सूतेउ सेज नींद नाहीं आई ॥
बोलेऊ नृप बचन तेह राती । नीद नगि बिकल बहु भांति ॥
रानी भवन कुअरि सुनि वानी । बोली बचन प्रेम रस सानी ॥
सुनहु कथा इतिहास अनूपा । तो पिय नींद होइ बहु रूपा ॥

कहेउ भूप सु प्रिया सयानी। जानति विमल कथा कछु रानी ॥
सुनहु भूप मम संग जो आली। नाम चमेली सुमति प्रिय वेली ॥
कहै कथा सोइ विविध रसालां। सुनतै नीद जनित महिपाला ॥

॥ दोहा ॥

कहेउ भूप सुनियो प्रिया तुरत बोलाइ ताहि।
काहै कथा इतिहास सोई नीद ज जनित न मांहि ॥
कहेउ चमेली सुनिय प्रभु कथा विमल रस स्वाद।
मेक गुलाब फुलाव अहि सुता सिंधु संवाद ॥

॥ चौ ॥

कोलापुर एक नगर सोहाया। तहा नृप सुमति सुजस जग छावा ॥
तासु नाम नृप मंगल धामा। महिषी तासु सुलोचनि नामा ॥
तनय अठारह तेन्ह जग जाए। बहु आनंद सकल पुर छाए ॥
तिन्ह को नाम करन जब भयऊ। तेहि दिन मुनि मुखेन तहां गएऊ ॥
प्रथम सुवन सुष मंगल धामा। बिमल विवेक समर संग्रामा ॥
अंग वंग कालिग कराला। ईभ इदु मण्द मराला ॥
कांचन कलभ सुलभ सुलताना। मकलपुर बसु मेक सुजाना ॥

अंत-- ॥ दोहा ॥

तवहि गुलाव फुलाव संग सुता सिंधु अहिराज।
प्रथम कुंआर संग मेक तत्र करि सुष विविध समाज ॥

॥ छंद ॥

कीन्हो विविध रस रंग भूपति सकल लिय गुण आगरी।
करि नीति नृप बहु रीति बहु बिधि यज्ञ करि सुरभागरी ॥
रानी विसद कीरति बषानी भूप मंगल मान की।
दीन्हो विविध बहु दान मंगल भूप द्विज सनमान की ॥
तव सिंधुजा अरु नागकन्या विमल सुत युग जाइये।
येहि भांति कीरति विविध मैं नृप सकल जग जस छाइये ॥

इति श्री निद्रा विलासे चतुर्थो विलासः समाप्तः संवत् १८४५ लीष सिवदत्त प्रथम अध्याये दोहा ॥१०॥ द्वितीये ॥१६॥ तृतीये ॥६॥ चतुर्थे ॥२१॥ चौपाई ४००।६५ (१४६५) छंद ६। कडी २१ ॥

विषय--माहिष्मती के राजा प्रेम प्रताप को एक रात नींद नहीं आई। उसकी रानी मदन कुवरि ने दासी, चमेली को आज्ञा दी कि वह पुरातन इतिहास की कथा कहकर राजा का मनोरंजन करे जिससे उन्हें नींद आ जाय। दासी ने कथा इस प्रकार आरंभ की --

कोलापुर के राजा का नाम मंगल था और रानी का नाम सुलोचनि। उनके अठारस पुत्र थे जिनमें राजकुमार मेक, गुणवान् और वीर था। राजा की इच्छा हुई कि राजकुमारो का विवाह उस राजा के यहाँ किया जाय जिसकी अठारह कन्याएँ हो। उधर चंपापुर नगर के सील-करन राजा और इंदुमती रानी के अठारह कन्याएँ थी। अतः दोनो ओर से विवाह संबंध तय हुआ। बारात चलते समय राजकुमार मेक राज्य की रक्षा के लिये घर ही पर रह गया। उसकी कटारी के साथ विवाह रीति सफल हुई। वापस आते समय मार्ग में अघासुर ने बारात को घेर लिया। उसने राजा मंगल से राजकुमार मेक माँगा। राजा सहमत हो गया और मेक को उसके

पास जाने की आज्ञा दी। असुर ने अपनी मुद्रिका देकर राजकुमार मेक से कहा कि तुम राजकुमारी गुलाब को लाओ। राजकुमार अनेक कठिनाइयों को पार करता हुआ मालतीपुर पहुँचा और चित्रकेतु राजा की रानी से उत्पन्न गुलाब राजकुमारी से विवाह किया। उसको लेकर अघासुर के पास आया। अघासुर गुलाब को लेकर सरोवर में छुप गया। राजकुमार गेंदा फूल की सहायता से गुलाब से मिला और वहाँ उसकी स्वसा फुलाव से गंधर्व विवाह किया। दोनों स्त्रियों की सहायता से उसने अघासुर को मारा और सकुशल अपने घर पहुँचा।

कुछ दिन पश्चात् पिता की आज्ञा से राजकुमार मेक सत्रह भाइयों सहित स्वर्ण मोरों की खोज में निकला। मार्ग में सिंधु सुता से विवाह किया जिसने उसको स्वर्ण मोरों का पता दिया। तदनुसार कूप के भीतर होकर मेक पाताल लोक के एक सुंदर नगर में पहुँचा और वहाँ नाग कन्या से विवाह किया। राजकुमार ने देखा कि नागकन्या के हँसने पर स्वर्ण मोर मुख से बाहर निकलते हैं तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। और उसको तथा सिंधु सुता को लेकर भाइयों सहित घर पहुँचा। सब लोग प्रसन्न हुए और राजकुमार अपनी स्त्रियों के साथ सुखपूर्वक जीवन बिताने लगा।

ग्रंथ में 'विलास' नाम के चार अध्याय हैं।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल संवत् १८८५ वि० है। रचना साहित्यिक है और प्राचीन कथा साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

संख्या ५२५. नीति के दोहे (अनुमान से), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, खंडित, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० भाईलाल जी, ग्राम—सिवराजपुर, पो०—शकरगढ़, जिला—इलाहाबाद)।

आदि—..............................

दिव्यनुतर सपने करि नहि कोकिल गरवात।
पिक रीनि किचको मेडुक अति इतरात॥४८॥
तजि गुरजन संग अरु सजन संगु नित ठानि।
करि निस वासर पुनि अ-विनस्यौइ सव जानि॥४९॥
नदी तीर के रूष जे अरु जो धन पर हाथ।
कंजति......जो ते पेतीनि अकाथ॥५०॥
फरे रूष सव नवत है नवत सवै गुनवान।
नवत न भेद...त (? जगत) दुइ सुष कुठ आजान॥५१॥
सो निवतु परलोक को धरम न करिवो जाहि।
टेढो आगनु कहतु है जो नही नाचन जाहि॥५२॥
सोचनिये नर अनपटौ अरु वित राजा राजु।
निराहार पर जारू विन संतति को रति काज॥५३॥
नीधनी नर को कहत है ये साचौ परिहार।
सति धरमु पवित्रता लाज वहुरि आचार॥५४॥
फरे रूष सेवत सबै वानर मनुज विहंग।
तवन लषत वारे हिये तव वेषत फल भंग॥५५॥

अंत—पुरी नषन ते आइये चलै करै मधुर जौ नार।
पढै चतुर आचार जत उहै रसोइदार॥१९४॥
सुभ वरसन जाहिर जसी पढै जु अउर वेद।
ओषध वेद विचारि कै ऐसो चहिये वेद॥१९५॥

कहै सत्य सब बात परि वचन चतुर मतिमान ।
जानै सब बेवहार सो मुह सो कहत सुजान ॥१९६॥
सालिहोत्र में निपुन अरु असवारी स्रम नाहि ।
होइ सुर...धिर जो तुरग सौंपिये ताहि ॥१९७॥
साचो सुमति सुसील सुचि विपति...छोरै न ।
दोष छपावै गुन कहै ऐसो सेवक ऐन ॥१९८॥

:o: :o: :o:

थिर ह्वो इंद्रि साधि कै कह्वो ऐसो धरि ध्यान ।

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—नीतिपूर्ण विचार प्रकट किए गए है ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक मे केवल छह पत्रे, सख्या ४, ८, ९, १०, ११ और १२ रह गए है । शेष लुप्त हो गए समझना चाहिए ।

संख्या ५२६. नोसिरवा के दास्तान, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६ ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, अपूर्ण, प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—अथ नोसेरवां वातसाह के दस्तान लिख्यते

नोसेर बातसाह कै दस ताज रहती ॥ तिनमै सै एक ताज पहरि कै तखत बैठते ॥ दरबार हाउजर होइ ॥ तब एक मनिष्य उठि करि उस ताज मैं लिष्या था ॥ सो सबौं कूं सुनाता ॥ सब कोई दरबार के लोग उस पर अमल करते ॥ ताज पहली मैं यह लिष्या था ॥ श्री भगवान की भक्ति करते रहौ ॥ तुम कूं जो चाहै जिनकूं तुम बी चाहौ ॥

मध्य—ताज छठी मै यह लिष्या था ॥ नृप की कृपा थोरी सौ होइ ॥ जिसकूं विसे समझ ॥ नृपते डरपते रहौ ॥ नृप की कृपा होइ जिसका अभिमान न करौ ॥ नृप के निकट रहने से आये कौ दूरि समझौ न य कमजोर होइ ॥ तिसकूं तुम बलवान समझते रहौ ॥

अंत—ताज दसमी मै यह लिष्या था ॥ आपसै छोटा होइ जिसपै दया राखौ ॥ वृद्ध के कहने की सहनता रषौ ॥ और उनका आदर सतकार करौ ॥ बृद्धपने का काम जुवान अवस्था मैं मति करौ ॥ वृद्धपने ते मति डरौ ॥ माता पिता की आज्ञा मै रहौ ॥ परलोक कूं इस लोक मैं मति बेचौ ॥ मृत्यु का भय राषते रहौ ॥ जीवन थोरा समझौ ॥ यह है वाल नवसेर बातसाह.............. ॥

विषय—इसमे शिक्षाप्रद उपदेश संगृहीत है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का अंतिम पत्र नही है ।

संख्या ५२७. पचकोश, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६ ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०९, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८७८, प्राप्तिस्थान—बाबा रामसनेही दास, कुटी सेमरबल (खानपुर बोहना), पो०—जहानागंज रोड, जिला—आजमगढ़ (यह स्थान भरकुड़ा से संबंधित है) ।

आदि—श्री गुरवे नमः ॥ अथ पंचकोश लिख्यते ॥

॥ छंद ॥

अन्नमय अरु प्राणमय तीजे मनोमय जानिये ।
ज्ञानमय विज्ञानमय सोई पंचकोश बखानिये ॥

ततत्वयं असी वाणी जवै पहिचानिये ।
कठिन सो त्रय दोष कारण परम पद किमि मानिये ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

पसुवा लोक अरु वेव के मोह अंध संसार ।
वह लावं खेवं आपकों येह अपनी चहत उवार ॥ १ ॥

॥ अन्नमय कोश वरननं ॥

॥ चौकड़ी ॥

अन्नमय कोस का सुनु विस्तार । वेह् अस्थूल आश्रम ब्रह्मचार ॥
चिन्ह् अचार प्रलैता नित्त । दसा वाल अवस्था अत्त ॥ १ ॥
साधन श्रवण सुनन को जान । मुक्ति सालोक विश्व अभिमान ॥
दीक्षा कोंह् विषयानंद । अक्षर आकार देव शिव नंद ॥ २ ॥

अंत---नाँनाँ मत निज कल्प करि फंदा रचै वनाय ।
शेवक ताहि वनावई स्वामी आप कहाय ॥१८॥
विनु गुर पारख के लहे काल जाल न लषाय ।
विना लखे यह जाल के सकले शिव कहाय ॥१९॥
वंदीषाना काल के परे त्रिविध सो जीव ।
येकहि येक पुकारं गोहरावं पीव पीव ॥२०॥
सुष को लोभ देषाइ कं जीव हिरषं भुलाय ।
वंदीछोर विनु कौन है जीवहि लेय छुडाय ॥२१॥

इति विज्ञानमय कोस सहित पंचकोस संपूर्ण ॥

विषय---अध्यात्म विषयक कोशों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---लिपिकाल सवत् १८७८ है । रचना अध्यात्म विषयक है । यह राम रहस्य दास कृत "रिख विलास" के साथ एक हस्तलेख मे है ।

संख्या ५२८. पंछी चीतनी, कागज---देशी, पत्र---१०, आकार---८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१२, परिमाण (अनुष्टुप्)---६०, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि---श्री राम जी ॥

हंस १

हंस सरूपी सावरौ सुरति निरति के वैन ॥
सहैज सुभाइन आइ कै मिलि राध सरोवर नैन ॥ १ ॥

मोर २

मोर मुकट जहा सीस पर लकुट विकट है स्याम ॥
सुंदर सोभा राजही देषि लजत है काम ॥ २ ॥

चकई ३

चकई विछुरति रैनि को विवस करत रस रीति ।
ही वपुरी कासों कहौं पिउ विन वरसं वीति ॥ ३ ॥

पपीहा ४

पीउ पीउ पपिहा मति करै साधि रहै किति मौन ॥
प्रीति प्रीया सौं पीउ की तू पीउ कहै सो कौन ॥ ४ ॥

मध्य—— किलकिला १७

हरि संग खेलत राधिका दवै लेति है पाइ ।।
जैसे जल मै मीन कौ किलकिला लेत उठाइ ।।१७।।

पैंग १८

विरही प्रीति लगाइ कै आपु न गए हरि रंग ।।
विलषत छोड़ी गोपिका भई विरह तन पैंग ।।१८।।

हरिल १६

हरिल पन कौ पालही तुहमी धरै न पाइ ।।
पल पल प्रीति वढ़ाइ कै हरि रहे द्वारिका छाइ ।।१६।।

अंत—— घू घू २६

हरि आए आनंद भए तपते तन के काम ।।
घूघू करि वैठारिहौ घर आए घनश्याम ।।२६।।

पतंग ३०

प्रीत पतंग षरी करी अग दीयौ सब जारि ।।
लाल चबर तकन्यौ नहीं देषौ चित्त विचारि ।।३०।।

अललपंष ३१

अलल पंष के चैंदूवा मिले जाइ आकास ।।
पढ़ै सुनै वाचै समुझि उपजै वुधि प्रकास ।।३१।।

इति श्री पंछी चीतनी संपूर्ण ।।

विषय——इसमे विभिन्न पक्षियो पर ३१ दोहे रचे गए है जिनमे उनके गुणों का वर्णन करते हुए नामो की गणना की गई है।

संख्या ५२६. पछी चेतवनी या पछी चरित्र, कागज——देशी, पत्र——६, आकार——७ × ३ ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१५, परिमाण (अनुष्टुप)——४२, पूर्ण, रूप——पुराना, पद्य, लिपि——नागरी कथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान——हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि——श्री गनेस जी सहाइ शीषते पंछी चरीत्र चीताऊ ।।

गीध	विहंगम	वगुला	वाज
मोरा	सूवा	फागु	पपिहा
चीमील	तितुरा	सारास	मटमरा
मुराग	लाल	मौरा	हारीलु
लाल	सारासू	चिरावा	मटमरा
परावा	कोकीला	षंजन	विहंगम
हंस	मैना	फागु	चकहि
वगुला	मोरा	हारील	विवा
किल किल	मौरा	सूवा	कौकिल
षंजनु	पपीहा	मतमरा	पीलक
चकही	हंसू	कगु	ठैकु
तुती	वगुल	तीतुरा	हारील
चकोरा	वाज	चीराव	मोरा
ठैकु	परेवा	षंजनु	कागु
भराता	मुराग	तीतुरा	सुवा
किलकिल	सारास	हंस	हारीलु

किल किल	**भरात**	**मौरा**	**चंडूल**
मुराग	**पीलक**	**सारास**	**कौकीला**
हंस्	**लाल**	**वीवा**	**चिमला**
परेवा	**मटमरा**	**तीतुरा**	**हारीलु**

मध्य—— **॥ दोहा ॥**

जब जटउ देष्यौ रास (? राम) तु भयौ पंष वलहीन ।
भगत जन रघुनाथ जु मुकुत गीध को दीन ॥ १ ॥
ग्रहो निसा जब होयगी करा सींगराह के काज ।
न्हो मैना कौ सुनौ नहीं कन वाज राज ॥ २ ॥
सावन नहीं सुहानो मन भावन वीन मोही ।
वीराहा हकारात मै उठै बोल विहगम तोही ॥ ३ ॥
मान तजौ भूषन सजौ उठो चलुरी व्रीजनार ।
तुही तुही पीग्र रटत है लीता की उनहार ॥ ४ ॥
धीरी बीन सुहवे कछु गये मदन सर मार ।
बरजौ सषो पपीहिरै पीउ पीउ करत पुकार ॥ ५ ॥

ग्रंत——प्रीतम को भोजन राचेय छोड गीरह सब काज ॥
बोल लाग नौ तीतुरा कहै मीलै स्वोम जु ग्राज ॥२६॥
देषत ही मनु लै गई नवल वीजी बीन नरी ।
जीती लइ गतिहंस की बिछुग्रन की झुनकार ॥३०॥
चराज्य जगे सषी झुठी सोहै षत ।
वतन हरीलु है पीया नैनन नग्रल स्थोत ॥३१॥

इती श्री पंछी चेतवनी सपुरान सुभमस्तु मंगल दवेतं ॥

विषय——विरह शृंगार का वर्णन । रचना दोहो मे है ग्रौर प्रत्येक दोहे में एक पक्षी का नामोल्लेख है ।

विशेष ज्ञातव्य——रचनाकाल ग्रौर लिपिकाल ग्रज्ञात है । रचना विरह शृंगार-विषयक है । यह दोहो मे रची गई है । प्रत्येक दोहे मे एक पक्षी का नाम ग्राता है । कविता क्षेत्र मे पक्षियों को भी स्थान दिया जाता है । यो तो कविता में इनका नाम स्वाभाविक रूप में ग्राता है, पर कुछ प्राचीन कवि विशेष रूप से इनकी ग्रोर ग्राकर्षित हुए । उन्होने बहुत से पक्षियो का नामकरण भी किया, जिन्हे ग्राजकल लोग बहुत कम जानते है । उदाहरणार्थ :—

लाल, मटमरा, बिवा, किलकिल, पीलक, ठैकु ग्रौर चिमला ग्रादि नाम के पक्षी ।

खेद है कि प्रस्तुत प्रति बहुत ग्रशुद्ध लिखी है ।

संख्या ५३०. पवन विजय स्वरोदय, कागज——देशी, पत्र——५, ग्राकार——६$\frac{6}{10}$ × ६$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——११, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)——६६, खंडित, रूप——पुराना, गद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——ठकुराइन जानकी कुँवरि, धर्मपत्नी, स्व० ठा० विश्वनाथ सिंह, ग्राम–ग्रग्रेसर, पोस्ट–त्रिमुड़ी, जिला–सुलतानपुर (ग्रवध) ।

आदि—. . . . . .मा भयो तिन्नादिन को फेर गरि सूर्य चंद्र बल छ ।। फेरि घड़ी प्रमाण अढाइ घड़ी शुक्ल जम्या पांच घरि मैं द्वाहुं छ ।। तस्ते तरहले अहो रात्रि को साठ घरि हुं छ ।।६२।। इस्नेत रहते इडा पिंगला पांचघरि विस्त छ ए कहेन सिद्धि मुक्ति फलानि ।।६०।। . . .ददाति स्वर या आधा आधा परि पांचे तत्व फोर्दछ ।।६३।। तस्मात् परेवा को दिन देखी विचार गर्न घटिया वढिया कार्य विचार गर्न ।। शुक्ल पक्ष वामहुं छ कृष्ण पक्ष, दाहिनु हुं छ यो विचार्जानु कल यस्को निश्चय गरि जोगी जन वर्तमान गर्छन ।।६४।। परेवा को दिन देखि विचार गर्न चंद्र ले उदय भयो सूर्य अस्त भयो त सूर्य उदय भयो तव ठिहवस् ।।६५।। रात्रिमा चंद्र वचावन दिन मा सूर्य वचावन एस्ता अभ्यास ले जो गर्द सो पूर्ण हो भनि जांन ।।६६।। सूर्ये ले सूर्ये बांधोस् चंद्र ले चंद्रं वांस् एस्तो कृपा जानोस्त तिनं लोकन्ना गुण संख्यात वीपरीते विपर्य च ।।६५।।

अंत—स्वर ज्ञान देषि अरु ज्ञान छैन् पूर्ण छ तपनि बिना तत्व ले सिद्धि छै न सूर्य नाडि चंद्र नाडि जान्या योगि कन काष्टा फल हुछ ।। २०३ ।। इति श्री शिवोमा संवादोक्तं नवप्रकारान्वित पवन विजय तत्व ध्यान कथनं द्वितीयोध्याय ।।२।।

श्री महादेव प्रति पार्वति विन्ति गर्छन ।। हे प्रभु महेश्वर ज्ञान जो छन एस्का त्रिकाल विषे जो छसो कौन हो आज्ञा रु. . . . . .भनि विंति गन्याम: ।।२०४।। श्री महादेव जी आज्ञा गर्छन ।। हे देवी तिमिले वढिया भन्यौं अव काण्ड युद्ध भयो ।। ईति को शुभ अशुभ विचार गर्नु ए तत्काल विषये हो ।।१०५।। हे सुदरी तत्वैं ले गरि शुभ अशुभ हुं छ तत्वैं ले पराजय हुंछ ।। ततेले त्रकालल विषे जान्या पनि हुंछ ।।२०६।। फेरि पार्वति विंति गछिन ।। हे प्रभु मनुष्य लाई सर्व कार्य को साधना गर्न कौन मित्र छ भनि विंति गर्छन ।। महादेव आज्ञा गर्छन् ।।२०७।। प्राण जो छ सो मित्र सुख भंनु पमि प्राणं छ हे वरानने ।। प्राण तुल्य भाई पनि छैं नन् ।।२०८।। फेरि पार्वति विन्ती गर्छन ।। हे प्रभु योगि जन हरुले त्यो तत्व कौ तार हर्ल जां. . . . .

विषय—स्वरोदय विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । केवल ५ पत्रे मिले है जिनकी सख्याएँ क्रमश: १०, १३, १४, १८ और १६ है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

ग्रंथ गद्य मे है जिसकी भाषा सस्कृतबहुल नेपाली है । इस दृष्टि से रचना महत्वपूर्ण है । संस्कृत बहुल होने से यह नेपाली भाषा अन्य भाषाभाषियो की समझ मे नही आ सकती है । जो लोग हिंदी मे सस्कृत मिश्रण के प्रतिकूल है और अरबी फारसी मिश्रण के अनुकूल हैं, उनको रचना द्वारा वास्तविक स्थिति का पता चल जायगा ।

संख्या ५३१क. पाताल खड, कागज—देशी, पत्र —४७, आकार—८ × ५ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १७६३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० गोरख पांडेय, ग्राम—मझौली, पो०सादात, जिला—गाजीपुर ।

आदि—

जेही सुमिरे पत्र भै दुरी सुमिरौ संकर देव तीपुररी
जेही सुमिरे वार्ता होइ हमरी. . . . . ।
सुमिरौ राम लछन वुइ भइ नम लेत पतख खसी जइ

:o: :o: :o:

अैसे सेवही सेवका सुमीरही तोही चीत लइ
करहु कपि सुरसती जिन्ह पर होहु सहइ
तौ पुनी सुमीरौ सीत मइ छडो अवध पतलही जो जइ
वन से रम सति लै आए अवध नग्र अनी पहुचए
:o: :o: :o:
धवरहर पर चढ़ी कै देखही सभ रनीवस
अइसी महल मह पुजी सभकी आस
सीत परी कउसील के पाउ कवसीलै धर अंकम लइ
रोदन कहि जो दुनो रनी भीजे चीरो नैनन्ह के वनी

अंत--
श्रीकुल की जेर वध्धी कै उतरै परा चरन सरन गती तोहरी कतन मोर संभरा
ठढ अनेग जे तुह अरी तोरी रइ सेतरवनी मोर मतोरी
कल कलीख जो तोरी पवर डीली मरी बंदी कै उतरै पर
छोडे गउ इह के नउ देखेउ अइमत के पउ
एती श्री पतल खंड सुपुना कथ.........।
संवत १७६३ वि० समै नम कुअर वहो.....।

विषय--सीता जी के पाताल जाने का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडित है। बीच के कई पत्रे लुप्त हैं। आरंभ का पत्र भी नहीं है। केवल सैंतालीस पत्रे उपलब्ध हैं। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १७६३ वि० है।

संख्या ५३१ख पाताल खंड, कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--६½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--११०, अपूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--कैथी, लिपिकाल--सं० १८०२ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री सूर्य पंडित, ग्राम-बिछे, पो०-जयसिंहपुर, जिला-सुलतानपुर (अवध)।

आदि--............................।
कतहु देखेहु सीतहीं ॥ चर सीवत जीनी गेही ॥
नीखवत कहे बूझइ ॥ हनीवत वत सुन मन लही ॥
तपसीनी एक देखेउ ऐही भेस ॥ खन खन लेतीं रमकर नउ ॥
वरी परम हंस कै दीन्ह ॥ तहं वसेर जे तपसीनी क दीन्ह ॥
अमृत भोजन दीन्ह अहर ॥ लेही वोली कै रै प्रतीपल ॥
सीत नम सुनत वेहर ॥ चहे जीती नीती करै सुसर ॥
चहै जीती से सीत पीअरी ॥ सेवरही प्रेन पुरुख वौ नरी ॥
सुनतही हर्खे भए हनीमन ॥ .... ।

अंत--प्रेम स्रेन गली तुहरी ॥
कीतन मोर संभर
पढ़ अग्न ने जो तरु अरी तो रही ॥
सीत रवनी मोर पीव तोर ॥
कली कलीख जो तीरी पवर ॥
डली मली के उतीरै उपर ॥
छडी गएेउ हमके उनही ॥
देखेउ अहमत के पउ ॥
श्रीरी सबंत १८०२ समै नम पतल खंड की पोथी सपूरन लीखा...।

विषय—सीताजी के पातालवास समय की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। केवल दस पत्रे उपलब्ध है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सं० १८०२ वि० है।

संख्या ५३२. पिंगलबेल की कथा (सचित्र), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६॥ × ६॥। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ५३, पु० स० २।

आदि—**अथ प्रसंग पींगल सिंघको ॥ राजा वाक्य ॥ चोपाई।**

राजा चंद्रसेन उचरहीं, कैसे सिंग व्रसभ सो डरहीं।
एतो बातनइ सुनपाइ, सो कंये मोकों समजाइ ॥ १ ॥
॥ मंत्री वाक्य ॥
मंत्री कहे सुनो हो राय, सींघवृषभ को कहुं उपाय ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ५ ॥ चोपाई ॥

कहे दमनक एक बुध उपाऊं। होत प्रभात वृषभ पे जाऊँ।
करि भेद दोउन डरपाउं। छिन एक में विरोध कराऊँ ॥२६॥
॥ दोहरा ॥
कही वृषभ सुं जायके सुन लीजे पसुपाल।
आज सिंघ तोहे मारही आयो तेरो काल ॥३०॥
॥ चोपाई ॥
सुनत बचन रह्यो सिर नाई। सो गत भई उट की तांई।

अंत— ॥ सोरठा ॥

मंत्री की यह रीत साम दाम बोध कु लहे।
पलमें करे जो प्रीत छल बल के पल में ग्रहे ॥५२॥
सुनो राय यह बात पचोपाख्यान में कही।
तुम सन लीनी कान, मंत्री की एसी कही ॥५३॥

पींगल बेल की कथा संपुर्ण।

विषय—पचोपाख्यान में से पिंगल नामक सिंह और बैल की कहानी हिंदी पद्य में वर्णित है। चौबीस चित्र भी दिए है।

संख्या ५३३. पुरुष स्त्री की परीक्षा या सामुद्रिक की टीका, कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—५¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र० सभा, काशी (यह ग्रंथ स्वर्गीय श्री लज्जाराम जी महता, बूँदी निवासी के पुस्तकालय से उनके भांजे श्री रामजीवन द्वारा सभा को प्राप्त हुआ)।

आदि—**श्री गणेश जी सदा साही छ श्री सरस्वती माता जी सदा साही छ: अथ: पुरसस्त्री की परिक्षा सामोदर की टीका लषीते: पुरस के जीमणी तरफ लषण (? लक्षण) देखजे: स्त्री (? स्त्री) के एवी तरफ लषण देषजे: अथ: पुर्स फापच दीरघ देषनां: चारुहरस देषणा: चार सुषमना देषने: छ लषण उचा देषणे: सात राता देषने: तीन गंभीर उण देषणे: तीन विसतीरण पोला देषणे ॥**

अंत––मगला लक्षण स्त्रीना जाणवा: कुलषणा जाणवा: कुलक्षणी वाजे भणी: कुलषणी इस्त्री घरी आय: कुलवाधे: जसवाधे: जस वाधे: लक्षमी वाधे: ।।

इति समोद्रक ग्रंथ संपुरण ली० नागररामलाल स्वार्प्ट माधोपुर के देस मालवा म्घे कोआपुर म्घे गुरजु मोतीचंद जी की पोथी सु मी० आसोज सुदी ३ वार सोमवार संवत् १८६७ का . . . ।

विषय––स्त्री पुरुषों के शारीरिक लक्षणों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य––रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल स० १८६७ है । ग्रथ राजस्थानी गद्य में है ।

ग्रथ अशुद्ध लिखा है । ठीक ठीक पढ़ने में नहीं आता । यह दो अन्य ग्रंथ–– चंदनमलयागिरी की वार्ता और दानलीला (कुभनदास कृत) के साथ एक हस्तलेख में है ।

संख्या ५३४. पुष्टिभगवदीय गुण मणिमाल, कागज––देशी, पत्र––१०, आकार––२४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––१८२, परिमाण (अनुष्टुप्)––३६५८, पूर्ण, रूप––पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल––स० १८६३, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली. हि० व० ७३, पु० सं० ३५ ।

आदि––।। श्री द्वारिकाधीशो जयति ।।

।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। श्रीकृष्ण श्रीवल्लभ श्रीविट्ठलेशेभ्यो नमः ।। अथ श्री पुष्टि भगवदीगुण मणि माल लिख्यते ।। प्रबंध ।।

।। अथ दोहा ।।

श्री मद्वल्लभ महाप्रभु अति कृपाल महोदार ।
कली में भुव पर आंइके कीनो वे जक्त उद्धार ।। १ ।।
बिछुरे हुते बहो काल ते दे भाग्यवंत अति जीव ।
तुर्त पठाए प्रभु समीप प्रसंन कीए निज पीव ।। २ ।।

मध्य––पृ० १०

प्रभु नीचे विराजि करे अर्थ । वाहि श्लोक को भाव जो कहत सर्थ ।। ६ ।।
भए तीन प्रहर तव आप कही । या श्लोक को व्याख्यान तो मास दोय तीन में ह्वेहे जु पूरो । पें तुम भूख्ये हो उठो न अधूरो ।।८।। १५१ ।।

।। दोहा ।।

तब जगतानंद कह्यो जु आय ईश्वर हो राज को भाव ।।
कछु घटिवे को नांहि प्रभु कहो जहां लग्य चहाय ।। १ ।।
आप जु पोथी बांधि तब ईनहि बिनय अत्य कीन ।।
मेरे घर पांउ धारीए सुनि कह्यो कृपानिध्य इन ।। २ ।।

अंत––कवित्त

या जू पुष्टि भगवदि के गुण गण उत्तमन की
मणिमाल अति विशाल शोभन सूरशाल हैं ।
जा करि वे जू प्रभूहि पाए श्री वल्लभ जु ,
अपने करि ग्रहाए चर्णकमल शो अगाधि चाल है ।
वाके प्रबंध भए तीन शत चौबीसहि राजे ,
एक एकन में बोय दोहा चौपै सूढाल हैं ।
भये दोहा छेशहें अठ चालिश चौपै पंच बीश शहें ,
ब्याणव यहे हि धरि वेदा सयोग्य माल हैं ।। १ ।।

समाप्तम् ।। श्री हरिः ।। अष्ट २ ।।

संवत् १८६६ ग्रा० ६७ के श्रावण शुक्ल ६ बृहस्पत वारहि श्री कांकरोली में लिख्ये है यह। वैष्णव वेणीलाल दुर्ल्लभदास जाके जो बांचे गाय सुने सीखे ताको सदा जै श्री कृष्ण अधिक ही मानेंगे सर्वथा।

विषय—चौरासी वैष्णवों की वार्ता कवि ने पद्य रूप मे वर्णित की है जिसमें गोकुलनाथ जी रचित ८४ वैष्णवों की वार्ता के आधार पर भक्तों का संक्षिप्त वृत्तांत है।

संख्या ५३५. पूजाविधि (रामानुजीय सम्प्रदाय की), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ५। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४५, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५५ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६६, पु० सं० १२।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ तत्त्वं त्रिविधि स्वोपदेश मन्योपदेश परं तथ्यं च। ताही को अर्थ कहतु हैं निश्चय तुम लो होय वे साचो विचार सो तीन भांति को है सो लिखतु हैं। सबही ग्रंथ ऐसो विचार करतु है सो तो ए लोक परलोका सुख सहीसा साचा सुकृत सेती होत है। ताही तें भाव संयुक्त में साध जेत रहीयें वो नेउ लोक को सुख होय।

मध्य—पृ० ८

ब्रह्म कुं जानिवे को इच्छा करौ याकौ अर्थ बहुत है संक्षेप कह्यौ और श्रुति को अर्थ करतु है। शास्त्रजोनि कही शास्त्र ही है कारण जाको सो शास्त्रजोनि ब्रह्म कु कहीए तहा पुछत है। शास्त्र परमात्मा को कारण कैसे संभवें। सु लिखतु है। ब्रह्मा का कल्याण गुण स्वरूप शास्त्र बतावत है तारी तें शास्त्र कारण कहीजे। अब गीता का श्लोक को अर्थ कहतु है। नत्वे को अर्थ है। अर्जुन जेसे आगें जुगान जुग सदा ही तो होय हु अब होत है। ए सब आगे हुते अब है आगे होयगे ऐसे श्री कृष्ण कह्यो या माही तो जीव सदा ही है।

अंत—जय जय श्री रघुनंदन एसो वचन कहे घंटा बजावें। तथा श्री प्रभु कु प्रेम सहत पूजे। प्रथम दातन एक तथा स्नान २ अंग मार्जन ३ यज्ञोपवीत ४ चंदन ५ पुष्प६ धूप७ दीप८ नैवेद्य६ तांबूल १० आरती ११ परिक्रमा १२ नमस्कार १३ स्तुति १४ गान १५ चरणोदक १६ चरणोदक को लेवे की विधि। प्रथम पारध दानं दे पीछे निकट होय जे वेष्णव तिनकुं चरणोदक प्रसादन माला बहुत २ विनय सेती देय पीछे आप लीजिये। लेतीबार आपां कुं धन धन माने धन्यो कृतार्थोह। एसो वचन उच्चारण करें। ए पूजा विधि कही। श्रीमते रामानुजाय नमः॥ श्रीरस्तु॥ २४७॥ नैद्य६वे

विषय—रामानुज सम्प्रदाय की पद्धति के अनुसार सिद्धांत और सेवा का स्वरूप वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक के मुखपृष्ठ पर "श्री गोस्वामी वर्य श्री गोकुल नाथ जी महाराज (सं० १८११ से ५५ तक) की पोथी छे" इस प्रकार लिखा है।

संख्या ५३६क. प्रहलाद चरित्र, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—७½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० बद्री प्रसाद दीक्षित, ग्राम-कोपा, पो०—दुधौड़ा, जिला—जौनपुर।

आदि—॥ श्री गनेसाए नमः॥ श्री राम चन्द्रए नमः॥ श्री भवानी सकाए नमः॥ पोथी प्रह्लाद चरीत्र कै लीख्यते॥ चौपाई॥

महाअसुर हरिनाकस राजा॥ काह कहौ जस ताकर साजा॥
सीव कै सेवा बहु बीधी कीन्हा॥ तव सीव होइ प्रसन्न बर दीन्हा॥

देव दइत नर सकही न मारी ॥ रात दिवस नही मीचु तुम्हारी ॥
नही तुम्ह मरब अकास पताला ॥ बाहर भीतर होइ न काला ॥
जौ एक रुधीर परै मही माही ॥ कतीको हरीनाकस होइ जाही ॥
जस बर मागेसी तस बर पाएसी ॥ गर्बवंत होइ सीस नवाऐसी ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

लागे करन उपद्रव भा मन महं हंकार ॥
अबको मारी सकै मोही अस को है बरीआर ॥

॥ चौपाई ॥

अनरीती रीती वोइ समै चलाया ॥ सत्यधर्म सभ मोटी लड़ावा ॥
नेम अचार करै जो कोई ॥ मारी डाडी कै भंजै सोइ ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

राम नाम लै लगी अती नीसुदिन आठौ जाम ।
अवरौ चेटीए जो रहे सभै पढ़वा राम ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

खंभा फोरी कै नीकरे अपने जन के काज ॥
धनी धनी भगतवछल प्रभु राखा जन की लाज ॥

॥ भौः ॥

चुंबी चाटी प्रभु जन कहु लीन्हाः ।
तब प्रहलाद जो बीनती कीन्हा ।
महाराज संतन्ह रछ पालक
दुख भौ भंजन दुष्टन्ह घालक ।
:o: :o: :o:
प्रहलाही अपने सग लेऊ । बेगी जाइ इन्द्रासन देऊ ।

॥ दोहा ॥

तब इहवा से उठे वे शुनत गीती औ नाद ।
बरहो बाजन बाजही इंद्र होषु प्रहलाद ॥

॥ चौपाई ॥

अग्या प्रभु कै सीर पर लीन्हा । प्रहलाद हीं इन्द्रासन... ॥
.... अनर्ण ... ।

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । तेरह पत्रे उपलब्ध है । परतु ग्रंथ अत्यंत प्राचीन प्रतीत होता है ।

संख्या ५३६ख. प्रह्लाद चरित्र, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९ × ५ से इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० पतरू उपाध्याय, ग्राम—रैनी, पोस्ट—मऊ, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—— :०: :०: :०: :०:

मोर कहा तुम पढु सुत सोऊ । जो तुम चाहो आपन ओऊ ॥
नाहीत अब न दास हमारा । तुम जानौ अब राम तुमारा ॥
एही भांति गुरुदेव बुझाए । सो प्रहलाद के मने न आए ॥
राम नाम लागे पढन नीसु दीन आठो जाम ।
ओरे चोटीआ जो रहा अबही पढाओ राम ॥
राम नाम सब पढीयन सीषा । पाटीन भरी भरी राम ही लीषा ॥
देषि देषि सो गुरु रीसाना । कठीन ठान प्रहलादे ठाना ॥
कामा जो तुम मोके रामा । ....
राम नाम है प्रान अधारा । ....

:०: :०: :०:

अंत——जब ते तात समुद्र कह जाए त अग्या कीन्ह ।
इंद्र मोही बहुत कै बाजु से मारे लीन्ह ॥
रीषी नारद तहा आइ छुड़ावा । इंद्र ही ते बहुते समुझावा ॥
त्रीआ गनी मारे म दोषा । राषो बंदी करो वीसेषा ॥
एही वीधी झंषत व्याकुल होई । आधीराती जब बीती गई ॥
तब प्रभु आपुही आए वीप्र के भेश ।
आए राती के शुनी वहु तन भए कलेस ॥
प्रहलाद चरीत्र सुने मन लाई । बाढ़े धरम पाप छै जाई ॥
जो नर पढे एह मन चीत लाइ । सो नर पारब्रह्म मीली जाइ ॥

इती श्री पोथी प्रहलाद चरीत्र संपुरन समापते ॥

विषय——प्रह्लाद चरित्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ के आरंभ का पत्र नहीं है । रचनाकाल, लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ५३७. प्रह्लादचरित्र, कागज——देशी, पत्र——२४, आकार——७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१२, परिमाण (अनुष्टुप्)——३८२, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल——सं० १६८२ वि०, प्राप्तिस्थान——पं० कल्पनाथ जी दुबे, ग्राम——गजहडा, पोस्ट—मुबारकपुर, जिला—आजमगढ़ ।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री प्रहलाद चरित्र लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ १ ॥

मनमूचित बानी बिमल गौरि कहौ हरषाई ।
भक्तनहेत अनंत प्रभु केहि बिधि प्रगटै आई ॥

चौ० ॥ शिवोवाच ॥

मैं तौ कथा कहौ समुझाई । सादर सुनहु उमा चीत लाई ॥
एक बार सनकादि मुनीसा । गये वैकुंठ जहां जगदीसा ॥
पुरी पुनीत न जाई बषानी । जहां बसत श्रीसारंगपानी ॥
पाच पदुम जोजन बिस्तारा । जोजनसहस उतंग अगारा ॥

॥ दोहा ॥

सेसपला दक्षिनदिसा उतर दिसी सुरगंग ।
जवुनाइ मै कोकनद पीवत मधुर रसभंग ॥ २ ॥

:०: :०: :०:

अंत--

प्रथमही मैं हरिजन गुण गाये । मति अनरूप अनूप सोसाए ॥
कनककस्यप अरु हाटक दोऊ । रावण कुंभकरण भै सोऊ ॥
दंतवक्र औरौ सिसपाला । दीये परम गति सोउ हत्यौ गोपाला ॥

॥ दोहा ॥

नारायण के पारषद जय अरु विजैये सुजान ।
भए महामुनि श्राप ते तेहिते कियो बषान ॥४६॥

इति श्री प्रहलाद चत्रं (? चरित्र) नरसिंघ पुराने सपुरनं समाप्त ॥ समत १६४२ आसुज्यं सूक्लपक्षे षष्ठ्म्यं बुध वासरे कुबेर दुबे लीष्यते आत्मार्थं ॥

विषय--नृसिंह पुराण के आधार पर प्रह्लाद चरित्र वर्णन किया गया है ।

संख्या ५३८. प्रेमापरा भक्ति, कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--६ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--२०६, खंडित, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा (दाता--लल्लू पंडित, ग्राम-शमसाबाद, पो०-सुजातपुर, जिला-इलाहाबाद), वाराणसी ।

आदि--. . . . . सता कांड अथवा ब्रह्म निरूपन धर्म विधि । **ब्रह्म निरूपन करते हैं धर्म विधि से, एक अधर्म विधि से ब्रह्म निरूपन है अरु येक धर्म विधि ब्रह्म निरूपन है एक कहते हैं कि अपर ब्रह्म कहा है यह संसारै ब्रह्म है यह जगत को करता कोई नही है आपुही ते जगत उतपति होत है मनुष्य ते मनुष्य पसु ते पसु पक्षी ते पक्षी तरु ते तरु अन्न ते अन्न इत्यादिक चराचर काल काल में उपजत है पालते हैं मारते है यह परंपरा अनादि काल ते चली आवत है जैसे जल में लहरि स्वाभाविक उठती है पुनी बनी रहती है परि आदि अंत मधि एक जल ही है ।**

अंत--अरु श्री रामचंद्र के स्वरूप को विरह प्रेमा पराभक्ति में आरूढ़ है एक रस जिनकी दशा अलक्षित है ताको तीव्रतम बैराग्य कही एह दोहा सातहू कांड के अर्थ को सूचित करतु है ताते अमित अर्थ है मैं अपना मति अनुसारे कहेउ है मकर के सममें सब मुनि प्रयागहि जाहि समाज होइ ॥ संपूर्न सुभमस्तु सुभम् भूयात् जे देषा सो लिषा मम दोष नाहि सं० १८७६ फाल्गुन सुदी पुनवासी वृहस्पति ॥

विषय--रामायण के एक दोहे के आधार पर प्रेमापराभक्ति का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--पुस्तक पत्राकार रूप में है । इसका प्रथम पत्र नष्ट हो गया है । रचनाकाल दिया नही । लिपिकाल संवत् १८७६ वि० है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । पुस्तक गद्य में है ॥ अतः महत्वपूर्ण है । इसकी रचना रामचरितमानस के एक दोहे के आधार पर हुई जान पडती है । संभवतः वह आरंभ के पत्र मे दिया रहा होगा । जो नष्ट हो गया है ।

संख्या ५३६. प्राकृत पंचाख्यान (भाषा पंचतंत्र), कागज--देशी, पत्र--१४२, आकार--१० × ६। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२१७७, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८२५, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, पहृ० बं० ८६, पु० सं० २ ।

आदि--॥ श्री द्वारिकेशो जयति ॥ अथप्राकृत पंचाख्यान लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

वंदे सरस्वतीं नित्यं वाङमनः काय कर्मभिः ॥
वाक् समुद्रो मया नद्धो दुस्तरस्त्रिवर्शैरपि ॥ १ ॥

सरस्वती को नमस्कार करिके यह नीति शास्त्र कों करत हूँ केसें जो बाचा मनसा और शरीरतें करिकें, वह सरस्वती केसी हे।

॥ श्लोक ॥

मनवे वास्पतये शुक्राय पराशराय ससुताय चाणक्याय च विदुषे नमोस्तु सर्वशास्त्र कर्तृभ्यः ॥ २ ॥

मनु, बृहस्पति, शुक्राचार्य, पराशर, वेदव्यास, चाणक्य, इतने जे नीतिशास्त्र के कर्त्ता तिनकों हूँ नमस्कार करि नीतिशास्त्र कहत हूँ ॥

मध्य—पृ० १२७ ॥ श्लोक ॥

प्रकृते उद्यमे पुंसामन्य जन्म कृतं फलं ॥
शुभाशुभं समभ्येति विधिना संनियोजितं ॥

उद्यम किये बिना जो वस्तु प्राप्ति होय वाकों एसो जानिये जो गत जन्म को करयो पुण्य। शुभ अथवा अशुभ जो जो पूर्व करयो होय सोई फल पाईये।

॥ श्लोक ॥

यस्मिन् देशे च काले च वयसा यादृशेन च।
कृतं शुभाशुभं कार्यं तत्तथैवोपभुज्यते ॥

जा दिवस के बिखें जा काल के बिखें जा वय के बिखें। जो कर्म करयो होय, सोई भोग भोगवे। जो अत्यंत धन शुभ करिके आय मिल्यो होय वह धन अन्यत्र खरच न करनो। तातें यह मांस कों में युक्त करिकें खाऊं। जो मोकों बोहोत दिनन लों पोंहचे। तातें प्रथम तो धनुष्य की प्रत्यंचा काटि खाऊं ॥

अंत—राजा ने पुत्रन कों देखिके परम संतोष पावत भयो। विष्णु शर्मा को बोहत कछु देय संतोष कीनो। तातें यह पंचोपाख्यान नामें ग्रंथ जो कोई मनुष्य पढे सो परम चतुर विचिक्षण होय। यामें संपूर्ण चातुर्य और नीति और लौकिक व्यवहार वर्णन कीनो हे।

इति श्री पंचाख्याने पंडित विष्णु शर्मा बिरचिते अपरीक्षित करनीय नाम पंचतंत्र संपूर्णम् ॥ यादृश पुस्तकं द्रष्टा तादृशं लिखितं मया। यदि शुद्धं अशुद्धं वा मम दोषो न विद्यते ॥१॥ संवत् १८२५ मिती मार्गशीर्ष शुक्ल १० चंद्रवासरे। ग्रंथ संपूर्ण भयो ॥

विषय—विष्णु शर्मा ने राजा के पुत्रों को नीतिशास्त्र का उपदेश दिया वह नीतिशास्त्र पचाख्यान रूप मे लिखा है।

संख्या ५४०क. फूल, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—४½ × ३⅞ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्रीकृष्णाय नमः ॥ दोहा ॥

पंचबाग पिय लाइयो पूछत मोइ जुवाब ॥
में हँसि के असें कह्यो नीको फूल गुलाब ॥ १ ॥
प्रीतम असी प्रीति में भयौ जु मंद प्रकास ॥
चंपा की बेंदी दई जहां कमल कों बास ॥ २ ॥
बाग दिखावन पिय गये जहां खूजे को फूल ॥
फूलन में फूल्यौ भलो सुख हे तेरो मूल ॥ ३ ॥
सखी सम्हारे साथ हें बात कहे समझाय ॥
फूल केवड़ो आनि दे चित मे रह्यौ न जाइ ॥ ४ ॥
सावन के बदरा उठे माथे दियो फुलेल ॥
चोसर दीन्यो में पीया वास करें अतिवेल ॥ ५ ॥

मध्य——

बाग दिखावन पिय गये साथ चली वह बाल ।।
वुही नही हमको दई सिंगार हार की माल ।।१४।।
जाको सोभा है भली देखत होय आनंद ।।
फूल एक में मागियो जाको नाम मचकुंद ।।१५।।
चेत मास चित चोरि कें प्रीतम लाये बाम ।।
फूलन वाली को सखी देखें उपजें काम ।।१६।।

अंत——

प्रीतम अैसे हेत करि रोम रोम आनंद ।।।
पियरेखे यो फूलियो कमोदिनी चंद ।।२६।।
बालम सों में यह कहो वन फूल मगाय ।।
सूरज मुख तन रहत हें सूरजमुखो बुलाइ ।।३०।।
आजु गई में वाग में अपने सहज सुभाइ ।।
फूल केतकी देखिके बास रही महकाय ।।३१।।
बारी हों रे बालमा बड़ी होन दे मोइ ।।
ज्यों बगुला निगले माछरी ज्यों निमलोंगी तोइ ।।३२।।

विषय——इसमे फूलों पर ३२ दोहे हैं ।

संख्या ५४०ख. फूल चेतावनी, कागज——देशी, पत्र——३, आकार——५¾ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१८, परिमाण (अनुष्टुप्)——३७, पूर्ण, रूप——पुराना, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——सवत् १८६२ वि०, प्राप्तिस्थान——प० देवनाथ चौबे, ग्राम-पांडर अलबारा पो०–पछिम सरीरा, जिला–इलाहाबाद ।

आदि——श्री गणेशाय नमः ।। फूल चेतावनी ।।

आजु कला कछु मागिहौ मन मोहन प्रतिपाल ।
हरषत आये हेतु कैं पहिरे माल गुलाब ।। १ ।।
कुंदन फूल सुहावनो सोभा बरनि न जाइ ।
बार बार बिनती करौ प्रीतम वेहु मगाइ ।। २ ।।
घर आये का पहरिहौ प्रीत अंग सुभाल ।
चरन विराजैं हे सखी ज्यौ बूझौ की लाल ।। ३ ।।
करवत भयो सु केवरो विषि सी लागैं बास ।
सेज लगैं पावैं नही प्यारे पियके पास ।। ४ ।।
का आवैं प्रीतम मोह कैं का पंडित पूछैं बात ।
फूलन भावैं बेल का पिय बिलसत मो पास ।। ५ ।।
रोम रोम मेरे लगी निसरि गये दुषसूल ।
आये अचानक वे सखी घर साहेब चमेली को फूल ।। ६ ।।
कला चतुर इनकी बनी फूलि महासुष चैन ।
जूही फूल मंगाइये मौ हित प्रगटत मैन ।। ७ ।।
अरी सखी यह बात की सदा रहै जिय आस ।
रतन मंजरि गूँथि कैं पिय ल्याये मो पास ।। ८ ।।
रितु औरे आई सखी हन्यो मोहि सोहाइ ।
टेसू केरे फूल मो लाली मा चितु जाइ ।। ९ ।।
प्रीतम आये धाम मों सखी सयानी साथ ।
बातैं पूछै प्रेम सो सो फूल सुदरसन हाथ ।।१०।।

बालम मोसो या कहेउ येक बात सुनु आइ ।
बिंद्रावन के बाग मे सदा वसंत सोहाइ ॥११॥
मनसा मन मे यह भई मोसो कही न जाइ ।
झीनो बस्तर कुसुमरंग सो पिय देहु मगाइ ॥१२॥
मन की बात मैं का कहौ सुनो सषी मो तूल ।
आजु पिया मोहि दीजिये नागेसुर को फूल ॥१३॥
बाग देवान मे चलो चलो सषी मो बाल ।
उहां पिया मोहि दीजिये सिंगारहार की माल ॥१४॥
प्रीतम महा प्रीति करी भयो मदन परकास ।
चंपे की बोडी दई तहा कमल की बास ॥१५॥
चैत मास बित चाएते अति प्रीतम लाये धान ।
नेह निवरि यासरा सषी प्रगट होत हे काम ॥१६॥
कंत काम की केलि के षेलि फागु सुष आइ ।
येक फूल मैं मागहौ सो पाउर देहु मगाइ ॥१७॥
कहौ कहा मैं पीय सो याको बास अनूप ।
चौसर दीन्हौ मो पिया कहि हेतु फूल सिंदूर ॥१८॥
बार बार पूछो पिया करा बहुत मैं षोदु ।
कमल नैन के भावत कमल लिये सो गोद ॥१९॥
कसुघर बाग मो पिया को सषी चतुर ते पेषि ।
फूल अनूप सुहावनो महामालती देष ॥२०॥
लाल बिलोकत कहि सषी मोर मन आनंद ।
ऐसौ हितु मोसो सषी ज्यो कामोदनी चंद्र ॥२१॥
प्रीतम ल्याये मोह करि बागवान हे साथ ।
मौरश्री को गूथि कै दियो हार मो हाथ ॥२२॥
कहति कामिनी काम सो सोवत कंत की जागु ।
पिय लाये तुव कारने भो चंपे की बाग ॥२३॥
मन तन चिंता अति बिकल जिय मैं रही न लाज ।
चौसठि पंषुरी मोगरा पिय ल्याये मो काज ॥२४॥
मेरे मन के भावते प्यारो पीव सुजान ।
अजहू फूल मगाइये सुनत हती मैं कान ॥२५॥
मोसो मेरे नाह सो टोरल के हे हेत ।
जारौ कली कनयर की मन रातो तन सेत ॥२६॥
आजु गई मैं बाग मे प्रीतम दई मगाइ ।
सरषंडी के फूल की सोभा बरनि न जाइ ॥२७॥
मालिन बैठी बाग में कहा करौ हितुकार ।
गुथति सेवरौ सेवती गूथति हौ हार ॥२८॥
कंत हमारे सीसते कीन्हौ सषी सिंगार ।
अति सुगंध आवै सषी करना की अतिबास ॥२९॥
जित जित सूरज फिरत है तित तित फिरत सुभाउ ।
वोही सनमुष रहत है सूर्जमुषी के नाउ ॥३०॥
सदा रहैं पिय पास में मागति रहइ ईस ।
फूल गूथि कै केतकी सदा धरो मो सीस ॥३१॥

इति फूल चेतावनी संपूर्ण ।। अस्वनि वदि ४ गुरौ संवत् १८६२ श्री गोविंदाय नमो नमः श्री काशी विश्वनाथ जी में ।।

पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—प्रत्येक दोहे में एक फूल का उल्लेख कर शृंगार विषय का वर्णन किया गया है ।

संख्या ५४१. बड़े छप्पन भोग को क्रम. कागज—देशी, पृष्ठ—५, आकार—१०।×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० १०७, पु० सं० २१ ।

आदि—।। श्रीकृष्णाय नमः ।। बडो उत्सव छप्पन भोग ताको तात्पर्य श्री स्वामिनी जू सबके प्रत्येक आपने घर पधाराइबे को आर्त्त होइ प्रिय सबंध बिनु रह्यो न जाइ । ताते यह मनोरथ करि श्री ब्रजराज जी को सब कुटंब भोजनार्थ शयन भोग पर्यंत बिना सुखानुभव करि गुप्त तासों सब समक्ष करिबे को निमंत्रन करत हे ।

मध्य—पृ० ३

सब पाछे नमस्कार करिये । चोकी तीसरी पर श्री रोहिणी जू तिनकी गोद में श्री बलदेव जू एसी भावना करि पधराइ पहले चोली समर्पिये । पाछे साडी समर्पिये । गोद में श्री बलदेव जी को ओढनो उढ़ाइ पाछे माला पहराइ चोवा चंदन लगाइ अर्बीर छिरकी पाछे नमस्कार करिये । पाछे चोथी चोकी मुख्य स्वामिनी जू की भावना करि पधराइये ।

अंत—पाछे ठाकुर की शय्या पास बीडा गडुवा सब ठिकाने धरि ठाकुर को पोढ़ाइये । सर्व ताले मंगल करि प्रसाद सब लेइ बाहिर आइये । पाछे वह प्रसाद योग्य देखि बीडा माला वस्त्र बांटि दीजिये । आपु राखिये प्रसाद लीजिये । अयं मनोरथः पूर्णो भाग्यभाजां नृणा भवेत् । करिष्यति प्रसंपूर्णं निजाचार्यान्वयेश्वरः । श्रीरस्तु ।। शुभंभवतु ।। कल्याण-मस्तु ।।

विषय—पुष्टिमार्गीय सप्रदाय मे अन्नकूट के समान विशेष आयोजन पर भगवान् के लिये छप्पन भोग तैयार किये जाते हैं उसका प्रस्तुत पुस्तक में वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खुले पत्रों की है । ऊपर "गोस्वामी श्री व्रजनाथात्मज श्री विट्ठल-नाथस्येदं" लिखा है । इनका समय सवत् १८११ से १८५० तक है ।

संख्या ५४२. बादशाही राज्यकाल का परगना आदि विवरण (वर्ष, मास, दिन, घडी सहित), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७।।×६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, अपूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० १०३, पु० सं० १ ।

आदि—पातसाही कारखाने ३६ छत्तीस के नाम ।

सुमदल खाना, पालकी खाना, सले खाने, तोप खाना, फरास खाना, नौबत खाना, तालीम खाना, खसवाइ खाना, बाईद खाना, हुर्म खाना, दिवान खाना, अदालत न्याय खाना ।

मध्य—पृ० ३—खेत पड्या मुगल जीत्या, पातसाही मुगलानी हुई, संवत् १७५२ वेसाख सुद ५ तीर्यंकुर तखत बेग:

पातसाह तीमर लिंग मुगल	वर्ष	मास	दिन	घ०
१. पातसाह तिमर लिंग	०	०	१	०
२. पातसा मीरांसाह	४	८	७	१३
३. पातसा खाबुसद	१	४	१	८
४. पातसा सुलतान महमद	०	६	४	३

५. पातसा बबर	३	५	४	३
६. पातसा हूमाउ	२०	४	२२	१०

पठाण सूं हार बीलाय भाग गया संव १५९६ पातसाही पठानी भई जेठ सुद १२ ।

अंत--सुवान सिरकार परगना, गाम दाम,

१७ खानदेस ६-२६३-२०७०९, ३५१९५३६०० बुरानपुर .

१८ सोबो खोज १४-२७३-३९९६३ ७७८६६६६३० स्तेपुनीयाव औरंगाबाद--

१९ दावरज भाग १६-२८३-८७९८३, ६८४५५४४६०, नगर

२० दावरज परी बीजापुर २०, ३९८, १०९०००, १२७८४६३७,

२१ मेमदाबाव ९-१२३, ३८६८१, ३८२९३७६००,

२२ इलजपुर विरपू १२-२९३, ७१९६१, ८३६३३४७९८,

विषय--यह छोटा सा ग्रंथ यवनकालीन राज्य का तात्कालिक रेखाचित्र खींचता है। इसमें बादशाहों का राज्यकाल, परगना, आवक (रेवेन्यू) आदि का उल्लेख है। इतिहास की दृष्टि से यह रचना उपादेय एवं परीक्षणीय है।

संख्या ५४३. बारहमासा, कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--६१/६ × ४१/६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२ परिमाण (अनुष्टुप्)--७५, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी और कैथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि--..........................भरथरीभावँ छल बंदु।
भानत भोग जो गोपीचंद भोगी। लैउ पसाए जलंधर जोगी॥
लैं कान्हे अंकुर अलोपी। कठीन बीयोग सहैं कीमी गोपी॥

॥ दोहा ॥

सारस जोरी कीमी हरी मारी गए उन प्रग।
झुरी झुरी पीजरा जरी मुइ बीरह के लागे झग॥

चढा असाढ गगन घन गाजा। साजा बीरह दुंद दल बाजा॥
रूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धजा बगपांत देषाए॥
करक बीज चमकं चहु ओरा। बुंद बान बरसं घनघोरा।
वोनई घटा आई चहुं फेरी। कंत उबार मदन मोही घेरी॥
दादुर मोर कोकीला पीउ। करही बेम घट रहइ न जीउ॥
पुष नछत्र सीर उपर आवा। पीअ परदेस मंदील को छावा॥
अद्रा लाग बीज भुंई लेई। को मोही पीउ बीन आदर देई॥

॥ दोहा ॥

जिन घर कंत ते सुषीआ तिन गौरो औ गर्ब।
कंत पीआरे बीछुरे हौ सुष भूली सर्ब॥

:o: :o: :o:

अंत--

तपै लाग अब जेठ असाढी। भे मोहक साजन जह गाढी॥
कंत नहीं घर झुखै बरी। भे बीरहा अंगार सीर परी॥
साढन गांढी कहा लग षोलौ। छुछी भुजा जस बीन वर डोलौ॥
बंधु नही औ कंधन कोई। धाकन आउ कहौ केही रोई॥
बरीसें नैन चुबें घर मोरा। छपरा छानी होहीं चहु बोरा॥

रर्ं बुवरी दंक बीहुनी । थाभा बाज बीन थकं न थुनी ।।
कोरो कह ठाटनो साजा । तुम बीनु कंत न साजन साजा ।।

।। दोहा ।।

परबत समुद मेघ ससी दीनी ग्रर...... ।
सही न सकै........................ ।।

०:: :०: :०:

—ग्रपूर्ण

विषय—विरह श्रृंगार का वर्णन । यह जायसी कृत 'पद्मावत' का ग्रश (नागमती विरह विषयक बारहमासा) है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में प्रथम ग्रौर ग्रत के पत्रे ग्रप्राप्त है । उपलब्ध ग्रश मे स० २ से लेकर ११ तक के पत्रे है । रचनाकाल ग्रौर लिपिकाल ग्रज्ञात है ।

संख्या ५४४. बालबोधनी, कागज—देशी, पत्र—४३, ग्राकार—४ २/१६ × ११ १२/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—१४१६, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बलभद्र मिश्र, ग्राम—मिरजम, पो०—गौरी बाजार, जि०—गोरखपुर ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः श्री दुर्गायै नमः ।।

।। दोहा ।।

शिवसुत मैं प्रनवौ सदा रिद्धि शिद्धि निद्धि देहि ।
कुमति विनाशन शुमतिकर मंगल मुदित कर गेह ।।
श्रीगुर चरन मनाये काली तुम परशाद ।
भाषा लिखो चिकित्सा शारद होहु शहाय ।।
काल गननाथ कह मन बच क्रम शीर नाय ।
शंभु उमा उर ग्रास धरि शभ विधि होहि शहाय ।।
गुरु पद पंकज शीश धरि शुफल होत शभ काम ।
सूक्ष्म चिकित्सा शर्बमत बाल बोधनी नाम ।।
भाषा कहो बनाय के देषि ग्रंथ मत शोध ।
नाशा लक्षन व्याध के जेहि जानत शुद्धि होइ ।।
ग्रर्थ कहो शभ व्याधि के पठत शुगम सभ ठाम ।
ग्रावहोत गद होतहहि पीत्त कफ्फ बात नाम ।।

:०: :०: :०:

ग्रंत—।। परवटि वायुगोला को ।।

ताड के सिरिका पका वालु षाय. . .तब विपिक्षे शिरिका पिये वाइ वावगोला जाइ ।। है जामे उवांत तम्भे के ।। नरिग्रर के जटा जारि लेव टांक २ चिन्नि पुरानटा २ ए. . .चत्र देव पानिवर. . .उवांत थंमे ।।

इति वैद्यशास्त्रे बालबोधनि नाम्ने सर्वौषधाध्यायः ।। मकरस्थ शितितरे पक्षे त्रियोदस्यां दबि वाशरे हि नागाष्टइन्दुश्च गते पिमंचविद्यते विलिख्य काशीरामेन पुर...... ।।

विषय—रोगपरीक्षा, रोगनाम ग्रौर ग्रौषधो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के बीच के कई पत्रे लुप्त हो गए हैं । लिपिकाल ग्रौर रचनाकाल ग्रज्ञात हैं । ग्रंथ ग्रत्यंत जीर्णावस्था में है ।

संख्या ५४५. भगवतगीता, पत्र–५३, आकार––६१/१० × ४५/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ––११, परिमाण (अनुष्टुप्)––२२३८, पूर्ण, रूप––प्राचीन, गद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल ––संवत् १८३८, प्राप्तिस्थान––पं० रामअनंद त्रिपाठी, ग्राम–दरवेशपुर, पो०–भरवारी, जि०–इलाहाबाद।

आदि––सिधि श्री गनेसायन्मः श्री सरस्वती देव्यैन्मः श्री कृष्णायन्मः ।। श्री भगवतगीता अर्थभाषा लिख्यते । धृतराष्टौवाच ।।

अस्लोकु प्रथम ।

धर्म छेत्र कुरु छेत्रे समवेता जुजुत्सवः ।
मामका पांडवश्चैव किमि कुर्वंति संजयः ।।

राजा धृतराष्ट पूछत है संजय सौ । अहो संजय । कुरुछेत्र मह हमारे पुत्र । अरु पांडव जुध्य करिबे यह जाइ ठाढे भये एक ही ठौर । तब ए दोउ जनै कहा करत भए ।

।। संज्य उवाच ।।

तब संजय राजा धृतराष्ट सो कहते है अहो राजा तुम्हारे पुत्र जो है । सो पांडवनि की सैना देषिकै द्रोनाचार्ज सौ यह कहत भये । अहो आचार्जज । पांडवन की सैना यह बड़ी सैन्य है । अरु तुम्हारो सिष्य द्रोपद कौ पुत्र । ध्रस्टद्दवन् सो सैन्या ति कयौ है । अरु यह सैन्या मे इतनै महारथी है । . . . . ।

:o: :o: :o:

अंत––।। संजय कहत है ।।

अहो राजा धतराष्टि जहां जोगेस्वर श्री कृष्ण जू है अरु अर्जुन से धनुर्धारी है । अरु तहा लछमी जू है । सो तहइ की जै है । यह निहचै कै तुम मानै मेरे मन तौ अैसी है । अरु जो तुम मोंसो पूछ्यौ । सो मैं तुम सो कुरुछेत्र की वातैं कही ।।

इति श्री महाभारथे सत सह श्री मांवैयासिक्यां भीषम प्रवते सुपनिषात सुब्रह्म विद्यायां जोगसास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे । संन्यास जोग नाम । अस्ट दशमोध्याय । इति श्री भगवद गीता संपूर्न समापता । सुभमस्तु । सम्वत् १८३८ चैत्र सुदि १० वुधवार लिषतं तिवारी रूपदास जो वांचै ताकौ राम राम ।।

विषय––गीता भाषा, कृष्णार्जुन सवाद ।

संख्या ५४६. भरथरी कथा, कागज––आधुनिक, पत्र––२६, आकार––७४/१० × ६५/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––१३, परिमाण (अनुष्टुप)––१६६, पूर्ण, रूप––पुराना, पद्य, लिपि––कैथी, लिपिकाल––सं० १६४ वि०, प्राप्तिस्थान––श्रीमती चौरासा देवी, धर्मपत्नी-स्व० पं० रामशंकर पांडे, ग्राम––सुरसुती (कौडीहार), पो०–अटरामपुर, जिला–इलाहाबाद ।

आदि––श्री गनेस जी सहाए ।। श्री काली जी सहाए ।। श्री महादेव जी सहाए ।। श्री दुरुगा जी सहाए ।। श्री गंगा जी सहाए ।। श्री पोथी भरथरी कथा ।।

।। दोहा ।।

खूब बनी है कोठरी झूठे भरथ भंडार ।
चारी दीना जग मो जीवना आषरु मरना नीधान ।।

।। चौपाई ।।

धन घर मो राजा जन्म भइ धन चले तोहरा नाम ।
जउना सुदीन राजा जन्म भइ नग्र बजत बधाई ।।
सुरही गाए के रानी गोबर मगावती चउका दीन पुराए ।
पंडीत वोलाये रानी कासी का बैलन पोथीआ लदाए ।।

ब्राह्मन बाचते पोथीग्रा मोलना बांचे कीताब ।
नाम तो नीकला राजा भ्रथरी क्रम तो निकला जोग ।।
जन्मे रानी के कोष म पुत्रही दोष लगाए ।।
बोले माता रानी रूपदेइ सुन पंडीत मोरी बात ।
हाथी देऊंगी औ पालकी घोड़ा देऊंगी पचास ।।
लरीका के नाम पंडीत फेरी देहु जीसमें जोगी न होए ।
बोले पंडीत कासी का सुन रानी मेरी बात ।।
नाम फेरे से ना जोग घटेगा जो कुछ लीषा लीलार ।
लीषनहारा तो लीष गग्रा मेटन हारा जो कोउ न ।।

अंत--एतना वचन रानी सुनती है तन से उठत ग्राग ।
राजा नीकले जोगी बनके छुट गग्रा संग साथ ।।

।। दोहा ।।

तुलसी एही जग ग्राइके सभसे मीलीए धाए ।
ना जानी कौने रूप से नाराएन मीली जाइ ।।
तुलसी परघर जाइके नींदा कहीए रोए ।
ग्रापन भ्रम गवाइके बांटी ना लेइहै कोइ ।।

।। संपुरन ।।

इति श्री पोथी भ्रथरी कथा जो देषा सो लीषा मम दोष न दीग्रते संमत १९४१ मीती कातीक सुदी १ को लीषा है दसषत हनुमान पांडे साकीन कलकता नीमतला घाट चुना पंटी बाबु बुलाकी सींघ के मकान में पाटकल के पीछे लीषते है से जानब ।।

विषय--भरथरी की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल संवत् १९४१ है ।

प्रस्तुत ग्रंथ के साथ एक हस्तलेख में निम्नलिखित ग्रंथ भी हैं :--

रामजन्म--सूरदास कृत, रामजी का बारहमासा--भवानी कृत, बारहमास वेनी माधो जी का--सूरदास, काली जी की अस्तुति--मलूकदास ।

संख्या ५४७. भूगोल कथा, कागज--देशी, पत्र--५, ग्राकार--९$\frac{३}{४}$ × ४$\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--७७, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८४८ वि०, प्राप्ति स्थान--धर्मशास्त्री पं० राजाराम जी मिश्र, ग्राम--रामसाला, पो०--सगड़ी, जिला--ग्राजमगढ़ ।

ग्रादि--श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथ भूगोल कथा लिष्यते ।।

पचाश कोटि जोजन प्रिथ्वी है पृथ्वी के मध्य सुमेर है सोरह सहस्र जोजन भूमि मध्ये गडित है चौराशी लछ जोजन पृथ्वी ते ऊंच है वीस सहस्र जोजन चकराइ है सूर्य के लंकार सुमेर है : ग्रष्ट शृंग है हेम १ लिस २ श्वेत ३ ऊंच शृंग ४ मालियंत ५ गए मर्दन ६ महाशृंग ७ सो एक एक शृंग लक्ष जोजन के ग्रंतर है सुमेर सुवर्नमय है कैलास है वैडूर्यादि मणि वोधित है गन गंधर्व मुनि पारिजात कै है मौलि विनु राजा विराजत है वैकुंठ मही पुन्य प्रदाइक है तेहि सुमेर के दक्षिण जमुनी तथा ग्राम्ब को वृक्ष है ।

ग्रंत--

एक लक्ष जोजन ध्रुव लोक व्यापक वीस्तार विष्णु लोक है । देवतन्ह कह दुर्लभ है धर्म बोलियत है पाप मारि काटियत है तिस ऊपर सून्याकार है तिस ऊपर पुन्याकार है तेज पुंज परम

पुरुष नाराएन तहा बैठे है सोवर्ण के पलंग पर सोम्रत है अपनो चरमांगुष्ट चूहत है पवन स्वरूप बीष्णु हही इति भूगोल पुराणे जो प्रथम संपूर्ण सुभ मस्तु सुभमवेत् ।। संवत् १८४१ ।। साके १७०६ सम्ये चंत्रे मांसे सुक्ले पछे पंचम्यं भृगुवासरे पुस्तकी लीष्यते वम्रा तीवारी जो देवा सो लीषा मम दोषो न दीयते ।।

विषय—भूगोल और खगोल का वर्णन ।

संख्या ५४८. भूगोल प्रमाण गद्य, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६६१, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ११८, पु० सं० ११।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ।। पृथिव्या भोगल अव्यक्ता अव्यक्तस्य श्रि ब्रह्मांडा लिलायां सा ब्रह्मा आदि विष्णु से ॐ पांतयो सदा । अकारते वायु उत्पनं वायु ते तेज उत्पन्ना तेज ते उत्पन्नो पानि । पानि ते दंभ उत्पन्यो । पानि मध्ये ब्रह्मांड उत्पनो वायु ते ब्रह्मांड फुटि टुक टुक भयो । तहि जलसाई विष्णु रहे । परमेश्वर की नाभि कमल ब्रह्मा रहे ।

मध्य—पृ० ४-५

सेस नाग के फन एक सहस्त्र है, दुइ सहस्त्र नेत्र है, पन्द्रह कोटि जोजन एक एक फन विस्तार है । महासेस नाग के मस्तक ऊपर महा वाराह की दाढ ऊपर पृथि है । पृथ्वी ऊपर परवत है । अष्ट पर्वत है । कौन कौन पर्वत है । हेमाल्य ।१। रतणचल ।२। विंध्याचल ।३। उदयाचल ।४। अस्ताचल ।५। मलयागिरि ।६। द्रोणा गिरि ।७। पहैक पर्वत ।।८।। एवं विधि पर्वत पृथ्वी ऊपर है ।

अंत—तस्मात् उपरि सुन्याकार है । तेधकलातः श्रिनारायन पौढे है । सोने कपाल कि ऊपर अपने पाउके अगुठा आपे चसत है । सो बहु सो बहु बालगोविंद सरुपि है विस्नु । देवताते अपर्क्षन है । सर्व कला संपूर्न है । गंगा जल सुध्यत है । कलि मध्ये प्रभु आदित ।।

इति भोगल प्रमान गस्य प्रकरण समाप्तः ।। यथा प्रति जथा लिखि तं ।। संवत् १६६१ वर्षे पोष सुद १ दीने लखतं भटनंद जी सुभं भवतु श्री नारायणमस्तु ।।

विषय—पौराणिक ढंग पर भौगोलिक वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ऊपर "गिरधराणा" लिखा है ।

संख्या ५४९. महादेव सरोदय, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६½ × ४$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, अपूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मुन्नी चौबे, ग्राम—हुरमुजपुर, पो०—सादात, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशायन्मः ।। श्री महादेव सरोदय लिषते ।।

कैलास सिषर पर बैठे जाय महादेव वचन सुनौ सषी पारबती या अन्याय है । सो तुम सौ कहत हो सुनै पाछै त्रैकाल रूप होइए है हे पारबती गुपत बात कौ तत्व सार है सषदे की वानी है सखदेव कौ पिता ततसार है सो तुमसो कहतु है । हे पारबती आ अस्थूल कहता घनौ है अरु सुछम कहता मारग झीनौ है गुन कौ बंधु है पंडित जिनकौ गावं है और लोक संसार मैं अचरज है अनेक सास्त्र मैं तत्व सार है जो जानैगा सो सरोदय सौ बना रहैगा हे पारबती सरब सास्त्र को अभ्यास करै है सो देवता की संग्या मैं प्रापति होइहै ।।

अंत—ब्रहसपति वाये तत्व चलै सुक्र अग्नि तत्व चलै आदित प्रथी तत्व चलै सनीचर जल तत्व चलै हे पारबती समए सुकाल कहत हौ मेष संक्रान्त पत प्रथी तत्व वटै तौ समयो आछो होय

आनंद होए अति बल कारी होए राजा प्रजा सुषी होए मेष संक्रान्त वाये तत्व में पैठे तो आछौ समयौ होए पवन धरती बाजै मेष संक्रान्त तेज तत्व में बैठे तो काल परै राजा विध्वंसन होए मेष संक्रांत वाये तत्व मै बैठे तो दुर्भछ परै. . . . . .अपूर्ण ।

विषय--तत्व स्वरोदय एव ग्रहो के फल का वर्णन ।

संख्या ५५०. महाभारत (विराट पर्व), कागज--देशी, पत्र--४, आकार--६ $\frac{१४}{१६}$ × ४ $\frac{३}{१६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--४२, खडित, रूप--पुराना, (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--कैथी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि-- . . . .

रूषा न होइ तिमीर कर फुटी ।
चंद सुरुज कै कोनीन फुटी ।।
इहही अत्र सभ रषी तब बैठे राज दुआर ।
तबही अत्र सभ लेवै जीव होइही नीस्तार ।।
राए दुदुस्टील रापा कवल ।
कोटी षरग धारू जंत्र काज बल ।।
भीमा गदा लेइ आंछी चाढ़ावा ।
षन षन गदा उतारी हीअ लावा ।।
जेही कर गहो सहै को करान ।
इहइ गद जीरजोधन हरन ।।
भीमा परीहरेइ नाही तामा ।
जैसे कीरीपीनी न छाडै दामा ।
भीमो सेनो वोल अनरागी ।
इहइ गदा जीरजोधन लागी ।।
अरजुन धनक बान हीअ लावा ।
गुनां कवराव औ सीस डोलावा ।।

अंत--**रथ सै उतरु भैअ भीम सहोदर भाइ ।**
जाइ वैराट बहोरहु कोउ जीअत न जाइ ।।
रथ ते उतरी लीन्ह तर तोरी ।
पैठे हाक देइ जघउ प्ररोरी ।।
बाए हाथ अत्र नेवारा ।
वहीने हर. . . . . .हथी रथ मारा ।।
गदा सवारी मन भए बीराउ ।
नही गदा एही अब ठांऊ ।।
हथीही हथीही अभेर देइ ।
कवनउ हथी कध कै लेइ ।।

--अपूर्ण

विषय--महाभारत विराटपर्व की कथा का वर्णन । ग्रंथ की भाषा प्राचीन है ।

संख्या ५५१. युगल विहार, कागज--आधुनिक, पत्र--७, आकार--१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५०, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री सतगुरू चरणेभ्यो नमः ।। अथ ।। जीव पीव युगल विहार वहार अष्टेत्त-रीय दोहावली ।।

।। प्रारंभ ।।

श्री गुरु पद कंज रज रजहरन धिय ध्याय ।
श्री सीता वर प्राप्ति कर रहस अलौकिक पाय ।। १ ।।
श्री हनुमंत सुसंत पद वंदि अनेकन बार ।
जेहि करुना आनंद पर मिलत सुनित्य बिहार ।। २ ।।
श्री साकेताधीश प्रभु श्री सहस्र पद पद्म ।
वंदौ बार अनेकहां शिव मन-अलि-रस-सद्म ।। ३ ।।
नमत नलिन पद श्री भरत भरत प्रेम हिय रीति ।
नीति निरत प्रभु प्रीति प्रद हरन महा भव भीति ।। ४ ।।
श्री लछिमन पद कमल नम शुभ लच्छन दातार ।
रहै हमेशे लच्छमन करै नाम प्रभु प्यार ।। ५ ।।

:o: :o: :o:

एक समय परधाम मधि श्री श्री सीताराम ।
दुहुँ दिसि परिकर सेवहीं सेवा लहि अभिराम ।। १ ।।

:o: :o: :o:

बोले मृदु मसुकाय कै सुनहु सखा मम जीव ।
माया मम अति बलवती रचना कीय कमनीय ।।१४।।

मध्य—

ओक ओक अवलोकि के बिसरी सुधि परलोक ।
यह निज जिय निश्चै करी हम रहिहैं यह लोक ।।
घूमि घूमि देख्यो सकल अकल गई बौराय ।
असल नकल लखि नकल मे असल बुद्धि ठहराय ।। ३ ।।
संग सिपाहिन से कहत यहू यहू हम लेब ।
यहू यहू तुम लइहौ उहां उत्तर का देब ।।

:o: :o: :o:

प्रीतम खेद विलोकि प्रिय अधिक कही अकुलाय ।
कृपावती तब आइकै बहु विधि कह समुझाय ।।४४।।
धन्य धन्य प्रीतम पिया धन्य दीन अनुबंध ।
जीव पीव प्रभु मिलन को कहौ सुनौ सुप्रबंध ।।४५।।
चलो परात्पर धाम ते श्री सतगरु बपु धारि ।
भव अगाधि निधि बीचते कर गहि लेहु निकारि ।।४६।।

:o: :o: :o:

वन कदंब दम्पति रमत सम्पति रहस कदम्ब ।
श्री मानसिनंदिनि सुतट रसिक स्वेत अवलंब ।।
वन अनंग सु विदेहजा अलि रघुनंदन संग ।
विलसत विहँसत अंग अँग वारिय अमित अनंग ।।
विपिन नागकेसरि न सरि युगल विलास प्रकास ।
द्वादस वन मन रमन करु लहु मद द्वादस मास ।।

विषय—गुरु द्वारा जीव और ईश्वर का मिलन वर्णन किया गया है ।
एक समय ईश्वर ने अपने परिकरों से कहा, "मेरी अनेक कृतियों मे से पृथ्वी अत्यंत रम-

णीक है। तुम लोग जाकर देख लो। परंतु वहाँ की किसी वस्तु को न तो छूना और न लाना ही, केवल देख भर लेना।"

जीव अगुआ था और उसके साथ जप, तप, संयम, नियम, व्रत, शम, दम, ज्ञान, विज्ञान, विरति, सुरति आदि अनुचरों की सेना थी। जब वह पृथ्वी पर आया और उसकी शोभा तथा मन को लुभाने वाले उसके भाँति भाँति के पदार्थों को देखा तब उसे वापस जाने की इच्छा नहीं हुई।

साथियों ने बहुत समझाया, पर सब व्यर्थ। अंत में सब जीव को छोड़कर लौट गए और परमात्मा से उसकी सब बातें कहीं। परमात्मा को इसमें बड़ा दुख हुआ। अंत में कृपावती की सहायता से परात्पर धाम से श्री गुरु का अवतार हुआ जिसने अपने सदुपदेश द्वारा पृथ्वी से जीव का उद्धार कर परमात्मा में उसका मिलन कराया।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम भी अज्ञात है। एक स्थान पर एक दोहा इस प्रकार है :—

'राम वल्लभा शरन गरु' कियो सुगुरु प्रभु 'सीतेश'।
सन्मुख ही निस दिन रहै श्री सतगरु करुनेश॥

हो सकता है, उपर्युक्त वाक्यों में रचयिता एवं गुरु के नाम हों, पर स्पष्टतया कुछ विदित नहीं होता।

रचना भक्ति विषय की दृष्टि से साधारण है। राम और सीता के विहार में अयोध्या के रामानुयायी वैष्णवों ने अपने को कृष्ण संप्रदाय के वैष्णवों से पीछे नहीं रखा।

संख्या ५५२. योग रत्नमाला, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—११ ५/८ × ३ १४/१६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—निरंजनी अखाड़ा, स्थान—ग्राम गढ़, पोस्ट—माड़ा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ श्री मन्नारायणाय नमः॥ अथ योरत्न मला लिख्यते॥

॥ श्री गोरषो वाच:॥

अथ गरू सिख्य को जप मंत्र होय सो गरू सेवाये जाकि बुधि निमल होय जाकि बुधि सूर्य कि बराबरी होय सूर्य के उदय करि बहु कला विकास होये तैसे गुरू सेविये विमो तो येहि सास्त्र की बधि प्राप्ति होय गुरू के मते ६ सर्वशास्त्र का सार समुद्र मथि काढ़ा है॥ तोइ सास्त्र का नाव योग रत्नमाला राखा है॥ पातसाह को तमासे दिखाये हुय॥ यह सास्त्र सूर्य की योति समान हे। नागार्जुन आपने गुर से देखि के अजमाये है॥

इति गुरू प्रसादः॥

अंत—तिल का तेल धमारो टंकन षार॥ जाय के पातरस॥ सब दार तेल सीधि जे पाछे लिंग लेप कीजे ता स्थूल होय॥ आसंग का मूल॥ जेही मध सम भाग लीजै॥ अमली के रस मे षल कीजे पाछे सो सो चर नोन सहत सो षाय॥ दिन २१ वीर्य होय चली न सकै सै जोजन जाय व पुष्ट होय केस सपेद न होय हारे नाहीं॥ अथ॥ अपामार्ग का बीज सेर पचीस ॥२५॥ निर्गुंडी का जड़ सेर॥ ५॥ एही दोनुहुं का तेल पालयंत्र से काडिये सो तेल अंग मर्दन करे तो इंद्री वस्य होय॥

इति योग रत्नमाला संपूर्ण शुभं भवतु श्री॥

विषय—औषधि निर्माण करने, धातु आदि मारने और सोना बनाने की विधि का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम भी अज्ञात है। ग्रंथ 'श्री गोरषोवाच' से आरंभ होता है। नागार्जुन का भी नाम आता है। ग्रंथ मे वर्णित

विषयों के संबंध मे कहा गया है कि ये सब नागार्जुन ने गुरु को देख के आजनाए हैं। संपूर्ण रचना गद्य में है।

संख्या ५५३. राग रागिनियो का वर्णन, कागज——देशी, पत्र——१, आकार——१२,१०/१० × ६,१०/१० इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१२, परिमाण (अनुष्टुप्)——१८, खडित, रूप——पुराना, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्रीयुत हरिनारायण मिश्र, स्थान व पोस्ट——सिकदरा, जिला——इलाहाबाद।

आदि.........नमः॥

सुख को दाता राग है, राग रूप को भोग।
याही ते सब कहत है राग रोग संयोग॥ ६॥
राग............राग चहै रस भोग।
बिरहिनी भरै वयराग को उपजै महा वियोग॥१०॥

॥ अथ राग नाम ॥

भैरव की धन भैरवी बंगाली वैरारि।
मध माधी अरु सिन्धवी पाचो विरही नार।११॥
गनकली खंभावती मन(?) कर्थ।
मालकोश की रागिनी भावती अति दुर्ल्लघ॥१२॥
रामकली पटमंजरी और कहो देशाख।
ये नारी हिण्डोल की ललित विलावर राख॥१३॥
देखो नट अरु कानरा केदारा कोमोद।
दीपक की प्यारी सबै महाप्रेम परमोद॥१४॥

अंत——
॥ अथ रागिनी रूप ॥

शिवपूजत कैलास पर दोऊ कर मे ताल।
सेत चीर अंगिया अरुण............॥
भस्म पेटाली कर गहे हाथ लिए तिरसूल।
बगाली आकुल भई गई सबै सुधि भूलि॥३२॥
... ... या कर ककन शृंगार।
शीस केश सोहत छुटे सेत बसन बैरार॥३३॥
कंचन तन लोचन.................

विषय——राग-रागिनियो का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रथ का केवल प्रथम पत्र उपलब्ध है। रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञात नही।

संख्या ५५४. राजा विक्रम की वार्ता, कागज——देशी, पत्र——६, आकार——१ × ६३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——३०, परिमाण (अनुष्टुप्)——७६५, पूर्ण, रूप——प्राचीन, गद्य,-पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——स० १६०७, प्राप्तिस्थान——आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा, (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि——॥ बात राजा बिक्रम की ॥ पाउलीते ॥ किसना राना पें ते लिखि के लाये सो वार्त्ता ॥

गजमुष सुषदाता जगत दुष दाहक गणईस।
पूरण अभिलाषा करों शंभूसुत जगदीश॥

राजा बीर विक्रमाजीत ग्रजेंन नगरी का था ।।
ग्रोर ऊसके राज में कोई दूषी न था ।।

क्यों जो राजा पर दुष भंजन हार है ।। सो ग्रपने सहर में नित गस्त दीयो करतो सो ।। ऐक दिन राति मेंगस्त देते में राजा ने ऐक मकान में विश्राम कियो सो ।। वहां कहा सुनी जो कोई बातें करें हें जो इकलो कहीं न जांनो ।। ग्रोर कहीं जांनो तो दो जने जांनो ।। तब राजा ने वाइस में ये विचारी जो ग्राज ते इकले कबी न निकसेंगे ।। ग्रोर कल ही ऐक यार करनो चहीयें जो ग्रपनी सी सूरत मूरत को भाग्यशील होय सो करनो चहीये ।।

मध्य——सोइ इनने घोडा मारे सो जाय के देषें तो ऐक बड़ की पेड़ हें वहां कूग्रा बावड़ी तो कोइ हें नहीं तब कही जो पानी नाहें तो छाया में एक घड़ी विश्राम तो करि लेऊँ ।। सो घोड़ा सूं उतरि घासीथा बिछाय २ दोनों सोए ।। सो राजा ने देष्यो जो वर पें ते वूंद पानी की टपकें हें सोई राजा ने कही भाई कटोरा धरो सो भर जाई तब पीमें ये वर सरजीवन है । सो कटोरा धरि दीनों ।। सो टपक २ भर गयो सो वा पेंड पे १ मेना १ तोता रहें सो कहने लगे ग्रापस में सो मेंना बोली जो ।।

।। दोहा ।।

सुन सुग्रा मेंना कहें मेरो कहा धारो ।
मरते २ सरफ ने काहू भले कुंवर कों मारो ।।३७।।

ग्रंत——

रात की बात परभात पछी सषीयों ने कही कहो केसें रेन गुजारी ।।
पड़ी थी ग्रबरबस परी थी जबरबस पकरि के डंड दे पछारी ।।
फक फक हीरा गिरा गिरें फक फक लोही गिरे मरी रे मरी रे में पुकारी ।
जेसे राम की धमक से लंक टूटी तैसे पीऊ की धमक मेंने समारी ।। १ ।।

कार कू देऊ सो वाने कवूल कीनी सो वो रानी जो साहूकार लायो वाकी ग्रोर कमलता की भामर तो राजा कू परी ग्रोर मोती की वेंटी की भामर ईकदार सू परी फेर वहाँ कुछ दिन रहे फेर विदा भये सो कोई दिन में नगर ऊजेंन मे पोहोचे ।। नगर हु मे ग्रानंद कुमार वरती में ग्राये ।। जिन देषें भरि नेंन चेन काया सुषपांन ।।८१।। ग्रोर गाजा बाजा सूं दोनों कुमर वहू ले ले के घर में लीयें नोछावर होने लगी बधाई वजने लगी नोबत बजने लगी ग्रेसी सबकी फिरें ।।

विषय——इसमे राजा विक्रमादित्य ग्रौर उसके मित्र की कथा का वर्णन है । कथा सक्षेप में निम्नलिखित प्रकार से है :——

राजा विक्रमादित्य ग्रपने नगर का समाचार जानने के हेतु रात के समय बराबर नगर में घूमा करते थे । एक रात को वे किसी घर में ठहर गए । वहाँ दो ग्रादमियों को बातें करते सुना । वे कह रहे थे कि ग्रकेला कही नही जाना चाहिए । दूसरे ग्रादमी को साथ लेकर जाना चाहिए । इसी पर राजा ने निश्चय किया कि ग्रब वे भी रात्रि के समय ग्रपने साथ एक ग्रौर ग्रादमी रखा करेंगे । दूसरे दिन से उन्होने वैसा ही किया । कई घटनाग्रो के ग्रत में दोनों की एक जगह शादी हो जाती है ग्रौर दोनों ग्रपने घर चले ग्राते है ।

संख्या ५५५. राम जी का नहछू, कागज——देशी, पत्र——५, ग्राकार——७ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१४, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)——३५, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

ग्रादि——श्री सीताराम जी सहाए ।। श्री गंगा जी सहाए ।। श्री महादेव जी सहाए ।। श्री पोथी राम जी का नह छुग्रा लीख्यते ।।

राम नाम रघुनंदन भरथ भुवाल हे ।
दसरथ के कुलनंदन सरन तोहार हे ।
धेनुहा परही जनकपुर कोइ न तोरनीहार हे ।
देस देस के भूप सभ ठाढ़ मुख जोहहीं ।
दो चीत्त भइले राजा जनक जी परन नाही छुटही ।
अब सीआ भइली कुँआरी जनक बीधी खोहही ।
जो मए (? मैं) जनीतो धेनुष नाही टुटीहे परन नाही ठानीतो ।
जनक उठे अकुलाइ परम बीधी खोहही ।
बोली उठे बाबु लछमन सुनो भाइ राम हे ।
अग्या देहु मोही के धेनुष हम तोरहे ।
बोली उठे श्रीराम जी सुँनो भाइ लछमन हे ।
गुरु अग्या जब होइहे धेनुष हम तोरबे ।।

अंत--के एहु पोखरा बनावल घाट बनावही ।
केकर भरेला कंहार ।
तोकेइ नहवावही ।।
राजा दसरथ पोखरा बनावल घाट बनावही ।
कोसीला के भरेला कहांर तो राम नहवावही ।।
के देला चिउकी तुनरीआ त के देला रूप हे ।
केकइ देली चीउकी मुनरीआ सुमीत्रा देली रूप हे ।
कोसील्या देली रतन पदारथ भरी भरी सूप हे ।
:o: :o: :o:
होने लागी नहछावरी गोतीनी अती हरषही ।
जस सांवन के बुँद सांमघट अषही ।
राम बीआही घरे अइहे तो लेबो मे घोड हे ।।

इति श्री पोथी समापत संपुरन भइल ।।

विषय--राम और सीता के विवाह के समय के नहछू कृत्य का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नही । रचना का साहित्यिक दृष्टि से कोई महत्व नही । परन्तु ग्राम गीतों की दृष्टि मे यह महत्वपूर्ण है । इसकी प्राचीनता सौ-डेढ सौ वर्ष से अधिक की नही । इसमे लछमन के लिये "बाबू लछमन" कहा गया है । "बाबू" शब्द अंग्रेजों के समय का है । प्रस्तुत रचना निम्नलिखित अन्य रचनाओं के साथ एक हस्तलेख मे है :--

१ दानलीला--श्रीकृष्ण दास कृत
२ रामनहछुवा--श्रीकृष्णदास कृत
३. गोपाल गारी--सूरदास (?)
४ नागलीला--सूरदास (?)

प्रस्तुत रचना की भाषा पूर्वी अवधी है । सभवतः इसी आजमगढ़ उपप्रांत के किसी ग्रामीण कवि की रचना है ।

संख्या ५५६. रामायण किष्किंधा कांड, कागज--देशी. पत्र--५, आकार--९ × ४ इंच. पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६ परिमाण (अनुष्टुप्)--६०, अपूर्ण, खंडित, रूप--प्राचीन, (जीर्ण शीर्ण), पद्य. लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० रामपदारथ दूबे, ग्राम--अमदेवा, पो०--महमूदपुर सेमरी, जिला--सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—

वीर सधीर तीर कपीश तरणिहि तारह
(१५६) नत शोक शागर अगम डूबत जगम तुम्हइ निहारह

॥ सोरठा ॥

जांववंत एह भाषि कह्यौ न कछु पवमान सुत ।
अंगद प्रति अभिलाषि विकल सकल मरकट कटक ॥

इ श्री प्राचत्रे भावेस क पा प्रम विल ज्ञान भ प्र य उः म श्व सं वे तुणं सद्र त णे चि नो म शमरं सोः १ दोः १३ चौः १०४ छंः १ दोहा

एकादशे तरंगमह कहों कथा अव सोई ।
जामवंत हनमंत वर जन्म कर्म कह जोई ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

कपि सब हनूमान कह बोरहि । बिकल बिलोकहिं विधिहि निहोरहिं ॥
जौं एह सिंधु पार नहिं जाही । तौ निज मरण अन्यथा नाहीं ॥
बहु भातिन्ह कपि कटक दुषारी । करत अनेक तर्क भय भारी ॥
(१५७) जांववंत जानेउ सब काहू । दहत दीष शोकानल दाहू ॥
तब बहोरि हनमतहि निहारी । तात रिछ कपि कष्ट विचारी ॥
मख दुति रहित विकल कपि वीरा । बोलहु किमि न धरावहु धीरा ॥
बद्धिवंत विक्रम जशवंता । करणी सकल श्रेष्ठ अति संता ॥
बायु पुत्र बल बायु समाना । गुनसागर अरु तेजनिधाना ॥

॥ दोहा ॥

राम सुकंठहि परम प्रिय जेहि जानत संसार ।
जेइ मिलाइ मित्रत्व करि कीश ईश अधिकार ॥

॥ चौपाई ॥

तुम्ह इहवां सुग्रीव समाना । को करु तुम्ह विन कारज आना ॥
तुम्हहि न कछु एह शागर दूरी । तव भुज बल जानत हउं भूरी ॥
खगपति अहि अवलोकि अहारू । जात दीष षारहि बहु बारू ॥
तेहि पर भुज अपार बल तोही । काह विचारि रहेहु जिय जोही ॥
करि व्यवसाय सु कपिन्ह बंचावहु । निज बल बर तिहुं पुर दरशावहु ॥
राम काम लगि जनम तुम्हारा । सो न ह्रिदय किमि करहु विचारा ॥
निज बल तुम्ह कह अहइ भुलाना । कहिहों हो प्रसंग सब जाना ॥
अंगद सुनहु कथा मन लाई । अति पावन प्रथमहि मुनि गाई ॥

॥ दोहा ॥ (१५८)

भक्ति मानसर मो मगन जिय न जान कछु आन ।
ताते पुनि कारण अपर निज बल विपुल भुलान ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि पुनि हनुमानहि देषा । सुनहु तात निज जन्म विसेषा ॥
पूर्वहि अपसरशा छबि धामा । पुजिकस्थला ताकर नामा ॥

शाप बिवस कपि कुंजर केरी । भइ भामिनि भावी बश हेरी ।।
नाम अंजनी तासु कुमारी । जात भई बानरि तनु धारी ।।
सुता दीष जव भइय सयानी । तब कपि कुंजर मन अनुमानी ।।
ब्याह विहित जत विधि जहं चाहीं । तस करि दीन्ह केशरिहि ब्याही ।।
सो प्रसिद्ध सब लोकहु मांही । पटतर कहँ दुतीय त्रिय नाहीं ।।
शाप भोग जब गयउ बिहाई । तव सोइ शुभ दिवि लां.....।।

अंत--(पत्र १६१)

तब तुम्ह एक गिरि शृंग उपारी । गज समेत सुरनाथहिं मारी ।।
परा विकल करि सहित सुरेशा । बहुत बेर बहु सहेसि कलेशा ।।
पुनि मुरछा जागे सुरराई । तुम्हहिं वज्र सें हतेसि रिसाई ।।
सो सरशत जोजन लहि हचा । गिरिपर परेहु कुलिश कर कचा ।।

।। दोहा ।।

दूरि पतन तर धराधर, तुम्हहि न कछुक बिषाद ।
बाम भाग हनु सिषर बर तब वल वहु मरजाद ।। ७ ।।

।। चौपाई ।।

सुनि ब्रह्मादि शिवादिक आए । करि बिनती बहु रविहि छुड़ाए ।।
दीन्ह सुरन्ह बहु विधि बरदाना । सो सब को करि सकै बखाना ।।
बाम भाग हनु शैल विशाला । ताते विधि विचारि शरभाला ।।
हनूमान तव राषेउ नामा । सकल तेज बल बुद्धि सुधामा ।।
इहिते तव बल अति अधिकारा । बाल पराक्रम करत विचारा ।।
अब अति जुवा समय सुभ आई । तव बल महिमा को सकु गाई ।।
उठहु.................................. ।

(१६३)

......ज्ञानी राज काज सबहुं भांति दोहा...सोइन करी कि....
(खंडित)....................

।। चौपाई ।।

सब कपि विनय करहिं... । किमपि न काल जाल ते छोरी ।।
अतवट विक्रम वाऊन्ह पाई । किमि न लेहु जस जगहि देषाई ।।
सिय सुधि बिन बीते बहु काला । ल्याइ लहहु तुम्ह सुषद बिशाला ।।
जंह गति पवनहुं केरि न होई । तहं तुम्हारि जानत सव कोई ।।
लवनोदधि एह सबहिं अपारा । तुम्हहि न दुर्गम ह्रिदय बिचारा ।।
कोसन्ह केर कष्ट अवलोकी । किमि नहिं वेगहिं करहु विशोकी ।।
समरथ वयविक्रम समतूला । लंघहु सिंधु बिनासहु शूला ।।
रिछराज जूथप कपि जूहा । करत भये सब बिनय समूहा ।।

।। छंद ।।

सबहीं कसोवहु विनय पुनि सुनि पवन....... ।
.... अपूर्ण ।।

विषय--रामायण किष्किधा काड के अतर्गत हनुमत् उत्पत्ति और उनके बल विक्रम का वर्णन तथा सीता की खोज करना।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ अपूर्ण है। समस्त पाच पत्रे (एक सौ छप्पन, सत्तावन, अट्ठावन, एक सौ तिरसठ और इकसठ) उपलब्ध है।

संख्या ५५७. रामायण नाटक, कागज--देशी, पत्र--८५, आकार--९ × ६¾ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२०४०, खडित, रूप--पुराना (जीर्ण शीर्ण) पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८८५ वि०, प्राप्तिस्थान--ठाकुर रघुनाथ सिंह, ठा० जगबहादुर सिंह, ग्राम--समोगरा, पोस्ट--नैनी, जिला--इलाहाबाद।

आदि--.............................

...न के साब्द बाली अकुलाना। सका मे आचाय कर जाना॥
मंत्रीन सो अस कहे बावारी। साब्द अघात भएउ का भारी॥
हाथ जोरि मंत्री अस कहइ। बड़ि बपरांत बात एह अहई॥
लछिमन राम जे दुनो भाइ। बान्ह कीन्हे सुग्रीव सहाई॥
लेइ सुग्रीव देषाएउ तारा। मारेउ राम बान भए पारा॥
एह सुना बाली क्रोध चीत धरा। बरत हुतासन जन घ्रीत पारा॥
नीसरेउ बाली क्रोध क रन कह कीन्ह पआन।
एक चीत भै हीदें मह कीन्हेउ हरी कर ध्यान॥
ह्रीदें मे कहेउ सात्या जो रामा। ता होइ हमन पुरन कामा॥
जौ सीअ सती अहहु नम कन्य। बाली मारि प्रभु जातइ रूएना॥
तौ विधि कर इकत सउ भेटा। परबस दुष जाइ सब मेटा॥
आएउ बाली महाबल भारी। रामचंद सो कहेसि पुकारी॥
सुनहु राम छात्री रनधीरा। हम हही बारी इद्रसुत बीरा॥
बल हमार तुम सुना न काना। सनमुष आइ कीहेहु आग्याना॥

मध्य--

जब रघुनाथ देष हनुमाना। आइ रीतु बसंत जनु जाना॥
प्रफुलित भए सब वानर सएन। तब रघनाथ बोल कछ बएना॥
अहइ जीअत मम प्रेम पीआरी। देषेउ आंषिन्ह जनकदुलारी॥
सीता जीअत अहइ रघुनाथा। मै परसेउ चरनन पर माथा॥
कहही राम तन देषेउ षीना। आनद रूप की चीत मलीना॥
कहही पवनसुत अति दुति षीना। जोति हीन औ बसन मलीना॥
राम कहही से प्रान पिआरी। करत अहही कीछ सुधि हमारी॥
तब कपि कहे षीन तन बामा। बल संभारि कइ बोलही रामा॥
सुनतै बचन राम मन माना। तब कपि काढ़ि दीन्ह सहिदाना॥
भए सहिदानी राघव पाए। उपजे प्रेम नएन जल छाए।
सीता बीरह ह्रीदय मह मानी दीन्ह कपी हाथ।
करनी बूझि पवनसुत मीलन कहे रघनाथ॥

:o: :o: :o:

अंत--

भाषत अहउ बचन परवाना। हे कपी तोही दीन्हे जीउ दाना॥

एह कही बइत नीकट चलो आउ । कीहेसी आइ जे कपी उर घाउ ।।
दानव करइ घाउ जब भारी । तब तेही का कपी धरे समारी ।।
छीवए लाइके भुजबल चापा । आठौ अंग बइत कर काँपा ।।
पांजर टूटि सीस औगराना । तेही षन दानव तजा पराना ।।

:o: :o: :o:

कीचकींद हइ देस हमारा । तहा के राजा सुग्रीव भुआरा ।।
लंछन राम दोउ जे भाइ . . . । . . . . ।।

आगे कथा नही अहै जो देषा सो लीषा दोस न दीअते प्रतो नाटक रमाएन लीषा सीउबकस सोमवंसी संवत १८८५ के साल मीती पुस सुदी ७ वार मंगल ।।

विषय—रामायण की कथा का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—आरंभ के ८२ पत्रे और पत्र संख्या ८५ नष्ट हो गए हैं ।

लिपिकाल संवत् १८८५ है । लिपिकर्ता ने अंत में "आगे कथा नही है" लिखा है । इससे स्पष्ट है कि जिस प्रति से प्रस्तुत प्रति लिखी गई है उसमें भी आगे की कथा नही रही ।

संख्या ५५८. राव हमीर सो गढ, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—तोसः असी गजराज अमानेः सुखीस अरदस सहेस तेगमाहु मीन माने ईतीहसम रण थंभ गढः ईती रावणधीरसगः हुत वचनई म उचरः हजरत हटमतमुरा हमीरसुः फेरपातीस्याह हुत सुवचन में है ताहै राव हमीर प्रीनीत सावत मे समचार मोहीः राज मेंसीनीत सुमरता है ः ये समचार हमीर मेमेहोः मद्यमास जाहा . . . . . . टजेः हरीष हरष मंदर मीजे वागनीः वाजन्ही होयः मथाहर मीजाहा सुनज्येः राजा वगनी वाजेः मृराण मुलमान्हीः मुसुलमान मानावः स्याहाये मऊ नही सुनीजेः

मध्य—यह ओलीपा मोई आयोः अचरज हुवोः हमारे तीरजगढ़ पै आयो ः रावचाहुही सचाहो ः सोच मुरी सेष बुलायो ः मुरज पोलीया धरषंड ः भयो राव चीत भंग ः मुहै मीर ः असे ओलीया ः मीते स्याहा मेसंगः मैहै मास्पारावहमीर सुभ होता है ः

अंत—पोहोचे राव हमीरः स्याहा सुरज सवहीः आसावेवल ओरसवः प्रैहै मास्याः हरमीरः मीले सवै सुर लोमु मे हजरती हुरम हमीरः मीले रावपतीस्याहः धीरज्यो न रस मायेः ज्यो पारस मुपर सैः ओर वजरे मच न होय जायः अलावीन पतास्याहा सः हुयोहीः ध्रव होय मुवी मैहै मास यही मऊचरः वास भी सत सुरपुर वस्योः ईती श्री राव हम्मीर सो गढ़ ।।

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ डिंगल भाषा में रचा गया है । इसमें अलाउद्दीन और हमीर की लड़ाई का वर्णन है ।

संख्या ५५६. वाराणसी विलास, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६।। × ५।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६८, लिपिकाल—सं० १८११, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० ब० ७३, पु० सं० ३४ ।

आदि--सिधि श्री गणेश जी प्रसादात् ।। श्री काशी बिश्वनाथ जी प्रसादात् । श्री वाणारसीबिलास लीखते ।। दुहा ।।

बीन्याएक वरदेत है गवरीनंद सिरचंद । दुंदालो दुख भंजणो सुंडालो सुरबंद ।। १ ।।
समरुं माता सारदा भूषण चीर अनूप । हंस चढ़ी हाजर सदा वरदाता अतिरूप ।। २ ।।
ढुंढ़राजराजे रिध पुरे अंनपूरणा आस । कोटवाल भेरू ईहां कासी बिने कइलास ।। ३ ।।

मध्य--पृ० ७-८

सदा वरत देहे सदा ऊजलरीत अनप । दंडीविप्र पोष्यके पावे सकल सवुप ।।३६।।
कासीजी में पुन्य है कीरत देस बिदेस । महाराणा कायम रहो घणा बरस जगतेस ।।३७।।
फिर आगे पांडे घाट हे केदारेसुर गोरी कुंड । राम लछमन जानकी हनुमान लीये मुंड ।।३८।।
असी संगम आयके संगमेंसुर सिर नाय । अकरुर घाट देख के लोलारक के आय ।।३९।।
फिर आए मणिकर्णिका अणा दीसो चलेह । बीरेसर जु घाट हे खंभहरचंद हे अेह ।।४०।।

अंत--बानारस महिमा अधिक काहु पे कही न जाय ।
चत्राई वालो कीयां ध्यान रहे मन माय ।।१०७।।

संमत सतरे अठाणवे दिन कवदे तिहुमास ।। नरदेही सुफल भई बसे वाणारसवास ।।१०८।।
इति श्री बाणारसी बिलास संपुर्ण ।। श्रीरस्तु ।। माघ कृष्ण दशम्यां संपूर्ण संवत् १८११ लेखक पाठकयोः शभमस्तु ।। ।।

विषय--"काशी खंड" में वर्णित काशी के तीर्थों का पौराणिक वर्णन ।

संख्या ५६०क. वास्तु प्रदीप, कागज--देशी, पत्र--२१, आकार--११ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--६३०, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लीपिकाल--स० १६२२ वि०. प्राप्तिस्थान--प० रामस्वरूप उपाध्याय, ग्राम--मुदिकपुरा (नारडीह), पोस्ट--फूलपुर, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।।

।। भाषा ।।

अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि दुसरे २ नवमें ९ पँचये ५ एग्यारहे ११ दशमे १० होइ तव गाँउ शुभ जानब और अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि एक १ तीसरे ३ सतए ७ चौथे ४ होइ तब गाँउ मध्यम जानब औ अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि छटये अठ्ये ८ बारहे १२ होई तवन गाँउ निषिद्ध जानब ओहि गाँउ न बस ब ।

अंत--जौ एको बाकी रहे तौ प्राण कर नाश कहब औ अग्नि कर बास स्वर्ग बिषै कहब औ दुइ बाकी रहै तौ अर्थ कर नाश कहब औ अग्नि कर बास पाताल विषे जानब, औ जे केउ कृष्ण पक्ष बिषे कृष्ण पक्ष को परिवाते गिनत है सो युक्ति अग्नि के बास कै नाही नीक है एवं सुलग्ने सगहं प्रविश्य वितान पुष्प श्रुति घोष यत्कम् शिल्पज्ञ दैवज्ञ पौरा नाजर्च्चये भूमि हिरण्य वस्त्रैः १ ।।

इति श्री वास्तु प्रदीपे गृह प्रवेश विधानं समाप्तम् शभमस्तु । सम्वत १६२२ ।।

विषय--वास्तुशास्त्र का वर्णन । यह मूल सस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है ।

संख्या ५६०ख. वास्तु प्रदीप, कागज--देशी, पत्र--२१, आकार--१०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{10}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--४४८, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १६३५ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरी-

प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता---श्रीधर पाडे, ग्राम–पांडेपुरा, पोस्ट व तहसील–फूलपुर, जिला–आजमगढ़) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गृह प्रकरणम् ॥

अपनी जन्मराशि ते जेहि गाँऊ के राशि दूसरे २ नवये ९, पचमे ५ इगरहे ११ दश १० होइ तवन गाऊ शुभ जानो । औ अपनी जन्म की राशि ते जेहि गाँऊ कै राशि जन्मे १ तिसरे ३ सतये ७ चौये ४ होइ तवन गाँउ मध्यम जानब ॥ औ छठये ६ अठये ८ बरहे १२ होइ तवन गाँउ निषिद्ध जानब ॥

अंत--विशाषा विषै प्रवेश करै तौ स्त्री कै नाश होइ ॥ कृतिका विषै करै तौ गृह कै नाश होइ ॥ भरणी तीनों उत्रा पूर्वा ३ मघा विषै गृह प्रवेश करै तो गृहेश कर नास होइ ॥ और मेषः कर्कः तुलाः मकरेः लग्नः और चैत्र मासः ऋक्त तिथि औ मंगलवारः औ रात्रि कैः औ अधिमासः विषे गृह प्रवेश न करव ॥

प्रवेश लग्न की अठये पचये दुसरे इगरहे के उपर पाच लग्न लेहि सूर्य्य होही तौ गृह प्रवेश शुभ जानब ॥

इति श्री वास्तु प्रदीप समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सम्वत् १९३५ मास पौष पक्ष शुक्ल तिथि चौथि वा शुक के समाप्त ॥ राम राम राम.........

विषय--ग्राम और गृह निर्माण के विषय में शुभाशुभ फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--लिपिकाल संवत् १९३५ है । मूल रचना संस्कृत में है जिसका प्रस्तुत ग्रंथ अनुवाद है ।

संख्या ४६०ग. वास्तु प्रदीप, कागज--देशी, पत्र--३८, आकार--९$\frac{1}{10}$ × ४$\frac{5}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ट)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--४३२, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० रामनिधि शुक्ल, ग्राम–लोहर पश्चिम, पोस्ट–बधुवा, जिला–सुलतानपुर (अवध) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गृह प्रकरणम् ॥ वास्तु प्रदीप लिष्यते ॥
॥ तत्रादौ ग्राम मैत्र विचार ॥

अपनी जन्म की रासि ते जहि गाव कै रासि दूसरी ॥२॥ नवए ॥९॥ पचए ॥५॥ ऐगरहे ॥११॥ दसए ॥१०॥ होई तवन गाऊ सुभ जानव ॥ औ अपनी जन्म की रासि ते जेहि गाऊ कै रासि एक तिसरे ॥३॥ सतए ॥७॥ चौथे ॥४॥ तवन गाऊ मध्यम जानब ॥ अपनी जन्म की रासि ते ॥ जेहि गाऊ कै रासि छठए ॥६॥ अठए ॥८॥ बारहे ॥१२॥ होई तवन निषिद जानब ॥

अंत--जो एक वाणी तौ अर्थ कर नास कहब ॥ औ अग्न कर वान पाताल बिषे जानब ॥ औ जे केऊ केऊ कृष्ण पछ की परिवा आदि दै कै जगेन ना करत है ते युक्ति नहीं नीक है ॥

:o: :o: :o:

तज्जातक संहिता गणित कृत मन्यो यह भू भु जातकी लंकृति वेद वाव्य विलस छुद्धि संचिता मणि ॥

इति श्री मदै कय्यान्त सुत दैग्य राम भद विरचिते महूर्त चिंता मणौ ग्रह प्रवेस प्रकर्णम् ततः श्री वस्तु प्रदीप ग्रह प्रवेस विधानौ भाषा धस्यम राम पंडित कृत्व समाप्त सुभ मस्तु संवतु...

विषय--वास्तुविद्या का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण तो है पर रचनाकाल, लिपिकाल और अनुवादकर्ता आदि का पता नही । पुष्पिका मे "भाषा धस्यम राम पंडित् क्रम" से पता चलता है कि कोई राम पडित अनुवादकर्ता है ।

ग्रंथ अवधी गद्य मे लिखा गया है ।

संख्या ५६१. विक्रम बत्तीसी, कागज--देशी, पत्र--३, आकार--७१५/१६ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१७, परिमाण (अनुष्टुप्)--४५, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रथदाता--प० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट--बरदह, जिला--आजमगढ़) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ विक्रम बत्तीसी पोथी ॥

॥ दोहा ॥

गुर गनपति सिव सारदा मागत हो कर जोरि ।
मन क्रम वचन रामपद सदा सुमति मति मोरि ॥
का जानी केहि मह भइ आई । एकहि आपु अनेक कहाई ॥
जिनहि होइ परिचै की बानी । तेहि परगट तू सारंगपानी ॥
मुनि बैराग जोग ज(प) तप साधा । अपने पंथ काम दुष दाधा ॥
जो षोजं तौ काहि न पावै । मन सुमिरत तेहि सहज देषावै ॥
सहज कहै ग्यान की बाता । बिरस न रसै मन राता ॥
जौ मन अपने मो कल स्नाइब । माया मोह भ्रम ते नि छुटाइब ॥

॥ दोहा ॥

पाव नं सवै भलपना कोटि माह जन कोइ ।
का जानी सो कह बसै केहि सिर टीका होइ ॥

मध्य--

उठि वनिआ हिय हर्ष करिः गौ राजा के पास ।
माथ नयके विनयसिः गौ चरेगो प्रतिहास ॥

स्वामी दरस राय सो पावो । चरन चूमि कर जोरि मनावो ।
तब अस बचन कहै प्रतिहारा । अंतहपुर गे अहै भुआरा ॥
तब बनिआ रोदन कै कहई । अति बड़ काम देव मो अहई ॥
बरहै चौक उपर बैसारा । जाना सात समुद्र के पारा ॥
कालिह प्रात ब्याह की घरी । बड़ असंक यह मो कह पड़ी ॥
गय प्रतिहार राय सो कहा । खाकी बात धर्म की आहा ॥
--अपूर्ण

विषय--संस्कृत ग्रंथ "विक्रम द्विंशति" का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडितावस्था मे है । केवल ३ पत्ते, सख्या १, १० और ६१ के प्राप्त हैं । अंतिम पत्रसंख्या से पता चलता है कि ग्रथ काफी बड़ा था । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । रचयिता का नाम भी विदित नहीं ।

संख्या ५६२, विष्णु पुराण, कागज--देशी, पत्र--३२, आकार--८७/१० × ५६/१० इंच,

पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--७६२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--श्री गनेमाएे नमह श्री काथा बीश्न पुरान लीखते ।। राम

बरनो गनपति श्री गनेसा । जीन्ह मोहि बीद्या दीन्ह उपदेसा ।।
जग्त पुरारी लोक तीन्हं दै आ । पुनी वंदो देवी कर पैआ ।।
सुखदा एक तुह असुर संघारी । सींघ वाहनी आदी कुमारी ।।
तुअ सुमीरत सुधी बुधी होती । अछर सप्त रहे तव मोही ।।
वाक वादनी जालपा माइ । त्रीपुरारी सीध होहु सहाइ ।।
ग्यान अर्थ नीती जपौ तोही । तुअ चरन कही होछा मोही ।।

।। दोहा ।।

ऐही नीसी चान मनावो देवी होहु सहाएे ।
जग्त जननी जग्त धारती अछर आनी मेराएं ।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

(पत्र ३)

गन गंधर्व नहीं एको सुरनर मुनी नहीं देव ।
प्रम जोती प्रमेस्वर जीन्ह खोजा सभकोए ।।

:o: :o: :o:

(पत्र ६)

जनमेंजाए के व्यासदेव कहो सो सब समझाए ।
बौधरूप चौ जुग अवरो कहो समुझाइ ।।
श्री वासुदेव वाचा ।।

अंत--श्री वासदेव वाचा

जब ऐही कीश्नु कहही प्रवाना । तव उधो नीस्चैं कै जाना ।।
तुहइ श्रीजहु तुहइ मेटावहु । तुही जारहु तुही पलटावहु ।।
तुही करता तुही धरता गोसाइ । अैसे चरीत्र तुह चलाइ ।।
तुह अस सामी को अस कहइ । व्याधा होए वैकुंठ ही तरइ ।।
मीछ मुकुती तुह सीर होइ । तुह अस चरीत्र करे नहीं पारा ।।
तुही मारहु तुही तारनी हारा । तुम्ह बीन जग्त करे को पारा ।।

।। दोहा ।।

तुही तारहु तुही बोरहु तुही देहु कल्यास ।
तुही पुनी नर्क भुंजावहु तुही देहु कबीलास ।।

इति श्री हरी चरीत्रे दसम सकंधे श्री भागवते बीश्नपुरान व्याधा बैकुंठनो नाम उधो संवाद नौमे नाम अध्याय ९ ।। ९ ।। इती श्री बीश्न पुरान सपुरन समापत ।

विषय---दशावतार और भक्ति का वर्णन ।
प्रथम अध्याय---दस अवतार वर्णन ।
द्वितीय ,, ---हरिश्चंद्र-सत्य वर्णन ।
तृतीय ,, ---राम दुख-सुख वर्णन ।
चतुर्थ ,, ---पांडव वर्णन ।
पंचम ,, ---चारों युगों का महत्व
षष्टम ,, ---यदुवंशी श्राप ।
सप्तम ,, ---यदुवंशी श्राप ।
अष्टम ,, ---वसुदेव-देवकी वर्णन ।
नवम ,, ---व्याधा वैकुंठ वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रंथ पूर्ण है । समस्त तैंतीस पत्रे हैं । बीच का चौथा पत्ता लुप्त है । इस प्रकार समस्त बत्तीस पत्रे उपलब्ध हैं । ग्रंथ पूर्ण होते हुए भी, रचयिता, रचनाकाल और लिपि-काल के विषय में कोई पता नहीं चलता । ग्रंथ प्राचीन प्रतीत होता है ।

समस्त ग्रंथ दोहे चौपाइयों में लिखा गया है और नौ अध्यायों में समाप्त है । प्रत्येक अध्याय का विषय पृथक् पृथक् है । भाषा अवधी है ।

संख्या ५६३. विष्णु पुराण, कागज---देशी, पत्र---४८, आकार---७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१६, परिमाण (अनुष्टुप्)---६८४, खंडित, रूप---प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि---नागरी, और कैथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान, ---काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--- . . . .

उतरे शवं जो बांदर वीरा । रथ अनेग उतरे शव धीरा ।।
जामवंत सुग्रीव भुआरा । राइ भभीछन दएन अपारा ।।
हनोमान ओ अंगद कुमारा । अनंत जोधा गनै को पारा ।।
नग्र नग्र के महाबली बीरा । उतरं बीरा जो रन के धीरा ।।
देषी कुटम तव राम हुलाशा । जानो इंद्रपुरी देषा कवीलाशा ।।

देषी कुटम हरषीत भै राम रहा नहीं जाइ ।
गुरु वशीस्ट के चरनन्ह राम धरे लपटाइ ।।

गुरु वशीस्ट शो आशीष पाइ । पाछे कै शाम वही शव माइ ।।
भ्रथ चवगन पाव तर परई । राम उठाइ गही अंग मो धरई ।।
भ्रथ चत्रगन शमदे श्रीराम । जानहु क्रीपोनी पाए नीज वाम ।।
पीता की अग्या राम बन लीन्हा । इन्ह तजी राजा घरही बन कीन्हा ।।

ह्नीदं हर्ष भै मीले तब नैन बैन बीलपाइ ।
भाइ भ्रथ मोरे है और न दुशर भाइ ।।

भाइ शमदी षं तब कीन्हा । तौ प्रुषन्हे काह अशीष दीन्ह ।।
जाहु स्वग देवन्ह के राजा । पुहमी नाहीन तुम्हरो काजा ।।
तुम्ह प्रताप जो सुष भो मोही । अब मै आग्या देत हो तोही ।।
चले पुहुप अब आग्या पाई । पाव लागी कै चरन मानाई ।।
पुहुपा चले देव अस्थान । पाछे कै शमवही पारधान ।।

चले देव हर्षित भे गए शरग अस्थान ।
पाछे कं तव शमेदे वीरधीर प्रधान ॥

:o: :o: :o:

अंत--

कहै राजा शनहु रे भाइ । एकमाश रह अब आइ ॥
एक माश तुम्ह चलो फीरी आवहु । तब षोलहु जो दरशन पावहु ॥
नीहचै षोलहु अगन होइ । हमरे कहा करहु रे भाई ॥
इन्द्र द्रोन तबही कहु ग्याना । इन्ह पापीन्ह अब घालेउ प्राना ॥
मोरे ऐता न कम न होइ । अपनी षशी जो षोले कोइ ॥
तवहीन जोगीन्ह षोले केवारा । शबै देह जग्रनाथ संवारा ॥
पाहुच नाही वीधाना सवारा । दोष परै जो जोगीन्ह केरा ॥

दोष भए जोगीन्ह काहा पाप पशीर अपार ।
देहु अषैवर भगतन्ह कहा कीती चलै शंशार ॥

इति श्री ग्रीशन पुरान की काथा । आगे जै जै जादोश नाथा ॥
ग्रीशनपुरान शर्न मनलाइ । वाढै ध्रम पाप छै जाइ ॥
जो फल गआ अश्नान के कीन्हा । शो फल भुषेही भोजन दीन्हा ॥

आगे ग्रीशन पुरान की काथा शपुरन आगे जो देषा शो लीषा लोषनेहार का दोश न देना घटा बढा अक्षर जोरी के लेना हमके दोश न देना आगे जो देषा शो लीषा लीषारहा जग जगमेटी शकै न कोइ अगे जो पंडीत जाने पढे औ गने तेही पंडीत के प्रनाम कर जोरी आगे शंमत अठारह शंइ १८३८ शमै तम शमतसरे मीतो कातीक वदी दुइजी के पोथी शंपूरन वार वीहफे के रोज पोथी संपूरन आगे शभ ॥

विषय--विष्णु पुराण के आधार पर रामचद्र के अयोध्या मे प्रत्यागमन से लेकर अश्वमेध यज्ञ तक एव यदुवशियो के नष्ट होने तक की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही । ग्रथ आदि, अंत और बीच मे जहाँ तहाँ खडित है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । ग्रंथ की भाषा प्राचीन जान पड़ती है । प्रति कैथी लिपि में लिखी होने के कारण शुद्धाशुद्ध का कोई ध्यान नही रखा गया है । विवरणपत्र मे जहाँ तक हो सका शुद्ध करके लिखा गया है । यदि मूल के अनुसार ही लिखा जाता तो उसका आशय समझना ही कठिन हो जाता ।

सख्या ५६४. विष्णु पुरान (गोपाल चरित्र), कागज--देशी, पत्र--४८, आकार--७ × ६१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--३६६, पूर्ण, रूप--प्राचीन पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १६३४ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणीसभा, वाराणसी । (ग्रंथदाता--प० स्वामीनाथ दुबे ग्राम-दुबौली, पोस्ट-खुखुदू, जिला-गोरखपुर) ।

आदि--श्री गनेशयन्मः ॥ श्री पोथी विस्नपुरानः ॥

॥ चौपाई ॥

वरनो गुरगोविंद गनेसा । वरनो ब्रह्मा वीस्न महेसा ॥
वरनो देव तंसीसो कोरी । साधु संत सो वीनती मोरी ॥
वरनो वालमीक औ व्यासा । जाकी कीरती जग प्रगासा ॥
संसक्रित जीन्ह कीन्ह प्रगासा । ताकी छाया जीन्ह सभ आसा ॥

॥ दोहा ॥

चारो जग की महीमा ग्रो पुनी दस ग्रवतार ।
जेही जुगमे जस बीता सो सभ सुनो भुग्रार ॥

॥ चौपाई ॥

कथा एक रीषी कहा बुझाई । सुनत ही सकल पाप छै जाइ ॥
केसे सतजुग त्रेता भेउ । कैसे कलजुग द्वापर भेउ ॥
कैसे दसो जन्म ग्रवतारा । कैसे महि कर भार उतारा ॥
कैसे सीरीजा सकल संसारा । कैसे पवन पानी ग्रनुसारा ॥
कैसे कलीजुग की पैसारी । काहा गए वहू देव मुरारी ॥
सो मोही रीषे कहो समझाई । काहा गए कवरो स्वभाई ॥

:o: :o: :o;

ग्रंत--

इंद्रदवन ग्रसतुती ग्रनुसारी । जै जै जग्रनाथ जगतारा ॥
नवतन ग्रंग चढे प्रभु भोगा । लेही प्रसाद देव मुनी लोगा ॥
भात कै भर्म करै जो कोइ । भर्म करै कुष्टी सो होई ॥
ब्राह्मन सुद्र खाही एक साथा । एकाकार कीन्ह जग्रनाथा ॥

॥ दोहा ॥

ग्रलख नीरंजन करता सोइ बउध ग्रवतार ।
जीन्ह जीन्ह द्रमन पायल से से उतरल पार ॥

इति श्री हरि चरित्रं दसम स्कंधे बिस्नपुर्न (? विष्णु पुराण) जगनाथ ग्रौतार बरननो नाम षष्टमो ग्रध्या दसम सकंधमे ॥ संमुरन समत १९३४ समे नाम कार्ति मासे सूकल पक्षे ॥८॥ लीखा लाल जीवलाल ग्राम नाम राउतपार ग्रमेठी ग्रातथे डोड़ प्रगने सलेमपुर मझवली जीले गोरखपुर ॥ पंडीत जन सो मीनती मोर टटल ग्रक्षर वाचव जोरी जो देखा सो लीखा मम दोख न दीजीयो राधाकृष्ण गोपाल ग्रीधारी बनवारी ॥

विषय--भगवान् के दशावतारों की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रंथ रामकृष्ण कृत 'लक्ष्मीचरित्र' के साथ एक हस्तलेख में है । रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल संवत् १९३४ है ।

रचयिता का नाम ग्रज्ञात है । रचना पौराणिक है ग्रौर कथा वार्ता की दृष्टि से लिखी जान पड़ती है ।

संख्या ५६५. वासन सहार (? वेसन सिंघार), कागज--देशी, पत्र--१३, ग्राकार--५¾ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)--७३, ग्रपूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८५६, प्राप्तिस्थान--ग्रार्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा ।

ग्रादि--. . . गणेशाय नम ॥ ग्र . . . वेसन सिंघार लिष्य . . . . . .

॥ दोहा ॥

ॐ उनमुन नेजा फरहरे ग्रनहद घुरै निसांण ।
सही मोमीयां ऊपरे चढ़ीया सबद दिवांण ॥ १ ॥

नाव नृपति की फौज का कोहा करं वषांण ।
एक एक सू आगला जौ.........बाण ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

सांचौ कला ज ग्यांन की जग जुर्थायौ जस लाभ ।
नाव नृपति परताप मैं परतौ भेरयौ आप ॥ ६ ॥

मध्य—

जाइ सतोषं झपटीयौ क्रोध ऊपरं षग्ग ।
कम......कंध तजि उडि गयौ षग्ग ॥४२॥
मैं वास्यां की फौज कौं भला दिखाया हत्थ ।
सबहीनि होला ऊतरचा नाव.........॥

विषय—लोभ और मोह के साथ शील सन्तोष, ज्ञान और विवेक की लड़ाई का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । रचनाकाल अप्राप्त है । लिपिकाल भाषाभूषणके आधार पर सं० १८५६ है । दोनों ग्रंथ एक हस्तलेख में हैं । रचयिता का नाम अज्ञात है ।

रचना आध्यात्मिक ढंग की है । ग्रंथ के अक्षरों की स्याही उखड़ गई है जिससे वे पढ़ने में नहीं आते ।

ग्रंथ कुछ अन्य ग्रंथों के साथ एक ही हस्तलेख में है । अन्य ग्रंथ ये हैं —
३. भाषाभूषण—जसवंत सिंह कृत
२. विरह अंग—वाजिद कृत
३ प्रेम पच्चीसी—सोमनाथ कृत

संख्या ५६६. शृंगार तिलक, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णदेव पांडेय, ग्राम—गूजरपार, पोस्ट—मुबारकपुर, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

बाहू द्वौ च मृणालमस्य कमलं लावण्य लीला जलं,
श्रोणी तीर्थ शिला च नेत्र सफरं धम्मिल्ल शैवालकम् ॥
कान्तायाः स्तन चक्रवाक युगलं कंदर्प बाणानलै-
र्दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यं सरो निर्म्मितम् ॥ १ ॥
बाहुमृणाल सरोज सो आनन बारि बनो तन सुंदरताई ।
श्रोणी शिला तट घाट रची सफरी दृग शैवल केश सोहाई ।
कामिनि को कुच कोक दोऊ विधि ने रचि रम्य तडाग बनाई ।
काम शरानल दाह हरे अवगाहत के जन को सुखदाई ॥ १ ॥

अंत—

एतत्पयोधर युगं पतितं निरीक्ष्य खेदं वृथा वहसि पंकि हरिणायताक्षि ।
स्तब्धो विवेकरहितो जनतापकारी यस्योन्नतः प्रपततीति किमत्र चित्रम् ॥२४॥
देखि उरोज नतानन मानिनि दोउ वृथा जिय होहु दुखारी ।
तू चतुरा गुण रूप उजागरि नागरि शील सुभाग ते भारी ।
ताध उतुङ्ग विवेक विवर्ज्जित जो जन है पर को अपकारी ।
सोअध को पतबेह करै यह चित्र कहा हिय देखु बिचारी ॥२४॥

कस्तूरी को तिलक सखि ना कुरु कबहों भाल ।
समुझि साङ्क हरिणाङ्क हिय ग्रसिहै राहु कराल ।।२५।।
इति श्री कालिदास कृतं शृङ्गार तिलकं समाप्तम् ।। संवत् ।। १८६० ।।

विषय––कालिदास कृत शृंगार विषयक पच्चीस श्लोकों का हिंदी पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य––रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल संवत् १८६० है ।

मूल रचना संस्कृत में है और महाकवि कालिदास कृत है । हिंदी पद्यानुवादकर्ता का पता नहीं चलता । अनुवाद सरस हुआ है जिससे अनुवादकर्ता प्रौढ कवि जान पड़ता है ।

संख्या ५६७ श्री गोवर्धनधर को वर्ष भर को शृंगार (सं० १८५८ वैशाख से प्रारंभ), कागज––देशी, पत्र––३२, आकार––६। × ५।।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––२६, परिमाण (अनुष्टुप्)––८१६, अपूर्ण, रूप––साधारण, गद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––सं० १८५७, लिपिकाल––सं० १८५८, प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरौली, हिं० ब० ६१, पु० सं० ३ ।

आदि––।।श्री कृष्णाय नमः।। श्री गोवर्द्धन धर को शृंगार । वैशाख बदि ११ मंगरवार संवत् १८५७ श्री आचार्य जी महाप्रभु जी को उत्सव सिंगारी श्री गिरिधारी जी अभ्यंग । कुलह-वागा सूथन पिछवाई केसरी । वागा चाकदार । ठाढे वस्त्र सुपेद बूटेदार । चौखटा मोती को आभूषण हीरा पना मानिक मोती को भारी सिंगार जोड ते हरी ।

मध्य––पृ० १५

१ मंगल अन्नकूट । काल्ह के शृंगार ते गोकर्ण पीतांबर अधिक धरे । २ बुधवार भाई बीज श्रीगिरिधारी जी अभ्यंग । चीरा सुनहरो, वागा सूथन लाल कीमखाप को वागा घेरदार ठाढे वस्त्र सुपेद । पिछवाई गोवर्द्धन उपर वरखा नीचे नंद जसोदा व्रज भक्त गायगोप आभूषण हीरा पना मानिक मोती ।

अंत––५ गुरु श्री बल्लभ जी पाग पिछोडा पिछवाई लाखी रंग लाल ठाढे वस्त्र सुपेद आभूषन हीरा पना मानिक मोती के । ६ शुक्र श्री विट्ठलराय जी श्री गोविंदराय जी के लाल मोती के सेहरा पिछोडा उपरना नींबुवा ठाढे वस्त्र सुपेद पिछवाई गाय ग्वाल की । आभूषण हीरा पना मानिक मोती ।

विषय––पुष्टिमार्गीय सेवा में श्री गोवर्द्धनधर, श्रीनाथ जी के वर्ष भर के उत्सवों और साधारण दिनों में होने वाले शृंगारों का नित्य क्रम वर्णित है ।

संख्या ५६८, संगीत ग्रंथ, कागज––देशी, पत्र––६, आकार––७ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)––१४, परिमाण (अनुष्टुप्)––१५२, अपूर्ण, रूप––पुराना, गद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––सं० १८६४ वि०, लिपिकाल––सं० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान––काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रंथदाता––पं० कृष्णसेवक मिश्र, ग्राम–सहनडीह, पो०––बरदह, जिला–आजमगढ़) ।

आदि––. . . . . से मिला है शंकराभरण केदार खिलावल से मिला है गंधार सिंधुला असावरी गौरी देवगीरी भैरो से मिला है पहरीवस्त पूर्वी ओ श्याम गौरी से मिला है पटमंजरी मारू धवला धनाश्री बंभारी से मिला है देव साख्य शंकराभरण ओ शुद्ध मल्लार कांधरा से मिला है विलावली विलावल गौर सारंग से मिला है कामोदी सौराष्टक गौरी से मिला है नाग-बहन मलार केदारा सुहो से मिला है अभीरी कल्याण बीसकार गूजरी श्यान से मिला है देशी षट

राग से मिला है देवगिरी पूर्वी सारंग शुद्ध से मिला है कोलाहल विहाग राग कल्याण कांधरा से मिला है कुकवी बिजावल पूर्वी केदारा देवगिरि माधो से मिला है देवाली बंभारी मालश्री सरस्वती से मिलता है गूजरी ललिता रामकली से मिला है मंगल गूजरी रामकली श्यामगंधार मंगलाष्टक से मिला है तरुण दीसकार गौरी पूर्व्वी से मिला है बाजे पूर्वा के जगह ललित कहत है बाजे विभास कहत हैं श्रीराग विधंसटंक गौरी से मिला है केदारा कुकर्वी पूर्वा बिलाबल से मिला है।

अंत——बाबा रामदास वैरागी मीरजा जलालुदी अकबर पातसाह के वषत मे थे मुसकी के विद्या में बड़ा दक्ष थे सो सूरदास बाबा रामदास के बेटवा ध्रुवपद विश्नावल विष्णु पद बहुत बनाया है बाज बहादुर मालवा का गावने में बड़ा दक्ष था सूरज षां चाँद षां बुई भाई मुसकी के विद्या में बड़ा दक्ष थ। अकबर साह की संहति में रहते थे श्राहू की अवलादि नवहार की जाति है नवबात षाँव बीन बजावने मे दक्ष था अकबर पादसाह के बषत में उसके बराबर कोई न था उसकी अवलाद षडारे की जाति है तानसेन कलावंत राजाराम बघेले का दोस्त था ध्रुवपद गावने मो मुसकी के विद्या में बड़े दक्ष थे कह रागिनीं बनाइके अकबर पादसाह किहा आए अकबर पादसाह बड़ा सनमान करिके राषा।

:o: :o: :o:

पलास षा तानसेनि के बेटे है तिसके दमाद लाला षां गावने मे बड़े दक्ष थे श्रौन्ह का जाति डाकुअर है अथके ओसतादों के कम लिषा यद्यपि संसार ओसताद से खाली न है पै हम अपने बुद्धि माफीक इस जमाने ओसतादों का नाम जानते थे सो लिखा।। संपूर्णम् सं० १८६४ कातिक सुदी २ मंगलवार ।।

विषय——सगीत विद्या और सगीताचार्यों का वर्णन। विषय इस प्रकार है :——

१. रागो का वर्णन।

२. वाद्य यत्रो का वर्णन।

३. ताल का वर्णन।

४ छद प्रवधो का वर्णन।

५ प्राचीन और नवीन सगीत आचार्यो (सगीताचार्यो) के नाम।

विशेष ज्ञातव्य——हस्तलेख अपूर्ण है। आरभ के ६ पत्ते लुप्त है। रचनाकाल और लिपिकाल एक ही सवत् १८६४ जान पड़ता है।

रचयिता का नाम अज्ञात है। ग्रथ खडी बोली गद्य मे है जिसमे फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। पर विषय और भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमे सबसे महत्वपूर्ण अश संगीताचार्यों के नामो का वर्णन है। उससे उस्तादो के नाम और आश्रयदाता, महाराजाओ एव बादशाहो के सबध मे बहुत कुछ ज्ञात होता है। जिन आचार्यो के नाम दिए है, वे इस प्रकार है :——

प्राचीन आचार्य

समीर, भरथ, हनुमान, नारद, कलनाथ, रावण, अर्जुन, पार्वती, सरस्वती, दुर्गा।

मध्यकाल

१. अमीर खुसरो (दिल्ली)।

२ नायक गोपाल (खुसरो के समय मे)।

३. नहस सानिवत।

४. सुलतान हुसेन सरकी (पातशाह जवनपुर)।

५. नायक बैजू (सुलतान बहादुर गुजरात के आश्रित)।

६. राजा मान (ग्वालियर) ।
७. नायक बकसु (राजा मान के श्राश्रित) ।
८. बाबा रामदास वैरागी (अकबर के समय मे) ।
९. सूरदास (रामदास वैरागी के पुत्र) ।
१०. बाज बहादुर (मालवा) ।
११. सूरज खाँ (अकबर के यहाँ रहते थे) ।
१२. चाँद खाँ
१३. नवबात खाँ (अकबर के यहाँ रहते थे) ।
१४. तानसेन (अकबर के श्राश्रित । राजाराम बघेले का दोस्त)।
१५. पलास खा (तानसेन के पुत्र)
१६. सुरत सेनि
१७. तानतरग खाँ
१८. चोर सेनि
१९. सुजान खाँ (तानसेन के सगी) ।
२०. नायक हरजू (ग्वालियर)
२१. सरकी श्रान खाँ ,,
२२. मदन राय ,,
२३. मया चंद ,,
२४. नायक धुधु (,, तथा तानसेन के समय के थे) ।
२५. लवल प्रकास
२६. लाल खाँ (पलास खाँ के दामाद) ।

इनके विषय मे केवल इतना ही दिया है कि ये कहाँ के रहनेवाले थे । श्रौर किन किन के श्राश्रित थे ।

ग्रंथ सभा के लिये प्राप्त हो गया है ।

संख्या ५६९. सप्त वध्या लक्षण, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—९$\frac{७}{१०}$ × ४$\frac{२}{१०}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६, प्राप्तिस्थान—प० भोलानाथ (भोरेलाल) ज्योतिषी, ग्राम व डाकघर—धाता, जिला—फतेहपुर ।

श्रादि—श्री गणेशाये नमः ।। श्रथ सप्त वंध्या लक्षण प्रयोजन ।। युवती को सप्त दोषो भवतिः इन्ह दोष सो पुत्र नहिं होई । श्रथ प्रथम श्वेत वंध्या । इस्त्रि को ऋतु देत । इस्त्रि को माथा दुषै तब जानीये कमल फीरा है । ताते बीर्ज नहि राहै । तव श्रौषध बनौदा कास्ठदा मुरगी का पित्ता मिलाइ तैलुगे होइः तव योनि भीतर श्रौषधि लगावै । जै दिन तव ऋतु देइ पुत्र होइ ।

मध्य—

इबं पोस्तकं लिषितं गीरीधरी परसद जोतकी । सप्त वंध्या लक्षानं समपतं । जेट मसे कृष्न पक्षे तिथौ नउम्यं वृहसपत वसरे संवत् १९१६ । सके १७८१ ।

जंत्र ज्ञान

४	८	२	८	४	८	०
६	५	२	४	११	२	०
४	४	५	३	६	२	०

अंत--श्री गणेशाय नमः श्री गुरुवे नमः

सहस्त्र मंत्र उत्कीलानः मंत्र जमे रोज उतर मुष करिके पुजा करके घिउ गुरु सेहोम करिये रोजा त्रिकाल जपियता पचास असरफी देइ सयेन करत विस्न रामा देइ ।। मंत्र ह्रीरं ति प्रियो स्वाहा हजार का जुन रोज क जाप संख्या ।। ३०००

विषय--सप्त वध्या लक्षण और औषधो तथा यवो का वर्णन ।

संख्या ५७०. माठा, कागज--देशी, पत्र--१४, आकार--६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६०, खंडित, रूप--पुराना, गद्य ,लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८८६, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रंथ-दाता--पं० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्त--बरदह, जिला--आजमगढ़) ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। अथ साठा लिष्यते ।।

।। प्लवंगनाम संवत्सरे फलं ।।

समो दुर्भिक्ष होइ । चैत्र वैशाष मध्यम होय । ज्येष्ठ आषाढ महर्घो । श्रावन मेघ अल्प । भादो मधिम । आश्विन आमावस्या की वर्षा । कार्तिक मे उत्तरषंड टीडी आवै हाट पटन उदास होइ । अति बाउ बाजै । उत्तर षंड मध्ये पढान उपद्रौ होइ । गुजरात मध्ये राज उत्पात होइ । अन्न फर्क मास ३ माघ फालगुण कष्ठ ।।

अंत--।। इति प्रभव नाम संमत्फलं ।। ५६ ।।

समो सजल निपजै रोगपीड़ा घनो रुंड मुंड होइ चैत्र मरी वैसाष वाउ वाजै आषाढ़ बर्षा श्राव फर्क अन्न महर्गो सर्व वोषै होइ मार्गशीर्ष पौष कष्ट चंवल देस होइ सुवार्थो भवे नृपा मलेक्ष पुरीउ दंगल होइ माघ फाल्गन वर्षा थांडो वाजै ।। इति वो प्रभव नाम संवत्फल ।। ६० ।।

इति विष्णु वीसी इति माठां संपूर्णम् संवत १८८६ चैत्र मासे १३ ।

विषय--साठ संवत्सरों का फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ गद्य मे है जिसकी भाषा पच्छिमी हिंदी (खड़ी बोली) है ।

संख्या ५७१. सति पतली, कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--६६, आकार--७ ३/१० × ५ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--६३५, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--कैथी, लिपिकाल--संवत् १९३८, सन् १८८१, प्राप्तिस्थान--श्री रामनरेश जी दुबे, ग्राम--गजहड़ा, पोस्ट--मुबारकपुर, जिला--आजमगढ़ ।

आदि--श्री गनेस जी सहाए नम । श्री सरसती जी सहाए नम । श्री हनोमान जी सहाए नम । श्री पोथी सीतपतल लोषते ।।

।। चौउपइ ।।

प्रथमे सुमीरी श्री गोपाल । जन्ह हमार कीन्ह प्रतीपाल ।।
सुमीरे केसरा आदि अनंत तोही । तीसरे दूसरे अवर नही सोही ।।
सुमीरे सुरसती अम्रीत बानी । जीन्ह एह काम्रा ही नही मन जानी ।।
सुमीरे गौउरी अवरो महेस । जेही सुमीरे ग्यान होए प्रगस ।।
सुमीरे ब्रह्मा दुइ कर जोरी । जेही सुमीरे पाप होए दूरी ।।
सुमीरे संकरदेव त्रीपुरारी । जेही सुमीरत गती होए हमारी ।।

:o: :o: :o:

तब पुत्री सुमीरो सीता माई । छाड़े अवध पाताल ही आई ॥
बन से राम सीता लेइ आये । अवध नगर में आनी पहुचाये ॥

अंत--

छाग्रानगर जोर तरुआरा । रहे संतोष मोर पीआरा ॥
तर गएउ एही कर नाउ । परउ आइ मात के पाउ ॥
सीत के बात सुने मन लाइ । सो प्रानी बैकुंठही जाइ ॥
लछमन राम सीत एक ठाइ । सभ लोगन्ह के पातष जाइ ॥
जो नर सुने मन लाई । बढ़े धरम पाप छैए जाइ ॥

इति श्री पोथी संपुरन भएल जो पतर देषा सो लीषा मम दोस न दीजे पंडीत जन ते मीनती टुट अंछरीं लेव सभ जोरी ॥ सन् १८८१ महीन कुआर बदी चउदस वार वीफै मोकाम समल के वहर ॥

विषय--सीता के कलंक की कथा का वर्णन ।

कथा में विशेष बात यह है कि केकई द्वारा सीता पर कलंक लगाया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल संवत् १६३८ है । रचना साधारण कोटि की है । यह रचना तुलसीदास कृत 'राम जन्म' के साथ एक हस्तलेख में है । ग्रंथ के नाम में अशुद्धि जान पड़ती है ।

संख्या ५७२. सीता चरित्र, कागज--देशी, पत्र--५३, आकार--८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--५८३, खंडित, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--................ ॥

केकई के मन कीछुवो न भावा ॥
दछीना दान सब कहं लै दीन्हा ।
बहुतो भांति कर आदर कीन्हा ॥
भगत जन कै दालीदार तोरा ।
आपन कुल परिवार बटोरा ॥

॥ दोहा ॥

साथ विप्र औ मंत्री पाएक औ परधान ।
केकइ के चरन बंदी के पार बइठी देहु दान ॥

अंत--

जोरी पानी तब कहै हनुमाना ।
एक वचन पायौं भगवाना ॥
कहौ तो काल ही सायर बोरो ।
हार पाजर जंम्हकातर तोरो ॥
सीता कहा फहु इइ फारा ।
करी दरवाजा रंथ संचारा ॥

॥ दोहा ॥

जैसा श्रीपति भाषहु तैसा करौ मैं काम ।
कोटीन्ह काल बीधंसब करौ राम के कांम ॥

।। चौपाई ।।

पवनसुत सुनहु हनुमंता ।
मूल उपारि के फेकु तुरंता ।।
हंनुमत सुनत काम कस कीन्हा ।
बजर के काम्रा सीर प्र दीन्हा ।।
चहु दीस फुटीगं अरगाइ ।
मही मीलीगं पाताल चली जाइ ।।

—अपूर्ण

विषय—आध्यात्मिक रूपक बाँधकर सीता की कथा का वर्णन किया गया है। रचना संत मत की दृष्टि से लिखी गई जान पडती है। कथा का सार इस प्रकार है :—

दूसरे वनवास से सीता के वापस आ जाने पर अयोध्या में बड़ा उत्सव मनाया गया। केकई को वह अच्छा न लगा। उसने राम से कहा कि सीता से पूछा जाय कि कुश किसका पुत्र है। राम ने इस विषय में केकई को ऋषियों से पूछने के लिये कहा। पर बात सीता तक जा पहुँची। उन्हे इस कलंक से अत्यत ग्लानि हुई और पृथ्वी से फट जाने के लिये प्रार्थना की जिससे वह उसमें समा जाय। पृथ्वी फटी और सीता उसमें समा गई। अयोध्या में फिर हाहाकार मच गया। सारा रनिवास रो उठा। राम सीता की वियोगाग्नि में फिर तडपने लगे। एक दिन उन्होंने स्वप्न देखा कि सीता समुद्र की लहरों में बही जा रही है। बडे-बड़े जलजंतु चारो ओर से उसकी रक्षा कर रहे है। कुछ दिन पश्चात् वह किनारे लगी और आश्रय पाने की इच्छा से इधर उधर घूमती हुई एक फुलवारी मे जा पहुँची जहाँ उसकी भेंट मालिन से हुई। सीता का नाम सुनकर मालिन को ज्ञान प्राप्त हुआ और उसने अत्यन भक्तिभाव से उसका सत्कार किया। पूछने पर सीता को ज्ञात हुआ कि वहाँ के राजा का नाम हंस और रानी का नाम हंसिनी है। उसने मालिन से कहा कि वह राजा के पास जाकर उसके लिये थोडी सी भूमि माँगे जिसमें वह अपना निवास-स्थान बना सके। मालिन राजा के पास गई और उनसे सीता का सदेशा कहा। सीता का नाम सुनकर राजा को पूर्व जन्म का ज्ञान प्राप्त हुआ। उसने अपनी रानी से भी वृत्तांत कहा जिसको सुनकर उसे भी ज्ञान प्राप्त हुआ। राजारानी, दोनो कुटुब परिवार तथा मंत्रियों सहित सीता से मिले और भक्तिपूर्वक आतिथ्य सत्कार कर उसे अपनी पुत्री के यहाँ टिकाया। सीता ने हंसिनी से अपना जन्म वृत्तांत इस प्रकार कहा :—

एक पर्वत के ऊपर मेरा स्थान है। वहाँ एक ऋषिराज तपस्या करते हैं। दूध और फल के अतिरिक्त उनका कोई भोजन नही। एक दिन उनके दूध मे एक सर्प जा घुसा। यह देखकर एक मेघनी उसके ऊपर तैरने लगी। थोडी देर पश्चात् वह मर गई। जब ऋषि तपस्या से उठे और उन्होंने दूध पीने को माँगा तो देखने पर दूध पीने योग्य न निकला। ऋषि ने दूध को दूब के ऊपर छोडवाया जिससे दूब जल गई और एक भुजंग दूध में से निकला। ऋषि ने मेघनी को जीवन दान दिया जिससे वह एक रूपवान कन्या हो गई। उसका नाम मंदोदरी पड़ा। कन्या ऋषि के यहाँ रहने लगी। एक दिन ऋषि को कुछ विकार उत्पन्न हुआ जिससे उनका वीर्य स्खलित हुआ। उन्होने धोती मंदोदरी को धोने के लिये दे दी। वीर्य के दाग निकलते न देख मंदोदरी ने उसे दाँतो से छुडाया। परंतु यह कार्य करने से कुछ वीर्य उसके पेट मे चला गया जिससे उसको गर्भ रह गया। ऋषि को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होने रावण से उसका विवाह कर दिया। मंदोदरी को ऋषि ने एक मंत्र भी बतलाया जिससे रावण की गर्जना करने पर जब उसका गर्भपात हो तो वह भूमि में समा जाय और कोई उसका पता न पा सके। पश्चात् ऐसा ही हुआ। वह गर्भ भूमि के अंदर समा गया और उसमे मेरा जन्म हुआ। कुछ समयोपरांत राजा जनक के हाथ लगी।

और सीता नाम से विख्यात हुई। आगे की कथा प्रसिद्ध ही है। मैं जन्म दुःखिनी हूँ। मुझे कभी भी सुख से बैठने को नहीं मिला।

यह स्वप्न देखकर राम रोने लगे। उन्हें इसका निश्चय हुआ कि सीता जनकपुर में है। वे तपस्वियों का रूप धारण कर लक्ष्मण के साथ जनकपुर गए। जनकपुर में लक्ष्मण की स्त्री ने लक्ष्मण को क्रोध के कारण मरवा दिया और राम को उनके हत्यारे के रूप में वन में ले जाकर मरवाने का आदेश दिया। परन्तु राम किसी प्रकार बच गए। लक्ष्मण का वियोग उन्हें सीता से भी अधिक असह्य हुआ। स्मरण करने पर हनुमान उनके पास गए जिससे उनके चित्त को कुछ शांति मिली। गोदावरी तट पर लक्ष्मण का दाह संस्कार किया गया। जो हड्डियां बची उनकी माला बनाकर राम ने गले में धारण कर ली। हनुमान ने पाताल में जाकर सीता की खोज की और राम को उसे मिलाया। सीता ने अपने सतीत्व के बल पर लक्ष्मण को जीवित किया। जिससे सब आनंदित हुए। राजा हंस और रानी हंसिनी राम से मिले जिससे उनको मनोवांछित अलौकिक शांति प्राप्त हुई। सारा राज्य राम का भक्त हो गया। हंस ने अपनी कन्या चंद्रज्योति का विवाह लक्ष्मण से कर दिया। राम कुछ दिन हंस के राज्य में रहकर पश्चात् सीता, हनुमान, लक्ष्मण, चंद्रज्योति के साथ अयोध्या को चले गए। मार्ग में महाकाल से भेंट हुई। इसके पश्चात् ग्रंथ खंडित है, परन्तु अनुमान से जान पड़ता है कि महाकाल को भी हनुमान के सामने हार खानी पड़ी होगी और राम सकुशल अयोध्या लौटे होंगे।

कथा को पढ़ने से पता चलता है कि हंस जीवात्मा है, सीता ब्रह्म विद्या और हनुमान शक्ति तथा राम साक्षात् ईश्वर। लक्ष्मण ईश्वर का पुत्र विरक्त जीव है।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ आदि और अंत में खंडित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के नाम का भी कोई पता नहीं मिलता। रचना संत मत से संबंध रखती है इसकी भाषा पूर्वी अवधी है, जिसमें भोजपुरी के शब्द भी मिश्रित है :--

"दुखल भयल तोहरी पंथ।"
"तब सीता अस ठानल ग्याना।"

ग्रंथ के आदि में ५ और अंत में ५६ के पश्चात् के पत्ते नहीं है।

संख्या ५७३. सुदामा चरित्र, कागज--देशी, पत्र--२, आकार--१५$\frac{७}{१६}$ × ६ इ$\frac{१}{२}$च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१५, परिमाण (अनुष्टुप्)--८६, अपूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री गणेशधर दुबे, ग्राम--बीरपुर, पोस्ट--हंडिया, जिला--इलाहाबाद।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुदामा की भजन दिनता ॥
अस कहत सुदामा की नारि दीन के बंधु हरे ॥ टेक ॥
हे स्वामी निसी बासर गये बीति कहा देवस गवाये।
मन मलीन तन छीन सदा दालिद्रै छायै ॥
दुष की राजै भुंजते बीति गये पन चारि सुष कवहुं न पाया ॥ १ ॥
त्रीया दुचारी नारि स्वारथ आपन पै जानौ।
जो पतिव्रता होहु सोच जिय काहे आनौ ॥
दान पुन्य दीन्हौ नही आपन दीहा पै होये।
सुष परारा देषि कै त्रीया काहे मरो तुम रोये ॥ २ ॥
हे स्वामी बीनु धन धर्म न होइ बेद बीनु जग्य प्रचारा।
सजन कुटुंम परिवार बीना धन कस बेवहारा ॥

बीनु धन धीरज न रहै बीनु धीरज सत जाये ।
काहे न कंत पग धारो हरि से कहौ बनाये ।। ३ ।।

अंत—

जबै त्रीया हसी कही ठगौरी तुम्ह कछु पाये ।
भुले भवना सोच फिरौ का बदन छपाये ।।
अपने भवन पग ढारहु भुजहु अचल सुषराजि ।
उठि कै देषौ भवन आपनौ कृपा कीन जदुनाथ ।।२४।।

इति पूर्ण ।।

विषय—सुदामा की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । रचना साहित्यिक है ।

संख्या ५७४. सुलोचना सत, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८$\frac{3}{10}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८, खंडित, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—प० राम अनंद जी तिवारी, ग्राम—दरवेशपुर, डाकघर—भरवारी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गनेसए नमः. . . . .।।

मेघनाद लछमन बड जोध । भीरे प्रसपर करी अती क्रोध ।।
मेघनाद अगन भुज परेउ । बन वेधी सोनीत सो भरेउ ।।
महीपती भुज परे तेही भती । मनहु सकल सुर तरु करती ।।
हेम सीहासन सोभीत बल । सेवही ध्रती बीध्येगमल ।।
प्रेम सुभउ धुकधुकी धकी । सुभग असुभ बहीने भुज फरकी ।।
सुनत सषीन के मुष के बैन । तजी सीधासन उठी सौतेन ।।
महीे मन कंकन भुषन सोइ । मह वीटक सभनन होइ ।।
होत महनौ खन हीरा मही । वीरी धुरी मोर पीउ तमही ।।

अंत—

सुत वधु जरी सैनही जबही । मुरछति नारीप धनी परु तबहीं ।।
हसत संचती अ-ये करी । कै वील पद सकंध पुवरी ।।
मुनी पुलस्तीक भ कुल नस । रवी ससी अइ कहु प्रगसा ।।
छुटी हैइ वंदी सुन गन केरी । नीजु नीजु पुरन दोहइ फेरी ।।
गगन सलील नीरमल जल आजु । सुवस वसी ही. . . . . . .
सती सुलोचन जरी कंथ के साथ । जुभी प्रगस कीन्ही बसमाथ ।।
एती सीलोचन सत समपती सुभमस्तु ।।

विषय—मेघनाद वध तथा सुलोचना का सती होना ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । केवल तीन पत्ते उपलब्ध है । रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही ।

रचयिता का नाम भी अज्ञात है । लिपि कैथी है जो अत्यंत भ्रष्ट है । रचना प्राचीन ज्ञात होती है ।

संख्या ५७५. सेवोपदेश, निवेदन विचार, कागज—माधोपुरी, पत्र—४, आकार—५ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप—पुराना,

गद्य, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८४४, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० २०, पु० सं० ५।

आदि--गोकुलेश भजनाधिकार रूप वार्ता ।। यथा द्विजस्य वैदिक कर्मणि गायत्र्युपदेशज संस्कारवत् ।। यातें निवेदन आवश्यक हे । याते जो अंशावतार के भजन में तो सबकों अधिकार हे । तहां वचन । सर्वाधिकारिणो ह्यत्र विष्णु भक्तौ नराधिप । तहां श्री भागवत में कहे हे जो । देवोसुरो मनुष्यो वा यक्षो गंधर्व एव च । भजन्मुकुंदचरणं स्वस्तिमान् स्याद्यथा वयं ।।१।। इत्यादि वाक्यतें ।। परंतु पूर्ण पुरुषोत्तम के भजन में तो निवेदन मंत्र पाछें ही सेवा को अधिकार हे।

मध्य--एसे ही नवधा में जानिये । चेतन्मत्प्रवणं सेवा यह आत्म निवेदनं ।। स्वस्मिन् ज्ञानी प्रपश्यती ।। यह आत्मनिवेदनं संबंधी दर्शन । कृष्णमेव विचिंतयेत् ।। यह विचिंतन रूप आत्म निवेदनांग प्रेम ।। यातें पहिले दोय मंत्र अवश्य अपेक्षित हे । शरण मंत्र तें हूं हृदय शुद्ध भयो । तथा श्रवण तें प्रारंभ दास्य पर्यंत ।।७।। भक्ति भई ।।

अंत--तहां सेवा दोय प्रकार की । नित्यकृत् । तथा उत्सव कृत्य । ये दोऊ लिखे हें ता प्रकार सेवा करनी । न करिये तो भक्तिमार्गीय प्रत्यवाय होय । ओर लीला रस की प्राप्ति न होय । यह दुर्लभ पदार्थ अवश्य करनो । ओर अंगीकार भगवान किये जब जानिये जो अन्याश्रय तथा असमर्पित छुटि जाय । मार्ग में रुचि होय । कलिकाल हे बहकावन हार बोहत हें । तातें काहू के कहें बहकिये नहीं । या प्रकार तें दृढता राखिये सदा सर्वदा या प्रकार की श्री मदाचार्य जी त० श्री गुसांई जी की आग्या हें ।। इती ग्रंथ संपूर्ण संवत १८४४ श्रावण वदी ५ तापीपुर में लिख्यो हे ।

विषय--श्री शुद्धाद्वैत पुष्टि संप्रदाय के सेवा विषय, भक्ति विषय, निवेदन मंत्र विचार आदि सप्रमाण लिखे गए है ।

संख्या ५७६. सनेह सागर चतुर्थ तरंग, कागज--देशी, पत्र--४, आकार--$११\frac{१}{६}$ × $४\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५५, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सवत् १९३५ वि०, प्राप्तिस्थान--श्रीयुत गणेशधर दुबे, ग्राम--बीरपुर, डाकघर--हडिया, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। अथ सनेह सागर चतुर्थ तरंग राधा जी को विवाह ।।

जिहि दिन ते देखे भरि अंखियन्ह राधा कुंवर कन्हाई ।
तिहि दिन ते घरहि अरु बाहिर छिनु भरि कछु न सोहाई ।।
आवत जात पलक नहि ठहरै इतै उतै चकरी सी ।
टोलन टोलन भुलाइ गइ हम गइ लाज अकरी सी ।।
गोरस के मिसि नंदगांव मे आवत संग सहेली ।
कबहुंक पांच सात जुरी चलती कबहुंक आप अकेली ।।
धरे शशि गोरस की मटुकी घर घर डोलन्ह डोलै ।
झूठेही इत उत फिरि आवइ नंद बरोठै बोलै ।। २ ।।
है कोऊ गाहक गोरस को या बठारी के माही ।
होत अबेर लेउ जो लेने को घर को फिरि जाई ।। ३ ।।

अंत--

जाति पाति कुल ऊच नीच सभ लोक वेद वेवहारा ।
पानि ग्रहन प्रेम को एहि विधि, समुझत समुझनहारा ।।
श्री वृषभान कुमारि स्याम सौं ब्याह भयो एहि भांति ।
लागी लगन दुहुं दिशि गाढ़ी बाढ़ी दिन दिन प्रीती ।।

इति शनेह सागर चतुर्थ तरंग समाप्तम् संम्वत् १९३५ ॥ शाके १८०० माघ मासे शुक्ल पक्षे द्वितियायां २ भौम वासरे लीखा प्रागवत्त दुबे पण्डित लक्षिमण पुत्र पाठार्थम् ॥ इति श्री राधा कृष्ण जी का विवाह समाप्तम् शुभम् ॥

विषय--राधाकृष्ण का स्नेह एवं विवाह वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९३५ वि० दिया है।

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

परि० १, २, ३

सन् १९४४ (संवत् २००१)

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

ग्रंथों के आगे दिए हुए अंक परिशिष्ट १, २ और ३ में आई क्रम संख्याएँ है।

ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका

परि० १,२

सन् १९४४-४६ (सं० २००१-२००३)

ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों के आगे लिखे हुए अंक रिपोर्ट के परिशिष्ट १ और २ में दी हुई क्रम संख्याएँ हैं।

परिशिष्ट४(क)

प्रस्तुत खोज में मिले नवीन रचयिताओं की सूची

(सं० २००१--२००३ वि० तक)

क्र.सं.	रचयिताओ के नाम	विवरणिका संख्या	शताब्दी	ग्रंथों की संख्या	विशेष
१.	अखैंराम	१	१६वी	१	
२.	अचल कीर्ति	४	...	१	
३.	अजगर नाथ	५	२०वी	१	
४.	अमरदास	७	१६वी	१	
५.	अमरेश कुमार	८	२०वी	१	
६.	अयोध्या गिरि	६	...	१	
७.	अली रंगीली	११	...	१	
८.	आत्माराम	१३	...	१	
६.	आनंद कवि	१५	...	२	
१०.	आनददास	१७	...	१	
११.	ईश	२०	...	१	
१ .	ईश्वरदास	२२	...	१	
१३.	उदय	२६	...	१	
१४.	उमादास	२७	१६वी	१	
१५.	ऋषिकेश	२६	...	१	
१६.	कन्हैया लाल भट्ट "कान्ह"	३१	.	१	
१७.	कल्यानदास	३६	...	१	
१८.	काकराम	३७	...	१	
१६.	कान्ह या लघुकान्ह	३६	२०वी	१	
२०.	कान्ह और व्यास	३६	...	१	
२१.	कालिदास	४०	...	१	
२२.	किसनलाल	४२	...	१	
२३.	किसोरदास	४३	...	१	
२४.	कुंभनदास	४४	...	१	
२५,	कुदरतीदास या कुदरती साहब	४५	...	२	
२६.	कृष्णचंद्र अग्रवाल	४७	१८वी	१	
२७ .	कृष्णदास	४८	१८वी	१	
२८.	कृष्णदास	४६	...	१	
२६.	कृष्णदास जाड़ा	५१	...	१	
३०.	कृष्णदास कायस्थ	५२	...	३	
३१.	कृष्णदेव	५३	...	१	
३२.	कृष्णराम संतोषिया चक्रवर्ती	५४	...	१	

क.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका	शताब्दी	ग्रंथ संख्या	विशेष
३३.	कृष्णाबाई	५५	...	१	
३४.	केवललीन द्विज	५६	...	१	
३५.	केशव किशोर	५७	...	१	
३६.	केशवदास नारायण	५८	...	१	
३७.	केशोराम	६१	...	१	
३८.	क्षेमकरण	६२	...	१	
३९.	केसोराम	६३	...	१	
४०.	खेमकवि	६४	...	१	
४१.	गंग कवि	६६	...	१	
४२.	गंगसरन	६७	...	१	
४३.	गंगादास	६८	...	१	
४४.	गंगादास (जन)	७०	...	२	
४५.	गंगाराम	७१	...	१	
४६.	गजेंद्र	७४	...	१	
४७.	गंगाराम ऋषि	७५	...	१	
४८.	गिरिधर	७६	...	१	
४९.	गिरिधर जी	७८	...	१	
५०.	गिरिधर लाल जी	७९	२०वीं	२	
५१.	गो० श्री गिरिधारी लाल	८०	...	१	
५२.	गुमान कवि	८२	...	१	
५३.	गुरु गोविंद	८३	...	१	
५४.	गुरुदीन कवि पांडे	८४	...	१	
५५.	गुलाम मुहंमद	८५	...	१	
५६.	गोकुल कवि	८६	...	१	
५७.	गोपालजन	९०	...	२	
५८.	गोपालदास	९१	...	१	
५९.	गोपालदास	९२	...	२	
६०.	गोपिकालंकार जी गो०	९३	...	१	
६१.	गोविंद या गोविंददास	९४	...	१	
६२.	गोविंद	९५	...	२	
६३.	गोविंददास	९६	...	१	
६४.	गोविंद पंडित काश्मीरी	९७	...	१	
६५.	घनदेव कान्यकुब्ज (वैष्णव)	१०१	१९वीं	१	
६६.	घनश्याम (चतुर्भुजमिश्रात्मज)	१०२	१७वीं	१	
६७.	घनश्याम द्विज	१०३	२०वी	१	
६८.	घनश्याम या स्यामदास	१०४	...	१	
६९.	घनश्याम दास	१०५	...	१	
७०.	चंदपरतिष	१०७	१९वीं	१	
७१.	चक्रपाणि	१०८	...	१	
७२.	चतुरराय	१०९	...	१	
७३.	चतुर्भुज मिश्र	१११	...	१	
७४.	चूड़ामणि	११४	...	१	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका संख्या	शताब्दी	ग्रंथ संख्या	विशेष
७५.	छबिनाथ	११५	१६वीं	१	
८६.	छितिपाल	११६	...	१	
७७.	छंल	११७	...	१	
७८.	जगदीशजन	१२०	...	१	
७९.	जगत कवि	१२२	...	१	
८०.	जगन्नाथ	१२३	...	१	
८१.	जयशकर सहस्र अवदीच	१२५	...	१	
८२.	जान कवि	१२६	१७वीं	६९	
८३.	जान (मिरजा मुहंमद)	१२७	...	१	
८४.	जानकीदास	१२८	...	१	
८५.	जीराम	१२९	...	१	
८६.	जीवनदास	१३०	...	१	
८७.	जीवनराम	१३१	...	१	
८८.	जैकृष्ण	१३३	...	१	
८९.	टोडरमल कायस्थ	१३५	१९वीं	१	
९०.	डुंगरसी साधु	१३६	...	१	
९१.	तामसन साहब	१३७	...	१	
९२.	ताराचंद	१३९	...	१	
९३.	तुलसीदास	१४३	...	३	
९४.	थेघनाथ या थेघू	१४६	१६वीं	१	
९५.	दक्षसखी	१४७	१८वीं	१	
९६.	दत्त कवि	१४८	...	१	
९७.	दयाराम भाई	१४९	१९वीं	५	
९८.	दयालदास	१५०	...	१	
९९.	दलजीत	१५२	...	१	
१००.	दादू	१५३	...	१	
१०१.	दास	१५४	...	१	
१०२.	दास	१५५	...	१	
१०३.	दास	१५६	...	१	
१०४.	दासराम	१५७	...	१	
१०५.	दुखीराम बरनवाल	१६०	१९वीं	१	
१०६.	देवकृष्ण	१६२	१९वीं	१	
१०७.	देवीदत्त शुक्ल "पंडित" और "धीर"	१६३	२०वीं	२	
१०८.	देवीदास	१६४	...	१	
१०९.	देवेश्वर माथुर	१६६	१९वीं	१	
११०.	द्वारिकादास	१६७	...	१	
१११.	धनपाल	१६९	१०वीं	१	
११२.	धरमादास	१७१	...	१	
११३.	नथमल	१७७	...	१	
११४.	नरसी मेहता	१७९	...	१	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सं०	शताब्दी	ग्रंथ संख्या	विशेष
११५.	नवनीत कवि	१८१	...	१	
११६.	मुंशी नवनीतराय	१८२	१९वी	१	
११७.	नवरंगदास स्वामी	१८३	...	१	
११८.	नागरीदास	१८५	...	१	
११९.	कविनाथ	१८८	...	१	
१२०.	नारायण दास	१९१	१८वीं	१	
१२१.	नारायणदास ब्रजवासिया	१९२	...	२	
१२२.	नारायण सिंह नृप	१९३	१८वीं	१	
१२३.	नित्यानद	१९४	...	१	
१२४.	निर्मल कवि	१९५	१८वी	१	
१२५.	निर्मलदास	१९६	१९वी	१	
१२६.	निश्चयदास	१९७	...	१	
१२७.	पंचौली देवकर्ण	१९९	१९वी	१	
१२८.	परमसुख दैवज्ञ	२००	१९वी	१	
१२९.	परमानंद	२०१	...	२	
१३०.	परसन विप्र	२०३	१९वी	१	
१३१.	पर्बल	२०४	...	१	
१३२.	पुरुषोत्तम	२०६	...	१	
१३३.	पुरुषोत्तम	२०७	...	०	
१३४.	पुरुषोत्तम दास	२०८	...	१	
१३५.	पुरुषोत्तम	२०९	...	१	
१३६.	पूरन कवि	२१०	...	१	
१३७.	प्रधान	२१४	...	१	
१३८.	प्रभुलाल	२१५	...	१	
१३९.	प्रमादास	२१६	...	१	
१४०.	प्रवीन कवि	२१७	...	२	
१४१.	प्राणनाथ सोती	२२०	...	१	
१४२.	फणि नृपति	२२४	...	१	
१४३.	फणीद्र मिश्र	२२५	१८वी	१	
१४४.	फेंक द्विज	२२६	...	१	
१४५.	बंशीधर पंडित	२२७	...	१	
१४६.	बखत सिंह राजा	२२८	...	१	
१४७.	बदलीदास	२२९	...	१	
१४८.	बलदेव कवि	२३१	...	१	
१४९.	बलराम दास	२३२	...	१	
१५०.	बलराम	२३३	...	१	
१५१.	गो० श्री बल्लभजी	२३४	...	१	
१५२.	बहोरन द्विज	२३६	...	१	
१५३.	बिट्ठल दास	२३८	...	१	
१५४.	बिहारी रमणेश	२४०	...	१	
१५५.	बैजनाथ	२४१	...	१	
१५६.	बोधलाल	२४३	...	१	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सं०	शताब्दी	ग्रंथ सं०	विशेष
१५७.	भगवानदास	२४५	१८वी	१	
१५८.	भगवतदास	२४७	...	१	
१५९.	भगवतदास	२४८	...	१	
१६०.	भरमी मिश्र रामनाथ पडित	२५५	...	१	
१६१.	भारथ सिंह या भारथ साहि	२५६	...	१	
१६२.	भीम	२५९	१६वी	१	
१६३.	भीमसेन	२६०	...	१	
१६४.	भीष्म	२५१	१८वी	१	
१६५.	मगनजी	२६६	...	१	
१६६.	मटुकमनि	२५७	...	१	
१६७.	मथुरादास कवि	२७०	...	१	
१६८.	मथुरानाथ भारद्वाज	२७१	...	१	
१६९.	मनसाराम	२७२	...	२	
१७०.	महम्मद औलिया	२७६	...	१	
१७१.	महचद द्विज	२७७	१८वी	१	
१७२.	महादास	२७८	...	१	
१७३.	महाराज कवि	२७९	...	१	
१७४.	महावदास	२८०	...	१	
१७५.	महावदास वैष्णव	२८१	...	१	
१७६.	महीपति या महीप	२८२	१८वीं	१	
१७७.	माधवदास	२८५	...	१	
१७८.	माधवदास दानलीला	२८७	...	१	
१७९.	माधवदास भट्ट	२८९	...	१	
१८०.	मानिक	२९३	...	१	
१८१.	मिहिर या छत्रपति चौहान	२९४	...	१	
१८२.	मुकुद	२९५	...	१	
१८३.	मुकुद या रूपदेव्या	२९६	२०वी	१	
१८४.	मुकुदलाल	२९८	...	१	
१८५.	मुरलीदास	३०२	...	१	
१८६.	मुरलीधर कविराई	३०३	...	१	
१८७.	मोकमदास	३०५	१९वी	१	
१८८.	मोहनदास	३०८	...	१	
१८९.	रघुबर	३१६	...	२	
१९०.	रनजीत	३१९	...	१	
१९१.	रमताराम	३२०	...	१	
१९२.	रससिधु (श्रीकृष्ण लालाजी)	३२५	२०वीं	१	
१९३.	रसिक	३२७	...	१	
१९४.	रसिकदास (गोपिकालंकार)	३२८	...	१	
१९५.	रसिकराय जी	३२७	...	१	
१९६.	राजमती	३३२	...	१	
१९७.	राजाराम	३३४	१८वीं	१	
१९८.	राधाकृष्ण द्विवेदी	३३६	...	१	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिकाच सं०	शताब्दी	ग्रंथ सं०	विशेष
१९९.	रामकवि या द्विजराम	३३७	...	२	
२००.	रामकृष्ण	३३९	...	१	
२०१.	रामगरीब चौबे (गरीब जू)	३४१	...	१	
२०२.	रामचद्र	३४३	...	१	
२०३.	रामदास बरसानिया	३४७	...	२	
२०४.	रामप्रगाश गिरि	३४८	१९वी.	३	
२०५.	रामप्रसाद	३५०	२०वी	१	
२०६.	रामपुल	३५१	...	१	
२०७.	रामवछ या कवि वछ	३५३	१९वीं	१	
२०८.	राम रतन लघुदास	३५४	...	२	
२०९.	राम रहस्य दास	३५६	...	१	
२१०.	रामानुजदास	३५९	...	१	
२११.	रामावतारदमस	३६०	२०वी	१	
२१२.	रूप	३६२	...	१	
२१३.	रूप	३६३	२०वी	१	
२१४.	रूपराम	३६४	...	१	
२१५.	लक्ष्मीदास	३६७	२०वी	१	
२१६.	लखनसेनि	३६९	...	१	
२१७.	लछिमनदास	३७१	१९वी	१	
२१८.	ललित किशोरी	३७२	...	१	
२१९.	लाल कवि	३७४	...	१	
२२०.	(द्विज) लाल	३७५	...	१	
२२१.	लालसाराम बाबा	३७८	...	१	
२२२.	लालू भट्ट (प्रवीन)	३७९	...	१	
२२३.	लोना	३८०	...	१	
२२४.	लोहट	३८१	...	१	
२२५.	वंशीधर	३८२	...	१	
२२६.	वत्साभट्ट	३८३	...	१	
२२७.	वासदेव शुक्ल	३८५	...	१	
२२८.	विष्णुदत्त	३८९	...	१	
२२९.	विष्णुदास	३९१	...	१	
२३०.	विष्णुपुरी	३९२	...	१	
२३१.	वीरभगत	३९३	...	१	
२३२.	वीरभान चौहान	३९४	...	१	
२३३.	वृजनाथ त्रिविक्रमसुत	३९६	...	१	
२३४.	वेणीमाधव भट्ट 'प्रवीन कवि'	३९७	१८वी	१	
२३५.	वैकुंठजन	३९९	...	१	
२३६.	व्रजभूषण जी गो०	४०२	...	३	
२३७.	व्रजाभरण जी दीक्षित	४०३	...	२	
२३८.	श्री व्रजराय जी गो०	४०४	...	१	
२३९.	शंकरद्विज	४०६	२०वीं	१	
२४०.	शंकाराचार्य	४०७	...	२	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सं०	शताब्दी	ग्रंथ सं०	विशेष
२४१.	शभूनाथ	४०६	...	१	
२४२.	शारगधर	४१०	...	१	
२४३.	शारगधर	४११	...	१	
२४४.	शिवटहल सिह	४१२	...	१	
२४५	शिवदत्त त्रिपाठी	४१३	...	१	
२४६.	शिवदत्त त्रिपाठी	४१४	...	१	
२४७.	शिवदास	४१५	...	१	
२४८.	शिवदास गदाधर	४१६	२०वी	१	
२४६.	शिवबक्स सिह सोमवसी	४१७	...	२	
२५०.	शीतलदास	४१६	२०वी	१	
२५१.	शीतलदीन	४२०	...	१	
२५२.	शेख अहमद	४२१	...	२	
२५३	शेख निसार	४२२	१६वी	१	
२५४	शोभाचद	४२३	१७वी	१	
२५५.	शोभाराम (महाराज)	४२४	...	१	
२५६.	श्यामराम	४२५	...	१	
२५७	श्रीकृष्ण गगाधर	४२६	१८वी	१	
२५८.	श्रीकृष्ण भट्ट	४२७	...	१	
२५६	श्रीनिवास	४२८	...	१	
२६०.	हनुमान पच्चीसी	४२६	...	१	
२६१.	श्रीपति	४३१	...	१	
२६२.	श्रीलाल पडित	४३२	२०वी	२	
२६३	सज्यानाथ	४३३	...	१	
२६४.	सतदास या सत रसिक	४३५	...	१	
२६५.	सदानद	४३६	...	१	
२६६.	समरसिह महाराज	४३६	३२. .	१	
२६७.	समाधान	४४०	...	१	
२६८.	सरदार सिंह (सुलतान सिह सुत)	४४२	...	१	
२६६.	सरमद	४४३	...	१	
२७०.	सर्वेश्वर दास	४४४	२०वीं	१	
२७१.	सहदेव	४४५	...	१	
२७२.	सादिक	४४६	...	१	
२७३.	साधुजन	४४७	...	१	
२७४.	सिंधुकवि (आनद)	४४८	...	१	
२७५.	सिकदर फिरंगी	४४६	...	१	
२७६.	सुंदर कवि	४५२	...	सें	
२७७.	सुखदेव	४५४	...	१	
२७८.	सुखानंद	४५५	...	१	
२७६.	सुवरण	४५७	...	१	
२८०.	सूरजदास	४५८	...	१	
२८१.	सूरदया	४६०	...	१	
२८२.	सूरदास	४६२	...	१	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका	शताब्दी	ग्रंथ सं०	विशेष
२८३.	सूरदास	४६३	...	१	
२८४.	सूरदास	४६४	...	१	
२८५.	सूरसैन	४६५	...	१	
२८६.	सेवक सुकवि	४६६	...	१	
२८७.	सेवादास (स्वामी)	४६७	...	१	
२८८.	स्वामीदास	४७२	...	१	
२८९.	स्वामी कार्तिक	४७३	...	१	
२९०.	हनुमत कवि	४७३	२०वी	१	
२९१.	हनुमंत कवि और राम नारायण	४७५	...	१	
२९२.	हरि आनंद	४७९	१९वी	१	
२९३.	हरिकृष्णदास या कृष्णदास	४८०	२०वी	१	
२९४.	हरिचरण द्विज	४८१	...	१	
२९५.	हरिदास	४८२	...	१	
२९६.	हरिदास जन	४८४	...	१	
२९७.	हसन अली खाँ	४८९	...	१	
२९८.	हिम्मति सिंह	४९०	१९वी	१	
२९९.	हीरालाल (लाला)	४९१	...	१	
३००.	हुलास दास	४९३	...	१	
३०१.	हेमरतन	४९४	१८वी	१	
३०२.	हेमराज मथेन	४९५	१९वी	१	

—::००::—

परिशिष्ट (४) ख

खोज में मिली नवीन रचनाओं की सूची

क्रम संख्याएँ	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१.	अंगद पैंज	..	१८०६ वि०	२३	
२.	अंगद पैंज	..	..	३७३	
३.	अंगद रावण संवाद	..	.	२१३	
४.	अकार के कवित्त	..	..	१८ ग	
५.	अठारह नाते	..	..	४	
६.	अठारह नाते को चोढाल्यो	..	..	३८१	
७.	अद्‌भुत ग्रंथ	..	..	४५१ ख	
८.	अद्‌भुत रामायण	..	..	२३६	
९.	अद्‌भुत विलास	१६५५ वि०	..	१४० क	
१०.	अध्यात्म रामायण	..	.	२८४	
११.	अनभौ प्रकास	..	१९५० वि०	२२९	
१२.	अनुराग विवर्द्धक रामायण	..	..	२३० क	
१३.	अरदसेर पादसाह की कथा	१६९० वि०	१७८४ वि०	१२६ ण	
१४.	अर्जुन गीता	..	१८३५ वि०	१४	
१५.	अर्जुन गीता	१९१२ वि०	१९१३ वि०	३५०	
१६.	अलंकार दर्पण	१९१० वि०	१०१९ वि०	१६३ ख	
१७.	अलकनावा	..	१७७७ वि०	१२६ ह	
१८.	अवधूत गीता भाषा टीका	..	१८५६ वि०	४३३	
१९.	अशौच विचार भाषा तथा मुंडन नखच्छेद निर्णय	..	..	३८३	
२०.	अश्वमेध (भारत)	..	..	३९५	
२१.	अष्टकाल की लीला	१८३८ वि०	..	१४७	
२२.	अष्टाक्षर मंत्र की टीका	..	..	४८६ ग, घ	
२३.	आठ प्रहर मूलचेत प्रसंग भाग एक, दो	..	..	१३२	
२४.	आत्मप्रकाश	..	१९३५ वि०	१३	
२५.	आत्मबोध टीका	..	..	२०१ क	
२६.	आनंद लहरी	..	१७८६ वि	३०७ क	
२७.	आनंदविलास	..	..	१५	
२८.	इश्क शतक	..	..	२२७	
२९.	उत्तम सबदा ग्रंथ	..	..	१२६ ज	
३०.	उत्सव के प्रकार	..	..	९५	
३१.	उत्सव निर्णय भाषा	..	..	२०७ ङ	
३२.	उत्सव मालिका भाषा	..	..	२०७ क	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३३.	उत्सब सेवा प्रणाली उत्सब निर्णय सहित	..	..	२०७ च	
३४.	ऊषाचरित्र	..	१८८८ वि०	३०१ क	
३५.	ऋतुराज मंजरी	..	..	२९	
३६.	एकादशी माहात्म्य	१८१५ वि०	१८६६ वि०	७	
३७.	एकादशी कथा	..	१८४६ वि०	१२०	
३८.	औषधी संग्रह कल्पवल्ली	..	१८९० वि०	३३६	
३९.	कंठाभरन टीका	..	..	२६८	
४०.	कंद्रप कल्लोल	..	..	१२६ ग	
४१	कवलावती की कथा	१६७० वि०	१७७८ वि०	१२६ च	
४२.	ककहरा	..	..	१९०	
४३	ककावली	..	..	१५ ख	
४४.	कजानामा	..	१८२३ वि०	१६४	
४५.	कनकावली की कथा	१६७५ वि०	१७७८ वि०	१२६ र	
४६.	कबीर और निरजन ज्ञान गुष्टि	..	१७३३ वि०	३२ ख	
४७.	कबीर रैदास सवाद	..	..	३६६	
४८.	कबीर सागर	..	१७२३ वि०	३२ क	
४९.	कबूतरनावा	..	१७७७ वि०	१२६ घ	
५०.	कलदर की कथा	१७०२ वि०	..	१२६ प	
५१.	कलावंती की कथा	१६७० वि०	१७७८ वि०	१२६ ट	
५	कलि चरित्र	..	..	३२९	
५३.	कविकुल तिलक प्रकाश	१७६६ वि०	..	२८२	
५४.	कवितावली भक्त विलास	..	१९५२ वि०	३८५	
५५.	कविता संग्रह	..	..	१८ ख	
५६.	कवित्त	..	..	५६	
५७.	कवित्त	..	..	६१	
५८.	कवित्त	..	..	९४	
५९.	कवित्त	..	..	११७	
६०.	कवित्त	..	..	१८८	
६१.	कवित्त	..	..	२१४	
६२.	कवित्त	..	..	३१७	
६३.	कवित्त	..	१९१७ वि०	३४१	
६४.	कवित्त	..	..	३४३	
६५.	कवित्त	..	..	४५७	
६६.	कवित्त	.	..	४६०	
६७.	कवित्त चतुश्शती	..	..	१८ क	
६८.	कवित्त सवैया संग्रह	..	..	३७९	
६९.	कवि विनोद	१७४५ वि०	..	२९२ ख	
७०.	कहरनामा (ककहरा नामा)	..	१९२३ वि०	१८४	
७१.	कामरानी व पीतमदास की कथा	१६९१ वि०	१७८३ वि०	१२६ ल	
७२.	कामलता की कथा	१६७८ वि०	१७७८ वि०	१२५ क	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	बिवरणिका संख्या	विशेष
७३.	कार्तिक माहात्म्य	१८४८ वि०	..	३३१ क	
७४.	काशी वर्णन	..	..	३४९ क	
७५.	कीर्तन संग्रह	..	१८९३ वि०	९८ ग	
७६.	कीर्तन संग्रह	..	१९१५ वि०	३२८ क	
७७.	कीर्तन संग्रह	..	..	४८६ द	
७८.	कुंड निर्माण वार्तिक	१७१६ वि०	..	४२६	
७९.	कुंडलिया	..	१९०३ वि०	४१७ क	
८०.	कुंभन दास की वार्ता (चौरासी अपराध वर्णन)	..	..	४८६ थ	
८१.	कुनवती की कथा	१६६३ वि०	१७७७ वि०	१२६ म	
८२.	कुँअर सदँवच्छ सवलीग्यारी वार्ता	..	..	४६५	
८३.	कृष्ण ध्यानाष्टक	..	..	३५४ ख	
८४.	कृष्णनाम चद्रिका	१८७० वि०	..	१४९ क	
८५.	कृष्ण विलास	१७९४ वि.	१८०४ वि०	४७	
८६.	कृष्ण वृत्त चंद्रावली	..	..	२१७	
८७.	कृष्ण सागर	..	..	५०	
८८.	केशव विनोद भाषा निघंटु	१८९७ वि०	१९०३ वि०	मुद्रण ६०	
८९.	कोकशास्त्र	..	..	७४	
९०.	कोकशास्त्र	..	..	२०४	
९१.	कौतूहल की कथा	१६७५ वि०	१७७८ वि०	१२६ ल	
९२.	खिजर खाँ शाहजादे व देवलदे की कथा	१६९४ बि०	१७७८ वि०	१२६ य	
९३.	खेम पच्चीसी (हनुमान चरित्र)	..	..	६४	
९४.	गगा पुरान	..	..	२९५	
९५.	गंगा पुष्पांजलि	..	..	४०७ ख	
९६.	गगा प्रबोध गीता	१८२५ वि०	१८५८ वि०	४९०	
९७.	गंगा माहात्म्य	१८३२ वि०	१८४० वि०	१	
९८.	गंगाष्टक (गंगाजी को झूलना)	..	..	३२०	
९९.	गढ़पथैना रासो (पथैना रासो)	..	..	१०९	
१००.	गणित बोधनी	..	..	४२४	
१०१.	गणेश कथा	..	१८८७ वि०	३९४	
१०२.	गनगौर के ख्याल (गीत)	..	१९२३ वि०	२७८	
१०३.	गिरवर समो	..	..	३६४	
१०४.	गीतगोविंद भाषा (पद्यानुवाद)	..	१८२५ वि.	२७१	
१०५.	गीता ग्रंथसार	..	.	२३२	
१०६.	गीता भाषा	१५५७ वि०	१७२७ वि०	१४६	
१०७.	गीता भाषा टीका	..	१९२३ वि०	५४	
१०८.	गीता भाषा टीका	..	..	४३	
१०९.	गुरु अष्टक	..	..	३	
११०.	गुरु भक्ति चंद्रिका	..	..	९२ ख	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१११.	गुरु महिमा	..	१८५७ वि०	४५४	
११२.	गुरु हरि भक्ति प्रकाश	..	..	९२ क	
११३.	गूढ ग्रथ	..	१७७७ वि०	१२६ ङ[1]	
११४.	गोकुलाष्टक की टीका	..	..	४८६ ङ	
११५.	गोदोहन लीला	..	..	६६	
११६.	गोपाल गारी	..	..	४६३	
११७.	गोरख कुडली	..	१८५५ वि०	१०० घ	
११८.	गोरख ग्रथ (१)	१४१३ वि०	..	१०० ख	
११९	गोरख बोध	..	१८५६ वि०	१०० ग	
१२०.	गोरा बादल पद्मिनी चौपाई	१७६० वि०	..	४९४	
१२१.	गोवर्द्धन चरित्र	..	..	९१	
१२२.	गोवर्द्धन नाथ जी की वार्ता (प्रागट्य मे)	..	..	८८ छ	
१२३.	गोवर्द्धन लीला	..	..	९५	
१२४.	,, ,,	..	१८२८ वि०	१९२ क	
१२५.	,, ,,	..	१८२८ वि०	१९२ क	
१२५.	,, ,,	..	१८२७ वि०	३४७ क	
१२६.	,, ,,	..	..	४८३ क	
१२७.	गोविंद स्तुति	..	..	२६७	
१२८.	ग्रथ देसावली	..	१७७७ वि०	१२६ च[1]	
१२९.	ग्रथ पवगम	..	१७७८ वि०	१२६ छ	
१३०.	ग्रथमुधासिष	..	..	१२६ ष	
१३१.	ग्वाल पहेली	..	१८९० वि०	३१६ क	
१३२.	घूँघट नावाँ	..	१७७७ वि०	१२६ ह	
१३३.	चंद्रसेन राजा सीलनिधान की कथा	१६९१ वि०	१७८४ वि०	१२६ ढ	
१३४.	चक्रव्यूह	..	१९०७ वि०	२९०	
१३५.	चतुर्विध पत्री	१७५० वि०	१७९८ वि.	३९८	
१३६.	चतुश्लोकी टीका	..	..	२३९ ग	
१३७.	,, ,,	..	..	४८६ त	
१३८.	चरण चिह्न की भावना	..	१९६४ वि०	८८ च	
१३९.	चरपटिका पत्रिका	..	१९३२ वि०	११३ क	
१४०.	चानक	..	१९१६ वि०	३५८ ग	
१४१.	चिंतन	..	..	४८६ ख	
१४२.	चितामणि या हरिनाम गुरु-नाम चितामणि	..	..	२७२ क	
१४३.	चितामनि	..	१८८४ वि०	३२ घ	
१४४.	चित्रबंध काव्य	..	..	१५४	
१४५.	चिरई चेतनी	..	..	२२६	
१४६.	चेतनामा	..	..	१२६ ष	
१४७.	चेतावनी	..	१८४१ वि०	१७० क	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१४८.	चौबीस अवतार को जस	..	..	२७२ ख	
१४९.	चौबीस तीर्थंकर की विनती	..	..	१७७	
१५०.	चौरासी वैसणव की वार्ता	..	..	८८ ङ	
१५१.	चंय लीला	..	..	६७	
१५२.	छप्पै रामायण	..	..	३३२	
१५३.	छवि सागर की कथा	१७०६ वि०	१७७८ वि०	१२६ ज	
१५४.	छीता की कथा	१६६३ वि०	१७८४ वि०	१२६ झ	
१५५.	जगतबत्तीसी	..	..	१२२	
१५६.	जपको प्रकार	..	१६६४ वि०	८८ घ	
१५७.	जफरनामा नौसिरवाँका	१७२१ वि०	१७७७ वि०	१२६ द[1]	
१५८.	जेहलीजवाहिर	..	१७९० वि०	२२०	
१५९.	जैमुनि कथा	१६२८ वि०	१८९७ वि०	४८	
१६०.	जोगरतन	१९०१ वि०	..	४०६	
१६१.	ज्ञान ककहरा	..	१९२० वि०	३१५	
१६२.	ज्ञानकथा कर्म निर्णय	..	१९३४ वि०	६८ ख	
१६३.	ज्ञानकथा रहस्य	..	१९३४ वि०	६८ क	
१६४.	ज्ञान चंद्रिका (नासकेत पुराण)	..	..	१३१	
१६५.	ज्ञानचेटक	१७२८ वि०	१९१६ वि०	१२	
१६६	ज्ञान प्रगास	..	१९२३ वि०	११८ ख	
१६७.	ज्ञान बारामासा	..	..	१४३ क	
१६८.	ज्ञान सागर	..	..	३२ ग	
१६९.	ज्ञानोपदेश	..	..	३६२	
१७०.	ज्योतिष	..	..	४४५	
१७१.	ज्योतिष और गोलाध्याय (टीका)	..	मुद्रणाकाल १८७९ वि०	१३७	
१७२.	डंगवे पुरान	१५५० वि०	१७७७ वि०	२५८	
१७३.	ढाढियादान	..	..	१३३	
१७४.	तत्र सामुद्रिक	..	१९१७ वि०	३५१	
१७५.	तत्व उपदेश या पोथी ज्ञानगोष्ठी	..	१८१२ वि०	१३९	
१७६.	तत्वचिंतामणि	..	..	२८५	
१७७.	तत्वबोध टीका	..	..	२०१ ख	
१७८.	तत्व विवेक	..	..	४०७ क	
१७९.	तमीम अंसारी की कथा	१७०२ वि०	१७७७ वि०	१२६ न	
१८०.	तर्क प्रकाश भाषा	१९०८ वि०	..	४४१ क	
१८१.	तिथि प्रबंध	..	..	७० क	
१८२.	त्रिविध भावनाभाषा	..	..	८८ क	
१८३.	दंपति प्रत्युत्तर	१८६७ वि०	..	१३५	
१८४.	दत्तात्रेय लीला	..	१८५३ वि०	३०८	
१८५.	दधि लीला	..	..	३३	
१८६.	दधि लीला	..	..	२१६	
१८७.	**दयाराम सतसई (टीकासहित)**	**१७८२ वि०**	**१८९५ वि०**	**१४९ ख**	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१८८.	दरसनावा	..	१७७७ वि०	१२६ ह	
१८९.	दरसनावा	..	..	१२६ क'	
१९०.	दशकुमार चरित	..	..	२३१	
१९१.	दशकुमार चरित	..	..	४१४	
१९२.	दशम स्कंध संक्षेप लीला	..	.	२८६ ख	
१९३.	दस्तूर शिकार का	..	१८१९ वि०	४८९	
१९४.	दानलीला	..	१९१८ वि०	४४ क	
१९५	दानलीला	..	.	२८७	
१९६.	दानलीला	..	१८८८ वि	३२७	
१९७.	दानलीला	..	..	३८२	
१९८	दानलीला	.	१८४८ वि०	४०२ क	
१९९	दामोदर लीला	१८५२ वि०	..	२५	
२००.	दिग्विजै चपू	१९१० वि०	..	४१६	
२०१.	दिनमणि वंशावली (गुण कथन)	..	..	४४८	
२०२	दीपरामायण	..	१८९९ वि०	२४७	
२०३.	दुर्गाभक्ति तरंगिणी	..	..	४२७	
२०४.	दृष्टिकूट के पद (भाषा टीका)	..	..	२३७	
२०५	देवकी चरित्र	..	..	३७८	
२०६	देवी चरित्र	..	..	४१५	
२०७	देवी विलास (दुर्गा संवाद)	१८४९ वि०	१८७७ वि०	४७९	
२०८	दोहावली	..	..	७० ख	
२०९.	दोहा साखी	..	१९१४ वि०	११९ ख	
२१०.	द्रव्यशुद्धि भाषा	..	१८४१ वि०	२०७ ख	
२११	द्रौपदी अष्टक	..	..	४७६ ख	
२१२.	द्रौपदी की स्तुति	..	१८९० वि०	३१६ ख	
२१३.	द्रौपदी स्वयंवर	१६८० वि०	१६८० वि०	३१२	
२१४.	द्वादश राशि विचार	..	१८६३ वि०	४२५	
२१५.	द्वारिकादास की बानी	..	..	१६७	
२१६.	धरमीनामा	..	..	१७१	
२१७.	ध्रुवचरित्र	..	..	४४७	
२१८.	नखशिख	..	..	८६	
२१९.	नखशिख	..	..	११६	
२२०.	नजीर की रचनाएँ फुटकर	..	..	१७६	
२२१.	नरसिंह पचासका	१७१० वि०	..	४५६	
२२२.	नरसी मेतानीमाला	.	१८९३ वि०	१७९	
२२३.	नलदमयंती की कथा	१०७२ वि०	१७७८ वि०	१२६ घ	
२२४.	नल पुराण या नलदमयंती चरित	..	१८५३ वि०	४६९	
२२५.	नलोपाख्यान	..	..	२५५	
२२६.	नवग्रह आकार	..	..	४८६ ज	
२२७.	नवनागरी के पद	..	..	३९१	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
२२८.	नवनीत नवसई	१८७७ वि०	..	१८२	
२२९.	नवरत्न कवित्त	..	१८८८ वि०	२७	
२३०.	नवरात्रि के कीतन	..	..	४८६ छ	
२३१.	नवलनेह	१८५४ वि०	..	१०१	
२३२.	नहुष नाटक	..	१९२३ वि०	७७	
२३३.	नागरीदास जी के कवित्त संग्रह	..	१८७३ वि०	१८५	
२३४.	नागलीला	..	१८९० वि०	११४	
२३५.	नागलीला	..	१८५३ वि०	३३१ ख	
२३६.	नाम कुसुममाला	१७२० वि०	..	१९३	
२३७.	नाममाला अनेकार्थ	..	..	१२६ फ[1]	
२३८.	नामरत्न स्तोत्र विवरण भाषा	..	..	४८६ भ	
२३९.	नारायण लीला	..	..	१३०	
२४०.	नासकेत पुराण	१८८३ वि०	१८८३ वि०	३४९	
२४१.	नासिकेतोपाख्यान	..	..	३१९	
२४२.	निघंट मदनाद (वैद्यक)	..	१९०२ वि०	२७९	
२४३.	नित्यभावना (सेवा तथा स्वरूप की)	..	१८५५ वि०	४८६ ञ	
२४४.	नित्यसेवा शृंगार की भावना	..	१९५९ वि०	८८ ञ	
२४५.	निरमल की कथा	१७०४ वि०	..	१२६ फ	
२४६.	निर्गुन लीला	..	१९१० वि०	१७० ख	
२४७.	नीति रत्नाकर	१९२० वि०	..	१५८	
२४८.	नीति विनोद भाषा	..	..	४०२ ग	
२४९.	नीतिविलास	..	१९२९ वि०	२७०	
२५०.	नीलकंठ स्तोत्र	..	...	२४१	
२५१.	नैकाव्य कथा	१९०७ वि०	१९१० वि०	४४४ ख	
२५२.	पंचायत का न्यायपत्र	१७०१ वि०	१७०१ वि०	२२५	
२५३.	पंथपारख्या	..	..	१५६	
२५४.	पंदनामा लुकमान	१७२१ वि०	..	१२६ थ[1]	
२५५.	पांडे लीला	..	१७११ वि०	२९३	
२५६.	पिंगल	..	..	२९८	
२५७.	पिंगल	..	..	३३७ क	
२५८.	पद (?)	..	..	९	
२५९.	पद	..	१८९० वि०	२०३ क	
२६०.	पद	..	..	४२०	
२६१.	पद	..	..	४८४	
२६२.	पद गुटका	१९०५ वि०	..	३६७	
२६३.	पद स्वयंवर के	..	..	१२९	
२६४.	पदावली	..	..	३४९ ग	
२६५.	पद्मपुराण (रामचंद्र अश्वमेध)	..	१८३२ वि०	३५२	
२६६.	परख बिलास	..	१८७८ वि०	३५६	
२६७.	परमानंद सागर	..	..	२०२ क	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
२६८.	पशु मर्दन भाषा	..	१८९७ वि०	४५५	
२६९.	पहौप प्रकाश (पुष्प प्रकाश)	१८३९ वि०	१८३९ वि०	१६६	
२७०.	पाराशरी जातक या (उडुदाय प्रदीप)	१८६८ वि०	१९०१ वि०	२००	
२७१.	पाराशरी जातक या उडुदाय प्रदीप	१९२५ वि०	..	४७४	
२७२.	पाहन परिछ्या	..	१७८४ वि०	१२६ थ	
२७३.	पुष्टिदृढाव की वार्ता	..	..	४८६ ठ	
२७४.	पुहुपबरिखा की कथा	१६८५ वि०	१७७८ वि०	१२६ ङ	
२७५.	पूर्ण पुरुषोत्तम का रूप तथा गुण नाम वर्णन	..	१८३० वि०	४०३ क	
२७६.	पेमसागर (प्रेमसागर)	१६९४ वि०	१७७९ वि०	१२६ ठ[1]	
२७७.	पैमनामा (प्रेमनामा)	१६७५ वि०	..	१२६ प[1]	
२७८.	पार्थी मैं जमत के उतर	..	१८३२ वि०	७१	
२७९.	प्रबोध चंद्रोदय नाटक	..	..	१७३	
२८०.	प्रयाग शतक भाषा	..	१९१९ वि०	२४८	
२८१.	प्रह्लाद चरित्र	..	१९३४ वि०	१५९ क	
२८२.	प्रह्लाद चरित्र	..	१८८० वि०	२१८	
२८३.	प्रह्लाद चरित्र	..	१८४८ वि०	२५२ ख	
२८४.	प्रह्लाद लीला	.	१८०२ वि०	१०४	
२८५	प्रेमपच्चीसी	..	..	४७१ ख	
२८६.	प्रेम प्रकाश	१८४८ वि०	.	२१२ क	
२८७.	प्रेम रसाल	.	.	८५	
२८८.	प्रेमविलास प्रेमलता कथा	१६९३ वि०	१९९९ वि०	१२४	
२८९.	फागु	..	.	४८१	
२९०.	फूलमंजरी	१८४५ वि०	..	३१० क	
२९१.	फूल मजरी या पहौप मंजरी	..	..	२०६	
२९२.	बत्तीस लक्षण (भगवदीय वैष्णवों के लक्षण)	..	..	८८ ह	
२९३.	बनिक प्रिया	..	.	४९१	
२९४.	बरवै षट्ऋतु	..	..	४३८	
२९५.	बलदेव षट्क	..	..	३२२	
२९६.	बलूकिया विरही की कथा	१०४४ हि०	१७७७ वि०	१२६ ध	
२९७.	बहुला कथा	..	१७०३ वि०	३८०	
२९८.	बहुला लीला	.	१८४८ वि०	३६	
२९९.	बाँदी नावा	..	..	१२६ ग[1]	
३००.	बाजनामा	..	..	१२६ घ[1]	
३०१.	बाजनामा	..	१८२० वि०	३४९	
३०२.	बारहखडी	..	..	२१५	
३०३.	बारहखड़ी	..	१९२६ वि०	४०१ ख	
३०४.	बारहखड़ी ..	..	१८३६ वि०	४६२	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३०५.	बारहमासा	..	१७७८ वि०	१२६ छ	
३०६.	बारहमासा	..	..	१२६ क[१]	
३०७.	बारहमासी	..	..	२६५	
३०८.	बारहमासी	..	..	२६६	
३०९.	बारहमासी	..	..	३०२	
३१०.	बारहमासी	..	..	३२६ ख	
३११.	बारहमासी	..	..	४५२	
३१२.	बारहमासी	..	१९४१ वि०	४६४ क	
३१३.	बाराखड़ी	१८३५ वि०	१८४० वि०	३०५	
३१४.	बाराखड़ी	..	..	३२१	
३१५.	बालचरित्र	..	..	२८०	
३१६.	बिहारी सतसई (गोवर्द्धन सतसैया को सार)	..	१७८७ वि०	३९	
३१७.	बुद्धिदाइक	..	..	१२६ स	
३१८.	बुधिदीप	..	..	१२६ स	
३१९.	बूढ़ा रासो	१८३२ वि०	१९१४ वि०	१०७	
३२०.	बैंतसमरद	..	..	४४३	
३२१.	बैंतसमरद	..	..	२७६	
३२२.	बोलार चरित्र	१८५३ वि०	१८५३ वि०	१६०	
३२३.	ब्रह्माड लीला	..	..	८३	
३२४.	भँवरगीत	..	१९२३ वि०	४३५	
३२५.	भक्तिप्रकाशिका टीका	..	..	३९२	
३२६.	भक्ति विधान	१६८१ वि०	१७४८ वि०	३२३	
३२७.	भगवत्गीता	..	१९३४ वि०	३५९	
३२८.	भड्डली ज्योतिष (टीका)	..	..	२५४	
३२९.	भरतमिलाप या भरतविलाप	..	..	१४३	
३३०.	भविष्यदत्त कथा	१००० वि० (लगभग)	..	१६९	
३३१.	भागवत	..	१९०७ वि०	८९	
३३२.	भागवत (एकादश स्कंध)	..	१८४० वि०	३५५	
३३३.	भागवत भाषा (पंचम स्कंध)	..	..	३०३	
३३४.	भागवत भाषा (दशम स्कंध)	१८६१ वि०	१८७० वि०	३५३	
३३५.	भागवत विलासिका	१८८१ वि०	१८८३ वि०	३५८ घ	
३३६.	भाव कल्लोल	१७१३ वि०	..	१२६ त[१]	
३३७.	भाव शतक	..	१९९९ वि०	४११	
३३८.	भावसत	१६७१ वि०	१७७७ वि०	१२६ द	
३३९.	भाषा कोश (हिंदी संस्कृत में)	..	..	२८९	
३४०.	भाषा चंद्रोदय (व्याकरण)	१९२२ वि०	१९२२ वि०	४५२ क	
३४१.	भाषा भक्ति चंद्रिका	१८९४ वि०	१९०५ वि०	३८७	
३४२.	भाषा महावाक्य विवरण	..	..	३८९	
३४३.	भाषा लीलावती	..	..	१०८	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३४४.	भाषा संग्रह	१८४७ वि०	१९०३ वि०	१११	
३४५.	भास्वति भाषा टीका (ज्योतिष)	..	..	३११	
३४६.	भूगोलपुरान	..	१८६२ वि०	२६२ ख	
३४७.	भूषण महाकवि के कुछ नवीन छद	..	..	२६३	
३४८.	भोज प्रबध सार	..	१९३४ वि०	२२७	
३४९.	मगल शाखोच्चार	..	..	३३७ ख	
३५०.	मधुकर मालती की कथा	१६९१ वि०	१७७८ वि०	१२६ श	
३५१.	मधुराष्टक की टीका	..	..	४८६ क	
३५२.	मनोरथ मुक्तावली	..	..	१८१	
३५३.	महाप्रलय	..	१९२३ वि०	११८ क	
३५४.	महाभारत (शल्य पर्व)	..	..	६५	
३५५.	महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व)	..	१८३२ वि०	६२	
३५६.	महिम्न स्तोत्र भाषा	..	१८४० वि०	४५९	
३५७.	माधव विलास (माधवानल कामकदला)	१८०० वि०	..	२६१	
३५८.	माधव सुयशप्रकाश (जयपुर का)	१८२५ वि०	..	११५	
३५९.	मान बत्तीसी	..	..	३७४	
३६०.	मान विनोद	..	१७७८ वि०	१२६ घ[1]	
३६१.	माया को अग	..	१८६९ वि०	१९४	
३६२.	मुक्तिविलास (हठ प्रदीपिका)	१६५५ वि०	..	१४० ख	
३६३.	मुमोक्ष शास्त्र	..	१९२२ वि०	९७	
३६४.	मुरली की लीला	..	..	२८६ क	
३६५.	मूल ज्ञान	..	..	३२ च	
३६६.	मूल बानी	..	..	३२ छ	
३६७	महाकपोत की लीला	..	१८८८ वि०	११२ क	
३६८.	मोहन हुलास	..	..	३०७ ग	
३६९.	मोहनी	..	..	४२१	
३७०.	मोहनी की कथा	१६९४ वि०	१७८४ वि०	१२६ ङ	
३७१.	यमकालकार सतसैया या वृंद विनोद	१७६३ वि०	..	३९६	
३७२.	यमुना नवरत्न	..	..	२१०	
३७३.	यमुना लहरी	..	..	१०५	
३७४.	यसुफ जुलेखाँ	१८४७ वि०	१९५९ वि०	४२२	
३७५.	रंगमजरी	१८३३ वि०	..	३१० ख	
३७६.	रतनमंजरी	१६८७ वि०	१७७८ वि०	१२६ ग	
३७७.	रत्नावती	१६९१ वि०	१७८४ वि०	१२६ क	
३७८.	रसकोश ग्रंथ	१७६६ वि०	१७७७ वि०	१२६ छ[1]	
३७९.	रसतरंगनी	१७११ विभ	१७७८ वि०	१२६ ढ[1]	
३८०.	रसधमार	१७९७ वि०	१८०० वि०	१०	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३८१.	रसमहोदधि	१९०७ वि०	१९४१ वि०	४८०	
३८२.	रस रत्नाकर	१७७३ वि०	..	१९५	
३८३.	रसरासि पच्चीसी	..	..	३२३	
३८४.	रससिंधु	..	१८३५ वि०	२८१ क	
३८५.	राग निर्णय	..	१८३५ वि०	१५४	
३८६.	राग प्रकाश	१९१५ वि०	..	२९० क	
३८७.	रागमाला	१७०० वि०	..	१०२	
३८८.	रागसंकीर्ण रागमाला	..	१९२० वि०	४७३	
३८९.	राजपोरिया लीला	..	..	३७२	
३९०.	राधाकृष्ण	..	..	४१३	
३९१.	राधाकृष्ण रूप युगल विलास (सचित्र)	१९३३ वि०	..	८	
३९२.	राधाविलास	..	..	३४७ घ	
३९३.	राधे हरिमिलन सतसई	..	१८८० वि०	४१७ ख	
३९४.	रामअक्षरी	..	..	४७२	
३९५.	रामजन्म	..	१९२७ वि०	१४३ ग	
३९६.	रामतँतीसी	..	१८८३ वि०	३४२	
३९७.	रामनाम गुण सागर	..	१७९५ वि०	२३८	
३९८.	रामरघुनाथ स्तोत्र	..	..	२६	
३९९.	रामरहारी (लवकुश कांड)	..	१८१९ वि०	४५८	
४००.	रामविवाह	..	१७६९ वि०	३७	
४०१.	रामविहार	१८६८ वि०	..	१८७	
४०२.	रामायण	..	..	४५ क	
४०३.	रामायण	..	१८९३ वि०	४६६	
४०४.	रामायण (राम वैभव)	१८९४ वि०	१८९३ वि०	४८५ ख	
४०५.	रामायण माहात्म्य	..	१९३८ वि०	२४०	
४०६.	रामायण माहात्म्य	१९२९ वि०	१९३६ वि०	४१९	
४०७.	रामाश्वमेध	१७३९ वि०	१९१५ वि०	१९१	
४०८.	रामाश्वमेध	१८२८ वि०	..	१९२	
४०९.	रासपंचाध्यायी	..	..	११	
४१०.	रास पंचाध्यायी	...	...	५२	
४११.	रासपंचाध्यायी	१८८९ वि०	..	३२६ क	
४१२.	रुक्मिणी मंगल	..	..	८२	
४१३.	रुक्मिणी मंगल	..	..	२५२ क	
४१४.	रुक्मिणी मंगल	१७१९ वि०	..	२७७	
४१५.	रुक्मिणी ब्याह	..	..	३४१	
४१६.	रूपमंजरी	१९०८ वि०	१९२८ वि०	३९३	
४१७.	रूप मंजरी	१६८५ वि०	१७८४ वि०	१२६ ठ	
४१८.	रेखता तथा कीर्तन	..	..	२३४	
४१९.	लक्ष्मण शतक	..	..	४४० क	
४२०.	लक्ष्मी चरित	..	१९३५ वि०	३६९ क	
४२१.	लालदास की कथा	..	१९५५ वि०	१३६	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
४२२.	लीला प्रकाश	..	..	१८३	
४२३.	लैलंमजनू	१६६१ वि०	१७८४ वि०	१२६ ख	
४२४.	बनमाला	..	१९१६ वि०	२०७ ग	
४२५.	बनविहार माधुरी	..	..	२९१	
४२६.	बरन चरित्र	..	१९३५ वि०	२७४	
४२७.	बरस दिन के उत्सव को भाव	..	१९ङ९ वि०	४८६ ढ	
४२८.	बर्णनावा	१६६३ वि०	१७७७ वि०	१२६ ख[१]	
४२९.	४बल्लभकुल कल्पवृक्ष (वल्लभीय भीमवश वृक्ष)	१७७९ वि०	१७७९ वि०	३३४	
४३०.	वल्लभाख्यान सटीक	..	..	४३० ख	
४३१.	बभ्रुवाहन	..	१८६७ वि०	५३	
४३२	बसतराज	..	..	४० क	
४३३.	बसिष्ट बोध	..	..	३२ ङ	
४३४.	वस्तु वृंदनाम दीपिका	१८७४ वि०	१८९५ वि०	१४९ ङ	
४३५.	वानी	..	..	४६७	
४३६.	वा० भू०	..	..	२२४	
४३७.	वाराणसी विलास	१८०७ वि०	१८०८ वि०	१९९	
४३८	विचारमाला की टीका	..	..	४३६	
४३९.	विचित्रालंकार (द्वैयर्थ कवित्त)	१७५० वि०	१७९८ वि०	३९८	
४४०.	विजयाष्टक	..	१८९५ वि०	९०	
४४१.	विदग्ध माधव	..	..	३६५	
४४२.	विद्याकुर	१९१७ वि०	१९१७ वि०	४३२ ख	
४४३.	विद्रुम देस (रुक्मिणी विवाह)	..	..	५१	
४४४.	विनय के पद	..	..	४०१ क	
४४५.	विनय विहारी रूप उत्सवाष्टक	१९०८ वि०	१९०८ वि०	२९६	
४४६.	वि नै पच्चीसी	..	..	३३९	
४४७.	वियोन मालती	..	..	४२	
४४८.	वियोग सागर	..	१७७८ वि०	४२१	
४४९.	वियोग सागर	१०६६ फ०	१७८४ वि०	१२६ ङ[१]	
४५०.	विहर के पद	..	..	२०२ ङ	
४५१.	विरही सत	१६७१ वि०	१७७७ वि०	१२६ द	
४५२.	विरह कौ मनोरथ	१६६४ वि०	१७७८ वि०	१२६ न[१]	
४५३.	विरुदावली	..	..	४९	
४५४.	विवाह खेल	..	..	५९	
४५५.	विवेककली	..	..	२३३	
४५६.	विश्वकारन	१९०८ वि०	..	४५ ख	
४५७.	विषिक्षय तथा स्फुट रसायन	..	..	२०९	
४५८.	वृंदावन वर्णन	..	१७८१ वि०	४००	
४५९.	वृहत्संहिता भाषार्थ	..	१८४८ वि०	२५३	
४६०.	वेद गोरखनाथ का]	..	१८५६ वि०	१०० क	
४६१.	वैद्यक सत पंदनावा	१६९५ वि०	१७७७ वि०	१२६ ञ[१]	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
४६२.	वैद्य जीवन	१६१४ वि०	१६१७ वि०	१०३	
४६३.	वैन बत्तीसी	१८१६ वि०	..	४६५	
४६४.	वैराग्य शतक (विवेक दीपिका)	..	..	५८	
४६५.	वैराग्य संदीपनी (टीका)	..	..	४५०	
४६६.	वैष्णव लक्षण ग्रंथ	..	..	८८ झ	
४६७.	व्यंजन प्रकार (पहला भाग)	..	१६२५ वि०	१२५	
४६८.	व्रज की बाललीला		मुद्रणकाल		
४६९.	व्रजमहात्म चद्रिका	..	१८४८ वि०	३६३	
४७०.	व्रजलीला	..	१८०५ वि०	१५५	
४७१.	व्रजविलास	..	..	४८२	
४७२.	व्रजविहार (द्वितीय सोपान)	..	..	३६४ क	
४७३.	शकुनावली	..	१८४४ वि०	२४४	
४७४.	शक्ति प्रभाकर या अद्भुत रामायण	..	..	७६	
४७५.	शत्रुवश कुठार	१६१३ वि०	१६३६ वि०	८७ क	
४७६.	शब्द	..	१६०८ वि०	१२८	
४७७.	शब्दयावानी	..	१६१६ वि०	८१	
४७८.	शब्द लीला	..	..	६६	
४७९.	शब्द विष्णुपद	..	..	१५१ क	
४८०.	शरदनिसा	..	..	६६	
४८१.	शालिहोत्र	..	..	५५	
४८२.	शालिहोत्री (घोराल की वैदगई)	..	..	८४ क	
४८३.	शिव अबिका स्तोत्र	..	१८६६ वि०	४४६	
४८४.	शिवस्तोत्र	..	..	२०	
४८५.	शृगार मंजरी	..	..	४०६	
४८६.	शृगार रससिंधु	१८५२ वि०	..	२१२ ङ	
४८७.	शृंगार विलास	१७७० वि०	१७७२ वि०	२४५	
४८८.	शृगार शत	..	..	४७१ क	
४८९.	शोक विनाश	१६७१ वि०	१७७७ वि०	१२६ द	
४९०.	श्री आचार्य जी की वंशावली	१६१२ वि०	१६३३ वि०	८७ ख	
४९१.	श्री आचार्य जी महाप्रभु की (प्रागट्यवार्ता द्वादश कुंज भवन)	..	..	५७	
४९२.	श्रीकृष्ण अनन्य चंद्रिका	..	..	८८ ग	
४९३.	श्रीकृष्ण चरित्र	१८७० वि०	..	१४६ घ	
४९४.	श्री गिरधर लाल जी के वचनामृत ६२	१८६४ वि०	१८७६ वि०	३७१	
४९५.	श्री गुसाईं जी की व्रज चोरासी	१६३३ वि०	..	७६ ख	
	कोस की बनयात्रा १६०० की	..	१८१३ वि०	८८ ज	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
४९६.	श्री गुसाईं विट्ठलनाथ जी की वनयात्रा	..	..	४८३ ख	
४९७.	श्री ठाकुर जी के षोडश चिह्न सचित्र	..	..	४८६ ङ	
४९८.	श्री द्वारिकाधीश के विचित्र विलास	१८१७ वि०	..	२१७ ख	
४९९.	श्री द्वारिकाधीश के शृगार सवत् १८९४ के	..	१८९५ वि०	२०७ घ	
५००.	श्री द्वारिकाधीश जी के घर की उत्सव मालिका (रीति)	१९३३ वि०	..	७९ क	
५०१.	श्रीनाथ जी की सेवाविधि	..	..	९३	
५०२.	श्रीनाथ जी के शृगार के वस्त्रम के नोरग	..	१९३५ वि०	९८ घ	
५०३.	श्रीपति के कवित्त	..	..	४३१	
५०४.	श्री महाप्रभु जी के स्वरूप के चितन को पद	..	..	१९७	
५०५.	श्री महाप्रभु जी गुसाईं जी स्वरूप विचार	..	..	८८ ख	
५०६.	श्रीराम गीतमाला	..	..	६३	
५०७.	श्री वल्लभाचार्य की वशावली तथा स्वरूप वर्णन	..	१७८१ वि०	११९ ग	
५०८.	श्लेपार्थ विशति	..	..	३१	
५०९	षट्ऋतु मार्तंड	१८३० वि०	..	३२५	
५१०.	षट्ऋतु वर्णर्द्रन	..	१७७८ वि०	१२६ छ	
५११.	षट् षष्टि अवराधा	..	..	४८६ च	
५१२.	संगीत दीपिका	..	..	४१०	
५१३.	संत विलास	१९२५ वि०	१९२८ वि०	३६०	
५१४.	सगुनौटी	..	१९२० वि०	७५	
५१५.	सतकवि कुलदीपिका	..	१८९७ वि०	२५७	
५१६.	सतवती की कथा	१६७८ वि०	१७७७ वि०	१२६ ब	
५१७.	सतनावा	१६९३ वि०	१७७७ वि०	१२६ ख¹	
५१८	सत्यवती कथा	..	..	२२	
५१९.	सद्गुरु महिमा	..	..	४२८	
५२०.	सनेह लीलामृत पच्चीसी	..	..	४७५	
५२१.	सबदी	..	..	११३ ख	
५२२.	समरसार	..	१९१२ वि०	२९४	
५२३.	समर्पण श्लोक यथार्थ की टीका	..	..	७८	
५२४.	समय प्रबंध सेवा सात समय की भावना	..	१८६३ वि०	१८६	
५२५.	सरसरस	..	..	३९७	
५२६.	सर्वांग परिमोचन	..	..	१४१ छ	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
५२७.	सर्वोत्तम स्तोत्र की संस्कृत टीका का हिंदी पद्यो में अनुवाद				
५२८.	सलाक महलानो	..	..	८०	
५२९.	सवैया या झूलना	..	..	१८९ क	
५३०.	साँझी कीर्तन	..	१७७८ वि०	१२६ छ	
५३१.	सात स्वरूप के कीर्तन	..	१९९० वि०	४०२ ख	
५३२.	सारगधर वैद्यक	..	..	१६८	
५३३.	सिंगार तिलक	..	१८९३ वि०	१७९	
५३४.	सिंहासन बत्तीसी	१७०९ वि०	१७७८ वि०	१२६ ट१	
५३५.	सिषग्रंथ	..	..	२०८	
५३६.	सिख सागर पदनावा	..	..	१२६ ष	
५३७.	सीलवती की कथा	१६९५ वि०	१७७७ वि०	१२६ झ१	
५३८.	सुंदर काड	१६८४ वि०	१७७७ वि०	१२६ भ	
५३९.	सुदर प्रबोध	..	..	१२३	
५४०.	सुकृत ध्यान	..	१८८३ वि०	४५१ क	
५४१.	सुखदेव लीला	..	..	३२ ज	
५४२.	सुखसागर पुराण	..	..	३०१ ख	
५४३.	सुदामा चरित्र	..	..	१५०	
५४४.	सुदामा चरित्र	..	..	१७	
५४५.	सुदामा चरित्र	..	१९१८ वि०	१५२	
५४६.	सुभटराई की कथा	..	..	१७६	
५४७.	सुरतरग (संगीत)	१७२० वि०	१७८५ वि०	१२६ व	
५४८.	सुद्धांसितोत्तम (रामखड)	..	..	४४२	
५४९.	सूक्ष्मवेद	..	..	३६१	
५५०.	सूरजमल की कृपाण	..	१८३७ वि०	१०० ङ	
५५१.	सूर्य कांड	..	..	१४८	
५५२.	सोनालोहा वाद	..	१९११ वि०	१५७	
५५३.	सोमवंश की वंशावली	..	..	२४३	
५५४.	सौदर्य लहरी (टीका)	..	१८३१ वि०	१६५	
५५५.	स्तुति	..	..	३७५	
५५६.	स्वामिनी जी को व्याह	..	..	२९० ख	
५५७.	हनुमत बोध	..	..	१९२ ख	
५५८.	हनुमत वीर रक्षा	..	..	३२ झ	
५५९.	हनुमताष्टक	१९०४ वि०	१९०४ वि०	१६३ क	
५६०.	हनुमान जयति	..	१८९५ वि०	९०	
५६१.	हनुमान पच्चीसी	..	..	३५४ क	
५६२.	हरसू ब्रह्म मुक्तावली	..	..	४२९	
५६३.	हरितालिका व्रतकथा	१९०४ वि०	..	५	
५६४.	हरिनाथ विनोद	१८३८ वि०	१८३८ वि०	१९६	
५६५.	हरिलीला सोलह कला	१९१६ वि०	..	३८	
		१५४१ वि०	१७२९ वि०	२५९	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
५६६.	हरिविलासाख्य	..	..	४८८	
५६७.	होरी तथा डोल की भावना तथा तदात्मक वर्णन	..	..	४८६ ए	

परिशिष्ट–(ग)

प्रस्तुत खोज के संग्रह ग्रंथों में आए कवियों की सूची

(संवत् २००१-२००३ वि०)

क.सं.	कवियों के नाम	विशेषता
१.	अकबर	
२.	अचल दास	
३.	अफजल	
४.	अलख निरंजन	
५.	अरजुन	
६.	आरीदास	
७.	इंद्र कवि	
८.	उमराउ	
९.	कल्यान प्रभु	
१०.	कवि नाइक	
११.	कवि प्रेम	
१२.	कवि मकरंद	
१३.	कवि रत्न	
१४.	कवि सेखर	
१५.	कस्यप	
१६.	कान्ह गुआल	
१७.	कुवलय	
१८.	कृपालाल	
१९.	कृष्ण सनेही	
२०.	केशव कृपा	
२१.	केसो 'जन'	
२२.	गंगाबाई	
२३.	गंगाबाई	
२४.	गुत्यानंद	
२५.	गुरु सहाय	
२६.	गूदर	
२७.	गोकुल	
२८.	गोकुल विहारी	
२९.	गो० गोपालजी	
३०.	घासीराम तिवारी	
३१.	चंद्रप्रभु	
३२.	चंद्रभाल	
३३.	चतुर्भुज	
३४.	चतुर भट्ट	
३५.	चत्रभुज (दास)	
३६.	छीतुराम	
३७.	छोटेलाल	
३८.	जगतराय	
३९.	जगदीश पांडेय	
४०.	जगन्नाथ कविराई	
४१.	जगन्नाथ घनजीवन माधो	
४२.	जन किशोर	
४३.	जन गंग ग्वाल	
४४.	जन गोविंद	
४५.	जन तिलोक	
४६.	जन माधौ	
४७.	जन विचित्र	
४८.	जन हरि	
४९.	जमीर	
५०.	जानी	
५१.	जैगोपाल	
५२.	जैवल्लभ	
५३.	झीमन	
५४.	डुहू कवि	
५५.	तान तरंग	
५६.	त्रिविक्रम	
५७.	दयासखि	
५८.	दलपति	
५९.	दास गुपाल	
६०.	दासानुदास	
६१.	देवीनाथ	
६२.	धीरज	
६३.	नंदन सुकवि	
६४.	नरोत्तम	
६५.	नागमती	

क्र.सं.	कवियों के नाम	विशेषता
६६.	निज जू	
६७.	पर्शी	
६८.	पीयदयाल	
६९.	पीय बिहारी	
७०.	पुरुषोत्तम जी	
७१.	पुरोहित ब्रजलाल	
७२.	प्यारे गुपाल	
७३.	प्रवीन अली	
७४.	वछ कवि	
७५.	बनवारी दास	
७६.	बलदेव जी	
७८.	बलभद्र	
७९.	बहोरन दास	
८०.	ब्रजनाथ	
८१.	बालक	
८२.	बालकृष्ण	
८३.	बालन	
८४.	बास	
८५.	बिट्ठल गिरिधरन	
८६.	बिराहिम	
८७.	बिहारी दास	
८८.	बुल्लादास	
८९.	बुह्मी	
९०.	भगवानप्रभु	
९१.	भामा गुजराती	
९२.	भूधर	
९३.	भोगीलाल	
९४.	मधु	
९५.	मस्तान	
९६.	महर गोपाल	
९७.	माथुर बृद–मुकुद चंद	
९८.	माधुरी	
९९.	मानिक	
१००.	मानिक चंद	
१०१.	मिरजा मियाँ	
१०२.	मीर	
१०३.	मुरली	
१०४.	मोहनसुत (?)	
१०५.	मोहन बिहारी	
१०६.	यदुनाथ	
१०७.	रघुनंदन	
१०८.	रघुवीर राइ	

क्र.सं.	कवियों के नाम	विशेषता
१०९.	रतनपाल	
११०.	रसाल भट्ट	
१११.	रसिक गोपाल	
११२.	रसिक प्रीतम	
११३.	रसिक रसाल	
११४.	रसिक सखि	
११५.	राजबहादुर	
११६.	रामचद्र	
११७.	रामराइ प्रभु	
११८.	राम सनेही	
११९.	रिसीकेस	
१२०.	रूप सरन	
१२१.	रोसन जमीर मिरजा	
१२२.	लघु गोपाल	
१२३.	लघुदास	
१२४.	लघु मोहन	
१२५.	लछमी	
१२६.	लाल उत्तमचंद संभाती	
१२७.	लाल मकरद	
१२८.	वनजू	
१२९.	वल्लभ	
१३०.	वल्लभदास	
१३१.	वल्लभ राज	
१३२.	विर्जे राम	
१३३.	विप्र	
१३४.	विश्राम	
१३५.	वीरन	
१३६.	व्यास स्वामिनी	
१३७.	व्रजभूषण	
१३८.	व्रजराय जी	
१३९.	व्रज सुंदरी	
१४०.	व्रह्मदास	
१४१.	शुभपाणि	
१४२.	श्री गोपाल	
१४३.	श्री पुरुषोत्तम	
१४४.	श्रीभट्ट	
१४५.	श्री विट्ठल	
१४६.	श्री विट्ठल गिरधरन	
१४७.	श्री विट्ठलेश	
१४८.	सगुनदास	
१४९.	सगुरु दास	
१५०.	सदारंग	

क्र.स.	कवियों के नाम	विशेषता
१५१.	सरमस्त	
१५२.	स्यामकवि	
१५३.	स्यामदास जन	
१५४.	साहेब राम	
१५५.	सिहराव	
१५६.	सुंदर सबलस्याम	
१५७.	सुकवि करीम	
१५८.	सेठ लालभाई	
१५९.	हर किसोर	
१६०.	हरख जू	
१६१.	हर जू	
१६२.	हरिनारायन	
१६३.	हरिनारायन स्यामदास	
१६४.	हरिराय जी	
१६५.	हामिद	
१६६.	हित अनूप	
१६७.	हित जुलकरण	
१६८.	हित ध्रुव	
१६९.	हीरादास	
१७०.	हेम कवि	

परिशिष्ट—५

ग्रंथकार और उनके आश्रयदाताओं की सूची

(मंवत् २००१-२०० वि)

क्रम सं०	रिपोर्ट स०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
१.	२४	ईश्वर कवि	महाराज नरेंद्र सिंह, पटियाला नरेश और धौलपुर नरेश भगवंत सिंह	
१.	३१	कन्हैयालाल भट्ट	भिरदार नरेश (?)	
२.	४२	किसनलाल	राजाराम सिंह (?)	
३.	५८	केशवदास (महाकवि)	राजा इंद्रजीत सिंह ओड़छा	
४.	११५	छविनाथ	राजा माधवसिंह, जयपुर	सं० १८२५ वि० के लगभग
५.	११७	छैल	१. राजाराम कायस्थ २. शुख मुहम्मद या फतेह मुहम्मद	संभवतः जौनपुर के निवासी
६.	१२१	जगदीश	सवाई जगतसिंह, जयपुर	१८६२ वि० के लगभग
७.	१३५	टोडरमल कायस्थ	,, ,, ,,	१८६७ वि० के लगभग
८.	१४६	थेघनाथ या थेघू	भानकुँवर, गोपाचल (ग्वालियर)।	ये तत्कालीन राजा मानसिंह के वंश में थे। पिता का नाम कीरतसिंह था।
९.	१६३	देवीदत्त शुक्ल (पंडित, धीर)	मेहरबान सिंह और उनके पुत्र शिवप्रसन्न सिंह। होलागढ़ (प्रयाग) के राजा	संवत् १९०४–१९१० वि० के लगभग।
१०.	१६५	देवीदास	राजा रतनपाल, करौली नरेश (मेवाड़)।	
११.	१६६	देवेश्वर माथुर	राजा पहोप सिंह, वैली-गढ़ (भरतपुर)।	संवत् १८३९ वि० के लगभग। महाराज बदन सिंह के पुत्र महाराज प्रताप सिंह के पौत्र और महाराज बहादुर सिंह के पुत्र थे।
१२.	१७३	धौंकल मिश्र	महाराज तेजसिंह, भरत-पुर नरेश	संवत् १८५६ के लगभग

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
१३.	१८०	नरहरिदास बारहट	जोधपुर नरेश महाराज सूरसिंह, गजसिंह और जसवंतसिंह।	सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और १८वीं के पूर्वार्द्ध में वर्तमान।
१४.	१९९	पंचौली देवकर्ण	मेवाड़ के राणा जगतसिंह (द्वि०) के दीवान	सं० १८०७ के लगभग।
१५.	२१९	प्राणनाथ (स्वामी)	महाराजा छत्रसाल, पन्ना-नरेश	
१६.	२३१	बलदेव कवि	राजा विक्रमसाहि बघेल, देवरानगल (?)	
१७.	२३२	बलरामदास	राजा जगन्नाथ, नीलगिरि, उड़ीसा।	
१८.	२६१	भीष्म	राजा गोविंदचंद, पुष्पावती (?)	
१९.	२६३	भूषण (महाकवि)	छत्रपति महाराज शिवाजी	पिछली खोज के आधार पर
२०.	२६४	भोलानाथ	नरहरिसिंह राजा, भरतपुर	
२१.	२६५	मंडन	राजा मंगददेव, बुंदेलखंड	
२२.	२६९	मतिराम	औरंगजेब, बूंदीनरेश भाऊसिंह, ओड़छानरेश महाराज स्वरूपसिंह और कुमाऊँनरेश राजा ज्ञानचंद	पिछली खोज के आधार पर
२३.	२७३	मनिकंठ	राजा फकीरसिंह, नगरा-नगर, गाजीपुर।	सं० १७८२ में वर्तमान
२४.	३०३	मुरलीधर कविराई	राजा नवलसिंह, भरतपुर। ये सुजानसिंह महाराज के पुत्र थे।	सं० १८१८ मे वर्तमान
२५.	३०७	मोहन	जहाँगीर बादशाह	
२६.	३१३	रघुनाथ वंदीजन	राजा वरिवंड सिंह, काशी नरेश	
२७.	३२३	रसरासि (रामनारायण)	सवाई प्रतापसिंह, जयपुरनरेश	
२८.	३३५	राधाकृष्ण (कृष्णकवि)	रावराजा भीमसिंह, जयपुर	सं० १८५३ में वर्तमान
२९.	३८६	विद्याराज्य तीर्थदेव	बाबू रामप्रसन्न सिंह, काशीनरेश के प्रेमपात्र।	सं० १८९८ में वर्तमान
३०.	२८८	विष्णकवि (विष्णदास)	राजा डोंगरसिंह, गोपाचल (ग्वालियर)	सं० १४९२ ई० में वर्तमान
३१.	३९६	वृंदकवि	महाराज राजसिंह, कृष्णगढ़ नरेश।	

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
३२.	४०८	शंभूनाथ त्रिपाठी	राजा रघुनाथसिह, कृष्णगढ नरेश । वगसर (?) ।	सं० १८०३ में वर्तमान 'वगसर' संभवतः दौरियाखेड़ा (अवध) के अंतर्गत है ।
३३.	४१२	शिरोमणि	शाहजहाँ बादशाह	
३४.	४१८	शिवदत्त त्रिपाठी	राजा जबरेशसिह, पाटीपुर, वनउधदेश (?)	
३५.	४१६	शिवदास गदाधर	दिग्विजयसिह, बलराम-पुर रियासत (गोंडा, अवध) ।	स० १६१० के लगभग
३६.	४८८	सिधुकवि (आनद)	महाराना जगतसिह, उदयपुर	सं० १८६८ के लगभग
३७.	४४६	सिकदर फिरंगी	आलमगीर बादशाह	
क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
३८.	४५६	सूरत मिश्र	जसवतसिह, जोधपुर-नरेश के शिक्षक ।	
३६.	४६६	सेवाराम	राजा रामपाल (?)	
४०	४७१	सोमनाथ या शशिनाथ	महाराजकुमार प्रतापसिंह, भरतपुरनरेश	
४१	४७७	हरज, सुकवि	रामदत्त (? जौनपुर)	

—::००::—